॥ओ३म्॥

आयुर्वेद जड़ी-बूटी रहस्य

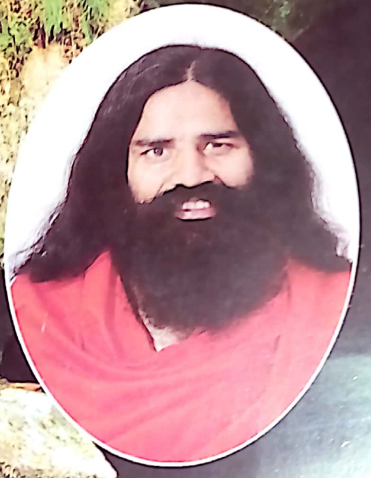

आचार्य बालकृष्ण

क्रमांक	अध्याय का नाम	वैज्ञानिक नाम	पृष्ठ संख्या
1.	आक (अर्क)	*Calotropis procera* (Ait.) R. Br.	1
2.	आम	*Mangifera indica* L.	12
3.	वासा	*Adhatoda zeylanica* Medik.	18
4.	अफीम	*Papaver somniferum* L.	22
5.	अगस्त	*Sesbania grandiflora* (L). Poir	25
6.	अजमोद	*Apium graveolens* L.	28
7.	अजवायन	*Trachyspermum ammi* (L.) Sprague	30
8.	खुरासानी अजवायन	*Hyoscyamus niger* L.	35
9.	अकरकरा	*Anacyclus pyrethrum* DC.	37
10.	आकाश बल्ली	*Cuscuta reflexa* Roxb.	40
11.	अखरोट	*Juglans regia* L.	43
12.	अलसी	*Linum usitatissium* L.	47
13.	अमलतास	*Cassia fistula* L.	50
14.	आंवला	*Emblica officinalis* Gaertn.	53
15.	अमरूद	*Psidium guajava* L.	59
16.	अनार	*Punica granatum* L.	62
17.	अनन्तमूल	*Hemidesmus indicus* (L.) R. Br.	68
18.	अंगूर	*Vitis vinifera* L.	71
19.	अंकोल	*Alangium salvifolium* (L.f.) Wang	75
20.	अनानास	*Ananas comosus* Merr.	78
21.	अपामार्ग (लटजीरा)	*Achyranthes aspera* L.	80
22.	अपराजिता	*Clitorea ternatea* L.	84
23.	अर्जुन	*Terminalia arjuna* (Roxb.) Wight & Arn.	87
24.	श्योनाक	*Oroxylum indicum* (L.) Vent.	91
25.	अरणी	*Premna latifolia* Roxb.	95
26.	अशोक	*Saraca asoca* (Roxb.) de Wilde	97
27.	असगंध (अश्वगंधा)	*Withania somnifera* (L.) Dunal	100
28.	अतीस	*Aconitum heterophyllum* Wall. ex Royle	103
29.	आयापान	*Eupatorium triplinerve* Vahl	106
30.	बबूल	*Acacia nilotica* (L.) Willd. ex Delile ssp. *indica* (Benth.) Brenan	108

क्रमांक	अध्याय का नाम		
31.	बड़ / बरगद	*Ficus benghalensis* L.	112
32.	बहेड़ा	*Terminalia bellirica* (Gaertn.) Roxb.	118
33.	बकायन	*Melia azedarach* L.	121
34.	बाकुची	*Psoralea corylifolia* L.	125
35.	बला	*Sida cordifolia* L.	128
36.	बेल	*Aegle marmelos* (L.) Correa	131
37.	भांग	*Cannabis sativa* L.	137
38.	भांगरा	*Eclipta alba* (L.) Hassk.	140
39.	भारंगी	*Clerodendrum serratum* (L.) Moon	145
40.	भुई आंवला	*Phyllanthus fraternus* Webster	147
41.	ब्राह्मी	*Centella asiatica* (L.) Urban	150
42.	चालमोंगरा	*Hydnocarpus pentandra* (Buch.-Ham.) Oken	153
43.	चमेली	*Jasminum grandiflorum* L.	155
44.	चांगेरी	*Oxalis corniculata* L.	158
45.	चित्रक	*Plumbago zeylanica* L.	160
46.	दालचीनी	*Cinnamomum zeylanicum* Bl	163
47.	धनिया	*Coriandrum sativum* L.	166
48.	धातकी	*Woodfordia fruticosa* (L.) Kurz	169
49.	धतूरा	*Datura metal* L.	172
50.	दूब	*Cynodon dactylon* (L.) Pers.	176
51.	दूधी	*Euphorbia thymifolia* L.	179
52.	ईख	*Saccharum officinarum* L.	181
53.	इलायची	*Amomum subulatum* Roxb.	184
54.	अरंड	*Ricinus communis* L.	187
55.	ईसबगोल	*Plantago ovata* Forsk.	191
56.	गाजर	*Daucus carota* L. Var. *sativa* DC.	193
57.	गंभारी	*Gmelina arborea* Roxb.	196
58.	गेंदा	*Tagetes erecta* L.	199
59.	गिलोय (अमृता)	*Tinospora cordifolia* (Willd.) Hook. f.& Thoms.	201
60.	गोखरू	*Tribulus terrestris* L.	205
61.	गूलर	*Ficus racemosa* L.	208
62.	गोरखमुण्डी	*Sphaeranthus indicus* L.	212

क्रमांक	अध्याय का नाम	वैज्ञानिक नाम	पृष्ठ संख्या
63.	गुड़हल	*Hibiscus rosa-sinensis* L.	215
64.	गुलदाऊदी	*Chrysanthemum coronarium* L.	218
65.	घृतकुमारी	*Aloe vera* (L.) Burm. f.	220
66.	हल्दी	*Curcuma longa* L.	224
67.	हरड़	*Terminalia chebula* (Gaertn.) Retz.	228
68.	इमली	*Tamarindus indica* L.	232
69.	इन्द्रायण	*Citrullus colocynthis* (L.) Schrad.	235
70.	जामुन	*Syzygium cuminii* (L.) Skeels	238
71.	जीरा	*Cuminum cyminum* L.	241
72.	कचनार	*Bauhinia variegata* L.	244
73.	कनेर	*Thevetia peruviana* (Pers.) Schum.	249
74.	कटेरी (कण्टकारी)	*Solanum surattense* Burm. f	253
75.	लता करंज	*Caesalpinia bonduc* (L.) Roxb.	257
76.	करेला	*Momordica charantia* L.	261
77.	कसौंदी (कासमर्द)	*Cassia occidentalis* L.	264
78.	कुटज (इन्द्रजौ)	*Holarrhena antidysenterica* (Roth) DC.	267
79.	लाजवंती (छुई–मुई)	*Mimosa pudica* L.	270
80.	लौंग (लवंग)	*Syzygium aromaticum* (L.) Merr. & L.M. Perry	272
81.	मकोय	*Solanum nigrum* L.	275
82.	मैनफल	*Xeromphis spinosa* (Thunb.) Keay	278
83.	काली मिर्च	*Piper nigrum* L.	280
84.	मरुआ	*Origanum vulgare* L.	284
85.	मेंहदी	*Lawsonia inermis* L.	286
86.	लाल मिर्च	*Capsicum annuum* L.	289
87.	मौलसिरी	*Mimusops elengi* L.	292
88.	मूली	*Raphanus sativus* L.	295
89.	मुलेठी	*Glycyrrhiza glabra* L.	298
90.	नागरमोथा	*Cyperus scariosus* R.Br.	301
91.	नीम	*Azadirachta indica* (L.) A. Juss.	304
92.	नींबू	*Citrus aurantiifolia* (christm.) Swingle.	316
93.	निर्गुण्डी	*Vitex negundo* L.	321
94.	प्याज	*Allium cepa* L.	325

क्रमांक	अध्याय का नाम	वैज्ञानिक नाम	पृष्ठ संख्या
95.	टेसू (पलाश)	*Butea monosperma* (Lam.) Taub.	329
96.	पान	*Piper betle* L.	332
97.	पवाँड़ (चक्रमर्द)	*Cassia tora* L.	335
98.	पर्णबीज	*Bryophyllum pinnatum* (Lam.) Oken	338
99.	पीपल	*Ficus religiosa* L.	341
100.	पिप्पली	*Piper longum* L.	345
101.	पिठवन (पृश्निपर्णी)	*Uraria picta* (Jacq.) Desv. ex DC.	350
102.	पिया बासा (कटसरैया)	*Barleria prionitis* L.	352
103.	पुनर्नवा	*Boerhavia diffusa* L.	354
104.	राई	*Brassica juncea* (L.) Czern. & Coss.	357
105.	काली राई	*Brassica nigra* (L.) Koch.	360
106.	रीठा	*Sapindus mukorossi* Gaertn.	362
107.	सहिजन	*Moringa oleifera* Lam.	365
108.	शरपुंखा	*Tephrosia purpurea* (L.) Pers.	368
109.	सत्यानाशी	*Argemone mexicana* L.	371
110.	सौंठ (अदरक)	*Zingiber officinale* Rosc.	374
111.	सेहुंड	*Euphorbia neriifolia* L.	378
112.	शंखपुष्पी	*Convolvulus microphyllus* Sieb. ex Spreng.	381
113.	शतावर	*Asparagus racemosus* Willd.	383
114.	शीशम	*Dalbergia sissoo* Roxb. ex DC.	387
115.	सिरस (शिरीष)	*Albizia lebbeck* (L.) Willd.	390
116.	सूरजमुखी	*Helianthus annuus* L.	394
117.	तगर	*Valeriana wallichii* DC.	397
118.	तेजपात	*Cinnamomum tamala* (Ham.) Nees & Eberm.	399
119.	तिल	*Sesamum orientale* L.	401
120.	त्रिफला	Triphala	405
121.	तुलसी	*Ocimum sanctum* L.	407
122.	उलटकंबल	*Abroma augusta* (L.) L.f.	411
123.	वचा	*Acorus calamus* L.	414
124.	वत्सनाभ	*Aconitum ferox* Wall. ex Ser.	417
125.	विदारीकंद	*Pueraria tuberosa* (Roxb. ex Willd.) DC.	419

आक (अर्क)

वैज्ञानिक नाम	:	*Calotropis procera* (Ait.) R. Br.
कुलनाम	:	Asclepiadaceae
अंग्रेजी नाम	:	Madar
संस्कृत	:	अर्क, तूलफल, क्षीरपर्ण, आस्फोट
हिन्दी	:	अकवन, आक, मदार
गुजराती	:	आकड़ो
मराठी	:	एक्के, एक्के गिडा
बंगाली	:	आकन्द
पंजाबी	:	अक
तमिल	:	पेल्लेरूक्कु
तैलगु	:	मन्दाराम्
अरबी	:	उषर
फारसी	:	खरक

परिचय

आक के पौधे, शुष्क, ऊसर और ऊँची भूमि में प्रायः सर्वत्र देखने को मिलते हैं। इस वनस्पति के विषय में साधारण समाज में यह भ्रान्ति फैली हुई है कि आक का पौधा विषैला होता है तथा यह मनुष्य के लिये घातक है। इसमें किंचित सत्य जरूर है क्योंकि आयुर्वेद संहिताओं मे भी इसकी गणना उपविषों में की गई है। यदि इसका सेवन अधिक मात्रा में कर लिया जाये तो, उल्टी–दस्त होकर मनुष्य यनराज के घर जा सकता है। इसके विपरीत यदि आक का सेवन उचित मात्रा में, योग्य तरीके से, चतुर वैद्य की निगरानी में किया जाये तो अनेक रोगों में इससे बड़ा फायदा होता है। इसका हर अंग दवा है, हर भाग उपयोगी है एवं यह सूर्य के समान तीक्ष्ण, तेजस्वी और पारे के समान उत्तम तथा दिव्य रसायन धर्मा हैं। कहीं–कहीं इसे 'वानस्पतिक पारद' भी कहा गया है। इसकी तीन जातियाँ पाई जाती है, जो निम्न प्रकार है :

1. रक्तार्क : इसके फूल श्वेत रंग के छोटे, कटोरीनुमा और भीतर लाल और बैंगनी रंग की चित्ती वाले होते है। इसमे दूध कम होता है।
2. श्वेतार्क : इसका फूल लाल आक के पुष्प से कुछ बड़ा और हल्की पीली आभा लिये सफेद कनेर के फूल जैसा होता है। इसकी केशर भी बिल्कुल सफेद होती है। इसे मदार भी कहते हैं। यह प्रायः मन्दिरों में लगाया जाता है। इसमें दूध अधिक होता है।
3. राजार्क : इसके पौधों में एक ही शाखा होती है, जिस पर केवल चार पत्ते लगते हैं। इसके फूल चांदी के रंग जैसे श्वेत होते है, यह बहुत दुर्लभ जाति है।

इसके अतिरिक्त आक की एक और जाति पाई जाती है, जिसमें पिस्तई रंग के फूल लगते हैं।

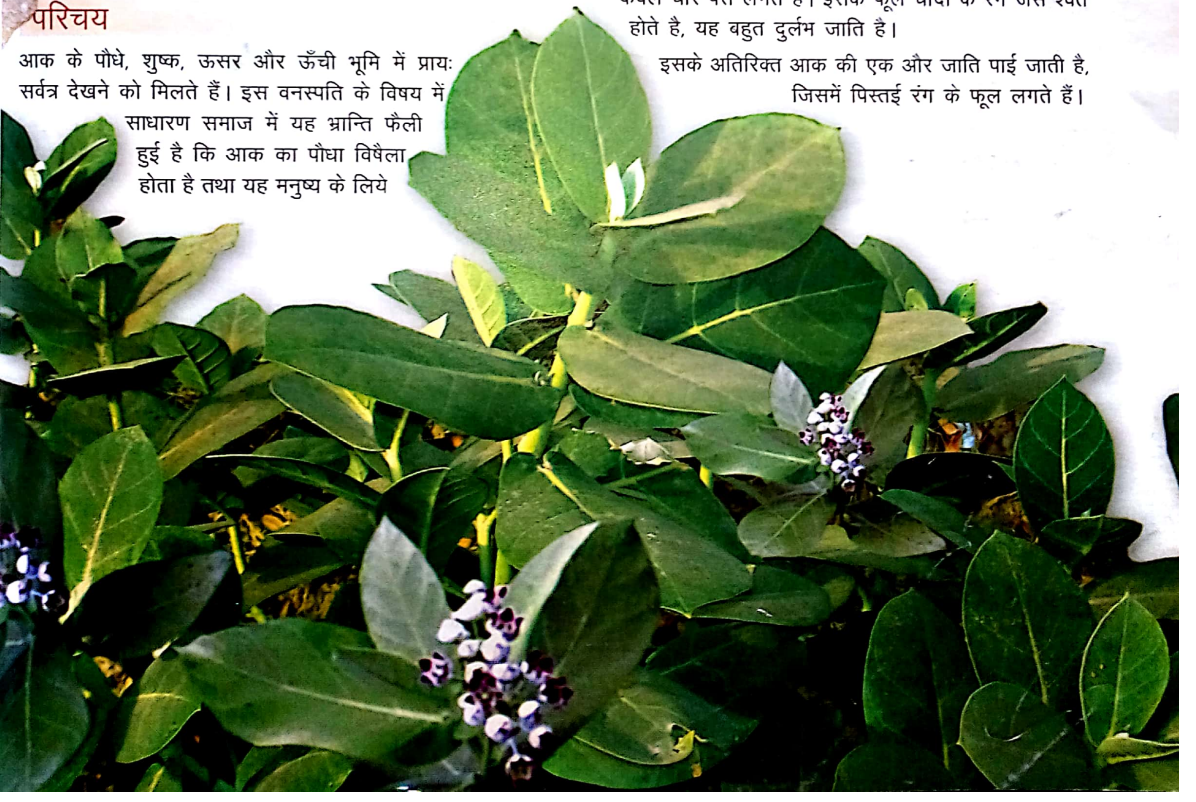

बाह्य–स्वरूप

आक के बहुवर्षीय व बहुशाखीय गुल्म 4–12 फुट ऊँचे कांडत्वक बहुत कोमल व धूसर होती है। इसके पौधों के सभी अंग रूई की तरह धुने हुये सफेद रोमों से आच्छादित रहते है। पत्र वृन्त बहुत ही छोटे, 4–6 इंच लम्बे, 1–3 इंच चौड़े मांसल व हृदयाकार होते हैं। पुष्प सुगन्धित गुच्छों में सफेद या लाल बैंगनी रंग के, पुंकेसर पांच और पुष्प दंत भी पाँच ही होते है। फल 2–3 इंच लम्बे, 1 से 2 इंच तक चौडे, अंडाकार, बीच मे कुछ मुड़े हुये होने के कारण तोते की चोंच जैसी लगते हैं, इसलिए इन्हें शुकफल भी कहते हैं। फल के भीतर छोटे–छोटे भूरे रंग के बीज भरे होते है जो रूई जैसे मुलायम रेशे द्वारा आपस में चिपके रहते हैं। परिपक्व होने पर फल जब फटते है, तब बीज हवा मे उड़कर गोल हो जाते हैं और सब जगह फैल जाते है। आक का सम्पूर्ण पौधा एक प्रकार के दुग्ध मय एवं चरपरे रस से परिपूर्ण होता है। इसके किसी भी भाग को तोड़ने से सफेद रसमय दुग्ध निकलता है।

रासायनिक संघटन

आक के सर्वांग में प्रायः एक प्रकार का कडुवा और चरपरा पीला राल जैसा पदार्थ पाया जाता है, और यही इसका प्रभावशाली अंश है। जड़ की छाल में मंडारएल्बन और भंड़ार फ्युएबिल नामक दो वस्तुएँ और पाई जाती है।

मंड़ारएल्बन आक का एक रवेदार एवं प्रभावात्मक सार है, इसे मंदारिन भी कहते है। यह सार ईथर और मद्यसार में घुलता है, शीतल जल तथा जैतुन के तैल में यह अघुलनशील है। इसमें एक विचित्रता है कि यह गरमी में जम जाता है और शीत में खु रखने पर पिघल उठता है। ये दोनों तत्त्व इसके दूध या रस में अधिक मात्रा में पाये जाते है। नवीन आक की अपेक्षा पुराने आ की जड़ अधिक वीर्यवान होती है।

गुण–धर्म

1. दोनों प्रकार के आक दस्तावर है, वात जन्य कुष्ठ, कंडू, वि व्रण, प्लीहा, गुल्म, बवासीर, कफ जन्य उदर रोग और म कृमि को नष्ट करने वाले है।[1]
2. सफेद आक का फूल वीर्य–वर्धक, हल्का, दीपनपाचन, अरुचि, मुँह से पानी आना, लाला स्रावद्ध बवासीर, खांसी तथा श्वास का नाशक है।[2]
3. लाल आक का फूल मधुर एवं कुछ कडुवा, ग्राही, कुष्ठ, कृमि, कफ, बवासीर, विष, रक्तपित्त, गुल्म तथा सूजन को नष्ट करने वाला है।[3]
4. आक का दूधः कड़वा, गर्म, चिकना, खारा, हल्का, कोढ एवं गुल्म तथा उदरेरोग नाशक है। विरेचन कराने में यह अति उत्तम है।
5. मूलत्वकः हृदयोत्तेजक, रक्त शोधक और शोथहर है। इससे हृदय की गति एवं संकोच शक्ति बढ़ती है, तथा रक्त भार भी बढ़ता है। यह ज्वरघ्न और विषमज्वर प्रतिबन्धक है।
6. पत्रः दोनों प्रकार के आक के पत्ते वामक, रेचक, भ्रमकारक तथा कासश्वास, कर्णशूल, शोथ, उरुस्तम्भ, पामा, कुष्ठ आदि नाशक है।

औषधीय प्रयोग

मुँह की झाँई, धब्बे आदि : हल्दी के 3 ग्राम चूर्ण को आक के दुग्ध 5–7 बूंद व गुलाब जल में घोटकर आंखों को बचाकर झाई–युक्त स्थान पर लगायें, इससे लाभ होता है। कोमल प्रकृति वालों को आक की दूध की जगह आक का रस प्रयोग करना चाहिए।

सिर की खुजलीः इसे सिर पर लगाने से क्लेद, दाह वेदना एवं कँडूयुक्त अरुषिका में लाभ होता है।[7]

कर्णरोगः तेल और लवण से युक्त आक के पत्तों को वैद्य बांये हाथ में लेकर दाहिने हाथ से एक लोहे की कडछी को गरम कर उसमें डाल दें। फिर इस तरह जो अर्क पत्रों का रस निकले उसे कान में डालने से कान के समस्त रोग दूर होते है। कान में मवाद आना, साँय–साँय की आवाज होना आदि में इससे बहुत लाभ होता है।[4]

कर्णशूल :

1. आक के भली प्रकार पीले पड़े पत्तों को थोडा सा घी चुपड़कर आग पर रख दें, जब वे झुलसने लगें, चटपट निकाल कर निचोड़ लें। इस रस को थोड़ी गरम अवस्था में ही कान में डालने से तीव्र तथा बहुविधि वेदनायुक्त कर्णशूल शीघ्र नष्ट हो जाता है।
2. आक के पीले पके बिना छेद वाले पत्तों पर घी लगाकर अग्नि में तपाकर उसका रस कान में 2 बूंद डालने से लाभ होता है।

आक और नेत्र रोग :

1. अर्क मूल की छाल सूखी 1 ग्राम कूटकर, 20 ग्राम गुलाब जल में 5 मिनट तक रखकर छान लें। बूंद–बूंद आंखों में डालने से (3 या 5 बूंद से अधिक न डालें) नेत्र की लाली, भारीपन, दर्द, कीच की अधिकता और खुजली दूर हो जाती है।
2. अर्कमूल की छाल को जलाकर कोयला कर लें और इसे थोड़े पानी में घिसकर नेत्रों के चारों ओर तथा पलकों पर धीरे–धीरे मलते हुये लेप करे तो लाली, खुजली, पलको की सूजन आदि मिटती है।
3. आंख दुखनी आने पर, यदि बाई आंख हो और उसमें कडक दर्द व वेदना हो तो दाहिने पैर के नाखूनों को, यदि दाई आंख आई हो तो बांये पैर के नाखूनों को आक के दूध से तर कर दे।

सावधानी : आंख में दूध नही लगना चाहिये, नही तो भयंकर परिणाम होगा। यह एक चमत्कारिक प्रयोग होगा।

फूला जाला : आक के दूध में पुरानी रुई को 3 बार तर कर सुखा ले, फिर गाय के घी में तर कर बडी सी बत्ती बनाकर जला ले। बत्ती जल कर सफेद नहीं होनी चाहिये इसे थोडी मात्रा में सलाई से रात्रि के समय आखो में लगाने से 2–3 दिन में लाभ होना प्रारम्भ होता है।

मोतिया बिन्द : आक के दूध में पुरानी ईट का महीन चूर्ण (10 ग्राम) तर कर सुखा लें। फिर उसमें लौंग (6 नग) मिलायें, खरल में भली प्रकार से महीन करके और बारीक कपडछन कर लें। इस चूर्ण को चावल भर नासिका द्वारा प्रतिदिन प्रातः नस्य लेने से शीघ्र लाभ होता है। यह प्रयोग सर्दी–जुकाम में भी लाभ करता है।

मिर्गी :

1. सफेद आक के फूल 1 भाग और पुराना गुड 3 भाग लेकर पहले फूलों को पीस लें, फिर गुड के साथ खूब खरल करें। चने जैसी गोलियाँ बना लें, प्रात–साय 1 या 2 गोली ताजे जल के साथ सेवन करें।
2. आक के ताजे फूल और काली मिर्च एकत्र महीन पीसकर 300 मिलीग्राम की गोलियाँ बना रखे और दिन में 3–4 बार सेवन करावें।
3. आक के दूध मे थोडी शक्कर या मिश्री खरल कर रखें तथा इसकी 125 मिलीग्राम मात्रा प्रतिदिन प्रातः 10 ग्राम गर्म दूध के साथ सेवन करे।
4. मदार के पत्ते और टहनी के रंग का ही टिड्डा इसके ऊपर ग्रीष्म काल मे मिलता है। इस टिड्डे को शीशी में बन्दकर सुखाकर सम भाग काली मिर्च मिला, महीन पीसकर, अपस्मार के रोगी को बेहोशी की हालत मे इसका नस्य देने से वह होश में आ जाता है और धीरे–धीरे उसका रोग दूर हो जाता है।

दंतपीड़ा :

1. आक के दूध मे रुई भिगोकर, घी में मलकर दाढ में रखने से दाढ़ की पीडा मिटती है।
2. आक के दूध में नमक मिलाकर दांत पर लगाने से दंत पीड़ा मिटती है।
3. अंगुली जितनी मोटी जड को आग में शकरकन्दी की तरह भूनकर उसका दातुन करने से दन्त रोग व दन्तपीड़ा में तुरन्त लाभ पहुंचता है। कूची वाले भाग को काटकर पुनः उसका अगला भाग प्रयोग कर सकते हैं।

दंत निष्कासन :

1. हिलते हुये दांत पर आक का दूध लगाकर उसे सरलता से निकाला जा सकता है।
2. आक के 8–10 पत्तों को 10 ग्राम काली मिर्च के साथ पीसकर उसमें थोडी हल्दी व सेंधा नमक मिलाकर मंजन करने से दात मजबूत रहते है।

वमन : अर्कमूल की शुष्क छाल को समभाग अदरख के रस में भली प्रकार खरल कर 125 मिलीग्राम की गोलियाँ बनाकर धूप में सुखाकर रख ले। मधु के साथ सेवन कराने से किसी भी प्रकार का वमन 1–2 गोली के सेवन से बन्द हो जायेगा। प्रवाहिका, शूल, मरोड और विसूचिका मे इसे जल के साथ देते है।

आधाशीशी :

1. जंगली कडो की राख को आक के दूध मे तरकर के छाया में सुखा लेना चाहिये। इसमे से 125 मि.ग्रा. सुंघाने से छीके आकर सिर का दर्द, आधा शीशी, जुकाम, बेहोशी इत्यादि रोग में लाभ होता है। गर्भवती स्त्री और बालक इसका प्रयोग न करें।
2. पीले पडे हुये आक के 1–2 पत्तों के रस का नस्य लेने से आधा शीशी में लाभ होता है। किन्तु तीक्ष्ण बहुत है, अतः सावधानी से प्रयोग करें।
3. आक की छाया में शुष्क की हुई मूलत्वक के 10 ग्राम चूर्ण में सात इलायची तथा कपूर और पिपरमेंट प्रत्येक 500 मि.ग्रा. मिलाकर और खूब खरल कर शीशी में भर कर रख ले। इसमें सूंघने से छीके आकर व कफस्राव होकर आधा शीशी आदि सिर दर्द में लाभ होता है। मस्तक का भारीपन दूर होता है।
4. अनार की 40 ग्राम खूब महीन घिसी हुई छाल को आक के दूध में गूंथ कर रोटी की तरह नरम आंच से पका लें।

फिर इसे सुखाकर बहुत महीन पीसकर, जटामांसी, छरीला 3–3 ग्राम, इलायची और कायफल प्रत्येक 1.5 ग्राम मिलाकर नसवार बनालें। इसकी नस्य से कुछ देर बाद छीकें आकर दिमागी नजला दूर होता है। तथा बेहोश रोगी को होश में लाने में सहयोग मिलता है।

5. पुरानी पक्की ईंट को पीसकर खूब महीन कर आक के दूध में तर कर सुखाकर और तौलकर प्रति 10 ग्राम में सात लंवग बारीक पीसकर मिला दें। इसमें से 125 मिलीग्राम या 250 मिलीग्राम की मात्रा में सुंधाने से मस्तक पीड़ा, सूर्यावर्त, प्रतिश्याय, पीनस और मोतिया बिन्द में लाभ होता है।

श्वास–खांसी इत्यादि

1. आक पुष्प की लौंग 50 ग्राम और मिर्च 6 ग्राम दोनों को एकत्र कर खूब महीन पीस मटर जैसी गोलियाँ बना लें। प्रातः 1 या दो गोली गर्म पानी के साथ सेवन करने से श्वास वेग रूक जाता है।
2. आक की जड़ के छिलका को आक के दूध में भिगोकर शुष्क कर महीन चूर्ण कर लें, 10 ग्राम चूर्ण में 25 ग्राम त्रिकटु चूर्ण श्रृंगभस्म 5 ग्राम, गोदंती 10 ग्राम मिलाकर लगभग एक ग्राम प्रातः–सायं मधु के साथ लेने से पुरातन श्वास रोग में भी लाभ होता है।
3. आक के पत्तों पर जो सफेद क्षार सा छाया रहता है, उसे 5 से 10 ग्राम तक गुड़ में लपेटकर गोली बनाकर खाने से कास श्वास में लाभ होता है।
4. पत्रों पर छाई सफेदी को इकट्ठा कर बाजरे जैसी गोलियाँ बनाकर 1–1 गोली प्रातः–सायं खाकर ऊपर से पान खाने से 2–4 दिन में श्वास रोग में लाभ होता है। पुरानी खांसी भी मिट जाती है।
5. पुराने से पुराने आक की जड़ को छाया शुष्क करके, निर्वात स्थान में जलाकर राख कर लें, इसमें से कोयले अलग कर दें। 1–2 ग्राम राख को शहद या पान में रखकर खाने से कास श्वास में लाभ होता है।
6. आक की कोमल शाखा और फूलों को पीसकर 2–3 ग्राम की मात्रा में घी में सेंक लें। फिर इसमे गुड़ मिला, पाक बना नित्य प्रातः सेवन करने से पुरानी खांसी जिसमें हरा पीला दुर्गन्ध युक्त चिपचिपा कफ निकलता हो, शीघ्र दूर होता है।
7. अर्क पुष्पों की लौंग निकालकर उसमें समभाग सैंधा नमक और पीपल मिला खूब महीन पीसकर मटर जैसी गोलियाँ बनाकर दो से चार गोली बड़ों और 1–2 गोली बच्चों को गौदुग्ध के साथ देने से बच्चों की खांसी दूर होती है।
8. अर्क मूल छाल के 250 मिलीग्राम महीन चूर्ण में, 250 मिलीग्राम शुंठी चूर्ण मिला 3 ग्राम शहद के साथ सेवन करने से कफ युक्त खांसी और श्वास में उपयोगी है।
9. छाया शुष्क पुष्पों के बराबर त्रिकटु (सौंठ, पीपल, काली मिर्च) और जवाखार एकत्र कर अदरख के रस में खरल कर मटर जैसी गोलियाँ बना छाया में सुखाकर रख लें। दिन रात में 2–4 गोलियाँ मुख में रख चूसते रहने से कास श्वास में परम लाभ होता है।
10. आक के दूध में चने डुबो कर मिट्टी के बरतन में बन्दकर उपलों की आग से भस्म कर लें। 125 मिलीग्राम मधु के साथ दिन में 3 बार चाटने से असाध्य खांसी में भी तुरन्त लाभ होता है।
11. आक के एक पत्ते पर जल के साथ महीन पिसा हुआ कत्था और चूना लगाकर दूसरे पत्ते पर गाय का घी चुपडकर दोनो पत्तों को परस्पर जोड़ लें, इस प्रकार पत्तों को तैयार कर मटकी में रखकर जला लें। यह कष्टदायक श्वास में अति उपयोगी है। छानकर कांच की शीशी में रख लें। 10–30 ग्राम तक घी, गेहूं की रोटी या चावल में डालकर खाने से कफ प्रकृति के पुरूषों में मैथुन शक्ति को पैदा करता है। तथा समस्त कफज व्याधियों को और आंत्रकृमि को नष्ट करता है।
12. आक के ताजे फूलों का दो किलो रस निकाल लें। इसमें आक का ही दूध 250 ग्राम और गाय का घी डेढ किलो मिलाकर मंद अग्नि पर पकावें। घृत मात्र शेष रहने पर छान कर बोतल में भर कर रख लें। इस घी को 1 से 2 ग्राम की मात्रा में गाय के 250 ग्राम पकाये हुये दूध में मिला सेवन करने से आंत्रकृमि नष्ट होकर पाचन शक्ति तथा अर्श में भी लाभ होता है। शरीर में व्याप्त किसी तरह का विष का प्रभाव हो तो इससे लाभ होता है, परन्तु यह प्रयोग कोमल प्रकृति वालों को नहीं करना चाहिए।

जलोदर :

1. अर्क पत्र स्वरस 1 किलो में 20 ग्राम हल्दी चूर्ण मिला मंद अग्नि पर पका कर जब गोली बनाने लायक हो जायें तो नीचे उतारकर चने जैसी गोलियाँ बना लें, 2–2 गोली दोनों समय

सौंफ कासनी आदि अर्क के साथ दे, तथा जल के स्थान पर यही अर्क पिलावे।

2. आक के ताजे हरे पत्ते 250 ग्राम और हल्दी 20 ग्राम दोनों को महीन पीस उड़द के आकार की गोलियाँ बना लें। पहले दिन ताजे जल के साथ 4 गोली, फिर दूसरे दिन 5 और 6 गोली तक बढाकर घटाये यदि लाभ हो तो पुनः उसी प्रकार घटाते बढ़ाते है, अवश्य लाभ होगा। पथ्य में दूध, साबूदाना व जौ का यूष देवे।

3. आक के 8–10 पत्तों को सैंधा नमक के साथ कूट मिट्टी के बरतन में बन्द कर जला कर 250 मिलीग्राम भस्म को सुबह, दोपहर, शाम छाछ के साथ सेवन करने से जलोदर मिटता है। तिल्ली आदि अंग जो पेट में बढ़ जाया करते है, सब अपने स्थान पर आ जाते है।

रक्त अतिसार : छाया शुष्क एवं महीन पीसकर कपड़छन की हुई अर्कमूल की छाल, ठंडे जल के साथ 50 से 125 मिलीग्राम ग्रहण करने से अवश्य लाभ होगा।

अजीर्ण : आक के निथारे हुये पत्र स्वरस में समभाग घृत कुमारी का गुदा व शक्कर मिलाकर पकावें। शक्कर की चाशनी बन जाने पर ठंडा कर बोतल में भर लें तथा आवश्यकतानुसार 2 से 10 ग्राम की मात्रा में सेवन करायें। यह 6 मास के बच्चे से 9–10 साल के बच्चों तक अनेक रोगों में अचूक दवा है।

पांडु (कामला) :

1. आक के 24 पत्ते लेकर, 50 ग्राम मिश्री मिलाकर खरल में घोटकर मिश्रण तैयार कर लें। फिर चने जैसी गोलियाँ बना लें। दिन में 3 बार वयस्कों को दो गोली सेवन कराने से सात दिन में पूर्ण लाभ होता है। तेल, खटाई मिर्च आदि से परहेज रखें।

2. अर्कमूल की छाल डेढ़ ग्राम और काली मिर्च 12 नग पुनर्नवा मूल 2–3 ग्राम, पानी में घोट–छानकर दिन में दो बार पिलावें। गर्म और स्निग्ध वस्तुओं से परहेज रखें।

3. आक का पका पत्र 1 नग साफ पोछकर उस पर 250 मि॰ग्रा॰ चूना लगा कर बारीक पीस लेवें और चने के आकार की गोलियाँ बनाकर दो गोली रोगी को प्रातः काल पानी से निगलवा दें। पथ्य के रूप में दही तथा चावल लेना चाहिये।

4. आक की कोपल 1 नग, सुबह निराहार पान के पत्ते में रखकर चबाकर खाने से 3–5 दिन में कामला ठीक हो जाता है।

भगन्दर आदि नाड़ी व्रणों पर :

1. आक का 10 मि॰ली॰ दूध और दारुहल्दी का 2 ग्राम महीन चूर्ण, दोनों को एक साथ खरल कर बत्ती बना व्रणों में रखने से शीघ्र लाभ होता है।

2. आक के दूध में कपास की रुई भिगोकर छाया शुष्क कर बत्ती बनाकर, सरसों के तैल में भिगोकर व्रणों पर लगाने से लाभ होता है।

अंड कोष की सूजन :

1. 8–10 ग्राम आक की छाया शुष्क छाल को कांजी के साथ पीसकर लेप करने से पैर और फोतों की गजचर्म के समान मोटी पड़ी हुई चमड़ी पतली हो जाती है।[6]

2. अर्क के 2–4 पत्तों को तिल्ली के तैल के साथ पत्थर पर पीसकर मलहम सा बना फोड़े, अंड कोष के दर्द में चुपड कर लंगोट कस देने से शीघ्र आराम होता है।

3. इसके पत्तों पर एरंड तैल चुपडकर फोडो पर बांधने से पित्तशोथ मिटता है।

मूत्राघात : आक के दूध में बबूल की छाल का थोड़ा रस मिलाकर नाभि के आसपास और पेडू पर लेप करने से मूत्राघात दूर होता है।

हैजा :

1. आक की जड़ की छाया शुष्क छाल 2 भाग और काली मिर्च 1 भाग, दोनों को कूट छानकर अदरक के रस में अथवा प्याज के रस में खरलकर चने जैसी गोलियाँ बना लें। हैजे के दिनों में इनके सेवन से हैजे से बचाव होता है। हैजा का आक्रमण होने पर 1–1 गोली 2–2 घंटे में देने से लाभ होता है।

2. आक के बिना खिले फूल 10 ग्राम तथा भुना सुहागा, लौंग, सौंठ, पीपल और काला नमक 5–5 ग्राम इन्हें कूट–पीसकर 125 मिलीग्राम की गोलियाँ बना लें और थोडी–थोडी देर में 1–1 गोली सेवन करना है। विशेष अवस्था में 4–4 गोली एक साथ देना है।

3. आक के फूल 10 ग्राम, भुना सुहागा 4 ग्राम, काली मिर्च 6 ग्राम, इनको ग्वारपाठा के गूदे में खरलकर चने जैसी गोलियाँ बना लें। 1–1 गोली अर्क गुलाब से देना है।

4. आक के फूलों की लौंग और काली मिर्च 10–10 ग्राम और शुद्ध हींग 6 ग्राम इन्हें अदरक के रस की 10 भावनायें देकर उड़द जैसी गोलियाँ बना रखें। प्रत्येक उल्टी–दस्त के बाद 1–1 गोली अदरक, पोदीना या प्याज के रस के साथ सेवन कराने से तत्काल लाभ होता है।

5. आक के पीले पत्ते जो झडकर स्वयं नीचे गिर गये हो, 5 नग लेकर आग में जला देवें। जब ये जलकर कोयला हो जाये तो कलईदार बर्तन में आधा किलो पानी में इन्हें बुझा दें। यह पानी रोगी को थोड़ा–थोड़ा करके, जल के स्थान पर पिलावें।

बवासीर :

1. आक के कोमल पत्रों के सम भाग पांचों नमक लेकर, उसमें सबके वजन से चौथाई तिल का तैल और इतना ही नींबू रस मिला पात्र के मुख को कपड़ मिट्टी से बन्दकर आग पर चढ़ा दें। जब पत्र जल जाये तो सब चीजों को निकाल पीस कर रख लें। 500 मिलीग्राम से 3 ग्राम तक आवश्यकतानुसार गर्म जल, काँजी, छाछ या मद्य के साथ सेवन कराने से बादी बवासीर नष्ट हो जाती है।

2. तीन बूंद आक के दूध को राई पर डालकर और उस पर थोड़ा कूटा हुआ जवाखार बुरक कर बताशे में रखकर निगलने से बवासीर बहुत जल्दी नष्ट हो जाती है।
3. हल्दी चूर्ण को आक के दूध में सात बार भिगोकर सुखा लें, फिर अर्क दुग्ध द्वारा ही उसकी लम्बी–लम्बी गोलियाँ बना छाया शुष्क कर रखें। प्रातः–सायं शौच कर्म के बाद थूक में या जल में घिसकर मस्सो पर लेप करने से कुछ ही दिनों में वह सूखकर गिर जाते है।
4. शौच जाने के बाद आक के दो चार ताजे पत्ते तोडकर गुदा पर इस प्रकार रगड़े कि मस्सो पर दूध ना लगे, केवल सफेदी ही लगे। इससे मस्सों में लाभ होता है।

उपदंश :

1. श्वेत अर्क की छाया शुष्क मूल छाल का 1 से 2 ग्राम चूर्ण दो चम्मच शक्कर के साथ सुबह–शाम सेवन करने से उपदंश और रक्त कुष्ठ में लाभ होता है।
2. इसके 8–10 पत्तों को आधा किलो पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ से उपदंश के ब्राण धोयें। छाल को पानी में पीसकर लगाना चाहिये व 2–3 ग्राम छाल का सेवन करना चाहिये। इससे उपदंश में आशातीत लाभ होता है।
3. मलमल के डेढ फुट लम्बे और 4 अंगुल चौड़े कपड़े को आक के दूध में 21 बार भिगोकर सुखा लें। फिर इसको मिट्टी के बरतन में रखकर भस्म बना लें। तीन चावल बराबर भस्म को पान में रखकर देने से सात दिन में लाभ होता है। मिर्च मसाले से परहेज रखे और घी का अधिक सेवन करें।
4. अर्कमूल की छाल 1 भाग, काली मिर्च आधा भाग, इन दोनों को महीन पीसकर 10 भाग गुड़ मिला चने जैसी गोलियाँ बनाकर रख लें। रोगी को पहले जुलाब देकर 1 या दो गोली पानी के साथ सुबह–शाम सेवन करावें।
5. छाया शुष्क अर्कमूल त्वक के चूर्ण में समभाग खांड मिलाकर रखे, 1 से 2 ग्राम तक ताजे जल के साथ सेवन करावें।
6. आक की छाल तथा आक की कोंपले या छोटी–छोटी कोमल पत्तियाँ 50–50 ग्राम इन दोनों को 200 ग्राम आक के दुग्ध में पीसकर गोला बनाकर मिट्टी के पात्र में मुंह बन्दकर रखकर 5 कि.ग्रा. कंडों की आंच में फूंक कर भस्म बना लें। अब निकाल कर मटर जैसी छोटी–छोटी गोलियाँ बनाकर एक–दो गोली पानी के साथ लेने से भगंदर व नासूर में लाभ होता है।
7. लाल आक की जड़ की छाल 2 भाग तथा सत्यानाशी की जड़ की छाल और अपामार्ग मूल छाल 1½ भाग चूर्ण कर धूम्रपान विधि के अनुसार पीने से उपदंश में लाभ होता है।

नपुंसकता और ध्वज भंग पर :

1. छुआरों के अन्दर की गुठली निकाल कर उनमें आक का दूध भर दें, फिर इनके ऊपर आटा लपेट कर पकावें, ऊपर का आटा जल जाने पर छुआरों को पीसकर मटर जैसी गोलियाँ बना लें, रात्रि के समय 1–2 गोली खाकर तथा दूध पीने स्तम्भन होता है।
2. आक की छाया शुष्क जड़ के 20 ग्राम चूर्ण को आधा कि दूध में उबालकर दही जमाकर घी तैयार करें, इसके सेवन नामर्दी दूर होती है।
3. आक दूध असली मधु और गाय का घी, समभाग 4–5 घ खरल कर शीशी मे भरकर रख लें, इन्द्री की सीवन औ सुपारी को बचाकर इसकी धीरे–धीरे मालिश करें और ऊप से खाने का पान और एरण्ड का पत्ता बांध दें, इस प्रका सात दिन मालिश करें। फिर 15 दिन छोड़कर पुनः मालिश करने से शिश्न के समस्त रोगों में लाभ होता है।

योनि रोग :

1. योनि सुदृढ़ करने के लिए आक की जड़ के चूर्ण को भांगरे के रस में 2–3 बार अच्छी तरह खरल करके मटर के बराबर गोलियां बनाकर 1–1 गोली सुबह–शाम गर्म पानी या दूध के साथ सेवन करने से योनि सुदृढ़ होती है, इससे मासिक धर्म भी ठीक होने लगता है। पर जिन्हें रक्त प्रदर हो उन्हें सेवन नहीं करना चाहिए।
2. कफ दूषित योनि हो तो उड़द के 100 ग्राम आटे में थोड़ा सैंधा नमक मिलाकर उसमें आक के दूध की सात भावनाये देकर छोटी–छोटी बत्तियां बना लें। इसका प्रयोग योनि–मार्ग में करें, तथा उचित मात्रा में जल के साथ सेवन करें। इससे निश्चित ही लाभ होगा।

बाँझपन : सफेद आक की छाया में सूखी जड़ को महीन पीस, 1–2 ग्राम की मात्रा में 250 ग्राम गाय के दूध के साथ सेवन करावें। शीतल पदार्थो का पथ्य देवें। इससे बन्द ट्यूब व नाडियां खुलती हैं, व मासिक धर्म व गर्भाशय की गांठों में भी लाभ होता है।

पैरों के छाले : पैदल यात्रा करने से जो छाले आदि हो जाते हैं, इसके दूध को लगाने मात्र से दूर हो जाते है।

पैरों के फोड़े : एक ईंट को गरम करके उस पर 6–7 आक के पत्ते रखकर, पैर को सेंकने से पैर के फोडे नष्ट हो जाते है।

पार्श्व शूल : आक के दूध में थोड़े से काले तिलों को खूब खरल कर जब पतला सा लेप सा हो जाये तो उसे गरम कर पसली के दर्द स्थान पर लेप कर दें और ऊपर से आक के पत्तों पर तिल का तेल चुपड कर तवे पर गरम कर उस स्थान पर पट्टी से बांधने पर शीघ्र लाभ होता है।

गठिया या आमवात पर :

1. आक का फूल, सौंठ, काली मिर्च, हल्दी व नागरमोथा समभाग लें। इन्हें जल के साथ महीन पीसकर चने जैसी गोलियाँ बना लें। 2–2 गोली प्रातः–सायं जल के साथ सेवन करें।
2. आक के 2–4 पत्तों को कूटकर पोटली बना, घी लगाकर तवे पर गरम कर सेंक करें। सेकने के पश्चात् आक के पत्तों पर घी चुपड़कर गरम कर बांध दें।

उरू स्तम्भ : आक की जड़ को घिस कर लेप करें।

लकवा : आक (मोटी कूटी हुई) की आधा किलोग्राम जड़ों को 4 किलो ग्राम पानी में पकावें, एक किलो पानी शेष रहने पर छान लें। उसमें समभाग मिश्री तथा 6–6 ग्राम पीपल, वंश लोचन, इलायची, काली मिर्च और मुलेठी का चूर्ण मिलाकर मंद आंच पर शरबत तैयार कर लें। मात्रा 1–2 ग्राम तक यह कास श्वास, कफ, वातरोग, हाथ–पैर का दर्द, उदर रोग और लकवे को भी दूर करता है।

वात पीड़ा :

1. आक की जड़ की छाल 1 भाग काली मिर्च, कुटकी और काला नमक 1–1 ग्राम सबको मिलाकर जल के साथ महीन पीसकर चने जैसी गोलियाँ बना लें। किसी भी अंग में वातजन्य पीड़ा हो तो प्रातः–सायं 1–1 गोली उष्ण जल के साथ सेवन करें।
2. आक की एक किलो जड़ों (छाया में सुखाई हुई) को जौ कूटकर 8 किलो जल में पकावें। दो किलोग्राम शेष रहने पर उसमें 1 किलो एरण्ड तैल मिलाकर पकावें। तैल मात्र शेष रहने पर छानकर शीशी मे भरकर रख लें, इसकी मालिश से भी शीघ्र लाभ होता हैं।
3. वात रोगी को आक की रूई से भरे वस्त्र पहनने तथा इसकी रूई की रजाई व तोसक मे सोने से बहुत लाभ होता है। वात व्याधि वाले एकांग स्थान पर वायुनाशक तेल की मालिस कर ऊपर से इस रूई को बांधने से बहुत लाभ होता है।

वातगुल्म : आक के पुष्पों की कलियाँ 20 ग्राम, अजवायन 20 ग्राम इन दोनों को खूब महीन पीस उसमें 50 ग्राम खांड मिलाकर रखे, 1–1 ग्राम तक प्रातः–सायं जल के साथ सेवन करें।

व्रण : व्रण और रक्तस्राव पर आक की रूई बहुत लाभकारी है। जो क्षत या व्रण दुःसाध्य हो, अर्थात किसी भी प्रकार से न भरता हो, उसमें इस रूई को रखकर बांध देना चाहिये, तथा प्रतिदिन व्रण को साफ कर रूई को बदलते रहने से थोड़े ही दिनों में वह भर जाता है। जिस क्षत से खून बह रहा हो, उस पर इस रूई को रखकर बांध देने से शीघ्र ही रक्तस्राव रूक जाता है। ताजी रुई शीघ्र लाभकारी होती है।

दाद :

1. आक के दूध में समभाग शहद मिलाकर लगाने से दाद शीघ्र ही नष्ट हो जाता है।
2. आक की जड़ 2 ग्राम चूर्ण को 2 चम्मच दही में पीसकर लगाते रहने से भी दाद में लाभ होता है।

खाज (पामा, छाजन) :

1. आक का पुष्प गुच्छ तोड़ने पर जो दूध निकलता है उसमें नारियल का तेल मिलाकर लगाने से खुजली शीघ्र दूर होती है। पामा, उकवत, छाजन तो इसे दूर से ही नमस्कार करती है।
2. आक का दूध 100 ग्राम, तिल या सरसों का तैल 400 ग्राम, हल्दी चूर्ण 200 ग्राम, और मैनसिल 15 ग्राम लें। प्रथम मैनसिल और हल्दी को खरल कर लें, फिर दूध मिलाकर लेप सा बना ले। अब इसमें तैल और 2 किलो जल मिलाकर तैल सिद्ध कर ले, इस तैल के लगाने से खाज, खुजली, पामा आदि चर्म रोग दूर होते हैं, अर्श के मस्सो पर बराबर लगाने से वे सूखकर झड़ जाते हैं।
3. आक के पत्रों का रस 1 किलो, हल्दी चूर्ण 50 ग्राम, और सरसों तैल आधा किलो मंद अग्नि पर पकावें। तैल मात्र शेष रहने पर छान कर शीशी में भर लें। इसकी मालिश से खाज, खुजली आदि नष्ट होते है। 2–4 बूंद कान में टपकाने से कर्णशूल मिटता है।
4. आक के ताजे पत्तों का रस 1 कि.ग्राम., गाय का दूध 2 कि.ग्रा., सफेद चन्दन, लाल चन्दन, हल्दी, सौंठ और सफेद जीरा 6–6 ग्राम इनका कल्क कर 1 कि. ग्रा. घी में पकावें। घी मात्र शेष रहने पर छानकर रख लें। मालिश करने से खुजली–खाज आदि में लाभ होता है।
5. 10 ग्राम आक के दूध को 50 ग्राम सरसों के तैल में पकावें। तैल मात्र शेष रहने पर या दूध के जल जाने पर सुरक्षित रख लें। इस तैल की दिन में 2 बार मालिश करे, और तीन घंटे तक स्नान न करें। कुछ दिनों में ही पूर्ण लाभ होता है।
6. आक का दूध ताजा, व सुखाया हुआ 1 भाग 100 बार जल से धोया हुआ गाय का मक्खन खूब खरल करके मालिश करें व 2 घंटे तक शीत जल व शीत वायु से रोगी को बचाये रखें।
7. आक के 21 पत्ते 125 ग्राम सरसों के तैल में जलाकर फिर उसमें थोड़ा मैनसिल घोट कर रख लें। इसकी मालिश से भी उत्तम लाभ होता है।
8. इसका दूध छाया में सुखाकर व कड़वे तैल में मिलाकर जलाकर मालिश करने से खुजली आदि में लाभ होता है।

आक का सूखा फूल

सफेद फूल वाला आक (श्वेतार्क)

जख्म :

1. इसके 4–5 पत्रों को सुखाकर उनको कूट–छानकर खराब जख्मों पर बुरकने से दूषित मांस दूर होकर स्वस्थ मांस पैदा होता है।
2. श्वेत मदार की 5 ग्राम जड़ को 20 ग्राम नीबू के रस में लोहे की कुदाल पर घिसकर क्षत पर लेप कर देने से सैंकड़ों योगो से असाध्य क्षत का भी रोपण हो जाता हैं।[5]
3. आक की जड़ों के पास की गीली मिट्टी लाकर टिकिया बनाकर, अत्यन्त वेदनायुक्त तथा कीड़े पड़े हुये जख्म पर बांध देने से अन्दर के कीड़े ऊपर टिकिया के भीतर आकर मर जाते है और जख्म धीरे–धीरे अच्छे हो जाते हैं। पशुओं पर यह प्रयोग अनेकों बार सफल हुआ है।

श्लीपद :

1. अर्कमूल की छाल 10 ग्राम, त्रिफला चूर्ण 10 ग्राम, एक साथ आधा किलो जल में अष्टमांस क्वाथ सिद्ध कर प्रतिदिन प्रातः उसमें 1 ग्राम मधु और 3 ग्राम मिश्री मिलाकर सेवन करावे और साथ ही अर्क मूल को छाछ में पीसकर श्लीपद पर गाढा लेप करें, 40 दिन में पूर्ण लाभ होता है।
2. अर्कमूल छाल और अडूसा की छाल को कांजी के साथ पीस कर लेप करें।

आघातजन्य शोथ युक्त व्रणों पर : आक की पत्र रहित शाखा को कूटकर ऊपर का छिलका 40–50 ग्राम लेकर खूब रगड़ ले, और टिकिया बना कलछी में थोड़ा गरम कर व्रण के मुख पर बांध दे, 2–3 बार बांधने से पूर्ण लाभ होता है।

व्रण ग्रन्थि, गलगंड, नारू आदि पर :

1. आक के पत्तों का रस 1 किलो, कच्ची हल्दी का रस 125 ग्राम और तिल तैल 250 ग्राम एकत्र मिलाकर पकावें। तैल मात्र शेष रहने पर छानकर रख लें, दुष्ट व्रण, बिगड़े हुये फोड़े अच्छे हो जाते है। उपदंश के व्रणों पर यह योग उत्तम कार्य करता है।
2. आक की जड़ की छाल का 2–5 ग्राम महीन चूर्ण को जिस व्रण से पूय निकलता रहता हो, अन्दर सड़ान होने से दुर्गन्ध आती हो उस पर बुरकने से 2–4 दिन में सड़ा हुआ मांस निकलकर वह स्वस्थ हो जाता है। फिर कपूर राल, सिंदूर आदि का मलहम लगाने से वह शीघ्र भर जाता है।
3. 2 ग्राम अर्कमूल चूर्ण को 10 मिलीलीटर नारियल तैल या घी में मिलाकर लगावें।
4. आक का दूध और गाय का घी समभाग मिश्रण कर दिन में 2–3 बार लगावें।

बंद ग्रन्थि पर :

1. आक के दूध मे सफेद उशारेबन्द थोड़ा–थोड़ा मिला दिन में 2–3 बार लेप करते रहने से 3–4 दिन में कच्ची गांठ बैठ जाती है।
2. आक के 2–2 पत्तों पर एरंड तैल चुपडकर गरम कर बांधने से बंद गन्थि बैठ जाती है, या फट जाती है।

नारू :

1. नारू पर आक के कोमल पत्र 7 नग और गुड़ 50 ग्राम दोनो को कूट कर जंगली बेर जैसी गोलियाँ बना लें। 1–1 गोली करके दिन में तीन बार पानी के साथ सेवन करावें।
2. आक के 8–10 फूलों को पीस पुल्टिस बना बांधने से या दूध का लेप करने से नहरूवा निकल जाता है।

अग्नि दग्ध व्रण पर :

1. आक की 3 ग्राम जलाई हुई रूई को 10 ग्राम तिल्ली तैल

में खरल कर 10 ग्राम निथरे हुये चूने के पानी में मिला दें। इसको दग्ध स्थान पर रखें, या कपड़ा तर कर रखें। यदि व्रण में सूजन आ गई हो तो उक्त मिश्रण में 250 मिलीग्राम अफीम घोल कर पिला दें।

2. आक की जली हुई रूई बुरकने से भी लाभ होता है।

कुष्ठ :

1. आक की सूखी हुई जड़ 2 ग्राम यव् कूट कर 400 ग्राम जल में पकाकर 50 ग्राम शेष रहने पर सेवन करने से गलित कुष्ठ की पूर्वावस्था में जबकि हाथ पैरो की अंगुलियाँ मोटी हो गई हो, कानो की बालियाँ बैडोल, नासिका का अग्रभाग लाल रंग, क्षत शरीर के किसी भी भाग में हो और वे ठीक न हो तब लाभकारी है।
2. आक का दूध 125 से 375 मि॰ ग्रा॰ की मात्रा में नित्य शहद के साथ दिन में 3 बार सेवन करें।
3. आक के छाया शुष्क मूल त्वक का चूर्ण 250 मिलीग्राम, शुंठी चूर्ण 250 मिलीग्राम, शहद के साथ नित्य तीन बार सेवन कराये, साथ ही छाल को सिरके में पीसकर पतला–पतला लेप करते रहे, यह प्रयोग लम्बे समय तक करें।
4. आक के छाया शुष्क पुष्पों का महीन चूर्ण बनाकर आधा ग्राम सुबह–शाम ताजे जल से सेवन करने से कुष्ठ में लाभ होता है। कोमल प्रकृति वालों को इसकी मात्रा कम लेनी चाहिए।
5. आक के 10–20 फलों को बिना अग्नि में तपाये हुये मिट्टी के बरतन में भरकर, मुँह बन्द कर उपलो की आग में फूंक दें। ठंडा होने पर अन्दर से भस्म को निकाल कर सरसों के तेल में मिलाकर लगायें। यह गलित कुष्ठ की प्रथम अवस्था में उपयोगी है।

कपाल कुष्ठ : आक के क्षार को ईख के रस के साथ मिलाकर लेप करने से लाभ होता है।

श्वेतकुष्ठ : आक के 20 मिलीलीटर दूध के साथ 5 ग्राम बावची और आधा ग्राम हरताल के चूर्ण को पीस कर लेप करें।

उदरशूल :

1. आक की छाया शुष्क मूलत्वक के महीन चूर्ण में समभाग त्रिफला, सेंधा नमक व महीन सौंफ चूर्ण मिलाकर 1 ग्राम की मात्रा में 2–3 बार जल के साथ सेवन करें।
2. आक के फूलों को सुखाकर, चूर्णकर आक के पत्र स्वरस में तीन दिन खरल कर अजवायन, सौंफ, बराबर मात्रा में मिलाकर चने जैसी गोलियाँ बना लें, 2 गोली गरम जल के साथ निगलने से कठिन से कठिन उदर शूल छूमन्तर हो जाता है। यदि आराम न हो तो 2 गोलियाँ और दें।
3. आक के शुष्क पुष्प 100 ग्राम और जड़ की छाल 50 ग्राम दोनों को खूब महीन पीस आक के पत्तों का रस मिला और खरल कर 65 मिलीग्राम की गोलियाँ बना लें। 1 से 4 गोली सौंफ के अर्क या गरम जल के साथ सेवन करने से उदरशूल एवं वात सम्बन्धी रोग नष्ट होते है।
4. अर्क पुष्प की लौंग 125 मिलीग्राम और मिश्री 25 ग्राम, दोनो को महीन पीस एक गोली बना, गरम जल से निगल लेने से उदर शूल बन्द हो जाता है।
5. पुराना अपचन या अजीर्ण रोग हो, दूषित डकारें आती हों, उदर में भारीपन हो, भोजन में अरूचि हो मलावरोध हो तो आक लवण का 250 से 500 मिलीग्राम की मात्रा में सेवन लाभदायक है। आक के पत्तों में समान भाग सैंधा नमक मिला, दोनों को मिट्टी के बरतन में भर मुख बन्द कर ऊपर से कपड़ मिट्टी कर आग में फूक दें। ठंडा होने पर अन्दर की औषधि को शीशी में भरकर रख लें। 250 मिलीग्राम से 1 ग्राम की मात्रा में सेवन करावें, यह गुल्म प्लीहा आदि उदर रोग नाशक है।
6. आक की जड़ की ताजी छाल और अदरक 1–1 ग्राम, काली मिर्च और सैंधा नमक आधा–आधा भाग सबको महीन पीस मटर जैसी गोलियाँ बना, छाया शुष्क करके 1 या दो गोली अर्क पुदीना के साथ दें।
7. पेट में जहां तीव्र वेदना हों, उस स्थान पर आक के 2–3 पत्तों पर पुराना घी चुपड और गर्म कर रखे, और थोड़ी देर के लिये वस्त्र से बांध देवें।

संवेदन शून्यता (सूनापन) :

1. आक के 8–10 पत्रों को 250 ग्राम तैल में तलकर, तेल की मालिश करने से अंग के सूनापन में लाभ होता है।
2. आक के दूध को कांच या चीनी के पात्र में रख, उसमें माल कांगनी का तैल मिलाकर मालिश करने से अर्धागवात, अर्दित, सूनापन आदि में विशेष लाभ होता है।

ज्वर :

1. आक की नई कोपल डेढ़ नग, आक के पुष्प की बन्द कली 1 नग दोनों को गुड़ में लपेट गोली बना, ज्वर वेग के 2 घंटे पूर्व सेवन कराने से ज्वर वेग रूक जाता है।
2. छाया शुष्क अर्क मूल छाल का महीन चूर्ण 2 भाग और काली मिर्च का चूर्ण 1 भाग दोनों को गाय के दूध या बड़ के दूध में खरल कर चने जैसी गोलियाँ बना रखें, ज्वर वेग से एक डेढ़ घंटा पूर्व 1 या दो गोली पानी से खिलावें।
3. आक का दूध 1 भाग और मिश्री 10 भाग दोनों को 12 घंटे खरल कर शीशी मे भर कर रखें, 65 मिलीग्राम से 250 मि॰ग्रा॰ तक उष्ण जल के साथ सेवन करने से लाभ होता है। यह मलेरिया ज्वर के लिये कुनैन से भी बढ़कर लाभकारी हैं। इससे ज्वर की बारी रूकती है तथा चढ़ा हुआ ज्वर उतरता है।
4. आक मूल छाल की भस्म 1 भाग, शक्कर 6 भाग दोनो को भली प्रकार खरल करें। ज्वर वेग से 2 घंटे पूर्व 500 मिलीग्राम से 1 ग्राम तक ताजे जल के साथ सेवन करें।
5. आक के पीले पत्तों को कोयलों की आग पर जला भस्म करें, यह भाग 500 मिलीग्राम शहद के साथ चटावें।

6. आक का दूध 4 बूंद, कच्चे पपीते का रस 10 बूंद और चिरायते का रस 15 बूंद मिश्रण को दिन में 3 बार गौमूत्र से सेवन करने पर 3 दिन में ही बिगड़ा हुआ मलेरिया ठीक हो जाता है।

प्लीहा आदि यकृत रोगों पर : आक का पत्ता एक इंच चौकोर महीन कतरकर 50 ग्राम जल में पकावें। जब आधा जल शेष रह जाने पर उसमें सैंधा नमक 125 मि०ग्रा० मिला, तीन वर्ष तक के बालक को 7 दिन तक पिलावें। पथ्य में खिचड़ी चावल, छाछ, कांजी, यूष आदि दें।

डब्बा रोग :

1. अर्क पत्र का रस 10 बूंद तक उसमें 30 मिलीग्राम सैंधा नमक मिला पिला देने से उल्टी–दस्त होकर बालकों का डब्बा रोग शीघ्र शांत हो जाता है। पेट में अफारा हो तो गर्म तेल लगाकर आक पत्र से सैंक देवें।
2. छोटे बच्चों को जिन्हें कफ, सर्दी ज्यादा हो जाये और कोई भी दवा न दी जा सकें (शिशु इतना छोटा हो), तब आक रूई से भरे गद्दे तकिये पर लिटाने से ही बालको का सर्दी जुकाम दूर हो जाता है।

ततैया :

1. आक के पत्रों के पीछे जो खार की तरह सफेदी जमी होती है, उस पर मैदा या आटे की लोई घुमाकर उतार लें, तथा लोई की काली मिर्च जैसी गोलियाँ बना लें। प्रातः–सायं 1–1 गोली निगलवा कर निराहार 15 दिन तक थोड़ा घी और शक्कर खिलावें।
2. अर्कमूल के 400 मिलीग्राम छाल चूर्ण में, 2 ग्राम गुड़ मिला प्रातः सायं 40 दिन तक सेवन करायें। प्रत्येक आठवें दिन जुलाब देते रहें। तैल खटाई आदि वातकारक पदार्थो से परहेज करें।

स्थावर विषों पर : 2–3 ग्राम आक की जड़ को शीतल जल के साथ घिसकर दिन में 3–4 बार पिलावें।

पारे के विष पर : आक की लकड़ी का कोयला समभाग मिश्री के साथ पीसकर 6 ग्राम प्रतिदिन सेवन करने से शरीर में रूका हुआ कच्चा पारा पेशाब के रास्ते निकल जाता है।

अर्कमूल चूर्ण बनाने की विधि : बालू रेत में पैदा हुये पुराने अर्क की जड़ चैत्र–वैशाख में लें, उसे जल से भली–भांति स्वच्छ कर छाया में इतनी देर पड़ी रहने दें कि उसमें चीरा देने से दूध निकलना बन्द हो जाये। अब इसके ऊपर के छिलके को चाकू से खुरचकर अन्तर छाल को छाया में सुखा, महीन चूर्ण बनाकर शीशियों में भरकर रखना चाहिये तथा ज्वर के वेग के रोकने के लिये, तीनों प्रकार के कुष्ठ, उपदंश, अतिसार, रक्त अतिसार, आम अतिसार, पुरानी गठियाँ, चर्म रोग, कफ, जलोदर, सर्वांग शोथ और प्रारम्भ के फोड़ों को मिटाने के लिये इस चूर्ण का प्रयोग करना चाहिये।

हानि : आक का पौधा विषैला होता है। इसके दूध का अधिक मात्रा में सेवन करने से उल्टी–दस्त होकर मनुष्य मृत्यु को प्राप्त हो सकता है। अतः इसका उपयोग सावधानी पूर्वक करना चाहिये।

दर्पनाशक : घी और दूध अर्क प्रयोग से होने वाले हानिकारक प्रभाव को शान्त करते हैं।

प्रतिनिधि : इपीकोना और अनन्त मूल इसके प्रतिनिधि द्रव्य है।

1. अर्कद्वयं सरं वातकुष्ठ कंडू विष व्रणान्।
   निहन्ति प्लीहगुल्मार्शः श्लेष्मोदर शकृत्क्रिमीन्। (भाव प्रकाश)
2. अलर्क कुसुमं वृष्यं लघु दीपन पाचनम्।
   अरोचक प्रसेकार्शः कास श्वास निवारणाम्।। (भाव प्रकाश)
3. रक्तार्क पुष्पं मधुरं सतिक्तं कुष्ठक्रिमिघ्नं कफ नाशनं च।
   अर्शो विषं हन्ति च रक्तपित्तं संग्राहि गुल्मे श्वयथौ हितंतत्।।
4. भगवन् भास्कर क्षीरा पामाऽहमभिवन्दये।
   यत्र देशे भवानप्राप्तस्तद्वेश न व्रमाभ्यहम्।। (वैद्य मनोरमा)
5. लौह कुदालके धृष्टवा लिम्पा कलथारिणा।
   श्वेतार्क सम्भवमूलं लेपं दद्यात् क्षतोपरि।।
6. निषिष्त ह्यारनालेन रूचिका मूल वल्कलम्।
   प्रलेपाच्छलो पादं हन्ति बहमूलमीयछदम्।।
   (भैषज्य रत्नावली)
7. अरूषिं बहुवक्त्राणी बहुक्लेदीनि मूर्छ्निनतु।
   कफास्मककृमि कोपेन नृणां विद्यादरूषिकाम्।। (भाव प्रकाश)

2 आम

वैज्ञानिक नाम	:	*Mangifera indica* L.
कुलनाम	:	Anacardiaceae
अंग्रेजी नाम	:	Mango
संस्कृत	:	आम्र, फलश्रेष्ठ, कामसर, पिकवल्लभ, रसाल
हिन्दी	:	आम
गुजराती	:	आंबो, अमरी
मराठी	:	मावु, माविनमरा
बंगाली	:	आम्र
अरबी	:	अंबज
फारसी	:	अंबज
तैलगु	:	मावि
पंजाबी	:	अंब

परिचय

आम भारतवर्ष एवं पूर्वी द्वीप समूह का आदिवासी पौधा है। यह ग्रीष्म जलवायु का वृक्ष है। हिमालय पर भूटान से कुमायुँ तक इसके जंगली वृक्ष पाये जाते है, सम्पूर्ण भारतवर्ष में इसके वृक्ष लगाये जाते है और फलते फूलते है। आम की अनेक किस्में पाई जाती है, जो पौधे गुठली बोकर उत्पन्न किये जाते है उन्हें देशी या बीजू आम, और जो उन्नत जाति के आम के वृक्षों की शाखाओं पर कलम बांधकर तैयार किये जाते हैं वे कलमी आम कहलाते हैं। इनके अतिरिक्त देश, स्थान, आकार, रंग, रूप भेद से इनकी अनेक किस्में मिलती है। देशी आम में रेशा होने से इसका रस पतला होता है, चूसकर खाने के काम में आता है, परन्तु कलमी आम में फल का गूदा अधिक होता है अतः काटकर खाया जाता है। औषधि प्रयोग हेतु कलमी की अपेक्षा चूसने वाले बीजू आम ज्यादा गुणकारी होते है।

बाह्य–स्वरूप

इसका वृक्ष 30 से 120 फुट तक ऊँचा होता है पत्र 4–12 इंच लम्बे, 1–3 इंच चौड़े, भालाकार, आयताकार, तीक्ष्णाग्र होते है, जिनके मसलने पर सुगंध आती है पुष्प छोटे हरित पीत मंजरी में आते है, जिससे मादक सुगन्ध आती है। फल अंडाकृति के कच्चे में हरे तथा पकने पर पीताभ या रक्ताभ हो है, फल के भीतर बड़ी गुठली (बीज) तथा उसके भीतर बीज होती है। बसन्त में पुष्प तथा ग्रीष्म वर्षा में फल लगते है।

रासायनिक संघटन

फल में अन्य तत्वों के अतिरिक्त विटामिन ए, बी और सी मात्रा में पाये जाते हैं।

गुण–धर्म

बीज मज्जा–कफपित्त शामक, स्तम्भन, मूत्र संग्रहणीय रक्तरोध व्रणरोपण। कच्चा फल–त्रिदोषकारक आग में भुना हुआ कच्चा फल–दाह प्रशमन, रोचन, दीपन, रक्तपित्त हर, शोषक। पका फल वात पित्त शामक, स्नेहन अनुलोमन, सारक हृद्य, शोणीतस्थापन वृष्य, बल्य, वर्ण्य, बृंहण।

आम का बौर (फूल) : शीतल, वातकारक, मलरोधक, अग्नि दीपक, रूचिकारक तथा कफ, पित्त, प्रमेह और कफनाशक है।

आम की जड : कसैली, मलरोधक, रूचिकारक तथा वात पित्त और कफ को हरने वाली है।

आम की गुठली : किंचित कसैली, वमन अतिसार और हृदय शूल की पीड़ा को दूर करती है।

आम बीज तेल : आम की गुठली का तेल कसैला, स्वादिष्ट, रूक्ष कड़वा तथा मुखरोग, कफ एवं वात को दुरूस्त करता है।

औषधीय प्रयोग

केशकल्प : आम की गुठलियों के तेल को लगाने से सफेद बाल काले हो जाते है, तथा काले बाल जल्दी सफेद नहीं होते है। बाल झड़ना व रूसी में भी इससे लाभ होता है।

स्वरभंग : आम के 40 ग्राम पत्तों को 400 ग्राम पानी में उबालकर चतुर्थांश शेष क्वाथ में मधु मिलाकर धीरे–धीरे पीने से स्वरभंग में लाभ होता है।

खांसी और स्वरभंग : पके हुये बढ़िया आम को आग में भून ले। ठंडा होने पर धीरे–धीरे चूसने से सूखी खांसी मिटती है।

प्यास : गुठली की गिरी के 40–60 ग्राम क्वाथ में 10 ग्राम मिश्री मिलाकर पीने से भयंकर प्यास शान्त होती है।

हिक्कारोग :

1. आम के सूखे पत्तों को चिलम में भरकर या ताजे पत्रों को कूटकर निकाले गये रस (2–3 ग्राम) में थोड़ा सा शहद मिलाकर सेवन करने से हिचकी बन्द हो जाती है।
2. आम के पत्ते व धनिया दोनो को कूटकर 2 से 4 ग्राम की मात्रा में लेकर गुनगुने पानी से दिन में दो या तीन बार पियें।

यकृत : जिगर की कमजोरी में (जब पतले दस्त आते हो, भूख न लगती हो) 6 ग्राम आम के छाया शुष्क पत्रों को 250 ग्राम जल में उबालें। 125 ग्राम जल शेष रहने पर छानकर थोड़ा दूध मिला प्रातः पीने से लाभ होता है।

अतिसार :

1. आम की गुठली की गिरी को साढे पाँच ग्राम की मात्रा में 100 ग्राम जल में उबालें। इसमें साढे पाँच ग्राम गिरी को और मिलाकर, दोनों को पीस ले, इसे दिन में 3 बार दही के साथ सेवन कराये, पथ्य में चावल और दही का सेवन करे।
2. गुठली की गिरी 1 भाग, बेलगिरी 1 भाग तथा मिश्री 1 भाग तीनों का चूर्णकर, 3–6 ग्राम की मात्रा में जल के साथ सेवन करने से अतिसार में लाभ होता है।
3. गुठली की गिरी, आम का गोंद समभाग लेकर 1 ग्राम की मात्रा में दिन में 2–3 बार सेवन करने से अतिसार मिटता है।
4. गुठली की 10–20 ग्राम गिरी को कांजी के साथ पीसकर उदर पर गाढ़ा लेप करने से बहुत लाभ होता है।
5. आम वृक्ष की अन्तरछाल 40 ग्राम जौ कूटकर आधा किलो जल में अष्टमांश क्वाथ सिद्ध करे। ठंडा होने पर इसमें थोड़ा शहद मिलाकर पिलाने से अतिसार विशेषतः आमातिसार में लाभ होता है।
6. आम की ताजी छाल को दही के पानी के साथ पीसकर पेट के आसपास लेप करने से लाभ होता है।

रक्तातिसार : आमपत्र स्वरस 25 मि०ली०, शहद और दूध 12–12 ग्राम तथा घी 6 ग्राम एकत्र मिला पिलाने से रक्तातिसार में विशेष लाभ होता है।

बच्चो के अतिसार : गुठली की गिरी भून लें। 1–2 ग्राम की मात्रा में चूर्ण कर 1 चम्मच शहद के साथ दिन में दो बार चटावें। यदि रक्तातिसार हो तो आम की अन्तरछाल को दही में पीस कर लेप कर लेप करें।

संग्रहणी : ताजे मीठे आमों के 50 ग्राम ताजे स्वरस में 20–25 ग्राम मीठा दही तथा एक चम्मच शुंठी चूर्ण बुरक कर दिन में दो तीन बार देने से कुछ ही दिन में पुरानी संग्रहणी अवश्य दूर होती है। (संग्रहणी में आम्रकल्प बहुत लाभदायक है।)

गर्भिणी के आमातिसार : पुराने आम की गुठली की गिरी का चूर्ण 4–4 ग्राम को शहद या जल के साथ भोजन के दो घंटे पूर्व दिन में तीन बार सेवन कराने से लाभ होता है। (पथ्य नमकीन चावल बिना घी डाले)

हैजा :

1. हैजे की शुरुआती अवस्था में, 20 ग्राम आम के पत्तों को कुचल कर आधा किलो जल में क्वाथ करें, चतुर्थांश शेष रहने पर किंचित छानकर गर्म पिलाने से लाभ होता है।
2. आम का शर्बत या आम का पना बार–बार पिलावें।

मधुमेह : आम के छाया में सुखाये हुये 1–1 ग्राम पत्रों का आधा किलो जल में औटावे, चौथाई जल शेष रहने पर प्रातः–सायं पिलाने से कुछ ही दिनों में मधुमेह दूर हो जाता है।

परिणाम शूल : प्रातः 8 बजे और सायंकाल 4 बजे मीठे पके आम को इतनी मात्रा में चूसे कि आधा किलो रस पेट में चला जाये इसके ऊपर 250 ग्राम दूध पीले, पानी बिल्कुल न पीये। एक घंटे बाद उबालकर ठंडा किया हुआ पानी, जरूरत हो तो पीले। दोपहर के भोजन में आम के रस के साथ गेहूँ की रोटी का सेवन करें। इस अवधि में अन्य कोई भोज्य पदार्थ न लें। 1 सप्ताह में आशातीत लाभ होता है।

आम के अन्य प्रयोग :

1. आम के फूलों का नस्य लेना नकसीर में लाभदायक है।
2. फल की छाल व पत्तों को समभाग पीसकर मुख में धारण करने या कुल्ला करने से दांत व मसूड़े मजबूत होते है।
3. नरम टहनी के पत्रों को पीसकर लगाने से बाल बड़े व काले होते है। पत्तों के साथ कच्चे आम के छिल्कों को पीसकर तेल मिलाकर धूप में रख दें। इस तेल के लगाने से बालों का झड़ना रूक जाता है, व बाल काले हो जाते है।
4. आम्रकल्प अच्छे पके हुये मीठे देशी आमों का ताजा रस 250 से 350 ग्राम तक, गाय का ताजा दुहा हुआ गर्म (धारोष्ण) दूध 50 मि०ली०, अदरक का रस चाय का चम्मच भर, तीनों को कांसे की थाली में अच्छी तरह फेट लें, लस्सी जैसा हो जाने

पर धीरे–धीरे पी लें, 2–3 सप्ताह सेवन करने से मस्तिष्क की दुर्बलता, सिर पीड़ा, सिर का भारी होना, आखों के आगे अंधेरा हो जाना आदि दूर होता है। यह कल्प यकृत के लिये भी विशेष लाभदायक है।

5. आम के ताजे कोमल पत्ते 10 नग, और काली मीर्च 2–3 नग, दोनो को जल में पीसकर गोलियाँ बना लें, किसी भी दवा से बन्द न होने वाले, उल्टी–दस्त इससे बन्द हो जाते है।

6. कच्चे आम की गुठली (जिसमें जाली न पड़ी हो) का चूर्ण 60 ग्राम, जीरा, काली मिर्च व सौंठ का चूर्ण 20 ग्राम, आम्रवृक्ष के गोंद का चूर्ण 5 ग्राम तथा अफीम का चूर्ण 1 ग्राम इनको खरल कर, वस्त्र में छानकर बोतल में डाट बन्द कर सुरक्षित करें। 3–6 ग्राम तक अवस्थानुसार दिन में 3–4 वार सेवन करने से संग्रहणी, आम अतिसार, रक्तस्त्राव शूलादि का नाश होता है।

7. आम के कोमल पत्रों का छाया में सुखाया हुआ चूर्ण 25 ग्राम की मात्रा में सेवन करना मधुमेह में उपयोगी है।

8. आम्र की मजंरी (बौर) का क्वाथ या चूर्ण, अतिसार पुरानी प्रवाहिका और पूयमेह में उपयोगी है। इसके चूर्ण का धुआं मच्छरों को भगाता है।

9. फूलों का काढ़ा या चूर्ण सेवन करने से, अथवा इनके चूर्ण में चौथाई भाग मिश्री मिला सेवन करने से अतिसार, प्रमेह, अरूचि, रक्तदोष, दाह एवं पित्त के उपद्रव नष्ट होते है।

10. फूलों के 10–20 ग्राम रस में 10 ग्राम खांड मिलाकर सेवन करने से प्रदर, प्रमेह, पित्तविकार मिटते है।

11. कल्मी आम के फूलों को घी में भूनकर सेवन करने से प्रदर में बहुत लाभ होता है। इसकी मात्रा 1–4 ग्राम उपयुक्त होती है।

12. आम के गोंद को बिवाई पर लगाने से लाभ होता है।

13. आम का ताजा कोमल पत्र तोड़ने से जो एक प्रकार का द्रव पदार्थ निकलता है उसे नेत्र पिंडिका पर लगाने से, या पत्रों के बीच की लकड़ी (मध्य शिरा) की भस्म लगाने से लाभ होता है। पत्रों के उक्त द्रव पदार्थ को बिवाई में भर देने से तुरन्त लाभ होता है।

14. आम की चाय : आम के 11 पत्र, जो वृक्ष पर ही पक्कर पीले रंग के हो गये हो, लेकर 1 किलो पानी में 1–2 ग्राम इलायची डालकर उबालें, जब पानी आधा शेष रह जाये तो उतार कर शक्कर और दूध मिलाकर चाय की तरह पिया करें। यह चाय शरीर के समस्त अवयवों को शक्ति प्रदान करती है।

15. आम के फूलों के चूर्ण (5–10 ग्राम) को दूध के साथ लेने से स्तम्भन और काम शक्ति की वृद्धि होती है।

16. आम की गुठली की गिरी का अनाज और चारे की जगह अच्छा प्रयोग हो सकता है। इसमें प्रोटीन, वसा और कार्बोहाइड्रेट काफी मात्रा में पाये जाते है।

17. आम में मक्खन से कई गुना अधिक पोषक तत्व विद्यमान हैं, उचित तरीके से प्रयोग करने पर आम स्नायु तंत्र (नर्वस सिस्टम) को मजबूत बनाता है। शुद्ध रक्त बहुतायात से उत्पन्न होता है और शक्ति वृद्धि होती है।

18. जिन व्यक्तियों को मंदाग्नि, संग्रहणी, पुराना अतिसार, अजीर्ण, प्रमेह, धातुक्षीणता, क्षय, उदररोग, प्लीहा, वायुगोला,

नसों में सूजन हो गया हो, जिनके शरीर में कफ और पित्त का निरन्तर प्रकोप रहता हो, दिल दिमाग कमजोर हो गया हो, ऐसे रोगियों को आम का कल्प लाभदायक है।

19. आग से झुलसना, खरोंच लगना आदि के लिए आम के पत्तों की भस्म प्रख्यात औषधि है।

उपदंश : आम वृक्ष की ताजी छाल का रस 25 से 30 ग्राम तक प्रातःकाल बकरी के दूध के साथ 7 दिन तक सेवन करें।

योनिरोग :

1. आम के फूल, छाल और पत्तों को पानी में पीस बत्ती बना योनि में धारण करने से, गर्भाशय द्वारा स्त्रावित होने वाले दूषित स्राव तथा योनि की दुर्गन्ध में लाभ होता है।
2. आम के सूखी गुठली का चूर्ण प्रातः–सायं 6 या 7 ग्राम को दूध के साथ सेवन करने से तथा उक्त वर्तिका को योनि में धारण करने से योनिरोगों में लाभ होता है।

अण्डकोषवृद्धि : आम्र वृक्ष की शाखा पर उत्पन्न गांठ (लकड़ी में गांठ बन जाती है) को गौमूत्र में पीसकर लेप करें, और ऊपर से सेंक करने पर वेदनायुक्त अण्डकोषशोथ में लाभ होता है।

भस्मक रोग : मीठे आम का रस 250 ग्राम, घी 40 ग्राम, खांड 100 ग्राम तीनों को एक साथ मिलाकर सेवन करने से 15 दिन में भस्मक रोग शान्त होता है।

सुजाक एवं प्रमेह :

1. आम की 25 ग्राम ताजी छाल को जौ कुट कर रात्रि में 250 ग्राम जल में भिगों कर प्रातः काल मसल कर छानकर पिलावे, 7 दिन में लाभ होता है।
2. छाया शुष्क आम के पत्तों का चूर्ण प्रातः–सायं ताजे जल के साथ 6–6 ग्राम की मात्रा में सेवन करने से लाभ होता है।
3. आम की ताजी अन्तःछाल का रस 20 ग्राम में, 6 ग्राम चूने का निथरा हुआ जल मिलाकर तत्काल पिलायें। प्रमेह एवं सुजाक में भी इससे लाभ होता है।

रक्तप्रदर अर्श :

1. आम की अन्तःछाल का रस दिन में 20–40 ग्राम तक दो बार पिलायें। अर्श, रक्तप्रदर या रक्त अतिसार के कारण होने वाले रक्तस्राव में लाभ होता है।
2. आम की गुठली की गिरी का चूर्ण 1 से 2 ग्राम दिन में दो बार सेवन करें।

कृमिरोग : कच्चे आम की गुठली का चूर्ण 250 से 500 मिलीग्राम तक दही या जल के साथ सुबह–शाम सेवन करने से सूत जैसे कृमि नष्ट हो जाते है।

शरीर पुष्टि के लिये : नित्य प्रातः काल मीठे आम चूसकर, ऊपर से सौंठ व छुहारे डालकर पकाये हुये दूध को पीने से पुरुषार्थ वृद्धि और शरीर पुष्ट होता है।

दाद, खुजली व्रण आदि चर्म रोग :

1. आम के कच्चे फलों को तोड़कर (जिनमें जाली न पड़ी हो), कुचलकर कपड़े में छानकर रस निकाल लें। रस का चौथाई भाग विकृत (मेथीलिटेड) स्प्रिट या खालिश देशी शराब मिला शीशी में भर रखें। दो दिन बाद प्रयोग करें। इसके लगाने से पुरानी दाद, चम्बल आदि व्याधियां शीघ्र मिटती है। गहरे से गहरे नासूर भी इसे दिन में दो बार लगाने से दूर होते हैं। इसे रूई की फुहेरी से लगाने से फुटी हुई कंठमाला, भगंदर, पुराने भुगलाई फोड़े आदि जड़ से दूर हो जाते है। इसे लगाने से अर्श के मस्से भी सूख जाते है।
2. आम को तोड़ते समय, आमफल की पीठ में जो गोंदयुक्त रस निकलती है, उसे दाद पर खुजलाकर लगा देने से फौरन छाला पड़ जाता है, और फूटकर पानी निकल जाता है। दो–तीन बार लगाने से इस रोग से छुटकारा मिल जाता है।

फोड़ो पर : आम वृक्ष का गोंद थोड़ा गरम कर लगाने से फोड़ा फूट पककर, फूटकर बह जाता है और घाव आसानी से भर जाता है।

घाम (घमौरियां) : गरमी के दिनों में शरीर पर पसीने के कारण छोटी– छोटी फुन्सियों हो जाती है, इन पर कच्चे आम को मन्द अग्नि में भूनकर, गूदे का लेप करने से लाभ होता है।

अग्निदग्ध : गुठली की गिरी को थोड़े पानी के साथ पीसकर आग से जले हुये स्थान पर लगाने से तुरन्त शान्ति प्राप्त होती है।

मकड़ी का विष : गुठली को पीसकर लगाने से अथवा अमचूर को पानी में पीसकर लगाने से छाले मिट जाते है।

विषैले जानवरों के दंश :

1. आम का बौर जो सर्वप्रथम वृक्ष पर लगता है। उसे मंगल रविवार के दिन यथाशक्ति ब्राह्मण को भोजन व दक्षिणा देक

तोड़ लें तथा दोनों हाथों पर मल लें। बिच्छू आदि के दंश पर हथेली को फेरने से वेदना शांत हो जाती है। यह प्रभाव एक वर्ष तक रहता है।

2. आम की गुठली को जल के साथ पत्थर पर पीसकर लगाने से भंवरी, मधुमक्खी, बर्र, ततैया, बिच्छू आदि विषैले कीड़े मकौड़े के दंश से उत्पन्न जलन, वेदना, दाह तथा विष शान्त होता है।

विशेष :

1. आम के कच्चे फलों को अधिक खाने से मंदाग्नि, विषमज्वर रक्तविकार, विबन्ध एवं नेत्ररोग उत्पन्न होते है।
2. आम के खाने के बाद पाचन सम्बन्धी शिकायत होने पर, 2–3 जामुन खा लें। जामुन में आम को पचाने की तीव्र शक्ति है। जामुन उपलब्ध न होने की दशा में, चुटकी भर नमक और सौंठ पीसकर खा लें।
3. यकृत और जलोदर के रोगी को आम नहीं खाने चाहिये।
4. आम खाने के बाद, दूध पीना, जामुन खाना, कटहल की गुठली खाना, सूक्ष्म मात्रा में सौंठ, लवण या सिंकज बीन खाना चाहिये।
5. आम सेवन के बाद दूध पीना चाहिये। जल नहीं पीना चाहिये।

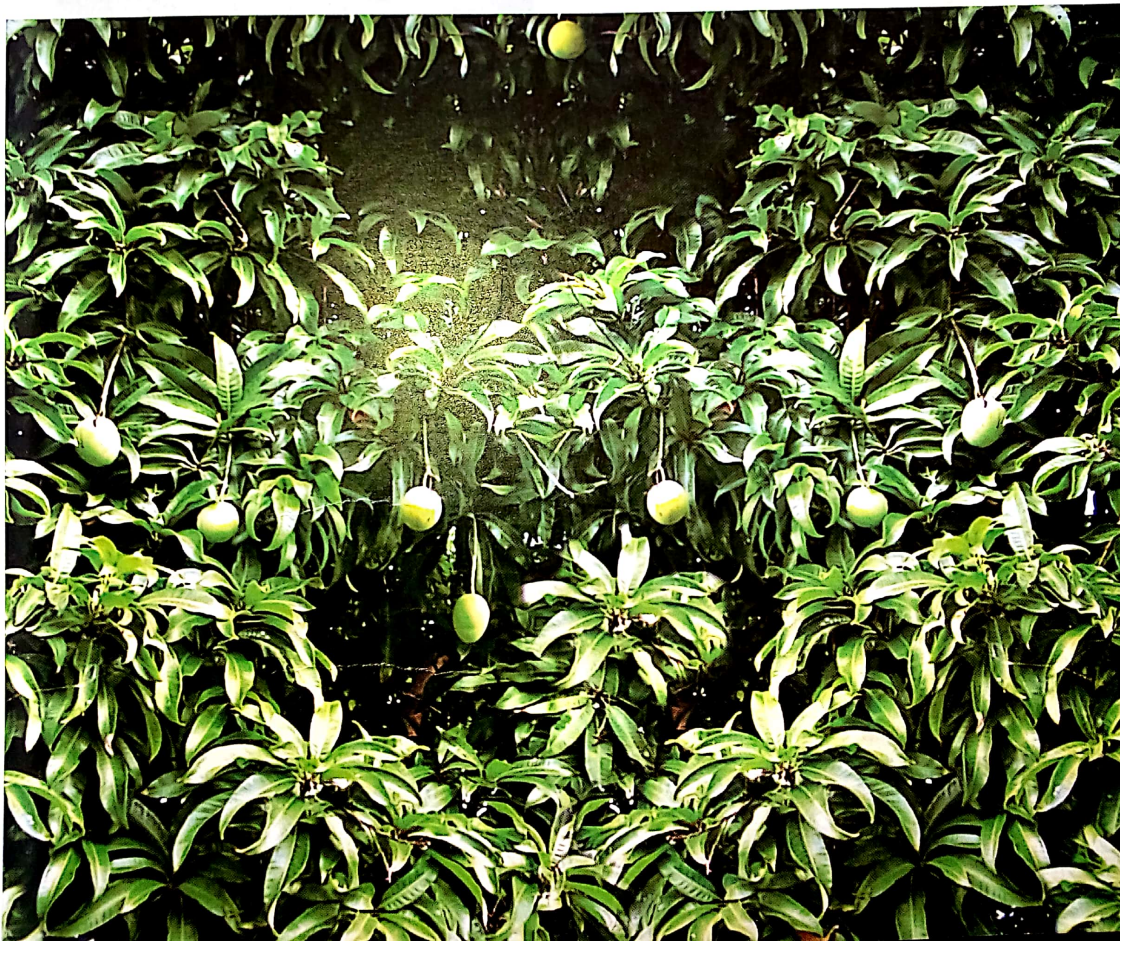

3 वासा अडूसा

वैज्ञानिक नाम	:	*Adhatoda zeylanica* Medik.
कुलनाम	:	Acanthaceae
अंग्रेजी नाम	:	Malabar nut
संस्कृत	:	वासक, आटरूषक, सिंहास्य, वसिका
हिन्दी	:	वासा, वासक, अडूसा, विसौटा, अरूष
मराठी	:	आडुसोगे
बंगाली	:	बसाका, बासक
गुजराती	:	अडूसा, अल्डुसो
तेलगु	:	पैद्यामानु, अद्दासारामू
तमिल	:	एधाडड
अरबी	:	हूफारीन, कून
पंजाबी	:	वांसा

परिचय

अडूसे के पौधे भारतवर्ष में 1,200 से 4,000 फुट की ऊंचाई तक कंकरीली भूमि में स्वयं ही झाडियों के समूह में उगते है।

बाह्य–स्वरूप

अडूसा का पौधा झाड़ीदार होता है। पत्ते 3–8 इंच लम्बे रोमश, अभिमुखी, दोनों और से नोकदार, पुष्प श्वेतवर्ण 2–3 इंच लम्बी मंजरियों में फरवरी–मार्च में आते हैं।

फली 0.75 इंच लम्बी, रोमश, प्रत्येक फली में चार बीज होते हैं।

रासायनिक संघटन

अडूसा स्वर के लिए उत्तम, हृदय, कफ, पित्त, रक्तविकार, तृष्णा, श्वांस, खांसी, ज्वर, वमन, प्रमेह, कोढ़ तथा क्षय का नाश करने वाला है।' श्वसन संस्थान पर इसकी मुख्य क्रिया होती है। यह कफ को पतला कर बाहर निकालता है तथा श्वांस नलिकाओं का कम परन्तु स्थायी प्रसार करता है। श्वांस नलिकाओं के फैल जाने से दमे के रोगी का सांस फूलना कम हो जाता है। कफ के साथ यदि रक्त भी आता हो तो वह भी बंद हो जाता है। इस प्रकार यह श्लेष्म, कास, कंठ्य एवं श्वांसहर है। यह रक्तशोधक एवं रक्त स्तम्भक है, क्योंकि यह छोटी रक्त वाहनियों को संकुचित करता है। यह प्राणदा नाड़ी को अवसादित कर रक्त भार को कुछ कम करता है। इसकी पत्तियों का लेप शोथहर, वेदनास्थापन, जंतुघ्न तथा कुष्ठघ्न है। यह मूत्र जनन, स्वेदजनन तथा कुष्ठघ्न है। नवीन कफ रोगों की अपेक्षा इसका प्रयोग जीर्ण कफ रोगों में अधिक लाभकारी है।

गुण–धर्म

अडूसा वातकारक, स्वर के लिए उत्तम, हृदय, कफ, पित्त, रक्तविकार, तृष्णा, श्वांस, खांसी, ज्वर, वमन, प्रमेह, कोढ़ तथा क्षय का नाश करने वाला है।' श्वसन संस्थान पर इसकी मुख्य क्रिया होती है। यह कफ को पतला कर बाहर निकालता है तथा श्वांस नलिकाओं का कम परन्तु स्थायी प्रसार करता है। श्वांस नलिकाओं के फैल जाने से दमे के रोगी का सांस फूलना कम हो जाता है। कफ के साथ यदि रक्त भी आता हो तो वह भी बंद हो जाता है। इस प्रकार यह श्लेष्म, कास, कंठ्य एवं श्वांसहर है। यह रक्तशोधक

एवं रक्त स्तम्भक है, क्योंकि यह छोटी रक्त वाहनियों को संकुचित करता है। यह प्राणदा नाड़ी को अवसादित कर रक्त भार को कुछ कम करता है। इसकी पत्तियों का लेप शोथहर, वेदनास्थापन, जंतुघ्न तथा कुष्ठघ्न है। यह मूत्र जनन, स्वेदजनन तथा कुष्ठघ्न है। नवीन कफ रोगों की अपेक्षा इसका प्रयोग जीर्ण कफ रोगों में अधिक लाभकारी है।

औषधीय प्रयोग

सिर दर्द : अडूसा के फूलों को छाया में सुखाकर महीन पीसकर 10 ग्राम चूर्ण में थोड़ा गुड़ मिलाकर चार खुराक बना लें। सिरदर्द का दौरा शुरू होते ही 1 गोली खिला दें, तत्काल लाभ होता है।

शिरो रोग :

1. इसकी 20 ग्राम जड़ को 200 ग्राम दूध में अच्छी प्रकार पीस–छानकर इसमें 30 ग्राम मिश्री 15 नग काली मिर्च का चूर्ण मिलाकर सेवन करने से शिरो रोग, नेत्र रोग, शूल, हिचकी, खांसी आदि विकार नष्ट होते हैं।
2. छाया में सूखे हुए वासा पत्रों की चाय बनाकर पीने से सिर–दर्द या शिरोरोग संबंधी कोई भी बाधा दूर हो जाती है। स्वाद के लिए इस चाय में थोड़ा नमक मिला सकते हैं।

नेत्र रोग : इसके 2–4 ताजे पुष्पों को गर्म कर आंख पर बांधने से आंख के गोलक की पित्तशोथ (सूजन) दूर होती है।

मुखपाक :

1. यदि केवल मुख में छाले हो तो इसके 2–3 पत्तों को चबाकर उसके रस को चूसने से लाभ होता है। फोक थूक देना चाहिए।
2. इसकी लकड़ी की दातौन करने से मुख के रोग दूर हो जाते हैं।
3. वासा के 50 मि०ली० क्वाथ में एक चम्मच गेरू और दो चम्मच मधु मिलाकर मुख में धारण करने से मुखपाक, नाड़ीव्रण नष्ट होते हैं।

दंत सौषिर्य (Cavity): दाढ़ या दांत में कैविटी हो जाने पर उस स्थान में इसका सत्व भर देने से आराम होता है।

दंत पीड़ा : वासा के पत्तों के क्वाथ से कुल्ला करने से मसूड़ों की पीड़ा मिटती है।

चेचक निवारण : यदि चेचक फैली हुई हो तो वासा का 1 पत्ता तथा मुलेठी 3 ग्राम इन दोनों का क्वाथ बच्चों को पिलाने से चेचक का भय नही रहता है।

अपस्मार : प्रतिदिन जो रोगी दूध भात का पथ्य रखता हुआ 2–5 ग्राम वासा चूर्ण का 1 चम्मच मधु के साथ सेवन करता है, वह पुराने भयंकर अपस्मार रोग से मुक्त हो जाता है।[3]

श्वांस रोग :

1. अडूसा, हल्दी, धनियां, गिलोय, पीपल, सौंठ तथा रिगंणी के 10–20 ग्राम क्वाथ में 1 ग्राम मिर्च का चूर्ण मिलाकर दिन में तीन बार पीने से सम्पूर्ण श्वांस रोग पूर्ण रूप से नष्ट हो जाते है।[4]
2. इसके छोटे पेड़ के पंचाग को छाया में सुखाकर कपड़े में छानकर नित्य 10 ग्राम मात्रा की फंकी देने से श्वांस और कफ मिटता है।[10]

दमा : इसके ताजे पत्तों को सुखाकर उनमे थोड़े से काले धतूरे के सूखे हुए पत्ते मिलाकर दोनों का चूर्ण (बीड़ी बनाकर पीने) धूम्रपान से जीर्णश्वांस में आश्यर्चजनक लाभ होता है।

फुफ्फस प्रदाह : अडूसे के 8–10 पत्तों को रोगन बाबूना में घोंटकर लेप करने से फुफ्फुस प्रदाह में शांति होती है।

खांसी:

1. वासा के ताजे पत्रों का स्वरस, शहद के साथ (साढ़े सात ग्राम की मात्रा में) चाट लेने से पुरानी खांसी, श्वांस और क्षय रोग में बहुत फायदा होता है।
2. अडूसा, मुनक्का और मिश्री का 10–20 ग्राम क्वाथ दिन में तीन–चार बार पिलाने से सूखी खांसी मिटती है।

परमपूज्य स्वामी रामदेव जी का स्वानुभूत प्रयोग

वासा के पत्तों का रस 1 चम्मच, 1 चम्मच अदरक का रस, 1 चम्मच शहद मिलाकर पीनें से सभी प्रकार की खांसी से आराम हो जाता है।

क्षय रोग : अडूसे के पत्तों के 20–30 ग्राम क्वाथ में छोटी पीपल का 1 ग्राम चूर्ण बुरक कर पिलाने से जीर्ण कास, श्वांस और क्षय रोग में फायदा होता है।

आध्मान : वासा छाल का चूर्ण 1 भाग, अजवायन का चूर्ण चौथाई और इसमे आठवां हिस्सा सेंधा नमक मिलाकर नींबू के रस में खूब खरल कर 1–1 ग्राम की गोलियां बनाकर भोजन के पश्चात 1–3 गोली सुबह–शाम सेवन करने से वातजन्य ज्वर आध्मान विशेषतः भोजन करने के बाद पेट का भारी हो जाना, मन्द–मन्द पीड़ा होना दूर होता है। वासा क्षार भी प्रयुक्त किया जा सकता है।

वृक्कशूल : अडूसे और नीम के पत्तों को गर्म कर नाभि के निचले भाग पर सेंक करने से तथा अडूसे के पत्तों के 5 ग्राम रस में उतना ही शहद मिलाकर पिलाने से गुर्दे के भयंकर दर्द में आश्चर्यजनक रूप से लाभ पहुंचता है।

अतिसार : इसका पत्र स्वरस 10–20 ग्राम की मात्रा को दिन में तीन–चार बार पीना रक्तातिसार में बहुत लाभकारी है।

मासिक धर्म : इसके पत्ते ऋतुस्त्राव को नियंत्रित करते है। रजोरोध में वासा पत्र 10 ग्राम, मूली व गाजर के बीज प्रत्येक 6 ग्राम, तीनों को आधा किलो पानी में पका लें। चतुर्थांश शेष रहने पर यह क्वाथ कुछ दिन सेवन करने से लाभ होता है।

मूत्र दोष : खरबूजे के 10 ग्राम बीज तथा अडूसे के पत्ते बराबर लेकर पीसकर पीने से पेशाब खुलकर आने लगता है।

मूत्रदाह : वासा पुष्प राजयक्ष्मा का नाश करने वाला, पित्तघ्न और

रूधिर की गर्मी को घटाता है। यदि 8–10 फूलों को रात्रि के समय एक गिलास जल में भिगो दिया जाये और प्रातः मसलकर छानकर पान करें तो मूत्र की जलन और सुर्खी दूर हो जाती है।

शुक्रमेह : इसके शुष्क पुष्पों को कूट छानकर उसमें दुगुनी मात्रा में बंगभस्म मिलाकर, शीरा और खीरा के साथ सेवन करने से शुक्र प्रमेह नष्ट होता है।

जलोदर : जलोदर में या उस समय जब सारा शरीर श्वेत हो जाये उसमें इसके पत्तों का 10–20 ग्राम स्वरस दिन में 2–3 बार पिलाने से मूत्रवृद्धि हो के यह रोग मिटता है।

सुख प्रसव : अडूसे की जड़ को पीसकर गर्भवती स्त्री की नाभि, नलों व योनि पर लेप करने से तथा मूल को कमर से बांधने से बालक सुख से पैदा हो जाता है।[9]

प्रदर :

1. पित्त प्रदर में अडूसे के 10–15 मि०ली० स्वरस में अथवा गिलोय के रस में 5 ग्राम खांड तथा 1 चम्मच मधु मिलाकर दिन में दो बार सेवन करना चाहिए।[8]
2. अडूसा के 10 ग्राम पत्तों के स्वरस में 1 चम्मच मधु मिलाकर सुबह–शाम पिलाने से श्वेत प्रदर मिटता है।

रक्त प्रदर : रक्त प्रदर में वासा के 10 ग्राम पत्र स्वरस में बराबर मात्रा में मिश्री मिलाकर दिन में तीन बार देने से एक सप्ताह में पूर्ण आराम हो जाता है।

सुख प्रसव : पाठा, कलिहारी, अडूसा, अपामार्ग, इनमें किसी एक बूंटी की जड़ को नाभि, बस्तिप्रदेश तथा भग प्रदेश पर लेप देने से प्रसव सुखपूर्वक होता है।[8]

कामला : इसके पंचाग के 10 मि०ली० स्वरस में मधु और मिश्री समभाग मिलाकर पिलाने से कामला रोग नष्ट हो जाता है।

बाइटें : 10 ग्राम वासा पुष्पों को 2 ग्राम सोंठ के साथ 100 ग्राम जल में पकाकर पिलाने से बाइटों में आराम मिलता है।

फोड़ा : फोड़े पर प्रारंभ में ही इसके पत्तों को पानी के साथ पीसकर लेप कर दें तो फोड़ा बैठ जाता है और कोई कष्ट नही होता।

ऐंठन : इसके पत्र स्वरस में सिद्ध किये तिल के तैल की मालिश से आक्षेप, उदरस्थ वात वेदना तथा हाथ पैरों की ऐंठन मिट जाती है।

वातरोग : वासा के पके हुए पत्तों को गरम करके सिकाई करने से सन्धिवात लकवा और वेदनायुक्त उत्सेध में आराम पहुंचाता है।

अर्श : अडूसे के पत्ते और श्वेत चंदन इनको बराबर मात्रा में लेकर महीन चूर्ण बना लेना चाहिए। इस चूर्ण की 4 ग्राम मात्रा प्रतिदिन, दिन में दो बार सुबह–शाम सेवन करने से रक्तार्श में बहुत लाभ होता है और खून का बहना बंद हो जाता है। अर्शांकुरो में यदि सूजन हो तो इसके पत्तों के क्वाथ का बफारा देना चाहिए।

रक्त पित्त :

1. ताजे हरे अडूसे के पत्तो का रस निकालकर 10–20 ग्राम रस में मधु तथा खांड मिलाकर सुबह–शाम सेवन करने से भयंकर रक्तपित्त शांत हो जाता है। यह रक्तपित्त के लिए स्तम्भन योग्य है। उर्ध्व रक्तपित्त में इसका प्रयोग होता है।[3]
2. अडूसा का 10–20 ग्राम स्वरस, तालीस पत्र का 2 ग्राम चूर्ण तथा मधु मिलाकर सुबह–शाम पीने से कफ विकार, पित्त विकार, तमक श्वास, स्वरभेद तथा रक्तपित्त का नाश होता है।[4]
3. वासामूल त्वक, मुनक्का, हरड़ इन तीनों को समभाग मिलाकर 20 ग्राम की मात्रा में लेकर 400 ग्राम पानी में पकायें। चतुर्थांश शेष रहने पर क्वाथ में खांड तथा मधु डाल कर पीने से कास, श्वांस तथा रक्तपित्त रोग शांत होते हैं।[5]

दाद खुजली : अडूसे के 10–12 कोमल पत्र तथा 2–5 ग्राम हल्दी को एक साथ गोमूत्र से पीस कर लेप करने से खुजली व शोथ कण्डु रोग शीघ्र नष्ट होता है। इससे दाद उकवत में भी लाभ होता है।

आन्त्र–ज्वर : 3–6 ग्राम वासामूल चूर्ण की फंकी देने से आन्त्र–ज्वर ठीक हो जाता है।

ज्वर : पैत्तिक ज्वर में वासा पत्र और आंवला बराबर लेकर जौं कूटकर सायंकाल के समय मिट्टी के बर्तन में (कुल्हड़) भिगो दें। प्रातः काल घोंटकर स्वरस निचोड़ लें, इसमें 10 ग्राम मिश्री मिलाकर पिलाने से ज्वर शांत होता है।

कफ–ज्वर :

1. हरड़, बहेड़ा, आँवला, पटोल पत्र, वासा, गिलोय, कटुकी, पिपली मूल सब मिलाकर 20 ग्राम इसका यथा विधि क्वाथ करके 20 ग्राम मधु का प्रक्षेप देकर सेवन करने से कफ ज्वर में लाभ होता है।
2. त्रिफला, गिलोय, कटुकी, चिरायता, नीम की छाल तथा

वासा 20 ग्राम लेकर 320 ग्राम जल में पकायें, जब चतुर्थांश शेष रह जाये तो इस क्वाथ में मधु मिलाकर 20 मि०ली० सुबह–शाम सेवन कराने से कामला तथा पांडु रोग नष्ट होता है।[2]

सन्निपात :

1. सन्निपात ज्वर में पुटपाक विधि से निकाला अडूसा 10 ग्राम स्वरस तथा थोड़ा अदरक का रस और तुलसी पत्र मिला उसमे मुलहठी को घिसकर शहद में मिलाकर सुबह, दोपहर तथा शाम पिलाना चाहिए।
2. सन्निपात ज्वर में इसकी मूल की छाल 20 ग्राम, सौंठ 3 ग्राम, काली मिर्च एक ग्राम इनका क्वाथ बनाकर, मधु मिलाकर पिलाना चाहिए।

आमदोष : मोथा, वच, कटुकी, हरड़, दूर्वामूल इन्हें समभाग मिश्रित कर 5–6 ग्राम की मात्रा लेकर 10–20 मि०ली० गोमूत्र के साथ शूल में आमदोष के परिपाक के लिए पिलाना चाहिए।

शरीर की दुर्गन्ध : इसके पत्र स्वरस में थोड़ा शंखचूर्ण मिलाकर लगाने से शरीर की दुर्गन्ध दूर हो जाती है।

जंतुघ्न : अडूसा जलीय कीड़ो तथा जन्तुओं के लिए विषैला है, मेढंक इत्यादि छोटे जन्तु इससे मर जाते हैं। इसलिए पानी को शुद्ध करने के लिए इसका प्रयोग किया जा सकता है।

पशु व्याधि : गाय तथा बैलों को यदि कोई उदर व्याधि हो तो उनके चारे में इसके पत्तों की कुटी मिला देने से लाभ होता है। बैलों के उदरकृमि नष्ट हो जाते हैं।

सूखे पान : वासा के सूखे पत्ते पुस्तकों में रखने से उनमें कीड़े नही लगते।

वासा की सूखी पत्तियाँ

1. त्रिफला पटोलवासाछिन्नरूहा तिक्तरोहिणी च षड्ग्रंथा,
   मधुना श्लेष्मसमुत्थे दशमूलीवासकस्य वा क्वाथः।।
   (भैषज्य रत्नावली)
2. फलत्रिकामृतावासातिक्ता भूनिम्बनिम्बजैः।
   क्वाथः क्षौद्रयुतो हन्यात् पाण्डुरोगं सकामलम्।।
   (भैषज्य रत्नावली)
3. वृषपत्राणि निष्पीड्य रसं समधुशर्करम्।
   पिवेत्तेन शमं याति रक्तपित्तं सुदारुणम्।। (भैषज्य रत्नावली)
4. तालीशचूर्णसहितः पेयः क्षौद्रेण वासक स्वरसः।
5. आटरुषकमृद्वीका–पथ्या–क्वाथः सशर्करः।
   क्षौद्राख्यः कसनश्वासरक्तपित्तनिवर्हणः।। (भैषज्य रत्नावली)
   यः खादेत् क्षीरभक्ताशी माक्षिकेण वचारजः।
   अपस्मारं महाघोरं सुचिरोत्थं जयेद् ध्रुवम।।
   (भैषज्य रत्नावली)
   मुस्तां वचां तिक्तकरोहिणीन्च तथाऽभयां निर्दहनीं तुल्याम्।
   पिवेन्तु गोमूत्रयुतां कफोत्थ शूले तथाऽऽमस्य च पाचनार्थम्।।
6. कोमलसिंहास्यदलं सनिशं सुरभीजलेन सम्पिष्टम्।
   दिवसत्रयेण नियतं क्षपयति कच्छूं विलेपनतः।।
   (भैषज्य रत्नावली)
7. वासक स्वरसे पैत्ते गुडूच्या रसमे वच।।
   (भैषज्य रत्नावली)
8. पाठाला लि सिंहास्यमयूरकजटैः पृथक।
   नाभिवस्ति भगलिखात् सुखं नारी प्रसूयते।।
   (भैषज्य रत्नावली)
9. वासा हरिद्रा धनिका गुडूर्चा भा किणा नगर रि रीनाम्।
   क्वायेन भारीचकम्वि ते न श्वास शमं कस्य नटाति पुंस।।
   (भैषज्य रत्नावली)
10. वासको वात त्स्वर्यः कफपित्तास्त्रनाशनः।
    तिक्तस्तुवरको हृद्यो लघुः शीतस्तृऽर्तिहृत्।[5]
    श्वासकासज्वरच्छर्दिमेहकुष्ठक्षयापहः। (भाव प्रकाश)
11. कफ पित्त तमकश्वासं स्वरभेद रक्त पित्तहरः।।
    (भैषज्य रत्नावली)

4 अफीम

वैज्ञानिक नाम	:	*Papaver somniferum* L.
कुलनाम	:	Papaveraceae
अंग्रेजी नाम	:	Poppy, opium
संस्कृत	:	अहिफेन
हिन्दी	:	पोस्त, पोस्ता, अफीम का डोडा, अफीम
गुजराती	:	अफीण
मराठी	:	आफीमु
फारसी	:	तियाग
अरबी	:	लब्नुल, खखास

परिचय

अफीम पोस्त के डोडों से प्राप्त की जाती है। जो कृषिजन्य पौधों पर लगते हैं। भारतवर्ष में बिहार, पूर्वी उत्तर प्रदेश, मध्य एवं पश्चिम भारत और मालवा में पोस्त की खेती की जाती है। पोस्त के डोडे जब पूर्ण विकसित हो जाते हैं, परन्तु कच्ची अवस्था में होते हैं तब इनमें चीरा लगाने से एक गाढ़ा दूध (लैटेक्स) निकलता है। इसको एकत्रित कर सुखा लिया जाता है। यही व्यावसायिक या औषधीय अफीम है।

बाह्य–स्वरूप

पोस्त के डेढ़ से 4 फुट तक अर्धवार्षिक क्षुप होते हैं। जिनमें पत्र 4 इंच लम्बे–चौड़े, अवृन्त, हृदयाकार तथा कांड संसक्त होते हैं। पुष्प एकल, नीलाभ श्वेत, नीचे का भाग बैंगनी या चित्रित होते हैं। फल अनार की भांति गोल अंडाकार इसके नीचे की ओर ग्रीवा तथा ऊपर कंगूरेदार चोटी होती है। फल पकने पर स्फुटन के लिए कंगूरे के नीचे कपाटाकार सूक्ष्म छिद्र हो जाते हैं।

रासायनिक संघटन

पोस्त के बीजों में हल्के पीले रंग का मीठा स्थिर तेल होता है जिसे रोगन खशखश कहते हैं। अफीम में मार्फीन, नार्कोटीन एवं कोडीन आदि ऐल्केलाइड्स पाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त इनमें अनेक प्राथमिक तथा द्वितीयक एल्केलाइडस, कार्बनिक अम्ल, लेक्टिक एसिड एवं मेकोनिक एसिड आदि आर्गेनिक अम्ल, जल, राल, ग्लूकोज, वसा, उड़नशील तैल आदि तत्व पाये गये हैं।

गुण–धर्म

पोस्त का डोडा शीतल, हल्का, ग्राही, कड़वा, कसैला, वातकारक, कफ तथा शुष्क कासहर, धातुओं को सुखाने वाला रूक्ष मदकारक, वचन–वर्धक, मोहजनक तथा रूचि को उत्पन्न करने वाला है। लगातार सेवन से नपुंसकत्व पैदा करता है।[1] अफीम शोषक, ग्राही, कफनाशक वायु तथा पित्त कारक है तथा जो गुण डोडा में हैं वहीं इसमें भी है।[2] पोस्त के बीज वीर्यवर्धक, बलदायक, भारी, कफवातवर्धक है।

औषधीय प्रयोग

मस्तक पीड़ा : 1 ग्राम अफीम और दो लौंग पीसकर लेप करने से बादी और सर्दी की मस्तक पीड़ा मिटती है।

नेत्र रोग : आंख के दर्द और आंख के दूसरे रोगों में इसका लेप बहुत लाभकारी है।

नकसीर : अफीम और कुंदरु गोंद दोनों बराबर मात्रा में पानी के साथ पीसकर सुंघाने से नकसीर बंद होती है।

केश : इसके बीजों को दूध में पीसकर सिर पर लगाने से इसमें होने वाले फोड़े फुन्सियां एवं रूसी साफ हो जाती है।

दंतशूल : 16 मिलीग्राम अफीम और 125 मिलीग्राम नौसादर, दोनों को दाड़ में रखने से दाड़ की पीड़ा मिटती है और दांत के छेद में रखने से दंतशूल मिटता है।

कर्णशूल : अफीम की 65 मिलीग्राम भस्म गुलाब के तैल में मिलाकर कान में टपकाने से पीड़ा मिटती है।

स्वर भंग : अफीम के डोडे और अजवायन को उबालकर गरारे करने से बैठी हुई आवाज खुल जाती है।

प्रतिश्याय और खांसी :

1. बीज सहित इसके 60 ग्राम डोडे का क्वाथ बनाकर 50 ग्राम बूरा मिलाकर शर्बत बनाकर पिलाने से प्रतिश्याय व खांसी मिटती है।
2. डंठल अलग करके, इसके 2 डोडे लें तथा इनको दो ग्राम सैंधा नमक के साथ 350 ग्राम पानी में उबाल लें, जब 100 ग्राम पानी शेष रह जाये तो छानकर सोते समय पिलाने से प्रतिश्याय और खांसी मिटती है।

आमाशय की सूजन, उदरशूल : अमाशय की झिल्ली की सूजन और उदरशूल में इसका लेप बहुत फायदेमंद है।

संग्रहणी : अफीम और बछनाग 3 ग्राम, लौह भस्म 250 ग्राम और अभ्रक भस्म डेढ़ ग्राम इन चारों वस्तुओं को दूध में घोटकर 125 मिलीग्राम की गोलियां बनाकर दूध के साथ प्रतिदिन सेवन करनी चाहिए। पथ्य में जल को त्याग करके खाने–पीने में दूध का ही व्यवहार करना चाहिए।

अतिसार :

1. अतिसार में अफीम और केशर को समान भाग लेकर पीस लें तथा 125 मिलीग्राम प्रमाण की गोलियां बनाकर शहद के साथ देने से लाभ होता है।
2. अफीम को सेंककर खिलाने से पक्वातिसार मिटता है।
3. 4 से 9 ग्राम तक इसके डोडे पीसकर पिलाने से अतिसार मिटता है।

अर्श :

1. शूल युक्त अर्श पर रसवंती तथा अफीम का लेप करने से वेदना कम होकर रक्तस्त्राव बंद हो जाता है।
2. धतूरे के पत्रों के रस में अफीम मिलाकर लेप करने से वेदना शीघ्र बंद हो जाती है।

गर्भाशय की पीड़ा : प्रसव होने के पश्चात् गर्भाशय की पीड़ा मिटाने के लिए इसके डोडों का क्वाथ पिलाना चाहिए।

कटिशूल :

1. एक तोले पोस्त के दानों में बराबर मिश्री मिलाकर फंकी देने से कमर की पीड़ा मिटती है।
2. इसके डोडे पानी में भिगोकर पानी इतना पिलायें की नशा न हो, इससे कमर का दर्द मिटता है।

वादी की पीड़ा : स्नायु संबंधी पीड़ा पर इसके लेप करने से लाभ होता है।

खुजली : अफीम को तिल के तेल में मिलाकर मालिश करने से

खुजली मिटती है।

जोंक का डंक : जोंक का डंक अगर पक जाए तो उस पर इसके दानों को पीसकर लेप करना चाहिए।

ज्वर : इसके एक डोडे और 7 काली मिर्चों को उबालकर सुबह-शाम पिलाने से चातुर्थिक ज्वर मिटता है।

नासूर :

1. अफीम और हुक्के के कीड़े की बत्ती बनाकर भरने से नाड़ी व्रण भर जाता है।
2. मनुष्य के नाखून की राख में 250 मिलीग्राम अफीम उसमें रखकर आग पर पकाकर खिलाने से लाभ होता है।

आक्षेप : प्रलाप, अनिद्रा, आक्षेप, वायु हनुस्तंभ आदि रोगों में अफीम का सेवन लाभकारी है।

दोष : अफीम का अधिक मात्रा में सेवन उपद्रवकारी है और इससे मृत्यु तक हो जाती है।

निवारण : रीठे का जल, नीम का क्वाथ, मैनफल व तम्बाकू का क्वाथ, करमयक शाक का रस निचोड़कर पिलाने से प्राण त्यागता करता हुआ बीमार भी बच जाता है।

1. स्यात्खाखसफलोद्भूतं वल्कलं शीतलं लघु।। 219।।
ग्राहि तिक्तं कषायं च वातकृत्कफकासहृत।
धातूनां शोषकं रूक्षं मदकृद्वाग्विर्धनम्।
मुहुर्मोहकरं रूच्यं सेवनात्पुंस्त्वनाशनम् ।। 220।।

2. उक्तं खसफलक्षीरमाफूकमहिफेनकम्।
आफूकं शोषणं ग्राहि श्लेष्मघ्नं वातपित्तलम्।। (भाव प्रकाश)
खस्खसः सूक्ष्मबीजः स्यात्सुबीजः सूक्ष्मतंडुलः।।
खस्खसो मधुरः पाके कान्तितिवीर्यबलप्रदः।। (रा०नि०)

अगस्त

5

वैज्ञानिक नाम	:	*Sesbania grandiflora* (L). Poir
कुलनाम	:	Fabaceae
अंग्रेजी नाम	:	Sesbane
संस्कृत	:	अगस्त्य, मुनिद्रुम
हिन्दी	:	अगस्तिया, अगस्त
गुजराती	:	अगथियो
मराठी	:	अगसे गिडा
बंगाली	:	वक
पंजाबी	:	हथिया
तैलगु	:	अविषि
तमिल	:	अगति
असामी	:	वकफूल

परिचय

अगस्त के रोपे हुए वृक्ष सर्वत्र मिलते हैं। जहां जल की प्रचुरता तथा वायुमण्डल उष्ण प्रधानशील है, वहां खूब फलता फूलता है। वर्षा ऋतु में इसके बीज उगते हैं। राजनिघंटुकार ने इसकी चार जातियां श्वेत, पीत, नील ओर रक्त बतलाई हैं। परन्तु अधिकांश रूप में श्वेत रंग का पुष्प ही प्राप्त होता है। इसके कोमल पत्र, पुष्प और फलियों का शाक बनाकर खाया जाता है।

बाह्य–स्वरूप

अगस्त के वृक्ष अल्पायु तथा शीघ्र वर्धनशील, 20 फुट तक ऊंचे होते हैं। पत्र संयुक्त बहुत लम्बे पत्र दंड पर 25–30 जोड़ों में लगते हैं। पत्रक एक से डेढ इंच तक लम्बे किंचित अंडाकार, पुष्प श्वेत वर्ण, नौकाकार, शिम्बी एक फुट लम्बी किंचित वक्र, चपटी और प्रत्येक फली में 15–20 हलके रंग के बीज होते हैं। शरद ऋतु में पुष्प तथा शीतकाल में फल लगते हैं।

रासायनिक संघटन

इसकी छाल में टैनिन और रक्तवर्ण का निर्यास होता है। पत्तियों में प्रोटीन, कैल्शियम, फास्फोरस, लोहा तथा विटामिन ए, बी, सी; पुष्पों में विटामिन बी और सी तथा प्रोटीन; बीजों में लगभग 70 प्रतिशत प्रोटीन तथा एक तेल पाया जाता है।

ुण–धर्म

ा : पित्त, कफ तथा चातुर्थिक ज्वरनाशक, शीतल, रूक्ष, तिक्त, ाकर तथा प्रतिश्याय का निवारण करने वाला है। शीतवीर्य, ुर, कड़वा, कसैला, विपाक में चरपरा तथा त्रिदोष पिंजरी तुर्थिक ज्वर, रतौंधी, पीनस रोग और वातरक्त नाशक है।[1]

ा : कटु, तिक्त, किंचित उष्ण, विपाक में मधुर, गुरू तथा कृमि कफ, कंडू, रक्त पित्त, ... है।[2]

शिम्बी : इसकी फली विपाक में मधुर, तिक्त लघु, सर, दस्तावर, रूचिकारक, बुद्धिदायक, स्मरणशक्ति वर्धक तथा त्रिदोष शूल, पांडु, विष, शोथ और गुल्म–नाशक है। पक्वफली रूक्ष और पित्तकारक होती है। इसकी छाल संकोचक, कटुपोष्टिक, पाचक और शक्ति–वर्धक है।[3]

औषधीय प्रयोग

र्गी :

अगस्त के पत्तों का चूर्ण और काली मिर्च का चूर्ण समान भाग में लेकर गोमूत्र के साथ बारीक पीसकर मिर्गी के रोगी को सुघांने से लाभ होता है।[4]

2. यदि बालक छोटा हो तो इसके दो पत्तों का रस और उसमें आधी मात्रा में काली मिर्च मिलाकर उसमें रूई का फोया तरकर उसे नासारंध्र के पास रखने से ही अपस्मार शांत हो जाता है।

आधाशीशी : जिस तरफ के मस्तिष्क में वेदना हो इसके दूसरी ओर के नथुने में अगस्त के पत्तों या फूलों के रस की 2–3 बूंदे टपकाने से तुरन्त लाभ होता है। इससे नासिका की पीड़ा भी शांत हो जाती है।

प्रतिश्याय : जुकाम के वेग से सिर बहुत भारी तथा दुःखता हो तो अगस्त पत्र रस की दो–चार बूंदे नाक में टपकाने से तथा इसकी मूल का रस 10 से 20 ग्राम तक शहद मिलाकर दिन में 3–4 बार चाटने से कष्ट दूर हो जाता है।

नेत्र विकार :

1. इसके पुष्पों का रस 2–2 बूंद नेत्रों में डालने से दृष्टि का धुंधलापन मिटता है।
2. इसके पुष्पों की सब्जी या शाक बनाकर सुबह–शाम खाने से रतौंधी मिटती है।
3. इसके 250 ग्राम पत्रों को पीसकर एक किलोग्राम गोघृत में पकाकर सिद्ध किये हुए घी को 5–10 ग्राम सुबह–शाम सेवन करने से परम लाभ होता है।
4. इसके पुष्पों का मधु आंखों में डालने से धुंध या जाला मिटता है। पुष्प को तोड़ने से भीतर से 2–3 बूंद मधु निकलता है।
5. इसके पत्तों को घी में भूनकर खाने से और घी का सेवन करने से दृष्टिमांद्य, धुंध या जाला कटता है।

चित्तविभ्रम : इसके पत्र रस में सौंठ, पीपर और गुड़ समभाग मिलाकर 1–2 दो बूंद नस्य देने से लाभ होता है।

स्वर भंग : इसकी पत्तियों के क्वाथ से गंडूष करने से शुष्क कास, जीभ का फटना, स्वरभंग तथा कफ के साथ रूधिर निकलने में लाभ होता है।

उदरशूल : अगस्त की छाल के 20 ग्राम क्वाथ में थोड़ा सैंधा नमक और भुनी हुई 20 नग लौंग मिलाकर सुबह–शाम

पीने से तीन दिन में पुराने से पुराने उदर विकार और शूल नष्ट हो जाते हैं।

बद्धकोष्ठ : इसके 20 ग्राम पत्तों को 400 ग्राम पानी में उबालकर, 100 ग्राम शेष रहने पर 10–20 ग्राम क्वाथ पिलाने से बद्धकोष्ठ मिटता है।

श्वेत प्रदर : अगस्त की ताजी छाल को कूटकर इसके रस में कपड़े को भिगो कर योनि में रखने से श्वेत प्रदर और खुजली में लाभ होता है।

गठिया : धतूरे की जड़ और अगस्त की जड़ दोनों को बराबर मात्रा में लेकर पीस लें और पुल्टिस जैसा बनाकर वेदनायुक्त भाग पर बांधने से कष्ट दूर होता है। सूजन उतर जाती है। कम वेदना में लाल अगस्त की जड़ को पीसकर लेप करें।

वातरक्त : अगस्त के सूखे पुष्पों का 100 ग्राम महीन चूर्ण भैंस के एक किलो दूध में डालकर दही जमा दें, दूसरे दिन मक्खन निकाल कर मालिश करें। इस मक्खन की मालिश खाज पर करने से भी लाभ होता है।[5]

बुद्धिवर्धनार्थ : अगस्त के बीजों का चूर्ण 3 से 10 ग्राम तक गाय के धारोष्ण 250 ग्राम दूध के साथ प्रातः–सायं कुछ दिन तक खाने से स्मरण शक्ति तीव्र हो जाती है।

ज्वर :

1. इसके फूलों या पत्तों का रस सुँघाने से चातुर्थिक ज्वर और बंधे हुए जुकाम में लाभ होता है।
2. अगस्त पत्र स्वरस की दो या तीन चम्मच में आधा चम्मच शहद मिलाकर प्रातः–सायं सेवन करने से शीघ्र ही चातुर्थिक ज्वर का आना रूक जाता है। इसका प्रयोग बराबर 15 दिन तक करना चाहिए।
3. फेफड़ों के शोथ एवं कफज कास श्वास के साथ यदि ज्वर हो तो इसकी जड़ की छाल अथवा पत्तों का या पंचाग का 10 या 20 ग्राम स्वरस में बराबर शहद मिलाकर दिन में 2 से 3 बार सेवन करने से अत्यन्त लाभ होता है।
4. इसकी जड़ की छाल के 2 ग्राम महीन चूर्ण को पान के पत्तों के 10 ग्राम रस के साथ दिन में 3 बार सेवन करने से भी कफज कास श्वास के साथ ज्वर में लाभ होता है।
5. मसूरिका के और दूसरे ऐसे ज्वरों में जिनमें फोड़े–फुन्सियां हो जाया करती है, छाल का हिम या फांट 20 से 30 ग्राम की मात्रा में सबुह–शाम खाली पेट पिलाना चाहिए।

मूर्च्छा : केवल पत्र रस की चार बूंदे नाक में टपका देने से ही मूर्च्छा दूर हो जाती है।

बच्चों के विकार : इसके पत्र स्वरस को लगभग 5 से 10 ग्राम की मात्रा में पिलाने से दो–चार दस्त होकर बच्चों के सब विकार शांत हो जाते हैं।

अन्तर्विद्रधि : अगस्त के पत्रों को गरम कर यदि पुटपाक विधि गरम करें तो अच्छा है, फोड़े के स्थान पर बांधने से अन्तर्विद्र फूट कर बह जाती है।

रक्तस्राव : इसके फूलों का शाक खाने से लाभ होता है।

1. वृषागस्त्ययोः पुष्पाणि तिक्तानि कटुविपाकानि क्षयकासहराणि च।
अगस्त्यं नातिशीतोष्णं नक्तान्धानां प्रशस्यते। (सु०सू०)
2. अगस्त्यपत्रं कटुकं सतिक्तं गुरू कृमिघ्नं विशदं कफघ्नम्।
कडूहरं शोणितपित्तहारि स्यात् सूक्ष्ममुष्णं मधुरं विषघ्नम्।।
(कै०नि०)
3. मुनिशिंबी सरा प्रोक्ता बुद्धिदा रूचिदा लघुः।
पाककाले तु मधुरा तिक्ता चैव स्मृतिप्रदा।।
त्रिदोषशूलकफहृत् पांडुरोगविषापनुत्।
शोषगुल्महरा प्रोक्ताः सा पक्वा रूक्षपित्तला।। (नि०र०
4. अगस्तिपत्रं मरिचं मूत्रेण परिपेषितम्।
नस्यं शस्तमपस्मारं हन्ति शीघ्रं नरस्य तु।। (हरीत
5. अगस्तिपुष्प चूर्णेन माहिषं जनयेद्दधि।
तदुत्थनवनीतेन देहजं स्फुटनं जयेत्।। (भाव प्र

6 अजमोद

वैज्ञानिक नाम	:	*Apium graveolens* L.
कुलनाम	:	Apiaceae
अंग्रेजी नाम	:	Celery seeds
संस्कृत	:	अजमोदा, बस्तमोदा, मर्कटी, कारवी
हिन्दी	:	अजमोद
मारवाड़ी	:	अजमोदे
गुजराती	:	अजमोद, बौडी अजमों
मराठी	:	ओमादा, वोगा
पंजाबी	:	अजमुद, भूत धार
बंगाली	:	रान्धुनी, आजमूद, बनानी
द्राविड़ी	:	आशामंदा
कन्नड़	:	बोमा
अरबी	:	बज़ुलकरफ्स
फारसी	:	करफ्स (श)
तैलगु	:	अमोद, बोमम

गुण–धर्म

यह कफवातशामक, पित्तवर्धक, वेदनास्थापन, विदाही, दीपन, वातानुलोमन, शूलप्रशमन, कृमिघ्न, हृदयोत्तेजक, कफघ्न, मूत्रप्रवर्तक, गर्भाशयोत्तेजक और वाजीकरण है। यह हिचकी, वमन, गुदाशय की पीड़ा, कुक्कुर खांसी में लाभकारी है।[1,2] पाचन अंगों पर इसका प्रभाव होने से उदर विकार–नाशक औषधियों में इसे मुख्य स्थान प्राप्त है। यकृत, प्लीहा और हृदय को यह लाभ पहुंचाती है। अर्श और पथरी रोग में भी यह लाभकारी है।

परिचय

अजमोद भारतवर्ष में सर्वत्र, विशेषकर बंगाल में शीत ऋतु के आरंभ में बोई जाती है। हिमालय के उत्तरी और पश्चिमी प्रदेशों में, पंजाब की पहाड़ियों पर, पश्चिमी भारतवर्ष और फारस में बहुलता से होता है। फरवरी–मार्च में पुष्प खिलते हैं और मार्च–अप्रैल तक पुष्प फल में परिवर्तित होने पर पौधा समाप्त हो जाता है।

बाह्य–स्वरूप

अजमोद के छोटे–छोटे क्षुप अजवायन की भांति 1–3 फुट ऊंचे ाते विभक्त और किनारे कटे हुए होते हैं। पुष्प छतरीनुमा पुष्पक्रम ें नन्हें–नन्हें श्वेत रंग के होते हैं जो पककर अन्ततः बीजों में ारिवर्तित हो जाते हैं। धनिये व अजवायन की भांति इन बीजों को ो अजमोद कहते हैं।

रासायनिक संघटन

जमोद में कपूर से मिलता–जुलता एक पदार्थ एपिओला, तैलीय ाक्ष्ण और अग्राह्य होता है। इसके अतिरिक्त गंधक, उड़नशील तेल, ल्बुमीन, लुआब, गोद, क्षार और कुछ लवण पाये जाते हैं।

औषधीय प्रयोग

मस्तिष्क : इसके मूल की कॉफी मस्तिष्क एव वातनाड़ियों के लिए उपयोगी है।

दंत पीड़ा : अजमोद को जलाकर धूनी देने से दांतों की पीड़ा मिटती है।

श्वांस रोग : यह स्नायु शैथिल्यकर होने के कारण श्वसनी शोथ तथा श्वास रोगों में लाभकारी है। इसे 3–6 ग्राम की मात्रा में दिन में 3 बार प्रयोग करें।

शुष्क कास : अजमोद को पान में रखकर चूसने से सूखी खांसी में आराम मिलता है।

श्वांस : अजमोद उत्तेजक और बलवर्द्धक है, श्वास को मिटाने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है।

हिचकी : भोजनोपरान्त यदि हिचकियाँ आती हो तो अजमोद के 10–15 दाने मुँह में रखने से हिचकी बंद हो जाती है।

वमन :

1. जिन औषधियों का स्वाद अग्राह्य होता है, उनके साथ अजमोद के 2–5 ग्राम चूर्ण का सेवन करने से वमन की आशंका नही रहती है।
2. वमन बंद करने के लिए 2–5 ग्राम अजमोद एवं 2–3 लौंग की कली को पीस कर 1 चम्मच मधु के साथ चाटने से लाभ होता है।

अफारा : अजमोद के 3–6 ग्राम चूर्ण का 10 ग्राम गुड़ के साथ 3–4 बार सेवन करने से पेट का अफारा मिटता है।

उदरशूल :

1. 1 ग्राम काले नमक के साथ 3 ग्राम अजमोद की फंकी देने से पेट का दर्द दूर होता है।
2. इसके तेल की 2–3 बूंदे 1 ग्राम शुंठी चूर्ण में मिश्रित कर गरम जल के साथ सेवन करने से उदर की पीड़ा मिटती है।

पतले दस्त (अतिसार) : अजमोद, सौंठ, मोचरस एवं धाय के फूल समान मात्रा में चूर्ण कर 3–6 ग्राम की मात्रा में छाछ के साथ दिन में 3–4 बार सेवन करने से पतले दस्त बंद हो जाते हैं।

मूत्र विकार : अजमोद की मूल का 2–5 ग्राम चूर्ण सुबह–शाम सेवन करना मूत्र विकार में लाभकारी है।

अर्श : अजमोद को गरम कर कपड़े में बांधकर सेक करने से बवासीर की पीड़ा दूर होती है।

अश्मरी : डेढ़ से तीन ग्राम अजमोद का चूर्ण, 10 ग्राम मूली के पत्तो के रस के साथ, 500 मिलीग्राम जवाखार मिलाकर कुछ समय तक नित्य प्रातः व सायंकाल पीने से पथरी गल कर निकल जाती है।

वायु प्रकोप : मूत्राशय में वायु का प्रकोप होने पर अजमोद और नमक को स्वच्छ वस्त्र में बांधकर नलों पर सेक करने से वायु नष्ट हो जाती है।

कृमि : बच्चों की गुदा में कृमि हो जाने पर अजमोद को अग्नि पर डालकर धुआं देने से तथा इसको पीसकर लगाने से आराम मिलता है।

सर्वांग शोथ : सभी वायु विकार में अजमोद, छोटी, पीपल, गिलोय, रास्ना, सोंठ, अश्वगंधा, शतावरी एवं सौंफ इन आठ पदार्थों का समभाग लेकर चूर्ण कर डेढ़ ग्राम की मात्रा में 10 ग्राम गौघृत के साथ दिन में दो बार सेवन करना चाहिए।

गठिया : अजमोद वायविडंग, देवदारू, चित्रक, पिपला मूल सौंफ, पीपल, काली मिर्च 10–10 ग्राम, हरड़, विधारा 100 ग्राम, शुंठी 100 ग्राम, इन सबका महीन चूर्ण 6 ग्राम की मात्रा में पुराना गुड़ मिश्रित कर उष्ण जल के साथ दिन में 3 बार सेवन करने से शोथ, आमवात जोड़ों का दर्द, पीठ व जांघ का दर्द व सर्ववात रोग नष्ट होते है।

सर्वांग–पीड़ा : सर्वांग पीड़ा हो या पार्श्व पीड़ा, अजमोद को तेल में उबालकर मालिश करनी चाहिए। इसके पत्तों को गरम करके रोगी के बिस्तर पर बिछा देना चाहिए, ऊपर से रोगी को हल्का कपड़ा ओढ़ा देना चाहिए।

शूल : इसकी मूल का 10–20 ग्राम क्वाथ या 2–5 ग्राम चूर्ण सर्वांग शोथ और शूल में दिन में दो–तीन बार प्रयोग करना लाभकारी है।

कुष्ठ : शीत पित्त और कुष्ठ में अजमोद के 2–5 ग्राम चूर्ण को गुड़ के साथ मिलाकर 7 दिन तक दिन में दो–तीन बार सेवन करना चाहिए और पथ्य पूर्वक रहना चाहिए।

ज्वर : अजमोद 4 ग्राम तक नित्य प्रातः ठंड़े पानी के साथ बिना चबाये निगलने से जीर्णज्वर, शरीर की सर्दी आदि दूर हो जाती है।

व्रणः व्रणों को शीघ्र पकाने के लिए इसे थोड़े गुड़ के साथ पीसकर सरसों के तेल में पकाकर बांधना चाहिए।

निषेध :

1. अजमोद विदाही है, अर्थात खाने के पश्चात छाती में जलन पैदा करता है। गर्भाशयत्तोजक है, इसलिए गर्भवती महिलाओं को इसका सेवन नही करना चाहिए।
2. अपस्मार के रोगी को भी इसका सेवन नहीं करना चाहिए।

1. अजमोदा कटुस्तीक्ष्णा दीपनी कफवातनुत्।
उष्ण विदाहिनी हृद्या वृष्या बलकरी लघुः।।
नेत्रामय कफच्छर्दिहिक्कावस्तिरुजो हरेत्।। (भाव प्रकाश)

2. अजमोदा तु शूलघ्नी तिक्तोष्णा कफवातजित्।
हिक्काध्मानारुचीर्हन्ति कृमिजिद्वह्निदीपनी।। (ध०नि०)

7 अजवायन

वैज्ञानिक नाम	:	*Trachyspermum ammi* (L.) Sprague
कुलनाम	:	Apiaceae
अंग्रेजी नाम	:	Ajowan
संस्कृत	:	यवानी, अजमोदिका, दीप्यका
हिन्दी	:	अजवायन
गुजराती	:	अजमो
मराठी	:	ओवा
बंगाली	:	जोवान
पंजाबी	:	अनवाइन, जवैण
फारसी	:	नानखाह
तैलगु	:	वामु

परिचय

भारतवर्ष में अजवायन का प्रयोग औषधि के रूप में बहुत प्राचीन काल से हो रहा है। प्रसूति के बाद स्त्री को इसका विशेष रूप से सेवन कराया जाता है। इससे अन्न का पाचन ठीक होता है, भूख अच्छी लगती है, गर्भाशय की शुद्धि एवं पीड़ा दूर होती है। प्रसव के पश्चात इसके चूर्ण की पोटली बना योनि में रखने से या इसके क्वाथ से योनि का प्रक्षालन करने से गर्भाशय में दुर्गन्ध युक्त जलस्त्राव एवं गर्भाशय में कीटाणु प्रकोप नहीं हो पाता। पाचक औषधि के रूप में इस बूटी ने बहुत प्रसिद्धि पाई है। अजवायन में चिरायते का कटुपौष्टिक गुण, हींग का वायुनाशक और काली मिर्च का अग्नि दीपन गुण इसी कारण कहा जाता है "एका यवानी शतम्न्नपातिका" – अर्थात् अकेली अजवायन ही सैंकड़ो प्रकार के अन्न को पचाने में सक्षम है। दूध यदि ठीक न पचता हो तो दूध पीकर ऊपर से थोड़ी अजवायन खा लेनी चाहिये। यदि गेहूं का आटा मिष्ठान्न आदि न पचता हो तो इसमें इस चूर्ण को मिलाकर खाना चाहिये। शरीर में कहीं पर भी वेदना होती हो तो इसे पानी में पीसकर लेप करें और ऊपर से धीरे धीरे सेक दें। अजवायन को आग पर डाल कर धूपित करने से, अंगदर्द दूर होकर पसीना आता है, एवं देह की शुद्धि हो जाती है।

बाह्य–स्वरूप

इसका शाखा प्रशाखा युक्त, चिकना या किंचित् मृदुरोमशः पत्रमय क्षुप एक से तीन फीट ऊँचा होता है, काष्ठ धारीदार होता है,

पत्र द्विपक्षवत् या त्रिपक्षवत्' विभक्त होता है। अन्तिम पत्रखण्ड आधे से एक इंच लम्बे, रेखाकार होते है। पुष्प छत्राकार, श्वेत संयुक्त छत्रको में होते है। फल आधे इंच लम्बे, अण्डाकार, धूसर भूरे रंग के सूक्ष्म, कंटकित या रोमश होते है तथा पांच स्पष्ट रेखाओं से युक्त होने के कारण पत्रचकोणीय प्रतीत होते है फल के एक बीजी दोनों खण्ड कुछ दबे होते है। प्रत्येक खण्ड में एक बीज होता है। फरवरी–अप्रैल में पुष्प और उसके बाद इसमें फल लगते है।

रासायनिक संघटन

इसके अन्दर एक प्रकार का सुगन्धित उड़नशील द्रव्य होता है, जिसे अजवायन का फूल सत तथा अंग्रेजी में थायमोल कहते है। अजवायन को पानी में भिगोकर भाप के द्वारा इसका सत निकाला जाता है।

गुण–धर्म

दीपन, पाचन, वातानुलोमन, शूलप्रशमन, जीवाणु नाशक, गर्भाशय उत्तेजक, उदर कृमिनाशक (अकुंशमुख कृमि पर विशिष्ट घातक क्रिया), पित्त–वर्धक, शुक्रनाशक, स्तन्यनाशन, कफवातशामक, ज्वरघ्न, शीतप्रशमन, वेदनास्थापन तथा शोथहर है।[1]

औषधीय प्रयोग

प्रतिश्याय व शिरःशूल :

1. 200 से 250 ग्राम अजवायन को गरम कर मलमल के कपड़े में बांधकर पोटली बनाकर तवे पर गर्म करके सूंघने से छींके आकर जुकाम व प्रतिश्याय का वेग कम होता है।
2. अजवायन को साफ कर महीन चूर्ण बना लें, इस चूर्ण को 2 से 5 ग्राम की मात्रा में नस्वार की तरह सूंघने से जुकाम, सिर की पीड़ा, कफ का नासिका में रूक जाना एवं मस्तिष्क के कृमि में लाभ होता है।

खांसी :

1. इसके चूर्ण की 2 से 3 ग्राम मात्रा को गर्म पानी या गर्म दुध के साथ दिन में दो या तीन बार लेने से भी जुकाम, सिर दर्द, नजला, मस्तकशूल, कृमि पर लाभ होता है।
2. कफ अधिक गिरता हो, बार–बार खांसी चलती हो, ऐसी दशा में अजवायन का सत् 125 मिलीग्राम, घी 2 ग्राम और शहद 5 ग्राम में मिलाकर दिन में 3 बार खाने से कफोत्पत्ति कम होकर खांसी में लाभ होता है।
3. खांसी तथा कफ ज्वर में अजवायन 2 ग्राम, छोटी पिप्पली आधा ग्राम, का क्वाथ बनाकर 5 से 10 ग्राम की मात्रा में सेवन करने से लाभ होता है।
4. खांसी में 1 ग्राम अजवायन रात्रि में सोते समय मुलेठी 2 ग्राम, चित्रकमूल 1 ग्राम से निर्मित काढे को गर्म पानी के साथ सेवन करें।
5. 5 ग्राम अजवायन को 250 ग्राम पानी में पकायें, आधा शेष रहने पर, छानकर नमक मिला रात्रि को सोते समय पी लें।
6. खांसी पुरानी हो गई हो, पीला दुर्गन्धमय कफ गिरता हो और पाचन क्रिया मन्द पड़ गई हो तो अजवायन का अर्क दिन में 3 बार 25 की मात्रा में पिलाने से लाभ होता है।

सिर की जुएं : 10 ग्राम अजवायन चूर्ण में 5 ग्राम फिटकरी मिला, दही या छाछ में मिलाकर बालों में मलने से लीखें तथा जुएं मर जाती है।

कर्णशूल : 10 ग्राम अजवायन को 50 ग्राम तिल के तेल में पकाकर सहने योग्य उष्ण तैल को 2–2 बूँद कान में डालने से कान की वेदना मिटती है।

उदरकृमि :

1. स्वच्छ अजवायन के महीन चूर्ण को 3 ग्राम की मात्रा में दिन में दो बार छाछ के साथ सेवन करने से उदर के कृमियों का समूल नाश हो जाता है।
2. अजवायन के 2 ग्राम चूर्ण को समान भाग नमक के साथ प्रातः काल सेवन करने से अजीर्ण, आमवात तथा कृमिजन्य रोग, आध्मान, शूल आदि शान्त होता है।[2]
3. उदर में जो हुकवर्म नामक कृमि होते हैं, उनका नाश करने के लिये अजवायन का सत् 125–500 मिलीग्राम तक खाली पेट 1–1 घंटे के अंतर में 3 बार देने से और मामूली जुलाब (अरंडी तैल नहीं दें) देने से सब कृमि निकल जाते हैं। यह प्रयोग, पाडुंरोगी, निर्बल और सगर्भा पर नहीं करना चाहिये।
4. अजवायन के 500 मिलीग्राम चूर्ण में, समभाग काला नमक मिला, रात्रि के समय रोज गरम जल से देते रहने से बालकों का कृमि रोग दूर हो जाता है। कृमिरोग में पत्तों का 5 मि०ली० स्वरस भी लाभकारी है।

जलोदर :

1. गाय के 1 किलो मूत्र में अजवायन लगभग 200 ग्राम ड भिगोकर सुखा लें, इसको थोड़ी–थोड़ी मात्रा में गौमूत्र के स खाने से जलोदर मिटता है।
2. यही अजवायन जल के साथ खाने से पेट की गुड़गुडा और खट्टी डकारें आना बन्द हो जाती है
3. अजवायन को बारीक पीसकर उस में थोंड़ी मात्रा में मिलाकर लेप बनाकर पेट पर लगाने से जलोदर एवं पेट अफारे में सद्य लाभ होता है।

अमृतधारा : पोदीने का सत या फूल 10 ग्राम, सत् अजवाय ग्राम, देसी कपूर 10 ग्राम तीनों को एक साफ शीशी में डा

अच्छी प्रकार से डाट लगाकर धूप में रखें। थोड़ी देर में तीनों चीजों का गलकर पानी बन जायेगा। यह एक दवा अनेक बीमारियों में काम आती है। (इसको आंशिक रूप से परिवर्तित कर हम आश्रम में दिव्यधारा के नाम से निर्मित करते हैं)

सर्दी जुकाम : सर्दी–जुकाम में 3–4 बूंद दिव्यधारा रूमाल में डालकर सूंघने से या 8–10 बूंद गर्म पानी में डालकर भाप लेने से तुरन्त लाभ होता है।

उल्टी–दस्त : अमृत धारा की 4–5 बूदें बतासे में या गरम जल में डालकर आवश्यकतानुसार देने से तुरन्त लाभ होता है। एक बार में लाभ न हो तो थोड़ी–थोड़ी देर में 2–3 बार दे सकते है।

हैजा : हैजे में 4–5 बूदं अमृतधारा की विशेष रूप से गुणकारी है। अमृतधारा को हैजे की प्रारम्भिक अवस्था में देने से तुरन्त लाभ होता है। एक बार में आराम न हो तो 15–15 मिनट के अन्तर से 2–3 बार दे सकते है। इसके प्रयोग से हैजे के सैकड़ो बीमार बच गये है।

अतिसार : मरोड़, पेट दर्द, श्वास, गोला, उल्टी आदि बीमारियों में भी 5–7 बूदं अमृतधारा बतासे में देने से तुरन्त लाभ होता है।

कीट दंश : बिच्छू, ततैया, भंवरी, मधुमक्खी इत्यादि जहरीले कीटों के दंश पर भी अमृतधारा को लगाने से शान्ति मिलती है। पत्तों को कुचल कर भी बाँध दिया जाता है।

उदर विकार मंदाग्नि, अम्लपित्त व शूल :

1. 3 ग्राम अजवायन में ½ ग्राम काला नमक मिलाकर गरम जल के साथ फंकी लेने से अफारा मिटता है। इस चूर्ण को दोनों समय फंकी लेने से वायु गोले का नाश होता है।[3]
2. अजवायन, सैंधा नमक, हरड़, और सौंठ इनके चूर्ण को समभाग मिश्रित कर, 1 से 2 ग्राम की मात्रा गर्म पानी के साथ सेवन करने से उदर शूल नष्ट होता है। इस चूर्ण के साथ वचा, सोंठ, काली मिर्च, पिप्पली 100 ग्राम जल में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ के साथ गरम–गरम ही रात्रि में पीने से कफ व गुल्म नष्ट होता है।[4]
3. प्रसूता स्त्रियों को अजवायन के लड्डू और भोजन के बाद अजवायन 2 ग्राम की फंकी देनी चाहिये, इससे आंतों के कीड़े मरते हैं, पाचन होता है और भूख अच्छी लगती है एवं प्रसूत रोग से बचाव होता है।
4. भोजन के बाद यदि छाती में जलन हो तो 1 ग्राम अजवायन और बादाम की 1 गिरी दोनों को खूब चबा–चबा कर या कूट–पीस कर खायें।
5. अजवायन अर्क की 2–2 बूंदे पान के बीड़े में लगाकर खायें।
6. अजवायन 1 भाग, काली मिर्च और सैंधा नमक आधा–आधा भाग, गरम जल के साथ 3–4 ग्राम तक सुबह–शाम सेवन करे।

अजवायन 80 ग्राम, सैंधा नमक 40 ग्राम, काली मिर्च 40 ग्राम, काला नमक 40 ग्राम, जवाखार 40 ग्राम, कच्चे पपीते का दूध (पापेन) 10 ग्राम, इन सबको महीन पीस कर कांच के बरतन में भरकर 1 किलो नीबू का रस डालकर धूप में रख देवें और बीच–बीच में हिलाते रहें। 1 महीने बाद जब बिल्कुल सूख जाये, सूखे चूर्ण को 2 से 4 ग्राम की मात्रा में जल के साथ सेवन करने से मंदाग्नि शीघ्र दूर होती है। इससे पाचन शक्ति बढ़ती है तथा अजीर्ण, संग्रहणी, अम्लपित्त इत्यादि रोगों में लाभ होता है।

8. शिशु के पेट में यदि दर्द हो और सफर में हो तो बारीक स्वच्छ कपड़े के अन्दर अजवायन को रख, शिशु की माँ यदि उसके मुंह में चटायें तो शिशु का उदर शूल तुरन्त मिट जाता है।

दस्त : जब मूत्र बन्द होकर पतले–पतले दस्त हों, तब अजवायन 3 ग्राम और नमक 500 मि०ग्रा० ताजे पानी के साथ फंकी लेने से तुरन्त लाभ होता है। अगर एक बार में आराम न हो तो 15–15 मिनट के अन्तर पर 2–3 बार लेवें।

शूल आनाह आदि उदर विकारों पर : अमाशय में रस के कम होने से या अधिक भोजन करने से जिनका पेट भोजन करने के बाद फूल जाता हो

1. अजवायन 10 ग्राम, छोटी हरड़ 6 ग्राम, हींग घी में भुनी और सेंधा नमक 3–3 ग्राम, इनका चूर्ण 2 ग्राम, किंचित् गरम जल के साथ दिन में तीन बार सेवन करें।
2. 1 किलोग्राम अजवायन में 1 किलोग्राम नीबू का रस तथा पांचो नमक 50–50 ग्राम, कांच के बरतन में भरकर रख दें, व दिन में धूप में रख दिया करें, जब रस सूख जाये तब दिन में दो बार 1–4 ग्राम तक सेवन करने से उदर सम्बन्धी सब विकार दूर होते है।
3. 1 ग्राम अजवायन को इन्द्रायण के फलों में भर कर रख छोडें, जब सूख जाये तब बारीक पीस इच्छानुसार काला नमक मिलाकर रख लें, इसे गरम जल से सेवन करें।
4. अजवायन चूर्ण 3 ग्राम प्रातः–सायं गरम जल से लेवें।
5. डेढ किलोग्राम जल को आंच पर रखें, जब वह खूब उबल कर सवा किलोग्राम रह जाये तब नीचे उतार कर आधा किलोग्राम पिसी हुई अजवायन डालकर ढक्कन बंद कर दे। जब ठंडा हो जाये तो छानकर बोतल में भर कर रख लें। 50–50 ग्राम दिन में 3 बार सेवन करें।
6. वायु गैस पेट में वायु गैस बनने की अवस्था में भोजन के बाद 125 ग्राम दही के मट्ठे में 2 ग्राम अजवायन और आधा ग्राम काला नमक मिलाकर आवश्यकतानुसार सेवन करें।

अर्श : दोपहर के भोजन के बाद एक गिलास छाछ में डेढ़ ग्राम (चौथाई चम्मच) पिसी हुई अजवायन और एक ग्राम सैंधा नमक मिलाकर पीने से बवासीर के मस्से पुनः नहीं होते।

बहुमूत्र :

1. 2 ग्राम अजवायन को 2 ग्राम गुड के साथ कूट–पीस कर, 4 गोली बना लें, 3–3 घंटे के अन्तर से 1–1 गोली जल से लेवें, इससे बहुमूत्र रोग दूर होता है।

2. 4 ग्राम अजवायन और 4 ग्राम गुड़ की 500–500 मिली० ग्राम तक की नौ गोली बना लें, 2–2 घन्टे बाद खिलाने से अवश्य लाभ होता है।
3. जो बच्चे बिस्तर गीला कर देते हैं उन्हें रात्रि में 500 मि०ग्रा० तक अजवायन खिलायें।

प्रमेह : अजवायन 3 ग्राम को 10 ग्राम तिल के तेल के साथ दिन में तीन बार सेवन से लाभ होता है।

वृक्क शूल : 3 ग्राम अजवायन का चूर्ण सुबह शाम गरम दूध के साथ लेने से गुर्दे के दर्द में आशातीत लाभ होता है।

त्वग्रोगव्रण :

1. चर्म रोग और व्रणों पर इसका गाढ़ा लेप करने से दाद, खुजली, कृमियुक्त व्रण एवं जले हुये स्थान में लाभ होता है।
2. अजवायन को उबलते हुये जल में डालकर व्रणों को धोने से दाद, फुन्सी, गीली खुजली आदि चर्म रोगों में लाभ होता है।

मासिक धर्म की रूकावट :

1. अजवायन 10 ग्राम और पुराना गुड 50 ग्राम को 200 ग्राम जल में पकाकर प्रातः–सायं सेवन करने से गर्भाशय का मल साफ होता है। और रूका हुआ मासिक धर्म फिर से जारी हो जाता है।
2. 3 ग्राम अजवायन चूर्ण को प्रातः–सायं गर्म दूध के साथ सेवन करने से मासिक धर्म की रूकावट दूर होकर, रजस्त्राव खुलकर होता है।

पुरुषत्व प्राप्ति के लिये : 3 ग्राम अजवायन को सफेद प्याज के रस 10 मिलीलीटर में 3 बार 10–10 ग्राम शक्कर मिलाकर सेवन करें। 21 दिन में पूर्ण लाभ होता है। इस प्रयोग से नपुंसकता, शीघ्रपतन व शुक्राणु अल्पता के रोग में भी लाभ होता है।

सुजाक : अजवायन के तेल की 3 बूंदें 5 ग्राम शक्कर में मिलाकर प्रातः–सायं सेवन करते रहने से तथा नियमपूर्वक रहने से सुजाक में लाभ होता है।

शराब की आदत :

1. शराबियों को जब शराब पीने की इच्छा हो तथा रहा ना जाये तब वो अजवायन 10–10 ग्राम की मात्रा में 2–3 बार चबायें।
2. आधा किलो अजवायन 4 किलो पानी नें पकाकर जब आधा से भी कम शेष रहे तब छानकर शीशी में भरकर फ्रिज में रखें, भोजन से पहले 1 कप काढे को शराबी को पिलायें, जो शराब छोड़ना चाहते हैं और छोड़ नहीं पाते, उनके लिए यह प्रयोग एक वरदान समान है। हमने हजारों शराबियों को इस प्रयोग से शराब मुक्त किया है।

मूत्रकृच्छ्र :

1. 3 से 6 ग्राम अजवायन की फक्की उष्ण जल के साथ लेने से मूत्र की रूकावट मिटती है।
2. 10 ग्राम अजवायन को पीसकर लेप बनाकर पेडू पर लगाने से अफारा मिटता है, शोथ कम होता है तथा खुलकर पेशाब होता है।

ज्वर :

1. अजीर्ण की वजह से उत्पन्न हुये ज्वर में 10 ग्राम अजवायन, रात्रि को 125 ग्राम जल में भिगो दें, प्रातः काल मसल छानकर पिलाने से ज्वर आना बन्द हो जाता है।
2. शीतज्वर में 2 ग्राम अजवायन सुबह–शाम खिलायें।
3. ज्वर की दशा में यदि पसीना अधिक निकले तब 100 से 200 ग्राम अजवायन को भूनकर और महीन पीसकर सर्व शरीर पर लगायें।

इन्फल्युएंजा : 10 ग्राम अजवायन को 200 ग्राम गुनेगुने पानी में पकाकर या फांट तैयार कर प्रत्येक 2.5 घंटें के बाद 25–25 ग्राम पिलाने से रोगी की बैचेनी शीघ्र दूर हो जाती है। 24 घंटे में ही तबियत अच्छी हो जाती है।

शूल आघातज शोथ : किसी भी प्रकार की चोट पर 50 ग्राम गर्म अजवायन को दोहरे कपड़े की पोटली में डालकर सेंक करने से

(1 घंटे तक) आराम आ जाता है। जरूरत हो तो जख्म पर कपड़ा डाल दें ताकि जले नहीं। किसी भी प्रकार की चोट पर अजवायन का सेंक रामबाण सिद्ध हुआ है।

मलेरिया ज्वर : मलेरिया ज्वर के बाद हल्का–हल्का बुखार रहने लगता है, इसके लिये 10 ग्राम अजवायन को रात में 100 ग्राम जल में भिगों दे और प्रातः पानी गुनगुना कर जरा सा नमक डालकर कुछ दिन सेवन करें।

बच्चों के पैरो पर कांटा चुभने पर : कांटा चुभने के स्थान पर पिघले हुये गुड़ में पिसी हुई अजवायन 10 ग्राम मिलाकर थोड़ा गरम कर बांध देने से कांटा अपने आप निकल जायेगा।

पित्ती उछलना : 50 ग्राम अजवायन को 50 ग्राम गुड के साथ अच्छी प्रकार कूटकर 6–6 ग्राम की गोली बना लें। 1–1 गोली प्रातः–सायं ताज़े पानी के साथ लेने से एक सप्ताह में ही तमाम शरीर पर फैली हुई पित्ती दूर हो जायेगी।

विशेष :

1. अजवायन ताजी ही लेनी चाहिये क्योंकि पुरानी हो जाने पर इसका तैलीय अंश नष्ट हो जाने से यह वीर्यहीन हो जाती है। क्वाथ के स्थान पर अर्क या फाटं का प्रयोग बेहतर है
2. अजवायन का अधिक सेवन सिर में दर्द उत्पन्न करता है

1. यवानी पाचनी रूच्या तीक्ष्णोष्णा कटुका लघुः।
दीपनी च तथा तिक्ता पित्तलाशुक्रशूलहृत्।।
वातश्लेष्मोदरानाहगुल्मप्लीहकृमिप्रणुत्। (भाव प्रकाश)

2. यवानी लवणोंपेतां भक्षयेत् कल्क तुस्थितः।
अजीर्णमामवात क्रिमिजांश्च जयेद् गदान्।।
(भैषज्यरत्नावली)

3. दीप्यकं सैन्धवं पथ्या नागरञ्च चतुःसमम्।
चूर्णं शूलं अपत्याशु मन्दस्याग्नेश्च दीपनम्।।
(भैषज्यरत्नावली)

4. यवानी चोग्रगन्धा च तथा कुष्ठुक नथम्।
पाचनं शलौवियक गुल्मेंपीतं धोयन निरासु।।
(भैषज्यरत्नावली)

खुरासानी अजवायन

8

वैज्ञानिक नाम	:	*Hyoscyamus niger* L.
कुलनाम	:	Solanaceae
अंग्रेजी नाम	:	Henbane
संस्कृत	:	पारसीक यवानी, मदकारिणी, तुरूष्का, यावनी
हिन्दी	:	खुरासानी अजवायन
गुजराती	:	खुरासानी अजमा
मराठी	:	खुरासानी ओवा
बंगाली	:	खोरासानी
तेलगु	:	कुरासानी वमम
द्राविड़ी	:	कुरीशानी वानम
अरबी	:	तेरालबंज, बजुलबज्ज
फारसी	:	तुख्मवंग
पंजाबी	:	खुरासानी अजवैन
तमिल	:	कुरासानी योमम

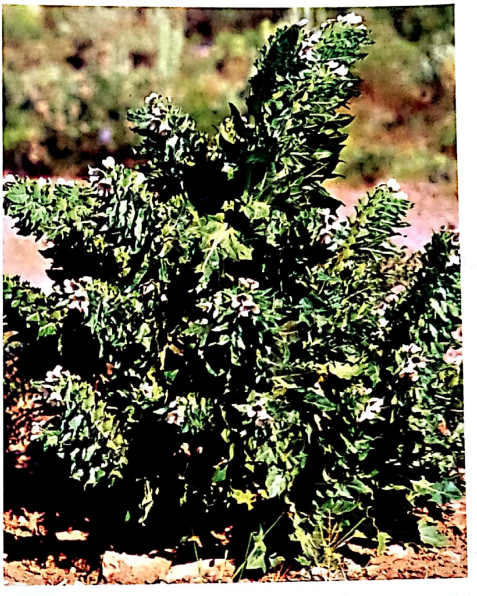

परिचय

खुरासानी अजवायन भारतवर्ष में कश्मीर से गढ़वाल तक 8,000 से 10,000 फुट की ऊंचाई तक पाई जाती हैं। सहारनपुर, कोलकाता, आगरा, अजमेर, पूना इत्यादि के सरकारी उद्यानों एवं खेतों मे यह बोयी जाती है।

बाह्य–स्वरूप

खुरासानी अजवायन का पौधा अजवायन के पौधे से कुछ बड़ा, एक वर्षायु या द्विवर्षायु होता है। इसकी मूल तंतुयुक्त तथा तना गोल, सीधा और पुष्ट होता है। पत्र लम्बे–चौड़े, भिन्न–भिन्न प्रमाण के, किनारे कटे हुए या कंगूरेदार, हरे रंग के रोमशः होते हैं। शाखाओं पर भी रोम होते हैं। पुष्प गुच्छों में पीताभ हरे रंगे के बैंगनी रंग की रेखाओं से युक्त फल छोटे–छोटे 1/2 इंच व्यास के द्विकोषीय, प्रत्येक कोष में लाल मिर्च जैसे चपटे वृक्काकार अजवायन से दुगने श्यामवर्ण के बीज होते हैं।

रासायनिक संघटन

इसके बीजों में 25 से 30 प्रतिशत तक स्थिर तैल, पत्रों एवं पुष्पों में हायोसायमिन तथा हायोसन नामक क्षाराभ के साथ ऐट्रोपिन तथा स्कोपिन भी अल्प मात्रा में पाये जाते हैं। ऐट्रोपिन द्विवर्षायु पौधे की जड़ में मिलता है।

गुण–धर्म

खुरासानी कफघ्न, श्वास–हर, हृदयावसादक, हृदय और कामावसादक है। शामक होने से बस्तिशोध, अश्मरी, हस्ति मेह आदि विकारों में तथा शीघ्रपतन, स्वप्नदोष, रजःकृच्छता, प्रदर तथा अनियमित मासिक धर्म में यह लाभकर है। अति काम वासना को शांत करने के लिए भी इसका प्रयोग करते हैं। खुरासानी अजवायन निंद्राजनक, संकोच विकास प्रतिबंधक तथा कुछ मूत्रल होता है। थोड़ी मात्रा में यह हृदय की गति को धीमाकर उसे बल देता है। परंतु अधिक मात्रा में इसका सेवन हृदय के लिए हानिकारक है। इसकी अवसादक क्रिया मस्तिष्क, जननेन्द्रियों और आंतों पर मुख्य रूप से होती है। अफीम और धतूरे इसकी समानान्तर औषधियां है, परंतु अफीम कब्ज करती है, जबकि पारसीक यवानी इस दोष से मुक्त है। धतूरे के प्रयोग से मद और भ्रम पैदा होता है, परंतु इस बूटी से भ्रम नही होता, इसलिए पारसीक अजवायन इन दोनों से बेहतर कार्य करती है। नींद लाने ओर वेदनाशमन द्रव्यों में इसे मुख्य स्थान प्राप्त है। स्नायुतंत्र पर इसका शामक प्रभाव होने के कारण यह मन को शांत करती है, प्रगाढ़ निंद्रा आती है, धतूरे से गाढ़ी नींद नहीं आती। किसी भी कारण से मानसिक अस्वस्थता और अनिंद्रा होने पर यह औषधि तत्काल लाभ करती है। इससे मन शांत होता है, दस्त साफ होता है और सुखदायक नींद आती है।

औषधीय प्रयोग

दंत पीड़ा : खुरासानी अजवायन को समभाग राल के साथ पीसकर दांतो की गुहा में रखने से दंत पीड़ा दूर होती है।

कर्णशूल : खुरासानी अजवायन को तिल के तैल में सिद्ध करके कान में 2–2 बूंद टपकाने से कर्णशूल मिटता है।

मसूड़ों से खून आना : खुरासानी अजवायन के पत्तों के क्वाथ से कुल्ला करने से मसूड़ों से खून आना बन्द हो जाता है।

उदर शूल :

1. इसकी गुड़ में गोली बना के देने से पेट की वायु पीड़ा मिटती है। इसके 12 ग्राम चूर्ण में 250 मिलीग्राम काला नमक मिलाकर खिलाने से भी लाभ होता है।
2. इसके तेल की 2–4 बूंदें, एक ग्राम सौंठ चूर्ण में मिलाकर खाने से तथा ऊपर से गर्म सौंफ का अर्क 15–20 मिलीलीटर की मात्रा में पिलाने से उदर पीड़ा शांत हो जाती है अथवा इसके 10–20 ग्राम क्वाथ में थोड़ा गुड़ मिलाकर पिलावें।

यकृत पीड़ा : इसके तेल का लेप करने से पुरानी यकृत की पीड़ा तथा छाती के दर्द में बहुत लाभ होता है।

कृमि विकार : जिस पुरुष के पेट में कीड़े हों, वह सुबह ही 5 ग्राम गुड़ खाकर, कुछ समय बाद खुरासानी अजवायन के 1–2 ग्राम चूर्ण की फंकी बासी पानी से लें। आंतों में स्थित कीड़े बाहर निकल जाते है।[1]

मूत्र रोग : इसके बीजों का सत्व 15–20 बूंद की मात्रा में दिन में 3–4 बार देने से मूत्रेन्द्रिय सम्बन्धी पीड़ा, पथरी इत्यादि रोगों में देने से मूत्र विरेचन होकर शांति मिलती है।

गर्भाशय की पीड़ा : गर्भाशय की पीड़ा मिटाने के लिये इसकी बत्ती बनाकर योनि में रखनी चाहिये।

सन्धिवातः तिल के तैल में इसको सिद्ध कर मालिश करने से सन्धिवात, गृध्रसी, कमर दर्द इत्यादि रोगो में लाभ पहुंचता है।

आवेश रोग : इसकी 30 बूंदे एक–एक घंटे के अन्तर से 25–25 ग्राम पानी में मिलाकर देने से स्त्रियों का हिस्टीरिया रोग तथा प्रसूतिका के पागलपन में तथा वात–वेदनाओं में लाभ होता है।

1. पारसीक यवानिका पीता पर्युषित वारिणा प्रातः।
   गुड़पूर्वा कृमिजालं कोष्ठगतं पातयत्याशु।। (भैषज्य रत्नावली)

अकरकरा

9

वैज्ञानिक नाम	:	*Anacyclus pyrethrum* DC.
कुलनाम	:	Asteraceae
अंग्रेजी नाम	:	Pellitory root, pyrethrum root
संस्कृत	:	आकारकरभ, अकलल्न्क
हिन्दी	:	अकरकरा
गुजराती	:	अकोरकरो
मराठी	:	अक्कलकरा
बंगाली	:	आकरकरा
फारसी	:	वेश्वतर्खून, कोही
अरबी	:	आकिकिहां, अदुक लई
पंजाबी	:	अकरकरा

परिचय

अकरकरा मूल रूप से अरब का निवासी कहा जाता है, यह भारत के कुछ हिस्सों में उत्पन्न होता है। वर्षा ऋतु की प्रथम फुहारे पड़ते ही इसके छोटे–छोटे पौधे निकलना शुरू कर देते हैं। इसकी जड़ का स्वाद चरपरा और मुंह में चबाने से गर्मी महसूस होती है तथा जिह्वा जलने लगती है। गुण–धर्म में अरब से आयातित औषधि अधिक वीर्यवान होती है।

बाह्य–स्वरूप

यह झाड़ीदार, रोएंदार होता है। कांड पर ग्रन्थियां होती है। कांडत्वक धूसरवर्ण और तिक्त, मूल3–4इंच लम्बा, आधा इंच मोटा, पुष्प श्वेत बैंगनी और पीले होते हैं। इसकी शाखाएं, पत्र और पुष्प सफेद बबूने के समान होते हैं, परन्तु इसकी डंठल पोली होती है। महाराष्ट्र में इसकी डंडी का अचार और शाक बनाकर खाया जाता है।

रासायनिक संघटन

अकरकरा की जड़ का मुख्य सक्रिय तत्व पाइरेथ्रीन नामक सत्व होता है जो रंगहीन क्रिस्टल के रूप में प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त अंशतः उड़नशील तेल, स्थिर तेल, 50 प्रतिशत इन्यूलिन तत्व पाया जाता है।

गुण–धर्म

यह बलकारक, कटु तथा प्रतिश्याय और शोथ को नष्ट करता है।[1] यह लालास्रावजनक, प्रदाहकारक नाड़ी को बल देने वाला कामोद्दीपक और वेदनास्थापक है।

औषधीय प्रयोग

मस्तकपीड़ा :

1. इस की जड़ को पीसकर ललाट पर हल्का गर्म लेप करने से मस्तक की पीड़ा मिटती है।
2. इसको दांतों के बीच में रखने से प्रतिश्याय की मस्तक पीड़ा मिटती है। इसको चबाने से लार छूटकर दाड़ की पीड़ा मिट जाती है।

अपस्मार :

1. इसको सिरके में पीसकर मधु मिलाकर 5–10 मिलीलीटर की मात्रा में चाटने से अपस्मार का वेग रूकता है।
2. ब्राह्मी के साथ इसका क्वाथ करके पिलाने से मिर्गी में लाभ होता है।

मंदबुद्धि : अकरकरा और ब्राह्मी समान मात्रा में लेकर चूर्ण बनायें, इसको आधा चम्मच नियमित सेवन करने से बुद्धि तीव्र होती है।

हकलाना : इसके मूल चूर्ण को काली मिर्च व मधु के साथ एक ग्राम की मात्रा में मिलाकर जिह्वा पर मलने से जीभ का सूखापन और जड़ता दूर होकर हकलाना या तोतलापन कम होता है। 4–6 हफ्ते प्रयोग करें।

कंठ्य : अकरकरा चूर्ण की 250–500 मिलीग्राम मात्रा में फंकी लेने से बच्चों और गायकों का कंठस्वर सुरीला हो जाता है।

दंतशूल :

1. अकरकरा और कपूर दोनों बराबर लेकर पीसकर मंजन करने से सब प्रकार की दंत पीड़ा मिटती है।
2. इसकी जड़ के क्वाथ से गंडूष करने से दंत पीड़ा दूर होती है और हिलते हुए दांत जम जाते हैं।

कण्ठरोग : तालू, दांत और गले के रोगों में इसके कुल्ले करने से बहुत लाभ होता है।

मुख दुर्गन्ध : अकरकरा, माजूफल, नागरमोथा, भुनी हुई फिटकरी, काली मिर्च, सैंधानमक सबको बराबर मिलाकर बारीक पीस लें। इस मिश्रण से प्रतिदिन मंजन करने से दांत और मसूढ़ो के सब विकार दूर होकर दुर्गन्ध मिट जाती है।

हृदय रोग :

1. अर्जुन की छाल और अकरकरा चूर्ण दोनों का बराबर मिलाकर पीसकर दिन में दो बार आधा–आधा चम्मच की मात्रा में खाने से घबराहट, हृदय की धड़कन, पीड़ा, कम्पन और कमजोरी में लाभ होता है।
2. कुलञ्जन, सौंठ और अकरकरा की 20–25 मिलीग्राम मात्रा को 400 मिलीलीटर पानी में उबालकर चतुर्थांश क्वाथ पिलाने से हृदय रोग मिटता है।

हिचकी : हिचकी आने पर एक ग्राम अकरकरा का चूर्ण शहद के साथ चटायें। हिचकी पर यह चमत्कारिक असर दिखाता है।

ज्वर :

1. इसकी जड़ के चूर्ण को जैतून के तैल में पकाकर मालिश करने से पसीना आकर ज्वर उतर जाता है।
2. चिरायते के 4–6 बूंद अर्क के साथ इसकी 500 मिलीग्राम की

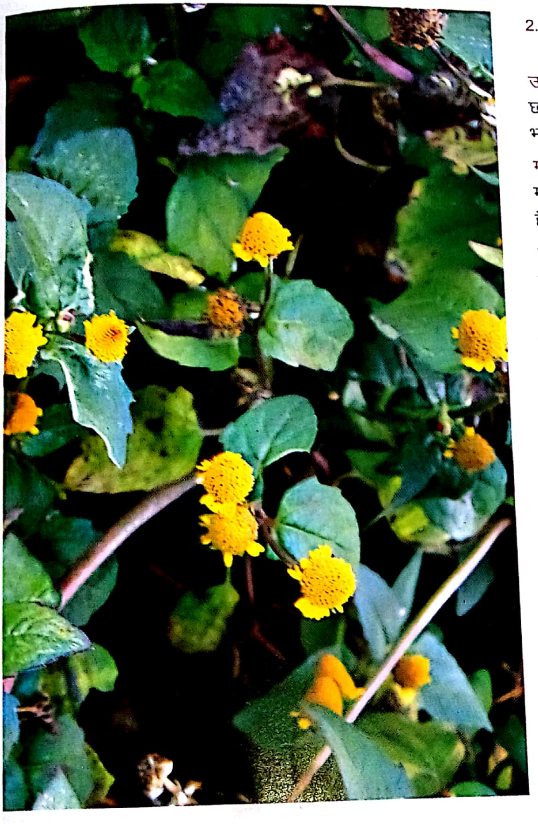

फंकी देने से निरंतर रहने वाला ज्वर छूमंतर हो जाता है।

श्वास : इसके कपड़छन चूर्ण को सूंघने से श्वास अवरोध दूर होता है।

खांसी :

1. इसका 100 मि०ली० क्वाथ बनाकर सुबह–शाम पीने से पुरानी खांसी मिटती है।
2. इसके चूर्ण का 3–4 ग्राम की मात्रा में सेवन करने से यह बलपूर्वक दस्त के रास्ते कफ को बाहर निकाल देती है।

उदर रोग : उदर रोगों में अकरकरा की जड़ का चूर्ण और छोटी पिप्पली का चूर्ण सम भाग लेकर, आधा चम्मच सुबह शाम भोजनोपरांत खाने से लाभ होता है।

मंदाग्नि (अफारा) : शुंठी चूर्ण और अकरकरा दोनों की 1–1 ग्राम मात्रा को मिलाकर फंकी लेने से मंदाग्नि और अफारा दूर होता है।

मासिक धर्म : अकरकरा मूल का 100 मि०ली० क्वाथ सुबह–शाम पीने से मासिक धर्म ठीक होने लगता है।

शून्यता : इसके 1 ग्राम चूर्ण को 2–3 नग लौंग के साथ सेवन करने से शरीर की शून्यता और इसकी मूल का 100 मि० ली० क्वाथ पीने से आलस्य मिटता है।

पक्षाघात :

1. अकरकरा मूल को बरीक पीसकर महुए के तेल में मिलाकर मालिश करने से पक्षाघात में लाभ होता है।
2. अकरकरा मूल का चूर्ण 500 मिलीग्राम की मात्रा में मधु के साथ प्रातः–सायं चाटने से पक्षाघात में लाभ होता है।

गृध्रसी : इसके मूल चूर्ण को अखरोट के तैल में मिलाकर मालिश करने से गृध्रसी मिटती है।

अर्दित :

1. उशवे के साथ इसका 100 मिलीलीटर क्वाथ करके पिलाने से अर्दित मिटता है।
2. अकरकरा चूर्ण और राई के चूर्ण को मधु में मिलाकर जिह्वा पर लेप करने से अर्धांगवात मिटती है।

इन्द्री : 10 ग्राम अकरकरे को 50 ग्राम काढ़े के रस में पीसकर लेप करने से इन्द्री मोटी हो जाती है।

बाजीकरण : अश्वगंधा, सफेद मूसली, अकरकरा सभी को समान भाग लेकर महीन पीसें। नित्य प्रातः व सायंकाल एक–एक चम्मच एक कप दूध के साथ लेने से इसका प्रभाव बाजीकारक होता है।

विशेष : इसको प्रमाणित मात्रा में ही लेना चाहिए। मुनक्का और कतीरा गोंद इसके दर्पनाशक हैं।

1. अकल्लककोष्णो वीर्येण बलकृत् कटुको मतः।
   प्रतिश्यायं च शोथं च वातं चैव विनाशयेत्।। (शालि० नि०)

10 आकाश बल्ली

वैज्ञानिक नाम	:	*Cuscuta reflexa* Roxb.
कुलनाम	:	Cuscutaceae
संस्कृत	:	आकाश बल्ली
हिन्दी	:	अमरबेल, आकाश बेल
गुजराती	:	अकास बेल
मराठी	:	निर्मुली
बंगाली	:	स्वर्णलता, आलोकलता
तैलगु	:	नुलु तेगा
अरबी	:	कसूसेहिन्द
फारसी	:	अफ्तीमून

परिचय

अमर बेल एक परोपजीवी और पराश्रयी लता है, जो रज्जु की भांति, बेर, शाल, करौंदें, आदि वृक्षों पर फैली रहती है। इसमें से महीन सूत्र निकलकर वृक्ष की डालियों का रस चूसते रहते है जिससे यह तो फलती–फूलती जाती है, परन्तु इसका आश्रयदाता धीरे–धीरे सूखकर समाप्त हो जाता है। इसकी दो और जातिया पाई जाती है।

बाह्य–स्वरूप

आकाश बेल कोमल, पीले, किंचित हरे रंग की तथा पत्र–रहित होती है। पुष्प मंजरी मुदृ रोमश ½से 1½इंच लम्बी, शल्क पत्रों के अक्ष से निकलती हैं, पुष्प अवृन्त श्वेत, फल छोटे, मूंग या उड़द के आकार के होते है। फूलों में मृदु व भीनीभीनी खुश्बू आती है।

गुण–धर्म

संग्राही, कटु, तिक्त, कषाय, पिच्छिल, वीर्यवर्धक, अग्निदीपक, नेत्र रोग नाशक, हृदय को हितकारी, बलकारक तथा पित्तकफ और आमवात नाशक है।'

औषधीय प्रयोग

केशरोग व इंद्रलुप्त :

1. बेल को तिल के तैल में पीसकर सिर में लगाने से सिर की गंज में लाभ होता है तथा बालों की जड़े मजबूत होती है।
2. लगभग 50 ग्राम अमरबेल को कूटकर 1 किलो पानी में पकाकर बालों को धोने से बाल सुनहरे व चमकदार बनते हैं, बालों का झड़ना रूसी में भी इससे लाभ होता है, बहुत अच्छा प्रयोग है।

नेत्रशोथ : बेल के 10–20 मिलीग्राम रस में शक्कर मिला आंखों पर लेप करने से नेत्राभिष्यन्द नेत्रशोथ में लाभ होता है।

मस्तिष्क विकार : इसके 10–20 ग्राम स्वरस को प्रातः जल के साथ सेवन करने से मस्तिष्क के विकार दूर होते है।

उदर विकार :

1. अमरबेल को उबालकर पेट पर बांधने से डकारे आदि दूर हो जाती है।
2. आकाश बेल का स्वरस ½ किलोग्राम, यदि सूखी हो तो चूर्ण 1 ग्राम व मिश्री 1 किलोग्राम दोनों को मिलाकर मंद अग्नि पर शर्बत तैयार कर लें। प्रातः–सायं करीब 2 ग्राम की मात्रा में उतना ही जल मिलाकर सेवन करने से शीघ्र ही वातगुल्म और उदरशूल का नाश होता है।

यकृत :

1. बेल का काढ़ा 40–60 ग्राम पिलाने से तथा पीसकर उदर पर लेप करने से यकृत वृद्धि में लाभ होता है।
2. बेल का हिम या स्वरस 5–10 मिलीग्राम सेवन करने से ज्वर तथा यकृत वृद्धि के कारण हुई कब्ज मिटती है।

सूतिका रोग : अमर बेल का क्वाथ 40–60 मिलीग्राम पिलाने से प्रसूता की आंवल जल्दी निकल जाती है।

अर्श : अमरबेल के 10 ग्राम स्वरस में 5 ग्राम काली मिर्च का चूर्ण मिलाकर खूब घोंटकर नित्य सुबह ही पिला दें। तीन दिन में ही खूनी और बादी दोनों प्रकार की बवासीर में विशेष लाभ होता है। दस्त साफ होता है, तथा अन्य अंगों की सूजन भी उतर जाती है।

उपदंश : अमरबेल का स्वरस उपदंश के लिये अति गुणकारी है।

गठिया वात :

1. अमर बेल का बफारा देने से गठिया वात की पीड़ा अथवा

अमरबेल की एक प्रजाति जो दक्षिण अफ्रीका में पाई जाती है

सूजन शीघ्र ही दूर हो जाती है। वफारा देने के पश्चात इसी पानी से स्नान कर लें तथा मोटे कपड़े से शरीर को खूब पौछ लें, तथा घी का अधिक सेवन करें।

2. अमर बेल का बफारा देने से अंडकोष की सूजन उतरती है।

बलवर्धन : 11.5 ग्राम ताजी अमर बेल को कुचलकर स्वच्छ महीन कपड़े में पोटली बांधकर, ½ किलोग्राम गाय के दूध में डालकर या लटकाकर धीमी आँच पर पकाये। जब एक चौथाई दूध जल जाये तब ठंडा कर मिश्री मिलाकर सेवन करने से निर्बलता दूर होती है। विशेष ब्रह्मचर्य से रहना आवश्यक है।

खुजली : अमरबेल को पीसकर लेप करने से खुजली मिटती है।

रक्तशुद्धि : 4 ग्राम ताजी बेल का गरम पानी से फांट बनाकर पीने से पित्त शमन और रक्त शुद्ध होता है।

शिशु रोग :

1. बेल को शुभमुहूर्त में लाकर सूती धागों में बांधकर बच्चों के कंठ व भुजा मे बांधने से कई बाल रोग दूर होते हैं।
2. तीसरे या चौथे दिन आने वाले ज्वर में भी इस बेल को कंठ में ज्वर से पहले बांधने से ज्वर नहीं चढ़ता है।

व्रण : अमर बेल के 2–4 ग्राम चूर्ण को या ताजी बेल को पीस कर सौंठ और घी मिलाकर लेप करने से पुराना व्रण भर जाता है।

1. खवल्ली ग्राहिणी तिक्ता पिच्छिलाक्ष्यामयापहा।।
तुवराग्निकरी हृद्या पित्तश्लेष्मानाशिनी।। (भाव प्रकाश)

अखरोट

11

वैज्ञानिक नाम	:	*Juglans regia* L.
कुलनाम	:	Juglandaceae
अंग्रेजी नाम	:	Walnut, Walnut tree
संस्कृत	:	अक्षोट, अक्षोड
हिन्दी	:	अखरोट
गुजराती	:	अखरोड, अखोड़
मराठी	:	अखरोड, अक्रोड़
बंगाली	:	आखरोट, आक्रोट, आकोट
तैलगु	:	अक्षोलमु
फारसी	:	गौज, चारमग्न, गिर्दगां
अरबी	:	जौज

परिचय

अखरोट के पतझड़ करने वाले बहुत सुन्दर और सुगन्धित वृक्ष होते हैं, इसकी दो जातियां पाई जाती है।

1. जंगली अखरोट 100 से 200 फीट तक ऊँचे, अपने आप उगने वाले तथा फल का छिलका मोटा होता है।
2. कृषिजन्य 40 से 90 फुट तक ऊँचा होता है और इसके फलों का छिलका पतला होता है। इसे कागजी अखरोट कहते हैं। इससे बन्दूकों के कुन्दे बनाये जाते हैं।

बाह्य–स्वरूप

अखरोट की नई शाखाओं का पृष्ठ मखमली, कांडत्वक धूसर तथा उसमें अनुलम्ब दिशा में दरारें होती हैं। पत्तियां पक्षवत सघन, मूल रोमश, पत्रक संख्या में 5 से 13 तथा 3 से 8 इंच लम्बे, 2 से 4 इंच चौड़े, अण्डाकार, आयताकार और सरल धार वाले पुष्प एकलिंगी हरिताभ, फल गोलाकार हरितवर्णी, दो पीले बिन्दुओं से युक्त, फल त्वचा चर्मित एवं सुगन्धित, गुठली 1 से डेढ इंच लम्बी, द्विकोष्ठीय रूपरेखा में मस्तिष्क जैसी पृष्ठ तल पर दो खण्डों में विभक्त तथा गिरी में काफी तेल पाया जाता है। बसन्त में पुष्प तथा शरद ऋतु में फल आते हैं।

रासायनिक संघटन

अखरोट में 40 से 45 प्रतिशत तक एक स्थिर तैल पाया जाता है। इसके अतिरिक्त इसमें जुगलैडिक एसिड तथा रेजिन आदि भी पाये जाते हैं। इसके फलों में आक्जैलिक एसिड पाया जाता है।

गुण–धर्म

यह वात शामक, कफ पित्त वर्धक, मेध्य, दीपन, स्नेहन, अनुलोमन, कफ निःसारक, बल्य, वृष्य एवं बृंहण होता है। इसका लेप वर्ण्य, कुष्ठघ्न, शोथहर एवं वेदना स्थापन होता है। गिरी और इसके प्राप्त तैल को छोड़कर अखरोट के शेष सब अंग संग्राही होते हैं।

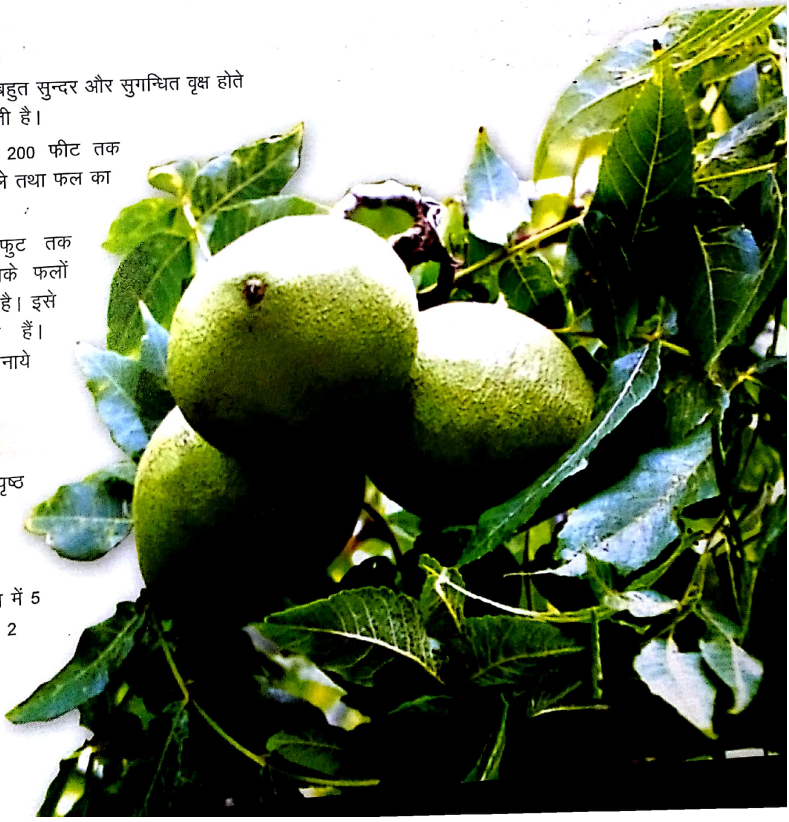

औषधीय प्रयोग

मस्तिक दुर्बलता : अखरोट की गिरी को 25 से 50 ग्राम तक की मात्रा में नित्य खाने से मस्तिष्क शीघ्र ही सबल हो जाता है।

अर्दित : अर्दित में अखरोट के तेल की मालिश कर वात हर औषधियों के क्वाथ से बफारा देने से लाभ होता है।

अपस्मार : अखरोट गिरी को निर्गुण्डी के रस में पीसकर अंजन और नस्य देने से लाभ होता है।

नेत्र ज्योति : दो अखरोट और तीन हरड़ की गुठली को जलाकर उनकी भस्म के साथ 4 नग काली मिर्च को पीसकर अंजन करने से नेत्रों की ज्योति बढ़ती है।

कंठमाला : इसके पत्तों का क्वाथ 40 से 60 ग्राम पीने से व उसी क्वाथ से गांठों को धोने से कंठमाला मिटती है।

दन्त प्रयोग :

1. इसकी छाल को मुँह में रखकर चबाने से दांत स्वच्छ होते हैं।
2. अखरोट के छिलकों की भस्म से मंजन करने से दाँत मजबूत होते हैं।

स्तन्यजनन : स्तन में दूध की वृद्धि के लिये गेहूँ की सूजी 1 ग्राम अखरोट के पत्ते 10 ग्राम पीसकर दोनों को मिलाकर गाय के घी में पूरी बनाकर सात दिन तक खाने से स्तन्य (स्त्री दुग्ध) की वृद्धि होती है।

कास :

1. अखरोट गिरी को भूनकर चबाने से लाभ होता है।

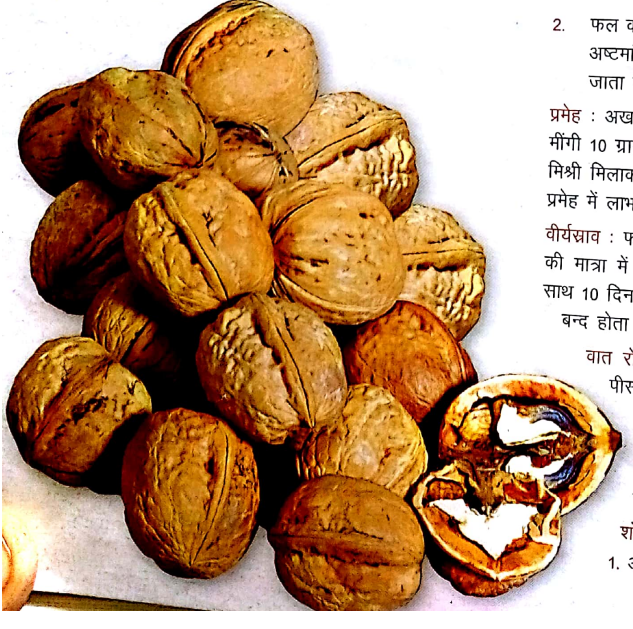

2. छिलके सहित अखरोट की भस्म कर एक ग्राम भस्म को ग्राम मधु के साथ चटाने से लाभ होता है।

हैजा : हैजे में जब शरीर में बाइटे चलने लगते हैं या सर्दी में शरीर ऐंठता हो तो अखरोट तेल की मालिश करनी चाहिये।

विरेचन : अखरोट के तेल को 20 से 40 ग्राम की मात्रा में 250 ग्राम दूध के साथ प्रातः काल देने से कोष्ठ मुलायम होकर साधारणतः अच्छा दस्त हो जाता है।

आंत्र कृमि :

1. अखरोट की छाल का क्वाथ 60 से 80 ग्राम पिलाने से आंतो के कीड़े मर जाते हैं।
2. इसके पत्तों का क्वाथ 40 से 60 ग्राम की मात्रा में पिलाने से भी आंतो के कीड़े मर जाते हैं।

अर्श :

1. वात जन्य अर्श में इसके तैल पिचु को गुदा में लगाने से सूजन कम होकर पीड़ा मिट जाती है।
2. इसके छिलके की भस्म 2 से 3 ग्राम को किसी विष्टम्भी औषधि के साथ सुबह, दोपहर तथा शाम खिलाने से रक्तार्शजन्य रूधिर बंद हो जाता है।

आर्त्तव जनन :

1. मासिक धर्म की रूकावट में फल के छिलके का क्वाथ 40 से 60 ग्राम की मात्रा में लेकर 2 चम्मच शहद मिलाकर दिन में 3–4 बार पिलाने से लाभ होता है।
2. फल के 10 से 20 ग्राम छिलकों को 1 किलो पानी में पकाकर अष्टमांश शेष काढ़ा सुबह–शाम पिलाने से भी दस्त साफ हो जाता है।

प्रमेह : अखरोट गिरी 50 ग्राम, छुआरे 40 ग्राम और विनौले की मींगी 10 ग्राम एक साथ कूटकर थोड़े से घी में भूनकर बराबर की मिश्री मिलाकर रखें, इसमें से 25 ग्राम नित्य प्रातः सेवन करने से प्रमेह में लाभ होता है। इस पर दूध न पीयें।

वीर्यस्राव : फलों के छिलके की भस्म बना लें, और इसमें बराबर की मात्रा में खांड मिलाकर 10 ग्राम तक की मात्रा में जल के साथ 10 दिन प्रातः सायं तक सेवन करने से धातुस्राव या वीर्यस्राव बन्द होता है।

वात रोग : अखरोट की 10 से 20 ग्राम ताजी गिरी को पीसकर वेदना स्थान पर लेप करें, ईंट को गर्म कर उस पर जल छिड़क कर कपड़ा लपेट कर उस स्थान पर सेंक देने से शीघ्र पीड़ा मिट जाती है। गठिया पर इसकी गिरी को नियमपूर्वक सेवन करने से रक्त शुद्धि होकर लाभ होता है।

शोथ :

1. अखरोट का 10 से 40 ग्राम तैल 250 ग्राम गौमूत्र में

मिलाकर पिलाने से सर्वांग शोथ में लाभ होता है।

2. वात–जन्य शोथ में इसकी 10 से 20 ग्राम गिरी को कांजी में पीसकर लेप करने से लाभ होता है।

वृद्ध पुरूषों के बलवर्धनार्थ : 10 ग्राम गिरी को 10 ग्राम मुनक्का के साथ नित्य प्रातः खिलाना चाहिये।

दाद : प्रातः काल बिना मंजन कुल्ला किये अखरोट की 5 से 10 ग्राम गिरी को मुँह में चबाकर लेप करने से कुछ ही दिनों में दाद मिट जाती है।

नासूर : इसकी 10 ग्राम गिरी को महीन पीसकर मोम या मीठे तैल के साथ गलाकर लेप करें।

व्रण : इसकी छाल के क्वाथ से व्रणों को धोने से लाभ होता है

नारू :

1. अखरोट की खल को जल के साथ महीन पीसकर आग पर गर्म कर नहरूबा की सूजन पर लेप करने से तथा उस पर पट्टी बांध कर खूब सेंक देने से नारू 10–15 दिन में गल के वह निकलता है।
2. अखरोट की छाल को पानी में पीसकर गर्म कर नारू के घाव पर लगावें

अहिफेन विष : अखरोट की गिरी 20 से 30 ग्राम तक खाने से अफीम का विष और भिलावे के उपद्रव शांत हो जाते हैं।

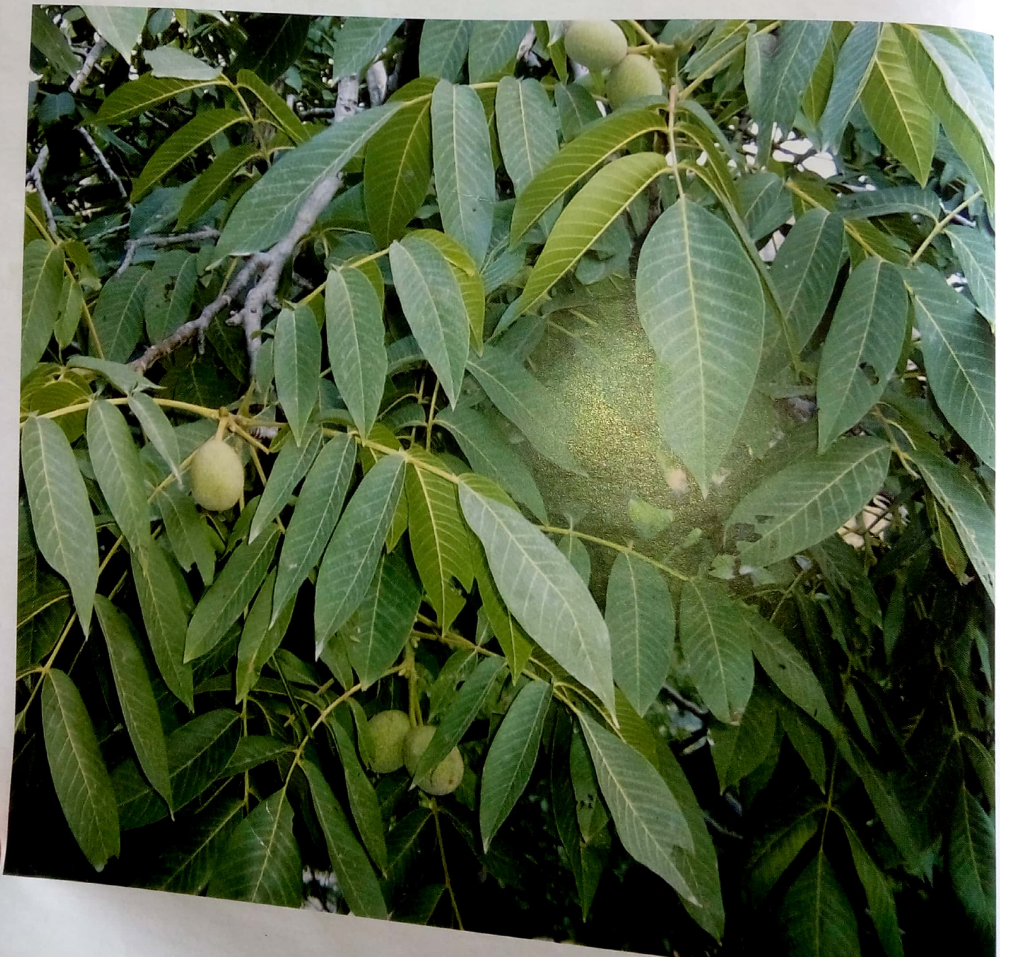

अलसी

12

वैज्ञानिक नाम	:	*Linum usitatissium* L.
कुलनाम	:	Linaceae
अंग्रेजी नाम	:	Linseed, Flax seed
संस्कृत	:	अलसी, नील पुष्पी, क्षुमा, उमा, पिच्छला, अतसी
हिन्दी	:	अलसी, तीसी
गुजराती	:	अलसी
मराठी	:	जवसु
बंगाली	:	मर्शिना
तैलगु	:	बित्तु, अलसि, अतसी
अरबी	:	कत्तान
फारसी	:	तुख्मे कत्तान, जागिरा

परिचय

समस्त भारतवर्ष में अलसी की खेती जाड़े की फसल के साथ की जाती है। हिमाचल प्रदेश में भी 6,000 फुट की ऊंचाई तक तीसी बोई जाती है। देश एवं उत्पत्ति स्थान भेद से तीसी के बीजों के रंग रूप और आकार में भेद पाया जाता है। श्वेत, पीत, रक्त एवं किंचित कृष्णाभ, तीसी के कई प्रकार के बीज प्राप्त होते हैं। उष्ण प्रदेशों में उत्पन्न तीसी श्रेष्ठ मानी जाती है। इसके बीजों से तेल और डंठलों से फाइबर निकाला जाता है, जो कपड़ा बुनने के काम आता है।

बाह्य–स्वरूप

इसका क्षुप, 2–4 फुट ऊंचा, सीधा व कोमल होता है। पत्र रेखाकार, भालाकार, पत्राग्र नुकीला व फलक तीन शिराओं से युक्त होता है। फूल सुन्दर आसमानी रंग के, फल गोल, घुंडीदार, पंचकोष्ठीय, प्रत्येक कोष्ठ में चमकीले चपटे गाढ़े भूरे रंग के 2 बीज होते हैं। शीतकाल में पुष्प और फल लगते है। फरवरी–मार्च में फल सूख जाते हैं।

रासायनिक संघटन

तीसी के बीजों में एक स्थिर तेल पाया जाता है। तेल में प्रधानतः लिनोलिक तथा लिरोलेनिक एसिड्स के ग्लिसराइड्स तथा घन वसाम्ल होते हैं। बीजों में एक विषाक्त ग्लुकोसाइड पाया जाता है। जिसके कारण इसे खाने वाले पशुओं की मृत्यु हो जाती है। इसके अतिरिक्त इसके बीजों में प्रोटीन, म्यूसिलेज, कुछ मोमीय पदार्थ, रालीय पदार्थ, फास्फेट्स एवं शर्करा अंश पाये जाते हैं। इसकी राख में सोडियम, पोटैशियम, कैल्शियम, मैग्नीशियम, लौह, फास्फोरस, गंधक आदि तत्व पाये जाते हैं।

गुण–धर्म

बीज मधुर, मंद गंध युक्त, स्निग्ध, उष्ण, चरपरी, गुरू, बलकारक, कामोद्दीपक, अल्प मात्रा में मूत्रकारक, शोथहर, अधिक मात्रा में रेचक, वातनाशक तथा वातरक्त, कुष्ठ, व्रण, पृष्ठशूल, शुक्र, कफ, पित्त है।[1]

अलसी तेल : मधुर, पिच्छिल, वातनाशक, मदगंधि, कुछ कसैला, बलकारक, भारी, गरम, मलकारक, स्निग्ध, ग्राही, कफ कासनाशक तथा त्वक् दोष हर हैं।[2]

अलसी पत्र : कास श्वास, कफ वातनाशक, इसके ताजे हरे पत्तों की शाक या तरकारी वातग्रस्त रोगियों के लिए विशेष लाभदायक है।

अलसी पुष्प : रक्त पित्तनाशक है।

औषधीय प्रयोग

शिरोवेदना : बीजों को शीतल जल में पीसकर लेप करने से, शोथ जन्य शिरोवेदना, मस्तक पीड़ा तथा शिरोव्रण में लाभ होता है।

निद्रा नाश : अलसी तथा अरंड का शुद्ध तैल, समभाग मिलाकर कांसे की थाली में कांस्य पात्र से ही खूब घोंटकर आंख में सुरमे की तरह लगाने से नींद अच्छी आती है।

नेत्राभिष्यंद : अलसी बीजों का तुआव नेत्र में टपकाने से नेत्राभिष्यंद या नेत्र की लालिमा में लाभ होता है।

कर्णशोथ : अलसी को प्याज के रस में पकाकर उसे कान में टपकाने से कान की सूजन मिटती है।

श्वास कास

1. 5 ग्राम अलसी के बीज, 50 ग्राम पानी में भिगोकर रखें, और 12 घंटे बाद जल पी लें। प्रातःकाल भिगोया हुआ सायंकाल और शाम को भिगोया हुआ सुबह को पी लें। इस जल के सेवन से श्वास-ग्रस्त रोगी को बहुत शक्ति मिलती है। परन्तु पथ्य परहेज का पूर्ण ध्यान रखना चाहिए।
2. 5 ग्राम अलसी बीजों को कूट-छानकर जल में उबालें। इसमें 20 ग्राम मिश्री मिलाकर, यदि शीतकाल हो तो मिश्री के स्थान पर शहद मिलायें। इस पेय के प्रातः-सांय सेवन करने से भी कास श्वास में लाभ होता है।
3. 3 ग्राम अलसी बीजों को मोटा कूटकर 250 ग्राम उबलते हुए जल में भिगो दें और एक घंटा ढक कर रख दें। तत्पश्चात छानकर थोड़ी शक्कर मिलाकर सेवन करने से भी शुष्क कास ढीला होकर श्वास रोग की घबराहट दूर होती है। मूत्र साफ होता है।
4. 25 ग्राम अलसी के बीजों को पीसकर रातभर ठंडे जल में भिगोकर रखें, प्रातःकाल छानकर इस जल को कुछ गरम कर इसमें नींबू का रस मिलाकर पिलाने से टी.बी. के रोगी को बहुत लाभ होता है।
5. अलसी के बीजों को भूनकर शहद के साथ चाटने से खांसी मिटती है।
6. अलसी को साफ कर मंद आंच से तवे पर भून लें। जब अच्छी तरह भुन जाये, गंध आने लगे तब महीन समभाग मिश्री मिला लें। जुकाम में 5-5 ग्राम तक उष्ण जल के साथ दोनों समय देने से आराम होता है। कास का भी दमन होता है।

वातकफ जन्य विकार : तवे पर भली-भांति भुनी हुई 50 ग्राम अलसी का चूर्ण बनाकर, उसमें 50 ग्राम मिश्री, 10 ग्राम सिंघी चूर्ण मिलाकर मधु के साथ घोंटकर 3-6 ग्राम तक की गोलियां बना लें। बच्चों को 3 ग्राम की तथा बड़ों को 6 ग्राम की गोलियां प्रातःकाल सेवन कराने से वात कफजन्य विकारों में लाभ होता है। एक घंटे तक जल न पीयें।

प्लीहा-वृद्धि : भुनी हुई अलसी ढाई ग्राम की मात्रा में शहद के साथ लेने से प्लीहा शोथ में लाभ होता है।

रेचन : तीसी को गरम किये बिना, निकाला हुआ तेल 4-8 ग्राम की मात्रा में पिलाने से दस्त साफ होता है। मल की गांठें निकल जाती हैं। आंतों की कमजोरी से उत्पन्न कब्ज और अर्श में तेल बहुत लाभ करता है।

सुजाक मूत्र विकार :

1. अलसी 50 ग्राम, मुलेठी 3 ग्राम, दोनों को दरदरा कूटकर डेढ़ पाव जल के साथ मिट्टी के बर्तन में हल्की आंच में पकायें। जब 50 ग्राम जल शेष रह जाये तो छानकर 2 ग्राम कलमी शोरा मिलाकर 2 घंटे के अंतर से 20–20 ग्राम पिलाने से मूत्रकृच्छ में बहुत आराम मिलता है। अधिक मात्रा में बनाकर 10–15 दिन तक ले सकते हैं।
2. इसके तेल की 4–6 बूंदे मूत्रेन्द्रिय के छिद्र में डालने से सुजाक पूय मेह में लाभ होता है।
3. अलसी और मुलेठी समभाग लेकर कूट लें। मिश्रण का 40–50 ग्राम चूर्ण मिट्टी के बरतन में डालकर उसमें 1 किलोग्राम उबलता जल डालकर ढक लें। एक घंटे बाद छानकर इसमें 25 से 30 ग्राम तक कलमी शोरा मिलाकर बोतल में रख लें। तीन घंटे के अंतर से 25 से 30 मिलीलीटर तक इस जल का सेवन करने से 24 घंटे में ही पेशाब की जलन, पेशाब का रूक–रूक कर आना, पेशाब में खून आना, मवाद आदि बहना, सुरसुराहट होना आदि शिकायतें दूर हो जाती हैं।
4. अलसी के 10 ग्राम और मुलेठी 6 ग्राम, दोनों को खूब कुचल कर एक सेर जल मिलायें, अष्टांश क्वाथ सिद्ध करे। तीन घंटे के अंतर से लगभग 25 ग्राम क्वाथ में 10 ग्राम मिश्री मिलाकर सेवन करने से जलन तत्काल दूर होकर मूत्र साफ होने लगता है।

पुल्टिसः अलसी की पुल्टिस सब पुल्टिसों में उत्तम है। 4 भाग कुटी हुई अलसी, 10 भाग उबलते हुए पानी में डालकर धीरे–धीरे मिलायें। यह पुल्टिस बहुत मोटी नहीं होनी चाहिए। लगाते समय इसके निम्न भाग पर तेल चुपड़ कर लगाना चाहिए। इसके प्रयोग से सूजन व पीड़ा दूर होती है।

संधिशूल : अलसी बीजों को ईसब गोल के साथ पीसकर लगाने से संधि शूल में लाभ होता है।

कटि शूल : अलसी तेल को गरम कर इसमें शुंठी चूर्ण मिलाकर मालिश करने से कमर दर्द दूर होता है।

गठिया : अलसी के तेल की पुल्टिस गठिया की सूजन पर लगाने से लाभ होता है।

वीर्य पुष्ट : काली मिर्च और शहद के साथ तीसी का सेवन कामोद्दीपक तथा वीर्य को गाढ़ा करने वाला होता है।

फोड़ा :

1. अलसी को जल में पीसकर उसमें थोड़ा जौ का सत्तू मिलाकर खट्टी दही के साथ फोड़े पर लेप करने से फोड़ा पक जाता है।
2. वात प्रधान फोड़े में अगर जलन और वेदना हो तो तिल और अलसी को भूनकर गाय के दूध में उबालकर, ठंडा होने पर उसी दूध में उन्हें पीसकर फोड़े पर लेप करने से लाभ होता है।

अग्निदग्ध : शुद्ध अलसी तेल और चूने का निथरा हुआ जल समभाग एकत्र कर अच्छी प्रकार घोट लें। यह श्वेत मलहम जैसा हो जाता है। अंग्रेजी में इसे Carron oil कहते हैं। इसको अग्निदग्ध स्थान पर लगाने से शीघ्र ही व्रण की पीड़ा दूर हो जाती है। और नित्य 1 या दो बार प्रलेप करते रहने से शीघ्र ही लाभ हो जाता है।

बंद गांठ आदि : अलसी के चूर्ण को दूध व जल में मिला, उसमें थोड़ा हल्दी का चूर्ण डालकर खूब पका लें और जहां तक सहन हो सके, गरम–गरम ही ग्रंथि व्रणों पर इस पुल्टिस का गाढ़ा लेप कर ऊपर से पान का पत्ता रख कर बांध दें। इस प्रकार कुल 7 बार बांधने से व्रण परिपक्व हो फूट जाता है। अंतः की जलन टीस पीड़ा आदि दूर होती है। बड़ी–बड़ी अन्तर्विद्रधि भी इस उपाय से ऊपर को उभरकर फूट जाती है। किन्तु अन्तर्विद्रधि पर यह पुल्टिस कई दिनों तक लगातार बांधनी पड़ती है।

1. अतसी मधुरा तिक्ता, स्निग्धा पाके कटुर्गुरुः।
   उष्ण दृक् शुक्र वातघ्नी कफ पित्त प्रकोपिणी।। (भाव प्रकाश)
2. आतस्यं मधुराम्लं तु विपाके कटुकं तथा। उष्ण वीर्यं हि तंवाते रक्तपित्त प्रकोपणम्।।
3. अतसी तैलम् आग्नेयं स्निग्धोष्णं कफ पित्तकृत्।
   कटुपाकमचक्षुष्यं बल्यं वातहरं गुरु।। (भाव प्रकाश)

13 अमलतास

वैज्ञानिक नाम	:	*Cassia fistula* L.
कुलनाम	:	Caesalpiniaceae
अंग्रेजी नाम	:	Indian laburnum, Puddin pipe tree, Purging cassia.
संस्कृत	:	राजवृक्ष, नृपद्रुम, हेमपुष्प, आरग्वध
हिन्दी	:	अमलतास, धनबहेड़ा
गुजराती	:	गरमालो
मराठी	:	बाहवा
बंगाली	:	सोंदाल, सोनालु
पंजाबी	:	अमलतास, गिर्दनली,
तेलगु	:	रेलचट्टू
कन्नड	:	कक्केमर
अरबी	:	खियारशम्बर
द्राविड़ी	:	कोन्नेभर, शक्कोनै
असमी	:	सोनास

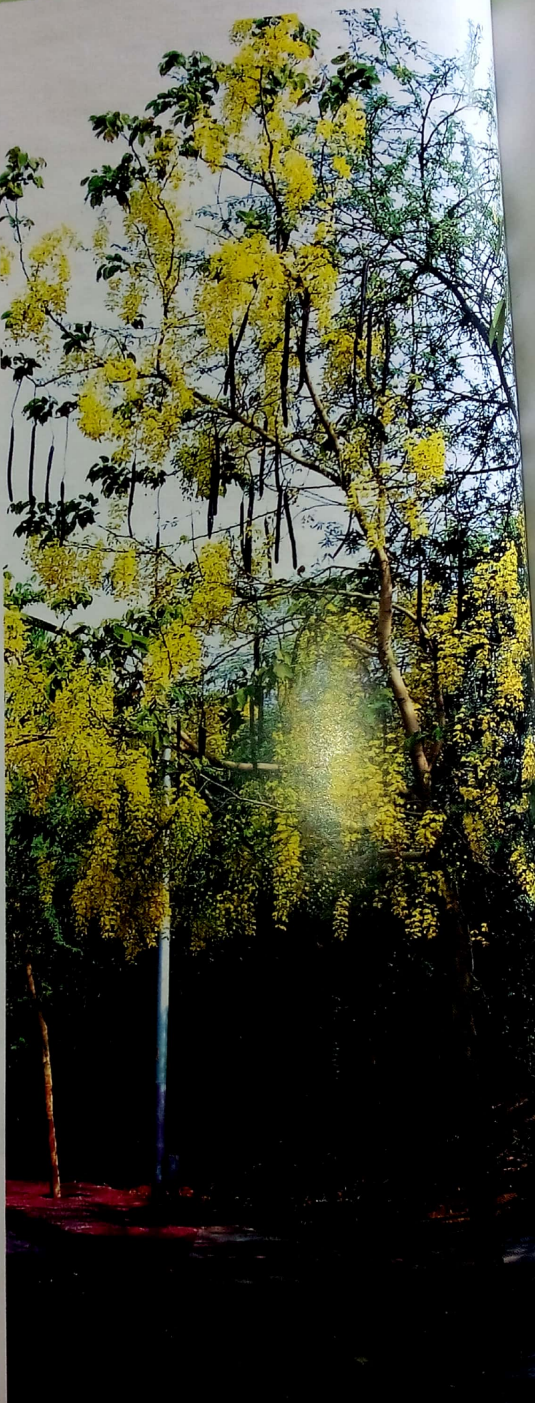

परिचय

यह पूरे भारतवर्ष मे पाया जाता है। मार्च–अप्रैल में वृक्षों की पत्तियां झड़ जाती हैं। तदुपरान्त नई पत्तियां और पुष्प प्रायः साथ ही निकलते है, उसके बाद फली लगती है जो डेढ़–दो फुट लम्बी गोल, नुकीली और वर्ष भर लटकी रहती है।

बाह्य–स्वरूप

मध्यम कद का वृक्ष, कांड धूसरवर्ण या कुछ–कुछ लाल होती है। पत्र संयुक्त 1 फिट लम्बा जिसमें 4 से 8 जोड़ी पत्रक लगे हुये होते है। पुष्पमंजरी लम्बी और नीचे लटकती रहती है। जिस पर चमकीले पीले रंग के पुष्प लगे रहते है। फली 1–2 फुट लम्बी, बेलनाकार, कठोर, आगे से नुकीली, 1 इंच व्यास की, कच्ची अवस्था में हरी और पकने पर लाल तथा काली हो जाती है। फली में 25–100 तक चपटे पीताभ धूसर वर्ण के बीज होते हैं। फली के अन्दर का भाग अनेक कोष्ठों में विभक्त रहता है।

रासायनिक संघटन

इसके फल की मज्जा में एन्थाक्विनोन, शर्करा, पिच्छिल द्रव्य, ग्लूटोन, पेक्टिन, रंजक द्रव्य, कैल्शियम आक्जेलेट, क्षार, निर्यास

एवं जल होते है। कांड त्वक में टैनिन, मूलत्वक् में फ्लौवेफिन् तथा ऐन्थाक्विनोन होते है। पत्र और पुष्प में ग्लाईकोसाइड्स पाये जाते हैं।

गुण–धर्म

यह भारी, मृदु, स्निग्ध, मधुर और शीतल होता है।[1] यह ज्वर, हृदय रोग, रक्त पित, वात, उदावर्त और शूल को नष्ट करने वाला है। इसकी फली रुचिकारक, कुष्ठ नाशक, पित्तकफ नाशक, कोष्ठ को शुद्ध करने वाली तथा ज्वर में पथ्य है। इसके पते मृदु विरेचक और कफ का नाश करने वाले है।[2] इसके फूल स्वादिष्ट, शीतल, कड़ुवे, कसैले, वातवर्द्धक तथा कफपित्तहर हैं। इसके फल की मज्जा जठराग्नि को बढ़ाने वाली, स्निग्ध, मधुर रस, रेचक तथा वातपित्त को नष्ट करती है। इसकी मूल वातरक्त, मंडलकुष्ठ, दाद, चर्मरोग, क्षय, गंडमाला, हरिद्रमेह शोथ आदि नाशक है। अमलतास, पाठा, कुंज, निम्ब यह सब श्लेष्मा, विष, कुष्ठ, प्रमेह, ज्वर, वमन, कंडू नाशक तथा व्रण शोधक है।[3] अमलतास, सुधा, दन्ती यह सब गुल्म एवं विषनाशक, आनाह, उदररोग नाशक, मल विरेचन एवं उदावर्त्तनाशक है।[4]

औषधीय प्रयोग

कण्ठमाला : इसकी जड़ को चावल के पानी के साथ पीसकर सुंघाने और लेप करने से कण्ठमाला में आराम होता है।

मुखपाक : फल मज्जा को धनिये के साथ पीसकर थोड़ा कत्था मिलाकर मुख में रखने से अथवा केवल गूदे को मुख में रखने से मुखपाक रोग दूर होता है।

अर्दित :

1. अमलतास के 10–15 पत्रों को गरम करके उनकी पुल्टिस बांधने से सुन्नवात, गाठिया और अर्दित में फायदा होता है।
2. वात वाहिनियों के आघात से उत्पन्न अर्दित एवं वात रोगों में इसका पत्र स्वरस पिलाने से लाभ होता है।
3. पत्र स्वरस पक्षाघात से पीड़ित स्थान पर मालिश करने से भी लाभ होता है।

नाक की फुंसी : इसके पत्ते और छाल को पीसकर नाक की छोटी–छोटी फुन्सियों पर लगाते हैं।

ज्वर कफ आदि : फल मज्जा को पीपरामूल, हरीतकी, कुटकी, मोथा के साथ समभाग मिला क्वाथ बनाकर पीने से आंव, शूल, कफ, वात, ज्वर में लाभ होता है। यह क्वाथ दीपन और पाचन भी है।

खांसी :

1. अमलतास की गिरी 5–10 ग्राम को पानी में घोट उसमें तिगुना बूरा डाल गाढ़ी चाशनी बनाकर चटाने से सूखी खांसी मिटती है।
2. इसका 20 ग्राम गुलकन्द खाने से खुश्क खांसी तर हो जाती है।

टान्सिल : कफ के कारण टान्सिल बढ़ने पर जल पीने में भी जब कष्ट होता है तब इसकी जड़ की 10 ग्राम छाल को थोड़े जल में पकाकर उसका बूदं–बूंद कर मुख में डालते रहने से आराम होता है।

श्वांस : इसकी फल मज्जा का 40–60 ग्राम क्वाथ पिलाने से मृदु विरेचन होकर श्वास की रूकावट मिटती हैं।

उदरशूल : उदर शूल और अफारे में इसकी मज्जा को पीसकर बच्चों की नाभि के चारों ओर लेप करने से लाभ होता है।

पित्त प्रकोप : इसके गूदे के 40–60 ग्राम काढ़े में 5–10 ग्राम इमली का गूदा मिलाकर प्रातःकाल पिलाने से पित्त प्रकोप में लाभ होता है। यदि रोगी को कफ की अधिकता हो तो इसमें थोड़ा निशोथ का चूर्ण भी मिलाना चाहिए।

उदावर्त : चार वर्ष से लेकर बारह वर्ष तक का बालक यदि दाह तथा उदावर्त्त रोग से पीड़ित हो तो उसे अमलतास की मज्जा को 2–4 नग मुनक्का के साथ देना चाहिये।[7]

उदरशुद्धि : 2–3 पत्तों को नमक और मिर्च मिलाकर खाने से उदर शुद्धि होती है।

हारिद्रमेह : इसके 10 ग्राम पत्तों को 400 ग्राम पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ का सेवन हारिद्रमेह में लाभकारी है।

कब्ज : पुष्पों का गुलकंद, आंत्र रोग, सूक्ष्मज्वर एवं कोष्ठबद्धता में लाभदायक है। कोमलांगी स्त्री को इसका सेवन 25 ग्राम तक रात्रि के समय कोष्ठ बद्धता में कराना चाहिये।

विरेचन : इसके फल के 15–20 ग्राम गूदे को मुनक्का के रस के साथ देने से उत्तम विरेचन होता है।

अण्डकोषवृद्धि : अमलतास फली की 15 ग्राम मज्जा को 100 ग्राम पानी में उबालकर 25 ग्राम शेष रहने पर उसमें गाय का घी 30 ग्राम मिलाकर पीने से अण्डकोष वृद्धि में लाभ होता है।

कोष्ठ शुद्धि : फली मज्जा को 5–10 ग्राम की मात्रा में गाय के 250 ग्राम गरम दूध के साथ देने से कोष्ठ शुद्ध हो जाता है।

पित्तोदर : इसके गूदे का 40–60 ग्राम काढ़ा पित्तोदर में लाभप्रद है।

कामला : इसे गन्ने या भूमि कुष्मांड या आंवले के समभाग रस के साथ दिन में दो बार देने से कामला रोग में लाभ होता है।

विरेचक : इसके फल का गूदा सर्वश्रेष्ठ मृदु विरेचक है। यह ज्वर अवस्था, सुकुमार, बालक एवं गर्भवती महिलाओं को दिया जाता है।

सुख प्रसव : अमलतास की 4–5 फली के 25 ग्राम छिलकों को औटाकर उसमें शक्कर मिलाकर छानकर गर्भवती स्त्री को सुबह–सायं पिलाने से बच्चा सुख से पैदा हो जाता है।

वातरक्त : अमलतास मूल 5–10 ग्राम को 250 ग्राम दूध में उबालकर देने से वातरक्त का नाश होता है।

आमवात : आरग्वध के 2–3 पत्तों को सरसों के तैल में भूनकर सायं के भोजन के साथ सेवन करने से आमवात में लाभ होता है।

कुष्ठ :

1. अमलतास के 10–15 पत्रों को पीसकर लेप करने से कुष्ठ, चकत्ते आदि चर्म रोगो में लाभ होता है।[5]
2. अमलतास की 15–20 पत्तियों से बना लेप कुष्ठ का नाश करता है।[6]
3. अमलतास की जड़ का लेप कुष्ठ रोग के कारण हुई विकृत त्वचा को हटाकर व्रण स्थान को समतल कर देता है।

विसर्प :

1. इसके 8–10 पत्रों को पीसकर, घृत मिश्रित कर लेप करने से विसर्प में लाभ होता है।
2. किक्किस रोग, सद्योव्रण में अमलतास के पत्तों को स्त्री के दूध या गौदूध में पीसकर लगाना चाहिये।

रक्तपित्त : फल मज्जा को अधिक मात्रा में लगभग 25 से 50 ग्राम में 20 ग्राम मधु और शर्करा के साथ सुबह–शाम देना ऊर्ध्वगत, रक्तपित्त में लाभप्रद है।

दाह/दाद :

1. इसकी 10–15 ग्राम मूल या मूल त्वक को दूध में उबालकर पीसकर लेप करने से दाह और दाद में लाभ होता है।
2. अमलतास के पंचाग को जल के अन्दर पीसकर दाद खुजली और दूसरे चर्म विकारों पर लगाने से जादुई असर होता है।

ज्वर : इसकी जड़ ज्वर नाशक और पौष्टिक औषधि के रूप में प्रयुक्त होती है।

शिशु की फुंसी : पत्तों को गौदुग्ध के साथ पीसकर लेप करने से नवजात शिशु के शरीर पर होने वाली फुंसी या छाले दूर हो जाते है।

व्रण : अमलतास, चमेली, करंज इनके पत्तों को गोमूत्र के साथ पीसकर लेप करे, इससे व्रण, दूषित अर्श और नाड़ी व्रण नष्ट होता है।

कंटकरोग : पद्मिनी (पद्मिनी) कंटकरोग में अमलतास और नीम का 40–60 ग्राम क्वाथ का नित्य प्रयोग उत्तम है।

पित्त : लाल रंग के निशोथ के क्वाथ के साथ अमलतास की मज्जा का कल्क मिलाकर अथवा बेल के क्वाथ के साथ अमलतास की मज्जा का कल्क, नमक एवं मधु मिलाकर पित्त की प्रधानता में 10–20 ग्राम की मात्रा में पीना चाहिये।[8]

स्वानुभूत प्रयोग : अमलतास के 10 से 20 ग्राम गूदे को रात में 500 ग्राम पानी से भिगोकर प्रातः मसलकर छानकर पीने से विरेचन हो जाता है। ऐसा हमें अनेक रोगियों को देने से अनुभव हुआ है।

1. आरग्वधो गुरुः स्वादुः शीतलः स्रंसनो मृदुः।।
ज्वरह्रद्रोगपित्तस्रवातोदावर्त्तशूलनुत्।
तत्फलं स्रंसनं रुच्यं कोष्ठपित्तकफापहम्।।
ज्वरे तु सततं पथ्यं कोष्ठशुद्धिकरंपरम्।
(भाव प्रकाश)
2. चतुरंगुलो मृदुविरेचनानां (श्रेष्ठ) (चरक)
3. आरग्वधमदनगोपघोण्टाकण्टकीकुटजपाठापाटलाम्।।
(सुश्रुत)
4. श्यामामहाश्यामात्रिवृद्दन्तीशवि नीतिल्वकड्खकम्पिल्लक।।
(सुश्रुत)
5. शैरीषी त्वक पुष्पं कार्पस्या राजवृक्षपत्रारिण।
पिष्टा च काकमाची चतुर्विध कुष्ठ नुल्लेपः।।
(चरक)
6. एडगजः सविऽङ्गो मूलान्याएवधस्य कुष्ठानाम्।
उद्दालनं श्वदन्ता गोश्वराहोष्ट्रदन्ताश्राव।।
7. द्राक्षा रस युक्तं यद्याद दाहो दावर्त पीडिते।
चतुवर्ष मुखे बाले यावद् द्वादश वाषिके।।
8. त्रिवृतो वा कषायेणा मज्जाः कल्कं तथ पिवेत्।
तथा बिल्व कषापेणा लवण क्षौद्रसंयुक्तम्।।
(चरक)

आंवला

14

वैज्ञानिक नाम	:	*Emblica officinalis* Gaertn.
कुलनाम	:	Euphorbiaceae
अंग्रेजी नाम	:	Indian gooseberry, Emblic myrobalan
संस्कृत	:	आमलकी, धात्री, शिवा
हिन्दी	:	आमला, आंवरा, आँवला
गुजराती	:	आँवला, आमला
मराठी	:	आंवलकांटी, आँवला
बंगाली	:	आंगला, आमलकी
तेलगु	:	असरिकाय, उशीरिकई
द्राविड़ी	:	नेल्लिक्काय्, अमृत फल, वयस्था
कन्नड़	:	निल्लिकाय, नेल्लि
अरबी	:	आमलन्

परिचय

आँवला भारतवर्ष मे उद्यानों और जंगलो में सर्वत्र पाया जाता है। यह समुद्र तल से 4,500 फुट की ऊँचाई तक भी होता है। उद्यानों में लगाए जाने वाले आँवले के फल बड़े और जंगली आँवले के फल छोटे होते है। इसके वृक्ष की पत्तियां इमली के वृक्ष जैसी होती हैं परन्तु इसकी पत्तियां कुछ बड़ी होती है तथा शतपत्रा कहलाती है। आँवला रसायन द्रव्यों में सर्वश्रेष्ठ है। इसके सेवन से बुढ़ापा मनुष्य पर अपना प्रभाव नहीं डाल पाता है। इसीलिये आयुर्वेद में इसे अमृत फल व धात्री फल आदि कहा गया है।

बाह्य–स्वरूप

आँवले का वृक्ष मध्यमाकार तथा 20–25 फुट ऊँचा होता है। इसका कांड टेढ़ा मेढा और 5–9 फुट तक मोटा होता है। इसकी छाल हरिताभ धूसर, पतली और परत छोड़ती हुई होती है। पर्णवृन्त लम्बा, पत्र, आयताकार पंखवत व्यवस्थित इमली के पत्तों की तरह होते है। पुष्प दंड लम्बा, जिसमें छोटे–छोटे, पीले रंग के फूल गुच्छों में लगे होते है। फल गोलाकार आधे से एक इंच व्यास के, गूदेदार पीलापन लिये हरे और पकने पर लालवर्ण के हो जाते है। फलों पर छः रेखाये होती है। फल के भीतर षट्कोषीय बीज होता है। फरवरी–मई मे इस पर फूल लगने शुरू होते हैं तथा अक्टूबर से अप्रैल तक फल मिलते है।

Scanned by CamScanner

रासायनिक संघटन

आँवले के फल में विटामिन 'सी' प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। इसमें नारंगी के रस से 20 गुना अधिक विटामिन 'सी' पाया जाता है। ऑवले मे गैलिक एसिड, टैनिक एसिड, निर्यास, शर्करा, एल्ब्युमिन, सेल्युलोज तथा कैल्शियम पाये जाते है। फल के कल्क और स्वरस में प्रति 100 ग्राम पाये जाने वाले घटक निम्न प्रकार है:

जल की मात्रा 81.2 मि०ग्रा०, प्रोटीन 0.5 मि०ग्रा०, वसा 0.1 मि०ग्रा०, फास्फोरस 0.02 मि०ग्रा०, कैल्शियम 0.05 मि०ग्रा०, लौह 1.2 मि०ग्रा०, निकोटिनिक एसिड 0.2 मि०ग्रा०। टैनिन फल में 28, शाखा त्वक में 21, तने की छाल में 8.9 तथा पत्तों में 22 प्रतिशत होता है। बीजों से भूरे पीले रंग का एक स्थिर तैल (16 प्रतिशत) निकलता है।

गुण–धर्म

1. ग्राही, मूत्रल, रक्तशोधक और रुचिकाकार होने से आँवला अतिसार, प्रमेह, दाह, कामला, अम्लपित्त, विस्फोटक, पांडु रक्तपित्त, वातरक्त, अर्श, बद्ध कोष्ठ, अजीर्ण, अरुचि, श्वास, खांसी इत्यादि रोगों को नष्ट करता है। दृष्टि को तेज करता है। वीर्य को दृढ़ करता है। और आयु की वृद्धि करता है।
2. यह त्रिदोष हर है। अम्ल से वात, मधुर शीत से पित्त तथा रुक्षकषाय होने के कारण कफ का नाश करता है।[1]
3. यह कुष्ठघ्न, ज्वरघ्न व रसायन है।[2]
4. हृदय को बल देने वाला और शोणितस्थापन है।
5. वृष्य और गर्भ स्थापन है।

Scanned by CamScanner

6. आँवला कफ पित्त–नाशक, प्रमेह कुष्ठ को नष्ट करता है। तथा आंखो के लिये हितकारी अग्निदीपक और विषम् ज्वर को नष्ट करता है।[14]
7. आँवला, हरड़, पिप्पली सब प्रकार के ज्वरों को नष्ट करता है।
8. आँवला थोड़ा मधुर, तिक्त, कषाय, कटु रस आंखों के लिये हितकारी, त्रिदोषनाशक, वृष्य, शुक्र वर्धक हैं।

औषधीय प्रयोग

नेत्ररोग :

1. 20–50 ग्राम आँवले के फलों को जौकुट कर दो घंटे तक आधा किलो ग्राम पानी में उबालकर उस जल को छानकर दिन में तीन बार आंखों में डालने से नेत्र रोगों में बहुत लाभ होता है।
2. वृक्ष पर लगे हुये आँवले में छेद करने से जो द्रव पदार्थ निकलता है। उसका आंख के बाहर चारों और लेप करने से आँख के शुक्ल भाग की शोथ मिटती है।
3. आँवले के रस को आंखों में डालने अथवा सहजन के पत्तों का रस 4 ग्राम तथा सैन्धा नमक 250 मिलीग्राम इन्हें एक साथ मिलाकर परिषेचन करने से नूतन अभिष्यन्द नष्ट होता है।
4. 7 ग्राम आँवले को जौकुट कर ठंडे पानी में तर कर दें। दो–तीन घंटे बाद उन आंवलो को निचोड़ कर फेंक दे और उस जल में फिर दूसरे आँवले भिगो दे। दो–तीन घंटे बाद उनको भी निचोड़ कर फेंक दें। इस प्रकार तीन–चार बार करके उस पानी को आँखो में डालना चाहिये। इससे आंखों की फूली मिटती है।

केश कल्प :

1. सूखे आँवले 30 ग्राम, बहेड़ा 10 ग्राम, आम की गुठली की गिरी 50 ग्राम और लौह चूर्ण 10 ग्राम रात भर कढाई में भिगो रखें। बालो पर इसका नित्य प्रति लेप करने से छोटी आयु में श्वेत हुये बाल कुछ ही दिनों में काले पड़ जाते है।
2. आँवला, रीठा, शिकाकई तीनों का क्वाथ बनाकर सिर धोने से बाल मुलायम, घने और लम्बे होते है। ब्राही आंवला केश तेल भी बालों के लिये अच्छा होता है।
3. आँवले और आम की गुठली की मज्जा को साथ पीस कर सिर में लगाने से दृढ़मूल लम्बे केश पैदा होते है।[24]

नकसीर : जामुन, आम तथा आँवले को कांजी आदि से बारीक पीसकर मस्तक पर लेप करने से नासिका में प्रवृत रक्त इस प्रकार रुक जाता है, जिस प्रकार जल का वेग सेतु बन्ध से।[15]

स्वर भेद : अजमोदा, हल्दी, आँवला, यवक्षार, चित्रक इनको समान मात्रा में मिलाकर, 1 से 2 ग्राम चूर्ण को 2 चम्मच मधु तथा 1 चम्मच घृत के साथ चाटने से स्वर भेद दूर होता है।[17]

हिक्का :

1. पिप्पली, आँवला, सोंठ इनके 2–2 ग्राम चूर्ण में 10 ग्राम खांड तथा 1 चम्मच मधु मिला बार–बार प्रयोग करने से हिक्का तथा श्वास रोग शान्त होता है।[16]
2. आँवला के 10–20 ग्राम रस और 2–3 ग्राम पीपल का चूर्ण 2 चम्मच शहद के साथ दिन में दो बार सेवन करने से हिचकी में लाभ होता है।

वमन :

1. हिचकी तथा उल्टी में आंवले का 10–20 मिलीलीटर रस 5–10 ग्राम मिश्री मिलाकर देने से आराम होता है। यह दिन मे दो–तीन बार दिया जा सकता है। 10–15 ग्राम चूर्ण पानी के साथ भी दिया जा सकता है।
2. त्रिदोष जनित छर्दि में आँवला तथा दाख को पीसकर 40 ग्राम खांड, 40 ग्राम मधु और 160 ग्राम जल मिलाकर कपड़े से छानकर पीना चाहिये।
3. आँवले के 20 ग्राम स्वरस में 1 चम्मच मधु और 10 ग्राम सफेद चन्दन का चूर्ण मिलाकर पिलाने से वमन बन्द होता है।

अम्लपित्त :

1. ताजा आँवला 1–2 नग मिश्री के साथ या स्वरस 25 ग्राम की मात्रा लेकर समभाग शहद के साथ प्रातः–सायं देने पर खट्टी डकारें अम्लपित्त की शिकायतें दूर हो जाती हैं।
2. आँवले के 10 ग्राम बीज रात भर जल मे भिगोकर रखने पर व अगले दिन गाय के दूध में पीसकर 250 ग्राम गाय के दूध के साथ देने पर पित्ताधिक्य में लाभ होता है।

Scanned by CamScanner

संग्रहणी : मेथी दाना के साथ इसके पत्तों का क्वाथ बनाकर 10 से 20 ग्राम की मात्रा में दिन में दो बार पिलाने से संग्रहणी मिटती है।

कामला : यकृत की दुर्बलता व पीलिया निवारण के लिये आंवले को शहद के साथ चटनी बनाकर सुबह–शाम लिया जाना चाहिए।

मूत्रकृच्छ्र :

1. इसकी ताजी छाल के 10–20 ग्राम रस में 2 ग्राम हल्दी और 10 ग्राम मधु मिलाकर सुबह–शाम पिलाने से मूत्रकृच्छ्र मिटता है।
2. आँवलों के 20 ग्राम स्वरस में इलायची का चूर्ण डालकर दिन में दो–तीन बार पीने से मुत्रकृच्छ्र मिटता है।

विरेचन : रक्त पित्त रोग में, विशेषकर जिन रोगियों को विरेचन कराना हो, उनके लिये आंवले के 20–40 मिलीलीटर रस में पर्याप्त मात्रा में मधु और चीनी को मिलाकर सेवन कराना चाहिये।[1]

कब्ज : आंवले के फल का चूर्ण यकृत बढ़ने, सिर दर्द, कब्ज, बवासीर व बदहजमी रोग में त्रिफला चूर्ण के रूप में प्रयोग किया जाता है। मात्रा 3 से 6 ग्राम जल के साथ दिन में तीन बार। 3–6 ग्राम त्रिफला चूर्ण की फंकी उष्ण जल के साथ रात में सोते समय लेने से कब्ज मिटता है।

अर्श :

1. ऑवलों को भली–भांति पीसकर उस पीठी को एक मिट्टी के बरतन में लेप कर देना चाहिये। फिर उस बरतन में छाछ भरकर उस छाछ को रोगी को पिलाने से बवासीर में लाभ होता है
2. बवासीर के मस्सों से अधिक रक्त स्त्राव होता हो तो 3–8 ग्राम ऑवला चूर्ण का सेवन दही की मलाई के साथ दिन में दो–तीन बार करना चाहिये।

शुक्रमेह : धूप में सुखाये हुये ऑवलों के गुठली रहित 10 ग्राम चूर्ण में दुगनी मिश्री मिलाकर ऊपर से 250 ग्राम तक ताजा जल 15 दिन तक लगातार सेवन करने से स्वप्नदोष, शुक्रमेह आदि रोगों में निश्चित रूप से लाभ होता है।

रक्तातिसार : रक्त अतिसार से अधिक रक्तस्त्राव हो तो ऑवले के 10–20 ग्राम रस में 10 ग्राम शहद और 5 ग्राम घी मिलाकर पिलावें और ऊपर से बकरी का दूध 100 ग्राम तक दिन में तीन बार पिलावें।[14]

रक्त गुल्म : ऑवले के रस में काली मिर्च डालकर पीने से रक्त गुल्म नष्ट होता है।[21]

प्रमेह:

1. ऑवला, हरड़, बहेड़ा, नागर–मोथा, दारु–हल्दी, देवदारु इन सबको समान मात्रा में लेकर यथाविधि उनका क्वाथ करके 10–20 ग्राम की मात्रा में सुबह–शाम प्रमेह के रोगी को पिला दें।[11]
2. ऑवला, गिलोय, नीम की छाल, परवल की पत्ती को समभाग लेकर 50 ग्राम की मात्रा में लेकर आधा किलो पानी में 12 घंटे भिगोकर फिर पकायें, जब चतुर्थांश शेष रहे, कषाय में 2 चम्मच मधु के साथ मिलाकर दिन मे तीन बार सेवन करने से पित्तज प्रमेह नष्ट होते है।

पित्तदोष : ऑवलों का रस, रसवत् मधु, गाय का घी इन सब द्रव्यों को समभाग लेकर आपस मे घोटकर की गयी रस क्रिया पित्त दोष तथा रक्त विकार जनित नेत्र रोग का नाश करती है।[1] यह तिमिर रोग, नेत्र पटल में उत्पन्न रोगों को भी दूर करती हैं।[12]

मूत्रातिसार : पका हुआ केला एक, आँवले का रस 10 ग्राम, मधु 4 ग्राम, दूध 250 ग्राम, इन्हें एकत्र करके सेवन करने से सोमरोग नष्ट होता है।

रक्त प्रदर : ऑवला स्वरस 20 ग्राम में एक ग्राम जीरा चूर्ण मिला कर दिन में दो बार सेवन करें। ताजे आँवलो के अभाव में शुष्क ऑवला चूर्ण 20 ग्राम रात्रि में भिगोकर सुबह सेवन करे और प्रातः काल भिगोकर रात्रि में छानकर सेवन करें। पित्तप्रकोप से होने वाले बारबार रक्त स्त्राव में धैर्यपूर्वक आँवले का सेवन करने से विशेष लाभ होता है।

श्वेत प्रदर : ऑवले के 20–30 ग्राम बीजों को पानी के साथ पीसकर उस पानी को छानकर, उसमें 2 चम्मच शहद और पिसी हुई मिश्री मिलाकर पिलाने से श्वेत प्रदर में लाभ होता है।

मंदाग्नि : पकाये हुए ऑवलों को घियाकस कर ले, उसमें उचित मात्रा में काली मिर्च, सोंठ, सैंधा नमक, भुना जीरा और हींग मिलाकर, बड़िया बनाकर छाया में सुखाकर सेवन करने से यकृत

Scanned by CamScanner

के पित्तस्त्रावादि की वृद्धि होती है, जिससे अरूचि अग्निमॉद्य व मलावरोध दूर हो जाता है। क्षुधा प्रदीप्त होकर मन प्रसन्न हो जाता है।

अतिसार : 5–6 ऑवलों को जल में पीसकर रोगी की नाभि के आसपास उनकी थाल बचा कर लेप कर दें और थाल में अदरक का रस भर दे। रस प्रयोग से अत्यन्त भयंकर नदी के वेग के समान दुर्जय, अतिसार का भी नाश होता है।

मूत्राघात : 5–6 ऑवलों को पीस कर नलों पर लेप करने से मूत्राघात मिटता है।

योनिदाह : ऑवलें के 20 मि.ली. रस में 5 ग्राम शक्कर और 10 ग्राम शहद मिलाकर पीने से योनि दाह में अत्यन्त आराम होता है।

कामला पांडु : 125 से 250 मिलीग्राम लौह भस्म के साथ 1–2 नग ऑवले का सेवन करने से कामला, पांडु और रक्ताल्पता के रोगों में अत्यन्त लाभ होता है।

सुजाक : ऑवले का 2–5 ग्राम चूर्ण को एक गिलास जल से मिलाकर पिलाने से और उसी जल की मूत्रेन्दिय में पिचकारी देने से सूजन व जलन शान्त होती है और धीरे–धीरे घाव भरकर पीव आना बन्द हो जाता है।

वातरक्त : ऑवला, हल्दी तथा मोथा का 50–60 ग्राम क्वाथ में 2 चम्मच मधु मिलाकर दिन में 3 बार पीने से वातरक्त शान्त हो जाता है।[19]

पित्तशूल : ऑवला के 2–5 ग्राम चूर्ण को 1 चम्मच मधु के साथ मिलाकर प्रातःकाल खाली पेट पित्तशूल की शान्ति के लिये चाटना चाहिये।[20]

गठिया : 20 ग्राम सूखे ऑवले और 20 ग्राम गुड़ को 500 ग्राम पानी में उबालकर 250 ग्राम पानी रहने पर मल छानकर प्रातः–सायं पिलाने से गठिया में लाभ होता है परन्तु उस समय नमक छोड़ देना चाहिये।

कफ ज्वर : मोथा, इन्द्रजौ, हरड, बहेड़ा, ऑवला, कटुकी, फालसा, इनका क्वाथ कफ ज्वर को नष्ट करता है।[13]

रक्त पित्त :

1. यह तीनों दोषों से उत्पन्न विशेषतः पैत्तिक विकारों में, रक्त पित्त, प्रमेह आदि में प्रयुक्त होता है।[5] इसलिए शरीर का शोधन हो जाने पर ऑवले के 10–20 मिलीलीटर रस में 2 ग्राम हल्दी को 1 चम्मच मधु मिलाकर दिन में 3 बार पिलायें।[6]
2. रक्तपित्त में रक्त के वमन का कारण यदि आमाश्य में व्रण का होना है तो ऑवला चूर्ण 5 से 10 ग्राम की मात्रा में दही के साथ अथवा 10–20 ग्राम क्वाथ को गुड के साथ भी दिया जाता है।

ज्वर दोष : ऑवला, चमेली की पत्ती, नागरमोथा, ज्वासा को समान भाग मे लेकर क्वाथ बनाने के बाद उसमें चतुर्थांश में गुड मिलाकर सेवन करने से ज्वर के रोगी के शरीर के भीतर के दोष शीघ्र ही बाहर निकल आते है।[4]

पित्तज्वर : पके हुए ऑवलों का रस निकालकर उसको खरल में डालकर घोटना चाहिये, जब गाढा हो जाये तब उसमें और रस डालकर घोटना चाहिये। इस प्रकार घोटते–घोटते सब को गाढा करके उसका गोला बनाकर चूर्ण कर लेना चाहिये। यह चूर्ण अत्यन्त पित्तशामक है। इसको 2–5 ग्राम की मात्रा मे नित्य दिन में दो बार सेवन करने से पित्त की घबराहट, प्यास और पित्त का ज्वर दूर होता है।

विसर्प : ऑवले के 10–20 ग्राम रस में 10 ग्राम घी मिलाकर दिन में दो–तीन बार पिलाने से विसर्प रोग मिटता है।

कुष्ठ : ऑवला और नीम पत्र समभाग महीन चूर्ण कर रखे, 2 से 6 ग्राम तक या 10 ग्राम तक नित्य प्रातः काल शहद के साथ चाटने से भयंकर गलित कुष्ठ में भी शीघ्र लाभ होता है।

खुजली : ऑवले की गुठली को जलाकर भस्म करें और उसमें नारियल तेल मिलाकर, गीली या सूखी किसी भी प्रकार की खुजली पर लगाने से लाभ होता है।

फोडे : इसका दूध लगाने से बहुत दुःख देने वाले फोड़े मिटते है।

श्रम, दाह : ऑवले के 100 ग्राम क्वाथ में 10 ग्राम गुड डालकर थोड़ा–थोड़ा पीने से श्रम, दाह, शूल, रक्तपित्त या मूत्रकृच्छ्र प्रभृति रोग निवृत होते है। यह तर्पण है।[21]

पित्तरोग : ताजा फलों का मुरब्बा विशेष रूप से आंवले का मुरब्बा 1–2 नग प्रातःकाल खाली पेट खाने से पित्त के रोग मिटते है।

सूखा आंवला

Scanned by CamScanner

चाकू का घाव : चाकू आदि से कोई स्थान कट जाय और विशेष रक्त स्त्राव हो तो तत्काल ऑवले का ताजा रस निकाल कर लगा देने से लाभ होता है।

दीर्घायु :

1. केवल ऑवला चूर्ण को ही रात के समय घी या शहद अथवा पानी के साथ सेवन करने से नेत्र श्रोत्र नासिकादि इन्द्रियों का बल बढता है, जठराग्नि तीव्र होती है तथा यौवन प्राप्त होता है।
2. ऑवले के चूर्ण 3–6 ग्राम को ऑवले के स्वरस से भावित करके 2 चम्मच मधु और 1 चम्मच घी के साथ दिन में दो बार चटाकर पीछे से दूध पीये इससे अस्सी वर्ष का बूढ़ा भी जवान की भाँति प्रसन्न होता है।[23]

1. हन्ति वातं तदम्लत्वात्पित्तम् माधुर्यशैत्यतः।
कफं रुक्षकषायत्वात्फलं धात्र्यास्त्रिदोषजित्।। (भाव प्रकाश निघंटु)
2. खदिरामयामलक हरिद्रारुष्कसप्तपर्णारग्वधकरवीरविऽङ्गजा नीप्रबाला इति दशेमानि कुष्ठघ्नानि भवन्ति। (सुश्रुत)
3. हरीतक्यामलकविभीतकानि त्रिफला।
त्रिफला कफपित्तघ्नी मेहकुष्ठ विनाशनी। (सुश्रुत सू० 38)
4. आमलकीहरीतकी पिप्पल्यश्चित्रकश्चेति।
आमलक्यादिरित्येष गणः सर्वज्वरापह।। (सुश्रुत)
अम्लं समधुरं तिक्तं कषायं कटुकं सरम्।
चक्षुष्यं सर्वदोषघ्नं वृष्यमामलकी फलम्।। (सुश्रुत)
5. हरीतकीसमं धात्रीफलं किन्तुविशेषतः।
रक्तपितप्रमेहघ्न परं वृष्यंरसायनम्। (भाव प्रकाश)
5. ततः शुद्ध देह भामल करसेन हरिद्रां मधु संयुक्ता पाययेतः। (सुश्रुत)
7. एवं मामलकं चूर्ण स्वरसेनैव भावितम्।
शुर्करामधु सर्पिमियुक्त लदिवा पयः पिवेत्।
एतेना शीनि पषौऽपि पुवेन परिहृष्यति। (सुश्रुत)
8. जात्यामल कमुस्तानि तद् धन्यवय वासकम्।
विवद्वदोषों ज्वरितः कषायं सगुडं पिवेत्।। (चरक)
9. त्रिवृताम मयां प्राज्ञः फलान्यारग्वधस्य वा।
त्राय माणां गवक्ष्यां मूलभामल कानि वण।
विरेचनं प्रमुञ्चजति प्रभूत मधुशर्करम्।
रसः प्रशस्यते तेषां रक्त पिते विशेषतः। (चरक)
10. बैदूर्य मुक्तामाणी गैरिकाणां मृच्छङ्गः हेमामल कोदकानाम्।
मधूद कस्येक्षुरसत्य चैव पानाच्छमं गच्छति रक्त पित्तम्।। (चरक)
11. दार्वी सुराहा त्रिफला समुस्तां कषायमुत्क्वाथ पिबेत् प्रमेही
श्रीद्रेणा युक्ता हरिद्रा पिबेद् रसेनामल की फलानाम्। (चरक)
12. धात्री रसांजन क्षौद्र सर्पिमिस्तु रस क्रिया।
पित्तरक्ता रोग हनी तैमिर्य परला पहा।। (चरक)
13. मुस्तं वत्सकबीजानि त्रिफला कटुरोहिणी।
परुषकाणि च क्वाथः कफज्वरविनाशनः।। (भैषज्य रत्नावली)
14. जम्ब्वाम्रामलकानान्तु पल्लवानथ कुट्टयेत्।
संगृह्य स्वरसं तेषामजाक्षीरेण योजयेत्।।
तत्पिवेन्मधुना युक्तं रक्तातीसारनाशनम्।। (भैषज्य रत्नावली)
15. नासाप्रवृत्तरुधिरंघृतभ्रष्टं श्लक्ष्णपिष्टमामलकम।
सेतुरिव तोयवेगं रुणद्धिमूर्ध्नि प्रलेपेन।। (भैषज्य रत्नावली)
16. कृष्णामलकशुण्ठीनां चूर्णं मधुसिताघृतैः।
मुहुर्मुहुः प्रयोक्तव्यं हिक्काश्वासनिबर्हणम्।। (भैषज्य रत्नावली)
17. अजमोदां निशां धात्री क्षारं बह्निं विचूर्णयेत्।
मधुसर्पियुतं लीढ्वा स्वरभेदम्पोहति।। (भैषज्य रत्नावली)
18. पिष्टवा धात्रीफलं द्राक्षां शर्करां च पलोन्मिताम्।
दन्त्वा मधुपलं चात्र कुडवं सलिलस्य च।। (भैषज्य रत्नावली)
19. धात्रीहरिद्रामुस्तानां कषायं वा समाक्षिकम्।। (भैषज्य रत्नावली)
20. प्रलिह्यात् पित्तशूलघ्नं धात्रीचूर्ण समाक्षिकम्। (भैषज्य रत्नावली)
21. पीतो धात्रीरसो युक्तो मरिचैश्चास्त्रगुल्मनुत्।। (भैषज्य रत्नावली)
22. गुडेनामलकं वृष्यं श्रमघ्नं तर्पणं परम्।
पित्तासृग्दाहशूलघ्नं मूत्रकृच्छ्र निवारणाम्। (भैषज्य रत्नावली)
23. कदलीनां फल पक्वं धात्रीफलरसं मधु।
शर्करापयसा पीतमपां धारणामुत्तमम्। (भैषज्य रत्नावली)
24. धात्र्याम्रमज्जलेपात्स्यात् स्थिरोरुस्निग्धकेशता।। (भैषज्य रत्नावली)
25. धात्रीफलनिर्यासो नवद्दक्कोपं निहन्ति पूरणतः।
सक्षाद्रसैन्धवो वा शिग्रूद्भवपत्ररससेकः।। (भैषज्य रत्नावली)

Scanned by CamScanner

अमरूद

15

वैज्ञानिक नाम	:	*Psidium guajava* L.
कुलनाम	:	Myrtaceae
अंग्रेजी नाम	:	Guava
संस्कृत	:	पेरूक, दृढबजती, बहुबीज
हिन्दी	:	अमरूद, सफरी
गुजराती	:	जानफल, जमरूख
मराठी	:	पेरू, जाम
बंगाली	:	चिवारा, गोआर्चाफल
तैलगु	:	गोइया
अरबी	:	कमसुरा
कन्नड़	:	शिवे

परिचय

अमरूद के फल से सब परिचित हैं. इसका गूदा लाल और सफेद दो रंगों में मिलता है। स्वाद में भी खट्टा, मीठा और फीका दो–तीन प्रकार का होता है। वर्षा ऋतु की अपेक्षा शरद ऋतु के फल अधिक मधुर तथा स्वादिष्ट होते हैं। यह कृषिजन्य तथा वन्यज दोनों अवस्थाओं में पाया जाता है।

बाह्य–स्वरूप

इसका वृक्ष 15 से 25 फुट तक ऊंचा होता है। पत्ते 3–6 इंच तक लम्बे छोटी–छोटी टहनियों पर कहीं विपरीत और कहीं एकान्तर लगे रहते हैं। काण्ड मृदु, बहुशाखीय तथा पुष्प छोटे पाये जाते हैं।

रासायनिक संघटन

इसकी जड़ व छाल में टेनिक एसिड काफी मात्रा में रहता है। इसके अतिरिक्त कैल्सियम आक्जेलेट के रवे भी इसमें पाये जाते हैं। इसके पत्तों में राल, वसा, टेनिन, उड़नशील तेल, हरित और खनिज लवण होते हैं। अमरूद के पेड़ में फास्फोरिक और अम्ल सत्व के साथ मिले हुए चूना तथा मैगनीज वर्तमान होते हैं। इसमें विटामिन बी तथा सी दोनों पाये जाते हैं।

गुण–धर्म

अमरुद के फल, रूचिवर्द्धक, शुक्रवर्द्धक, तृषाशामक हृदय को बल देने वाले, कृमिघ्न एवं वमननाशक है। ये रेचक तथा कफ निःस्सारक है।

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

शिरशूल : सूर्योदय के पूर्व ही सवेरे हरे कच्चे अमरुद को पत्थर पर घिसकर जहां दर्द होता है, वहां खूब अच्छी तरह लेप कर देने से सिर दर्द नही उठने पाता, अगर दर्द शुरू हो गया हो तो शांत हो जाता है। यह प्रयोग दिन में तीन–चार बार करना चाहिए।

दंत रोग : 3–4 पत्तों को चबाने या पत्तों के काढ़े में फिटकरी मिला कर कुल्ला करने से दंत पीड़ा दूर होती है।

मुंह के छाले : इसके कोमल पत्तों में कत्था मिलाकर पान की तरह चबाने से मुंह के छाले ठीक हो जाते हैं।

मानसिक विकार : इसके पत्तों का फांट मस्तिष्क विकार, वृक्क प्रवाह ओर शरीरिक एवं मानसिक विकृत स्थिति में प्रयोग किया जाता है।

आक्षेपरोग : इसके पत्तों के अर्क या टिंचर को बच्चों की रीढ़ की हड्डी पर मालिश करने से उनका आक्षेप रोग दूर हो जाता है।

हृदय : अमरुद के फलों के बीज निकाल कर बारीक–बारीक कत. रकर शक्कर के साथ धीमी आंच पर बनाई हुई चटनी हृदय के लिए अत्यन्त हितकारी होती है तथा कब्ज दूर करती है।

जुकाम : चिरकाल से रुके हुए प्रतिश्याय में रोगी को एक अच्छा बड़ा अमरुद बीज निकालकर खिला दें और ऊपर से ताजा जल रोगी नाक बंद करके पी ले। दो–तीन दिन में ही रुका हुआ जुकाम बहकर साफ हो जायेगा। दो–तीन दिन बाद अगर स्राव रोकना हो तो 50 ग्राम गुड़ रात्रि में बिना जल पीये खा लें।

खांसी और कफ विकार :

1. यदि सूखी खांसी हो और कफ न निकलता हो तो, सुबह ही सुबह ताजे एक अमरुद को तोड़कर, चाकू की सहायता के बिना चबा–बचा कर खाने से खांसी 2–3 रोज में ही दम तोड़ देती है।
2. अमरूद का भबक यन्त्र द्वारा अर्क निकालकर उसमें शहद मिलाकर पीने से भी सूखी खांसी में लाभ होता है।

Scanned by CamScanner

3. यदि बलगम खूब पड़ता हो और खांसी अधिक हो, दस्त साफ न हो हल्का बुखार भी हो तो अच्छे ताजे मीठे अमरूदों को अपनी इच्छानुसार खायें।
4. यदि जुकाम की साधारण खांसी हो तो अधपके अमरूद को आग में भूनकर उसमें नमक लगाकर खाने से लाभ होता है।

वमन : इसके पत्तों का क्वाथ 10 ग्राम पिलाने से वमन बंद हो जाती है।

तृष्णा : अमरुद के छोटे–छोटे टुकड़े काटकर पानी में डाल दें। कुछ देर बाद इस पानी को पीने से मधुमेह जन्य या बहुमूत्र जन्य तृष्णा को उत्तम लाभ होता है।

कब्ज :

1. अमरुद को नाश्ते के समय काली मिर्च, काला नमक, अदरक के साथ खाने से अजीर्ण, गैस, अफारा और कब्ज की तकलीफ दूर होकर भूख बढ़ जायेगी। अमरुद को खाने के साथ खाने से भी संग्रहणी और अतिसार में लाभ होता है।
2. इसके कोमल पत्तों के 10 ग्राम स्वरस में थोड़ी शक्कर मिलाकर प्रतिदिन केवल एक बार प्रातःकाल सेवन करने से सात दिन में अजीर्ण में लाभ होता है।

अतिसार :

1. बच्चे का पुराना अतिसार मिटाने के लिए इसकी 15 ग्राम जड़ को 150 ग्राम जल में ओटाकर, जब आधा जल शेष रह जाये तो 6–6 ग्राम तक दिन में दो–तीन बार पिलाना चाहिए।
2. कच्चे अमरुद के फल औटा के खिलाने से भी अतिसार मिटता है।
3. अमरुद की छाल व इसके कोमल पत्रों का 20 मिलीलीटर क्वाथ पिलाने से हैजे की प्रारम्भिक अवस्था में लाभ होता है।

प्रवाहिका : अमरूद का मुरब्बा प्रवाहिका एवं अतिसार में लाभदायक है।

गुदभ्रंश :

1. बच्चों के गुदभ्रंश रोग पर इसकी जड़ की छाल का क्वाथ गाढ़ा–गाढ़ा लेप करने से लाभ होता है।
2. तीव्र अतिसार में गुदभ्रंश होने पर अमरुद के ताजे पत्तों की पुल्टिस बनाकर बांधने से शोथ कम हो जाता है और गुदा अंदर बैठ जाती है।
3. आंतरिक प्रयोग के लिए अमरुद और नागकेशर दोनों को महीन पीसकर उड़द के समान गोलियां बनाकर देनी चाहिए।
4. अमरुद के वृक्ष की छाल, जड़, और पत्ते, बराबर–बराबर 250 ग्राम लेकर जौकुट कर लें तथा एक कि॰ग्रा॰ जल में उबालें, जब आधा जल शेष रह जायें, तब इस क्वाथ से गुदा को बार–बार धोना चाहिए और उसे अंदर धकेलें। इससे गुदा अंदर चली जायेगी।

गठिया : इसके कोमल पत्तों को पीसकर गठिया के वेदना युक्त स्थानों पर लेप करने से लाभ होता है।

विषमज्वर : मलेरिया ज्वर में अमरुद को खाने से इकतारा तथा चातुर्थिक ज्वर में लाभ होता है।

ज्वर : इसके कोमल पत्तों को पीस–छानकर पिलाने से ज्वर के उपद्रव्य दूर होते हैं।

विदाह : अमरुद के बीज निकालकर पीसकर गुलाब जल और मिसरी मिला कर पीने से अत्यंत बढ़े हुए पित्त और विदाह की शांति होती है।

विशेष : इसके पत्तों के स्वरस को भरपेट पिलाने से या अमरुद खाने से भांग, धतूरा आदि का नशा दूर हो जाता है।

Scanned by CamScanner

16 अनार

वैज्ञानिक नाम	:	*Punica granatum* L.
कुलनाम	:	Punicaceae
अंग्रेजी नाम	:	Pomegranate
संस्कृत	:	दाड़िम, लोहित पुष्पक, दंत बीज
हिन्दी	:	अनार
गुजराती	:	दाड़म
मराठी	:	डालिंब
बंगाली	:	दालिम
तैलगु	:	दानिम्मा
तमिल	:	मदुलाई
फारसी	:	अनार, शीरी अनार
अरबी	:	रुम्मान, हामिज

परिचय

भारतवर्ष में अनार के वृक्ष सर्वत्र पाये जाते हैं। पश्चिमी हिमालय प्रदेश और सुलेमान की पहाड़ियों पर तथा ईरान एवं अफगानिस्तान में यह स्वयं जात होता है। स्वाद भेद से अनार की तीन किस्में पाई जाती है। देशी अनार खट्टे–मीठे होते हैं। काबुल और कन्धार के अनार मीठे होते है। काबुली अनारों में एक गुठली रहित, सरीखा अत्यन्त मीठा अनार होता है। जिसे बेदाना अनार कहते है, यह सर्वोत्तम होता है। अनार का केवल फल ही नहीं, अपितु इस वृक्ष का सर्वांग ही औषधीय गुणों से भरपूर होता है। फल की अपेक्षा कली व छिल्के में अधिक गुण पाये जाते है।

बाह्य–स्वरूप

इसका गुल्म वा वृक्ष 10–15 फुट ऊँचा होता है। काण्डत्वक, चिकनी व धूसरवर्ण की होती है। पत्र लगभग 2–3 इंच लम्बे और आधे से चौथाई इंच चौडे तथा दोनों सिरों पर पतले, आयताकार या अभिलट्वाकार होते है। पुष्प नांरगी, रक्तवर्ण, कभी–कभी पीले होते हैं जो प्रायः एकल या कभी–कभी गुच्छो में लगते हैं। फल

Scanned by CamScanner

गोलाकार लगभग दो इंच व्यास का, बाह्यकोष से युक्त, फलत्वक् चर्मवत् काष्ठीय, फल का भीतरी भाग अनेक पर्दो से विभक्त, जिसमें अनेक कोणीय बीज होते है जिनका आवरण मांसल, रक्तवर्ण, गुलाबी या श्वेत होता है। पुष्प अप्रैल–मई में तथा फल जुलाई–सितम्बर में आते है।

रासायनिक संघटन

फल त्वक् में 28 प्रतिशत तक टैनिक एसिड तथा पीत रंजक तत्व पाया जाता है। कांडत्वक् एवं मूलत्वक में 0.5 से 0.9 प्रतिशत तक क्षाराभ पाये जाते है। पेलीटिएरीन क्षाराभ का मुख्य घटक है। शुद्ध पेलीटिएशीन रंगहीन द्रव के रूप में होता है जो ऑक्सीजन के संपर्क से भूरे रंग के रालीय द्रव के रूप में परिवर्तित हो जाता है। इसके अतिरिक्त, इनमें टैनिक एसिड होता है।

गुण–धर्म

त्रिदोषहर, तृप्तिकारक, पाचन, हल्का किंचित कसैला, मलावरोधक, स्निग्ध, मेध्य, बल्य, ग्राही, दीपन तथा तृष्णा, दाह, ज्वर, हृदय रोग, मुख दुर्गन्ध, कंठरोग और मुख रोगनाशक है।[1]

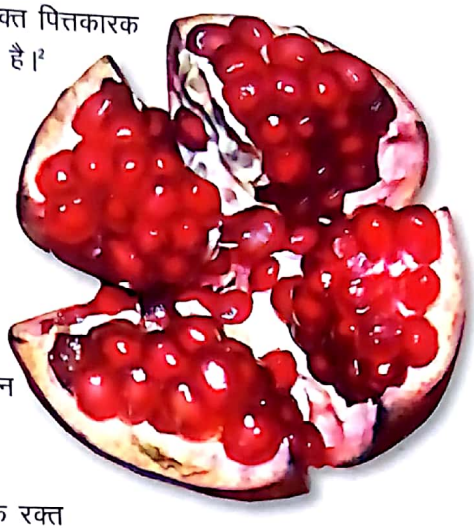

खट्टा अनार : रूक्ष, रक्त पित्तकारक तथा वात कफ नाशक है।[2]

खट्टा–मीठा अनार: दीपन रुचिकारक, वात पित्तनाशक और पाचन में हल्का है। अनारदाना (कच्चा सुखाया हुआ अनार) रूचिकारक हृदय को प्रिय और वातानुलोमन है।

काण्ड की छाल: कृमिनाशक मलरोधक रक्त अतिसार और कास नाशक है।

कच्चा फल: पाचक पौष्टिक, क्षुधा वर्धक, पित्तकारक और वमन को रोकने वाला है।

पुष्प : नासिका से रक्त स्त्राव को दूर करता है। अनार की जड़ कृमिहर हैं। फीता कृमियों को नष्ट करने की यह उपयुक्त औषधि है।[3,4]

औषधीय प्रयोग

नक्सीर :

1. अनार की कली जो निकलती हुई हवा के झोको से नीचे गिर पड़ती है, अतिसंकोचन और क्लेदघ्न होती है। इनका रस 1–2 बूंद नाक में टपकाने से या सुंधाने से नाक से खून बहना बन्द हो जाता है। यह नक्सीर की अति उत्तम औषधि है।
2. अनार के छिलके को छुहारे के पानी के साथ पीसकर लेप करने से सूजन में तथा इसके शुष्क महीन चूर्ण का नस्य लेने से नक्सीर में लाभ होता है।
3. अनार के पत्तों के क्वाथ को या 10 ग्राम रस पिलाने से तथा पीसकर मस्तक पर लेप करने से नक्सीर में लाभ होता है।

दंतशूल :

1. अनार तथा गुलाब के शुष्क फूल, दोनों को पीसकर मंजन करने से मसूड़ों से पानी आना बन्द हो जाता है। केवल अनार की कलियों के चूर्ण का मंजन करने से मसूढों से खून आना बन्द हो जाता है।
2. मुख और मसूढों के विकार में इसकी मूलत्वक के क्वाथ से कुल्ले कराने से लाभ होता है।
3. मीठे अनार के छाया शुष्क 8–10 पत्तों के चूर्ण के मंजन से दांतो का हिलना, मसूढों से खून और पीव का आना या सूजन में फायदा पहुँचता है।

अनिद्रा : अनार के ताजे पत्ते 20 ग्राम लेकर 400 ग्राम पानी में उबालें, जब 100 ग्राम शेष रह जाये तो इसमें गरम दूध मिलाकर पीयें। इससे शारीरिक व मानसिक थकावट मिटती है। अनिद्रा रोग मिटता है।

मुंह के छाले : इसके 25 ग्राम पत्तों को 400 ग्राम पानी में उबालकर चतुर्थांश शेष क्वाथ से कुल्ले करने से मुंह के छाले आदि मुख रोग दूर होते है।

नेत्र विकार :

1. अनार के 5–6 पत्रों को पानी में पीसकर दिन में 2 बार लेप करने तथा पत्तों को पानी में भिगोकर पोटली बनाकर आंखों पर फेरने से दुखती आंखों में लाभ होता है।
2. अनार के 8–10 ताजे पत्तों का रस खरल में डालकर शुष्क हो जाने पर कपड़े में छानकर रख दें, प्रातः–सायं सलाई द्वारा लगाये, इससे खुजली, नेत्रस्राव, पलको की खराबी, आदि रोग दूर होते है।

कर्ण विकार :

1. अनार के ताजे पत्तों का रस 100 ग्राम, गौमूत्र 400 ग्राम, और तिल तैल 100 ग्राम, तीनों को धीमी आंच पर पकावें, तैल मात्र शेष रहने पर छानकर रख लें। इसकी कुछ बूदें थोड़ा गरम कर प्रातः–सायं कान में डालने से कान की पीड़ा, कर्णनाद और वधिरता में लाभ होता है।
2. अनार के पत्तों के रस में समभाग बेल पत्र स्वरस और गाय का घी मिला घी सिद्ध कर लें। 20 ग्राम घी (गरम), 250 ग्राम मिश्री मिले दूध के साथ प्रातः–सायं लेने से बहरापन में लाभ होता है।

कंठ विकार :

1. अनार के ताजे पत्रों के 1 किलो रस में मिश्री मिलाकर, शर्बत

Scanned by CamScanner

बना लें, 20–20 ग्राम दिन में 2–3 बार चाटने से आवाज का भारीपन, खांसी, नजला तथा प्रतिश्याय दूर होता है।

2. इसके छाया शुष्क पत्तों के महीन चूर्ण में शहद या गुड मिलाकर झड़ बेर जैसी गोलियाँ बना छाया शुष्क कर लें। इन गोलियों को मुंह में रख कर चूसें।

खालित्य–पलित :

1. ताजे हरे पत्तों के रस में 100 ग्राम पत्तों का कल्क मिला, और आधा किलो सरसों का तैल मिला, तैल सिद्ध कर लगाने से सिर का गंजापन दूर होता है तथा बालों का झडना रूकता है।
2. इस तैल की मालिश करने से चेहरे की कील, झांई और काले धब्बे भी नष्ट होते हैं।

शिरः शूल :

1. अनार के छाया शुष्क आधा किलो पत्तों में आधा किलो सूखा धनिया मिलाकर महीन चूर्ण कर लें, इसमें 1 किलो गेंहूँ का आटा मिलाकर, 2 किलो गाय के घी में भून ले, ठंडा होने पर 4 किलो खांड मिला लें। प्रातः–सायं गरम दूध के साथ 50 ग्राम तक मात्रा सेवन करने से सिर दर्द और सिर चकराना दूर होता है।
2. छाल को घिसकर कपाल पर लेप करें, इससे शिरःशूल, आधाशीशी में सद्य लाभ होता है।

उन्माद :

1. अनार के पत्ते और गुलाब के ताजे पुष्प 10–10 ग्राम (ताजे फूलों के अभाव में सूखे फूल 5 ग्राम) लें। आधा किलो जल में पकाकर 250 ग्राम शेष रहने पर, 10 ग्राम गाय का घी मिलाकर गरम ही गरम सुबह–शाम पिलाने से उन्माद और मिर्गी में लाभ होता है।
2. इसके 20 ग्राम पत्तों के क्वाथ में 10–10 ग्राम गाय का घी और खांड मिलाकर पिलाने से मिर्गी या अपस्मार में लाभ होता है।

राजयक्ष्मा :

1. अनार के 200 ग्राम स्वादिष्ट रस में पीपल, श्वेत जीरा, सौंठ और दालचीनी का चूर्ण 40–40 ग्राम, उत्तम केशर 10 ग्राम, पुराना गुड़ 200 ग्राम मंद आंच पर पकावें, जब गोली बनने योग्य गाढ़ा हो जाये, तो नीचे उतारकर 10 ग्राम छोटी इलायची का चूर्ण डालकर कर 6–6 ग्राम की गोलियाँ बनाकर, प्रातः सायं 1–1 गोली बकरी के दूध के साथ सेवन करें।
2. यदि कमजोरी अधिक हो, परन्तु दस्त और खांसी न हो तो, ताजे अनार का रस जितना पी सकें, पिलावें।
3. यदि खांसी हो तो अनार का अर्क 2–2 चम्मच दिन में तीन–चार बार पिलावें।

इन सब प्रयोगों से राजयक्ष्मा में लाभ होता है व इससे शरीरिक क्षीणता भी कम होती है।

उरक्षत : दिन में 2–3 बार इसके पत्रों का क्वाथ 10–20 ग्राम पीने से उरक्षत में लाभ होता है।

हिक्का : 20 ग्राम अनार के शरबत में छोटी इलायची के बीज, बंशलोचन, सूखा पोदीना, जहरमोहरा खताई और अगुरू 1–1 ग्राम तथा पीपल 500 मिलीग्राम का सूक्ष्म चूर्ण मिला चटनी बना लें। आवश्यकतानुसार थोड़ी–थोड़ी चटनी चाटने से हिचकी शीघ्र दूर होती है।

कुचशैथिल्य :

1. अनार के पत्ते, छिलका, फुल, कच्चे फल और फल और जड़ की छाल समभाग लेकर, मोटा पीसकर, दुगना सिरका, तथा चार गुना गुलाब जल में भिगाये। चार दिन बाद इसमें सरसों का तेल मिला धीमी आंच पर पकावें। तेल मात्र शेष रहने पर छानकर बोतले में भरकर रख लें। इस तेल की रोज स्तनों पर मालिश करें तो स्तन की मांस की शिथिलता में इस से लाभ होता है साथ ही जिन के शरीर में झुर्रियां पड़ गयी हों, मांस ढीला पड़ गया हो, उन्हें भी इस तेल की मालिश से निश्चित लाभ होता है।
2. अनार के पत्तों को कुचल कर 1 किलो रस निकाल लें, इसमें आधा किलो मीठा तेल (तिल तेल) मिलाकर धीमी आंच पर पकावें। तेल मात्र शेष रहने पर छानकर बोतलों में भर कर रख लें। दिन में 2–3 बार मालिश करने से मांस का ढीलापन में लाभ होता है।
3. अनार फल के 1 किलो छिल्के को 4 किलो जल में डालकर उबाल लें, जब जल 1 किलो शेष रह जाये तो उसमें 250 ग्राम सरसों का तेल (यदि बादाम रोगन हो तो उत्तम है), डालकर तेल सिद्ध कर लें। इस तेल की मालिश करने से कुछ ही दिनों में मांस का ढीलापन दूर हो झुर्रियां मिटती हैं तथा त्वचा में निखार आता है।

कासश्वास :

1. अनारदाना सूखा 100 ग्राम, सौंठ, काली मिर्च, पीपल, दालचीनी, तेजपात, इलायची 50–50 ग्राम एकत्र चूर्ण कर उसमें समभाग खांड मिला लें। दिन में 2 बार मधु के साथ 2–3 ग्राम की मात्रा में सेवन करने से कास, श्वास, हृदय रोग, पीनस आदि दूर होते है। यह उत्तम दीपन, पाचन और रोचक है।
2. केवल फल के छिलके को मुहँ में रखकर चूसने से भी खांसी में लाभ होता है।
3. अनार का छिल्का 40 ग्राम, पीपल और जवाखार 6–6 ग्राम तथा गुड़ 80 ग्राम की चाशनी बनाकर उसमें सबका महीन चूर्ण मिलाकर 500–500 मिलीग्राम की गोली बनाकर 2–2 गोली दिन में 3 बार गर्म जल से सेवन करें। इसमें काली मिर्च 10 ग्राम मिला लेने से और भी उत्तम लाभ होता है।

हृदय विकार :

1. अनार के 10 ग्राम ताजे पत्तों को 100 ग्राम जल में पीस छानकर प्रातः–सायं पिलाने से हृदय की धड़कन में लाभ होता है।
2. अनार का शर्बत 20–25 मिलीलीटर का नित्य सेवन करें।
3. छाया शुष्क 6 ग्राम महीन पत्र चूर्ण को, ताजे जल के साथ सेवन करने से तथा दाद, चंबल (सोरायसिस) जैसे रक्तविकार, कुष्ठ,

Scanned by CamScanner

प्रमेह, दिल की धड़कन, नासूर, क्षत, पित्तज्वर, वातकफज्वर में गर्म जल के साथ लेने से लाभ होता है।

अजीर्ण :

1. उत्तम पके हुये अनार के 10 ग्राम रस में समभाग भुना हुआ जीरा और गुड़ मिलाकर दिन में 2 या 3 बार लेने से किसी भी प्रकार का अजीर्ण शीघ्र नष्ट होता है।
2. छाया शुष्क अनार पत्र चूर्ण 4 भाग और सैन्धा नमक 1 भाग दोनों को महीन पीसकर चूर्ण बनाकर रखें। 4–4 ग्राम प्रातः–सायं भोजन से पूर्व जल के साथ सेवन करने से क्षुधानाश और अजीर्ण दूर होता है।
3. अनार का रस, शहद और तिल तेल समभाग, कुल मिश्रण 50 ग्राम इसमें 6 ग्राम जीरा चूर्ण और 6 ग्राम खांड मिलाकर मुख में भरे और थोड़ी देर मुख को चलाते रहें। जब आंख नाक से पानी निकलने लगे तो कुल्ला कर दें और फिर दुबारा नया रस मुख में भरें। दिन में 8–10 बार करें। इसके अलावा जब अत्यन्त सुधानाश हो तथा यकृत में विकार हो तब उस अवस्था में भी लाभ होता है।
4. केवल खट्टे मीठे अनार रस 1 ग्राम मुंह में धारण कर धीरे–धीरे चलाकर पीवें। इस प्रकार 8 या 10 बार करने से मुख का स्वाद सुधर कर आंत्र दोषों का पाचन होता है। ज्वर के कारण से हुई अरूचि भी दूर होती है।
5. मीठे अनार के रस में शहद मिलाकर पिलाने से अरूचि में लाभ होता है।

अतिसार :

1. अनार फल के छिल्के के 2–3 ग्राम चूर्ण का प्रातः–सांय ताजे जल के साथ प्रयोग करने से अतिसार तथा आम अतिसार में लाभ होता है।
2. अनार की ताजी कलियों के साथ छोटी इलायची के बीज और मस्तंगी को पीस, शक्कर मिला अवलेह तैयार कर, चटाने से बालकों के पुराने अतिसार और प्रवाहिका में विशेष लाभ होता है।
3. अनार फल को छिल्के सहित कूट कर रस निचोड कर 30–50 ग्राम तक पिलावें। इसमें शक्कर मिलाकर पिलाने से पित्त जन्य वमन, खुजली और थकान में लाभ होता है।
4. अनार छाल (फल या जड़ की छाल लें) चूर्ण 1 ग्राम समभाग ज़ायफल का चूर्ण और केशर 250 मिलीग्राम खरल कर शहद के साथ सेवन करें।

रक्त अतिसार :

1. अनार फल की छाल और कड़वे इन्द्र जौ 20–20 ग्राम यवकूट कर 640 ग्राम जल में मिला चतुर्थांश क्वाथ सिद्ध कर दिन में 3 बार पिलावें। यदि उदर में ऐंठन हो तो 30 मिलीग्राम अफीम मिला लें, तुरन्त लाभ होगा।
2. कुडाछाल 80 ग्राम, को कूटकर 640 ग्राम जल में पकावें। चौथाई शेष रहने पर उतार कर छान लें। अब इसमें 160 ग्राम अनार का रस मिला पुनः पकावें। जल राब के समान गाढी हो जाये तो उतार कर रख लें। 20 ग्राम तक्र के साथ सेवन करने से घोर रक्तातिसार में लाभ होता है।

कृमि :

1. अनार की जड़ की छाल 50 ग्राम, पलाश बीज 6 ग्राम, बायविडगं 10 ग्राम और जल सवा किलो, सबको कुटकर एकत्र मिलाकर मन्द अग्नि पर पकावें, आधा शेष रहने पर उतार कर ठंडा कर छान लें। 50–50 ग्राम, आधा–आधा घंटे के अंतर से पिलावें, जब बैचेनी महसूस हो तो, एरण्डी तैल का जुलाब लें।
2. यदि कद्दू दाना कृमि ही हो तो 50 ग्राम जड़ की दरदरा कूटी छाल को 2 किलो जल में पकाकर आधा शेष रहने पर उतार लें। 50 ग्राम प्रातः काल खाली पेट, आधा–आधा घंटे के अन्तर से 4 बार सेवन करें। फिर 1 बार एरंड तेल की सेवन करे। बालकों को क्वाथ 10 ग्राम दें।
3. छाया शुष्क अनार के पत्तों को बारीक पीस छानकर 6 ग्राम प्रातः काल गाय की छाछ के साथ या ताजे पानी के साथ प्रयोग करें। इससे पेट के सब कीड़े दूर हो जाते है।
4. जड़ की छाल 10 ग्राम, वायबिडंग और इन्द्र जौ 6–6 ग्राम कूटकर क्वाथ कर सेवन करें।
5. खट्टे अनार के छिलके और शहतूत 20–20 ग्राम को 200 ग्राम पानी में उबालकर पिलावें।

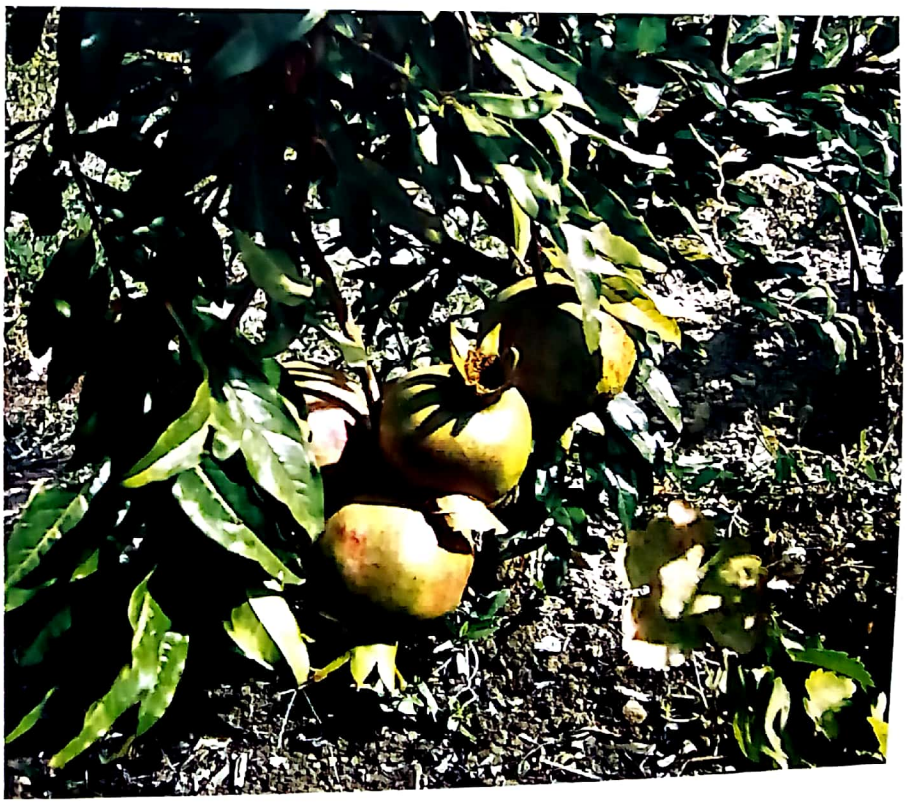

Scanned by CamScanner

पांडु (कामला) :

1. 250 ग्राम उत्तम अनार के रस में 750 ग्राम चीनी मिलाकर चाशनी बना लें। इसी का सेवन दिन में 3 या 4 बार करें।
2. छाया शुष्क अनार पत्र का महीन चूर्ण 6 ग्राम को प्रातः गौ की छाछ तथा सायं उसी छाछ के पनीर के साथ सेवन करावें।

अर्श :

1. मीठे फल का छिलका शीतल तथा खट्टे फल का छिलका शीतल रूक्ष होता है अतः अर्श के लिये विशेष उपयोगी है।
2. अनार की जड़ के 100 ग्राम क्वाथ में 5 ग्राम सौंठ चूर्ण मिलाकर दिन में दो–तीन बार पीने से रक्तार्श में लाभ होता है।
3. अनार के पत्तों का 5–10 मिलीग्राम रस प्रातः–सायं पीने से रक्तार्श में लाभ होता है।
4. अनार के 8–10 पत्रों को पीस टिकिया बना गरम घी में भूनकर बांधने से अर्श के मस्सों में लाभ होता है।

रक्त वमन : इसके पत्रों के 5–10 मिलीग्राम रस को दिन में दो बार पिलाने से, रक्त वमन, रक्त अतिसार, रक्त प्रमेह, सोमरोग, मूर्च्छा और लू लगने में लाभ होता है।

वमन : अनार के 10 मिलीलीटर गुनगुने रस 5 ग्राम में शक्कर मिला पिलाने से वमन में लाभ होता है।

हैजा :

1. अनार के 6 ग्राम हरे पत्तों को 20 ग्राम जल के साथ पीस छानकर उसमें 20 ग्राम चीनी का शरबत मिलाकर 1–1 घंटा बाद तब तक पिलावें जब तक पूर्ण लाभ न हो जायें। यह वमन को भी बन्द करता है।
2. खट्टे अनार का 10–15 मिलीलीटर रस का नियमित रूप से सेवन भी हैजे में गुणकारी है।

गुदभ्रंश और गर्भाशय भ्रंश :

1. अनार के ताजे 250 ग्राम पत्तों को 1 किलो पानी में पकाकर, आधा जल शेष रहने पर छानकर दिन में 2–3 बार इस पानी से गुदा को धोने से गुदभ्रंश रोग में लाभ होता है।
2. गर्भाशय के बाहर निकल आने पर भी यह प्रयोग गुणकारी है। छाया शुष्क अनार पत्तों का चूर्ण 6–6 ग्राम प्रातः–सायं ताजे जल के साथ सेवन कराने से स्त्रियों में लाभ होता है।

मूत्राघात :

1. अनार के रस में छोटी इलायची के बीज और सौंठ का चूर्ण मिलाकर पिलावें।
2. अनार पत्र 10 ग्राम और हरा गोखरू 10 ग्राम दोनों को 150 ग्राम जल में पीस–छान कर पिलावें।

गर्भपात :

1. अनार के ताजे 20 ग्राम पत्तों को 100 ग्राम जल में पीस–छानकर पिलाते रहने से तथा पत्तों को पीसकर पेडू पर लेप करते रहने से गर्भस्त्राव या गर्भपात का खतरा नहीं रहता है।
2. अनार की एक–दो ताजी कली पानी में पीसकर पिलाने से, गर्भ धारण शक्ति बढती है तथा प्रदर रोग दूर होता है।
3. यदि गर्भवती का हृदय कमजोर हो तो मीठे अनार दाने खायें।
4. यदि पाँचवे या छठे मास में गर्भ अस्थिर हो तो ताजे अनार पत्र को पीस उसमें थोडा सा घिसा हुआ चन्दन, दही और शहद मिलाकर पिलाने से लाभ होता है।

आंख की फूली पर : अनार वृक्ष जो अच्छी तरह पका हो, उसकी छाल को पके हुये अनार फल के रस में घिसें। फिर इसमें 1 या 2 लाल गुंजा का छिलका निकाल कर घिसें। इसे फूली पर दिन में 3 बार लगावें।

व्रण :

1. फूलों की कलियाँ, जो निकलते ही हवा के झोकों से नीचे गिर पड़ती है, इन्हें जलाकर क्षतों पर बुरकने से वे शीघ्र सूख जाते है।

2. अनार के 50 ग्राम पत्तों का 1 किलो जल के साथ चतुर्थांश क्वाथ बनाकर व्रणो को धोने से विशेष लाभ होता है।
3. 8–10 पत्तों के कल्क का लेप उपदंश के व्रणों पर करने से बहुत लाभ होता है। साथ ही साथ पत्र चूर्ण 10 से 20 ग्राम का सेवन भी करना चाहिये।
4. नाक, कान में व्रण हो या पीड़ा हो तो मूलत्वक क्वाथ 2–2 बूंद को डालने से या पिचकारी देने से लाभ होता है।
5. इसकी जड की छाल का 5–10 ग्राम सूखा चूर्ण बुरकने से उपदंश के व्रणों में लाभ होता है।

दाह :

1. अनार के 10–12 ताजे पत्तों को पीसकर हथेली और पाँव के तलुवों पर लेप करने से हाथ–पाँव

Scanned by CamScanner

की जलन में आराम होता है।

2. 250 ग्राम अनार के ताजे पत्तों को 5 किलो जल में उबालें तथा चार किलो जल शेष रहने पर नहाने के लिए प्रयोग करने से उष्णकाल की पित्ती शान्त होती है।

कंडूरोग : मीठे अनार के 8–10 ताजे पत्तों को पीसकर, थोड़ा सरसों का तेल मिलाकर मालिश करने से कंडू रोग में आराम हो जाता है।

आन्त्रिक ज्वर : इसके पत्र क्वाथ में 500 मिलीग्राम सैंधा नमक मिला सेवन करने से आंत्रिक सन्निपात टाईफाईड में लाभ होता है।

मुँह छाले (खुनाक) : 10 ग्राम अनार के पत्तों को 400 ग्राम पानी में उबालकर चतुर्थांश शेष क्वाथ से कुल्ले करने से खुनाक रोग और मुंह आने में लाभ होता है।

बच्चों का सूखा रोग : अनार की कली 20–25 ग्राम, आटे में बन्द कर पुटपाक विधि से रस निकाल लें। इस रस को थोड़े दूध के साथ नित्य पिलाने से बच्चों का सूखा रोग दूर हो जाता है।

नाखून पीड़ा : अनार फूलों के साथ धनासा और हरड़ समभाग पीसकर नख में भरने से, नाखून के भीतर की सूजन और पीड़ा में लाभ होता है।

दोष : सभी प्रकार के अनार शीत प्रकृति वालों के लिये अहितकर है।

दर्पनाशक : मीठ अनार, सौंठ का मुरब्बा, खट्टा अनार, सौंठ का मुरब्बा तथा मीठा अनार।

अनारदाना : इसका दर्पनाशक जीरा है, तथा प्रतिनिधि सुजाक है।

1. तत्फलं त्रिविधं स्वादु, स्वाद्वम्ल केवलाम्लकम्।।
तत्तुस्वादु त्रिदोषघ्नं तृड्दाहज्वरनाशनम्।
हृत्कंठमुखदोषघ्नं तर्पणं शुक्रलं लघु।।
कषायानुरसं ग्राहि स्निग्धं मेधाबलप्रदम्। (भाव प्रकाश)

2. स्वाद्वम्लं दीपनं रुच्यं किञ्चित्पित्तकरंलघु।।
अम्लं तु पित्तजनकमामवातकफापहम्। (भाव प्रकाश)

3. अम्लं कषायमधुरं वातघ्नं ग्राहि दीपनम्।
स्निग्धोष्णं दाडिमं हृद्यं कफपित्ताविरोधि च।।
रूक्षाम्लं दाडिमं यत्तु तत् पित्तानिलकोपनम्।
मधुरं पित्तनुत्तेषां तद्धिदाडिममुत्तमम्।। (च० सू० 27)

4. कषायानुरसं तेषां दाडिमं नातिपित्तलम्।
दीपनीयं रूचिकरं हृद्यं वर्चोविबन्धनम्।।
द्विविधं तत्तु विज्ञेयं मधुरं चाम्लमेव च।
त्रिदोषघ्नं तु मधुरमम्लं वातकफापहम्।। (सु० सूत्र० 46)

Scanned by CamScanner

17 अनन्तमूल

वैज्ञानिक नाम	:	*Hemidesmus indicus* (L.) R. Br.
कुलनाम	:	Asclepiadaceae
अंग्रेजी नाम	:	Hemidesmus, Indian sarsaparilla
संस्कृत	:	अनन्ता, सारिवा, गोपी, गोप कन्या
हिन्दी	:	अनन्तमूल
गुजराती	:	उपलसरी, कारडियो, कुंडेर
मराठी	:	उपरसाल, उपलसरी
बंगाली	:	अनन्तमूल, सरिवा
पंजाबी	:	अनन्तमूल

परिचय

अनन्तमूल वृक्षाश्रित फैलने वाली लता है। यह पंजाब तथा उत्तरी भारत के जंगली क्षेत्रों में लाल मिट्टी युक्त कीचड़ वाली पहाड़ी भूमि में बहुलता से पाई जाती है। वर्षा के प्रथम वारिपात में इसके मूल से नये प्रतान निकलते हैं। सारिवा दो प्रकार की होती है। एक श्वेत (जिसका वर्णन ऊपर किया गया है) दूसरी कृष्णा सारिवा। कृष्णा सारिवा में दो अन्य प्रकार की औषधियों का सग्रंह किया जाता है।

1. *Cryptolepis buchananii :* यह अर्क कुल की वनस्पति है। जम्बू पत्र सारिवा इसकी पत्तियां जामुन की पत्तियों जैसी होती हैं और तोड़ने पर दूध निकलता है।
2. *Ichnocorpus frutescens :* यह कुटज कुल की वनस्पति है। इसकी पत्तियां छोटी, अंडाकार लंब गोल होती है। इसकी मूल में सुगंध नही होती।

बाह्य–स्वरूप

इसकी शाखाएं गोल चिकनी अथवा मृदुरोमावृत्त अथवा अनुलम्ब दिशा में सूक्ष्म धारियों से युक्त होती हैं। पत्तियां अभिमुख क्रम में स्थित, भिन्न–भिन्न आकार की गाढ़े हरे रंग की तथा बीज आदि से अंत तक श्वेत वर्ण की पतली धारी से सुशोभित होते हैं। इसकी शाखा सफेद तथा सुगंधित होती है।

रासायनिक संघटन

अनन्तमूल की ताजी जड़ में अल्प मात्रा में एक उड़नशील तेल तथा हेमीडेस्टेरोल एवं हेमिडेस्मोल नामक दो स्टेरोल तथा रेनिन, टैनिन्स, शर्करा, सैपोनिन तथा अल्प मात्रा में ग्लाईकोसाइड आदि तत्व पाये जाते हैं।

गुण–धर्म

सारिवा, मधुर, चिकनी, वीर्यकर्त्ता, भारी और अग्नि मंदता, अरूचि, श्वास, खांसी, आम विष, त्रिदोष, रक्त विकार, प्रदर, ज्वर तथा अतिसार को नष्ट करने वाली है।[1]

औषधीय प्रयोग

नेत्ररोग :

1. इसकी जड़ को बासी पानी में घिसकर नेत्रों में अंजन करने से या इसके पत्तों की राख कपड़े में छानकर शहद के साथ नेत्रों में आंजने से आंख की फूली कट जाती है।
2. इसके ताजे मुलायम पत्तों को तोड़ने से जो दूध निकलता है उसमें शहद मिलाकर आंखों में लगाने से नेत्र रोगों में लाभ

Scanned by CamScanner

होता है और फूली कट जाती है।

3. अनन्तमूल से बने क्वाथ को आंखों में डालने से या क्वाथ में मधु मिलाकर लगाने से नेत्र रोगों में लाभ होता है।

केशवृद्धिः सारिवा मूल का चूर्ण 2–2 ग्राम की मात्रा में दिन में तीन बार जल के साथ सेवन करने से सिर का गंजापन दूर होता है।

दंत रोग : इसके पत्तों को पीसकर दांतों के नीचे दबाने से दांत के रोग दूर होते हैं।

स्तनशोधक : सारिवा मूल का चूर्ण 3 ग्राम सुबह शाम सेवन करने से स्तन्य शोध होता है। यह दुग्ध को बढ़ा देता है। जिन महिलाओं के बच्चे बीमार और कमजोर हो, उन्हें सारिवा मूल का सेवन करना चाहिए।

दमा : दमें में सारिवा की 4 ग्राम मूल और 4 ग्राम अडूसा पत्र चूर्ण का दूध के साथ दोनों समय सेवन करने से सभी श्वास व वातजन्य रोगों में लाभ होता है।

उदरपीड़ा : इस के मूल को 2–3 ग्राम की मात्रा में लेकर पानी में घोंटकर पीने से उदरशूल नष्ट होता है।

कामला : इसकी जड़ की छाल 2 ग्राम और काली मिर्च 11 नग दोनों को 25 ग्राम जल के साथ पीसकर सात दिन पिलाने से आँखों एवं शरीर दोनों का पीलापन दूर हो जाता है तथा कामला रोग से पैदा होने वाली अरूचि और ज्वर भी नष्ट हो जाता है।

मंदाग्नि : सारिवा मूल का चूर्ण 3 ग्राम की मात्रा में प्रातः एवं सायं दूध के साथ सेवन करने से पाचन क्रिया बढ़ती है। जठराग्नि प्रदीप्त होती है तथा रक्त पित्त दोष का नाश होता है।

गर्भपात : सारिवा मूल का फांट तैयार कर उसमें दूध और मिश्री मिलाकर सेवन कराने से गर्भवती स्त्री को गर्भपात का भय नही रहता। गर्भ धारण से पहले ही यह फांट पिलाना आरम्भ कर दें। गर्भ धारण हो जाने के बाद से प्रसवकाल तक देने से बच्चा नीरोग और गौरवर्ण का उत्पन्न होता है।

मूत्रविकार : इसकी छोटी जड़ को केले के पत्तें में लपेटकर आग की भूमल में रख दें। जब पत्ता जल जाये तो जड़ को निकाल कर भुने हुए जीरे और शक्कर के साथ पीसकर, गाय का घी मिलाकर सुबह–शाम लेने से मूत्र और वीर्य संबंधी विकार दूर होते हैं। मूत्रेन्द्रिय पर इसकी जड़ का लेप करने से मूत्रेन्द्रिय की जलन और दाह मिटती है।

अश्मरी : अश्मरी एवं मूत्रकृच्छ में सारिवा मूल का 5 ग्राम चूर्ण गाय के दूध के साथ दिन में दो बार सेवन करने से लाभ होता है।

सन्धिवात : सारिवा मूल के चूर्ण को 3 ग्राम की मात्रा में शहद के साथ दिन में 3 बार देने से सन्धिवात में लाभ होता है।

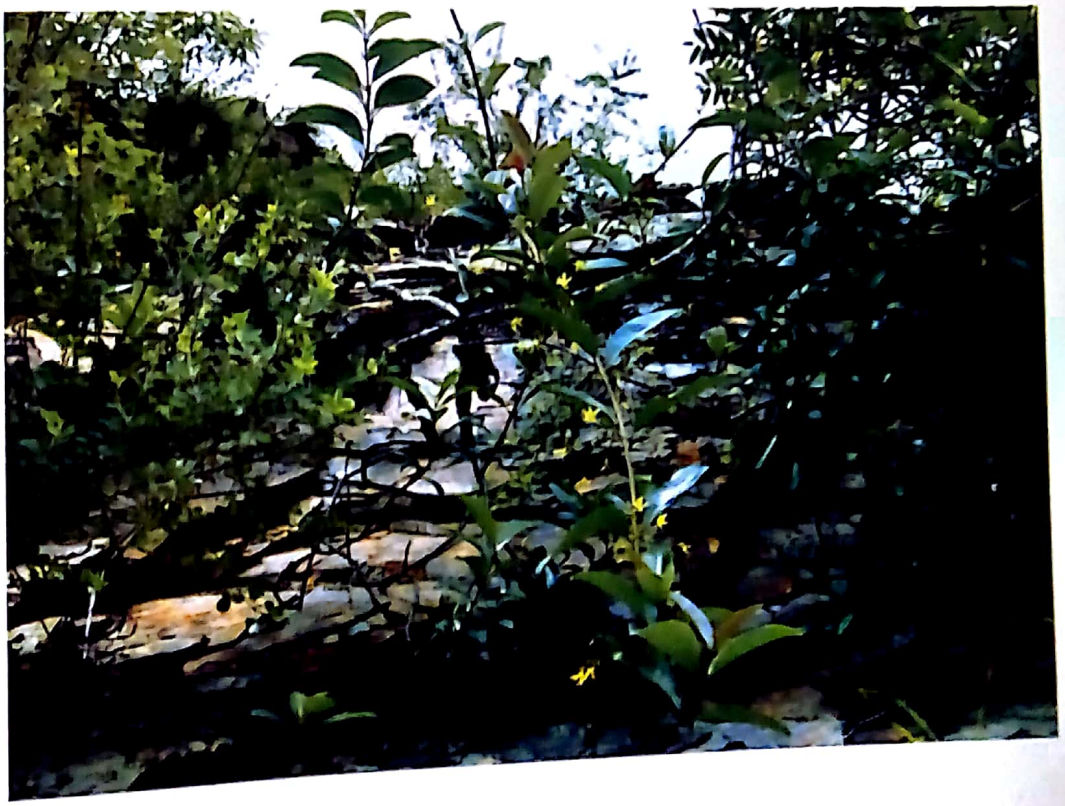

Scanned by CamScanner

रक्तविकार :

1. सारिवा 30 ग्राम, जौकुट कर एक किलो जल में पकावें। अष्टमांश शेष रहने पर छानकर उचित मात्रा में मिश्री मिला कर सेवन करने से खुजली, उकवत, कुष्ठ आदि रक्त विकार दूर होते हैं।
2. अनन्त मूल 500 ग्राम जौकुट कर 500 ग्राम खौलते हुए जल में भिगो दें और 2 घण्टे बाद मल छान लेवें। 50 ग्राम की मात्रा में दिन में 4–5 बार पिलाने से रक्त विकार और त्वचा के विकार शीघ्र दूर होते हैं।
3. पीपल की छाल और अनन्त मूल इन दोनों को चाय के समान फांट बनाकर सेवन करने से पामा कंडु फोड़े–फुन्सी तथा उष्णता के विकारों में लाभ होता है।
4. सफेद जीरा एक चम्मच, सरिवा मूल चूर्ण एक चम्मच दोनों का क्वाथ बनाकर पिलाने से रूधिर शुद्ध हो जाता हैं और पित्त की तेजी मिटती है।
5. फोड़े–फुन्सी–गंडमाला और उपदंश संबंधी रोग मिटाने के लिए इसकी जड़ों का 75 से 100 ग्राम तक क्वाथ दिन में 3 बार पिलाना चाहिए।
6. अनन्तमूल की जड़ का चूर्ण एक ग्राम, बायविडंग चूर्ण एक ग्राम दोनों को पीसकर देने से मरणासन्न बच्चे भी नवजीवन पा जाते हैं।

दाह : अनन्तमूल चूर्ण को घी में भूनकर 500 मिलीग्राम से 1 ग्राम तक चूर्ण, 5 ग्राम शक्कर के साथ कुछ दिन तक सेवन करने से चेचक, टायफायड आदि के बाद की शरीरस्थ गर्मी दूर हो जाती है।

ज्वर : सारिवा मूल, खस सौंठ, कुटकी व नागरमोथा सबको बराबर लेकर अष्टमांश क्वाथ सिद्ध कर पिलाने से सब प्रकार के ज्वर दूर होते हैं।

विषम ज्वर : इसकी जड़ की छाल का 2 ग्राम चूर्ण सिर्फ चूना और कत्था लगे पान के बीड़े में रखकर खाने से लाभ होता है।

1. सारिवायुगलं स्वादु स्निग्धं शुक्रकरं गुरु।
अग्निमान्द्यारूचिश्वासकासामविषनाशनम्।।
दोषत्रयास्र–प्रदरज्वरातिसारनाशनम्। (भाव प्रकाश)

Scanned by CamScanner

अंगूर

18

वैज्ञानिक नाम	:	*Vitis vinifera* L.
कुलनाम	:	Vitaceae
अंग्रेजी नाम	:	Grapesvine, Raisins
संस्कृत	:	द्राक्षा, गोस्तनी, कषिशा, हारहूरा
हिन्दी	:	मुनक्का, अंगूर, दाख
गुजराती	:	दशख, धराख
मराठी	:	द्राक्ष
बंगाली	:	कट्की
पंजाबी	:	दाख अंगूर
अरबी	:	इनब, जबीब अंनब
फारसी	:	अंगूर रजताफ, मवेका
तैलगु	:	द्राक्षा

परिचय

अंगूर एक बहुवर्षायु सुदीर्घलता के प्रसिद्ध फल हैं। फलों में यह सर्वोत्तम एवं निर्दोष फल है, क्योकि यह सभी प्रकार की प्रकृति के मनुष्य के लिये अनुकूल है। निरोगी के लिये यह उत्तम पौष्टिक खाद्य है तो रोगी के लिये बलवर्धक पथ्य। जब कोई खाद्य पदार्थ पथ्य रूप में न दिया जा सके तब 'द्राक्षा' (मुनक्का) का सेवन किया जा सकता है। रंग और आकार तथा स्वाद भिन्नता से अंगूर की कई किस्में होती है। काले अंगूर, बैगंनी रंग के अंगूर, लम्बे अंगूर, छोटे अंगूर, बीज रहित, जिनकी सुखाकर किशमिश बनाई जाती है। काले अंगूरों को सूखाकर मुनक्का बनाई जाती है।

बाह्य–स्वरूप

अंगूर की बेलें लकड़ियों के मकानों पर चलती हैं, इसके पत्ते गोलाकर, पंचखण्डीय, हाथ की आकृति के और फल गुच्छों में लगते है।

रासायनिक संघटन

ताजे फलों में ग्लूकोज निर्यास, टैनिन, टारटैरिक एसिड, सीट्रिक एसिड, तथा द्राक्षाम्ल या मैलिक एसिड एवं विविध क्षारद्रव्य, सोडियम तथा पोटेशियम क्लोराइड, पोटेशियम सल्फेट एवं लौहा आदि तत्व होते है। मुनक्का या सूखे फलों में शर्करा एवं निर्यास के अतिरिक्त कैल्शियम, मैग्नीशियम, पौटेशियम, लौह एवं फास्फोरस आदि तत्व पाये जाते है। फल के छिलके में टैनिन पाया जाता है।

गुण–धर्म

पके फल : दस्तावर, शीतल, नेत्रों को हितकारी, पुष्टि कारक, पाक या रस में मधुर, स्वर को उत्तम करने वाला, कसैला, मल तथा मूत्र को निकालने वाला, वीर्यवर्धक, पौष्टिक, कफ कारक, रूचिकारक है। यह प्यास, ज्वर, श्वास, कास, वात, वातरक्त, कामला, मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, मोह, दाह, शोष तथा मेह को नष्ट करने वाला है।[1,2]

कच्चा अंगूर : गुणों में हीन, भारी और कफ पित्तहारी और रक्त पित्त हरने वाला है।[3]

काली दाख या गोल मुनक्का : (1 या डेढ़ इंच लम्बे गोस्तन की तरह) वीर्य वर्धक, भारी और कफ पित्त नाशक है।[4]

किशमिश : बिना बीज की छोटी किशमिश मधुर, शीतल, वीर्यवर्धक, रूचिप्रद, खट्टी तथा श्वास, कास, ज्वर, हृदय की पीड़ा, रक्त पित्त, क्षत क्षय, स्वर भेद, प्यास, वात, पित्त और मुख के कड़वेपन को दूर करती है।[5]

ताजेफल : रूधिर को पतला करने वाले छाती के रोगों मे लाभ पहुँचाने वाले बहुत जल्दी पचने वाले रक्त शोधक तथा खून बढ़ाने वाले होते हैं।

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

मूर्च्छा :

1. दाख और आँवलों को समान भाग लेकर, उबालकर, पीसकर थोड़ा शुंठी चूर्ण मिलाकर, शहद के साथ चटाने से ज्वर युक्त मूर्च्छा मिटती है।
2. 25 ग्राम मुनक्का, मिश्री, अनार की छाल और खस 12–12 ग्राम, जौ कूट कर 500 ग्राम पानी में रात भर भिगो देवे प्रातः मल छानकर, 3 खुराक बनाकर दिन में 3 बार पिला देवें।
3. 100–200 ग्राम मुनक्का को घी में भूनकर थोड़ा सैंधा नमक मिला, नित्य 5–10 ग्राम तक खाने से चक्कर आना बन्द हो जाता है।

शिर शूल : 8–10 नग मुनक्को, 10 ग्राम मिश्री तथा 10ग्राम मुलेठी तीनों को पीसकर नस्य देने से पित्त एवं विकृति जन्य सिर का दर्द दूर होता है।

मुखरोग : मुनक्का 10 दाने, जामुन के पत्ते 3–4 ग्राम मिलाकर क्वाथ बनाकर कुल्ला करने से मुख के रोग मिटते है।

नकसीर : दाख के 2–2 बूंद रस का नस्य देने से नकसीर बन्द हो जाती है।

मुख दुर्गन्ध : कफ विकृति या अजीर्ण के कारण मुख से दुर्गन्ध आती हो तो 5–10 ग्राम मुनक्का नियमपूर्वक खाने से दूर हो जाती है।

उरःक्षत : मुनक्का और धान की खीले 10–10 ग्राम को 100 ग्राम जल में भिगों देवे। 2 घंटा बाद मसल छानकर उसमें मिश्री, शहद और घी 6–6 ग्राम मिलाकर उंगली से बार–बार चटावें। उरःक्षत में परम लाभ होता है। तथा वमन की यह दिव्य औषधि है।

श्वास कास : 8–10 नग मुनक्का और हरीतकी के क्वाथ 40–60 ग्राम में मिश्री 25–30 ग्राम और शहद 2 चम्मच मिलाकर पिलावें।

शुष्क–कास : द्राक्षा, आँवला, खजूर, पिप्पली तथा काली मिर्च इन सबको समभाग लेकर पीस लें। इस चटनी के सेवन से सूखी खांसी तथा कुकुर खांसी में लाभ होता है।

क्षय : घी, खजूर, मुनक्का, मिश्री, मधु तथा पिप्पली इन सबका अवलेह बनाकर सेवन करने से स्वर भेद, कास, श्वास, जीर्ण ज्वर तथा क्षयरोग का नाश होता है।

पित्तज कास : मुनक्का 10 नग, पिप्पली 30 नग तथा मिश्री 45 ग्राम तीनों का मिश्रण बनाकर प्रतिदिन मधु मिलाकर चटाने से लाभ होता है।

दूषित कफ विकार : 8–10 नग मुनक्का, 25 ग्राम मिश्री तथा 2 ग्राम कत्थे को पीसकर मुख में धारण करने से दूषित कफ विकारों में लाभ होता है।

गलग्रन्थि :

1. दाख के 10 मिलीलीटर रस में हरड़ का 1 ग्राम चूर्ण मिलाकर सुबह–शाम नियमपूर्वक पीने से गलग्रन्थि मिटती है।
2. गले के रोगों में इसके रस से गंडूष कराना बहुत अच्छा है।

हृदय की पीड़ा : यदि हृदय में शूल हो तो मुनक्का कल्क 3 भाग, शहद 1 भाग तथा लौंग 1/2 भाग, मिलाकर कुछ दिन सेवन करें।

मुदुरेचन के लिये :

1. 10–20 नग मुनक्कों को साफ कर बीज निकालकर, 200 ग्राम दूध में भली भांति उबालकर (जब मुनक्के फूल जायें) दूध और मुनक्के दोनों का सेवन करने से प्रातः काल दस्त साफ आता है।
2. मुनक्का 10–20 नग, अंजीर 5 नग तथा सौंफ, सनाय, अमलतास का गूदा 3–3 ग्राम, तथा गुलाब के फूल 3 ग्राम, इन सबका क्वाथ कर तथा प्रातः काल 10 ग्राम गुलकन्द मिलाकर पीने से दस्त साफ होता है।
3. रात्रि में सोने से पहले 10–20 नग मुनक्कों को थोड़े घी में भूनकर सैंधा नमक चुटकी भर मिलाकर खायें।
4. सोने से पहले आवश्यकतानुसार 10 से 30 ग्राम तक किसमिस खाकर गर्म दूध पीये।
5. मुनक्का 7 नग, काली मिर्च 5 नग, भुना जीरा 10 ग्राम, सैंधा नमक 6 ग्राम, टाटरी 500 मिलीग्राम, की चटनी बनाकर चाटने से कब्जियत तथा अरूचि दूर होती है।

पित्तज शूल : अंगूर और अडूसे का क्वाथ 40–60 मिलीग्राम सिद्ध कर पिलाने से पित्त कफ जन्य उदरशूल दूर होता है।

अम्ल पित्त :

1. दाख, हरड़ बराबर–बराबर लें। इसमें दोनों के बराबर शक्कर मिलाये, सबको एकत्र पीसकर, 1–1 ग्राम की गोलियां बना लें। एक–एक गोली प्रातः–सायं शीतल जल के साथ सेवन करने से अम्लपित्त, हृदय–कंठ की जलन, प्यास तथा मंदाग्नि का नाश होता है।
2. मुनक्का 10 ग्राम और सौंफ आधी मात्रा में दोनों को 100 मि.ली. जल में भिगो देवें। प्रातः मसल छानकर पीने से अम्ल पित्त में लाभ होता है।

पांडू (कामला) : मुनक्का का कल्क बीजरहित (पत्थर पर पिसा हुआ) 500 ग्राम, पुराना घी 2 कि.ग्रा. और जल 8 कि.ग्रा., सबको एकत्र मिला पकावे, जब केवल घी मात्र शेष रह जाये तो छानकर रख लें, 3 से 10 ग्राम तक प्रातः सायं सेवन करने से पांडु (कामला) आदि में विशेष लाभ होता है।

रक्तार्श : अंगूरों के गुच्छों को हांडी में बन्द कर भस्म बना लें। काले रंग की भस्म प्राप्त होगी। इसको 3–6 ग्राम की मात्रा में बराबर मिश्री मिला, 250 ग्राम गाय स्त्राव शीघ्र बन्द हो जाता है। 7–8 दिन में पूर्ण लाभ हो जाता है।

पथरी :

1. काली दाख की लकडी की राख 10 ग्राम को पानी में घोलकर दिन में दो बार पीने से मूत्राशय में पथरी का पैदा होना बन्द हो जाता है।

Scanned by CamScanner

2. इसकी 6 ग्राम भस्म को गोखरू के क्वाथ 40–50 ग्राम या 10–20 ग्राम रस के साथ पिलाने से पथरी नष्ट होती है।

3. द्राक्षा पंचाग का क्षार 250–500 मिलीग्राम तक की मात्रा में देने से पथरी नष्ट होती है।

4. 8–10 नग मुनक्कों को काली मिर्च के साथ घोटकर पिलाने से पथरी में लाभ होता है।

मूत्रकृच्छ्र :

1. मूत्रकृच्छ्र में 8–10 मुनक्कों एवं 10–20 ग्राम मिश्री को पीसकर, दही के पानी में मिलाकर पीने से लाभ होता है।

2. मुनक्का 12 ग्राम, पाषाण भेद, पुनर्नवा मूल तथा अमलतास का गूदा 6–6 ग्राम जौकुट कर, आधा किलो जल में अष्टमांश क्वाथ सिद्ध कर पिलाने से मूत्रकृच्छ्र एवं तद्जन्य उदावर्त रोग भी दूर होता है।

3. 8–10 नग मुनक्कों को बासी जल में पीसकर चटनी की तरह जल के साथ लेने से मूत्रकृच्छ्र में लाभ होता है।

अण्डकोषवृद्धि : अंगूर के 5–6 पत्तों पर घी चुपड़कर तथा आग पर खूब गर्म कर बांधने से फोडों की सूजन बिखर जाती है।

बल एवं पुष्टि के लिये :

1. मुनक्का 12 नग, छुहारा 5 नग तथा मखाना 7 नग, इन सभी को 250 ग्राम दूध में डालकर खीर बनाकर सेवन करने से रक्त, मांस की वृद्धि होकर शरीर पुष्ट होता है।

2. मुनक्का 9 नग, किसमिस 5 नग, ब्राह्मी 3 ग्राम, छोटी इलायची 8 नग, खरबूजे की गिरी 3 ग्राम, बादाम 10 नग, तथा बबूल की पत्ती 3 ग्राम, घोटकर पीने से गर्मी शांत होकर शरीर पुष्ट तथा बलवान बनता है।

3. प्रातः मुनक्का 20 ग्राम खाकर ऊपर से 250 ग्राम या 125 ग्राम दूध पीने से ज्वर के बाद की अशक्ति तथा ज्वर दूर होकर शरीर पुष्ट होता है।

4. 20 से 60 ग्राम किसमिस रात्रि को एक कप जल में भिगो दें, प्रातः काल मसल कर छानकर जल को पीने से कमजोरी, तथा अम्ल पित्त दूर होता है।

5. रात्रि को सोने से पूर्व मुनक्का खाये (बीज निकालकर) फिर ऊपर से जल पी लें, कुछ दिनों में दुर्बलता दूर होकर शरीर पुष्ट होता है (ज्यादा लेने पर दस्त हो जाते हैं, अपनी शारीरिक क्षमतानुसार मात्रा का निर्धारण कर लें)।

दाह, प्यास :

1. 10–20 नग मुनक्का शाम को जल में भिगोकर प्रातः मसलकर छान लेवें तथा उसमें थोड़ा श्वेत जीरे का चूर्ण और मिश्री या चीनी मिलाकर पिलाने से पित्तजन्य दाह शान्त होती है।

2. 10 ग्राम किसमिस आधा किलो गाय के दूध में पकाकर ठंडा हो जाने पर रात्रि के समय नित्य सेवन करने से दाह शांत होती है।

3. मुनक्का और मिश्री 10–10 ग्राम नित्य प्रातः चबाकर और पीसकर सेवन करें।

4. चेचक के बाद किसमिस 8 भाग, गिलोय सत्व और जीरा 1–1 भाग तथा चीनी 1 भाग इन सभी के मिश्रण को चिकने तप्तपात्र में भरकर उसमें इतना गाय का घी मिलावें, कि मिश्रण अच्छी तरह भीग जायें। इसमें से नित्य प्रति 6 से 20 ग्राम तक की मात्रा में नित्य सेवन करने से एक दो सप्ताह में चेचक आदि विस्फोटक रोग होने के बाद जो दाह शरीर में हो जाती है, वह शान्त हो जाती है।

सन्निपात ज्वर : जिह्वा सूख जाये और फट जाये तो उस पर 2–3 नग दाख को 1 चम्मच मधु के साथ पीसकर उसमे थोड़ा घी मिलाकर लेप करने से लाभ होता है।

पित्त ज्वर :

1. दाख और अमलतास के गूदे का 40–60 मि.ली. क्वाथ सुबह–शाम पिलावें।

2. अंगूर के शरबत के नित्य सेवन से भी दाह ज्वर आदि शान्त होता है।

Scanned by CamScanner

3. यदि प्यास अधिक हो तो दाख और मुलेठी का 40–60 मि॰ग्रा॰ क्वाथ दिन में दो–तीन बार पिलावें।
4. मुनक्का, काली मिर्च और सेंधा नमक तीनों को पीसकर गोलियां बनाकर मुख में रखें।
5. समभाग आंवला तथा मुनक्का को अच्छी तरह महीन पीसकर थोड़ा घी मिलाकर मुख में धारण करें।

रक्त पित्त :

1. किसमिस 10 ग्राम, दूध 160 ग्राम, जल 640 मिलीलीटर तीनों को मंद अग्नि पर पकावें। 160 मिलीलीटर शेष रहने पर थोड़ी मिश्री मिलाकर पिलावें।
2. मुनक्का, मुलेठी, गिलोय 10–10 ग्राम लेकर जौकुट कर 500 ग्राम जल में अष्टमांश क्वाथ सिद्ध कर सेवन करें।
3. मुनक्का 10 ग्राम, गूलर की जड़ 10 ग्राम, धमासा 10 ग्राम लेकर, जौ कूट कर अष्टमांश क्वाथ सिद्ध कर सेवन करे। इस प्रयोग से रक्तपित्त, दाह, मुखशोष, तृषा तथा कफ के साथ खांसने पर रक्त निकलना आदि विकार शीघ्र दूर हो जाते है।
4. अंगूर के 50–100 मिलीलीटर रस में 10 ग्राम घी और 20 ग्राम खांड मिलाकर पीने से रक्तपित्त दूर होता है।
5. मुनक्का और पके गूलर का फल बराबर–बराबर लेकर पीसकर शहद के साथ सुबह–शाम चटावें।
6. मुनक्का 1 भाग, हरड़ 1 भाग पानी के साथ पीसकर 6 ग्राम तक बकरी के दूध के साथ पिलावें।

चर्मरोग : बसन्त ऋतु में इसकी काटी हुई टहनियों में से एक प्रकार का मद निकलता है जो चर्म रोगों में बहुत लाभकारी है।

धतूरे का विष : अंगूर का 10 ग्राम सिरका 100 ग्राम दूध में मिलाकर कई बार पिलावे।

हरताल के विष पर : रोगी को वमन कराकर किसमिस 10–20 ग्राम 250 ग्राम दूध में पकाकर पिलावें।

1. द्राक्षा स्वादु फला प्रोक्ता तथा मधुर रसाअपि च।
   मृद्रीका हारहूरा च गोस्तनी चापि कीर्तिता।।
2. द्वाक्षा पक्वासरा शीता चक्षुष्या बृंहणी गुरूः।
   स्वादु पाकरसा स्वर्या तुवरा सृष्टमूत्रविट्।।
   कोष्ठ मारुत हृद् वृष्या कफपुष्टि रूचि प्रदा।।
   हन्ति तृष्णाज्वरश्वासवातवातास्त्रकामलाः।
   कृच्छ्रामूत्र रक्त पित्त संमोहदाह शोष मदात्ययान्।
   (भाव प्रकाश)
3. आमा स्वल्प गुणा गुर्वी सैवाम्ला रक्त पित्तकृत। (भाव प्रकाश)
4. वृष्या स्याद् गोस्तनी द्राक्षा गुर्वी च कफ पित्त–नुत्।
5. किसमिसः अबीजा–ऽन्या स्वल्प तश गौस्तनी सदृशी गुणैः।

Scanned by CamScanner

अंकोल

अंकोल

19

वैज्ञानिक नाम	:	*Alangium salvifolium* (L.f.) Wang
कुलनाम	:	Alangiaceae
अंग्रेजी नाम	:	Tlebid Alu Retis
संस्कृत	:	अंकोल, अंकोट, दीर्घ कील
हिन्दी	:	अंकोल, ढेरा
गुजराती	:	अंकोल
मराठी	:	अंकोल
बंगाली	:	आंकोड़, बाघ आँकड़ा
तैलगु	:	अंकोलमु
तमिल	:	अएलाङ्गिं

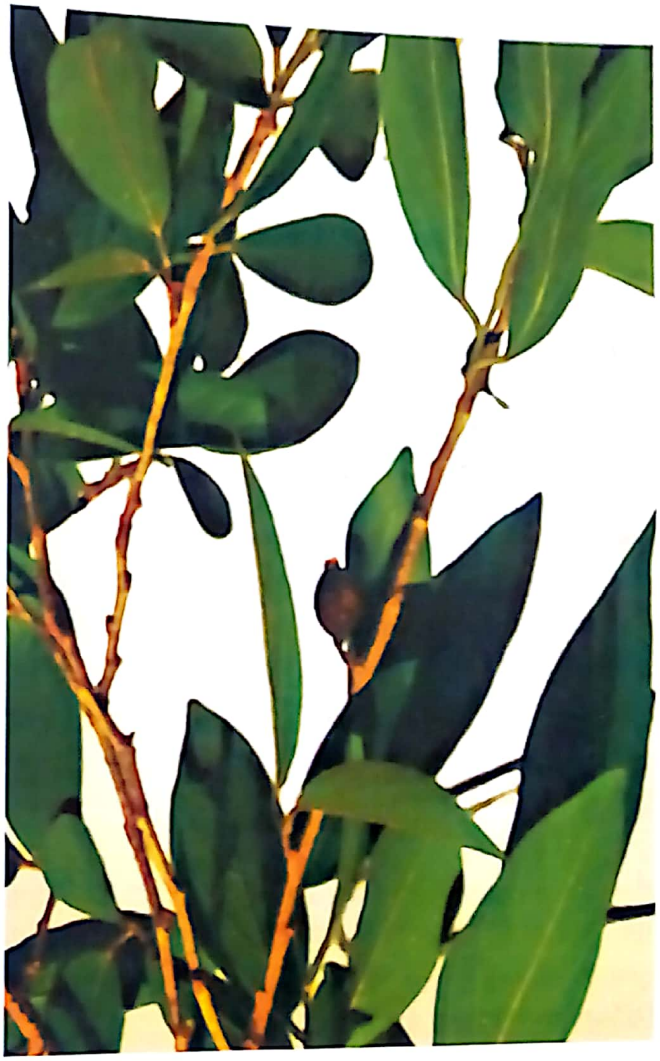

परिचय

अंकोल के छोटे तथा बड़े दोनों प्रकार के वृक्ष पाये जाते हैं जो प्रायः वनों में शुष्क एवं उच्च भूमि में उत्पन्न होते हैं। यह हिमालय की तराई, उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल, राजस्थान, दक्षिण भारत एवं बर्मा में पाया जाता है।

बाह्य–स्वरूप

इसके वृक्ष 10 से 20 फुट तक ऊंचे, कांड मोटा एवं गोल, कांड़त्वक धूसर रंग की पत्तियां 3–6 इंच लम्बी, एकान्तर, विभिन्न आकार की होती हैं। ग्रीष्म के आरम्भ में ही निष्पत्र वृक्ष पर पुष्पागमन होता है। पुष्प श्वेत, पीताभ श्वेत पौने इंच लम्बे, एकल अथा गुच्छों में, पुष्पव्यूह एवं कैलिक्स मृदु मखमली रोमावृत तथा पुष्प सुगंधित होते हैं। फल गोलाकार या अंडाकार, एककोशीय बीज–स्थूल आवरण तथा पिच्छिल होते हैं।

रासायनिक संघटन

इसके छाल में ऐलेन्बीन नामक तिक्त ऐल्केलॉइड पाया जाता है। इसके तेल में चर्बी का अंश तथा ऐल्केलॉयड पाये जाते हैं।

गुण–धर्म

रेचक, कृमिघ्न, शूल, आम, सूजन, ग्रह, विसर्प, कफ, पित्त, रूधिर विकार तथा सांप, मूषक के विष को नाश करने वाला है।[1]

फल : शीतल, स्वादिष्ट, भारी, बृहंण, रेचक, बल्य, वातपित्त तथा दाह को हरने वाला तथा क्षय नाशक है।[2]

बीज : अंकोल के बीज शीतल, स्वादिष्ट, भारी, पाक में मधुर, बल्य, सारक, स्निग्ध, वृष्य तथा दाह, पित्त, वात क्षय और रक्त विकारों को दूर करने वाले हैं।

औषधीय प्रयोग

जलोदर : इसकी जड़ के चूर्ण को 1.5 से 3 ग्राम तक की मात्रा दोनों समय देने से यकृत की क्रिया में सुधार होकर जलोदर में लाभ होता है।

दमा :

1. अंकोल की जड़ को नींबू के रस में गाढ़ा–गाढ़ा घिसकर आधा चम्मच सुबह–शाम भोजन से दो घण्टे पूर्व लेने से दमे

Scanned by CamScanner

में चमत्कारिक लाभ होता है।

2. अंकोल की छाल, राई, लहसुन 6–6 ग्राम खूब महीन कर उसमें 15 ग्राम तीन वर्ष पुराना गुड़ मिलाकर गोली बनाकर दमें के रोगी को खिलाने से वमन द्वारा कफ बाहर निकल जाता है।

मूत्रकृच्छ्र : इसकी 5 ग्राम जड़ का क्वाथ बनाकर पीने से मूत्र खुलकर होने लगता है तथा रोगी को आराम हो जाता है।

अतिसार :

1. इसके 10 ग्राम फल के गूदे को 2 चम्मच मधु में मिलाकर चावलों के पानी के साथ सुबह, दोपहर तथा शाम खाने से अतिसार रोग नष्ट होता है।
2. इसकी जड़ की छाल के 500 मिलीग्राम से 1 ग्राम चूर्ण को चावल के पानी के साथ महीन पीसकर सुबह–शाम सेवन करने से सब प्रकार के अतिसार और संग्रहणी में लाभ होता है।

आमातिसार :

1. आम अतिसार में इसका 3 ग्राम पत्रस्वरस दूध के साथ पिलाने से पहले दस्त होकर पेट साफ होने के बाद फिर अतिसार में लाभ होता है।
2. 500 मिलीग्राम कूड़ा छाल चूर्ण और 500 मिलीग्राम अंकोल की जड़ की छाल का चूर्ण दोनों शहद में मिलाकर चावलों के पानी के साथ सेवन करने से अतिसार व संग्रहणी में लाभ होता है।

आंत्रकृमि : इसके जड़ की छाल, 5 ग्राम, के चूर्ण की फंकी दोनों समय लेने से पेट के कीड़े मर जाते हैं।

वमन : श्वेत पुष्पी अंकोल के मूल चूर्ण की 3 ग्राम फंकी लेने से निर्विघ्न वमन हो जाती है।

अंकोल की छाल

कफ : इसकी जड़ के चूर्ण की 375 मिलीग्राम तक की फंकी लेने से कोष्ठबद्धता में लाभ होता है।

बवासीर : इसकी जड़ की छाल का 1 ग्राम चूर्ण काली मिर्च के साथ फंकी देने से बवासीर में लाभ होता है।

सूजाक : तिल का क्षार 4 ग्राम और अंकोल के फलों का गूदा 5 ग्राम दोनों को 2 चम्मच शहद में मिलाकर सुबह–शाम खाने से सूजाक रोग में लाभ होता है।

मूत्राघात : अंकोल के फल का गूदा 5 ग्राम और तिलों का क्षार 4 ग्राम को 2 चम्मच मधु में मिला कर दही के पानी के साथ दोनों समय देने से मूत्राघात मिटता है।

गठिया : इसके पत्तों की पुल्टिस बांधने से गठिया की पीड़ा मिटती है।

कुष्ठ रोग : अंकोल जड़ की छाल, जायफल, जावित्री और लौंग प्रत्येक 625–625 मिलीग्राम की मात्रा में बारीक पीसकर सुबह–शाम फंकी देने से कोढ़ का बढ़ना बंद हो जाता है।

ज्वर :

1. इसकी जड़ के चूर्ण की 2 से 5 ग्राम तक की मात्रा दोनों समय देने से पसीना आकर मौसमी ज्वर उतर जाता है।
2. अंकोल की जड़ 10 ग्राम, कूठ और पीपल 3–3 ग्राम तथा बहेड़ा 6 ग्राम इसको एक किलोग्राम जल में उबाल लें। जब आठवां हिस्सा शेष रह जाये तो ठंडाकर छान लें तथा मिश्री मिलाकर दोनों समय पीने से इन्फ्लूएंजा या संक्रामक प्रतिश्याय पर परम लाभ होता है।

डेंगू ज्वर :

1. इसकी जड़ के चूर्ण 3 ग्राम को मीठी बच या शुंठी चूर्ण 2 ग्राम के साथ चावल के मांड में पकाकर सेवन करने से लाभ होता है। यह फ्लू में भी लाभकारी है।
2. ज्वर में वेदना स्थान पर इसके पत्तों को गरम कर बांध देना चाहिए।

दाह युक्त ज्वर :

1. दाह युक्त ज्वर में इसके फलों को पानी में पीसकर शरीर पर मलने से दाह ज्वर शांत होता है।
2. इसकी जड़ और सौंठ को पानी में पीसकर दाह युक्त ज्वर में शरीर पर मलने से लाभ होता है।

स्वेद रोग : अंकोल के फलों 2–3 ग्राम चूर्ण की फंकी देने से और ऊपर से वासा क्वाथ नित्य पिलाने से अति स्वेद रोग मिटता है।

रक्तस्राव :

1. इसके फलों के 5 ग्राम चूर्ण को मिश्री 10 ग्राम के साथ पीसकर पिलाने से मुंह से रूधिर का बहना बंद हो जाता है।

Scanned by CamScanner

2. इसकी जड़ की छाल को तेल में सिद्ध करके मालिश करने से गठिया की तीव्र पीड़ा मिटती है।

व्रण : किसी तेज धार वाले हथियार से कट जाने पर अंकोल के बीजों के तेल में रूई का फाहा भिगोकर कटे हुए स्थान पर लगाने से बहता हुआ रक्त बंद हो जाता है।

चर्म रोग : इसकी जड़ की छाल को पीसकर लेप करने से त्वचा के रोग मिटते हैं।

ग्रन्थि : चाहे बंद गांठ हो या प्लेग की गांठ हो, अंकोल की जड़ को पानी में घिसकर उस गांठ पर लेप कर देने से तुरन्त लाभ होता है।

विष : बिच्छू के डंक लगने पर इसकी जड़ की छाल को पीसकर लेप करे अथवा इसी लेप में सरसों का तेल मिलाकर कान में डाले।

चूहे का विष : इसकी जड़ को जल में पीसकर 2–3 बार पिलाने से चूहे का विष उतर जाता है।

सर्प विष एवं विषैले कीड़े मकौड़े के काटने पर : इसकी 15 ग्राम जड़ का 2 कि॰ ग्रा॰ जल में क्वाथ बनाकर छानकर 15–15 मिनट पर 50 ग्राम क्वाथ में गरम किया हुआ गाय का घी 50 ग्राम मिलाकर पिलायें। दस्त और उल्टी होकर विष की तीव्रता व वेग एकदम कम होता है। इसके बाद नीम की अन्तर छाल के क्वाथ में 2.5 ग्राम अंकोल की जड़ का चूर्ण मिलाकर पिलायें।

विशेष : इसका अधिक मात्रा में प्रयोग हानिकारक है।

1 अंकोटकः कटुस्तीक्ष्णा स्निग्धोष्णस्तुवरो लघुः।
रेचनः कृमिशूलामशोफग्रहविषापहा।
विसर्प कफ पित्तास्य भूविकाहि विषापहा।।

2. तत्फलं शीतलं स्वादु श्लेमघ्नं बृहणं गुरु।
बल्यं विरेचंन वातपित्त दाह क्षयास्रजित।। (भाव प्रकाश)

Scanned by CamScanner

20 अनानास

वैज्ञानिक नाम	:	*Ananas comosus* Merr.
कुलनाम	:	Bromeliaceae
अंग्रेजी नाम	:	Pineapple
संस्कृत	:	बहुनेत्र
हिन्दी	:	अनानास, कटहल, सफरी
गुजराती	:	अनन्नास
मराठी	:	अनन्नास
बंगाली	:	आनारस

परिचय

अनानास ब्राजील का आदिवासी पौधा है, परन्तु आजकल पूरे भारतवर्ष में इसकी खेती, विशेषतः बंगाल, आसाम तथा पश्चिमी समुद्र तटवर्ती प्रदेशों में बड़े पैमाने पर की जाती है।

बाह्य–स्वरूप

अनानास के द्विवर्षायु 2 फुट तक ऊंचे शाकीय पौधे, देखने में केवड़े या घृतकुमारी के जैसे लगते हैं। पौधे के मध्य भाग से छोटा कांड निकलता है, जिसके मूल में चारों ओर पत्र पुंज होता है। पत्तियां 1–2 फुट लम्बी, पतली, मजबूत रेशेदार और किनारे पर छोटे तीक्ष्णाग्र कंटक होते है। पौधे के बीच में शंक्वाकार पुष्पव्यूह होता है, जिसमें शल्कपत्र प्रचुरता से होते है, यह पुष्प समूह ही वृद्धि को प्राप्त कर मांसल फल के रूप में परिवर्तित हो जाता है। यह पकने पर नारंगी के समान पीतवर्ण का हो जाता है, तथा इस पर अनेक छोटे–छोटे कंटकमय पत्र होते है जिन्हें छत्रक कहते हैं।

रासायनिक संघटन

इसमें ब्रामेलिन (Bromelin) नामक तत्व 0.008 मिलीग्राम प्रति 100 ग्राम में पाया जाता है, जो हाजमा बढ़ाता है। ताजे फल के रस में शर्करा, अम्ल, विटामिन 'A' तथा 'C' और एक मांसतत्व को पचाने वाला किण्व, तथा दूध को जमाने वाला किण्व पाया जाता है। भस्म में फास्फोरिक एसिड, चूना, मैगनीशियम तथा सोडियम, पोटाशियम के लवण पाये जाते है।

गुण–धर्म

वात पित्त शामक, रोचन, दीपन, अनुलोमन, रेचन, हृद्य, रक्त पित्त शामक, अश्मरी भेदन, मूत्रल, बल्य, ज्वरघ्न। कच्चे फल का स्वरस तीव्र गर्भाशय उत्तेजक, आर्तवजनन, तथा अधिक मात्रा में गर्भ पातक/पत्रस्वरस तीव्र रेचन एवं कृमिघ्न।

औषधीय प्रयोग

कास एवं श्वास रोग :

1. श्वास रोग में अनानास फल के रस में छोटी कटेरी की जड़, आंवला और जीरा समभाग चूर्ण बनाकर मधु के साथ सेवन करें।
2. पके फल के 10 ग्राम रस में पीपल मूल, सौंठ और बहेड़े का चूर्ण 2–2 ग्राम तथा भुना हुआ सुहागा व मधु मिलाकर सेवन करने से कास एवं श्वास रोग में सिद्ध लाभ होता है।
3. इसके रस में मुलेठी, बहेड़ा और मिश्री मिलाकर सेवन करने से लाभ होता है।

अजीर्ण :

1. पके फल के बारीक टुकड़े सैंधा नमक और काली मिर्च मिलाकर खाने से अजीर्ण दूर होता है।

Scanned by CamScanner

2. पके फल के 100 ग्राम रस में 1–2 नग दाख और 125 मि०ग्रा० सैंधा नमक मिलाकर खाने से अजीर्ण दूर होता है।
3. भोजन के बाद यदि पेट फूल जाये, बैचेनी हो तो अनानास के 20–50 ग्राम रस के सेवन से लाभ होता है।
4. अनानास और खजूर के टुकड़े बराबर–बराबर लेकर उसमें घी और शहद (विषम मात्रा में) मिलाकर कांच के बरतन में भरकर रखें। इसे नित्य 6 या 12 ग्राम की मात्रा में खाने से बहुमूत्र रोग दूर होता है, और शक्ति बढ़ती है।

मधुमेह : अनानास मधुमेह में बहुत लाभकारी है। अनानास के 100 ग्राम रस में, तिल, हरड़, बहेडा, आंवला, गोखरू और जामुन के बीज 10–10 ग्राम मिला दें। सूखने पर पाउडर बनाकर रखें। इस चूर्ण का प्रातः–सायं 3 ग्राम की मात्रा में सेवन, बहुमूत्ररोग तथा मधुमेह में अत्यन्त गुणकारी है। पथ्य–दूध व चावल, परहेज–लाल मिर्च, खटाई और नमक।

उदर रोग :

1. पके हुये अनानास के 10 ग्राम रस में भुनी हुई हींग 125 मिलीग्राम, तथा सेंधा नमक और अदरक का रस 250–250 मिलीग्राम मिलाकर प्रातः सायं सेवन करने से उदर शूल और गुल्म रोग में लाभ होता है।
2. इसके रस में यवक्षार, पीपल और हल्दी का चूर्ण 250–250 मिलीग्राम मिलाकर सेवन करने से प्लीहा, उदर रोग तथा गुल्म 7 दिन में नष्ट होते है।
3. अनानास रस में, रस से आधी मात्रा में गुड़ मिलाकर सेवन करने से उदर एवं वस्तिप्रदेश में स्थित वात नष्ट होता है। उदर में यदि बाल चला गया हो तो, अनानास के खाने से, वह गल जाता है।

जलोदर : अनानास के पत्रों के क्वाथ में बहेड़ा और छोटी हरड़ का चूर्ण मिलाकर देने से दस्त और मूत्र साफ होकर, जलोदर में आराम होता है।

कामला : अनानास के पके फलों के 10 ग्राम रस में हल्दी चूर्ण 2 ग्राम और मिश्री 3 ग्राम मिलाकर सेवन करने से कामला रोग में लाभ मिलता है।

मासिक धर्म की रुकावट :

1. अनानास के कच्चे फलों के 10 ग्राम रस में, पीपल की छाल का चूर्ण और गुड़ 1–1 ग्राम मिलाकर सेवन करने से मासिक धर्म की रुकावट दूर होती है।
2. इसके पत्तो का काढा 40–60 मिलीग्राम पीने से भी मासिक धर्म की रुकावट दूर होती है।

कृमि रोग :

1. पके फल के रस में छुआरा, खुरासानी अजवायन और बायविडंग का चूर्ण समभाग मिलाकर, थोड़े से शहद के साथ 5–10 ग्राम की मात्रा में चटाने से बालकों के कृमि रोग नष्ट होते है।
2. इसके पत्तों के रस में थोड़ा शहद मिलाकर रोज 2 ग्राम से 10 ग्राम तक सेवन करने से कृमि रोग नष्ट होता है।

सर्वांग शोथ : यदि सब अंगों में सूजन हो, मूत्र कम मात्रा में होता है। मूत्र में एल्ब्युमिन जाता हो, यकृत वृद्धि हो, अग्निमांद्य तथा नेत्रों के नीचे सूजन हो तो, इच्छानुसार अनानास रस का सेवन 7–8 दिन तक करने से लाभ होता है। तथा 15–20 दिन में पूरा लाभ होता है। पथ्य–केवल दूध का सेवन करे।

एकांग शोथ : इसके पत्तों पर एरंड तेल चुपड़कर कुछ गरम करे और सूजन पर बांध दे। पांव की सूजन विशेषतया तुरन्त दूर होती है।

ज्वर : इसके फलों का रस देने से, अथवा 20 ग्राम रस में शहद मिलाकर पिलाने से, पसीना आता है, मूत्र खुलकर आता है और ज्वर का वेग कम हो जाता है।

मुरब्बा और शर्बत :

1. पके फलों के टुकड़े करके एक दिन चूने के पानी में रखकर, सुखाकर, शक्कर की चासनी में डालकर मुरब्बा बना लें। यह पित्त का शमन और चित्त को प्रसन्न करता है।
2. अनानास का शर्बत (रस 1 भाग, चाशनी 2 भाग) भी पित्त को शान्त करने वाला और हृदय को बल देने वाला है।

अहितकर : अत्यधिक मात्रा में प्रयोग कंठ के लिए अहितकर होता है।

दुष्प्रभाव निवारण : नींबू का रस, शर्करा, अदरक का रस इसके उपद्रवों को शान्त करता है।

प्रतिनिधि द्रव्य : सेब

Scanned by CamScanner

21 अपामार्ग (लटजीरा)

वैज्ञानिक नाम	:	*Achyranthes aspera* L.
कुलनाम	:	Amaranthaceae
अंग्रेजी नाम	:	Prickly chaff flower.
संस्कृत	:	किणिही, मयूरक, खरमंजरी, अधःशल्य, मर्कटी, दुर्ग्रहा, शिखरी, अपामार्ग
हिन्दी	:	चिरचिटा, चिचड़ा, ओंगा चिचरी, लटजीरा
बंगाली	:	आपांग
मराठी	:	अघाड़ा, अघोड़ा
गुजराती	:	अघेड़ा
अरबी	:	चिचिरा अल्कुम
तैलगु	:	दुच्चीणिके
फारसी	:	खारेवाजगून

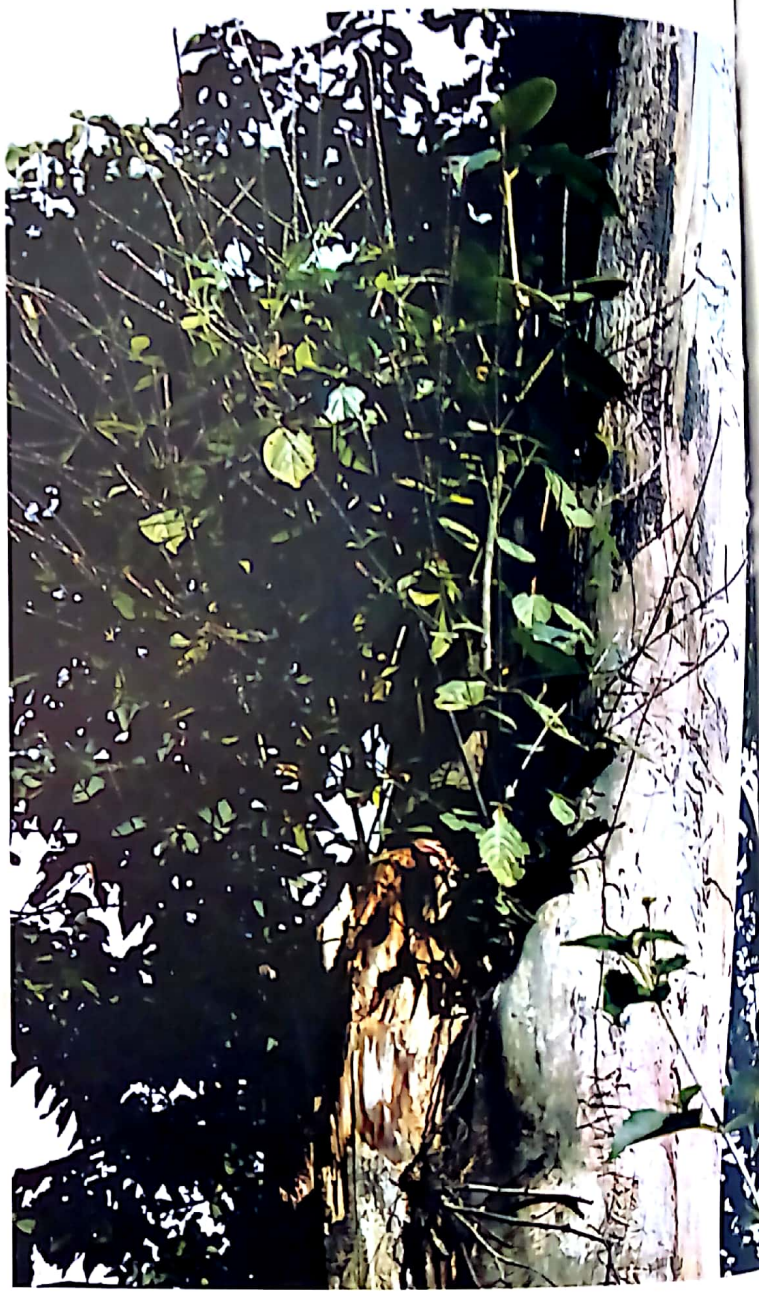

परिचय

अपामार्ग अर्थात् जो दोषों को संशोधन करे, बढ़ी हुई भूख को शान्त करे, दन्त रोगों को हरे और अन्य बहुत से असाध्य रोगों का नाश करे, ऐसा दिव्य पौधा भारतवर्ष के प्रायः सभी प्रान्तों में जंगली अवस्था में शहरों में, गांवों में सर्वत्र पाया जाता है। वर्षा ऋतु में यह विशेषकर पाया जाता है, परन्तु कहीं–कहीं पर यह वर्ष पर्यन्त भी मिलता है। वर्षा की पहली फुहारें पड़ते ही यह अंकुरित होने लगता है। शीत ऋतु में फलता फूलता है तथा ग्रीष्म ऋतु में परिपक्व होकर फलों के साथ पौधा भी सूख जाता है। इसके पुष्प हरी गुलाबी कलियों से युक्त तथा बीज चावल सदृश होते है। जिन्हें तांडूल कहते है।

बाह्य–स्वरूप

अपामार्ग का पौधा 1 से 3 फुट ऊंचा होता है। शाखायें पतली, अशक्त कांड वाली और पर्व संधि कुछ फूली और मोटी होती है। कांड प्रायः दो शाखाओं में विभक्त होता है। पत्र सम्मुख अंडाकार या अभिलट्वाकार, लम्बाग्र 1–5 इंच लम्बे, रोमश तथा सवृत्त होते हैं। पुष्पमंजरी पत्रों के बीच से निकलती है। यह लगभग 1 फिट, कभी–कभी 3 फुट तक लम्बी होती है। पुष्प–स्पाइक क्रम मे अधो मुखी 1/6 व 1/4 इंच तक लम्बे होते हैं। कंटकीय वृत्त पत्रकों तथा परिपुष्प के कारण फल कपडों मे चिपक जाते हैं, या हाथ में गड जाते हैं। अपामार्ग का पौधा दो प्रकार का होता है : सफेद व लाल। लाल अपामार्ग का कांड और शाखाएं रक्ताभ होती है। पत्रों पर भी लाल दाग होते है।

रासायनिक संघटन

अपामार्ग की राख में पौटेशियम की मात्रा बहुत अधिक होती है।

गुण–धर्म

यह कफ वातशामक तथा कफ पित्त संशोधक है। यह शोथ हर, वेदना स्थापन, लेखन, विषघ्न, त्वक्दोषहर और व्रण शोधक तथा शिरोविरेचन है। यह रेचन, दीपन, पाचन, पित्तसारक, कृमिघ्न, हृदय,

Scanned by CamScanner

रक्त शोधक, रक्तवर्धक, शोथहर, मूत्रल, अश्मरीहर, मूत्रलतानाशक, स्वेद जनन, कुष्ठघ्न और कण्डूघ्न है।[1]

अपामार्ग विशेष रुप से कृमिघ्न है। त्वचा रोगों में, सर्प, बिच्छू, ततैया, भंवरी, आदि के दंश पर इसके पत्र स्वरस का लेप बहुत गुणकारी होता है। अपामार्ग, वातविकार, अश्मरी, शर्करा मूत्रकृच्छ्र की पीड़ा को शान्त करता है।[2]

अपामार्ग, भार्गी, अपराजिता ये सब कफ मेद एवं विष के नाशक है। कृमि–कुष्ठ को शान्त करने वाले, खासकर व्रण के शोधक हैं।[3]

औषधीय प्रयोग

आधा सीसी : इसके बीजों के चूर्ण को सूंघने मात्र से आधा सीसी, मस्तक की जड़ता में आराम मिलता है। इस चूर्ण को सुंघाने से मस्तक के अन्दर जमा हुआ कफ पतला होकर नाक के जरिये निकल जाता है, और वहाँ पर पैदा हुये कीड़े भी झड़ जाते है।

दंतशूल :

1. 2–3 पत्रों का स्वरस में रूई का फोया बनाकर दांतों में लगाने से दांतों के दर्द में लाभ पहुँचता है तथा पुरानी से पुरानी गुहा को भरने में मदद करता है।
2. इसकी ताजी जड़ से प्रतिदिन दातून करने से दांत मोती की तरह चमकने लगते है। दन्तशूल, दांतो का हिलना, मसूडों की कमजोरी तथा मुँह की दुर्गन्ध को दूर करता है।

कर्णबाधिर्य : अपामार्ग की साफ धोई हुई जड़ का रस निकाल उसमें बराबर मात्रा में तिल का तेल मिलाकर आग में पका लें। जब तेल मात्र शेष रह जाये तब छानकर शीशी मे रख लें। इस तेल की 2–3 बूंद गरम करके हर रोज कान में डालने से कान का बहरापन व कर्णपूय दूर होता है।[5]

नेत्ररोग :

1. आंख की फूली में अपामार्ग के मूल के 2 ग्राम चूर्ण को 2 चम्मच मधु के साथ मिलाकर 2–2 बूंद आंख में डालने से लाभ होता है।
2. नेत्राभिष्यन्द, नेत्रशोथ, कण्डू, स्त्राव, नेत्रों की लालिमा, फूली, रतौंधी आदि विकारो मे, इसकी स्वच्छ मूल को साफ तांबे के बरतन में, थोड़ा सा सैंधा नमक मिले हुये दही के पानी के साथ घिसकर अंजन रूप में लगाने से लाभ होता है।

श्वास, कास :

1. अपामार्ग की जड़ में बलगमी खांसी और दमें को नाश करने का चमत्कारिक गुण है। इसके 8–10 सूखे पत्तों को हुक्के में रखकर पीने से श्वास में लाभ होता है।
2. अपामार्ग क्षार ½ ग्राम लगभग की मात्रा में मधु मिलाकर प्रातः–सायं चटाने से बच्चों की श्वास नली तथा वक्षः स्थल में संचित कफ दूर होकर बाल कास दूर होता है।
3. खाँसी बार–बार परेशान करती हो, कफ निकलने में कष्ट हो, कफ गाढा व लेसदार हो गया हो, इस अवस्था में या न्यूमोनिया की अवस्था में ½ ग्राम अपामार्ग क्षार व ½ ग्राम शर्करा दोनों को 30 ग्राम गरम जल में मिलाकर सुबह–शाम सेवन करने से 7 दिन में बहुत ही लाभ होता है।
4. श्वास रोग की तीव्रता में इसकी मूल का चूर्ण 6 ग्राम, व 7 काली मिर्च का चूर्ण, दोनों को सुबह–शाम ताजे जल के साथ लेने से बहुत लाभ होता है।

विसूचिका : अपामार्ग के मूल के चूर्ण को 2 से 3 ग्राम तक दिन में 2–3 बार शीतल जल के साथ सेवन करने से तुरन्त ही विसूचिका नष्ट होती है। अपामार्ग के 4–5 पत्तों का रस निकालकर थोड़ा जल व मिश्री मिलाकर देने से विसूचिका में अच्छा लाभ मिलता है।[4]

अर्श :

1. इसके बीजों को पीसकर उनका चूर्ण 3 ग्राम की मात्रा में सवेरे–शाम चावलों के धोवन के साथ देने से खूनी बावसीर में खून पड़ना बन्द हो जाता है।
2. अपामार्ग की 6 पत्तियां, काली मिर्च 5 नग, को जल के साथ पीस छानकर प्रातः–सायं सेवन करने से अर्श में लाभ हो जाता है और उसमें बहने वाला रक्त रूक जाता है।
3. पित्तज या कफ युक्त रक्तार्श पर इसकी 10–20 ग्राम जड़ को चावल के धोवन के साथ पीस–छानकर दो चम्मच शहद मिलाकर पिलाना गुणकारी है।

उदर विकार :

1. अपामार्ग पंचाग को 20 ग्राम लेकर 400 ग्राम पानी में पकायें, जब चतुर्थांश शेष रहे तब उसमें 500 मि.ग्रा. नौसादर चूर्ण तथा 1 ग्राम काली मिर्च चूर्ण मिलाकर दिन में 3 बार सेवन करने से उदर शूल दूर हो जाता है।
2. पंचाग का क्वाथ 50–60 ग्राम भोजन के पूर्व सेवन से पाचन रस में वृद्धि होकर शूल कम होता है। भोजन के दो से तीन घंटे पश्चात् पंचाग का गरम–गरम 50–60 ग्राम क्वाथ पीने से अम्लता कम होती है तथा श्लेष्मा का शमन होता है। यकृत पर अच्छा प्रभाव होकर पित्तस्राव उचित मात्रा में होता है, जिस कारण पित्ताश्मरी तथा अर्श में लाभ होता है।[3]

भस्मक रोग :

1. भस्मक रोग जिसमें बहुत भूख लगती है और खाया हुआ अन्न भस्म हो जाता है परन्तु शरीर कृश ही बना रहता है, उसमें अपामार्ग के बीजों का चूर्ण 3 ग्राम दिन में दो बार लगभग एक सप्ताह तक सेवन करने से निश्चित रूप से भस्मक रोग मिट जाता है।
2. इसके 5–10 ग्राम बीजों को पीस कर खीर बनाकर खिला देने से भस्मक रोग मिट जाता है। यह प्रयोग अधिक से अधिक 3 बार करने से रोग ठीक होता है। इसके 5–10 ग्राम बीजों

Scanned by CamScanner

को खाने से अधिक भूख लगना बन्द हो जाती है।

3. अपामार्ग के बीजों को कूट छानकर, महीन चूर्ण करें तथा बराबर मात्रा में मिश्री मिलाकर, 3–6 ग्राम तक सुबह–शाम जल के साथ प्रयोग करें। इससे भी भस्मक रोग ठीक हो जाता है।

वृक्कशूल : अपामार्ग की 5–10 ग्राम ताजी जड़ को पानी में घोलकर पिलाने से बड़ा लाभ होता है। यह औषधि बस्ति की पथरी को टुकड़े–टुकड़े करके निकाल देती है। वृक्कशूल के लिये यह प्रधान औषधि है।

योनिशूल : इसकी जड़ को पीसकर रस निकालकर रूई को भिगोकर योनि में रखने से योनिशूल और मासिक धर्म की रूकावट मिटती है।

गर्भधारणार्थ : अनियमित मासिक धर्म, या अधिक रक्त स्त्राव के कारण से जो स्त्रियां गर्भ धारण नही कर पाती, उन्हें ऋतुस्नान के दिन से उत्तम भूमि में उत्पन्न इस दिव्य बूटी के 10 ग्राम पान, या इसकी 10 ग्राम जड़ को गाय के 125 ग्राम दूध के साथ पीस छानकर 4 दिन तक सुबह, दोपहर तथा सायं पिलाने से स्त्री गर्भ धारण कर लेती है। यह प्रयोग यदि एक बार में सफल न हो तो अधिक से अधिक 3 बार करें।

रक्तप्रदर : अपामार्ग के ताजे पत्र लगभग 10 ग्राम, हरी दूब 5 ग्राम, दोनो को पीसकर, 60 ग्राम जल में मिलाकर छान लें, तथा गाय के दूध में 20 ग्राम या इच्छानुसार मिश्री मिलाकर प्रातः काल सात दिन तक पिलाने से अत्यन्त लाभ होता है। यह प्रयोग रोग ठीक होने तक नियमित करें, निश्चित रूप से रक्त प्रदर ठीक हो जाता है। यदि गर्भाशय में गांठ की वजह से रक्तस्राव होता हो तो भी गांठ भी इससे घुल जाता है।

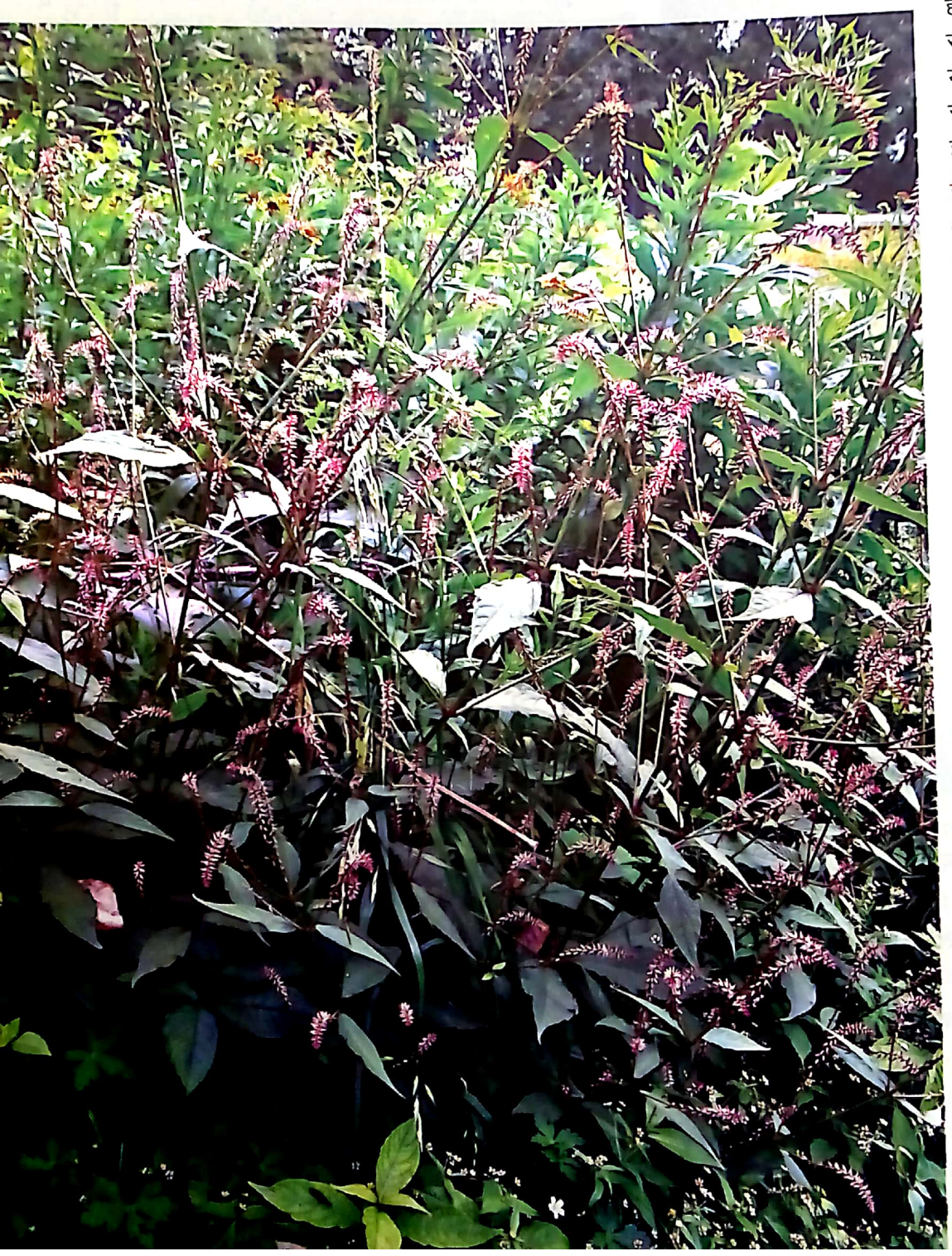

सुखप्रसव : पाठा, कलिहारी, अडूसा, अपामार्ग इनमें से किसी एक औषधि की जड़ को नाभि, बस्ति–प्रदेश तथा भग प्रदेश पर लेप देने से प्रसव सुख पूर्वक होता है। प्रसव पीड़ा प्रारम्भ होने से पूर्व अपामार्ग के जड़ को एक धागे में बांधकर कमर में बांधने से प्रसव सुखपूर्वक होता है, परन्तु प्रसव होते ही उसे तुरन्त हटा लेना चाहिए।

सद्यःक्षत : सद्यःक्षत में प्रवृत्त होते हुये रुधिर को रोकने के लिये अपामार्ग के 2–3 पत्रों को हाथ से मसलकर या कूटकर स्वरस निकाल लें उसके स्वरस को (सद्यःक्षत) घाव में टपकाने से रक्त प्रवाह रूक जाता है।

कीट दंश : ततैया, बिच्छू तथा अन्य जहरीले कीड़ों के दंश पर पत्र स्वरस लगा देने से जहर उतर जाता है। काटे स्थान पर बाद में 8–10 पत्तों को पीसकर लुगदी बांध देते हैं इससे व्रण दूषित नहीं हो पाता।

व्रण : व्रणों विशेषकर दूषित व्रणों में इसका स्वरस मलहम के रूप में लगाने से व्रण का रोपण होता है तथा घाव पकने का भय नहीं रहता।

Scanned by CamScanner

कंडूरोग : अपामार्ग के क्वाथ से स्नान करने पर कंडू रोग दूर हो जाता है।

संधि शोथ : संधि शोथ में इसके 10–12 पत्रों को पीसकर गरम करके बांधने से लाभ होता है। सन्धि शोथ व दूषित फोड़े फुन्सी या गांठ वाली जगह पर पत्ते पीसकर लेप लगाने से गांठ धीरे–धीरे छूट जाती है।

ज्वर : इसके 10–20 पत्तों को 5–10 नग काली मिर्च और 5–10 ग्राम लहसुन के साथ पीसकर 5 गोली बनाकर 1–1 गोली ज्वर आने से दो घंटे पहले देने से सर्दी से आने वाला ज्वर छूटता है।

मसूरिका या चेचक के प्रतिरोध हेतु :

1. हल्दी और अपामार्ग की जड़ दोनों को बराबर मात्रा में लेकर, खूब पीसकर हाथ पैरों के नाखूनों पर, तथा इसी का माथे पर एक तिलक लगाने से चेचक नहीं निकलती है।
2. यदि चेचक निकल आई हो तो इसकी स्वच्छ जड़ को पीसकर फुन्सियों पर लगाने से शान्ति प्राप्त होती है।

विशेष : औषधि कर्म में श्वेत अपामार्ग श्रेष्ठ है।

1. आमाशय के विकारों पर इसका प्रयोग बड़ी मात्रा में नहीं करना चाहिये।

स्वानुभूत प्रयोग :

1. गंगोत्री के प्रसिद्ध स्वामी अपरोक्षानन्द जी, जो कि जिला बिलासपुर (छत्तीसगढ़) के रहने वाले हैं, उनकी माताजी लगभग 80 वर्ष आयु की है। जब हमें उनसे मिलना हुआ तो देखा कि उनके दांत बहुत मजबूत एवं सुन्दर हैं। उनसे पूछा कि आपके दांत आज तक इतने मजबूत कैसे हैं, तो उन्होंने कहा कि मैं अपामार्ग के कांड की दातुन करती हूं तथा जब अपामार्ग ताजा नहीं मिलता है तो सूखी हुई अपामार्ग कांड को पानी में भिगोकर दातुन करती हूँ। छत्तीसगढ़ के सुदूर ग्रामीण इलाकों में भी हमने उपरोक्त विधि से दातुन के प्रयोग करने वाले बहुत से लोगों के वृद्धावस्था में भी दांतों की मजबूती का रहस्य का कारण पाया।
2. हमने काफी लोगों पर इसे अजमाकर कर देखा तो पाया कि इसके पत्रों को पीसकर लगाने पर फोड़े फुन्सी आदि चर्म रोग तथा गांठ के रोगी भी इससे ठीक हुए हैं।

1. अपामार्गः सरस्तीक्ष्णो दीपनस्तिक्तकः कटुः।
   पाचनो रोचनश्छर्दिकफमेदोऽनिलापहः।।
   निहन्ति हृद्रुजाध्मार्शः कण्डू शूलोदरापचीः। (भाव प्रकाश)
2. "अपामार्गस्तु तिक्तोष्णः कटुकः कफनाशनः।
   अर्शः कण्डूदरामध्नो रक्तहृद्ग्राहिवान्तिकृत्"।। (ध०नि०)
3. वीरतर्वादिरित्येष गणों – । (सुश्रुत)
   अर्कालर्ककरंज द्वय नागदन्ती मयूरकभार्गी रास्नेन्द्र पुष्पी–।। (सुश्रुत)
4. जलपीतमपामार्ग–मूलं हन्याद्विविसूचिकाम्। (भै०र०)
5. अपामार्गस्य संसिक्तं पत्रोत्थेन रसेन तु।
   सद्योव्रणेषु रक्तं तु प्रवृत्तं परितिष्ठति।।
   (भैषज्य रत्नावली)

Scanned by CamScanner

22 अपराजिता

वैज्ञानिक नाम	:	*Clitoria ternatea* L.
कुलनाम	:	Papilionaceae
अंग्रेजी नाम	:	Winged leaved clitoria, Butterfly pea
संस्कृत	:	आस्फोता, गिरिकर्णी, विष्णुकान्ता, अपराजिता, अश्वखुरा, आदिकर्णी
हिन्दी	:	अपराजिता, कोयल
गुजराती	:	गरणी
मराठी	:	गोकर्णी, काजली
बंगाली	:	अपराजिता
तैलगू	:	दिटेन
द्राविडी	:	करप्पुका, कट्टान विरै
अरबी	:	माजरि, यून
फारसी	:	अशखीस

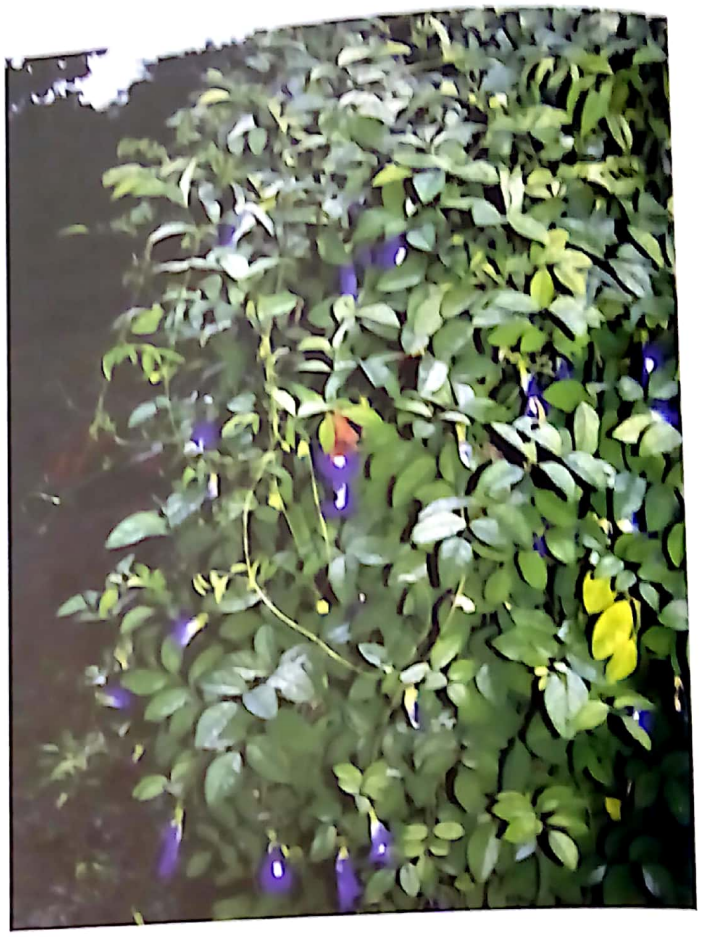

परिचय

अपराजिता, विष्णुकांता गोकर्णी आदि नामों से जानी जाने वाली श्वेत या नील वर्ण के पुष्पों वाली कोमल वृक्ष आश्रिता बल्लरी उद्यानों एवं गृहों के शोभा वर्द्धनार्थ लगाई जाती है। इस पर विशेषकर वर्षा ऋतु में फलियां और फूल लगते हैं।

बाह्य–स्वरूप

अपराजिता सफेद और नीले रंग के पुष्पों के भेद से दो प्रकार की होती है। नीले फूल वाली अपराजिता भी दो प्रकार की होती है : (1) इकहरे फूल वाली तथा (2) दोहरे[3] फूल वाली। इसके पत्ते छोटे और प्रायः गोल होते हैं। इसकी पर्वसन्धि से एक शाखा निकलती है, जिसके दोनों ओर 3–4 जोड़े पत्र, युग्म में निकलते है और अन्त में शिखाग्र पर एक ही पत्र होता है। इस पर मटर की फली के समान लम्बी और चपटी फलियाँ लगती हैं, जिनमें से उड़द के दानों के समान कृष्ण वर्ण के चिकने बीज निकलते हैं।

गुण–धर्म

दोनों प्रकार की अपराजिता, मेधा के लिये हितकारी, शीतल, कंठ को शुद्ध करने वाली, दृष्टि को उत्तम करने वाली, स्मृति व बुद्धि वर्धक, कुष्ठ, मूत्र दोष, तीनों दोष, आम, सूजन, व्रण तथा विष को दूर करने वाली है।[4]

यह विषघ्न, कंठ्य, चक्षुष्य, मस्तिष्क रोग, कुष्ठ, अर्बुद, शोथ जलोदर, यकृत, प्लीहा में उपयोगी है।[5]

औषधीय प्रयोग

शिरोवेदना :

1. अपराजिता की फली के 8–10 बूंद रस का नस्य अथवा जड़ के रस का नस्य प्रातः खाली पेट एवं सूर्योदय से पूर्व देने से शिरोवेदना नष्ट होती है। इसकी जड़ को कान में बांधने से भी लाभ होता है।[7]
2. इसके बीजों के 4–4 बूंद रस को नाक में टपकाने से आधा शीशी भी मिट जाती है।
3. इसके बीज ठंडे और विषघ्न है। इसके बीज और जड़

Scanned by CamScanner

को समभाग लेकर जल के साथ पीसकर नस्य देने से अर्द्धावभेदक (आधा सीसी) दूर होता है।

कास श्वास : इसकी जड़ का शर्बत, थोड़ा–थोड़ा चटाने से कास, श्वास और बालको की कुक्कुर खांसी में लाभ होता है।

गलगण्ड : श्वेत अपराजिता की जड़ के 1 से 2 ग्राम चूर्ण को घृत में मिश्रित कर पीने से अथवा कटु फल के चूर्ण को गले के अन्दर घर्षण करने से गलगण्ड रोग शान्त होता है।[6]

तुण्डिकेरी शोथ : 10 ग्राम पत्र, 500 ग्राम जल में क्वाथ कर, आधा शेष रहने पर सुबह–शाम गंडूष करने से, टॉसिल, गले के व्रण तथा स्वर भंग में लाभ होता है।

जलोदर, कामला–डिब्बारोग :

1. जलोदर, कामला और बालकों के डिब्बा रोग में इसके भुने हुये बीजों के 1/2 ग्राम के लगभग महीन चूर्ण को उष्णोदक के साथ दिन में दो बार सेवन कराने से लाभ होता है।
2. कामला में इसकी जड़ का 3–6 ग्राम चूर्ण छाछ के साथ देने से लाभ होता है।

बालकों के उदर शूल : अफारा या डिब्बा रोग पर इसके 1–2 बीजों को आग पर भूनकर, माता या बकरी के दूध, अथवा घी के साथ चटाने से शीघ्र लाभ होता है।

प्लीहा वृद्धि : इसकी जड़ बहुत रेचक है। इसकी जड़ को दूसरी रेचक और मूत्रजननकर औषधियों के साथ देने से बढ़ी हुई तिल्ली और जलंधर आदि रोग मिटते हैं। मूत्राशय की दाह मिटती है।

मूत्रकृच्छ्र : सूखे जड़ के चूर्ण प्रयोग से मूत्रेन्द्रिय, मूत्राशय की जलन और मूत्रकृच्छ्र का नाश होता है। 1–2 ग्राम चूर्ण गर्म पानी या दूध से दिन में 2 या 3 बार प्रयोग करने से लाभ होगा।

अण्डकोष वृद्धि : बीजों को पीसकर गरम कर लेप करने से अण्डकोष की सूजन बिखर जाती है।

गर्भस्थापन :

1. श्वेत अपराजिता की लगभग 5 ग्राम छाल को अथवा पत्रों को बकरी के दूध में पीस, छानकर तथा मधु मिलाकर पिलाने से गिरता हुआ गर्भ ठहर जाता है तथा कोई पीड़ा नहीं होती है।
2. श्वेत अपराजिता की 1 ग्राम जड़ दिन में दो बार बकरी के दूध में पीस–छान, मधु मिलाकर कुछ दिन पर्यन्त खिलाने से गिरता हुआ गर्भ ठहर जाता है।

सुख प्रसव : कोयल की बेल को स्त्री की कमर में लपेट देने से शीघ्र ही प्रसव होकर पीड़ा शान्त हो जाती है।

Scanned by CamScanner

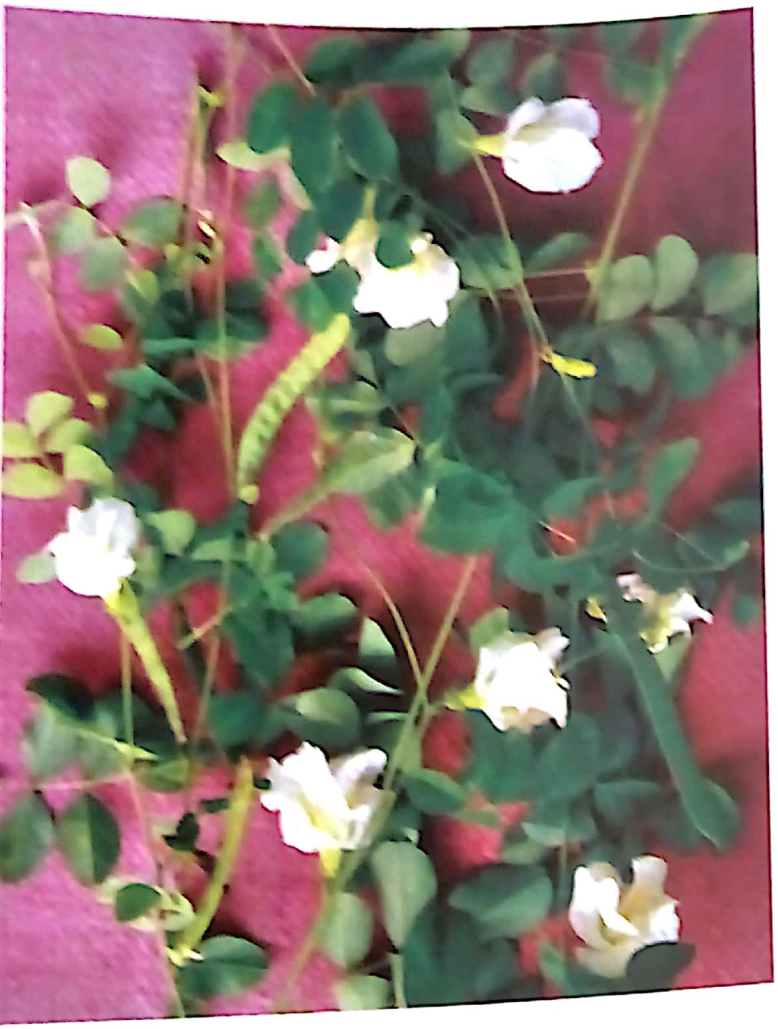

सुजाक, पूयमेह व अश्मरी :

1. अपराजिता मूलत्वक 3–6 ग्राम तक, शीतल चीनी 1.5 ग्राम, काली मिर्च 1 नग, तीनों को जल के साथ पीसकर तथा छानकर सुबह–सुबह सात दिन तक पिलाने से पंचाग के क्वाथ में रोगी को बिठाने से, या मूत्रेन्द्रिय को उसमें डुबोये रखने से शीघ्र लाभ होता है।

2. इसकी 5 ग्राम जड़ को चावलों के धोवन के साथ पीस–छानकर कुछ दिन प्रातः सायं पिलाने से मूत्राशय की पथरी कट–कट कर निकल जाती है।

ज्वर : लाल सूत्र के 6 धागों में इसकी जड़ को कमर में बांधने से तीसरे दिन आने वाला ज्वर छूट जाता है।

श्वेत कुष्ठ : श्वेत कुष्ठ तथा मुँह की झांई पर इसकी जड़ दो भाग, तथा चक्रमर्द की जड़ 1 ग्राम, जल के साथ पीसकर, लेप करने से लाभ होता है। इसके साथ ही इसके बीजों की घी में भूनकर प्रातः सायं जल के साथ सेवन करने से डेढ़ दो मास में ही श्वेत कुष्ठ में लाभ हो जाता है। इसकी जड़ की राख या भस्म को मक्खन में घिसकर लेप करने से मुँह की झाईं दूर हो जाती है।

श्लीपद : श्लीपद व नाहरु पर इसकी 10–20 ग्राम जड़ों को थोड़े जल के साथ पीसकर, गरम कर लेप करने से तथा 8–10 पत्तों के कल्क की पोटली बना सेंकने से लाभ होता है।

व्रण : हथेली या उंगलियों में होने वाला अत्यन्त पीड़ायुक्त व्रण (Whitlow या गलका) पर इसके 10–20 पत्तों की लुगदी को बांध कर ऊपर से ठंडा जल छिड़कते रहने से, अति शीघ्र लाभ होता है।

फोड़ा : कांजी या सिरके के साथ इसकी 10–20 ग्राम जड़ को पीस कर लेप करने से उठते हुये फोड़े फूटकर बैठ जाते हैं।

विशेष : श्वेत अपराजिता अधिक गुणकारी है।

स्वानुभूत प्रयोग :

1. एक बार हम लोग हिंडोन सिटी के एक घर में रूके हुए थे तो घर में एक स्त्री को बहुत रक्तस्राव हो रहा था। हमारे द्वारा अपराजिता का स्वरस 10 ग्राम निकालकर 10 ग्राम निम्बू में मिलाकर देने से तुरन्त आराम आ गया।

2. कई रोगियों पर इसका स्वरस या मूल रस निकालकर नाक में डालने से उनका सिर दर्द तुरन्त ठीक हो गया।

1. आस्फोता गिरिकर्णी स्याद बिष्णुक्रांताऽपराजिता।
अपराजिते कटुमेध्ये शीते कण्ठये सुदृष्टिदे।।
कुष्ठमूत्रत्रिदोषामशोथव्रण विषापहे,
कषाये कटुके पाके तिक्ते च स्मृतिबुद्धि दे।।
(भाव प्रकाश निघंटु)

2. यथा गिरिकर्णी द्वयं तिक्त, कटुशीतं विषापहम्।
मेध्यं कण्ठयश्चशूलध्यंमामपाचनम्।।

3. कटफल चूर्णन्तिशीतथर्पो गलगण्डामयं हन्ति।
घृत मिश्रं पीतमपि श्वेत गिरिक र्धाम्मूलम्।।

4. गिरिकर्णीफलरसं मूलश्च नस्यमाचरेत्।
मूल वा बन्धयेत् कर्णे शीघ्र हन्ति, शिरोव्येथाम्।।

Scanned by CamScanner

अर्जुन

23

वैज्ञानिक नाम	:	*Terminalia arjuna* (Roxb.) Wight & Arn.
कुलनाम	:	Combretaceae
अंग्रेजी नाम	:	Arjuna
संस्कृत	:	अर्जुन, धवल, संबर, इन्द्रदु, ककुभः
हिन्दी	:	अर्जुन, काहू
गुजराती	:	घोलो, सादडो, साजड
मराठी	:	सदरू, अर्जुन, सादड़ा
बंगाली	:	अर्जुन, गाछ
पंजाबी	:	कौ, कोह
तैलगू	:	धर्रमछि
द्राविड़ी	:	वेल्ला, भट्टि
कन्नड़	:	कम्युत्ते
मारवाड़ी	:	अर्जुन

परिचय

पहाड़ी क्षेत्रों में नदी, नालों के किनारे 80 फुट तक ऊँचे पंक्तिबद्ध हरे पल्लवों के वल्कल ओढ़े अर्जुन के वृक्ष ऐसे लगते हैं, जैसे महाभारत के पार्थ की तरह अनेक महारथी अक्षय तरकशों में अगणित अस्त्र लिये, प्रस्तुत हो तथा महासमर में अनेक व्याधिरूपी शत्रुओं को नेस्तनाबूत करने को एकत्र हुए हों। अर्जुन का वृक्ष जंगलों में पाया जाता है, इस पर बैशाख–ज्येष्ठ में फूल खिलते है और जाड़े में फल आते हैं।

बाह्य–स्वरूप

इसका कांड स्थूल, गोलाई में 10 से 20 फीट तक होता है। कांड त्वक् ऊपर से श्वेताभ, चिकनी, 1/3 इंच तक मोटी, अन्दर से रक्तवर्ण की होती है। वाह्य त्वचा वर्ष में एक बार सर्प केंचुल के समान स्वयं गिर पड़ती है। पत्र 3 से 6 इंच तक लम्बे, 1–2 इंच तक चौड़े, छोटी–छोटी शाखाओं पर कहीं समवर्ती, कहीं विषमवर्ती होते हैं, जिनका उदरतल चिकना और पृष्ठतल, शिरामय एवं रूक्ष होता है। पत्र के पीछे मध्य शिरा के पार्श्व में दो हरे रंग की मधुमय लसिका ग्रन्थियां होती है। पुष्प अत्यन्त सूक्ष्म हरिताभ श्वेत वर्ण के गुच्छे में लगे होते है। इनमें सुगंध नहीं होती। फल लम्बे, अंडाकार, कोष्ठमय, 5 उठी हुई धारियों से युक्त 1–2 इंच तक लम्बे होते हैं। फल के अन्दर बीज नहीं होते। अर्जुन के पेड़ का गोंद निर्यास स्वच्छ, सुनहरा, भूरा और पारदर्शक होता है।

रासायनिक संघटन

अर्जुन की छाल में अनेक प्रकार के रासायनिक घटक पाये जाते हैं। इसमें कैल्शियम कार्बोनेट लगभग 34 प्रतिशत व सोडियम, मैग्नीशियम व एल्युमिनियम प्रमुख क्षार हैं। कैल्शियम–सोडियम की प्रचुरता के कारण ही यह हृदय की मांसपेशियों में सूक्ष्म स्तर पर कार्य करता है।

Scanned by CamScanner

गुण–धर्म

अर्जुन शीतल, हृदय के लिए हितकारी, कसैला, क्षत्, क्षय, विष, रूधिर विकार, मेद, प्रमेह, व्रण, कफ तथा पित्त को नष्ट करता है।[1] अर्जुन से हृदय की मांसपेशियों को बल मिलता है, हृदय की पोषण क्रिया अच्छी होती है। मांसपेशियों को बल मिलने से हृदय का स्पंदन ठीक और सबल होता है। स्पंदन की संख्या कम हो जाती है। सूक्ष्म रक्तवाहिनियों का संकोच होता है, जिससे रक्त, भार बढ़ता है। इस प्रकार इससे हृदय सशक्त और उत्तेजित होता है। इससे रक्त वाहिनियों के द्वारा होने वाले रक्त का स्त्राव भी कम होता है, जिससे यह शोथ को दूर करता है। इसके प्रयोग से रक्तवहस्रोतों का संकोचन भली प्रकार होने से हृदय रक्त को समस्त शरीर में फेंकने तथा शरीर में फैले हुए समस्त रूधिर को हृदय के अन्दर खींचने का कार्य सुगमता से करता है। इसीलिये हृदय एवं रक्तवाहिनियों के शैथिल्य, सर्वांग शोथ, नाड़ी की मंदता, श्वास, कास आदि जीर्ण विकारों में इसका प्रयोग परम हितकारी है। अर्जुन के प्रयोग से पित्त की विदग्धता और अम्लता कम होकर रक्त में स्वादुता एवं स्थिरता उत्पन्न होती है। जिससे रक्त पित्त तथा अम्लपित्त आदि विशिष्ट पित्तविकारों में लाभ होता है। कसैला होने के कारण यह कफघ्न, मूत्र संग्रहणीय और शामक होता है। यह स्तम्भक और ज्वरघ्न भी है। यह विषघ्न और हृदय को पुष्ट करने के कारण बृंहण हैं। अर्जुन, शिरीष, ताड़ यह सब सालसारादि गण, कुष्ठरोग नाशक, प्रमेह, पांडु रोगनाशक, कफ और मेद का शोषक है।[2] अर्जुन वृक्ष, अश्मभेद, अपामार्ग, गोखरू यह सब वात विकारनाशक हैं। अश्मरी शर्करा कृच्छ, मूत्राघात की पीड़ा को शान्त करता हैं। अर्जुन, जामुन, मुलहठी, बेर ये सब व्रण के लिये हितकारी भग्न को मिटाने वाले रक्त पित्तनाशक, दाह, भेद तथा योनिरोगों को दूर करते हैं।[4]

औषधीय प्रयोग

मुखपाकः इसकी जड़ के चूर्ण में मीठा तेल मिलाकर गरम पानी से कुल्ले करने से मुखपाक मिटता है।

कर्णशूलः इसके पत्तों का 3–4 बूंद स्वरस कान में डालने से कर्णशूल मिटता है।

मुंह की झाईयांः इसकी अंतर छाल पीसकर, शहद मिलाकर लेप करने से मुंह की झाइयां मिटती हैं।

क्षयकासः अर्जुन की छाल के चूर्ण में वासा पत्रों के स्वरस की सात भावना देकर 2–3 ग्राम की मात्रा शहद, मिश्री या गोघृत के साथ चटाने से क्षय की खांसी जिसमें कफ में खून आता हो नाश हो जाता है।

धड़कन :

1. हृदय की सामान्य धड़कन जब 72 से बढ़कर 150 से ऊपर रहने लगे तो एक गिलास टमाटर के रस में 1 चम्मच अर्जुन की छाल का चूर्ण मिलाकर नियमित सेवन करने से शीघ्र ही धड़कन सामान्य हो जाती है।
2. अर्जुन की मोटी छाल का महीन चूर्ण 1 चम्मच की मात्रा में मलाई रहित 1 कप दूध के साथ सुबह–शाम नियमित सेवन करते रहने से हृदय के समस्त रोगों में लाभ मिलता है, हृदय को बल मिलता है, और कमजोरी दूर होती है। हृदय की बढ़ी हुई धड़कन सामान्य होती है।
3. गेहूं का आटा 20 ग्राम लेकर 30 ग्राम गाय के घी में भून लें, गुलाबी हो जाने पर अर्जुन की छाल का चूर्ण 3 ग्राम और मिश्री 40 ग्राम तथा खौलता हुआ जल 100 ग्राम डालकर पकायें, जब हलुवा तैयार हो जाये तब प्रातः सेवन करें। इसका नित्य सेवन करने से हृदय की पीड़ा, घबराहट, धड़कन बढ़ जाना आदि शिकायतें दूर हो जाती है।
4. गेहूं और इसकी छाल को बकरी के दूध और गाय के घी में पकाकर इसमें मिश्री और मधु मिलाकर चटाने से अति उग्रहृदय रोग मिटता है।

हृदय रोग :

1. हृदय की शिथिलता में एवं उसमें उत्पन्न शोथ में इसकी छाल का चूर्ण 6 से 10 ग्राम तक गुड़ और दूध के साथ पकाकर और छानकर पिलाने से रक्त लसीका का जल रक्त वाहिनियों में नहीं भर पाता, फलतः शोथ का बढ़ना रूक जाता है जिससे हृदय की शिथिलता दूर हो जाती है।[5]
2. अर्जुन की छाल का रस 50 ग्राम, यदि गीली छाल न मिले तो 50 ग्राम सूखी छाल लेकर 4 किलोग्राम जल में पकावें। जब चौथाई शेष रह जाये तो क्वाथ को छान लें, फिर 50 ग्राम गौघृत को कढ़ाई में छोड़े, फिर इसमें अर्जुन की छाल का कल्क 50 ग्राम और पकाया हुआ रस तथा दुग्धादि द्रव पदार्थ को मिला मन्द–मन्द अग्नि पर पका लें। घृत मात्र शेष रह जाने पर ठंडा कर छान लें। अब इसमें 50 ग्राम शहद और 75 ग्राम कंद या मिश्री मिलाकर कांच या चीनी मिट्टी के पात्र में रखे। इस घी को 6 ग्राम प्रातः–सायं गौदुग्ध के साथ सेवन करें। यह घृत हृदय को बलवान बनाता है तथा इसके रोगों को दूर करता है।
3. हृदय की शिथिलता, तेज धड़कन, सूजन या हृदय बढ़ जाने आदि तमाम हृदय रोगों में अत्यंत प्रभावकारी योग है।
4. हार्ट अटैक हो चुकने पर 40 मिलीलीटर काढ़ा सुबह तथा रात दोनों समय सेवन करें। अनुपम हृदय शक्तिवर्धक (Heart or Cardiac tonic) है।
5. पूर्ण लाभ के लिए गाय के दूध में काढ़ा बना लेना आवश्यक है। इस क्षीर–पाक विधि से लेने से दिल की धड़कन तेज होना, हृदय में पीड़ा (एन्जाइना) घबराहट होना आदि दूर होते हैं।
6. हृदय रोगों में अर्जुन की छाल का कपडछान चूर्ण का प्रभाव इन्जेक्शन से भी अधिक होता है। जीभ पर रखकर चूसते ही रोग कम होने लगता है। इसे सारबिट्रेट गोली के स्थान पर प्रयोग करने पर उतना ही लाभकारी पाया गया। हृदय की अधिक धड़कनें और नाड़ी की गति बहुत कमजोर हो जाने पर

Scanned by CamScanner

इसको रोगी की जीभ पर रखने मात्र से नाड़ी में तुरंत शक्ति प्रतीत होने लगती है। इस दवा का लाभ स्थायी होता है और यह दवा किसी प्रकार की हानि नही पहुंचाती तथा एलोपैथिक की प्रसिद्ध दवा डिजीटेलिस से भी अधिक लाभप्रद है।

7. यह उच्च रक्तचाप में लाभप्रद है। उच्च रक्तचाप के कारण यदि हृदय पर शोथ या सूजन उत्पन्न हो गयी हो तो उसको भी दूर करता है।

उदावर्त्त : मूत्रवेग को रोकने से पैदा हुए उदावर्त्त को मिटाने के लिए इसकी छाल का 40 मिलीलीटर क्वाथ नियमित प्रातः–सायं पिलाना चाहिए।

रक्त अतिसार : अर्जुन की छाल का महीन चूर्ण 5 ग्राम, गाय के 250 ग्राम दूध में डालकर इसी में लगभग आधा पाव पानी डाल कर मंद आंच पर पकाये। जब दूध मात्र शेष रह जाये तब उतारकर सुखोष्ण हो जाने पर उसमें 10 ग्राम मिश्री या शक्कर मिला, नित्य सवेरे पीने से हृदय संबंधी सब रोग दूर हो जाते हैं। यह विशेषतः वातदोष हृदय रोग में लाभकारी है। यह अर्जुन सिद्ध दूध जीर्ण ज्वर रक्त अतिसार और रक्त पित्त में भी लाभदायक है।[6]

रक्तप्रदर : अर्जुन की छाल का 1 चम्मच चूर्ण 1 कप दूध में उबालकर पकायें, आधा शेष रहने पर थोड़ी मात्रा में मिश्री मिलाकर दिन में 3 बार सेवन करें।

प्रमेह :

1. अर्जुन की छाल, नीम की छाल, आमलकी छाल, हल्दी तथा नीलकमल के समभाग 20 ग्राम चूर्ण को 400 मिलीलीटर पानी में पकाकर 100 मिलीलीटर शेष बचे कषाय को मधु के साथ मिलाकर नित्य प्रातः–सायं सेवन करने से पित्तज प्रमेह नष्ट हो जाते हैं।
2. अर्जुन की पत्ती, बेल की पत्ती, जामुन की पत्ती, मृणाली, कृष्णा, श्रीपर्णी की पत्ती, मेहंदी की पत्ती, धाय की पत्ती, इन सभी पत्तियों के स्वरस से अलग–अलग खंड यूषों का घी, अम्ल तथा लवण मिलाकर निर्माण करें। ये सभी खड़यूष परम संग्राहिक होते हैं।[7]

शुक्रमेह : शुक्रमेह के रोगी को अर्जुन की छाल या श्वेत चंदन का क्वाथ नियमित प्रातः–सायं पिलाने से लाभ पहुंचता है।

मूत्राघात : मूत्राघात में अर्जुन की छाल का 40 मिलीलीटर क्वाथ बनाकर पिलाना चाहिए।

अस्थिभंग : हड्डी टूटने पर प्लास्टर चढ़ा हो तो अर्जुन की छाल का महीन चूर्ण एक चम्मच की मात्रा में दिन में 3 बार एक कप दूध के साथ कुछ हफ्ते तक सेवन करने से हड्डी मजबूत होती जाती है। भग्न अस्थि के स्थान पर भी इसकी छाल को घी में पीसकर लेप करें और पट्टी बांधकर रखें, इससे भी हड्डी शीघ्र जुड़ जाती है।

शोथ : गुर्दो पर इसका प्रभाव मूत्रल अर्थात् अधिक मूत्र लाने वाला है। हृदय रोगों के अतिरिक्त शरीर के विभिन्न अंगों में पानी पड़ जाने और शरीर पर शोथ आ जाने पर भी अर्जुन का सफलता से प्रयोग किया जाता है।

वादी के रोग : अर्जुन की जड़ की छाल का चूर्ण और गंगेरन की जड़ की छाल के बराबर मात्रा में चूर्ण कर 2–2 ग्राम की मात्रा में चूर्ण नियमित प्रातः–सायं फंकी देकर ऊपर से दूध पिलाने से वादी के रोग मिटते हैं।

रक्तपित्त : अर्जुन 2 चम्मच छाल को रात भर जल में भिगोकर रखें, सवेरे उसको मसल छानकर या उसको औटाकर उसका क्वाथ पीने से रक्तपित्त में लाभ होता है।

कुष्ठ : रक्तदोष एवं कुष्ठ रोग में इसकी छाल का एक चम्मच चूर्ण जल के साथ सेवन करने से एवं इसकी छाल को जल में घिसकर त्वचा पर लेप करने से कुष्ठ में लाभ होता है।

ज्वर : इसकी छाल का 40 मिलीलीटर क्वाथ पिलाने से ज्वर छूटता है।

व्रण :

1. इसकी छाल को यवकूट कर क्वाथ बनाकर व्रणों और जख्मों को धोने से लाभ होता है।
2. इसकी जड़ के चूर्ण की फंकी 1 चम्मच दूध के साथ देने से चोट या रगड़ लगने से जो नील पड़ जाता है, वह ठीक हो जाता है।

जीर्ण ज्वर : इसकी छाल के 1 चम्मच चूर्ण की गुड़ के साथ फंकी लेने से जीर्ण ज्वर मिटता है।

अर्जुन छाल क्षीरपाक विधि : अर्जुन की ताजा छाल को छाया में सूखाकर चूर्ण बनाकर रख लें। 250 ग्राम दूध में 250 ग्राम (बराबर वजन) पानी मिलाकर हल्की आंच पर रख दें और उसमें उपरोक्त तीन ग्राम (एक चाय का चम्मच हल्का भरा) अर्जुन छाल का चूर्ण मिलाकर उबालें। जब उबलते–उबलते पानी सूखकर दूध मात्र अर्थात् आधा रह जाये तब उतार लें। पीने योग्य होने पर छानकर रोगी द्वारा पीने से सम्पूर्ण हृदय रोग नष्ट होते हैं और हार्ट अटैक से बचाव होता है।

1. ककुभः शीतलो हृद्यः क्षतक्षयविषास्रजित्।
मेदोमेहव्रणान् हन्ति तुवरः कफपित्तहृत्।। (भाव प्रकाश)
2. सालसाराज कर्णरवदिर कदरकाल स्कन्धक्रमुकभूर्जमेष।। (सुश्रुत)
3. बीरतरू सहचर द्वयदर्भ वृक्षादनी गुन्द्रानल कुशकाश।।(सुश्रुत)
4. न्याग्रोधोदुम्बराश्वत्थप्लक्षमधुककपीतन ककुभाम्रको।। (सुश्रुत)
5. अर्जुनस्य त्वचा सिद्ध क्षीरं योज्यं हृदयामये।
सितया पंचमूल्या वा बलया मधुकेन वा।।
6. घृतेन दुग्धेन गुड़ाम्भसा वा पिबन्ति चूर्ण ककुभत्वचो ये।
हृद्रोग जीर्णज्वररक्तपित्तं हृत्वा भवेयुश्चिरजीविनस्ये।।(च०द०)
7. वेवसार्जुन जम्बूना मृणाली कृष्णागंधयोः।
श्रीपर्णी भदयनयाश्व यूथिकायश्व पल्भवान।।

Scanned by CamScanner

श्योनाक (टुण्डुका)

वैज्ञानिक नाम	:	*Oroxylum indicum* (L.) Vent.
कुलनाम	:	Bignoniaceae
अंग्रेजी नाम	:	Sword fruit tree, Indian trumpet tree
संस्कृत	:	श्योनाक, शुकनास, टुण्टुक
हिन्दी	:	सोनापाठा
गुजराती	:	अरडूसो
मराठी	:	टेंटू
बंगाली	:	शोणा, सोनालू
देहरादून	:	तारलू
तैलगु	:	पैद्दामानु
पंजाबी	:	मुलिन

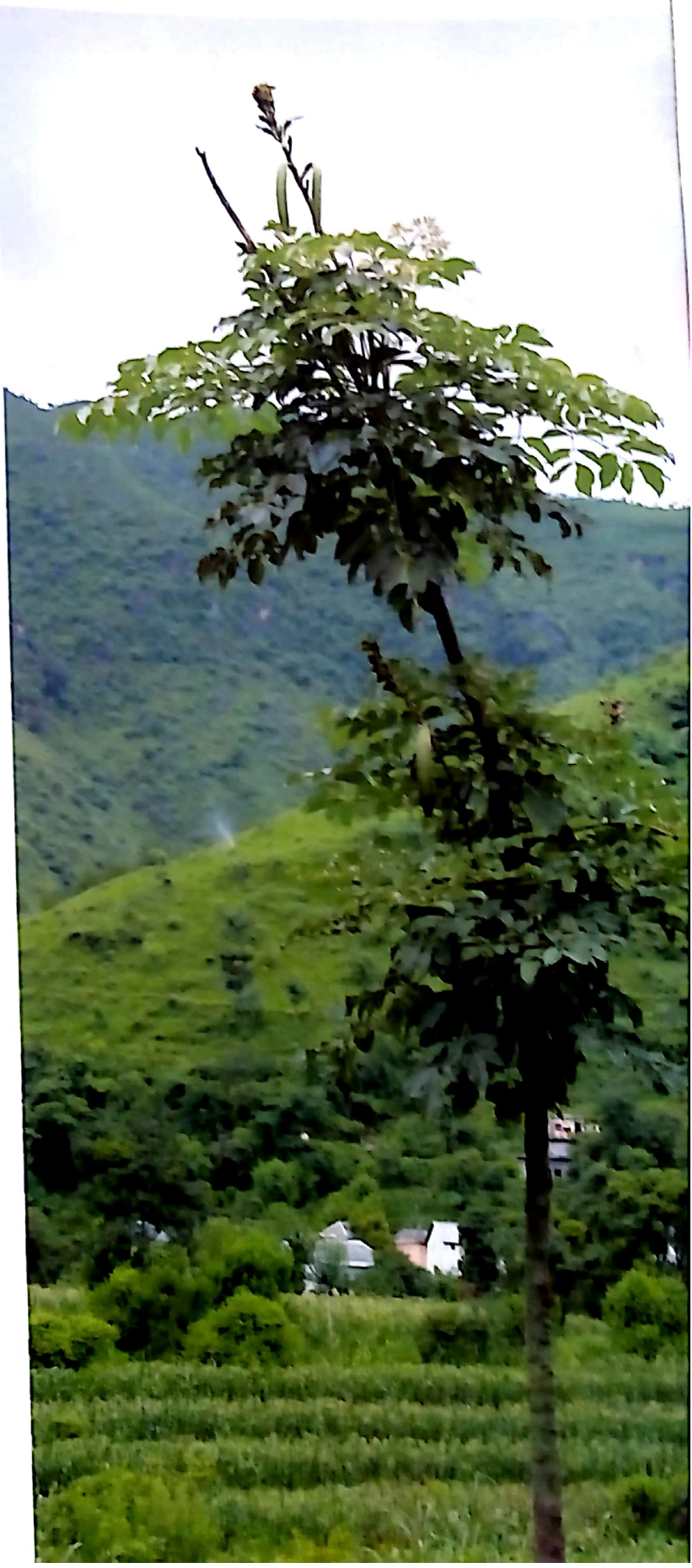

परिचय

श्योनाक के वृक्ष भारतवर्ष के पश्चिमी शुष्क प्रदेशों को छोड़कर प्रायः सर्वत्र पाये जाते हैं। इसकी जड़ की छाल का प्रयोग बृहत पंचमूल में किया जाता है। अतः यह बाजार में पंसारियों के यहां बिकती है। इसके वृक्ष 15–25 फुट तक ऊंचे होते हैं, परन्तु यदि परिस्थितियां अनुकूल और उपयुक्त हो तो बकायन की तरह 50 फुट तक के वृक्ष भी देखे जाते हैं। कुछ प्रदेशों में *Ailanthus excelsa* घोड़ानिम्ब का प्रयोग अरलू या श्योनाक की जगह करते हैं, परन्तु वास्तव में घोड़ानिम्ब दूसरी जाति का पौधा है। यहां पर जो विवरण दिया जा रहा है वह 'श्योनाक' जिसे लैटिन में *Oroxylum indicum* कहते हैं।

बाह्य–स्वरूप

इसके वृक्ष पर्णपाती तथा मध्यम ऊँचाई के होते हैं। पत्तियां तीन से पांच इंच लम्बी, दो से साढे तीन इंच चौड़ी, लट्वाकार, लम्बाग्र और चिकनी तथा पत्रनाल और पत्रदंड पर दाने पड़े होते हैं। पत्तियां प्रायः त्रिपक्षाकार, द्विपक्षाकार या एक पक्षाकार होती है। पुष्प वाहक दंड बहुत लम्बा (2–3 फीट तक) पुष्प बहुत बड़े मांसल बैंगनी रंग के तथा दुर्गन्ध युक्त होते हैं। फली तलवार जैसी टेढ़ी चिकनी कठोर ढाई इंच से एक फीट लम्बी तथा दो इंच से साढ़े तीन इंच तक चौड़ी होती है। बीज चपटे और आधार के अतिरिक्त चारों ओर सफेद झिल्लीदार पंख युक्त होते हैं। बसंत में वृक्ष निष्पत्र हो जाता है। जिसमें तलवार जैसी फलियां लटकी रहती है। ग्रीष्म एवं वर्षा में फूल तथा जाड़ों में फल लगते हैं।

Scanned by CamScanner

रासायनिक संघटन

मूल व तने की छाल में तीन फ्लेवोन रंजक द्रव्य ओरोक्सीलिन 'ए', बैकेलिन और क्राइसिन होते हैं। इनके अतिरिक्त इसमें एक क्षाराभ, टैनिक एसिड, सिटारटेरोल और ग्लेक्टोज पाये जाते हैं। बीजों में 20 प्रतिशत तक पीले रंग का तेल मिलता है। औषधीय गुणयुक्त अंग, छाल, पत्ते और बीज।

गुण–धर्म

यह उष्ण होने से कफ तथा वात शामक है। छाल को बाहर से लगाने पर शोथहर, व्रणरोपण एवं वेदनाहर है। रस में तिक्त व उष्ण होने के कारण यह दीपन, पाचन, रोचन, ग्राही तथा कृमिघ्न है। इसके अतिरिक्त शोथ को दूर करने वाला, मूत्रल, कफ को बाहर निकालने वाला, ज्वर दूर करने वाला व कटुपौष्टिक है। यह विशेषकर कफ व वात से अथवा आम से होने वाले विकारों में प्रयोग होता है। सामान्य कमजोरी में विशेष रूप में पेट की गड़बड़ी से होने वाली कमजोरी में इसका उपयोग बहुत लाभकारी है। इससे पेट ठीक होता है, अग्नि बढ़ती है, और धीरे–धीरे ताकत आने लगती है।

औषधीय प्रयोग

कर्णशूल : श्योनाक की छाल को पानी के साथ महीन पीसकर तिलों के तेल में रख लें और तैल में दुगना पानी डालकर मंद अग्नि पर पकायें, जब तेल मात्र शेष रह जाये तब इसको छानकर शीशी में भरकर रख लें, इस तेल की 2–3 बूंदे कान में टपकाने से वात कफ पित्त से उत्पन्न हुआ शूल मिटता है।

मुंह के छाले : श्योनाक की जड़ की छाल का क्वाथ बनाकर कुल्ले करने से मुंह के छाले ठीक हो जाते हैं।

श्वास–खांसी :

1. इसकी छाल के चूर्ण को एक ग्राम की मात्रा में अदरक के रस व शहद के साथ चटाने से श्वास में लाभ होता है।
2. इसके गोंद के 2 ग्राम चूर्ण को थोड़ा–थोड़ा दूध के साथ खिलाने से खांसी मिटती है।

मंदाग्नि : श्योनाक की 20–30 ग्राम छाल को ठंडे या 200 मिलीलीटर गरम पानी में चार घण्टे भिगोकर रख दें, तत्पश्चात मसल छानकर पी लें, इसको दिन में दो बार सेवन करने से मंदाग्नि मिटती है।

अतिसार :

1. श्योनाक की छाल और कुटज की छाल का 2 चम्मच रस पिलाने से अतिसार मिटता है।
2. इसकी जड़ की छाल और इन्द्रजौ के पत्ते दोनों का पुट बनाकर स्वरस निकाल कर उसमें मोच रस मिलाकर 1 चम्मच की मात्रा में चटाने से अतिसार और आमातिसार मिटता है।
3. श्योनाक की छाल व पत्तों को बारीक पीसकर गोली बनाकर उसके ऊपर बड़ के पत्ते लपेट कर कपड़ा मिट्टी कर भांड में डाल दें, जब मिट्टी पककर लाल हो जाये तब उसको निकाल कर ठंडा होने पर दबाकर रस निकाल ले। इस रस में से 20 ग्राम रस सुबह–शाम पीने से बहुत दिनों का अतिसार, खूनी दस्त इत्यादि में आराम होता है।
4. इसके गोंद के 2–5 ग्राम चूर्ण को थोड़ा–थोड़ा दूध के साथ खिलाने से आम अतिसार मिटता है।

बवासीर : श्योनाक की छाल, चित्र कमूल, इन्द्रजौं, करंज की छाल, सैंधा नमक, सौंठ इन सब औषधियों को समान भाग लेकर पीस–छान करके महीन चूर्ण बना लें, इस चूर्ण को डेढ से तीन ग्राम तक की मात्रा में दिन में तीन बार छाछ के साथ सेवन करने से बवासीर में लाभ होता है।

प्रसूति–जन्य दुर्बलता : प्रसव में जिन स्त्रियों को चार छह दिन तक भयंकर पीड़ा हो, इनको श्योनाक की छाल का 500 से 650 मिलीग्राम चूर्ण इतनी ही शुंठी चूर्ण व इतनी ही मात्रा में गुड़ लेकर तीनों को मिलाकर तीन गोलियां बना लें। इन गोलियों को सुबह दोपहर और शाम दशमूल क्वाथ के साथ देने से चमत्कारिक ढंग से सब पीड़ाएं दूर होती है। 10–15 दिन तक लगातार देते रहने से सब पीडायें व कमजोरी दूर हो जाती है।

उपदंश : श्योनाक की बारीक पिसी हुई सूखी छाल के 40–50 ग्राम चूर्ण को पानी में चार घण्टे भिगो दे, इसके बाद छाल को और पीस लें तथा उसी पानी में छानकर मिश्री मिलाकर सात दिन तक सुबह–शाम सेवन करें। पथ्य में गेहूं की रोटी, घी शक्कर खायें। सात दिन तक स्नान न करें। आठवें दिन नीम के पत्तों के क्वाथ से स्नान करें व परहेज छोड़ दें।

सन्धिवात :

1. आमवात तथा वात प्रधान रोगों में इसकी जड़ व सौंठ का फांट बनाकर दिन में तीन बार 50 मि.ली. की मात्रा में पीने से लाभ होता है।
2. इसकी छाल के चूर्ण को 125 मिलीग्राम से 250 मिलीग्राम तक की मात्रा में दिन में तीन बार नियमित रूप से सेवन करने से तथा इसके पत्तों को गरम करके सन्धियों पर बांधने से संधिवात में बहुत लाभ होता है।

मलेरिया ज्वर :

1. श्योनाक की लकड़ी का छोटा सा प्याला बना लें, रात को इसमें पानी भरकर रख दें और प्रातःकाल उठकर पी लें। इस प्रयोग से नियतकालिक ज्वर, एकान्तरा, तिजारी, चौथियां इत्यादि सब प्रकार के विषम ज्वरों का नाश होता है।
2. श्योनाक, शुंठी, बेल के फल की गिरी, अनारदाना, अतीस इन सब द्रव्यों को समान भाग लेकर यवकूट कर लें। इसमे से 10

Scanned by CamScanner

ग्राम औषधि, आधा कि०ग्रा० पानी में उबालें, 125 मिलीलीटर पानी शेष रहने पर छानकर सुबह, दोपहर तथा शाम पिलाने से सब प्रकार के ज्वर व अतिसार नष्ट होते हैं।

श्योनाक से पीलिया का विशेष उपचार: श्योनाक से पीलिया का उपचार करके सिक्किम के 70 वर्षीय मणिकुमार प्रधन हजारों पीलिया रोगियों को ठीक कर चुके हैं। पहली बार किसी वैद्य द्वारा बतलाने पर इस उपचार से उन्होंने खुद अपने भयानक पीलिया को ठीक किया था। सिक्कम की स्थानीय भाषा में श्योना को 'टोटला' कहते हैं। श्री मणिकुमार के भानजे श्री एम. के. प्रधन, एडीशनल कमिश्नर, एक्साइज, सिक्किम सरकार, ने एक पत्र द्वारा इसके बारे में हमें सूचित किया है। अतः लोक कल्याण के लिये इस उपचार की विधि यहाँ दी जा रही है।

विधिः श्योनाक का 150 – 200 ग्राम ताजा छिलका उतार कर, कूट कर, रात को एक गिलास पानी में भिगो कर रख लें। प्रातः खाली पेट, कपूर (या भीमसेनी कपूर) की दो टिक्की (100 मिली ग्राम) का चूर्ण बना कर निगल लें। इसके 15 मिनट बाद श्योनाक की छाल वाला पानी नितार कर पी लें। इसके दो घंटे बाद नाश्ता या भोजन लें। रोगी की स्थिति के अनुसार एक, दो, तीन दिन तक इसका सेवन करें।

आयु–अवस्था के अनुसार प्रयोग विधि :

पहले कपूर चूर्ण पानी से लें। इसके 15 मिनट बाद श्योनाक का पानी लें। नाश्ता या भोजन दो घंटे बाद करें।

8–15 वर्ष तक के बच्चे के लिये :

कपूर की एक (50 मि०ग्रा०) टिकिया व श्योनाक की छाल वयस्क मात्रा से आधी (75–100 ग्रा०)। 8 वर्ष से कम आयु के लिये, कपूर – ½ टिकिया (25 मि०ग्रा०) व श्योनाक की छाल वयस्क मात्रा से ¼ (40–50 ग्राम)। 8 दिन के शिशु के लिये– कपूर ड्राप– एक बूँद, छाल का पानी– छह बूँद। केवल एक बार देना है। पीलिया का रोग पुराना हो तो अधिकतम 3 से 7 दिन तक इसका सेवन करें। (कपूर निर्धारित मात्रा से अधिक न लें, अन्यथा बेहोशी आ सकती है।) हैपेटाइटिस–बी के हौवे से घबराये नहीं।

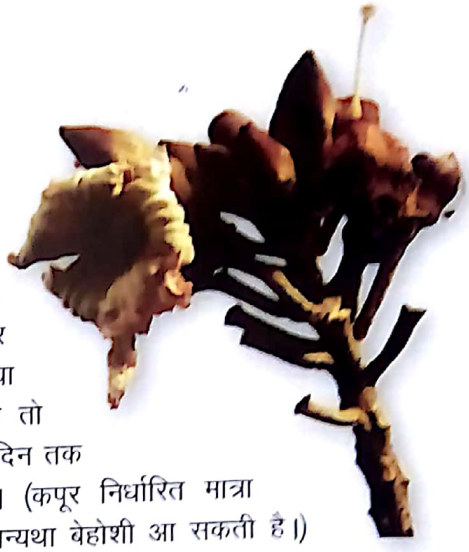

सोनापाठा की छाल

दवा बनाने वाली कुछ कम्पनियाँ अथवा थोक एजेंट अपने उत्पादन की बिक्री एवं मशहूरी बढ़ाने के लिये आम जनता में किसी रोग विशेष के प्रति इतना भय, आतंक, अफवाह, आकर्षण फैला देते हैं कि जिससे उनका उतपाद मुँहमांगी कीमत पर बिक सके। हैपेटाइटिस–बी को जानलेवा बीमारी घोषित करके दवा कम्पनियाँ इसी बाजारवादी मानसिकता का परिचय दे रही हैं जिससे घबराने की जरूरत नहीं है। यह बात पढ़े–लिखे लोग भी नहीं जानते है कि हैपेटाइटिस–बी आखिर है कौन सी बीमारी। इसका मतलब है 'हैपे' यानी लीवर का इंफेक्शन, जिसे आम बोलचाल की भाषा में पीलिया कहते हैं। यदि पीलिया कह कर इसका प्रचार किया जाता है तो आम व्यक्ति इनके बहकावे में कैसे आ पाता। भय, लालच, रहस्य ये तीन ऐसे शक्तिशाली तीर हैं जिनसे दवा कम्पनियाँ सीधे पब्लिक का शिकार करती हैं और सरकार तथा प्रशासन अपनी लाचारी दिखा जाते हैं।

पीलिया का मुकाबला मनुष्य जाति सदियों से करती आ रही है लेकिन इसे बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ द्वारा हैपेटाइटिस–बी बता कर एक खौफ मन में पैदा कर दिया गया है। फर्क केवल इतना आया है कि आधुनिक चिकित्सा ने उस वायरस की पहचान कर ली है जिसे हैपेटाइटिस–बी, ए, सी, ई, जी कहते हैं। इनमें सभी वायरसों का इंफैक्शन सामान्य (वेनाइन) श्रेणी का ही होता है और साधारण दवा से ही रोगी ठीक हो जाता है। पीलिया के कारण आधे प्रतिशत से भी कम व्यक्तियों को ठीक से उपचार न मिलने के कारण मृत्यु होती है। इससे अधिक मौतें तो हर साल मलेरिया से हो जाती है। हैपेटाइटिस–बी का टीका इन दिनों खुले बाजार में 500–600 रूपया मूल्य पर मिल रहा है जबकि स्वयंसेवी संस्थाओं व डाक्टारों को रियायती दर में सिर्फ 85–160 रूपया में उपलब्ध कराया जा रहा है।

1. श्योनाको दीपनः पाके कटुकस्तुवरोहिमः।
ग्राही तिक्तोऽनिलश्लेष्मपित्तकासामनाशनः।।
(भाव प्रकाश)

2. टुंटुकस्य फलं बालं रूक्षं वातकफापहम्।
हृद्यं कषायं मुधरं रोचनम् लघु दीपनम्।

3. गुल्मार्श कृमिहत्प्रोंढं गुरूवात प्रकोपणम्।। (भाव प्रकाश)

4. टिंटुकोऽशिशिरस्तिक्तो बस्तिरोगहरः परः।
पित्तश्लेष्मामवातातीसारकासारूचीर्जयेत। (ध० नि०)

Scanned by CamScanner

अरणी

25

वैज्ञानिक नाम	:	*Premna latifolia* Roxb.
कुलनाम	:	Verbenaceae
संस्कृत	:	अग्निमंथ, गाणिकारिका, तकीर्ण
हिन्दी	:	अरनी, गनियार, अगेथू
गुजराती	:	अरणी
मराठी	:	ऐरण, ताकली
पंजाबी	:	अगेथु
तैलगु	:	तक्किली, चट्टु

परिचय

यह उत्तर भारत में विशेषतः गंगा के मैदानों तथा उत्तर प्रदेश, बिहार तथा पश्चिम बंगाल में पाया जाता है। कुमाऊ से भूटान तक पहाड़ियों में 5,000 फीट की ऊंचाई तक पाया जाता है। दशमूल का उपादान होने से इसका मूल पंसारियों के यहां मिलता है, इसकी लकड़ी को आपस में रगड़कर अग्नि उत्पन्न की जाती है, अतः इसे अग्निमंथ कहा गया है। इसकी एक और जाति पाई जाती है, जिसे छोटी अरणी, तर्करी, टेकार तथा *Clerodendrom* sp. कहते हैं। बडी अरणी की भी कई और प्रजातियां मिलती है।

बाह्य–स्वरूप

बड़ी अरणी : यह 25–30 फुट ऊंचा वृक्ष होता है। तने की छाल हल्के धूसर रंग की, पत्र अभिमुख, 2–6 इंच लम्बे, दोनों सिरों पर पतले प्रायः लम्बाग्र 5–6 जोड़ी शिराओं से युक्त होते हैं। सूखने पर ये काले पड़ जाते हैं और मसलने से इनमें से दुर्गन्ध आती है। पुष्प मंजरी 2–5 इंच व्यास की विभक्त, रोमश, पुष्प द्विओष्ठी, हरिताभ, श्वेत वर्ण की होती है। फल गोलाकार, दबा हुआ करौंदे की तरह का बैंगनी और काला होता है। पुष्पागम अप्रैल–मई में तथा फलागम मई–जून में होता है। इसकी पुरानी शाखाओं पर आमने–सामने मजबूत कांटे होते हैं।

छोटी अरणी : इसका प्रसारणशील गुल्म या छोटा वृक्ष 10 फुट तक ऊंचा, पत्र अभिमुख, दंतुर, प्रायः दो इंच लम्बे चौड़े वक्षीय या शीर्षस्थ गुच्छों में श्वेत वर्ण के अत्यंत सुगंधित होते हैं तथा इसके फल अंडाकार, सूखने पर चार खण्डों में फट जाते हैं। पुष्पागम सितम्बर से मार्च तक होता है।

गुण–धर्म

अग्नि वर्धक, शोथ, कफ, वात तथा पांडुरोग हरने वाली यह कटु पौष्टिक, कफघ्न, अनुलोमन तथा शीत–प्रशमन है।[1]

मूल : इसकी जड़ विरेचक, अग्निवर्धक तथा यकृत की पीड़ा को दूर करने वाली है।

छोटी अरणी : छोटी अरणी कड़वी, चरपरी, उष्ण ,मधुर तथा वात कफ, शोथ तथा पांडु हरने वाली है।[2]

विशेष : दोनों अरणी गुण में समान है।

औषधीय प्रयोग

हृदय दौर्बल्य : अरणी के पत्ते और धनिये का 60–70 मिलीलीटर क्वाथ पिलाने से हृदय की दुर्बलता मिटती है।

त्रिदोष गुल्म : बड़ी या छोटी अरणी की जड़ों के 100 मि०ली० गरम काढ़े में 30 ग्राम गुड़ मिला कर देने से त्रिदोष गुल्म दूर हो जाता है।

उदर रोग :

1. अरणी की 100 ग्राम जड़ों को लेकर आधा सेर पानी में मंद आंच पर 15 मिनट तक उबालें, तथा 100 ग्राम पानी दिन में दो बार पीने से जठराग्नि प्रबल होती है। यह औषधि पौष्टिक भी है।

Scanned by CamScanner

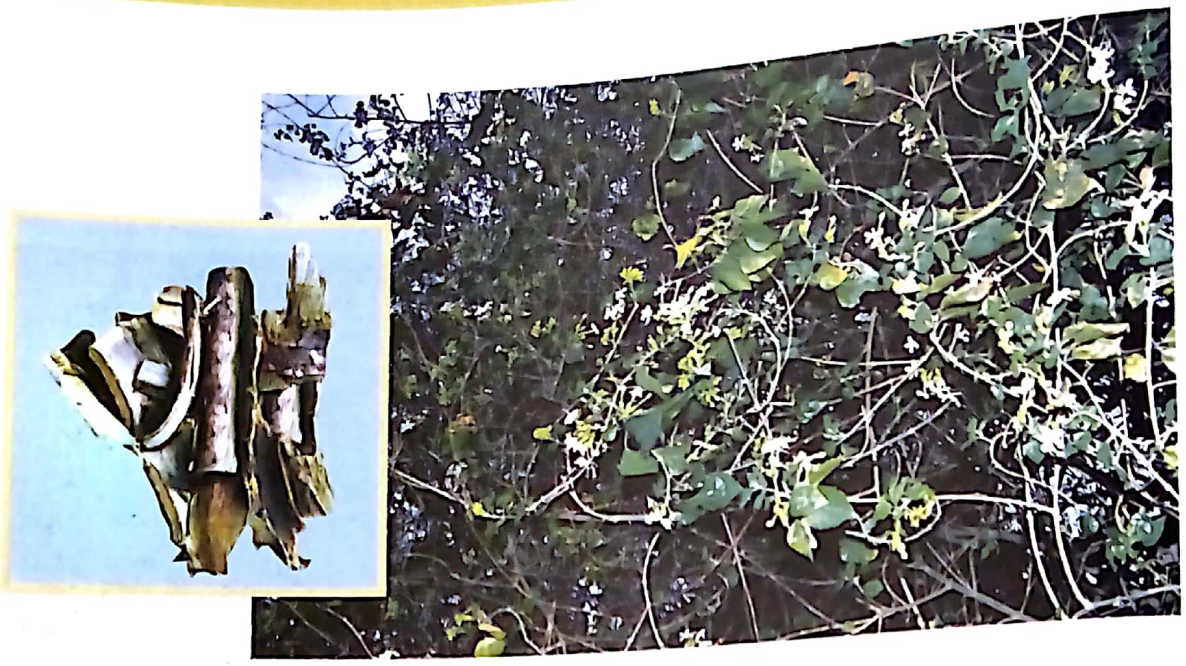

छोटी अरनी

2. इसके पत्तों का 100 मि०ली० क्वाथ बनाकर सुबह–शाम पीने से मंदाग्नि मिटती है तथा अफारा भी दूर होता है।
3. इसके पत्तों को उबालकर मसल छानकर 100 मिलीलीटर की मात्रा पिलाने से आमाशय का शूल मिटता है।
4. इसके पत्तों का साग बनाकर खाने से पेट की बादी मिटती है।
5. इसकी जड़ का 60 ग्राम क्वाथ दिन में दो बार पिलाने से ज्वर चढ़े व्यक्ति का उदरशूल मिटता है।

बद्धकोष्ठ : अरणी के पत्ते और हरड़ की छाल का 100 मिलीलीटर क्वाथ करके सुबह शाम 30 मि०ली० की मात्रा में पिलाने से बद्धकोष्ठता मिटती है।

हस्ति प्रमेह : इसकी जड़ का 100 मि०ली० क्वाथ सुबह–शाम पिलाने से हस्ति प्रमेह मिटता है। इस क्वाथ के पीने से वसा मेह भी मिटता है।

बवासीर : अरणी के पत्तों का 100 मिलीलीटर काढ़ा पिलाने से तथा इसके पत्तों की पुल्टिस बनाकर बांधने से अर्श की वेदना कम होती है।

सूजन :

1. इसकी जड़ का 100 मि०ली० क्वाथ बनाकर दोनों समय पीने से पेट की शूल, जलोदर और सब प्रकार की सूजन मिट जाती है।
2. अरणी की जड़ और पुनर्नवा की जड़ दोनों को एक साथ पीसकर गरम कर लेप करने से शरीर की सब ढीली पड़ी हुई सूजन उतर जाती है।

गठिया : अरणी के पंचांग का 100 मि०ली० क्वाथ सुबह–शाम पिलाने से गठिया और स्नायु की वात पीड़ा मिटती है।

ज्वर :

1. शीतज्वर में बड़ी अरणी की जड़ को मस्तक पर बांधे।
2. अरणी के 10–15 पत्तों और 10 काली मिर्च को पीसकर सुबह–शाम देने से सर्दी का बुखार उतर जाता है।

शीतपित्त : इसकी जड़ का 2 ग्रा० चूर्ण 6 दिन घी के साथ खिलाने से शीतपित्त मिटता है तथा उदर्द रोग भी मिटता है।

अतिसार : इसके पंचाग का काढ़ा 30 मि०ली० सुबह–शाम पीने से अतिसार में लाभ होता है तथा पेट के कीड़े मर जाते हैं।

रक्तशुद्धि :

1. इसकी जड़ का 100 मि०ली० क्वाथ बनाकर दोनों समय 20 से 30 मि०ली० पीने से रक्त शुद्ध होता है तथा हृदय को बल मिलता है।
2. इसके पत्तों के रस में मधु मिलाकर पिलाने से भी रक्त की शुद्धि होती है।

उपदंश : इसके पत्रों का 12 ग्राम या कुछ अधिक रस, दिन में दो बार कुछ दिनों तक पीने से पुराना उपदंश मिटता है।

1. अग्निमन्थः श्वयथुनुद्वीर्येष्णः कफवातहत्।
पांडुनुत कटुकस्तिक्तस्तुवरो मधुरोऽग्निद।। (भाव प्रकाश)
2. तर्कारी कटुका तिक्ता तथोष्णाऽनिलपांडुनुत।
शोथश्लेष्माग्निमांद्यामविबन्धांश्च विनाशयेत।। (घ०नि०)
3. तर्कारी कटुका तिक्ता तुवरा मधुरोऽग्निदा।
वीर्योष्णा हरते वातकफश्वयथुपांडुताः।। (कै०नि०)

Scanned by CamScanner

अशोक

26

वैज्ञानिक नाम	:	*Saraca asoca* (Roxb.) de Wilde
कुलनाम	:	Caesalpiniaceae
अंग्रेजी	:	Ashok tree
संस्कृत	:	ताम्रपल्लव, अशोक, मधुपुष्प, हेमपुष्प, अपशोक, भंजरी
हिन्दी	:	अशोक
गुजराती	:	अशांक
मराठी	:	अशोक
पंजाबी	:	अशोक
तैलगु	:	अशोकमु, नांजूलामु
द्राविड़ी	:	अशोकम्
कन्नड़	:	अशोक

परिचय

अशोक के वृक्ष भारतवर्ष में सर्वत्र बाग–बगीचों में सुन्दरता के लिए लगाये जाते हैं। यह 2,000 फीट की ऊंचाई पर बहुतायत में पाया जाता है।

बाह्य–स्वरूप

अशोक का वृक्ष 25 से 30 फुट तक ऊंचा, सदाहरित, बहुशाखी सघन व छायादार होता है। कांडत्वक, शुभ घूसर, खुरदरी, अंदर से रक्त वर्ण कुछ सूफदार होती है। पत्र 9 इंच लम्बे, गोल व नोकदार दोनों ओर 5–6 जोड़ों में लगते हैं। कोमलावस्था में ये श्वेताभ लाल वर्ण के परंतु बाद में गहरे हरे रंग के हो जाते हैं। पत्रकों के किनारे किंचित लहरदार होते हैं। पुष्प गुच्छों में नारंगी और लाल रंग के सुगन्धित अति सुन्दर होते हैं। फलियाँ 4–10 इंच लम्बी, 1–2 इंच चौड़ी, बैशाख–जेठ में लगती है। फली के अंदर 4–10 तक बीज होते हैं। कच्ची फली गहरे बैंगनी रंग की और पकने पर काले रंग की हो जाती है। बीज 1 से 1.5 इंच लम्बे, चपटे, ऊपर का छिलका लाल चमड़े के समान मोटा होता है। पेड़ में गोदने से श्वेत रस निकलता है जो शीघ्र ही वायु में सूखकर लाल हो जाता है। यही अशोक का गोंद होता है।

रासायनिक संघटन

अशोक की छाल में टैनिन्स, कैटेकाल, एसेंशियल ऑयल, हीमेटोक्सीलिन, कीटोस्टेराल, ग्लाइकोसाइड, सेपोनिन्स, कैल्शियम युक्त और लौह युक्त कार्बनिक यौगिक पाये जाते हैं। अशोक की छाल के कीटोस्टेरॉल में 'एस्ट्रोजन हारमोन' जैसी क्षमता पाई जाती है। प्रजनन संस्थान पर प्रभावी होने का इसका यही मूल कारण है।

गुण–धर्म

यह हल्का रूखा, कषैला, चरपरा, विपाक में कटु और शीतल होता है। यह ग्राही, रक्त संग्राहक, वेदना स्थापक वर्ण को उज्जवल करने वाला, हड्डी जोड़ने वाला, अच्छी सुगंध वाला, हृद्य, त्रिदोषहर, तृषा, दाह, कृमि, शोथ, गुल्म, शूल, उदर रोग, आध्मान, विष, अर्श, रक्त विकार, गर्भाशय की शिथिलता, सर्व प्रकार के प्रदर, ज्वर, सन्धिवातज पीडा और अपची आदि रोगों का नाशक है। यह शीतल, रूचिर, कृमिनाशक है। इसका प्रयोग कष्टार्तव, रक्तपित्त, अश्मरी, मूत्रकृच्छ्र, में करते हैं।[1] अशोक की छाल कटुतिक्त, ज्वर व तृषा नाशक, आंत्रसंकोचक, अपच की बीमारी को दूर करने वाली, रक्त विकार, थकावट, शूल, अर्श इत्यादि रोगों में लाभदायक है। इसके अतिरिक्त पेट बढ़ने की बीमारी, अत्यधिक रक्तस्राव, गर्भाशय से रक्त स्राव, में उपयोगी है। इसकी छाल का स्वरस बहुत तेज संकोचक है एवं रक्त प्रदर का नाश करती है।[2]

Scanned by CamScanner

अशोक की छाल

औषधीय प्रयोग

बुद्धि वर्धक : अशोक की छाल, ब्राह्मी चूर्ण बराबर की मात्रा में मिलाकर एक-एक चम्मच सुबह-शाम एक कप दूध के साथ नियमित रूप से कुछ माह तक सेवन करने से बुद्धि तीव्र होती है।

मुहांसे : अशोक की छाल का काढ़ा उबाल लें, गाढ़ा होने पर इसे ठण्डा करके, इसमें बराबर की मात्रा में सरसों का तेल मिला लें। इसे मुहांसों, फोड़ों, फुन्सियों पर लगाएं। नियमित प्रयोग से लाभ होगा।

श्वास : इसके बीजों के चूर्ण की मात्रा 1 चावल भर, 6-7 बार पान के बीड़े में रखकर खिलाने से श्वास रोग में लाभ होता है।

उबटन : अशोक की छाल के स्वरस में सरसों को पीसकर छाया में सुखा लें, तत्पश्चात जब उबटन लगाना हो तब सरसों को इसकी छाल के स्वरस में ही पीसकर त्वचा पर लगायें। इससे रंग निखरता है।

वमन: फूलों को जल में पीसकर स्तनों पर लेप कर दूध पिलाने से स्तनपायी बालक का वमन रूक जाता है।

रक्त अतिसार : अशोक के 3-4 ग्राम फूलों को जल में पीसकर पिलाने से रक्त अतिसार में लाभ होता है।

रक्तार्श :

1. इसकी छाल का 40-50 मिलीलीटर क्वाथ पिलाने से रक्तार्श

Scanned by CamScanner

का रुधिर बन्द हो जाता है।

2. अशोक की छाल और इसके फूलों को बराबर की मात्रा में लेकर 30 ग्राम मात्रा को रात्रि में एक गिलास पानी में भिगोकर रख दें। सुबह पानी छानकर पी लें। इसी प्रकार सुबह का भिगोया हुआ शाम को पी लें। इससे खूनी बवासीर में शीघ्र आराम मिलता है।

प्रदर :

1. इसकी छाल का चूर्ण और मिश्री समभाग खरल कर रखें, 3 ग्राम की मात्रा गोदुग्ध से प्रातः–सायं देने से श्वेत प्रदर में लाभ होता है।
2. इसकी छाल के 40–50 मिलीलीटर क्वाथ को दूध में मिलाकर प्रातः–सायं पिलाने से श्वेत प्रदर और रक्त प्रदर में लाभ होता हैं।[3]
3. अशोक की 3 ग्राम छाल को चावल के धोवन में पीस लें, फिर छानकर इसमें 1 ग्राम रसौंत और 1 चम्मच मधु मिलाकर नियमित प्रातः–सायं सेवन करें, सब प्रकार के प्रदर में लाभ होगा। इस प्रयोग के साथ इसकी छाल के क्वाथ में फिटकरी मिलाकर योनि में इसकी पिचकारी लेनी चाहिये।
4. अशोक के 2–3 ग्राम फूलों को जल में पीसकर पिलाने से रक्त प्रदर में लाभ होता है। इसकी अंतर छाल का महीन चूर्ण 10 ग्राम, साठी चावल का चूर्ण 50 ग्राम, मिश्री चूर्ण 10 ग्राम, शहद 3 ग्राम प्रातः–सायं सेवन करने से रक्त प्रदर में विशेष लाभ होता है। इसे दिन में तीन बार सेवन करें।

मासिक धर्म : अशोक की छाल 80 ग्राम लेकर इससे चौगुने पानी में तब तक पकायें जब तक एक चौथाई पानी शेष न रह जाये, इसमें 80 ग्राम दूध डालकर तब तक उबालना चाहिये जब तक सब पानी जल जाये, तत्पश्चात् छानकर स्त्री को प्रातः–सायं पिलायें। इस दूध का मासिक धर्म के चौथे दिन से तब तक सेवन करना चाहिये, जब तक रक्तस्राव बन्द न हो जाये।

स्वप्नदोष : स्त्रियों के स्वप्नदोष में 20 ग्राम अशोक की छाल, यवकूट कर 250 ग्राम जल में पकावें, 30 ग्राम शेष रहने पर इसमें 6 ग्राम शहद मिलाकर सुबह–शाम सेवन करने से लाभ होता है। अशोक घृत या अशोकारिष्ट भी इसमें लाभकारी है।

योनिशैथिल्य : अशोक की छाल, बबूल की छाल, गूलर की छाल, माजूफल और फिटकरी समान भाग में पीसकर 50 ग्राम चूर्ण को

पीला अशोक–(लिंगापुर)

400 मिलीलीटर पानी में उबालकर 100 मिलीलीटर काढ़ा तैयार कर लें, इसे छान कर पिचकारी के माध्यम से रोज रात्रि योनि में पहुँचाए, फिर मूत्रत्याग एक घंटे के पश्चात् करें। कुछ ही दिनों के प्रयोग से योनि तंग हो जायेगी।

पथरी : अशोक के 1–2 ग्राम बीज को पानी में पीसकर नियमित रूप से दो चम्मच की मात्रा में पीने से मूत्र न आने की शिकायत और पथरी के कष्ट में आराम मिलता है।

अस्थिभंग : इसकी छाल का चूर्ण 6 ग्राम तक दूध के साथ प्रातः–सायं सेवन करने से तथा ऊपर से इसी का प्रलेप करने से टूटी हुई हड्डी जुड़ जाती है और वेदना शान्त हो जाती है।

1. अशोकः शीतलस्तिक्तो ग्राही वर्ण्यः कषायकः।
शोषापचीतृषादाहकृमिशोथविषास्रजित्।। (भावप्रकाश)
2. अशोकस्य त्वचा रक्तप्रदरस्य विनाशिनी। (शो०)
3. अशोकवल्कलक्वाथश्रृतं दुग्धं सुशीतलम्।
यथा बलं पिबेत्प्रातस्तीव्रासृग्दरनाशनम्।। (च०द०)

Scanned by CamScanner

27 असगंध (अश्वगंधा)

वैज्ञानिक नाम	:	*Withania somnifera* (L.) Dunal
कुलनाम	:	Solanaceae
अंग्रेजी नाम	:	Winter cherry
संस्कृत	:	अश्वगंधा, वराहकर्णी
हिन्दी	:	असगंध
गुजराती	:	आसंध, घोड़ा आहन, घोड़ा आकुन
मराठी	:	आसंध, डोरगुंज
बंगाली	:	अश्वगंधा
तैलगु	:	पनेरू

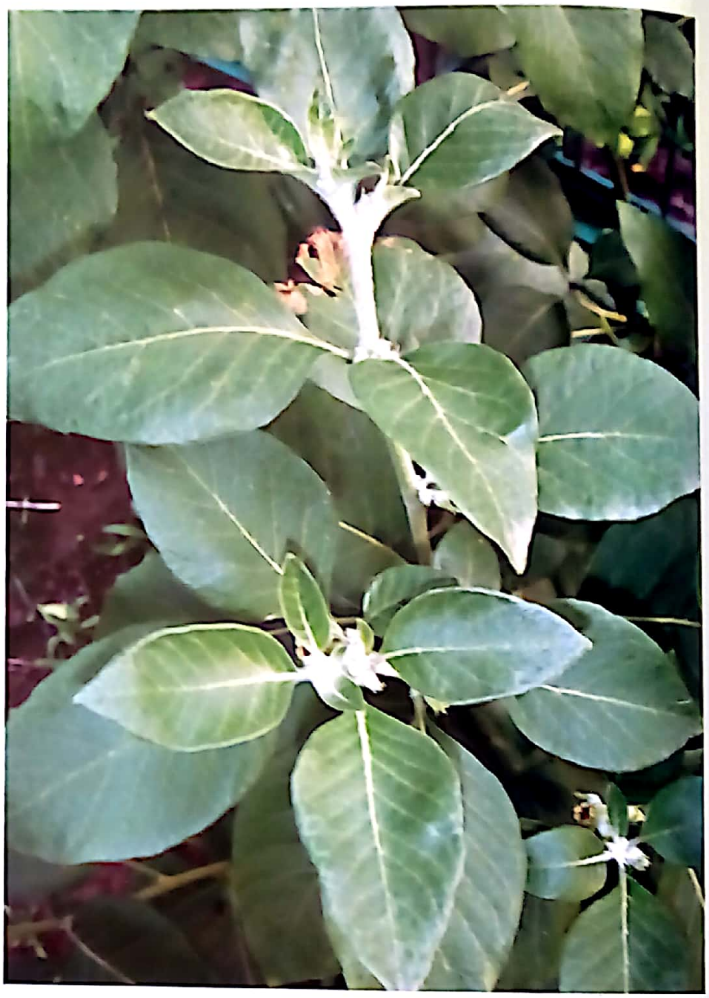

परिचय

सम्पूर्ण भारतवर्ष में विशेषतः शुष्क प्रदेशों में असगंध के स्वयंजात वन्यज या कृषिजन्य पौधे 5,500 फुट की ऊंचाई तक पाये जाते हैं। वन्यज पादपों की अपेक्षा कृषिजन्य पौधे गुणवत्ता की दृष्टि से उत्तम होते हैं, परन्तु तैलादि के लिए वन्यज पौधों का व्यवहार ही बेहतर है। यह देश भेद से कई प्रकार की कही गयी है, परन्तु असली असगंध के पौधे को मसलने पर अश्व के मूत्र जैसी गंध आती है जो इसकी ताजी जड़ में अपेक्षाकृत अधिक होती है।

बाह्य–स्वरूप

असगंध के 1–5 मीटर ऊंचे शाखा बहुल सीधे गुल्म होते हैं। पत्रयुग्म में 2–4 इंच लम्बे, 1–2 इंच चौड़े, अग्र पर नुकीले या कम चौड़े, पुष्प हरिताभ अथवा बैंगनी आभा लिये पीताभ, वृन्त रहित छत्रक समगुच्छों में, कैलिक्स घंटिकाकार तथा मृदु रोमश जो फलों के साथ बढ़कर रसभरी की भांति फलों को आवृत कर लेता है। फल मटर के आकार वाले, लाल तथा बाह्य आवरण शिखर पर खुला होता है। बीज असंख्य, अतिक्षुद्र, वृक्काकार तथा बीज चोल मधुमक्खी के छत्ते की भांति होता है। मूल शंक्वाकार, मूली की तरह परन्तु उससे कुछ पतली होती है।

रासायनिक संघटन

असगंध की जड़ में एक उड़नशील तेल तथा बिथेनिओल नामक तत्व पाया जाता है। इसके सिवाय सोम्मीफेरिन नामक क्रिस्टेलाइन एल्केलायड एवं फाइटोस्टेरोल आदि तत्व भी पाये जाते हैं।

गुण–धर्म

कफ वातनाशक, बल्य, वृंहण, रसायन, बाजीकरण, नाड़ी–बल्य, दीपन, पाचन आदि।

औषधीय प्रयोग

गंडमाला : असंगध के नवीन कोमल पत्रों को समान मात्रा में पुराना गुड़ मिलाकर तथा पीसकर झाड़ी के बेर जितनी गोलियां बना कर सुबह ही एक गोली बासी जल के साथ निगल लें और असगंधा के पत्तों को पीसकर गंडमाला पर लेप करे।

हृदय शूल :

1. वात के कारण हृदय रोग में असगंध का चूर्ण 2 ग्राम गरम जल के साथ लेने से लाभ होता है।

Scanned by CamScanner

2. असगंध चूर्ण में बहेड़े का चूर्ण समभाग मिलाकर 5–10 ग्राम की मात्रा गुड़ के साथ लेने से हृदय संबंधी बात पीड़ा दूर होती है।

क्षयरोग :

1. 2 ग्राम असगंध चूर्ण को असगंध के ही 20 ग्राम क्वाथ के साथ सेवन करने से क्षय रोग में लाभ होता है।
2. 2 ग्राम असगंध मूल के चूर्ण में 1 ग्राम बड़ी पीपल का चूर्ण, 5 ग्राम घी और 10 ग्राम मधु मिलाकर सेवन करने से क्षय रोग कटता है।

खांसी :

1. असगंध की 10 ग्राम जड़ों को कूट लें, इसमें 10 ग्राम मिश्री मिलाकर 400 ग्राम जल में पकाएं, जब आठवां हिस्सा रह जाये तो इसे थोड़ा–थोड़ा पिलाने से कुकुर खांसी या वात जन्य कास पर विशेष लाभ होता है।
2. असगंध के पत्तों का घन क्वाथ 40 ग्राम, बहेड़े का चूर्ण 20 ग्राम, कत्था चूर्ण 10 ग्राम, काली मिर्च 5 ग्राम, सौंधा नमक ढाई ग्राम को मिलाकर 500 मिलीग्राम की गोलियां बना लें। इन गोलियों को चूसने से सब प्रकार की खांसी दूर होती है। क्षयकास में भी यह विशेष लाभदायक है।

गर्भधारण :

1. असगंध चूर्ण 20 ग्राम, जल एक कि०ली० तथा गौ दूध 250 ग्राम तीनों को मंद अग्नि पर पकाकर जब दूध मात्र शेष रह जाये तब इसे 6 ग्राम मिसरी और 6 ग्राम गाय का घी मिलाकर मासिक धर्म की शुद्धिस्नान के तीन दिन बाद तीन दिन तक सेवन करने से स्त्री अवश्य गर्भ धारण करती है।
2. असगंध का चूर्ण, गाय के घी में मिलाकर मासिक धर्म स्नान के पश्चात् प्रतिदिन गाय के दूध के साथ या ताजे जल से 4–6 ग्राम की मात्रा में एक माह तक निरंतर सेवन करने से स्त्री गर्भधारण अवश्य करती है।
3. मूल के क्वाथ और कल्क में चौगुना घी मिलाकर पकाकर सेवन करने से वात व्याधि दूर होती है तथा स्त्री गर्भधारण करती है।

गर्भपात : गर्भपात की आदत होने पर असगंध और सफेद कटेरी की जड़ इन दोनों का 10–10 ग्राम स्वरस प्रथम मास से पांच मास तक सेवन करने से अकाल में गर्भपात नही होगा और गर्भपात के समय सेवन करने से गर्भ रूक जाता है।

रक्तप्रदर एवं श्वेत प्रदर : असगंध चूर्ण में बराबर की मिश्री मिलाकर एक–एक चम्मच गाय के दूध में मिलाकर सुबह–शाम सेवन करने से लाभ होता है।

कृमि रोग : इसके चूर्ण में बराबर गिलोय का चूर्ण मिलाकर मधु के साथ 5–10 ग्राम नियमित सेवन करने से लाभ होता है।

नेत्र ज्योति बढाने में : इसका चूर्ण 2 ग्राम, धात्रि फल चूर्ण दो ग्राम तथा एक ग्राम मुलेठी चूर्ण मिलाकर एक चम्मच प्रातः एवं सायं जल के साथ सेवन करने से नेत्रों की ज्योति बढ़ती है।

बद्धकोष्ठ : 5 ग्राम असगंध चूर्ण की फंकी गरम जल के साथ लेने से बद्धकोष्ठता मिटती है।

गठियावात :

1. असगंध के पंचाग को कूटकर, छानकर 25 से 50 ग्राम तक सेवन करने से गठिया वात दूर होता है। गठिया में असगंध के 30 ग्राम ताजा पत्ते, 250 ग्राम पानी में उबालकर जब पानी आधा रह जाये तो छानकर पी लें। एक सप्ताह पीने से ही गठिया में जकड़ा और तकलीफ से रोता रोगी बिल्कुल अच्छा जो जाता है तथा इसका लेप भी बहुत लाभदायक है।
2. असगंध के चूर्ण की मात्रा दो ग्राम सुबह–शाम गरम दूध तथा पानी के साथ खाने से गठिया के रोगी को आराम हो जाता है।

कटिशूल : इसके 2–5 ग्राम चूर्ण को गोघृत या शक्कर के साथ चाटने से कटिशूल और निद्रानाश में लाभ होता है।

संधिवात :

1. इसके तीन ग्राम चूर्ण को तीन ग्राम घी में मिलाकर, एक ग्राम शक्कर मिलाकर सुबह–शाम खाने से संधिवात दूर होता है।
2. असगंध की 15 ग्राम कोंपले या कोमल पत्र लेकर 200 ग्राम जल में उबालें, जब पत्ते गल जाये या नरम हो जाये तो छानकर गरम–गरम 3–4 दिन पीयें, इससे कफ जन्य खांसी भी दूर होती है।

नपुंसकता :

1. असगंध का कपड़छन चूर्ण और खांड बराबर मिलाकर रखे, इसको एक चम्मच गाय के ताजे दूध के साथ प्रातः भोजन

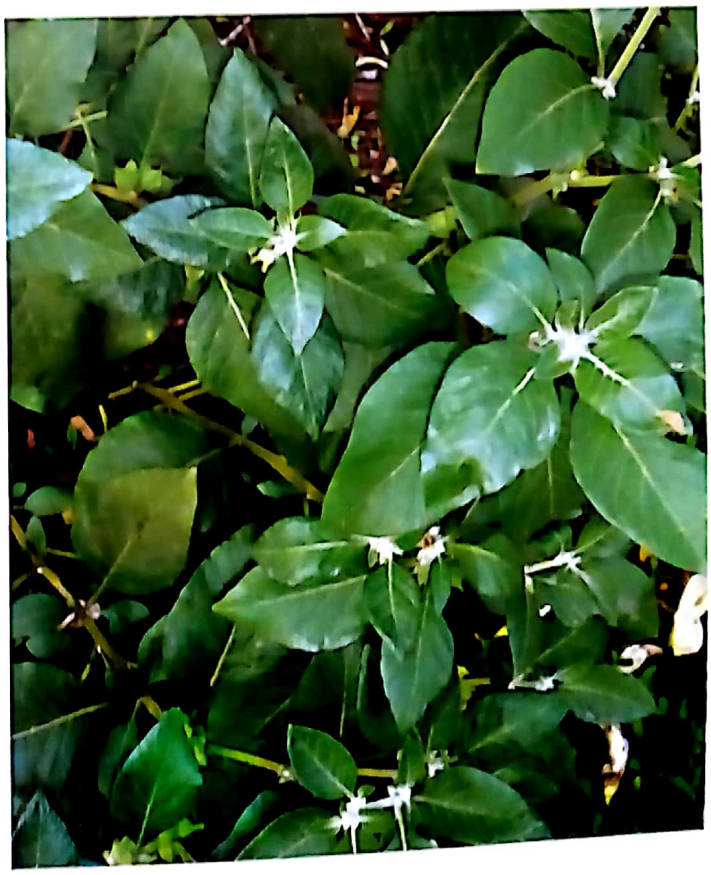

Scanned by CamScanner

से तीन घण्टे पूर्व सेवन करें। चुटकी–चुटकी कर चूर्ण को खाते हैं और ऊपर से दूध पीते रहे। रात्रि के समय इसके बारीक चूर्ण को चमेली के तेल में अच्छी तरह घोंटकर लगाने से इन्द्रिय की शिथिलता दूर होकर वह कठोर और दृढ़ हो जाती है।

2. असगंध, दालचीनी और कडुवा कूठ समभाग कूटकर छान लें और गाय के मक्खन में मिलाकर 5–10 ग्राम की मात्रा प्रातः–सायं सुपारी छोड़ शेष लिंग पर मलें, इसको मलने के पूर्व और बाद में लिंग को गरम पानी से धो लें।

दौर्बल्य :

1. इसके एक वर्ष तक यथाविधि सेवन करने से शरीर रोग रहित हो जाता है। केवल सर्दियों में ही इसके सेवन से दुर्बल व्यक्ति भी बलवान होता है। वृद्धावस्था दूर होकर नवयौवन प्राप्त होता है।[1]
2. इसका चूर्ण, तिल व घी 10–10 ग्राम लेकर और तीन ग्राम मधु मिलाकर नित्य शरद ऋतु में सेवन करके कृश शरीर वाला बालक मोटा हो जाता है।[3]
3. असगंध चूर्ण 6 ग्राम, इसमें बराबर की मिश्री और बराबर मधु मिलाकर इसमें 10 ग्राम गाय का घी मिलाये, इस मिश्रण को सुबह शाम शीतकाल में 4 मास तक सेवन करने से बूढ़ा व्यक्ति भी युवक की तरह प्रसन्न रहता है।[4]

अश्वगंधा की जड़

4. असगंध की जड़ के महीन चूर्ण को तीन ग्राम की मात्रा में उष्ण प्रकृतिवाला गाय के ताजे दूध से (धारोष्ण), वात प्रकृति वाला शुद्ध तिल से और कफ प्रकृति का व्यक्ति गरम जल के साथ एक वर्ष तक सेवन करे तो निर्बलता दूर होकर सब व्याधियों का नाश होता है। वृद्धव्यक्ति, युवावस्था तथा निर्बल व्यक्ति बल प्राप्त करता है।
5. असगंध चूर्ण 20 ग्राम, तिल इससे दुगने, और उड़द आठ गुने अर्थात 140 ग्राम, इन तीनों को महीन पीसकर इसके बड़े बनाकर ताजे–ताजे एक मास तक खायें।
6. असगंध चूर्ण और चिरायता बराबर–बराबर लेकर खरल कर रखें। इस चूर्ण को 10–10 ग्राम की मात्रा में सुबह शाम दूध के साथ खायें।
7. एक ग्राम असगंध चूर्ण में 125 मिलीग्राम मिश्री डालकर औटाये हुए दूध के साथ सेवन करने से वीर्य पुष्ट होता है, बल बढ़ता है।

रक्तविकार : 4 ग्राम चोपचीनी और असगंध का बारीक पिसा चूर्ण (दोनों बराबर लें) शहद के साथ नियमित प्रातः–सायं चाटने से रक्त विकार मिटते हैं।

ज्वर : इसका चूर्ण पांच ग्राम, गिलोय की छाल का चूर्ण चार ग्राम, दोनों को मिलाकर प्रतिदिन शाम को गर्म पानी से खाने से जीर्णवात ज्वर दूर हो जाता है।

सर्वरोग : 250 मिलीग्राम गिलोय सत् को 5 ग्राम असगंध चूर्ण के साथ मिलाकर शहद के साथ चाटने से सब प्रकार के रोग दूर हो जाते हैं।

अहितकर : उष्ण प्रकृति वालों को।

निवारण : गोंद, कतीर एवं घी।

1. अश्वगंधाऽनिलश्लेष्मश्वित्रशोथक्षयापहा।
बल्या रसायनी तिक्ता कषायोष्णातिशुक्रला।। (भाव प्रकाश)
2. पीताश्वगंधा पयसार्धमासं घृतेन तैलेन सुखाम्बुना वा।
कृशस्य पुष्टिं वपुषो विधत्ते बालस्य सस्यस्य यथाम्बुवृष्टि।।
(च० द०)
3. शिशिरे योऽश्वगंधायाःकन्दचूर्ण पलोन्मितम्।
मासमत्ति समध्वाज्यं स वृद्धो भवेद्युवा।। (रा० मा०)
4. पादकल्केऽश्वगंधायाः क्षीरे दशगुणे पचेत्।
घृतं पेयं कुमाराणां पुष्टिकृद्बलवर्धनम्।। (च० द०)

Scanned by CamScanner

अतीस

28

वैज्ञानिक नाम	:	*Aconitum heterophyllum* Wall. ex Royle
कुलनाम	:	Ranunculaceae
अंग्रेजी नाम	:	Indian atis
संस्कृत	:	अतिविषा, विश्वा, शुक्लकन्दा
हिन्दी	:	अतीस
गुजराती	:	अतवखनी, कलीवखमो, अतिविष
मराठी	:	अतिविष
बंगाली	:	आतईच
पंजाबी	:	अतीस, चितीजड़ी, बतीस
फारसी	:	बज्जीतुरकी
तैलगु	:	अतिविषा, अतिबासा

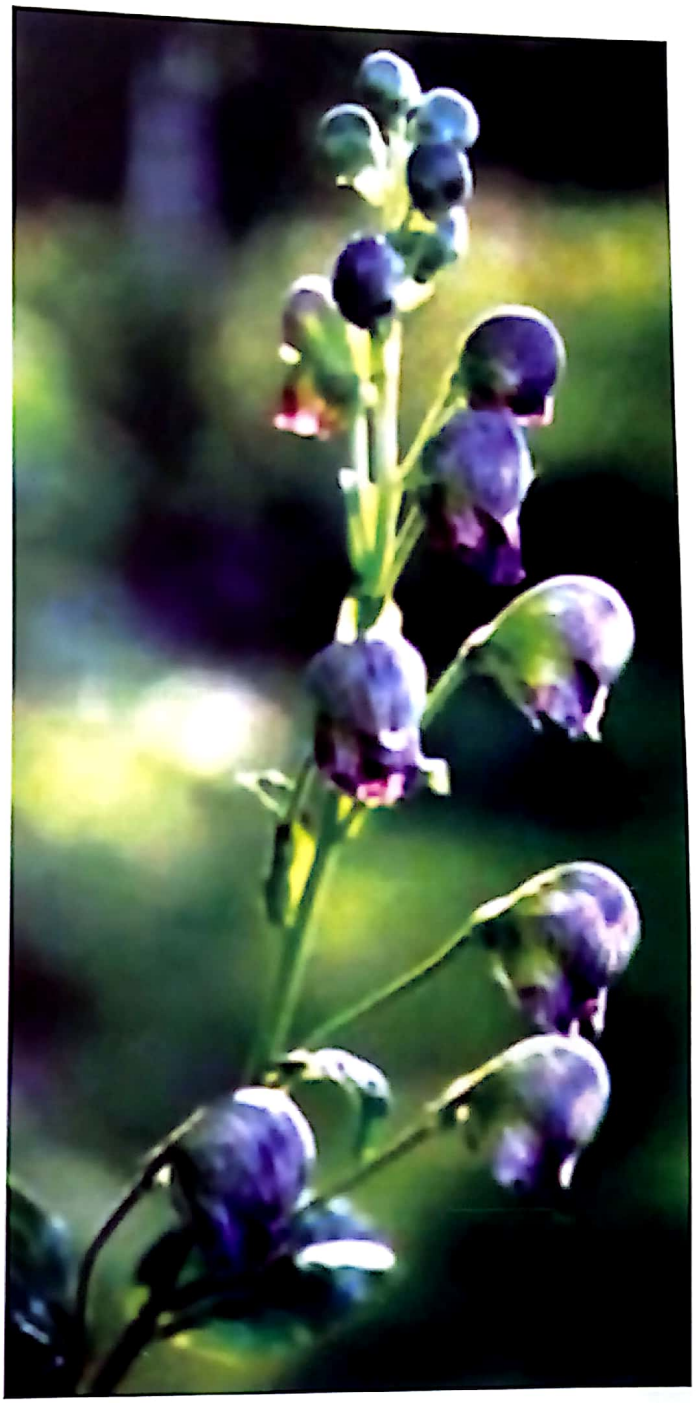

परिचय

भारत में हिमालय प्रदेश के पश्चिमोत्तर भाग में 15 हजार फुट की ऊंचाई तक पाया जाता है। इस बूटी की विशेषता यह है कि यह विष वर्ग वा वत्सनाभ कुल की होने पर भी विषैली नही है। इसके ताजे पौधों का जहरीला अंश केवल क्षुद्र जीव जन्तुओं के लिए प्राणघातक है। यह विषदायी प्रभाव भी इसके सूख जाने पर अधिकांशतः उड़ जाता है। छोटे–छोटे बालकों को भी यह निर्भयता से दी जा सकती है। परन्तु इसमें एक दोष है कि इसमें दो महीने बाद ही घुन लग जाता है।

बाह्य–स्वरूप

अतीस के पौधे 1–4 फुट ऊंचे, शाखाएं चपटी और एक पौधे में एक ही कांड होता है, जिस पर अनेक पत्तियां लगी होती है। निचले भाग में पत्र सवृन्त, तश्तरी नुमा, 2–4 इंच लम्बे गोल तथा प्रायः पांच खण्डों से युक्त होते हैं तथा ऊपर के पत्र अखण्ड, कांड संसक्त और तीक्ष्ण दन्तुर होते हैं। पुष्प चमकीले नीले या हरिताभ नीले और देखने में फणाकार टोपी की तरह होते हैं। इन पर बैंगनी रंग की शिरायें होती हैं। मूल द्विवर्षायु जिनमें एक नया और एक पुराना दो कन्द होते हैं। औषधयार्थ इन्हीं कन्दाकार जड़ों का व्यवहार अतीस के नाम से होता है।

रासायनिक संघटन

इसमें अतिसीन नामक एमारफस ऐल्केलाइड पाया जाता है। जो स्वाद में अत्यंत तिक्त होता है। इसके अलावा एकोनीटिक एसिड, टेनिक एसिड, पेक्टस तत्व, स्टार्च, वसा तथा शर्करा पायी जाती है।

गुण–धर्म

दीपन, पाचन, ग्राही, ज्वरातिसार नाशक, कृमिघ्न, कास नाशक एवं अर्शोघ्न बालकों के ज्वरातिसार, छर्दि कास आदि रोगों में विशेष रूप से उपयोगी है।[1,2]

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

मुख रोग : अतीस 20 ग्राम और बाय बिडंग 15 ग्राम दोनों कुचल कर आधा किलो जल में पकावें, चौथाई शेष रहने पर उतार लें, ठंडा कर छान लें फिर मिश्री मिलाकर शरबत की चाशनी तैयार करें। पश्चात् उसमें चौकिया सुहागा की खील 5 ग्राम पीसकर मिला लेवें। एक वर्ष तक के बच्चे को गाय के दूध में मिलाकर पांच बूंद तक देने से और शरीर मे महालाक्षादि तेल की मालिश करने से बालक के शरीर की पुष्टि और वृद्धि होती है तथा खांसी, श्वास, अपच आदि रोग दूर हो जाते हैं।

श्वास (कास) :

1. अतीस के चूर्ण 5 ग्राम को 2 चम्मच मधु मिलाकर चटाने से खांसी मिटती है।
2. अतीस 2 ग्राम और पोखर मूल 1 ग्राम के चूर्ण को 2 चम्मच मधु मिलाकर चटाने से श्वांस कास रोग में लाभ होता है। (प्रायः हिमालय के उच्च क्षेत्रों में अतीस और कुटकी ही अनेक रोगों में प्रयोग किया जाता है।)

वमनः नागकेशर 2 ग्राम और अतीस के 1ग्राम चूर्ण की फंकी लेने से वमन बंद होती है।

पाचनशक्तिः 2 ग्राम अतीस के चूर्ण को 1 ग्राम सौंठ या 1 ग्राम पीपल के चूर्ण के साथ मधु मिलाकर चटाने से पाचन शक्ति बढ़ती है।

पित्तोदरः 20 मिलीलीटर गौमूत्र के साथ लगभग दो ग्राम चूर्ण पिलाने से पित्तोदर में लाभ होता है।

रक्तार्शः अतीस में राल और कपूर मिलाकर इसका धुआं देने से रक्तार्श के रक्तस्राव में लाभ होता है।

अतिसारः अतिसार और रक्तपित्त में अतीस के 3 ग्राम चूर्ण को इन्द्रजौ की छाल के 3 ग्राम चूर्ण और 2 चम्मच शहद के साथ देने से अतिसार और रक्तपित्त में लाभ होता है।

संग्रहणीः दस्त पतला, श्वेत, दुर्गन्ध युक्त हो तो अतीस और सुंठी 10–10 ग्राम दोनों को कूटकर 2 किलों पानी में पकायें, जब आधा शेष रह जाये तब इसे लवण से छोंककर, फिर इसमें थोड़ा अनार का रस मिला, दिन में थोड़ा–थोड़ा करके दिन में 3–4 बार पिलाने से संग्रहणी और आम अतिसार में लाभ होता है।[3]

अतिविषादि वटीः नागरमोथा, अतीस, काकड़ा सिंगी और करंज के भुने हुए बीज चारों द्रव्यों को समान मात्रा में मिलाकर चूर्ण बनाकर इन्द्रयव की छाल के क्वाथ में 12 घण्टे खरलकर 65 मिलीग्राम की गोलियां बना लें, दिन में दो बार सुबह–शाम 1–2 गोली देने से बच्चों के सब विकार शांत हो जाते हैं। यह रोग प्रतिरोधक क्षमता को भी बढ़ाती है।

शक्तिवर्धकः छोटी इलायची ओर वंशलोचन, इन दोनों के साथ अतीस के 1½ से 2½ ग्राम तक चूर्ण की फंकी मिश्री युक्त दुग्ध के साथ लेने से बल बढ़ता है एवं यह पौष्टिक व रोगनाशक है।

पुरूषार्थः 5 ग्राम अतीस के चूर्ण को शक्कर और दूध के साथ देने से पुरूषार्थ बढ़ता है।

निर्बलताः 3 ग्राम अतीस के चूर्ण को लौहभस्म 125 मिलीग्राम और शुंठी चूर्ण 500 मिलीग्राम के साथ देने से ज्वरोत्तर निर्बलता मिटती है।

फोडे फुन्सीः अतीस के 5 ग्राम चूर्ण को फांककर ऊपर से चिरायते का अर्क पीने से फोडे फुन्सी मिटते हैं

ज्वर :

1. ज्वर में इसका चूर्ण 1–1 ग्राम दिन में 4–5 बार गरम जल के साथ देने से पसीना आकर ज्वर उतर जाता है और मूत्र भी साफ होता है।
2. अतीस 2 ग्राम और वायबिडंग 2 ग्राम का चूर्ण समान भाग लेकर 1–1 ग्राम शहद के साथ चटाने से बच्चों के कृमि नष्ट हो जाते हैं।
3. 1 ग्राम से 10 ग्राम तक अतीस पानी में पीसकर दिन में 2–3 बार, बल और आयु के अनुसार देने से अतिसार मिटता है।
4. ज्वर आने के पहले इसके 2–2 ग्राम की फंकी 2–2 घण्टे के अन्तर से देने पर ज्वर उतर जाता है।
5. अतीस के दो ग्राम चूर्ण को हरड के मुरब्बे के साथ खिलाने से आमातिसार मिटता है।

अतीस (कड़वा)

Scanned by CamScanner

6. इसके 625 मिलीग्राम चूर्ण की फंकी देने से ज्वर की गर्मी कम हो जाती है।
7. ज्वर छुड़ाने के लिए इसके 625 मिलीग्राम चूर्ण में 200 मिलीग्राम हरा कसीस भस्म मिलाकर देना चाहिए।
8. विषम ज्वर छुड़ाने के लिए इसके एक ग्राम चूर्ण में 75 मिलीग्राम कुनैन मिलाकर, दिन में इतनी–इतनी मात्रा दो तीन बार खिलाने से विषम ज्वर छूटता है।
9. साधारण ज्वर में अतीस चूर्ण एक भाग, तथा मिश्री दो भाग खरल कर रखें। बड़ों को 1 ग्राम तक तथा छोटों को 500 मिलीग्राम की मात्रा में शहद या शरबत बनफसा के साथ सुबह–शाम देने से लाभ होता है।

अतीस (मीठा)

बालरोग :

1. अतीस के कन्द को पीसकर चूर्ण कर शीशी में भरकर रख लें बालकों के तमाम रोगों में यह लाभकारी है। बालक की उम्र के अनुसार 250 से 500 मिलीग्राम तक शहद के साथ दिन में दो तीन बार चटाने से बालकों के सब रोगों में लाभ होता है।
2. अतिसार और आम अतिसार में 2 ग्राम अतीस के चूर्ण की फंकी देकर 8 घण्टे तक पानी में भिगोई हुई 2 ग्राम सौंठ को पीसकर पिलाने से लाभ होता है। जब तक अतिसार नही मिटे तब तक नित्य देना चाहिए।
3. अतीस को कूटकर रात्रि में दस गुने जल में भिगो दें, प्रातःकाल पकाये, जब शहद जैसा गाढ़ा हो जाये या गोलियां बनाने लायक हो जाये तो 500–500 मिलीग्राम की गोलियां बनाकर छाया में सुखा लें। हैजे में 3–3 गोली 1–1 घण्टे के अन्तर से तथा प्लेग में 3–3 गोली दिन में बार–बार खिलायें।

1. घुणप्रियाऽतिसारघ्नी बालानां रोग नाशिनी।
कटूष्णऽतिविषा तिक्ता कफपित्त ज्वरापहा।
आमातिसारकासघ्नी, विषच्छर्दिविनाशिनी।। (ध० नि०)

2. विषासोष्णा कटुरितक्ता दीपनी पाचनी हरेत्।
कफपित्तातिसारमविषकासवमिक्रिमीन्।। (भाव प्रकाश)

Scanned by CamScanner

29 आयापान

वैज्ञानिक नाम	:	*Eupatorium triplinerve* Vahl
कुलनाम	:	Asteraceae
अंग्रेजी नाम	:	Ayapan
संस्कृत	:	विशल्यकर्णी
हिन्दी	:	आयापान
गुजराती	:	अयापान
मराठी	:	अयापान
बंगाली	:	विशल्यकारणी, आयापान, अजापर्ण

Scanned by CamScanner

परिचय

आयापान वास्तव में अमेरिका का आदिवासी पौधा है, परन्तु अब सम्पूर्ण भारतवर्ष में बगीचों के अन्दर उगाया जाता है। बंगाल में विशेषतः यह रोपा हुआ और जंगली दोनों अवस्थाओं में प्रचुरता से होता है।

बाह्य–स्वरूप

आयापान के सुगन्धित गुल्म 2–4 इंच लम्बे, मालाकार, रक्ताभ अभिमुख क्रम में तीन स्पष्ट सिराओं से युक्त तीव्र गन्धी (मसलने पर उग्रसुगंध आती है) पुष्प नीलाभ मुंडको में, फल पंचकोणीय एवं रूंदित होते हैं।

रासायनिक संघटन

आयापान की पत्तियों में एक उड़नशील तैल पाया जाता है। सूखी पत्तियों में एक क्रिस्टलाईन तत्व तथा ताजी पत्तियो में अयापान एवं आयापानेन नामक दो क्रिस्टीलाइन स्वरूप के तत्व पाये जाते हैं, जिनमें तीव्र रक्त स्तम्भक गुण पाया जाता है।

गुण धर्म

यह व्रण को भरने वाला, रक्तस्राव रोधक है तथा रक्त अतिसार रक्त प्रदर, रक्तार्श आदि में यहां तक कि आमाशय में होने वाले रक्त स्राव में या शरीर के किसी भी भाग से गिरने वाले रक्त को रोकने के लिए इसके पत्तों का रस बहुत लाभदायक है।

औषधीय प्रयोग

अर्श : अर्श में इसके पत्तों को पीसकर लगाने तथा स्वरस 10–20 ग्राम दिन में 2–3 बार पीने से चमत्कारी लाभ होता है।

वमन : इसके पंचाग के गरम काढे को अधिक मात्रा में देने से वमन हो जाती है तथा दस्त लग जाते हैं। इसको विरेचन के लिए प्रयोग करना चाहिए।

पौष्टिक : इसके पत्तों का रस अल्प मात्रा में पीने से बल बढ़ता है।

ज्वर: जाड़ा लगकर यदि ज्वर हो तो इसके 20 ग्राम पत्तों को 200 ग्राम जल में फांट बनाकर गरम–गरम दिन में दो तीन बार पिलाने से लाभ होता है। इसका फांट पीत ज्वर में भी लाभदायक है।

बाह्य प्रयोग में : व्रण तथा रक्तस्त्राव में इसकी पत्तियों को पीस कर लेप करने से आराम होता है।

कीट दंश : जहरीले कीड़ों के दंश पर इसका लेप करने से वेदना शांत होती है।

रक्तस्राव : कहीं भी रक्तस्राव होने पर इसकी पत्तियों को पीसकर लगाने से तथा पत्र स्वरस 10–20 ग्राम की मात्रा का मौखिक रूप से सेवन करने से रक्तस्राव बंद हो जाता है।

घाव : शस्त्र का कितना भी गहरा घाव लगा हो, इसके पत्तों को पीसकर लगाने से तथा पत्र स्वरस 5–10 ग्राम दिन में 3–4 बार पीने से गहरे से गहरा घाव बहुत जल्दी भर जाता है।

मलेरिया ज्वर : इसके 20 ग्राम पंचाग को 400 ग्राम पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष काढ़ा 5–10 ग्राम की मात्रा में सुबह–शाम पिलाना मलेरिया ज्वर में लाभकारी है।

Scanned by CamScanner

30 बबूल

वैज्ञानिक नाम	:	*Acacia nilotica* (L.) Willd. ex Delile ssp. indica (Benth.)Brenan
कुलनाम	:	Mimosaceae
अंग्रेजी नाम	:	Acacia tree, Babul
संस्कृत	:	बर्बर, अजामेड्ड, दीर्घकंटका
हिन्दी	:	बबूल, बबूर, कीकर
गुजराती	:	बाबल
मराठी	:	बबूल, बाबूल
बंगाली	:	बावला, बबूल, कीकर
तैलगु	:	बबूर्रम, नक्क दुम्मा, नेला–तुम्मा
पंजाबी	:	बाबला
अरबी	:	उम्मूछिलान
फारसी	:	खेरेमुधिलान
तमिल	:	कारुबेल

परिचय

बबूल का परिचय बहुत पुराना है, बबूल की छाल एवं गोंद प्रसिद्ध व्यावसायिक द्रव्य है। वास्तव मे बबूल मरूभूमि में उत्पन्न होने वाला वृक्ष है, इसकी पत्तियाँ बहुत छोटी और अनुपत्र काटों में परिवर्तित हो जाते है। कांटेदार वृक्ष बहुत है, परन्तु बबूल में ही कुछ बात है जो इसे साहित्य मे भी स्थान मिला है, जैसे : बोया पेड़ बबूल का आम कहाँ से पाये। समस्त भारतवर्ष में बबूल के जंगली और लगाये हुये वृक्ष मिलते है। ग्रीष्म ऋतु में इस पर पीताभ वर्ण में पुष्प गोलाकार गुच्छों में लगते हैं तथा शरद ऋतु में फलियाँ लगती है।

बाह्य–स्वरूप

बबूल के वृक्ष मध्यमाकार, कांड त्वक गाढ़े भूरे रंग की लम्बाई में रूखे दरार युक्त, शाखाएं गोल, सरल, झुकी–झुकी सी नवीन शाखाये चिकनी, अनुपत्र, तीक्ष्ण नुकीले कांटो में परिवर्तित पत्र, द्विपक्षवत् पत्रक बहुत छोटे 4 से 9 युग्मों में वृन्त युक्त, पुष्प, पीताभ, गोलाकार गुच्छों में पत्रकोशीय मंजरी पर 4–6 पुष्प लगते हैं। शिम्बी 3 से 6 इचं लम्बी चपटी और प्रत्येक फली में 8–12 चपटे बीज हाते है। बबूल के कांड से लालिमा युक्त श्वेत रंग का

Scanned by CamScanner

गोंद अपने आप निकलता है। गर्मियों में तथा नये वृक्षों से गोंद अपेक्षतया अधिक निकलता है। बबूल की लकड़ी जलाने के लिये बहुत उत्तम समझी जाती हैं।

रासायनिक संघटन

इसकी छाल में 6–12 प्रतिशत कषाय द्रव्य फली में 12–19 प्रतिशत टैनिन पाया जाता है। कांड से एक निर्यास मिलता है, जो बबूल गोंद के नाम से प्रसिद्ध है। असली गोंद, *Acacia senagal* नामक पौधे से प्राप्त होता है और अरब देशों तथा अफ्रीका से आयातित होता है। इंडियन गम गोल या अंडाकार लगभग ½ इंच के हल्के पीले रंग गहरे भूरे रंग के कणों के रूप में होते है। जो जल में पूर्ण रूप से विलेय है।

गुण–धर्म

बबूल कफ पित्तशामक, रक्त पित्तशामक और कफघ्न है। इसका गोंद वातपित्तशामक, मूत्रल, वृष्य, गर्भाशय के शोथ और स्राव को दूर करता है। यह स्नेहन, ग्राही, बल्य, तथा विषघ्न है। छाल और फली स्तम्भन, कृमिघ्न, कुष्ठघ्न, तथा दाह प्रशमन है।

औषधीय प्रयोग

नेत्र रोग : इसके नरम पत्तों को पीसकर, रस निकाल कर 1–2 बूंद आंख में टपकाने से अथवा स्त्री के दूध के साथ आंख पर बांधने से आँख की पीड़ा और सूजन मिटती है।

मुखपाक : बबूल की छाल के काढे से 2–3 बार गरारे करने से लाभ होता है। गोंद के टुकड़े चूसते रहने से आराम मिलेगा।

दंतपीड़ा :

1. बबूल की फली का छिलका और बादाम के छिलके की राख में नमक मिलाकर मंजन करने से दंत पीड़ा मिटती है।
2. बबूल की कोमल टहनियों की दातुन करने से भी दांत निरोग और मजबूत होते है।
3. बबूल की छाल, पत्ते, फूल और फलियों को समभाग मिलाकर बनाये गये चूर्ण से भी मंजन करने से दांतों के अनेक कष्ट दूर होते है।
4. इसकी छाल के क्वाथ से कुल्ले करने से दांतों का सड़ना मिट जाता है।

कंठ रोग : बबूल के पत्ते और छाल एवं बड़ की छाल सबको समभाग मिलाकर एक गिलास पानी में भिगो दें, इस प्रकार तैयार हिम से कुल्ले करने से गले के रोग मिट जाते है।

तृषा : दाह एवं तृषा में इसकी छाल के काढ़े में मिश्री मिलाकर पिलाना चाहिये।

स्तन : इसकी फलियों के चेप से किसी कपड़े को तर करके, सुखा लें। इस कपड़े को बांधने से ढीले स्तन कठोर हो जाते है।

उदर रोग : बबूल की अन्तरःछाल का क्वाथ बनाकर, उस क्वाथ के उबालते समय जब उसका धन क्वाथ हो जाये तब इस क्वाथ को 1–2 ग्राम की मात्रा में मट्ठे के साथ पीने से और पथ्य में सिर्फ मट्ठे का आहार लेने से जलोदर तक पहुँचे हुये सब प्रकार के उदर रोग नष्ट हो जाते है।

अरूचि : इसकी कोमल फलियों के अचार में सैन्धव लवण मिलाकर खिलाने से रूचि बढ़ती है, तथा जठराग्नि प्रदीप्त होती है।

पीलिया : इसके पुष्पों के चूर्ण में बराबर मिश्री मिलाकर 10 ग्राम की फंकी नित्य दिन में तीन बार लेने से पीलिया मिटता है।

अतिसार :

1. इसके 8–10 पत्तों का रस पिलाने से अतिसार मिटता है।
2. इसकी 8–10 कोमल कोपलें थोड़े से जीरे और अनार की कलियों के साथ 100 ग्राम पानी में पीसकर उस पानी में एक टुकड़ा गरम ईंट का बुझाकर दिन में 2–3 बार 2 चम्मच पानी पिलाने से भंयकर अतिसार भी मिट जाता है।
3. इसकी पत्तियों का स्वरस छाछ में मिलाकर पिलाने से हर प्रकार के अतिसार में लाभ होता हैं।
4. अथवा इसकी दो फलियां खाकर ऊपर से छाछ पीना चाहिये।

कफ अतिसार : बबूल के पत्ते, जीरे और स्याह जीरे को समभाग लेकर पीसकर 10 ग्राम की फंकी रात्रि के समय देने से कफ अतिसार मिटता है।

रक्तातिसार :

1. हरी कोमल पत्तियों के एक चम्मच रस में शहद मिलाकर 2–3 बार पिलाने से खूनी दस्त लगने बन्द हो जाते है।
2. बबूल के गोंद 10 ग्राम को 50 ग्राम पानी में भिगोकर मसल कर छानकर पिलाने से अतिसार और रक्त अतिसार मिटता है।

प्रवाहिका : इसकी कोमल पत्तियों के एक चम्मच रस में थोड़ी सी हरड़ का चूर्ण मिलाकर सेवन करना चाहिये, ऊपर से छाछ पीना

Scanned by CamScanner

चाहिये।

सुजाक :

1. बबूल की 10–20 कोपलों को एक गिलास पानी में भिगोकर आसमान के नीचे रखे और प्रातःकाल उस पानी को निथार कर पीने से सुजाक और पेशाब की जलन में आराम मिलता हैं।
2. 30 ग्राम बबूल की कोंपलों को रात भर एक गिलास पानी में भिगोकर सुबह मसल छानकर उसमें 20 ग्राम गरम घी मिलाकर पिलावें, दूसरे दिन भी ऐसा ही करें, तीसरे दिन घी मिलाना छोड़ दे और 4–5 दिन खाली इसका हिम पीने से सुजाक में बहुत लाभ होता है।
3. इसके 10 ग्राम गोंद को एक गिलास पानी में डालकर उसकी पिचकारी देने से मूत्राशय की सूजन, सुजाक की जलन दूर हो जाती है।
4. इसके 5–10 नरम पत्तों को 1 चम्मच शक्कर और 2 नग काली मिर्च के साथ अथवा 5–6 अनार के पत्तों के साथ पीस छानकर पिलाने से सुजाक मिटता है।

मासिक धर्म :

1. बबूल का भुना हुआ गोंद 4½ ग्राम और गेरु 4½ ग्राम, इनको पीसकर प्रातः काल फंकी लेने से मासिक धर्म में अधिक रक्त का बहना बन्द हो जाता है।
2. इसकी 20 ग्राम छाल को 400 ग्राम पानी में उबालकर शेष 100 ग्राम क्वाथ दिन में तीन बार पिलाने से भी मासिक धर्म में प्रमाण से अधिक रक्त का बहना बन्द हो जाता है।

रक्तप्रदर : गोद और गेहूँ समभाग मिलाकर पीसे ले, 2 चम्मच की मात्रा में सुबह शाम सेवन करने से मासिक धर्म में अधिक खून आने की शिकायत दूर होती है।

श्वेत प्रदर :

1. 10 ग्राम बबूल की छाल को 400 ग्राम में पकाकर शेष 100 ग्राम काढ़े में 2–2 चम्मच की मात्रा से सुबह–शाम पीने से और इस काढ़े में थोड़ी सी फिटकरी मिलाकर योनि में पिचकारी देने से योनि मार्ग स्वच्छ शुद्ध होकर निरोगी बनेगा और योनि सशक्त पेशियों वाली और तंग होगी।
2. एक हिस्से बबूल की छाल को 10 हिस्से पानी में रात भर भिगोकर सुबह उस पानी को उबाल ले। जब पानी आधा रह जाये तो उसे छान कर बोतल में भर ले। लघुशंका के बाद इस पानी से योनि को धोने से प्रदर एवं योनि शैथिल्य में लाभ होता है।
3. बबूल की फलियों के चेंप से थोड़े मोटे कपड़े को 7 बार तर करके सुखा ले। स्त्री प्रसंग से पहिले इस कपड़े के टुकड़े को दूध या पानी में भिगोकर, दूध और पानी को पीले तो इससे स्तम्भन होता है। यदि इस कपड़े के टुकड़े को स्त्री अपनी योनि में सांठ ले तो भी योनि तंग हो जाती है।

वीर्य विकार :

1. फलियों को छाया में सुखाकर पीस लें और बराबर की मात्रा में मिश्री मिला लें। एक चम्मच की मात्रा में सुबह–शाम नियमित रूप से जल के साथ सेवन करने से वीर्य गाढ़ा होगा और सब विकार दूर होगें।
2. बबूल के गोंद को घी में तलकर उसका पाक बनाकर खाने से पुरूषो का वीर्य बढ़ता है और प्रसूति काल में स्त्रियों को खिलाने से उनकी शक्ति भी बढ़ती है।

स्वप्न दोष : बबूल का पंचाग (सब भाग बराबर–बराबर लेवें) लेकर पीस लें और और आधी मात्रा में मिश्री मिलाकर एक चम्मच की मात्रा में सुबह–शाम नियमित सेवन करने से कुछ ही समय में लाभ होगा।

सूतिका रोग : बबूल की अन्तर छाल का चूर्ण 10 ग्राम, काली मिर्च 3 नग, दोनों को पीसकर, सुबह शाम खाने से और पथ्य में सिर्फ बाजरे की रोटी और गाय का दूध लेने से भयंकर सूतिका रोग से ग्रस्त स्त्रियां भी बच जाती है।

संतान : कांतिवान संतान के लिये बबूल के पत्तों का 2–4 ग्राम चूर्ण प्रतिदिन सुबह खिलाने से सुंदर बालक का जन्म होगा।

अस्थि भग्न : फलियों का चूर्ण एक चम्मच की मात्रा में सुबह–शाम नियमित रूप से सेवन करने से टूटी हड्डी शीघ्र जुड़ जाती है।

कटिशूल : बबूल की छाल, फली और गोंद समभाग मिलाकर पीस ले, एक चम्मच की मात्रा में दिन में 3 बार सेवन करने से कमर दर्द में आराम मिलेगा।

दाद : बबूल के फूलों को सिरके में पीसकर दाद पर लगाने से दाद जड़ से चला जाता है।

रक्त–स्राव :

1. शरीर के किसी भी अंग से रक्तस्राव होता हो तो उस पर पत्रों का रस पीसकर लगाना चाहिये या सूखे पत्रों या सूखी छाल का चूर्ण उस पर छिड़क देना चाहिये।
2. 10–15 कोमल पत्तों को 2–4 नग काली मिर्च और 2 चम्मच शक्कर के साथ पीस छानकर पिलाने से आमाशय से रूधिर का बहना बन्द हो जाता है।

पसीने की अधिकता : बबूल के पत्ते और बाल हरड़ को बराबर–बराबर मिलाकर महीन पीस ले, इस चूर्ण की सारे बदन पर मालिश करे और कुछ समय रूककर स्नान कर लें। नियमित रूप से यह प्रयोग कुछ दिन तक करने से पसीना आना बन्द हो जाता है।

व्रण : बबूल के पत्तों का लेप जख्म को भरता है और गरमी की सूजन को दूर करता है।

हानि : बबूल का अधिक सेवन सीने को नुकसान पहुंचाता है। अधिक मात्रा में इसका निर्यास गुदा को हानि पहुँचाता है।

दर्पनाशक : बबूल का दर्पनाशक वनफ़शा है और बबूल के गोंद का दर्पनाशक, बेदाना गुलाब और सन्दल हैं।

Scanned by CamScanner

31 बड़/बरगद

वैज्ञानिक नाम	:	*Ficus benghalensis* L.
कुलनाम	:	Moraceae
अंग्रेजी नाम	:	Banyan tree
संस्कृत	:	वट, न्यग्रोध, जगृलः विटपी, बहुपाद
हिन्दी	:	बड़, बरगद
गुजराती	:	बड़
मराठी	:	वटवडु
बंगाली	:	बड़ गाछ, बट
पंजाबी	:	बरगद, बोड़
अरबी	:	कविरूल, अश्जार
फारसी	:	दरख्ते रोश

परिचय

पीढिया आती हैं, चली जाती है, परिस्थितियां बनती–बिगड़ती है, साल–सदियां व्यतीत हो जाती है, परन्तु वट वृक्ष शताब्दियों के वैभव–पराभव का साक्षी, भौगोलिक परिवर्तनों से बेअसर, आंधी तूफान में अविचल दिनों दिन उत्कर्ष को प्राप्त होता हुआ अपनी घनी छाया तले युगों का इतिहास समेटे किसी महान काल द्रष्टा, यति योगी, मुनि की तरह अचल खड़ा रहता है। हिन्दुओं की धार्मिक परम्पराओं से इस वृक्ष का अभिन्न रिश्ता है, इसे सभी पहचानते हैं, अतः विवरण विशेष की आवश्यकता नहीं है।

बाह्य–स्वरूप

इस वृक्ष की शाखाएं बहुत दूर तक चारों ओर फैली रहती है जिनसे प्ररोह (वायव्यमूल) निकल कर लटकते रहते हैं और बढ़कर भूमि में लग जाते है। काण्डत्वक–श्वेत–धूसर मोटी होती है। पत्र–मोटे, लट्वाकार 4–6 इंच लम्बे–चौड़े चर्मवत् होते है। पत्रमूल में 3–5 सिराएँ होती है। फल गोलाकार होते है। अदृश्य पुष्प होने के कारण इसे वनस्पति कहा गया है। मई–जून में नई पत्तियाँ निकलती है। फल प्रायः वर्ष भर दृष्टिगत होते है।

रासायनिक संघटन

वट वृक्ष की छाल व इसकी जटाओं में 10 प्रतिशत टैनिन के अतिरिक्त ग्लुकोसाइड, बैन्गलेनोसाइड एवं टालब्युटामाइडस, गैलेक्टोसाइड इत्यादि पाये जाते हैं।

गुण–धर्म

कफ पित्तनाशक, वेदनास्थापन, व्रण रोपण, रक्तशोधक, शोथहर, चक्षुष्य, स्तम्भन, रक्त पित्तहर, शुक्रस्तम्भन और गर्भाशय शोधक है। यह बल्य व कषाय है। वृक्ष, शीतल, कषाय व रूक्ष है, तथा तृष्णा, छर्दि, मूर्च्छा, और रक्त पित्त नाशक है।[1,2,3]

औषधीय प्रयोग

मुख की कांति वर्धनार्थ :

1. इसके 5–6 कोमल पत्तों को या जटा को 10–20 ग्राम मसूर के साथ पीसकर लेप करने से व्यस्त दूर हो जाते हैं।
2. जड़ के पीले पके पत्तों के साथ, चमेली के पत्ते, लाल चन्दन, कूट, काला अगर और पठानी लोध 1–1 भाग, सबको जल के साथ पीसकर लेप करने से मुहांसे, झाई आदि दूर हो जाते है।
3. निर्गुण्डी बीज, बड़ के पीले पके पत्ते–फूल, प्रियंगु, मुलेठी, कमल पुष्प, लोध, केशर, लाख तथा इन्द्रायण की जड़ का चूर्ण समभाग, जल के साथ पीसकर लेप करने से मुख कांतिमान हो जाता है।

कर्णरोग :

1. कान में यदि फुंसी हो या कीडे पड़ गये हो तो इसके दूध की

Scanned by CamScanner

कुछ बूंदों में सरसों के तेल मिलाकर डालने से ही कृमि तथा कान की फुंसी नष्ट हो जाती है।

2. इसके दूध की 3 बूंदे, बकरी के 3 ग्राम अनुष्ण दूध में डालकर कान में डालने से फुंसी तथा कृमि नष्ट होते हैं।

केश विकार :

1. इसके पत्तों की 20–25 ग्राम राख को 100 ग्राम अलसी के तेल में मिलाकर मलते रहने से सिर के बाल उग आते है।
2. स्वच्छ कोमल पत्रों के रस में, समभाग सरसों का तैल मिलाकर अग्नि पर पकाकर तेल सिद्ध कर लें। इस तेल को बालों में लगाने से, केशों के सब विकार दूर होते है।
3. बड़ की जटा और जटामांसी का चूर्ण 25–25 ग्राम, तिल तेल 400 ग्राम तथा गिलोय का स्वरस 2 किलो सबको मिला धूप में रखें, जल सूख जाने पर तेल को छान लेवें। तेल की मालिश से गंजापन दूर होकर बाल आ जाते है एवं बाल झड़ना बन्द हो जाता है तथा बाल सुन्दर व सुनहरे हो जाते हैं।
4. जटा और काले तिल समभाग खूब महीन पीसकर सिर पर लगाकर आधा घंटे बाद कंघी से केशों को साफ कर ऊपर से भागंरा और नारियल की गिरी दोनों को पीसकर लगाते रहने से बाल कुछ दिन में लम्बे हो जाते हैं।

दंत विकार :

1. बड की छाल 10 ग्राम के साथ 5 ग्राम कत्था और 2 ग्राम काली मिर्च इन तीनों को खूब महीन चूर्ण बना मंजन करने से दांत का हिलना, मैल, दुर्गन्ध आदि विकार दूर होकर दांत स्वच्छ एवं श्वेत हो जाते हैं।
2. दांत के दर्द पर इसका दूध लगाने से दर्द दूर हो जाता है। दूध में एक रूई की फुरेरी भिगों कर छिद्र में रख देने से दुर्गन्ध दूर होकर दांत ठीक हो जाते है। दन्त कृमि नष्ट हो जाते हैं।
3. यदि किसी दांत को निकालना हो तो इसका दूध लगाकर दांत को आसानी से निकाला जा सकता हैं।
4. बड की जटा से मंजन करने से दांतों के कीडे नष्ट हो जाते है। कोमल लकड़ी की दातुंन से पायेरिया नष्ट हो जाता है।

नकसीर : जटा का चूर्ण 3 ग्राम तक दूध की लस्सी के साथ पिलाने से लाभ होता है।

निद्राधिक्य : इसके कड़े हरे छाया शुष्क पत्तों के 10 ग्राम दरदरे चूर्ण को 1 किलो जल में पकायें, चौथाई शेष रहने पर इसमें 1 ग्राम नमक मिलाकर सुबह–शाम पिलाने से हर समय अंधता रहना दूर होता है।

प्रतिश्याय : इसके कोमल लाल रंग के पत्तों को छाया में सुखा कूट कर रखें। 1 या डेढ़ चम्मच आधा किलो जल में पकाकर चौथाई शेष रहने पर 3 चम्मच शक्कर मिला प्रातः–सायं चाय की भाँति पीने से जुकाम व नजला दूर होकर मस्तिष्क की दुर्बलता भी नष्ट होती है।

नेत्र फूली : बड़ के 10 ग्राम दूध मे 125 मि०ग्रा० कपूर और 2 चम्मच मधु मिलाकर अजंन करने से नेत्र फूली कटती है।

जाला : बड़ के दूध को 2–2 बूँद आँख में डालने से आंख का जाला कटता है।

कंठमाला : दूध का लेप करने से लाभ होता है।

हृदय की धड़कन पर : 10 ग्राम कोमल हरे रंग के पत्तों को 150 ग्राम जल में खूब पीस छानकर उसमें थोड़ी मिश्री मिला सुबह–शाम 15 दिन पिलाने से लाभ होता है।

कफ रोग : शाखा तथा बड़ की छोटी–छोटी कोमल शाखाओं का शीत निर्यास या हिम 10–20 ग्राम की मात्रा में सेवन करने से कफ स्त्राव में लाभ दायक है।

स्तन शैथिल्य : जटा के बारीक अग्रभाग के पीले व लाल तंतुओं को पीसकर लेप करने से लाभ होता है।

भगन्दर : बड़ के पत्ते, पुरानी ईंट के चूर्ण, सौंठ, गिलोय तथा पुनर्नवा मूल का चूर्ण समभाग लेकर जल के साथ पीसकर लेप करने से लाभ होता है।

बादी बवासीर : 20 ग्राम छाल को 400 ग्राम जल में पकावें, आधा जल शेष रहने पर छानकर उसमें गाय का घी और खांड 10–10 ग्राम मिला सुखोष्ण सेवन से कुछ दिनों में लाभ होता है।

रक्तार्श :

1. इसके 25 ग्राम कोमल पत्तों को 200 ग्राम जल में घोटकर पिलाने से 2–3 दिन में ही रक्तस्त्राव बन्द हो जाता है। अर्श के मस्सों पर इसके पीले पत्तों की भस्म को समभाग सरसों के

बड़ की छाल

Scanned by CamScanner

तेल में मिला लेप करते रहने से शीघ्र लाभ होता है।

2. 10 ग्राम कोपलों को 100 ग्राम बकरी के दूध में समभाग जल मिलाकर पकाने पर जब केवल दूध मात्र शेष रह जाये तो छान कर सेवन करने से रक्तपित्त, रक्तार्श तथा रक्तातिसार में भी लाभ होता है।

3. इसकी छाया शुष्क लकड़ी को जलाकर इसके कोयलों को महीन पीस प्रातः–सायं 3 ग्राम की मात्रा में ताजे जल के साथ देते रहने से लाभ होता है। अर्श के मस्सों पर कोयलों के चूर्ण को 21 बार धोये हुए मक्खन में मिलाकर मलहम बनाकर लगाने से मस्से बिना कष्ट के दूर हो जाते हैं।

रक्तातिसार : दस्त के साथ या दस्त के पूर्व या बाद में खून गिरता हो तो वट वृक्ष की 20 ग्राम कोपलों को पीसकर रात्रि के समय जल में भिगोकर प्रातः छानकर, छने हुये जल में 100 ग्राम घी मिला पकावें, घी मात्र शेष रहने पर 20 से 25 ग्राम तक घी में शहद व शक्कर मिलाकर सेवन से रक्तातिसार में लाभ होता है।

रक्त की वमन :

1. इसकी नरम शाखाओं के फांट में शक्कर या बतासा मिलाकर सेवन करने से रक्त की वमन बन्द हो जाती है।
2. जटा के 6 ग्राम अकुंरो को जल में घोट छानकर पिलने से वमन व रक्त की वमन बन्द होती है।

प्यास : इसकी कोंपलों के साथ दूब घास, लोध, अनार की फली, और मुलेठी समभाग लेकर, एक साथ पीस शहद में मिला चावलों के धोवन के साथ सेवन करने से वमन और प्यास की शान्ति होती है।

मितली आना : 20 ग्राम वट के हरे पत्र, लौंग 7 नग, दोनों को जल में घोट छानकर रोगी की इच्छानुसार पिलायें।

अतिसार :

1. इसके दूध को नाभि के छिद्र में भरने तथा आसपास लगाने से लाभ होता है।
2. 6 ग्राम वट कोंपलों को 100 ग्राम जल में घोट छानकर थोड़ी मिश्री मिलाकर पिलाने से तथा ऊपर से मट्ठा पिलाने से दस्त बन्द हो जाते है। मिश्री ना मिलने से भी लाभ होगा।
3. 3 ग्राम छाया शुष्क वट छाल के चूर्ण को दिन में 3 बार चावलों के धोवन के साथ या ताजे कूप जल के साथ देने से शीघ्र लाभ होता है।
4. 8–10 कोंपलों का सेवन दही के साथ करें।

मधुमेह : 20 ग्राम छाल व बड़ की जटा के जौकूट चूर्ण को आधा किलो जल में पकायें, अष्टमांश से भी कम शेष रहने पर उतार कर ठंडा होने पर छान कर सेवन करायें। इस प्रकार पथ्यपूर्वक 1 महीने तक प्रातः–सायं सेवन से पूर्ण लाभ होता है।

प्रमेह :

1. प्रमेह में ताजी वट छाल के महीन चूर्ण में समभाग खांड मिलाकर 4 ग्राम की मात्रा में ताजे जल के साथ सेवन करें। बार–बार वीर्यस्राव होता हो तो खांड न मिलाये।
2. बड़ के दूध की प्रथम दिन 1 बूंद 1 बतासे पर डालकर खायें, दूसरे दिन 2 बतासों पर 2 बूंदे, तीसरे दिन 3 बतासों पर 3 बूंद, 21 दिन तक दूध व बतासे बढ़ाते जाये, फिर उसी प्रकार घटाते हुये एक बूंद और एक बतासे पर छोड़ देवें, यह प्रमेह की विशेष औषधि है, इससे स्वप्न दोष दूर होकर वीर्य की वृद्धि होती है।
3. मूत्रकृच्छ्र तथा सुजाक में भी यह योग लाभकारी है। बड़ के कोमल पत्ते 400 ग्राम, बहुफली 200 ग्राम दोनों को खूब ठंडाई की भांति घोट छान कर कलईदार पात्र में पकाये, जब गाढ़ा हो जाये तो नीचे उतार कर उसमें थोड़ा बंशलोचन या इमली के बीजों की गिरी का चूर्ण मिलाकर 125 से 300 मिलीग्राम की गोलियां बना लें, 1–2 गोली तक खाकर ऊपर से ताजा गाय का दूध पान करने से प्रमेह, धातु क्षीणता, स्वप्न दोष आदि विकार दूर होते हैं।
4. 2.5 किलो वट के पके पीले पत्ते लेकर, 15 किलो जल में 3–4 दिन भिगोने के बाद पकायें, चौथाई जल शेष रहने पर मसल छानकर, जल को पुनः गाढ़ा होने तक पकाये, अब नीचे उतार कर इसमें गिलोय सत् व प्रवाल पिष्टी 3 से 6 ग्राम तथा छोटी इलायची के बीज 2 ग्राम पीस कर मिलायें, 250 मि०ग्रा० की गोली बना प्रातः–सायं 1–1 गोली गौदुग्ध या जल के साथ सेवन कराये।
5. 4 ग्राम की मात्रा में वट जटा के चूर्ण को सुबह–शाम ताजे जल के साथ सेवन से प्रमेह, धातुस्त्राव एवं स्वप्न दोष का निवारण होता है।
6. पके फलों के चूर्ण को 10–20 ग्राम की मात्रा में मिश्री मिलाकर दूध के साथ सेवन करने से लाभ होता है। यह पौष्टिक व धातुवर्धक है।

रक्त प्रदर :

1. वट जटा के अंकुर 10 ग्राम को गाय के दूध 100 ग्राम में पीस छानकर दिन में 3 बार पिलाने से लाभ होता है।
2. इसके 20 ग्राम कोमल पत्तों को 100 से 200 ग्राम जल में घोटकर प्रातः–सायं पिलाने से शीघ्र लाभ होता है। स्त्री या पुरूष के मूत्र में रक्त आता हो तो भी उक्त योग से लाभ होता है।
3. 3 से 5 ग्राम तक कोपलों का क्वाथ बनाकर प्रातः–सायं सेवन से प्रमेह व प्रदर रोग समाप्त होता है।

बहुमूत्र : फलों के बीज महीन पीसकर 1 या 2 ग्राम तक, प्रातः काल गौदुग्ध के साथ निरंतर सेवन से लाभ होता है।

सुजाक : छाया शुष्क जड़ की छाल के चूर्ण को 3 ग्राम की मात्रा में प्रातः–सायं शर्बत बजूरी या साधारण ताजे जल के साथ देते रहने से पूयस्त्राव बन्द होकर पूर्ण लाभ होता है।

उपदंश : इसकी जटा के साथ अर्जुन की छाल, हरड़, लोध व हल्दी समभाग जल में पीस कर लेप लगाने में उपदंश के व्रण नष्ट होते है।

Scanned by CamScanner

मूत्र कृच्छ : जटा का महीन चूर्ण 9 ग्राम, कलमी शोरा, श्वेत जीरा, छोटी इलायची के बीज प्रत्येक का महीन चूर्ण 2–2 ग्राम मिलाकर जल में घोटकर एक ही वटी बना प्रातः काल गाय के धारोष्ण दूध के साथ सेवन करने से मूत्रकृच्छ व सुजाक में लाभ होता है।

गर्भपात :

1. 4 ग्राम छाया शुष्क छाल चूर्ण दूध की लस्सी के साथ सेवन करें।
2. छाल के क्वाथ में लोध्र कल्क 3 से 5 ग्राम तक तथा थोड़ा शहद मिलाकर दिन में दो बार सेवन से शीघ्र ही लाभ होता है। योनि से स्त्राव यदि अधिक हो तो इसकी छाल के क्वाथ में सूक्ष्म मुलायम कपड़े को 3–4 बार आसिंचन कर योनि में धारण करें। यह दोनों प्रयोग श्वेत प्रदर में भी लाभदायक है।
3. इसके दो कोमल पत्तों को 250 ग्राम गाय के दूध में समभाग जल मिलाकर पकाये, केवल दूध शेष रहने पर छानकर पी लें।

योनिशैथिल्य : कोपलों के स्वरस में फोया (पिचू) भिगो कर योनि में प्रतिदिन 1 बार 15 दिन तक धारण करायें।

गर्भधारणार्थ : पुष्य नक्षत्र एवं शुक्ल पक्ष में लाये हुए कोपलों का चूर्ण 6 ग्राम की मात्रा ऋतु काल में प्रातः जल के साथ 4–6 दिन सेवन करने से स्त्री अवश्य गर्भ धारण करती है अथवा कोंपलों को पीसकर बेर जैसी 21 गोलियां बना 3 गोली घी के साथ सेवन करें।

कटि पीड़ा : इसके दूध का लेप करें।

बल वृद्धि के लिये :

1. वृक्ष से उतारे हूये फलों को हवादार स्थान में कपड़े पर सुखाकर (लोहे का स्पर्श न हो) महीन चूर्ण लेकर समभाग मिश्री चूर्ण मिला लें। 6 ग्राम की मात्रा में प्रातः सुखोष्ण दूध के साथ सेवन से वीर्य का पतलापन, शीघ्रपतन आदि विकार दूर होते है। वीर्य सन्तानोपति में समर्थ हो जाता है।
2. बड़ के पके फल व पीपल के फल, दोनों को सुखा कर महीन चूर्ण बना ले। 25 ग्राम चूर्ण को 25 ग्राम घी में भूनकर, हलवा बना प्रातः–सायं सेवन करने तथा ऊपर से बछड़े वाली गाय का दूध पीने से विशेष बल वृद्धि होती है। यदि स्त्री पुरुष दोनों सेवन करें तो रज वीर्य शुद्ध होकर सुन्दर सन्तान उत्पन्न होती है।
3. छायाशुष्क कोपलो के चूर्ण में समभाग मिश्री मिला 7 दिन प्रातः निराहार 5 से 10 ग्राम तक की मात्रा में दूध की लस्सी के साथ सेवन करने से वीर्य का पतला पतन मिटता है।

स्मरण शक्ति वर्धनार्थ : छायाशुष्क छाल के महीन चूर्ण में दुगनी खांड या मिश्री मिला लें, 6 ग्राम की मात्रा में प्रातः–सायं पकाये हुये सुखोंष्ण गाय के दूध के साथ सेवन करने से स्मरण शक्ति बढती है। खट्टे पदार्थो से परहेज रखें।

व्रण :

1. व्रण में कृमि हो गये हो, दुर्गन्ध आती हो तो वट छाल के क्वाथ से घाव को नित्य धोने से तथा इसके दूध की कुछ बूदे दिन में 3–4 बार डालने से कृमि नष्ट होकर व्रण ठीक हो जाता है।
2. साधारण व्रण पर इसके दूध को लगाने से वे शीघ्र अच्छे हो जाते हैं।

Scanned by CamScanner

3. यदि घाव ऐसा हो जिसमें कि टाके लगाने की आवश्यकता हो, तो घाव का मुख मिलाकर, जब खाल के दोनों सिरे मिल जाये तब बड़ के पत्ते गरम कर घाव पर रखकर ऊपर से कसकर पट्टी बांध दे तथा 3 दिन में घाव भर जायेगा तथा 3 दिन तक खोले नहीं।
4. फोड़े–फुन्सियों पर पत्तों को गरम कर बांधने से वे शीघ्र ही पक कर फूट जाते है।
5. इसके पत्तों को जलाकर उसकी भस्म में मोम और घी मिला मलहम जैसा बनाकर घावों में लगाने से शीघ्र लाभ होता है।
6. वर्षा ऋतु में अधिक पानी में रहने से अगुंलियों के बीच में जख्म से हो जाते है, उन पर बड़ का दूध लगाने से वह शीघ्र अच्छे हो जाते हैं।

रक्तपित्त : कोपलों या पत्तों को 10 से 20 ग्राम तक पीसकर लुगदी में शहद व शक्कर मिलाकर सेवन करने से रक्त पित्त में लाभ होता है।

स्वेद जनन : बड़ के पीले पत्तों को चावलों के साथ पकाकर पके चावलों का काढ़ा पसीना लाने के लिये पिलाया जाता है।

नाड़ी व्रण :

1. इसकी कोपले तथा कोमल पत्तों को पीसकर जल में छान लें, जल में समभाग तिल का तेल मिलाकर तेल सिद्ध कर लें। इस तेल को दिन में 2–3 बार व्रण पर लगाने से लाभ हो जाता है। यह तेल भगन्दर पर भी लाभ दायक है।
2. इसके दूध में सांप की केंचुली की भस्म मिलाकर उसमें पतले कपड़े या रूई की बत्ती को भिगोकर नाड़ी व्रण में भीतर रखने से 10 दिन में शीघ्र लाभ होता है। रसौली की प्रारम्भिक अवस्था में इसके लेप से शीघ्र लाभ होता है।

कुष्ठ : रात्रि के समय इसके दूध का लेप करने तथा उस पर इसकी छाल का कल्क बांधने से सात दिन में कुष्ठ एवं रोमक शान्त हो जाता है।

रसौली : कूठ व सेंधा नमक को बड़ के दूध में मिलाकर लेप करें तथा ऊपर छाल का पतला टुकड़ा बांध दें, सात दिन तक दो बार उपचार करने से बढ़ा हुआ अर्वुद (गांठ) दूर हो जाता है। गठिया, चोट व मोच पर बड़ का दूध लगाने से पीड़ा शीघ्र कम हो जाती है।

बंद गांठ पर :

1. बड़ का दूध लगाने से यदि गांठ पकने वाली नही है तो बैठ जाती है, यदि फूटने वाली है तो शीघ्र पक कर फूट जाती है। बंद गांठ पर बड़ के दूध का प्लास्टर लगाया जाता है। यही दूध लगाते रहने से बाद में गांठ का घाव भी भर जाता है।
2. इसके पत्तों पर तिल का तेल चुपड़ कर बंद गाठ पर बांधने से वह पक कर फूट जाती है।

तालु कंटक :

तालु कंटक या तालु के नीचे की ओर धँस जाने पर इसके दूध को मिट्टी की टिकिया पर लगाकर तालू पर बांधने से या लेप करने से तालू यथास्थान पर आ जाता है।

अग्नि दग्ध : जले हुये स्थान पर इसकी कोंपल या कोमल पत्तों को गाय के दही में पीसकर लगाने से शान्ति प्राप्त होती है।

सूजन : पत्तों पर घी चुपड़कर बांधने से शोथ पर शीघ्र लाभ होता है।

खुजली : आधा किलो पत्तों को कूटकर, 4 किलो पानी में रात्रि के समय भिगोकर प्रातः काल पकायें। एक किलो जल शेष रहने पर आधा किलो सरसों का तेल डालकर पुनः पकावें, तेल मात्र शेष रहने पर छान कर रख लें, इस तेल की मालिश से गीली और खुष्क दोनों प्रकार की खुजली दूर होती है।

1. वटः शीतो गुरुर्ग्राही कफपित्तव्रणापहः।
वर्ण्यो विसर्पदाहघ्नः कषायो योनिदोषहृत्।। (भाव प्रकाश)
2. वटांकुरा मसूराश्च प्रलेपाद्, व्यंगनाशमन्। (भाव प्रकाश)
3. वटः शीतः कषायश्च स्तम्भनो रूक्षणात्मकः।
तथा तृष्णाच्छर्दिमूर्च्छारक्तपित्तविनाशनः।। (ध० नि०)

Scanned by CamScanner

32 बहेड़ा

वैज्ञानिक नाम	:	*Terminalia bellirica* (Gaertn.) Roxb.
कुलनाम	:	Combretaceae
अंग्रेजी नाम	:	Baheda
संस्कृत	:	विभीतक, अक्ष, कर्षफल, कलिद्रुमु
हिन्दी	:	बहेड़ा
गुजराती	:	बहेड़ा
मराठी	:	बहेड़ा
बंगाली	:	बयड़ा
पंजाबी	:	बेहड़ा
तैलगु	:	वाड़िकाय
द्राविड़ी	:	तानिकूय
कन्नड	:	तारेकापि
अरबी	:	बलैलज
फारसी	:	तलैलाह

परिचय

यह भारतवर्ष में सर्वत्र पाया जाता है, विशेषकर निचले पर्वतीय प्रदेशों में अधिक होता है। फरवरी–मार्च में पत्र विहीन होने के पश्चात इस पर नये ताम्रवर्ण पल्लव निकलते हैं, उसी के साथ मई तक पुष्प खिलते हैं तथा अगली जनवरी–फरवरी तक फल पक जाते है।

बाह्य–स्वरूप

इसका वृक्ष 60–80 फुट ऊंचा, काण्ड सीधा, काण्ड त्वक् गहरे भूरे रंग का, पत्र 3–8 इंच लम्बे, एकान्तर, चौड़े, अंडाकार, सवृंत, शाखाओं के अग्रभाग पर समूहबद्ध लगते हैं। पुष्प सफेद या पीले रंग के 3–6 इंच लम्बी मंजरियों में होते हैं, ऊपर के पुष्प पुल्लिंगी तथा नीचे के उभय लिंगी होते हैं। फल ½ इंच व्यास का धूसरवर्ण, रोमश, गोलाकार, पीछे की ओर वृन्त पर संकरा हो जाता है। फल सूखने पर धारीदार या हल्का पंचकोणीय मालूम होता है। यह एक बीजी होता है।

रासायनिक संघटन

फल में टेनिन, बी–सिटोस्टेराल, गैलिक एसिड, इलेगिकएसिड, एथिल गैलेट, चेबुलेजिक एसिड, मैनिटाल, ग्लुकोज, गैलेक्टोज फ्रक्टोज तथा रैमनोज होते हैं, बीज मज्जा से चमकीले पीले रंग

Scanned by CamScanner

सूखा बहेड़ा का फल

का स्थिर तेल निकलता है। इसकी छाल में टैनिन होता है।

गुण–धर्म

यह त्रिदोषहर है, परन्तु इसका मुख्य प्रयोग कफ प्रधान विकारों में होता है। यह नेत्रों को हितकारी, केशवर्धक, भेदक तथा पलित रोग, स्वरभंग, नासारोग, रुधिर दोष, कंठ रोग, नेत्र रोग, कास, हृदय रोग में गुणकारी और कृमिघ्न होता है।[1] बहेड़े के फल की मगज आंख के फूले को दूर करती है। इसकी छाल रक्ताल्पता, पाण्डुरोग और श्वेत कुष्ठ में लाभदायक है। इसके बीज कड़ुवे, मादक, तृषा, वमन नाशक, वातहर तथा ब्रोंकाइटिस का नाश करने वाले हैं। इसके फलों का छिलका संकोचन और कफनाशक है। इसकी विशेष क्रिया कंठ और श्वांसनलिका पर होती है। इसके बीजों की गिरी वेदनाशामक और शोथहर है, अधिक मात्रा में यह वामक होती है। बहेड़ा, आंवला हरीतकी यह सब मुस्तादिगण कफ नाशक, योनिदोषनाशक, दूध का शोधन करने वाले और पाचक है।[1] बहेडा, हरड़ तथा आंवला ये सभी प्रमेह कुष्ठ को नष्ट करते हैं, आंखों के लिए हितकारी, अग्नि दीपक और विषम ज्वर को नष्ट करते हैं। इनका रस, रक्त एवं मेदगत दोषों को दूर करता है तथा स्वरभेद, कफ, क्लेद एवं पित्त रोग को नष्ट करता है।[2] बहेड़ा, विरेचक, लघु, उष्ण, स्वर भंग के लिए हितकारी, कृमिनाशक, आंखों के लिए हितकारी व कफ नाशक है।[3] यह अमाशय को शक्ति देता है। कोई भी दूसरी औषधि इससे बढ़कर अमाशय को ताकत देने वाली नहीं। इसका अर्धपक्व फलरेचक और सूखा फल ग्राही है। बहेड़ा रूक्ष, नेत्र एवं बालों के लिए हितकारी तथा मज्जा मदकारी होती है।[4]

औषधीय प्रयोग

केश्य : फल की मींगी का तेल बालों के लिए अत्यन्त पौष्टिक है। इससे बाल स्वस्थ हो जाते हैं।

नेत्र ज्योति : बहेड़े और शक्कर के समभाग मिश्रण का सेवन नेत्रों की ज्योति को बढ़ाता है।

नेत्र पीड़ा : इसकी छाल का मधु के साथ लेप करने से नेत्र की पीड़ा मिटती है।

ज्वर दौर्बल्य : बहेड़े और जवासे के 40–60 ग्राम काढ़े में 1 चम्मच घी मिलाकर दिन में तीन बार पीने से पित्त और कफ का बुखार छूट जाता है और आंखों के आगे अंधेरा होना व चक्कर आना मिट जाता है।

हृदय वात : इसके फल का चूर्ण तथा अश्वगंधा का चूर्ण समान भाग में मिलाकर 5 ग्राम की मात्रा लेकर गुड़ में मिलाकर उष्ण जल के साथ सेवन करने से हृदय वात नष्ट होती है।

लार का बहना : डेढ़ ग्राम बहेड़े में समान मात्रा में शक्कर मिलाकर कुछ दिन खाने से मुंह से लार का बहना बंद हो जाता है।

खांसी :

1. बहेड़े के छिलके को मुंह में चूसने से खांसी मिट जाती है।
2. बकरी के दूध में अडूसा, काला नमक और बहेड़ा डालकर पकाकर खाने से तर और सूखी दोनों प्रकार की खांसी मिट जाती है।

श्वास : बहेड़े और हरड़ की छाल बराबर–बराबर भाग में लेकर चूर्ण बना लें तथा 4 ग्राम की मात्रा नित्य लेने से श्वांस और कास मिटता है।

मंदाग्नि : विभीतक फल के 3 से 6 ग्राम चूर्ण की भोजनोपरान्त फंकी लेने से पाचन शक्ति तीव्र होती है और मंदाग्नि मिटती है। आमाशय को ताकत मिलती है।

Scanned by CamScanner

मूत्रकृच्छ्र : इसके फल की मींगी का चूर्ण 3–4 ग्राम की मात्रा में मधु मिलाकर सुबह–शाम चाटने से मूत्रकृच्छ्र एवं अश्मरी में लाभ होता है।

पित्तज प्रमेह : बहेड़ा, रोहिणी, कुटज, कैथ, सर्ज, छत्तिवन, कबीला के फूलों का चूर्ण बनाकर 2 से 3 ग्राम की मात्रा लेकर 1 चम्मच मधु के साथ मिलाकर पित्तज प्रमेह के रोगी को दिन में तीन बार देना चाहिए।[6]

नपुंसकता : 3 ग्राम बहेड़े के चूर्ण में 6 ग्राम गुड़ मिलाकर प्रतिदिन सुबह–शाम सेवन करने से नपुंसकता मिटती है और कामोद्दीपन होता है।

दस्त :

1. इसके पेड़ की 2–5 ग्राम छाल और 1–2 नग लौंग को 1 चम्मच शहद में पीसकर दिन 3–4 बार चटाने से दस्त बंद हो जाते हैं।
2. 2–3 नग भुना हुआ बहेड़ा पुराने दस्तों को बंद करता है।

आंत उतरना : पोतों में आंत उतरने पर बहेड़े का लेप करने से पहले ही दिन से फायदा होता है।

बंद गांठ : अरण्डी के तेल में बहेड़े के छिलके को भूनकर तेज सिरके में पीसकर बंदगांठ पर लेप करने से 2–3 दिन में बंदगांठ बैठ जाती है।

पित्तशोथ :

1. बहेड़े की मींगी का लेप करने से पित्त शोथ बिखर जाती है।
2. नेत्र को पित्त शोथपर बहेड़े का लेप करते है।

ज्वर : बहेड़े का 40–60 ग्राम क्वाथ सुबह–शाम पीने से पित्त, कफ, ज्वर में लाभ मिलता है।

कण्डू : फल की मींगी का तेल कण्डु रोग में लाभकारी है तथा दाहशामक है। इसकी मालिश से खुजली और जलन मिट जाती है।

1. विभीतकंस्वादुपाकं कषायं कफपित्तनुत्।
उष्णवीर्यं हिमस्पर्शं भेदनं कासनाशनम्।।
रूक्षं नेत्रहितं केश्यं मिवैस्वर्यनाशनम्।।
विभीतमज्जा तृट्छर्दिकफवातहरी लघु।।
कषाया मदकृच्चाथ धात्री मज्जापि तदगुणा।
(भाव प्रकाश)

2. रसासृङ्मांस मेदोजान् दोषान् हन्ति विभीतकम्।
स्वरभेदकफोत्क्लेदपित्तरोग विनाशनम्।। (चरक)

3. भेदनं लघु रूक्षोष्णं वैस्वर्यकृमिनाशनम्।
चक्षुष्यं स्वादुपाक्याक्षं कषायं कफपित्तजित्। (सुश्रुत)

4. वैभीतको मदकरः कफमारुतनाशनः।।
विभीतकी रूक्षो नेत्र हितः केश्यो मज्जातो मदकारक।।
(धन्व निघंटु)

5. कम्पिल्लक सप्तच्छदशालजानि वैभितकी हिलक कोटजानि।
कपित्थ पुरपाणी च चूर्णितानि क्षौद्रेशा तिद्यात कफ पित्त मेही।।
(चरक)

Scanned by CamScanner

बकायन

वैज्ञानिक नाम	:	*Melia azedarach* L.
कुलनाम	:	Meliaceae
अंग्रेजी नाम	:	Persian lilac, Bead tree
संस्कृत	:	महानिम्ब, द्रेक,रम्यक
हिन्दी	:	बकायन
गुजराती	:	बकान लिबंडो
मराठी	:	बकाणा निंब
बंगाली	:	घोड़ा निम, महानिम
पंजाबी	:	धरेक
फारसी	:	आजाद दरख्त
तैलगु	:	तुरकवेपा
अरबी	:	हर्बीत

परिचय

पर्सिया और अरब का मूल निवासी महानिम्ब भारतवर्ष में हिमालय के निम्न प्रदेशों में 2,000 से 3,000 फुट की ऊंचाई तक विशेषतः उत्तर भारत, पंजाब तथा दक्षिणी भारत में इसके नैसर्गिक अथवा बोये हुए वृक्ष मिलते हैं। इसके वृक्ष भी नीम वृक्ष की भांति सीधे मध्यमाकार 20 से 40 फुट ऊंचे होते हैं। फागुन और चैत्र मास में इस वृक्ष से एक दूधिया रस निकलता है, अतः इस अवधि में कोमल पत्रों के अलावा और किसी अंग के रस अथवा क्वाथ का प्रयोग नहीं करना चाहिए। वैसे भी इस वृक्ष के किसी भी अंग का व्यवहार उचित मात्रा में तथा सावधानी पूर्वक करना चाहिए, क्योंकि यह कुछ विषैला होता है। फलों की अपेक्षा छाल और फूल कम विषैले, बीज सबसे अधिक विषैले और ताजे पत्र प्रायः हानि रहित होते हैं।

बाह्य–स्वरूप

बकायन वृक्ष कांड गोलाई में 6–8 फुट व्यास का, कांड त्वक आधा इंच तक मोटी, हल्की मटमैली परंतु अन्दर से भूरी अरूणवर्ण की, शाखाएं फैली हुई। पत्र संयुक्त, द्विपक्षवत कभी–कभी त्रिपक्षवत 10–20 इंच लम्बी सींक पर 3–6 पत्रक अभिमुख क्रम में लगते हैं। पत्रक आधे से तीन इंच तक लम्बे लम्बाग्र, आरी की भांति दंतुर, नीम पत्रकों की अपेक्षा छोटे किन्तु चौड़ाई में अधिक होते हैं। पुष्प गुच्छे, किंचित नीली आभा लिये, मीठी, तीखी गंधयुक्त, फल गोल कच्ची अवस्था में हरे और पकने पर पीले रंग के हो जाते हैं। बीज के बीच में एक छिद्र होता है, जिसमें धागा पिरोकर माला बनाई जाती है। दिसम्बर से मार्च तक यह निष्पत्र रहता है। मार्च से मई तक पुष्पागम होता है और उसके बाद फल आते हैं।

रासायनिक संघटन

इसमें नीम की भांति मार्गोसीन नामक तिक्तसत्व पाया जाता है। बीज मज्जा से प्राप्त तेल में गंधक होता है।

गुण–धर्म

कफ पित्त, कुष्ठ, रक्तविकार, वमन, हृल्लास, प्रमेह, श्वास, गुल्म अर्श तथा चूहों के विष को दूर करने वाली है।[1]

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

मुंह के छाले :

1. बकायन की छाल और सफेद कत्था, दोनों को बराबर 10–10 ग्राम की मात्रा में लेकर चूर्ण बनाकर बुरकने से मुंह के छाले ठीक हो जाते हैं।
2. 20 ग्राम छाल को जलाकर 10 ग्राम सफेद कत्थे के साथ पीसकर मुख के भीतर बुरकने से लाभ होता है।

गंडमाला :

1. बकायन की छाया शुष्क छाल और पत्ते दोनों को 5–5 ग्राम कूट कर 500 ग्राम पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ कर पिलायें तथा इसी का लेप भी करें। गंडमाला और कुष्ठ में लाभ होता है।
2. गंडमाला पर पत्रों को पीसकर लेप करने से भी लाभ होता है।

नेत्र रोग :

1. फलो को पीसकर छोटी टिकिया सी बनाकर नेत्रों पर बांधते रहने से पित्तज नेत्राभिष्यन्द दूर होता है। गरमी के कारण आंख का दुःखना भी ठीक हो जाता है।
2. दृष्टि मांद्य आदि नेत्र विकार तथा मोतियाबिंद पर इसके एक किलोग्राम हरे ताजे पत्ते पानी से धोकर अच्छी प्रकार से साफ, कूट, पीसकर तथा निचोड़ कर रस निकाल लें, इस रस को पत्थर के खरल में खूब घोटकर सूखा लें, पुनः 1–2 खरल करें तथा खरल करते समय भीमसेनी कपूर 3 ग्राम तक मिला दें, इसको प्रातः सायं नेत्रों में अंजन करने से मोतिया बिन्द तथा अन्य प्रकार से उत्पन्न दृष्टिमांद्य, जलस्राव, लालिमा, कंडू, रोहे आदि विकार दूर होते हैं।

अर्श :

1. बकायन के सूखे बीजों को कूटकर लगभग 2 ग्राम की मात्रा में प्रातः–सायं पानी के साथ सेवन करने से खूनी–बादी दोनों बवासीर में अत्यन्त लाभ होता है।
2. बकायन के बीजों की गिरी और सौंफ दोनों समभाग में पीसकर बराबर की मात्रा में मिश्री मिलाकर दो ग्राम की मात्रा में दिन में तीन बार सेवन करने से अर्श में लाभ होता है।
3. इसके भूमि पर गिरे हुए पके फलों के अन्दर के 8–10 बीजों को जल के साथ पीसकर झाड़ी बेर जैसी गोलियां बनाकर छाया में शुष्क कर प्रातः–सायं एक–एक गोली बासी जल के साथ सेवन करें तथा 1–2 गोली गुड़ के शरबत में घिसकर मस्सों पर लेप करें। मस्से मुरझा कर नष्ट हो जायेंगे।
4. बकायन के बीजों की गिरी में समान भाग एलुआ व हरड़ मिला कर चूर्ण बना लें। इस चूर्ण को कुकरौंधे के रस के साथ घोटकर 250–250 मिलीग्राम की गोलियां बना प्रातः–सायं 2–2 गोली जल के साथ लेने से अर्श से रक्तस्त्राव बंद होता है तथा कब्ज दूर होता है।

उदरशूल : उदरशूल में इसके पत्रों 3–5 ग्राम के क्वाथ में शुंठी चूर्ण 2 ग्राम मिलाकर पिलाने से लाभ होता है।

आंत्र कृमि :

1. ताजी छाल को कूटकर 50 ग्राम लेकर 300 मि०ली० जल में क्वाथ कर चतुर्थांश शेष रहने पर बच्चों को एक बड़ा चम्मच प्रातः–सायं पिलाने से 20–21 दिन में उदर कृमि नष्ट होकर तज्जन्य ज्वर, पांडुता, निर्बलता, अरुचि आदि उपद्रव दूर होते हैं।
2. यह क्वाथ या इसका फांट प्रति 2 या 3 घण्टे बाद भी दिया जा सकता है। साथ ही कोई विरेचक भी देना आवश्यक है। इसके फलों और बीजों की माला बनाकर दरवाजे और खिड़कियों पर टांगने से बीमारियों का प्रभाव नहीं होता तथा इसके फलों की माला पहनने से संक्रामक रोगों का शरीर पर आक्रमण नही होता।

गर्भाशय के विकार

1. महानिम्ब के पत्रों का स्वरस 5 ग्राम की मात्रा में पिलाने से मासिक स्त्राव का अवरोध दूर हो जाता है।
2. अगर मासिक धर्म में रक्त प्रमाण से अधिक जा रहा हो तो इसके पत्रों का स्वरस 5 ग्राम की मात्रा में देने से मासिक धर्म नियंत्रित हो जाता है।
3. गर्भाशय की शुद्धि के लिए बकायन के पत्र स्वरस 10 ग्राम में अकरकरा के रस या चूर्ण 3 ग्राम को मिलाकर सुबह–शाम खाली पेट पिलाने से लाभ होता है।
4. बकायन के पुष्पों का रस 6 मिलीग्राम मात्रा में मधु 1 चम्मच के साथ नियमपूर्वक प्रातःकाल चटाने से मासिक धर्म की रूकावट दूर हो जाती है।
5. अनार्तव में इसकी छाल का क्वाथ 10–20 ग्राम पीने से मासिक धर्म खुलकर होने लग जाता है।

मूत्राश्मरी : बकायन के 5 ग्राम पत्र स्वरस में 500 मिलीग्राम जौखार दिन में 2–3 बार मिलाकर पिलाने से गुर्दे एवं मूत्राशय में जमी अश्मरी कट कर निकल जाती है।

प्रमेह : एक या दो बीजों की गिरी को चावलों के पानी के साथ पीसकर उसमें 10 ग्राम घी मिलाकर सेवन करने से बहुत समय का प्रमेह भी नष्ट हो जाता है।

Scanned by CamScanner

श्वेत प्रदर : बकायन के बीज तथा श्वेत चन्दन, सम भाग चूर्ण कर उसमें बराबर का बूरा मिलाकर 6 ग्राम की मात्रा में दिन में दो बार सेवन करने से श्वेत प्रदर में लाभ होता है।

आवेश रोग : इसके 10 ग्राम पत्रों को 500 ग्राम पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ को स्त्रियों के आवेश रोग में पिलाने से लाभ होता है।

मस्तक शूल : प्रसूति काल में होने वाले गर्भाशय शूल और मस्तक शूल में इसके पत्तों और फूलों को 10–10 ग्राम की मात्रा में लेकर कुचलकर सिर और बस्ति प्रदेश पर बांधने से लाभ होता है।

गृध्रसी :

1. बकायन की जड की छाल 10 ग्राम तक प्रातः–सायं जल में पीस छानकर पीने से एक मास में असाध्य गृध्रसी भी मिट जाती है।
2. इसकी जड़ या अंतरःछाल का 3 ग्राम चूर्ण जल के साथ सुबह–शाम सेवन से लाभ होता है।

गठिया : इसके बीजों को सरसों के साथ पीसकर लेप करने से गठिया में तुरन्त प्रभाव होता है।

शोथ :

1. चोटिल स्थान पर रक्त जमकर उत्पन्न हुए शोथ पर बकायन के 10–20 पत्रों को पीसकर पुल्टिस बनाकर बांधने से गांठों का रक्त बिखर कर लाभ हो जाता है।
2. सूजन पर 10–20 पत्रों को गरम कर बांधने से भी आराम हो जाता है।

खुजली :

1. इसके 10–20 पुष्पों को पीसकर लेप लगाने से त्वचा के फोड़े, फुंसी और खुजली आदि के रोग मिटते हैं।
2. बकायन के फूलों के 50 मिलीलीटर रस को सिर पर लगाने से सिर में छोटी–छोटी फुन्सियां हो जाना, पीप युक्त फुन्सियां हो जाना, केशभूमि कठोर होना, चमड़ी के टुकड़े निकलते रहना आदि रोग दूर होते हैं।
3. इसके फल की गिरी 10 ग्राम को खोपरे के तेल 100 ग्राम में पीसकर बहुत उष्ण जल, घी या तेल से उत्पन्न सिर के घावों पर लगाने से लाभ होता है।
4. इसके 8–10 सूखे पत्तों को 50 ग्राम सिरके में पीसकर त्वचा पर लगाने से त्वचा के कृमि संबंधी रोग मिटते हैं।

कुष्ठ : बकायन के पके हुए पीले बीजों को लेकर उनमें से 3 ग्राम बीजों को 50 ग्राम पानी में रात को भिगोकर रखें, प्रातः काल महीन चूर्ण बनाकर फंकी लेवें। 20 दिनों तक निरन्तर सेवन करने से कुष्ठ रोग में अवश्य लाभ होता है। पथ्य में बेसन की रोटी और गो घृत लेवें।

विषम ज्वर : बकायन की छाल और धमासा 10–10 ग्राम तथा कासनी के बीज 10 दाने एकत्र कर, जौकूट कर लें तथा 50 मि.ली. से 100 मि.ली. तक पानी में भिगोकर कुछ समय बाद ज्वर में जाड़ा लगने से पूर्व अच्छी तरह हाथ से मसलकर छानकर पिला देवें। यह ज्वर दो खुराक देने से ही बंद हो जायेगा।

जीर्ण ज्वर : गुठली रहित इसके कच्चे ताजे फलों को कूटकर उनके रस में समान भाग गिलोय का रस मिलाकर तथा दोनों का चौथाई भाग देशी अजवायन का चूर्ण मिलाकर खूब खरल कर झाड़ी के बेर जैसी गोलियां बनाकर, दिन में तीन बार एक–एक गोली ताजे जल के साथ सेवन करने से पुराने से पुराना ज्वर छूट जाता है। यह रक्त शोधक व वायु शामक भी है।

व्रण :

1. दूषित व्रणों को इसके पत्तों के 50 मिलीलीटर रस से धोने से लाभ होता है।
2. व्रणों पर इसके 8–10 पत्तों का लेप भी लाभकारी है।
3. शरीर का अंग कट जाने पर इसके पत्रों को पीसकर लेप करते है।

अर्बुद : अर्बुद पर 10–20 नीम पत्रों के साथ इसके 10–20 पत्रों को पीसकर पुल्टिस बनाकर बांधते है।

उदर कृमि :

1. बकायन की 20 ग्राम छाल को दो किलो पानी में उबालें, 750 ग्राम पानी शेष रहने पर उसमें थोड़ा गुड़ मिलाकर तीन दिन तक 50 से 100 मि0ली0 की मात्रा में पिलाने से पेट के कीड़े मर जाते हैं।
2. इसके पत्रों का फांट 20 ग्राम सुबह–शाम पिलाने से भी पेट के कीड़े मर जाते हैं।

नारू : इसका एक बीज नित्य प्रति 7 दिन तक खिलाने से नारू गल जाता है।

विशेष : यह यकृत और अमाशय के लिए हानिकारक है।

उपद्रव निवारण–सौंफ : इसके अत्यधिक प्रयोग से होने वाले उपद्रवों को शान्त करता है।

प्रतिनिधि द्रव्य : मजीठ, तथा जावित्री।

1 महानिम्बोऽहिमो रूक्षस्तिक्तो ग्राही कषायकः।
कफपित्तश्रमच्छर्दिकण्डूहल्लासरक्तजित्।।
प्रमेहश्वासगुल्मार्शोमूषिकाविषनाशनः।।

Scanned by CamScanner

बाकुची

34

वैज्ञानिक नाम	:	*Psoralea corylifolia* L.
कुलनाम	:	Fabaceae
अंग्रेजी नाम	:	Psoralea seeds
संस्कृत	:	बाकुची, पूतिफली, कृष्णफला, कुष्ठघ्नी
हिन्दी	:	बकुची, बाकुची, बावची
गुजराती	:	बावची
मराठी	:	बावची
बंगाली	:	बुकाचिदाना, हाबुच, सोमराज
फारसी	:	स्याह सफरं
तैलगु	:	भावाञ्चि
अरबी	:	तुख्मरेहां
तमिल	:	कर्पोकरिशी

परिचय

बाकुची के छोटे-छोटे पादप, वर्षा ऋतु में समस्त भारतवर्ष में अपने आप उगते हैं तथा जगह-जगह इसकी खेती भी की जाती है। साधारणतया बाकुची के पौधे एक वर्षायु होते हैं, परन्तु उचित देखभाल करने से 4-5 वर्ष तक जीवित रह जाते हैं। औषधि कर्म में इसके बीज और बीजों से प्राप्त तेल का व्यवहार किया जाता है। इस पर शीतकाल में पुष्प लगते हैं तथा ग्रीष्म ऋतु में पुष्प फलों में बदल जाते हैं।

बाह्य-स्वरूप

बाकुची के 1-4 फुट तक ऊंचे सीधे खडे कोमल पौधे होते हैं, परन्तु शाखाएं अपेक्षाकृत कडी और ग्रंथि बिन्दुकित होते हैं। पत्र साधारण, सवृन्त, 1-3 इंच लम्बी गोलाकार, प्रायः चिकनी दोनों पृष्ठों पर कृष्ण बिन्दु होती है। पुष्प नीली झाई लिये, हलके बैंगनी रंग के, पत्रकोण से उद्भूत, मंजरियों पर 10-30 की संख्या में लगते हैं। फली छोटी-छोटी काले रंग की, लम्बी, गोल, चिकनी होती हैं तथा प्रत्येक फली में एक बीज, फली के ही आकार का कृष्ण वर्ण एवं बेल फल की भांति सुगन्धित होता है।

रासायनिक संघटन

बाकुची के बीजों में एक उडनशील तेल, एक राल या रेजिन, एक स्थिर तेल तथा दो क्रिस्टलाइन सत्व सोरालेन पाये जाते हैं। फल के छिलके से सोरोलिडिन तत्व भी प्राप्त किया गया है। बाकुची के कुष्ठघ्न एवं कृमिघ्न कर्म इन्हीं दोनों तत्वों के कारण होते हैं।

गुण-धर्म

बाकुची मधुर, कड़वी, पाक में तिक्त, कटु रसायन, बिष्टम्भनाशक, शीतल, रूचिकारी, दस्तावर,रूखी, हृदय को हितकारी और कफ, रक्तपित्त, श्वास, कोढ़, प्रमेह, ज्वर तथा कृमि को नष्ट करने वाली है।[1] फल पित्तवर्धक, केश तथा त्वचा को हितकारी, चरपरा, कुष्ठ, कफ, वात, वमन, श्वांस, खांसी, शोथ, आम और पांडु रोग विनाशक है।[2]

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

दंतकृमि : बावची की जड़ को पीसकर जरा सी मात्रा में भुनी हुई फिटकरी मिला लें। सुबह–शाम इससे मंजन करने से दांत के कीड़े नष्ट हो जायेंगे।

श्वास : आधा ग्राम बीजों का चूर्ण अदरक के रस के साथ दिन में 2–3 बार सेवन करने से खांसी में आराम मिलता है। कफ ढीला होकर निकल जाता है।

अतिसार : बावची के पत्तों का साग सुबह–शाम नियमित रूप से कुछ हफ्ते खिलाते रहने से बहुत लाभ होता है।

पीलिया : 10 मिलीलीटर पुनर्नवा के रस में आधा ग्राम पीसी हुई बावची के बीजों का चूर्ण मिलाकर सुबह–शाम प्रतिदिन सेवन करने से लाभ होता है (ज्यादा बावची का सेवन वमन पैदा करता है)।

अर्श : 2 ग्राम हरड़, 2 ग्राम सौंठ और 1 ग्राम बावची के बीज लेकर पीस लें, आधे चम्मच की मात्रा में गुड़ के साथ सुबह–शाम सेवन करने से लाभ मिलेगा।

वंध्याजनन : मासिक धर्म से शुद्ध होने के पश्चात बावची के बीजों को तेल में पीसकर योनि में रखने से गर्भधारण करने की क्षमता समाप्त हो जाती है।

कुष्ठ रोग :

1. बावची के बीज चार भाग और तवकिया हरताल एक भाग, दोनों को चूर्ण कर गोमूत्र में घोंटकर श्वेत दागों पर लगाने से सफेद दाग दूर हो जाते हैं।
2. बावची और पवाड़ समभाग लेकर सिरके में पीसकर सफेद दागों पर लगाने से दाग में लाभ होता है।
3. बावची, गंधक व गुड़मार को बराबर की मात्रा में लेकर तीनों का चूर्ण कर लें तथा 12 ग्राम चूर्ण को रात्रि में जल में भिगो दें। प्रातःकाल निथरा हुआ जल सेवन कर लें तथा नीचे के तल में जमा पदार्थ श्वेत दागों पर लगाते रहने से श्वेत कुष्ठ नष्ट हो जाता है।
4. बावची तेल दो भाग, तुवरक तेल दो भाग, चंदन तेल एक भाग मिलाकर रख लें, इस तेल के लगाने से सामान्य त्वक् रोग तथा श्वेत कुष्ठ आदि रोग नष्ट होते हैं।
5. शुद्ध बावची चूर्ण एक ग्राम की मात्रा में आंवले अथवा खैर त्वक के 100 मिलीग्राम क्वाथ के साथ सेवन करने से श्वित्र रोग नष्ट हो जाता है।
6. बावची को तीन दिन तक दही में भिगोकर फिर सुखाकर रख लें। इसका आतशी शीशी में तेल निकाल लें। इस तेल में नौसादर मिलाकर श्वेत दागों पर लेप करें।
7. बावची, कलौंजी, धतूरे के बीज समभाग लेकर आक के पत्तों के रस में पीसकर श्वेत दागों पर लगाने से श्वेत कुष्ठ नष्ट हो जाता है।
8. बावची, इमली, सुहागा और अंजीर मूलत्वक् समभाग लेकर जल में पीसकर सफेद दागों पर लेप करने से श्वित्र रोग नष्ट हो जाता है।
9. बावची, पवांड, गेरू सम भाग लेकर कूट पीसकर अदरक के रस में खरल कर सफेद दागों पर लगाकर धूप सेकने से श्वेत कुष्ठ नष्ट हो जाता है।
10. बावची, गेरू और गन्धक समभाग लेकर, पीसकर अदरक के रस में खरल कर 10–10 ग्राम की टिकिया बनाकर, एक टिक्की रात्रि को 30 मि.ग्रा. जल में डाल दें। प्रातः ऊपर का स्वच्छ जल पीले तथा नीचे

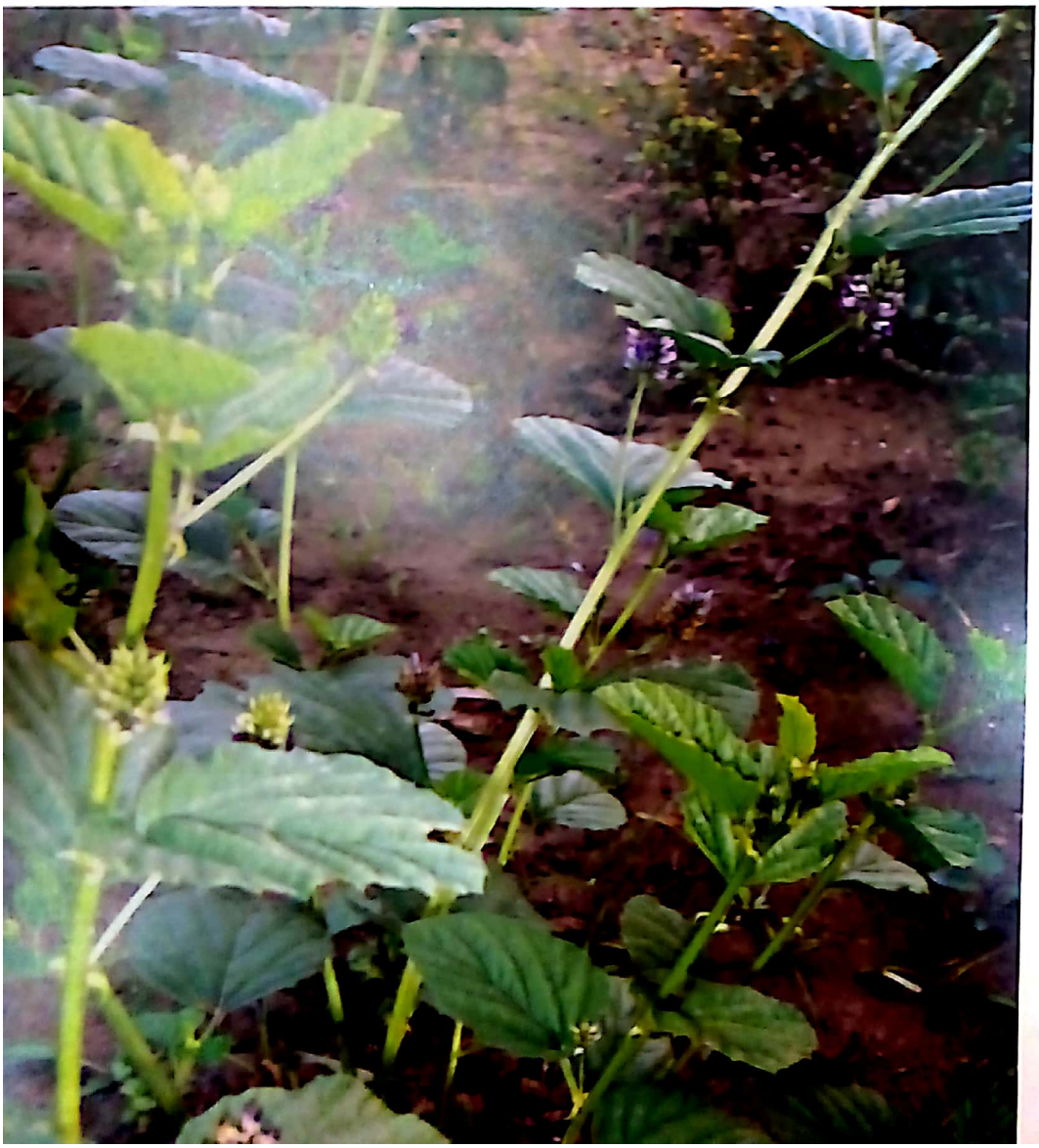

Scanned by CamScanner

की बची हुई औषधि को श्वेत दागों पर मालिश कर धूप सेंकने से श्वित्र रोग नष्ट होता है।

11. बावची, अजमोद, पवांड तथा कमल गट्टा समान भाग लेकर कूट पीस मधु मिलाकर गोलियां बना लें। एक से दो गोली तक प्रात:–सायं अंजीर मूल त्वक् क्वाथ के साथ सेवन करने से श्वेत कुष्ठ दूर होता है।

12. शुद्ध बावची 1 ग्राम तथा काले तिल 3 ग्राम लेकर 2 चम्मच मधु मिला, प्रात:–सायं सेवन करने से श्वित्र रोग नष्ट होता है।

13. शुद्ध बावची, अंजीर की जड़ की छाल, नीम की छाल तथा पत्र सम भाग लेकर कूट पीसकर खैर छाल के क्वाथ में खरल करके रख लें। दो से पांच ग्राम तक की मात्रा जल के साथ सेवन करने से श्वेत कुष्ठ में लाभ होता है।

14. बावची पांच ग्राम, केसर एक भाग लेकर दोनों को कूट पीसकर गोमूत्र में खरल कर गोली बना लें। यह गोली जल में घिसकर लगाने से श्वित्र रोग में लाभप्रद है।

15. बावची 100 ग्राम, गेल 25 ग्राम, पवांड के बीज 50 ग्राम लेकर सबको कूट पीसकर वस्त्र पूत चूर्णकर भांगरे के रस की 3 भावनाएं देकर रख लें। प्रात:–सायं गोमूत्र में घिसकर लगाने से श्वित्र रोग में लाभ होगा।

16. बावची चूर्ण को अदरक के रस में घिस कर लेप करने से श्वित्र रोग नष्ट होता है।

17. बावची दो भाग, नीला थोथा तथा सुहागा एक–एक भाग लेकर कपड़ छान चूर्ण कर एक सप्ताह भांगरे के रस में घोंटकर रख लें। इसका नींबू स्वरस में मिला श्वित्र पर लगाने से श्वेत दाग नष्ट होते हैं। यह प्रयोग तीक्ष्ण है, अत: इसके प्रयोग के फलस्वरूप फाले होने पर यह प्रयोग बन्द कर दें।

18. शुद्ध बावची चूर्ण की एक ग्राम मात्रा, बहेड़े की छाल तथा जंगली अंजीर मूल छाल के क्वाथ में मिलाकर निरन्तर सेवन करते रहने से श्वित्र तथा घोर पुंडरीक में लाभ होता है।

19. बावची हल्दी, अर्कमूलत्वक् समान भाग लेकर महीन चूर्ण कर कपड़ छान कर लें। इस चूर्ण को गोमूत्र या सिरका में पीसकर श्वित्र के दागों पर लगाने से श्वेत दाग नष्ट हो जाते हैं। यदि लेप उतारने पर जलन हो तो तुबरकादि तेल लगायें।

20. बावची एक किलोग्राम को जल में भिगोकर, छिलके रहित करके पीसकर 8 किलो गौ दुग्ध तथा 16 लीटर जल में पाक करें। जल के जल जाने पर दूध मात्र लेकर उसमें जामन लगाकर जमा दें। मक्खन निकालकर उसका घी बना लें। एक चम्मच घी की मात्रा मधु मिलाकर चाटने से श्वेत कुष्ठ में लाभ होता है।

21. बावची तेल की 10 बूंदे बताशे में डालकर प्रतिदिन कुछ दिनों तक सेवन करने से श्वित्र रोग में लाभ होता है।

22. बावची को गोमूत्र में भिगोकर रखें तथा तीन–तीन दिन बाद गोमूत्र बदलते रहें, इस तरह कम से कम 7 बार करने के बाद उसको छाया मे सुखाकर पीसकर रखें। उसमें से 1–1 ग्राम सुबह–शाम ताजे पानी से खाने से एक घंटा पहले सेवन करें, इससे श्वित्र (सफेद दाग) में निश्चित रूप से लाभ होता है, अनुभूत है।

23. 1 ग्राम बावची और 3 ग्राम काले तिल को मिलाकर एक वर्ष तक दिन में दो बार सेवन करने से कुष्ठ रोग नष्ट होता है।

गांठ : बावची के बीजों को पीसकर गांठ पर बांधते रहने से गांठ बैठ जायेगी।

अहितकर प्रभाव : आनाहकारक है।

दर्पनाशक : दही एवं स्नेह द्रव्य।

1. बाकुची मधुरा तिक्ता कटुपाका रसायनी।
विष्टम्भहृद्विमा रुच्या सरा श्लेष्मास्र पित्तनुत्।
रक्षा ह्रद्या श्वास कुष्ठ मेहव्रण कृमि प्रणुत्।। (भाव प्रकाश)

2. तत्फलं पित्तलं कुष्ठकफानिलहरं कटु।
केश्यं त्वच्यं वमिश्वासकासशोथामपांडुनुत्। (भाव प्रकाश)

Scanned by CamScanner

35 बला

वैज्ञानिक नाम	:	*Sida cordifolia* L.
कुलनाम	:	Malvaceae
अंग्रेजी नाम	:	Country mallow
संस्कृत	:	बला, वाट्यालिका
हिन्दी	:	जंगली मेथी, बरियार, खरैटी
गुजराती	:	बल, बला
मराठी	:	चिकणा
बंगाली	:	बेड़ेला
तैलगु	:	चित्तीन, तेलाआन्टिस
पंजाबी	:	खरयटी

परिचय

समस्त भारत के उष्ण कटिबन्धीय तथा समशीतोष्ण प्रान्तों में, जंगलों में तथा गांवों के आसपास की परती जमीन में बला के स्वयंजात पौधे पाये जाते हैं। बला की अनेक जातियां पाई जाती है, जिनमें बला, अतिबला, महाबला और नागबला मुख्य हैं।

बाह्य–स्वरूप

इसका क्षुप 2–5 फुट ऊंचा, मूल और कांड दृढ़ होता है इसलिए इसे बला नाम दिया गया है। पत्र एकान्तर, 1–3 इंच लम्बे, 1–2 इंच चौड़े, रोमश, 7–9 पार्श्व शिराओं से युक्त, लट्वाकार या हृदयवत् आयताकार, गोल–दंतुर होते हैं। पुष्प पत्रकोण से निकलते हैं। पत्रकोण पीत या श्वेत रंग के, बीज छोटे भूरे या काले दानों के रूप में होते हैं। अगस्त–सितम्बर में पुष्प तथा अक्टूबर जनवरी में फल लगते हैं।

Scanned by CamScanner

रासायनिक संघटन

इसमें और बीजों में मुख्य क्षाराभ इफेड्रिन है। इसके अतिरिक्त स्टिरायड, फाइटोस्टिरॉल, म्युसिन तथा पोटेशियम नाइट्रेट होते हैं। इसका मूल एसपैरोजिन और जिलेटिन के सम्मिश्रण से बनता है।

गुण–धर्म

भाव प्रकाश के मत में चारों प्रकार के बला, शीतल, मधुर, बल्य तथा कांतिकर, स्निग्ध ग्राही और वात पित्त, रक्त पित्त, रूधिर विकार और क्षयनाशक हैं।[1] बला संग्राहिक, बल्य एवं वातशामक है।[2] इसकी जड़ का चूर्ण यदि शर्करा के साथ खायें तो मूत्रातिसार दूर होता है। इसमें कुछ भी संदेह नहीं करना चाहिए, क्योंकि यह अनुभूत योग है। महाबला मूत्रकृच्छ्र को नष्ट करती है। अतिबला वात की अनुलोमक यदि दूध मिश्रण के साथ सेवन की जाये तो प्रमेह को नष्ट कर देती है।

अर्दित : इसका चूर्ण मिलाकर, पकाया हुआ दूध पिलाने से तथा बला तैल की मालिश करने से लाभ होता है।

औषधीय प्रयोग

उन्माद रोग : उन्माद में श्वेत पुष्प बला की जाति के मूल का चूर्ण 10 ग्राम, अपामार्ग चूर्ण 5 ग्राम, दूध आधा किलो, जल आधा किलो, इन सबको मिलाकर उबालें। जल केवल दूध मात्र शेष रह जाये तब दूध को ठंडा होने पर छानकर प्रातःकाल सेवन करने से उग्र तथा घोर उन्माद में भी लाभ होता है।

स्वर भंग : इसके चूर्ण को मिश्री और शहद के साथ देते हैं।

नेत्राभिष्यन्द : दुखती हुई आंखों पर इसके पत्तों के साथ बबूल के पत्तों को पीस टिकियां बनाकर रखते हैं और ऊपर से स्वच्छ वस्त्र को लपेट देने से लाभ होता है।

पित्तज कास : बला, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी, अडूसा, द्राक्षा एक–एक ग्राम इसके क्वाथ में मधु मिलाकर पीने से पित्तज कास नष्ट होता है।

मूत्रकृच्छ :

1. इसके 10 ग्राम पत्तों को काली मिरच के साथ घोंट छानकर सुबह शाम पिलाने से दाह और मिश्री के साथ पिलाने से मूत्र संबंधी रोग मिटते हैं।
2. इसकी ताजी 10–15 ग्राम जड़ को दूध में पीसकर पिलाने से तथा भोजन में चावल, घी तथा दूध मिलाकर सेवन से लाभ होता है।
3. इसके 10 ग्राम पत्रों को आधा किलो पानी में भिगोकर, मल छानकर, लुआब निकालकर मिश्री मिलाकर सुबह–शाम पिलाते हैं। इससे मूत्र खुलकर होता है तथा प्रमेह में भी लाभ होता है।
4. इसके बीजों के 1 ग्राम चूर्ण में 2 ग्राम मिश्री मिलाकर दूध के साथ सुबह–शाम फंकी देने से मूत्रकृच्छ्र मिटता है।
5. बला मूल, गोखरू, भटकैय्या की जड़ 1–1 ग्राम, सौंठ 1/2 ग्राम और 3 ग्राम गुड़ में पकाकर पीने से मल–मूत्र की रूकावट तथा ज्वर–शोथ का नाश होता है।[4]

अतिसार :

1. इसके 5 ग्राम जड़ के क्वाथ में जायफल 1 ग्राम घिसकर पिलाने से अतिसार मिटता है।
2. किसी भी रोग से मुक्ति होने के बाद होने वाली निर्बलता पर मूल छाल के चूर्ण में समभाग मिश्री मिला 3 ग्राम से 5 ग्राम तक चूर्ण दूध के साथ प्रातः–सायं सेवन करें।

प्रसूता शूल : प्रसूताशूल में, इसके मूल के क्वाथ से सिद्ध तैल–घृत सुबह–शाम दो बार पिलाने से लाभ होता है।

सगर्भा स्त्री के शूल पर : मूल कल्क एवं क्वाथ से सिद्ध किए हुए घी का सेवन प्रातः–सायं कराते रहने से शूल की शांति तथा गर्भ एवं गर्भिणी की पुष्टि होती है।

रक्त प्रदर : रक्त प्रदर हो तो इसकी जड़ व पत्ते को चावलों के धोवन के साथ पीस छानकर सेवन करायें।

श्वेत प्रदर :

1. बीज चूर्ण 3 ग्राम में समभाग मिश्री या खांड मिला कर प्रयोग करें तथा बला मूल 5 ग्राम, काली मिर्च सात दाने, दोनों को 50 ग्राम पानी में पीस छानकर, प्रातः–सायं सात दिन प्रयोग करने से पूर्ण लाभ होता है। मैथुन तथा चावल का सेवन अपथ्य है।
2. श्वेत प्रदर में मूल का चूर्ण 3 ग्राम, गाय के दूध के साथ, मिश्री मिला दिन में तीन बार सेवन से लाभ होता है।

गर्भ धारणार्थ : जड़ के चूर्ण के साथ कंघी का चूर्ण, मिश्री और मुलेठी चूर्ण समभाग मिलाकर, 3 से 6 ग्राम तक, शहद व घी चाटकर ऊपर से दूध पीने से गर्भधारण में सहयोग मिलता है। भाव प्रकाश उक्त योग में बड़ के अंकुर तथा नागकेसर को भी मिलाते

Scanned by CamScanner

हैं। यह और भी लाभदायक है।

फिरंगोपदंश जन्य क्षतों पर : जड़ को पीसकर बांधने तथा इसके पंचांग से प्रक्षालन करके फोड़ों को पकाकर फोड़ने के लिए मूत्र छाल के साथ कपोत विष्टा को पीसकर लेप करने से लाभ होता है।

अंण्डकोषवृद्धि पर : इसके 10 ग्राम क्वाथ में 10 ग्राम तक शुद्ध रेंडी तैल मिलाकर दिन में दो बार पिलाते है।

प्रमेह पर : बला मूल 10 ग्राम, महुआ वृक्ष की छाल 5 ग्राम, दोनों को 250 ग्राम पानी में पीस छानकर, उसमें 25 ग्राम मिश्री या शक्कर मिलाकर प्रातः–सायं सेवन कराने से प्रमेह दूर होकर वीर्य गाढ़ा हो जाता है।

शुक्र प्रमेह :

1. बीज चूर्ण 10 ग्राम में समभाग काली मिर्च चूर्ण मिलाकर 6 ग्राम तक प्रातः–सायं मिश्री या शक्कर के साथ सेवन करें तथा ऊपर शक्कर मिलाया हुआ गौदुग्ध 250 ग्राम पीयें। वीर्य गाढ़ा होकर शुक्र प्रमेह दूर हो जाता है।
2. शुक्रमेह पर ताजी जड़ को पानी के साथ छानकर थोड़ी शक्कर मिलाकर प्रातः पिलाते हैं।

श्लीपद : मूल के चूर्ण के साथ कंघी मूल का चूर्ण समभाग मिला, 3 ग्राम तक दूध के साथ सुबह–शाम सेवन करायें।

गठिया :

1. इसकी जड़ 5 से 10 ग्राम का क्वाथ दिन में 3 बार पिलाने से मूत्र अधिक लगकर गठिया, वातरक्त में लाभ होता है।
2. अंगुली के पोरों की गांठ में होने वाले महान कष्टदायक व्रण पर इसके कोमल पत्तों को पीस टिकिया बनाकर बांध दें, ऊपर से शीत जल डालते रहें। इस प्रकार दिन में 2–3 बार करने से शीघ्र लाभ होता है।

अंगघात : बला मूल को जल में उबालकर 1 माह तक सेवन करने से लाभ होता है। बला मूल सिद्ध तेल की मालिश भी करनी चाहिए।

अवबाहुक :

1. अवबाहुक नामक वात व्याधि में बला मूल 2 ग्राम अथवा फलेरु (पारिभद्र) की छाल 1 ग्राम का क्वाथ बनाकर सुबह–शाम पीने से एक माह में भुजा वज्र के समान हो जाती है।
2. इसके क्वाथ में रोंधा नमक मिलाकर पिलाने से लाभ होता है।
3. बला मूल 2 ग्राम के साथ नीम की छाल 2 ग्राम मिला क्वाथ कर सुबह–शाम पिलाने से एक माह में मन्यास्तम्भ (सर्वाइकल स्पाण्डलाइटिस) मिटता है।

शस्त्र आदि से हुए जख्म : इसकी जड़ व पत्तों के रस को घाव में भर देते हैं तथा उसी रस में रूई को भिगोकर व्रण के ऊपर बांध देते हैं ऊपर से बार–बार बला मूल रस टपकाते रहने से घाव भर जाता है।

बाल रोगों पर : बच्चों के सूखा रोग पर इसके पंचांग का चूर्ण 3 ग्राम का क्वाथ पिलायें तथा 50 ग्राम पंचांग को 3–4 किलो पानी में पकाकर स्नान करायें। ऐसा 5 बार करने से सूखा रोग निश्चय ही पूर्ण लाभ होता है।

वदग्रंथि : बंद गांठ को फोड़ने के लिए कोमल पत्तों को पीसकर पुल्टिस बना बांधते हैं तथा ऊपर से जल छिड़कते रहते हैं, गांठ शीघ्र फूट जाती है।

कफज विसर्प पर : पत्तों को पीसकर, रस निचोड़कर मालिश करने से लाभ होता है।

1. बलाचतुष्टयं शीतं मधुरं बलकान्तिकृत्।
स्निग्धं ग्राहि समीरास्रपित्तास्र क्षतनाशनम्।। (भाव प्रकाश)
2. बला संग्राहिक–बल्य–वातहराणाम्। (चरक)
3. बला स्निग्धा हिमा स्वादु वृष्या बल्या त्रिदोषनुत्।
रक्तपित्तं क्षयं हन्ति बलौजो बर्धयत्यपि। (ध० नि०)
4. त्रिकंटक बला व्याघ्री गुडनागर साधितम्।
वर्चो मूत्र विबन्धघ्नं शोफज्वरहरं पयः।। (चरक)
6. बलाग्नि वृहति वासा द्राक्षामिः क्वथितंजलम्।
पिबकासा पहंपेय रामयुथौ जितम। (भैषज्य रत्नावली)
7. मूल बलाया स्त्वथ परिपदा तथा ऽऽत्मगुप्तारबरसं पिवेहा।
पिबकासा पहं पेय राम युथौ नितम। (भैषज्य रत्नावली)
8. बला बिल्व श्रृते क्षीरे घृतमंड विपाचरेत्।
तस्य शुक्तिः प्रकुंचोबा भूर्वागतेऽनिले। (चरक)

Scanned by CamScanner

बेल

36

वैज्ञानिक नाम	:	*Aegle marmelos* (L.) Correa
कुलनाम	:	Rutaceae
अंग्रेजी नाम	:	Bael fruit tree, Bael
संस्कृत	:	बिल्व, श्रीफल, पूतिवात, शैलपत्र, लक्ष्मीपुत्र, शिवेष्ट
हिन्दी	:	बेल, बिली, श्रीफल
गुजराती	:	बेल, बीली
मराठी	:	बेल
बंगाली	:	बेल
तैलगु	:	बिल्वयु, मोरेडु
अरबी	:	सफरजले
उर्दू	:	बेल
तमिल	:	बिलूबम

परिचय

बेल वृक्ष अति प्राचीन पूर्ण रूपेण भारतीय वृक्ष है। शास्त्रपुराण एवं वैदिक साहित्य में इसे दिव्य वृक्ष कहा गया है। इस वृक्ष में लगे हुये पुराने पीले पड़े हुये फल वर्ष उपरान्त पुनः हरे हो जाते हैं, तथा इसके तोड कर सुरक्षित रखे हुये पत्र 6 माह तक ज्यों कि त्यों बने रहते हैं एवं गुणहीन नहीं होते। इस वृक्ष की छाया शीतल और आरोग्य कारक है। इन्हीं दिव्य गुणों के कारण यह बहुत पवित्र एवं अशुद्धि निवारक माना जाता है।

बाह्य–स्वरूप

इसका वृक्ष 25–30 फुट ऊंचा, 3–4 फुट मोटा, पत्र संयुक्त, त्रिफाक और गन्धयुक्त होता है। फल 2–4 इंच व्यास का गोलाकार धूसर पीताभ होता है। बीज छोटे कड़े तथा अनेक होते हैं।

रासायनिक संघटन

बेल के अंदर टैनिक एसिड, एक उड़नशील तेल, एक कड़वा तत्व और एक चिकना लुआबदार पदार्थ पाया जाता है। इसकी जड़, पत्तों और छाल में शक्कर को कम करने वाले तत्व और टैनिन पाये जाते

Scanned by CamScanner

है। फल के गूदे में मारशेलीनिस तथा बीजों में पीले रंग का तेल, जो बहुत ही उत्तम विरेचन का कार्य करता है, पाया जाता है।

गुण–धर्म

उष्ण, कफ वात शामक, रोचक, दीपन, पाचन, हृद्य, रक्त स्तम्भन, कफघ्न, मूत्र एवं तद्गत शर्करा कम करने वाला, कटुपौष्टिक तथा अतिसार, रक्त अतिसार, प्रवाहिका, मधुमेह, श्वेत प्रदर, अतिरजःस्राव, रक्तार्श नाशक होता है।[1]

बाल फल : लघु, तिक्त, कषाय, दीपन, पाचन, स्निग्ध, उष्ण तथा शूल, आमवात, संग्रहणी, कफातिसार, वात, कफनाशक तथा आंत के लिये बल्य है।[2]

तरूण या अर्धपक्व फल : लघु, कटु, कसैला, उष्ण, स्निग्ध, संकोचक, दीपन, पाचन, हृदय एवं कफ वात नाशक है।[3] विल्व की मज्जा और बीज का तेल अति उष्ण एवं तीव्र वातनाशक होता है।[4]

पक्व फल : गुरू, कटु, तिक्त रस युक्त, मधुर रस प्रधान, उष्ण, दाहकारक, मृदुरेचक (अधिक मात्रा में कब्जकारक) वातानुलोमक, वायु को उत्पन्न करने वाला हृदय एवं बल्य है।

पत्र : संकोचक, पाचक, त्रिदोष विकारनाशक, कफ निःसारक, व्रणशोधक, शोथहर, वेदना, स्थापन तथा मधुमेह, जलोदर, कामला, ज्वर, नेत्राभिष्यंद आदि में उपयोगी है।

मूल और छाल : लघु, मधुर, वमन, शूल, त्रिदोष, नाडी तंतुओं के लिये शामक कुछ नशा पैदा करने वाली, ज्वर, अग्निमांद्य, अतिसार, प्रवाहिका, ग्रहणी, मूत्रकृच्छ्र, हृदय की दुर्बलता आदि में प्रयुक्त होती है।

औषधीय प्रयोग

शिरःशूल :

1. सिर के शूल में बेल की सूखी हुई जड़ को थोड़े जल के साथ पीसकर, मस्तक पर गाढ़ा लेप करने से लाभ होता है।
2. एक कपड़े को पत्रस्वरस में तर कर उसकी पट्टी सिर पर रखने से लाभ होगा। पत्र पीसकर सिर पर लेप करने से भी लाभ होता है।

जूं नाशार्थ : पके फल के आधे कटोरी जैसे छिल्के को साफ कर, उसमें तिल का तेल, कपूर मिलाकर डालकर दूसरे भाग से ढक कर रख दें। इस तेल को सिर में लगाने से जूंए नहीं पड़ती।

नेत्राभिष्यन्द : बेल के पत्रों पर घी लगाकर तथा सेंककर आंखों पर बांधने से, पत्तों का स्वच्छ स्वरस आंखों में टपकाने से, साथ ही पत्रों को पीसकर कल्क का लेप पलकों पर करने से नेत्रों के बहुत से रोग दूर होते हैं।

रतौंधी :

1. दस ग्राम ताजे बेल पत्रों को 7 नग काली मिर्च के साथ पीसकर, 100 ग्राम जल में छानकर, 25 ग्राम मिश्री या शक्कर मिलाकर सुबह–शाम पीयें तथा रात्रि में बिल्व पत्र भिगोये हुए जल से प्रातःकाल आंखों को धोवें।
2. बेल पत्र रस 10 ग्राम, गाय का घी 6 ग्राम और कपूर 1 ग्राम तांबे की कटोरी में इतना रगड़ें कि काला सुरमा बन जाये। इसे आंखों में लगायें और प्रातःकाल गौमूत्र से आंख धोयें।

बहरापन : बेल के कोमल पत्र निरोगी गाय के मूत्र में पीसकर तथा चार गुना तिल का तेल तथा 16 गुना बकरी का दूध मिलाकर मंद अग्नि द्वारा तेल सिद्ध कर रख लें। इसे नित्य कानों में डालने से बहरापन, सनसनाहट (कर्णनाद), कानों की खुश्की, खुजली आदि दूर होती है।

क्षय, श्वास, वमन : बेल मूल, अडूसा पत्र तथा नागफनी थूहर के पके सूखे हुए फल 4–4 भाग, सोंठ, काली मिर्च व पिप्पली 1–1 भाग लेकर उसको कूट कर रखें, उसमें से 20 ग्राम लगभग सबको कूट कर आधा किलो जल में चतुर्थांस कर, प्रातः–सायं शहद के साथ सेवन कराने से शीघ्र लाभ होता है।

हृदय शूल : पत्र स्वरस 1 ग्राम में गाय का घी 5 ग्राम मिलाकर चटायें।

उदर शूल :

1. बेलपत्र 10 ग्राम, काली मिर्च 7 नग पीसकर, 10 ग्राम मिश्री मिलाकर शर्बत बनाकर दिन में 3 बार पिलायें।
2. बेल मूल, एरंड मूल, चित्रक मूल और सोंठ एक साथ जौ कूट कर अष्टमांश क्वाथ सिद्ध कर उसमें थोड़ी सी भुनी हुई हींग तथा सेंधा नमक 1 ग्राम बुरककर, 20–25 ग्राम की मात्रा में पिलाने से तत्काल ही विशेषतः वात तथा कफजन्य शूल मिट जाता है। इन द्रव्यों का कल्क गरम कर उदर पर लेप करने से भी लाभ होता है।

दाह, तृष्णा, अजीर्ण, अम्लपित्त :

1. 20 ग्राम बेल पत्र को 500 ग्राम जल में 3 घंटे तक डुबोकर रखें। प्रति 2 घंटे पर 20–20 ग्राम वही जल पिलायें। आंतरिक दाह शांत होता है।
2. छाती में जलन हो तो पत्रों को जल के साथ पीस छानकर, 20 ग्राम में थोड़ी मिश्री मिलाकर दिन में 3–4 बार पिलायें।
3. 10 ग्राम पत्र स्वरस में काली मिर्च, सेंधा नमक 1–1 ग्राम मिलाकर दिन में 3 बार सेवन करें।

मंदाग्नि :

1. भूख न लगने तथा पाचन शक्ति कमजोर हो जाने पर, बेलगिरी चूर्ण, छोटी पिप्पली, बंसलोचन व मिश्री 2–2 ग्राम एकत्र कर इसमें 10 ग्राम तक अदरक का रस मिलाकर तथा थोड़ा जल मिला, आग में पकायें। गाढ़ा हो जाने पर दिन में 4 बार चटायें।
2. बेलगिरी चूर्ण 100 ग्राम और अदरक 20 ग्राम दोनों को

Scanned by CamScanner

पीसकर थोड़ी शक्कर 50 ग्राम व इलायची 20 ग्राम चूर्ण मिलाकर चूर्ण कर लें। सुबह–शाम भोजनोपरान्त आधा चम्मच गुनगुने जल से लेने से आंव का पाचन होगा, भूख बढ़ेगी।

3. बेलगिरी का पका फल मंदाग्नि और ज्वर में लाभदायक है।

संग्रहणी :

1. बेलगिरी चूर्ण 10 ग्राम, सौंठ चूर्ण और पुराना गुड़ 6–6 ग्राम खरल कर, दिन में तीन या चार बार छाछ के साथ 3 ग्राम की मात्रा में सेवन करायें। भोजन में केवल छाछ दें।
2. बेलगिरी और कुड़ाछाल दोनों का चूर्ण एकत्र कर मिला (10 से 20 ग्राम तक) रात्रि के समय 150 ग्राम जल में भिगोकर, प्रातः इस हिम (भिगा हुआ जल) को मसल छानकर पिलायें।
3. कच्चे बेल को आग में सेंककर, 10 से 20 ग्राम गूदे में थोड़ी शक्कर और शहद मिलाकर पिलायें।

प्रवाहिका :

1. कच्चे बेल का गूदा, गुड़, तिल, तेल, पिप्पली, सौंठ, इन्हें समभाग में मिश्रित कर प्रवाहिका से जब उदर में वातरूद्ध शूल हो और बार–बार उपवेश की इच्छा हो, पर पूरी न होकर थोड़ा–थोड़ा आंव सहित आये तब 10–20 ग्राम की मात्रा प्रातः–सायं प्रयोग करना चाहिए।[8]
2. बेलगिरी एवं तिल समभाग लेकर कल्क कर, दही की मलाई या घी के साथ सेवन करें।
3. प्रवाहिका में पत्र स्वरस 10 ग्राम में 3 ग्राम मधु खिलाकर प्रति तीन घंटे के अंतर से चटाते हैं।

अतिसार :

1. बेल के कच्चे फल को आग में सेंक कर, 10 से 20 ग्राम गूदे को मिश्री के साथ दिन में 3–4 बार खिलाने से पुराना अतिसार और आमातिसार मिटता है।
2. शुष्क बेल गिरी 50 ग्राम, श्वेत कत्था 20 ग्राम दोनों के महीन चूर्ण में 100 ग्राम मिश्री मिलाकर 1.5 ग्राम मात्रा में दिन में 3–4 बार के सेवन से सब प्रकार के अतिसारों में लाभ होता है।
3. 200 ग्राम बेलगिरी को 4 किलो जल में पकाकर जब 1 किलो के लगभग जल शेष रह जाये, छानकर 100 ग्राम लगभग मिश्री मिलाकर बोतल में भरकर रख लें। इसको 10 या 20 ग्राम की मात्रा में 500 मिलीग्राम भुनी हुई सौंठ, अत्यधिक तीव्र अतिसार हो तो मूग बराबर अफीम मिलाकर सेवन करने से 2 या 3 बार में ही सब प्रकार के अतिसारों में लाभ होता है।
4. गर्भवती स्त्री को अतिसार होने पर 10 ग्राम बेलगिरी के पावडर को चावल के धोवन जल के साथ पीसकर थोड़ी मिश्री मिला, दिन में 2–3 बार देने से लाभ होता है। किसी भी दशा में इससे लाभ ही होता है।
5. 5 ग्राम बेलगिरी को सौंफ के अर्क में घिसकर दिन में 3–4 बार देने से बालक के हरे पीले दस्त ठीक हो जाते हैं।
6. बेलगिरी व पलाश का गोंद 1–1 ग्राम तथा मिश्री 2 ग्राम एकत्र कर थोड़े जल के साथ खरल कर मंद आंच पर गाढ़ा कर चटाने से भी लाभ होता है।

पित्तातिसार : बेल का मुरब्बा खिलाने से पित्त अतिसार मिटता है। पेट के समस्त रोगों के लिए बेल का मुरब्बा सेवनीय है।

आम अतिसार :

1. बेल के कच्चे और साबूत फल को भूमल में भूनकर, उसको छिलके सहित कूटकर रस निकालकर, मिश्री मिलाकर देने से पुराना अतिसार मिटता है। यह प्रयोग दिन में एक या दो बार लगातार 10–15 दिन तक करें।
2. बेलगिरी के समभाग कत्था, आम की गुठली की मींगी, ईसबगोल की भूसी और बादाम की मींगी सब बराबर मात्रा में मिलाकर शक्कर या मिश्री के साथ 3–4 चम्मच सेवन करते रहने से जीर्णअतिसार, आम अतिसार, प्रवाहिका आदि में लाभ होता है।
3. बेलगिरी और आम की गुठली की मींगी समभाग, पीसकर 2 से 4 ग्राम तक चावल के मांड के साथ या शीतल जल के साथ प्रातः–सायं सेवन करायें। यह प्रयोग अत्यन्त निरापद एवं प्रभावशाली है।

रक्त अतिसार :

1. बेलगिरी के 50 ग्राम गूदे को 20 ग्राम गुड़ के साथ दिन में तीन बार खाने से रक्त अतिसार मिटता है।
2. चावल के 20 ग्राम धोवन में बेलगिरी चूर्ण 2 ग्राम और मुलेठी चूर्ण 1 ग्राम को पीसकर, 3–3 ग्राम शक्कर और शहद मिलाकर दिन में 2–3 बार सेवन कराने से पित्तारक्त अतिसार मिटता है।
3. बेलगिरी और धनियां 1–1 भाग, मिश्री दो भाग, एकत्र

Scanned by CamScanner

चूर्ण कर 2–6 ग्राम तक ताजे जल से प्रातः सायं सेवन कराने से उत्तम लाभ होता है।

4. कच्चे बेल को कंडे की आग में भूनें, जब छिल्का बिल्कुल काला हो जाये तब भीतर का गूदा निकालकर 10 से 20 ग्राम तक दिन में तीन बार मिश्री मिला सेवन करायें।

तृषा वमन दाह कोष्ठबद्धता, मंदाग्नि पर :

1. पके फल के गूदे को शीतलजल में मसल, छानकर, मिश्री, इलायची, लौंग, कालीमिर्च तथा किंचित कपूर मिलाकर शरबत बनाकर पीने से तृषा, दाह, वमन, कोष्ठबद्धता तथा मंदाग्नि दूर होती है। जिन्हें कब्जियत की शिकायत हो वे इसे भोजन के साथ लें।
2. 100 ग्राम गूदे को मसल, छानकर उसमें थोड़ी शक्कर मिला सेवन करने से भी लाभ होता है।
3. 100 ग्राम गूदे को इमली के पानी के साथ थोड़ी शक्कर मिलाकर या दही के साथ शक्कर मिलाकर पीने से कोष्ठबद्धता तथा दाह दूर होती है।

वातगुल्म : वात गुल्म में बेलगिरी या कोमल फल के गूदे 10–20 ग्राम को गुड़ के साथ सेवन करने से रक्त अतिसार, आम शूल, विबन्ध, वातगुल्म तथा उदर रोग नष्ट होता है।[7]

रक्तार्श :

1. बेल गिरी के चूर्ण में समभाग मिश्री मिलाकर, 4 ग्राम तक शीतल जल के साथ सेवन कराने से रक्तार्श में शीघ्र लाभ होता है।
2. रोगी के मस्सों में विशेष वेदना हो तो विल्ब मूल का क्वाथ तैयार कर सुहाते–सुहाते क्वाथ में रोगी को बैठाने से शीघ्र ही वेदना दूर हो जाती है।

हैजा व वमन : आम की मींगी और बेलगिरी दोनों को 10–10 ग्राम लेकर कूट पीसकर 500 ग्राम जल में पकायें। 100 ग्राम शेष रहने पर शहद और मिश्री मिलाकर 5 से 20 ग्राम तक आवश्यकतानुसार पिलायें, इससे वमन युक्त अतिसार में भी लाभ होता है।[5]

विसूचिका : बेलगिरी और गिलोय 1–4 ग्राम कूटकर आधा किलो जल में पकायें। 250 ग्राम शेष रहने पर छानकर थोड़ा–थोड़ा पिलायें। यदि हैजा तीव्र हो तो इस क्वाथ में जायफल, कपूर और छुहारा मिलाकर क्वाथ करें तथा बार–बार थोड़ा–थोड़ा पिलायें।

मधुमेह :

1. ताजे पत्तों को समभाग 10 ग्राम से 20 ग्राम तक पीसकर उसमें 5–7 काली मिर्च भी मिलाकर पानी के साथ सुबह खाली पेट सेवन करने से मधुमेह में आशातीत लाभ प्राप्त होता है।
2. प्रतिदिन प्रातःकाल 10 ग्राम पत्र स्वरस का सेवन भी गुणकारी है।
3. बेलपत्र, हल्दी, गिलोय, हरड़, बहेड़ा और आंवला, 6–6 ग्राम, सबको कूटकर 250 ग्राम जल में रात्रि को कांच व मिट्टी के बर्तन में भिगो दें। प्रातःकाल खूब मसल, छानकर, आधी मात्रा प्रातः–सायं 2–3 माह तक सेवन करने से यह रोग नष्ट हो जाता है।
4. बेल पत्र और नीम पत्र 10–10 नग तथा तुलसी पत्र 5 नग, इनको पीसकर गोली बनाकर प्रातः नित्य जल के साथ सेवन करें।

पांडु (कामला) :

1. कामला व पांडुरोग में कोमल पत्रों के 10 से 30 ग्राम तक रस में आधा ग्राम काली मिर्च का चूर्ण मिलाकर प्रातः–सायं सेवन कराने से लाभ होता है।
2. शोथ में पत्र रस को गरम कर लेप दें या पत्रों का क्वाथ कर बफारा देवें।

जलोदर : ताजे पत्रों के 25 से 50 ग्राम तक रस में छोटी पिप्पली चूर्ण एक या डेढ़ ग्राम मिलाकर पिलाने से लाभ होता है।

प्रदर : बेलपत्र रस को दोनों समय शहद के साथ सेवन कराने से लाभ होता है।

बहुमूत्र : बेलगिरी 10 ग्राम, सोंठ 5 ग्राम को, जौकूट कर 400 ग्राम जल में अष्टमांश क्वाथ सिद्ध कर सुबह–शाम सेवन कराते रहने से 5 दिन में पूर्ण लाभ होता है।

मूत्रकृच्छ्र :

1. इसके ताजे फल के गूदे को पीसकर दूध के साथ छानकर उसमें शीतल चीनी का चूर्ण मुरमुरा कर पिलाने से पुराना मूत्रकृच्छ्र मिटता है। पेशाब रूक–रूककर होने में यह अत्यन्त लाभप्रद है।
2. कोमल ताजे पत्र 6 ग्राम, श्वेत जीरा 3 ग्राम और मिश्री 6 ग्राम एक साथ पीसकर कल्क को खाकर ऊपर से जल पीने से, 6 या 7 दिन में पूर्ण लाभ होता है। इससे मूत्र के अनेक विकार दूर होते हैं।
3. बेल की जड़ लगभग 20–25 ग्राम को रात्रि में कूटकर, 500

बेल गिरि

Scanned by CamScanner

ग्राम जल में भिगोकर, सुबह मसल, छानकर मिश्री मिलाकर पीयें, मूत्रजलन, कष्ट आदि की शिकायतें दूर होती हैं।

4. बेल की जड, अमलतास की जड प्रत्येक 25–25 ग्राम, कूटकर 500 ग्राम जल में पकायें। 125 ग्राम शेष रहने पर प्रातःकाल सेवन कराने से 3 दिन में पूरा लाभ होता है। साथ ही विल्व मूल क्वाथ की उत्तर बस्ति भी दें।

कमजोरी :

1. केवल बेलगिरी के चूर्ण को मिश्री मिले हुए दूध के साथ सेवन करने से रक्ताल्पता, शारीरिक दुर्बलता तथा वीर्य की कमजोरी दूर होती है।
2. धातु दौर्बल्य में 3 ग्राम पत्र चूर्ण में थोड़ा शहद मिलाकर सुबह शाम नियमित चटायें।
3. पत्र स्वरस में या पत्रों की चाय में जीरा चूर्ण और दूध मिलाकर पीयें। मात्रा–पत्र स्वरस 20 से 50 ग्राम, जीरा चूर्ण 6 ग्राम, मिश्री 20 ग्राम और दूध।
4. बेलगिरी, असगंध और मिश्री समभाग चूर्ण कर उसमें चौथाई भाग उत्तम केशर का चूरा मिलाकर, 4 ग्राम तक प्रातः–सायं खाकर ऊपर गरम दूध पियें।
5. सुखाये हुए पक्व फलों के गूदे के महीन चूर्ण का थोड़ी मात्रा में नित्य प्रातः–सायं सेवन करने से कमजोरी दूर होती है।

वात ज्वर : विल्व, अरणी, गंभारी, श्योनाक तथा पाढल, इनकी जड़ की छाल, गिलोय, आंवला, धनिया, समभाग लेकर इनके 20 ग्राम मात्रा को 160 मिलीलीटर जल में उबालकर 40 मिलीलीटर शेष बचे क्वाथ को वातज्वर में प्रातः–सायं 20–20 मिलीलीटर मात्रा में सेवन करना चाहिए।[6]

दुर्गन्धनाशक : शरीर की दुर्गन्ध दूर करने के लिए पत्र रस का लेप करना चाहिए।

कांटा : शरीर में कहीं पर भी कांटा आदि धंसने पर तथा न निकलने पर पत्र की पुल्टिस बांधने से, वह शल्य वहीं गलकर नष्ट हो जाता है तथा कोई विकार नहीं होता है।

शूल : यकृत्त शूल में 10 ग्राम पत्र स्वरस में 1 ग्राम सौंफ नमक मिलाकर दिन में 3 बार पिलाने से लाभ होता है।

फोड़े फुंसी : रक्त विकार से उत्पन्न फोड़े फुंसियों पर, इसकी जड़ या लकड़ी को जल में पीसकर लगाने से लाभ होता है।

अग्निदग्ध :

1. कीट दंश पर या अग्निदग्ध पर इसके ताजे पत्तों के रस को बार–बार लगाने से शक्ति मिलती है।
2. चेचक की बीमारी में जब शरीर में अत्यन्त दाह एवं बेचैनी हो तो पत्र रस में मिश्री मिलाकर पिलाने से तथा बेल पत्रों का पंखा बनाकर हवा करने से रोगी को विशेष शक्ति मिलती है।

व्रण गलगंड, नारु आदि :

1. व्रण पर पत्तों को बिना जल के पीसकर टिकिया बनाकर बांधने से लाभ होता है।
2. पत्तों को पीसकर, पुल्टिस बनाकर फोड़ों पर बांधने से अति शीघ्र आराम होता है।
3. कैंसर अथवा कार्बन्कल नामक भयंकर जहरीले व्रणों के सुधार हेतु पत्तों की पुल्टिस, पत्ररस से या क्वाथ से प्रक्षालन, तथा साथ ही नित्य 25 ग्राम तक पत्र रस दिन में 3 बार सेवन कराने से भयंकर व्रण भी ठीक हो जाता है।
4. गलगंड व अपची में भी उक्त प्रयोग लाभकारी है।

ज्वर :

1. उस ज्वर में जिसमें लीवर की दशा ठीक न हो, उसमें बेल का अष्टमांश क्वाथ सिद्ध कर, उसमें मधु मिलाकर प्रातः–सायं 20 मिली लीटर मात्रा में पिलायें।
2. इसके पत्तों के क्वाथ से ज्वर और सूखी खांसी मिटती है।

1. श्रीफलस्तुवरस्तिक्तो ग्राही रूक्षोऽग्निपित्तकृत् ।
वातश्लेष्महरो बल्यो लघुरुष्णश्च पाचनः।। (भाव प्रकाश)
2. कफानिलहरं तीक्ष्णं स्निग्धं संग्राहि दीपनम्।
कटुतिक्त कषायोष्णं बालं बिल्वमुदाहृतम्।। (सुश्रुत)
3. विद्यात्तदेवसंपक्वं मधुरानुरसं गुरू।
विदाहि विष्टम्भकरं दोषकृत पूतिमारुतम्।। (सुश्रुत)
4. बिल्वमज्जं भवं तैलमुष्णंवातहरं परं।
बिल्वं साङ्ग्राहिकदीपनीयवातकफप्रशमनानाम्।। (कै0नि0)
5. विल्वचूतस्थिनिर्यूहः पीतः सक्षौद्रशर्करः।
निहन्याच्छर्धातीसारं वैश्वानर इवाहुतिम्।। (भैषज्य रत्नावली)
6. बिल्वादि पंचमूली च गुडूच्यामलके तथा।
कुस्तुम्बुरूसमो ह्येष कषायो वातिके ज्वरे। (भैषज्य रत्नावली)
7. गुडेन खादितं बिल्वं रक्तातिसारनाशनम्।
आमशूलविबन्धघ्नं कुक्षिरोगविनाशकम्।। (भैषज्य रत्नावली)
8. बालं बिल्वं गुडं तैलं पिप्पलीविश्वभेषजम्।
लिह्यद्घाते प्रतिहते सशूलः सप्रवाहिकः। (भैषज्य रत्नावली)

Scanned by CamScanner

भांग

37

वैज्ञानिक नाम	:	*Cannabis Sativa* L.
कुलनाम	:	Cannabinaceae
अंग्रेजी नाम	:	Indian Hemp
संस्कृत	:	भंगा, विजया, मदकारिणी, मादनी
हिन्दी	:	भंग, भांग
गुजराती	:	भांग
मराठी	:	भांग
बंगाली	:	सिद्धि भांग
अरबी	:	किन्नाब, कुन्नब
फारसी	:	कनब, किनब, बंग

परिचय

भांग के स्वयंजात पौधे, भारतवर्ष में सब जगह विशेषतः उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल एवं बिहार में प्रचुरता से पाये जाते हैं। भांग के नर पौधों के पत्रों को सुखाकर भांग तथा मादा पौधों की रालीय पुष्प मंजरियों को सुखाकर गांजा तैयार किया जाता है तथा भांग की शाखाओं और पत्तों पर जमे राल सदृश पदार्थ को चरस कहते हैं।

बाह्य–स्वरूप

इसके वर्षायु, गंधयुक्त, रोमश क्षुप 3–8 फुट ऊँचे होते हैं। पत्र एकान्तर क्रम से व्यवस्थित होते हैं, ऊपर की पत्तियाँ 1–3 खंडों तथा निचली पत्तियाँ 3–8 खंड़ों से युक्त होती है। निचली पत्तियों में पत्रवृन्त लंबे होते हैं, पुष्प छोटे हरितवर्ण, कोणोदभूत तथा एकलिंगी होते हैं। फल छोटे दानेदार होते हैं जिनके भीतर एक–एक चपटा बीज होता है, पुष्प और फल शरद ऋतु में लगते हैं।

रासायनिक संघटन

भांग में भूरे रंग की एक मृदु राल, जिसे केनाबिनोल कहते हैं, पायी जाती है। राल में लाल रंग का एक गाढ़ा चिपचिपा तेल पाया जाता है। हवा में खुला रखने पर यह रालीय हो जाता है। इसके अतिरिक्त भारतीय भांग में कुछ गोंदीय पदार्थ शर्करा, उड़नशील तेल तथा कैल्शियम फॉस्फेट आदि तत्व भी पाये जाते हैं।

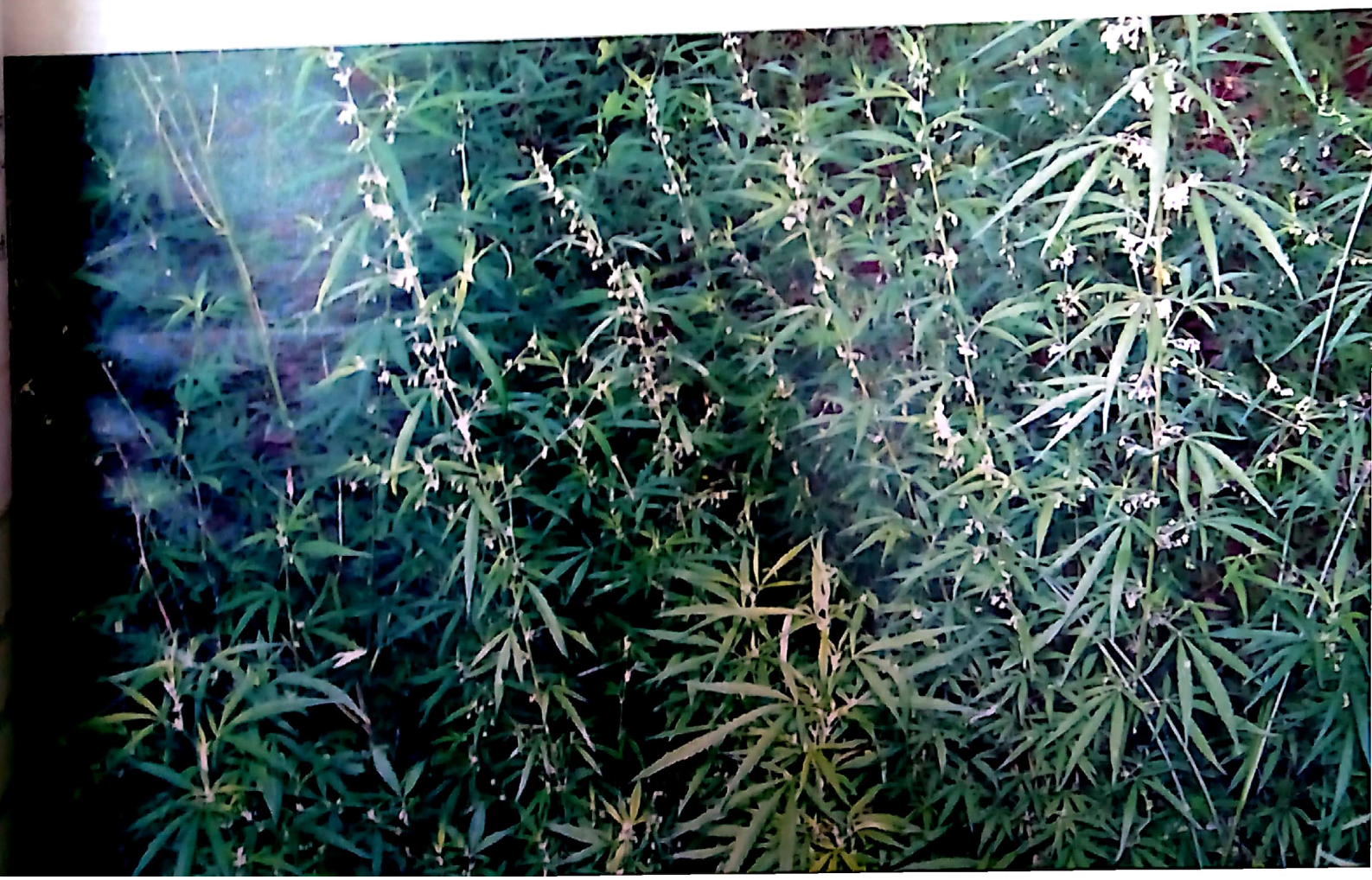

Scanned by CamScanner

गुण–धर्म

कफ नाशक, कड़वी ग्राही, पाचक, हल्की, तीक्ष्ण गरम, पित्त कारक और मदकारिणी तथा अग्नि वर्द्धक है। इसके बीज ग्राही और वमन तथा दस्तों को रोकने वाले हैं।

औषधीय प्रयोग

कर्णशूल : इसके 8–10 बूंद स्वरस को कान में डालने से कीड़े मरते है और कान की पीड़ा मिट जाती है।

निद्रानाश : भांग के सेवन से नींद बहुत अच्छी आती है। जिन दशाओं में अफीम के सेवन से नींद नहीं होती, उन दशाओं में भांग का सेवन बहुत अच्छा है, क्योंकि इसके प्रयोग से कोष्ठबद्धता और मस्तक पीड़ा नही होती है।

मस्तक पीड़ा :

1. भांग के पत्तों को महीन पीसकर सूंघने से मस्तक पीड़ा नष्ट हो जाती है।
2. इसके पत्तों का अर्क गर्म कर कान में 2–3 बूंद की मात्रा डालने से सर्दी और गर्मी की मस्तक पीड़ा मिटती है।

हिस्टीरिया : 250 मिलीग्राम भांग को हींग के साथ या 65 मिलीग्राम सूखा सार हींग के साथ देने से स्त्रियों के आवेश रोग में बहुत लाभ होता है।

शिरः कृमि : इसके पत्तों का स्वरस मस्तक पर लेप करने से मस्तक की मुस्सी (रूसी) मिट जाती है और कीड़े मर जाते हैं।

खांसी : गांजे का 65 मि०ग्रा० सत दमा और खांसी के वेग को रोकता है।

दमा :

1. सेंकी हुई एक 125 मिलीग्राम भांग को 2 ग्राम काली मिर्च और 2 ग्राम मिश्री मिलाकर देने से श्वांस का वेग कम होता है।
2. भांग का धुआं पीने से श्वास रोग में लाभ होता है।

संग्रहणी : 100 ग्राम भांग, 200 ग्राम शुंठी और 400 ग्राम जीरा, तीनों चीजों को अच्छी तरह एक साथ पीस छानकर रख लें। इस चूर्ण की 80 पुड़िया बना लें। भोजन से आधा घण्टे पहले 1–2 चम्मच दही में मिलाकर चाट लें। यह प्रयोग 40 दिन तक सुबह–शाम करने से पुरानी से पुरानी संग्रहणी चली जाती है।

उदर शूल : भांग और मिर्च चूर्ण दोनों को समान मात्रा में गुड़ में ½ ग्राम गोली बना कर देने से उदरशूल मिटता है।

दीपन : काली मिर्च और भांग के 500 मिलीग्राम चूर्ण को शहद के साथ सुबह–शाम चाटने से भूख बढ़ती है।

आमातिसार :

1. भांग के 125 मिलीग्राम चूर्ण की फंकी सौंफ के 4–6 बूंद अर्क के साथ दिन में दो बार देने से तीव्र आमातिसार मिटता है
2. सेकी हुई भांग को धोकर, महीन पीस लें, 125 मिलीग्राम चूर्ण को मधु के साथ दिन में दो बार चाटने से अतिसार और आमअतिसार मिटता है।
3. भांग के 100 मिलीग्राम चूर्ण में 50 मिलीग्राम पोश्त दाने का चूर्ण मिलाकर सुबह–शाम खाने से आमअतिसार मिटता है
4. भांग की सूखी कोमल टहनियों और पुष्पों को शक्कर और काली मिर्च के साथ देने से आमअतिसार मिटता है। यदि आवश्यकता हो तो इसमें अहिफेन मिलाकर देना चाहिए।

वृषण शोथ :

1. पानी में भांग को थोड़ी देर भिगो रखें, फिर उस पानी से सूजन अंडकोषों को धोने से तथा फोम को अंडकोषों पर बांधने से अंडकोषों की सूजन उतर जाती है।
2. इसके गीले पत्तों की पुल्टिस बनाकर अंडकोषों की सूजन पर बांधना चाहिए और सूखी भंग को पानी में उबालकर बफारा देने से अंडकोषों की सूजन उतर जाती है।

मूत्रकृच्छ्र : भांग और खीरा ककड़ी की मगज को पानी में घोंट छान कर ठंढ़ई की तरह पिलाने से मूत्रकृच्छ्र मिटती है।

कष्टार्तव : मासिक धर्म आने से पहले उदर को मृदु विरेचन देकर उदर को शुद्ध कर लेना चाहिए। फिर गांजा दिन में तीन बार देते रहने पर वेदना कम होती है और रजःस्राव नियमानुसार होने लगता है।

अर्श : फूली हुई और दर्दनाक बवासीर पर हरी या सूखी भांग 10 ग्राम अलसी, 30 ग्राम की पुल्टिस बनाकर बांधने से दर्द और खुजली मिट जाती है।

मूत्रेन्द्रिय : गांजे को अरंडी के तेल में पीसकर मूत्रेन्द्रिय पर लेप करने से ताकत बढ़ती है और इन्द्री का टेढ़ापन दूर

Scanned by CamScanner

होता है।

विसूचिका : हैजे के प्रारंभ में गांजा या भांग 250 मिलीग्राम छोटी इलायची, काली मिर्च 250–250 मिलीग्राम तथा कपूर मिलाकर आधा–आधा घण्टे या 1–1 घण्टे पर उबालकर शीतल कर जल के साथ देते रहने से हैजे का रोगी ठीक हो जाता है।

गठिया : इसके बीजों के तेल की मालिश करने से गठिया मिटती है।

धनुस्तम्भ :

1. एक ग्राम भांग का धुआं पिलाने से धीरे–धीरे आक्षेप कम होता जाता है। बार–बार धुआं पीने से रोग छूट जाता है।
2. 125 मिलीग्राम घी में सेकी हुई भांग को 2 ग्राम काली मिर्च और 2 ग्राम मिश्री में मिलाकर दिन में 3–4 बार देना चाहिए।

स्नायु पीड़ा : स्नायु पीड़ा, पित्त शोथ और एक प्रकार की शोथ जो मुंह पर होती है और आसपास फैलती जाती है। उस पर भांग के पंचाग को पानी में पीसकर लेप करना चाहिए।

मलेरिया ज्वर : शुद्ध भांग का चूर्ण एक ग्राम, गुड दो ग्राम, दोनों को मिलाकर 4 गोलियां बना लें। जाड़े का बुखार दूर करने के लिए 1–1 गोली 2–2 घण्टे के अंतर से दें या शुद्ध भांग की 1 ग्राम की गोली ज्वर के एक घण्टा पूर्व देने से ज्वर का वेग नहीं होता है।

व्रण : इसके पत्तों के चूर्ण को घाव और जख्म पर बुरकाने से वे जल्दी अच्छे हो जाते हैं।

हानि : गांजा और भांग का मात्रा से अधिक सेवन, शरीर को दुर्बल, पुरुष को नपुंसक, चरित्रहीन, विचारहीन बनाता है। अतः इसका प्रयोग काम उत्तेजना के लिए या नशे के लिए नहीं करना चाहिए।

दुष्प्रभाव निवारण : नारंगी, अनार का रस, दूध, घी इत्यादि। अमरूद व अमरूद के पत्तों का रस।

Scanned by CamScanner

38 भांगरा

वैज्ञानिक नाम	:	*Eclipta alba* (L.) Hassk.
कुलनाम	:	Asteraceae
अंग्रेजी नाम	:	Trailing eclipta
संस्कृत	:	भृंगराज, केशराज, केशरंजन, कुंतलवर्धन, मार्कव
हिन्दी	:	भंगेरा, भांगरा, भंगरैया
गुजराती	:	भांगरो, कालो–भांगरो
मराठी	:	भाका, बांगरा, भृंगराज
बंगाली	:	केसरी, कसूरीया, भीमराज, केशुत्त
पंजाबी	:	किशोरी, केशराज, केसरी, भीमराज
अरबी	:	कदीमुल–बित
कोंकण	:	हातू केनारी
उड़िया	:	केसरडा
तमिल	:	केकेशी, केवी, शिलाई, काइकेशी

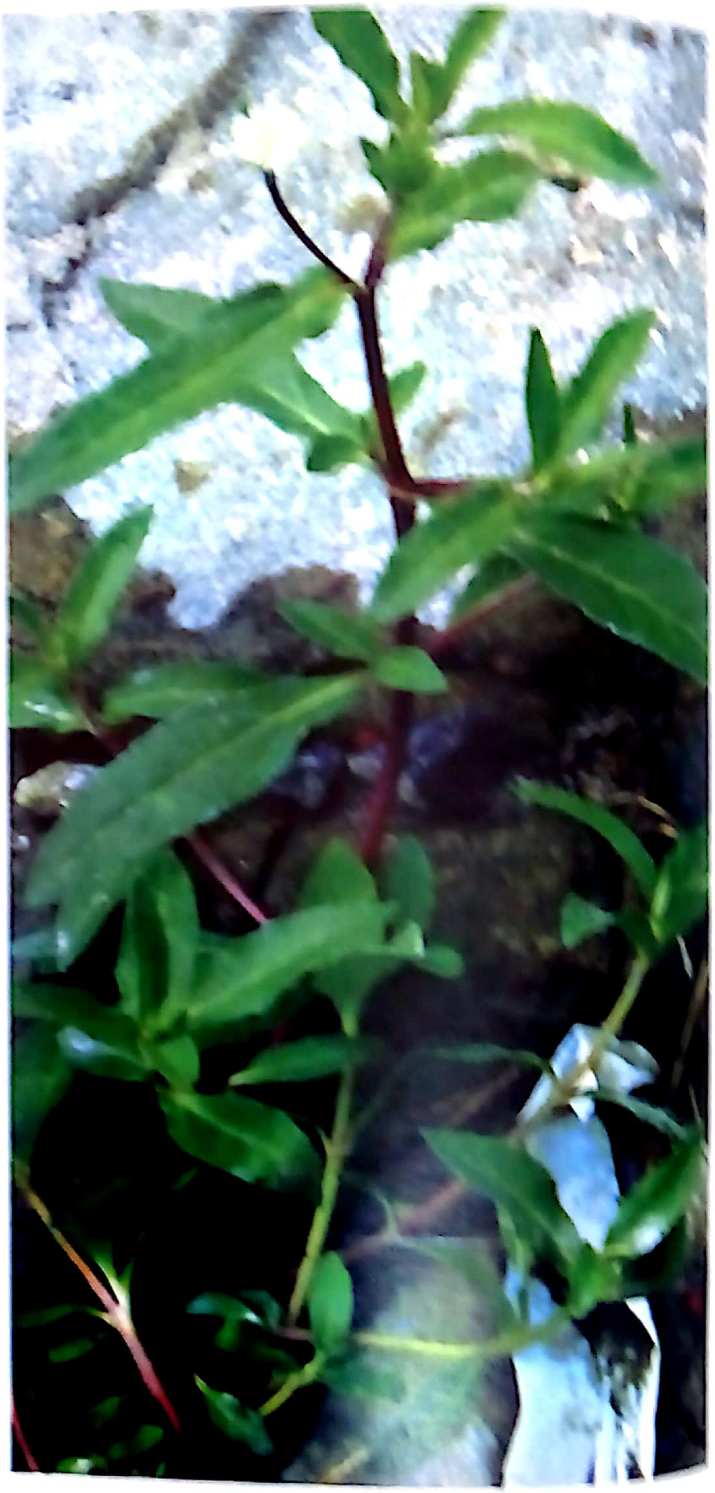

परिचय

घने मुलायम काले कुन्तल केशों के लिए प्रसिद्ध भांगरा के स्वयंजात क्षुप 6,000 फुट की ऊंचाई तक आर्द्रभूमि में जलाशयों के समीप बारह मास उगते हैं। इसकी एक और प्रजाति पीत भृंगराज *Chinensis* पाई जाती है, जिसके पौधे बंगाल, आसाम, कोंकण और मद्रास में अधिक पाये जाते हैं।

बाह्य–स्वरूप

भांगरा के छोटे–छोटे एक वर्षायु क्षुप, प्रसरणशील तथा कभी–कभी खडे अनेक शाखीय, शाखाएं रोमावृत्त और ग्रन्थियों पर मूलयुक्त होती है। पत्र अभिमुख प्रायः अवृन्त या वृन्त बहुत छोटे, आयताकार, मालाकार या अंडाकार नुकीले होते हैं। श्वेत पुष्प मुंडकों मे लगते हैं। इसमें सामान्यतः जाडों में पुष्प व फल लगते हैं। बीज लम्बे, छोटे, काली जीर्ण के समान होते हैं। इसकी पत्तियों को मसलने पर एक हरित कृष्णाभ रस निकलता है जो शीघ्र ही काला पड़ जाता है।

रासायनिक संघटन

भांगरा में एक्लिप्टीन नामक एल्कोलाइड तथा विपुल मात्रा में रॉल पाया जाता है।

गुण–धर्म

यह कफ वात शामक, वेदनास्थापन, नेत्र हितकारी, दीपन, पाचन, यकृत को उत्तेजित करने वाला, रक्त प्रसादन, रक्तार्बुद शोधन, कुष्ठघ्न, कृमिघ्न, विषघ्न, रक्तचाप कम करने वाला, शरीर को बल देने वाला, ओज और कांति को बढ़ाने वाला, बल्य व रसायन है। बालों के लिये यह विशेष हितकारी है।

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

आधाशीशी : भांगरा के रस और बकरी का दूध समान भाग लेकर उसको गरम करके नाक में टपकाने से और भांगरा के रस में काली मिर्च का चूर्ण मिलाकर लेप करने से आधाशीशी मिट जाती है।

केशों के रोग :

1. बालों को छोटा करके उस स्थान पर जहाँ पर बाल न हों, भांगरा के पत्र स्वरस की मालिश करने से कुछ दिनों में अच्छे काले बाल निकलते हैं, जिनके बाल टूटते हैं, या दो मुंहें हो जाते हों उन्हें इस प्रयोग को अवश्य करना चाहिए।
2. त्रिफला के चूर्ण को भांगरा के रस की 3 भावनायें देकर अच्छी तरह सुखाकर खरल कर रखें। प्रतिदिन प्रातः डेढ़ ग्राम सेवन करने से बालों को सफेद होने से रोकता है। नेत्र ज्योति को भी बढ़ाता है।
3. आंवलों का मोटा चूर्ण कर, चीनी मिट्टी के प्याले में रखकर, ऊपर से भांगरा का इतना रस डालें कि आंवले उसमें डूब जायें। फिर खरल कर सुखा लें। इस प्रकार 7 भावना देकर सुखा लें। प्रतिदिन 3 ग्राम की मात्रा में ताजे जल के साथ सेवन से अकाल में बालों का श्वेत होना रूक जाता है। यह नेत्र ज्योति को बढ़ाने वाला, आयुवर्धक रसायन व सर्वरोग हर योग है।
4. भांगरा, त्रिफला, अनंतमूल, आम की गुठली, इनका कल्क प्रत्येक 20–20 ग्राम व 10 ग्राम मण्डूर कल्क व ½ किलो तेल व एक किलो जल में एकत्र कर पकायें। तेल मात्र शेष रहने पर छानकर रख लें, बालों के सब प्रकार के रोगों को दूर करता है।

नेत्र विकार :

1. छाया शुष्क इसके पत्तों का महीन चूर्ण 10 ग्राम, शहद 3 ग्राम, गाय का घी 3 ग्राम, नित्य सोते समय रात्रि में 40 दिन तक सेवन से दृष्टिमांद्य आदि सर्व प्रकार के नेत्र रोगों में लाभ होता है।
2. इसका स्वरस 2 बूंद सूर्योदय से 1 घड़ी के अंदर या सूर्यास्त से 1 घड़ी पूर्व आंखों में डालते रहने से फूली आदि नेत्र विकार शीघ्र अच्छे हो जाते हैं।
3. इसके दो किलो स्वरस में, मुलेठी का कल्क 50 ग्राम, तिल का तेल 500 ग्राम और गौ दुग्ध 2 किलो एकत्र कर मिला, मंद आंच पर पकायें। तेल शेष रहने पर छानकर रख लें। इसे नेत्रों में लगाने से तथा इसकी नस्य लेने से नेत्र शीघ्र ही अच्छे हो जाते हैं। खोई हुई ज्योति लौट आती है।
4. मामूली आंख दुखती हो तो इसके पत्तों की पुल्टिस नेत्रों पर बांधनी चाहिए।

दंतशूल : रोगी की जिस ओर की दाढ़ में दर्द हो उससे विपरीत, कान के भीतर इसके स्वरस की 2–4 बूंदें टपका देने से दर्द तत्काल दूर होता है। एक बार में लाभ न हो तो दो बार प्रयोग करने से अवश्य लाभ होता है।

कंठमाला : इसके पत्तों को पीसकर टिकिया बनाकर घी में पकाकर कंठमाला की गांठों पर बांधने से शीघ्र लाभ होता है।

मुखपाक : 5 ग्राम पत्तों को मुख में रखकर चबायें तथा लार थूकते जायें। दिन में कई बार करने से शीघ्र लाभ होता है।

पीनस रोग : भांगरा का स्वरस 250 ग्राम, तिल का तेल 250 ग्राम, सेंधा नमक 10 ग्राम, तीनों को मिलाकर मंद अग्नि पर पकाकर तेल सिद्ध कर लें। इस तेल की लगभग 10 बूंद तक नाक के दोनों नथुनों में टपकाने से, अंदर दूषित कफ तथा कृमि बाहर निकलकर थोड़े ही दिनों में यह रोग नष्ट हो जाता है। पथ्य में गेहूं की रोटी व मूंग की दाल लें।

कफ :

1. तिल्ली बढ़ी हुई हो, भूख बंद हो, लीवर ठीक न हो, कफ व खासी भी हो, ज्वर बना रहे तब भांगरे का 4 से 6 ग्राम स्वरस, 30 ग्राम दूध में मिलाकर प्रातः और रात्रि के समय सेवन करने से लाभ होता है।
2. टायफाइड में इसके स्वरस को 2–2 चम्मच दिन में 2–3 बार देने से लाभ होता है।

रक्त चाप : भांगरा के पत्तों का रस 2 चम्मच, शहद 1 चम्मच दिन में दो बार सेवन करने से उच्च रक्तचाप कुछ ही दिनों में सामान्य हो जाता है। यदि पेट में कब्जी न हो तो यह सामान्य रह सकता है। इससे पेट भी ठीक रहता है और भूख भी बढ़ती है।

अग्निमांद्य व पांडुरोग :

1. भांगरा के पूरे पौधे को जड़ सहित छाया में शुष्क कर चूर्ण कर उसमें बराबर की मात्रा में त्रिफला चूर्ण मिला लें। तत्पश्चात मिश्रण के बराबर मिश्री मिला लें। इस मिश्रण की 20 ग्राम मात्रा शहद या पानी के साथ दिन में तीन बार खाने से मंदाग्नि और पांडुरोग मिटता है।
2. भांगरा के पत्ते और फूलों के छाया शुष्क चूर्ण में थोड़ा सेंधा नमक मिलाकर 2–2 ग्राम की मात्रा में सुबह–शाम सेवन करने से अग्नि की वृद्धि होती है। अरूचि दूर होती है।
3. इसके ताजे स्वच्छ पत्तों को पीसकर, 2 ग्राम कल्क में सात काली मिर्च का चूर्ण मिलाकर नित्य प्रातः खाली पेट खट्टे दही या तक्र के साथ देने से 5 या 6 दिन में ही पांडु या पीलिया रोग में विशेष लाभ होता है। यकृत वृद्धि व उदरशोथ में अत्यन्त लाभप्रद है। भांगरा के 5 ग्राम रस में 1/2 ग्राम मिर्च का चूर्ण मिलाकर सवेरे दही के साथ लेने से कुछ दिन में ही कामला ठीक हो जाता है।

डिप्थीरिया : इसके 10 ग्राम स्वरस में समभाग गाय का घी, चौथाई असली यवक्षार मिलाकर पकायें, जब खूब खौल जाये तब दो–दो घंटे के अंतर से पिलाने से बाधा शांत हो जाती है।

उदरशूल : भांगरा के 10 ग्राम पत्रों के साथ 3 ग्राम काला नमक थोड़े जल में पीस छानकर दिन में 3–4 बार सेवन करने से जीर्ण

Scanned by CamScanner

शूल भी दूर हो जाता है।

विसूचिका : विसूचिका में पंचांग के 2 चम्मच स्वरस में सेंधा नमक मिलाकर सुबह, दोपहर तथा शाम सेवन करने से लाभ होता है।

अतिसार : आम अतिसार एवं रक्त अतिसार में भृंगराज जड़ के महीन चूर्ण की बराबर मात्रा में बेल का चूर्ण मिलाकर सुबह–शाम 1–1 चम्मच ताजे पानी से दिन मे तीन बार सेवन करना अतिसार संग्रहणी में अत्यन्त लाभप्रद है।

भगन्दर : इसे पुल्टिस जैसा बनाकर बांधते रहने से थोड़े दिनों में ही भगन्दर शुद्ध होकर भर जाता है।

उपदंश :

1. भांगरा के रस में अथवा भांगरा और चमेली के पत्तों के रस के मिश्रण से उपदंश के व्रण को धोने से बड़ा लाभ होता है। इसी रस का लेप भी करें।
2. इसका चूर्ण 3 भाग, काली मिर्च चूर्ण 1 भाग, दोनों को एकत्र कर भांगरे के ही स्वरस से खरल कर 1–1 ग्राम की गोलियां बनाकर सुबह–शाम 1–2 गोली सेवन करें। इससे उदर रोग, नेत्र रोग व भगन्दर तथा उपदंश में अत्यन्त लाभ होता है।
3. इसके 10 ग्राम स्वरस में 2 नग काली मिर्च का चूर्ण मिला प्रातः सायं 21 दिन तक सेवन करायें। पथ्य में गौदुग्ध, गेहूं की रोटी और शक्कर दें। इससे समस्त प्रकार के चर्म रोगों में भी लाभ होता है।

गर्भरक्षा :

1. भांगरा के 4 ग्राम स्वरस में समभाग गौदुग्ध मिला नित्य प्रातः पिलाते रहने से अकाल में गर्भपात नहीं होने पाता। गर्भ पुष्ट होकर गर्भ रक्षा व गर्भिणी के रक्त की शुद्धि होती है। यह अत्यन्त निरापद व सहज व सरल उपाय है।
2. योनिमार्ग या मूत्र मार्ग से रक्तस्राव की शिकायत में, इसके पत्रों का चतुर्थांश क्वाथ सिद्ध कर 20 से 50 ग्राम तक प्रातः–सायं सेवन करने से लाभ होता है। रक्त प्रदर में भी इस प्रयोग से लाभ होता है।

योनि शूल : प्रसव के पश्चात होने वाले योनि शूल में भांगरा का पंचांग तथा बेल दोनों की जड़ के बारीक चूर्ण को समभाग लेकर मधु मिलाकर उचित मात्रा में देने से शूल तुरन्त मिट जाता है।

अंडकोष वृद्धि : अंडकोष की सूजन पर इसके पंचांग को पीस टिकिया बनाकर बांधने से लाभ होता है।

अर्श :

1. इसके पत्र 50 ग्राम और काली मिर्च 5 ग्राम दोनों को खूब महीन पीसकर छोटे बेर जैसी गोलियां बनाकर छाया शुष्क कर रखें। प्रातः सायं 1 या 2 गोली जल के साथ दिन में 3 बार सेवन करने से वातज अर्श में शीघ्र लाभ होता है।
2. इसके पत्र 3 ग्राम व काली मिर्च 5 नग दोनों का महीन चूर्ण ताजे जल से दोनों समय सेवन करने से 7 दिन में ही आशातीत लाभ होता है।
3. इसके रस में गेहूं का आटा सानकर, गाय के घी में चूर्ण बनाकर छाछ में भिगोकर खायें। ऊपर से 1–2 मूली खायें, शीघ्र ही लाभ होता है।
4. अर्श के मस्सों पर इसके पत्तों का भफारा दोनों समय देने से विशेष लाभ होता है।

गुदभ्रंश : इसकी जड़ और हल्दी के चूर्ण को पीसकर लेप करते रहने से गुदभ्रंश में लाभ होता है।

पित्तजप्रमेह : भांगरे का चूर्ण और बबूल के फूल के चूर्ण समभाग मिश्री, मिश्रण के बराबर, 6 ग्राम की मात्रा में

Scanned by CamScanner

बकरी के दूध के साथ सेवन करें। यह प्रयोग सब तरह के प्रमेह में लाभप्रद है।

प्रमेह पिडिका : इसके 1 भाग रस, तुलसी पत्र, श्वेत रोग के पत्र और पटोल पत्र 1–1 भाग का चूर्ण मिलाकर तथा कॉंजी में पीसकर लेप करने से वातज प्रमेह पिडिका नष्ट होती है।

श्लीपद : इसके पंचांग की लुगदी को तिल के तेल में मिलाकर अथवा केवल इसके रस से श्लीपद में मालिश करने से अत्यन्त लाभ होगा।

वातशूल : इसके पंचांग को जल के साथ खूब महीन पीस, छानकर रोगी को 5–10 ग्राम की मात्रा में कई बार पिलाने से लाभ होता है।

अग्निदग्ध :

1. भांगरा के पत्तों को मेंहदी और मरवा के पत्तों के साथ पीसकर लेप करने से शीघ्र ही लाभ होता है तथा नवीन त्वचा शरीर के वर्ण की ही होती है।
2. जब व्रण कुछ ठीक होने लगे तब भांगरा के पत्तों का रस 2 भाग, काली तुलसी पत्र रस 1 भाग, दिन में 2–3 बार लगाते रहने से जलन शांत हो जाती है और शरीर पर किसी किस्म का दाग नहीं पड़ने पाता।

दाह : हाथ पैरों की जलन व शरीर की खुजली में और सूजन पर इसके स्वरस की मालिश करनी चाहिए।

खुजली : भांगरा के पत्ते 10 ग्राम, जवासा 10 ग्राम, चिरायता 60 ग्राम, शरपुंखा 60 ग्राम, इसको 100 ग्राम पानी में पीस छानकर, 20 ग्राम शहद मिलाकर प्रतिदिन 1 सप्ताह तक सुबह, दोपहर तथा शाम सेवन करने से, शरीर निरोग होकर खुजली का नामोनिशान नहीं रहता।

चक्कर आना : भांगरा का रस 4 ग्राम, शक्कर 3 ग्राम दोनों को मिलाकर सुबह–शाम सेवन करने से थोड़े ही दिनों में दुर्बलता दूर होकर चक्कर आने बंद हो जाते हैं।

व्रण :

1. दूषित व्रणों पर इसके रस का लेप करते रहने से तथा पुल्टिस बांधने से लाभ होता है।
2. हाथ, अंगूठे या उंगली में जो व्रण हो जाते हैं, उस पर भांगरे को पीसकर मोटा लेप करें तथा पानी न लगने दें। भीतर की गांठ निकलकर घाव अच्छा हो जायेगा।

विच्छू के विष पर : विच्छु दंश पर इसके पत्तों को पीसकर सूजे हुए स्थान पर मसलने से, वेदना डंक स्थान पर इकट्ठी हो जाती है फिर स्थान पर अच्छी तरह मसलकर पत्तों की लुग्दी बांध देनी चाहिए।

दीर्घायु :

1. ताजे भांगरा को पीसकर उसका निकाला हुआ स्वरस प्रातः काल पीने से (मात्रा 10 मिलीलीटर) और पथ्य में सिर्फ दूध पर ही रहने से 1 महीने में शरीर निरोग हो जाता है। बल और क्रांति बढ़ती है तथा मनुष्य दीर्घायु हो जाता है।[3]
2. इसके 15 ग्राम पत्रों के चूर्ण को प्रतिदिन घी, शहद और शक्कर मिलाकर 1 वर्ष तक लेते रहने से बल वीर्य की वृद्धि होती है तथा बुद्धि व स्मरण शक्ति भी बढ़ जाती है।

वाजीकरण : 10 ग्राम शुद्ध गंधक के बारीक चावल जैसे टुकड़े कर उन्हें 7 दिन तक धूप में, इसके रस की भावना दें, फिर उसमें जायफल, जावित्री कपूर और लौंग का दो–दो ग्राम चूर्ण मिलाकर गुड़ के साथ घोंटकर आधी–आधी ग्राम की गोलियां बना लें। प्रतिदिन प्रातः 1 या 2 गोली खाकर, 3 काली मिर्च चबाकर, 1 पाव दूध पीयें। यह निरापद व अत्यन्त बाजीकरण योग है।

विशिष्ट प्रयोग : भांगरा के पत्तों की छाया में शुष्क कर, कपड़छन चूर्ण को शीशी में भर लें।

1. चूर्ण 1 ग्राम, घी 6 ग्राम और मिश्री 5 ग्राम, एकत्र कर मिला,

Scanned by CamScanner

नित्य सेवन से भूख बढ़ती है। 60 दिन तक सेवन करने से शरीर हृष्ट–पुष्ट हो जाता है।

2. पत्र चूर्ण 1 भाग, काले तिल का चूर्ण आधा भाग तथा आंवला चूर्ण आधा भाग– सबके बराबर मिश्री या गुड़ मिलाकर घी के चिकने मिट्टी के पात्र में रखें। 10–10 ग्राम प्रातः सायं गौ दुग्ध के साथ सेवन से कोई रोग नहीं होता, बुढ़ापे का भय नहीं रहता। यह पौष्टिक रसायन है।

3. पत्र चूर्ण में समभाग काले तिल का चूर्ण मिलाकर कम से कम 1 मास तक सेवन करने से तथा भोजन में केवल दूध लेने से मनुष्य रोग रहित हो दीर्घायु हो जाता है।

4. यदि बच्चा मिट्टी खाना किसी भी प्रकार से न छोड रहा हो तो भांगरा पत्र स्वरस 1 चम्मच सुबह–शाम पिला देने से मिट्टी खाना तुरन्त छोड देता है।

1. भृंगारः कटुकस्तिक्तो रूक्षोष्णः कफवातनुत्।
केश्यस्त्वच्यः कृमिश्वासकासशोथामपाण्डुनुत्।।
दन्त्यो रसायनो बल्यः कुष्ठनेत्रशिरोर्तिनुत्। (भाव प्रकाश)

2. भृंगराजास्तु चक्षुष्यास्तिक्तोष्णाः केशरंजनाः।
कफशोफविषघ्नाश्च तत्र नीलो रसायनः।। (राज निघंटु)

3. ये मासमेकं स्वरसं पिबन्ति दिने–दिने भृंगराजः समुत्थम्।
क्षीराशिनस्ते बलवीर्ययुक्ताः, समाः शतं जीवितमाप्नुवन्ति।।
(भाव प्रकाश)

Scanned by CamScanner

भारंगी

वैज्ञानिक नाम	:	*Clerodendrum serratum* (L.) Moon
कुलनाम	:	Verbenaceae
अंग्रेजी नाम	:	Turk's turban moon
संस्कृत	:	व्राह्मणयष्टिका, खरशाक, पद्मा (पद्मा)
हिन्दी	:	भारंगी
गुजराती	:	भारंगी
बंगाली	:	बामुनहाटी
तैलगु	:	गंटुवरंगी

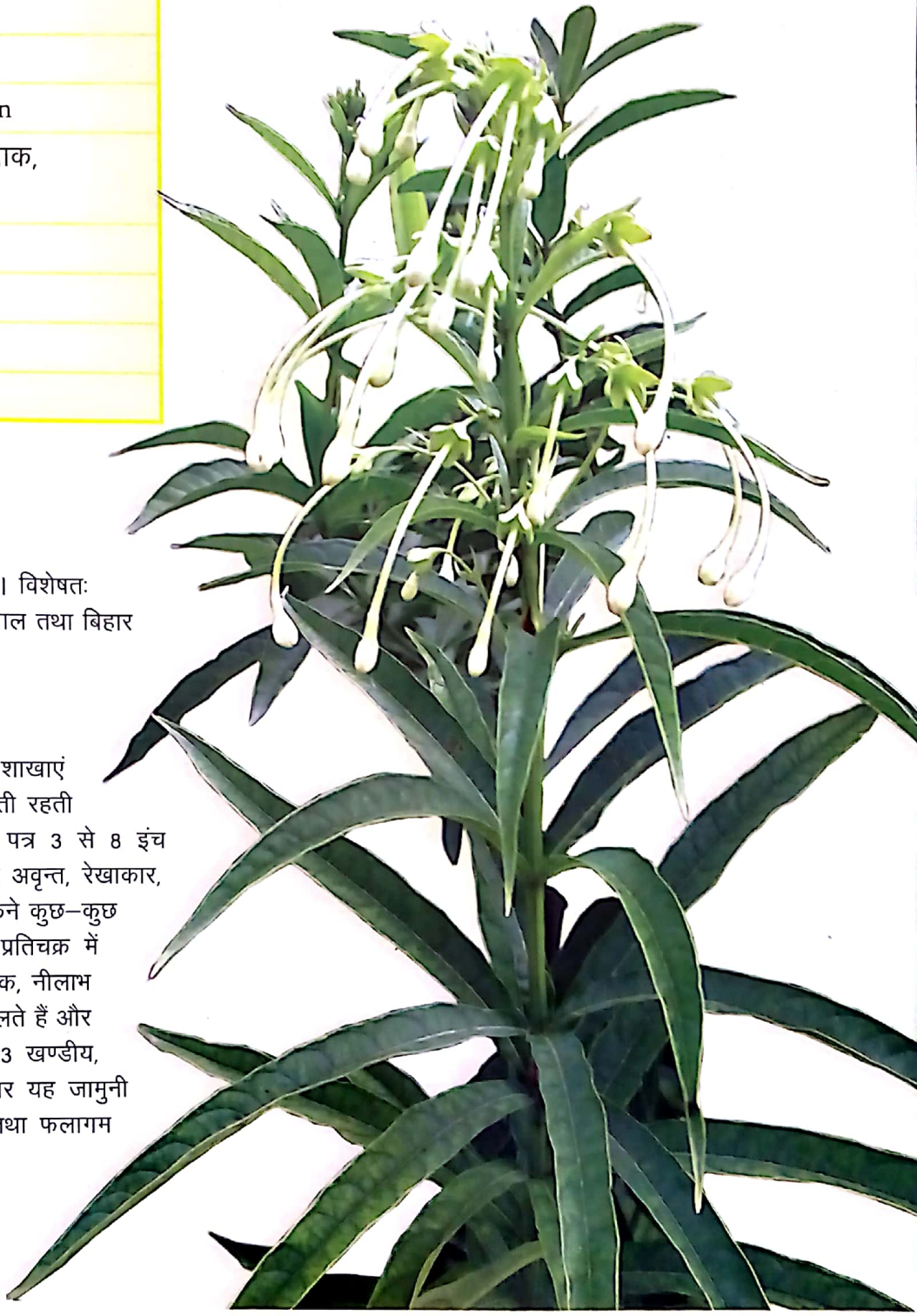

परिचय

प्रायः समस्त भारत में इसके क्षुप पाये जाते हैं। विशेषतः हिमालय की तराई, भोपाल, कुमायूं, गढ़वाल, बंगाल तथा बिहार आदि स्थानों में प्रचुरता से पाया जाता है।

बाह्य–स्वरूप

इसके बहुवर्षायु गुल्म होते हैं। कांड तथा शाखाएं चौपहल होती हैं। जिन स्थानों पर दावाग्नि होती रहती है, केवल यही मूलस्तम्भ बहुवर्षायु होता है। पत्र 3 से 8 इंच तक लम्बे, डेढ से ढाई इंच तक चौड़े लगभग अवृन्त, रेखाकार, आयताकार, अंडाकार, तीक्ष्ण, दंतुर, चिकने–चिकने कुछ–कुछ मांसल, आमने–सामने या तीन–तीन पत्तियां प्रतिचक्र में होती हैं। पुष्प व्यास में एक इंच या इससे अधिक, नीलाभ हल्के गुलाबी रंग के, शाखाओं पर गुच्छे में निकलते हैं और किंचित सुगन्धित होते हैं। फल अष्ठिफल 1–3 खण्डीय, परस्पर संयुक्त और मांसल होता है। पकने पर यह जामुनी काले रंग के हो जाते हैं। पुष्पागम ग्रीष्म में तथा फलागम वर्षान्त या सर्दी के आरम्भ में होता है।

रासायनिक संघटन

इसके मूल में रालीय, वसामय तथा क्षारोद स्वभाव के तत्व पाये जाते हैं।

गुण–धर्म

यह कफ, वात, शामक, दीपन पाचन, शोथहर, रक्त शोधक, कफघ्न, श्वासहर व ज्वरघ्न है।[1] यह कास, श्वास, शोफ, व्रण, कृमि, दाह, ज्वर आदि का निवारण करती है।[2]

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

मस्तक शूल : भारंगी की जड़ को गरम जल में घिसकर, कपाल पर इसका लेप करने से मस्तक शूल मिट जाता है।

नेत्र : इसके पत्तों को तेल में उबालकर लगाने से आंख की पलकों की सूजन मिट जाती है और नेत्र मल नहीं आता है।

कर्ण शूल : इसकी जड़ को घिसकर, एक बूंद कान में डालने से लाभ होता है।

दमा और खांसी :

1. भारंगी मूलत्वक और सौंठ को समान भाग लेकर बनाया गया चूर्ण 2 ग्राम गरम जल के साथ बार–बार लेने से दमा और खांसी में आराम होता है।
2. इसकी मूल का स्वरस अदरक के स्वरस में 2–2 ग्राम की मात्रा में मिलाकर देने से श्वास का वेग शांत हो जाता है।
3. भारंगी के मूल का कपड़ छन चूर्ण, 1 से 2 ग्राम आवश्यकतानुसार दिन में 4–6 बार शहद के साथ चटाने से हिक्का निवृत्त हो जाती है।

गलगंड : इसकी जड़ को चावल की धोवन के साथ पीसकर लेप करने से गलगंड मिटता है।

राज्यक्ष्मा : इसकी जड़ के 1 ग्राम चूर्ण तथा शुंठी 1 ग्राम चूर्ण को उष्ण जल में घोल कर पिलाने से राज्यक्ष्मा मिटता है।

रक्त गुल्म : स्त्रियों के गर्भाशय में होने वाला रक्त गुल्म यदि बहुत बड़ा न हो तो भारंगी, पीपल, करंज की छाल और देवदारू को समभाग मिलाकर चूर्ण कर इसमें से 4 ग्राम चूर्ण, तिल के क्वाथ के साथ दो बार देते रहने से रक्त गुल्म नष्ट हो जाता है।

उदर विष में : इसकी 5 ग्राम मूल को कूटकर 100 मि०ली० जल में मिलाकर पिलाना चाहिए तथा शरीर पर इसकी मालिश करनी चाहिए।

हिचकी : हिचकी में इसकी जड़ का चूर्ण 1 चम्मच मिश्री में मिलाकर सुबह, दोपहर तथा शाम सेवन करना चाहिए।

उदर कृमि : 3 से 5 पत्रों को 400–500 ग्राम पानी में उबालकर जल को पीने से उदर कृमियों का नाश हो जाता है।

अण्डकोष वृद्धि : भारंगी की जड़ की छाल जौ के पानी में पीसकर गरम कर बांधने से अंडकोष की सूजन अवश्य मिटती है।

रेचक : इसके 5 ग्राम बीजों को कुचलकर मट्ठे में उबालकर लेने से पेट के संचित मल को मुलायम करके निकालने के लिए अत्यन्त लाभकारी है। ज्यादा देने पर दस्त लग सकते हैं। इससे अंदर का शोथ भी मिटता है।

हरपीज विसर्प : विसर्प में इसके पत्र तथा कोमल डालियों का रस लगाने से लाभ होता है।

शोथ : शोथ में इसके बीजों का चूर्ण घी में भूनकर खाने से लाभ होता है।

ज्वर :

1. भारंगी की लगभग 5 ग्राम जड़ का क्वाथ बनाकर सुबह–शाम पिलाने से ज्वर व जुकाम मिटता है।
2. मलेरिया ज्वर में इसके कोमल पत्रों का शाक बनाकर खिलाने से यह ज्वर नष्ट हो जाता है।

मांस क्षय : भारंगी पंचांग 1 किलो को 8 किलो पानी में पकाकर जब 2 किलो बचे, छानकर इसमें ½ किलो सरसों का तैल सिद्ध कर मांस क्षय वाले रोगी की मालिश करनी चाहिए। इसमें लाभ अवश्य होगा।

छत्तेदार फुंसी : इसके पत्ते और कोमल डालियों का निचोड़ा हुआ रस घी में मिलाकर छत्तेदार फुंसियों पर लगाना चाहिए। जिस ज्वर में फोड़े फुंसी होते हैं उस ज्वर में भी यही लेप करना चाहिए।

फोड़ा : पत्रों की पुल्टिस बनाकर फोड़ों पर लगाने से लाभ होता है। ज्यादा बढ़ा हुआ फोड़ा हो तो पककर फूट जाता है, कम पका हुआ हो तो बैठ जाता है।

1. भार्गी रूक्षा कटुस्तिक्ता रुच्योष्णा पाचनी लघुः।
दीपनी तुवरा गुल्मरक्तजिन्नाशयेद् ध्रुवम्।
शोथकासकफश्वासपीनसज्वरमारुतान्।। (भाव प्रकाश)

2. भार्गी तु कटुतिक्तोष्णा कासश्वासविनाशिनी।
शोफव्रणकृमिघ्नी च दाहज्वरनिवारिणी।। (रा०नि०)

Scanned by CamScanner

भुई आंवला

40

वैज्ञानिक नाम	:	*Phyllanthus fraternus* Webster
कुलनाम	:	Eubhorbiaceae
संस्कृत	:	भूधात्री, तामलकी, बहुफला
हिन्दी	:	भुई आंवला, भोम आँवली
मराठी	:	भुई आंवली
बंगाली	:	भुई आमला
पंजाबी	:	पाताल आंवला
कन्नड़	:	किरूनेल्लि
तैलगु	:	नेलवुसरि

परिचय

भुई आंवला के एक वर्षायु, छोटे–छोटे क्षुप, वर्षा ऋतु में उत्पन्न होकर तथा शरद ऋतु में फूलने फलने के बाद ग्रीष्म ऋतु में सूख जाते हैं। यह भारत में सर्वत्र पाये जाते हैं। इसके फल धात्रीफल की भांति गोल, परन्तु आकार में छोटे होने के कारण इसको भूधात्री कहते हैं।

बाह्य–स्वरूप

एक वर्षायु कोमल कांडीय, छोटे–छोटे पादप होते हैं, जिनके कांड पतले सीधे, खड़े, रक्ताभ, कुछ–कुछ फटे होते हैं। इसकी फैली हुई पर्णमय शाखाएं सपत्रक पर्णसदृश होती है, जबकि इसकी पत्तियां एकान्तर, सघन, द्विपंटिक, चौथाई इंच से आधा इंच तक लम्बी, लट्वाकार या आयताकार, अग्रगोल एवं तीक्ष्णाग्र तथा अधः स्तर पर फीके रंग की होती है। पुष्प छोटे एकल पत्रकोण से उद्भूत;

Scanned by CamScanner

अवृन्त या सूक्ष्म वृन्त युक्त पीताभ, फल धात्री फल सदृश गोल एवं शाखाओं के नीचे एक कतार में निकले हुए होते हैं।

रासायनिक संघटन

भूम्यामलकी की पत्तियों में हाइपो फिलैन्थीन तथा फिलैन्थीन नामक तिक्त कार्यकारी तत्व पाया जाता है।

गुण–धर्म

भुई आंवला, हल्का रूखा, शीतल, स्वाद में चरपरा, कसैला, मधुर तथा तृषा, खांसी, पित्त, रुधिर विकार, कफ, खुजली तथा क्षत–नाशक है। यह ज्वरघ्न विशेषतः विषम ज्वर प्रतिबंधक है। साथ ही यकृत के किसी भी प्रकार के जीर्ण रोग की एक दिव्य औषध है।[1] इसका लेप व्रणरोपण, शोथहर तथा कुष्ठघ्न होता है। कैयदेवनिघंटु के मतानुसार भुई आंवला शीतल कड़वा, करैला, मधुर, हल्का, रूचिकारक, पांडु, कुष्ठ, कफ, विष, रक्तपित्त, श्वांस, तृषा दाह, हिक्का, खांसी और क्षय का नाश करता है।[2] राज निघंटु के मत से भूम्यामलकी करैला, खट्टा पित्त और प्रमेह को नष्ट करने वाला, मूत्रकृच्छ को दूर करने वाला तथा दाह को शांत करने वाला है।[3]

औषधीय प्रयोग

मुख पाक : इसके 50 ग्राम पत्तों का 200 ग्राम जल में हिम बनाकर कुल्ले करने से मुख पाक मिटता है।

स्तन शोथ : इसके पंचाग को पीसकर लेप करने से लाभ होता है।

कास–श्वास :

1. इसके 50 ग्राम पंचाग को आधा किलो जल के साथ ओटाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ को एक–एक चम्मच दिन में दो बार पिलाना कास श्वास में लाभकारी है।
2. श्वास में इसकी जड़ 10 ग्राम की मात्रा में जल में पीसकर उसमें 1 चम्मच मिलाकर पिलाना चाहिए तथा इसका नस्य भी देना चाहिए।

कामला रोग : भूधात्री की 10 ग्राम जड़ को पीसकर प्रातः सायं 250 ग्राम दूध के साथ खाली पेट देने से कामला रोग मिटता है।

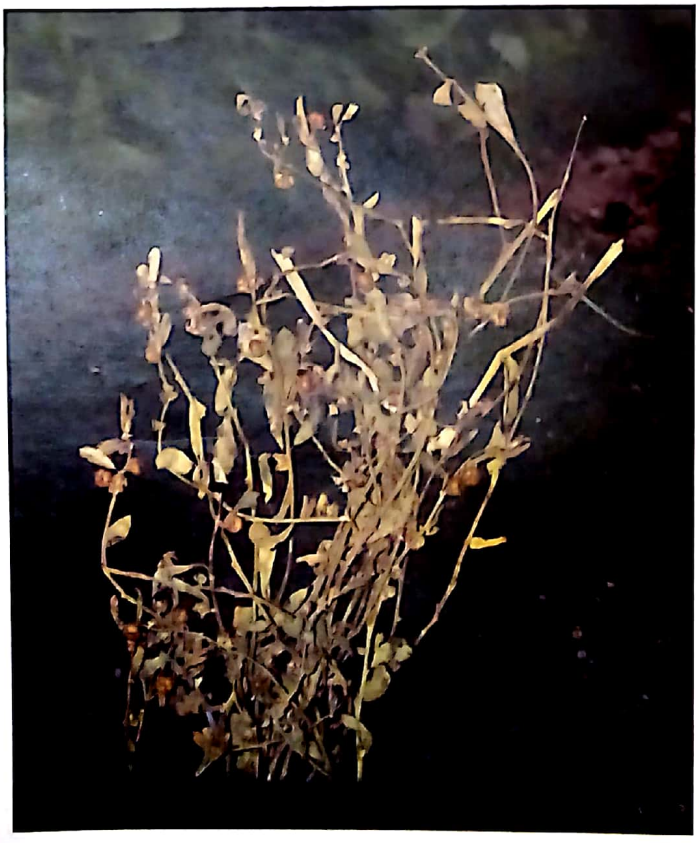

जलोदर :

1. इसकी जड़ और पत्तों का शीत निर्यास, लगभग 10 से 20 ग्राम दिन में दो बार लेने से पेशाब अधिक होकर जलोदर धीरे–धीरे ठीक हो जाता है।
2. इसके 100 ग्राम पत्तों को 250 ग्राम दूध के साथ मसलकर पिलाने से जलोदर और मूत्र संबंधी रोग मिटते हैं।
3. इसके 50 ग्राम पंचाग को 400 ग्राम पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ को 10 ग्राम की मात्रा में दिन में तीन चार बार पिलाने से जलोदर मिटता है।

उदरशूल : इसके 20 ग्राम पत्तों को 200 ग्राम जल में उबालकर छानकर थोडा–थोडा पानी पीने से उदरशूल और आमातिसार में लाभ होता है।

जीर्णातिसार : इसे 50 ग्राम पंचाग को 400 ग्राम पानी में पकाकर चतुर्थांश क्वाथ में मेथी चूर्ण 5 ग्राम मिलाकर थोडा–थोडा पीने से जीर्ण अतिसार में लाभ होता है।

मधुमेह : इसके 15 ग्राम पंचाग का चूर्ण और 20 काली मिर्च का सेवन दिन में दो तीन बार करने से जीर्ण प्रमेह नष्ट होता है।

रक्त प्रदर : रक्त प्रदर में इसके बीजों का पांच ग्राम चूर्ण, चावलों के पानी के साथ दो या तीन दिन पीने से मासिक धर्म में अधिक रक्त का आना निश्चय ही बंद होता है। अथवा इसकी जड़ के चूर्ण को भी इसी प्रकार देने से लाभ होता है।[4]

प्रमेह : भुई आंवले का 20 ग्राम स्वरस 2 चम्मच घी के साथ मिलाकर पीले रंग के प्रमेह में सवेरे शाम देने से लाभ होता है।

सुजाक : इसका एक चम्मच रस जीरे और शक्कर के साथ देने से नवीन सूजाक में मूत्र की जलन शांत होती है। कामला और पित्त विकार में भी यह प्रयोग लाभदायक है।

घाव :

1. इसका दूधिया रस घाव पर लगाने से वह जल्दी भर जाता है।
2. इसके कोमल पत्तों को पीसकर घाव पर लगाने से घाव जल्दी भरता है। रगड़ पर लगाने से चोट की पीड़ा शांत हो जाती है।

Scanned by CamScanner

खुजली : इसके पत्तों को पीसकर उसमें नमक मिलाकर लगाने से गीली खुजली में लाभ होता है।

व्रणशोथ : इसके पंचाग की पुल्टिस चावलों के पानी के साथ बनाकर बांधने से लाभ होता है।

मलेरिया ज्वर : इसके कोमल पत्तों और काली मिर्च (चौथाई भाग) पीसकर उनकी जायफल के बराबर गोलियां बना कर 2–2 गोली दिन में दो बार देने से मलेरिया ज्वर और बार–बार आने वाला ज्वर छूटता है।

यकृत सम्बन्धी समस्त रोग : छाया में सुखाया हुआ भूमि आंवला को मोटा–मोटा कूटकर एवं 10 ग्राम को मिट्टी के बर्तन में 400 ग्राम पानी में पकाकर जब एक चौथाई से भी कम रह जाये, तब छानकर सुबह खाली पेट व रात्रि को भोजन से एक घण्टा पहले सेवन करें। यह यकृत शोथ, पीलिया, सर्वांग शोथ, आन्त्रवण (अल्सर) आदि अनेक रोगों की चमत्कारिक औषध है।

1. भूधात्री वातकृत्तिका कषाया मधुरा हिमा।
पिपासाकासपित्तास्रकफपाण्डुक्षतापहा।। (भाव प्रकाश)

2. तामलकी हिमा तिक्ता कषाया मधुरा लघुः।
रोचनी पांडुपित्तास्रकफकुष्ठविषापहा।
जयेच्छ्वासतृषादाहहिध्माकासक्षतक्षयान्।। (के0 नि0)

3. भूधात्री तुकषायाम्लपित्तमेहविनाशिनी।
शिशिरा मूत्ररोगार्त्तिशमनी दाहनाशिनी।। (रा0नि0)

4. भूम्यामलकीबीजं तु पीतं तंडुलवारिणा।
दिनद्वयत्रयेणैव स्त्रीरोगं नाशयेद् ध्रुवम।। (बंगसेन)

Scanned by CamScanner

41 ब्राह्मी

वैज्ञानिक नाम	:	*Centella asiatica* (L.) Urban
कुलनाम	:	Apiaceae
अंग्रेजी नाम	:	Indian penny wort
संस्कृत	:	ब्राह्मी, शारदा, कपोतबंका, सोमवल्ली, महौषधि, दिव्या, सरस्वती, मण्डूकपर्णी, मण्डूकी
हिन्दी	:	ब्राह्मी
गुजराती	:	ब्राह्मी

परिचय

ब्राह्मी बूटी सम्पूर्ण भारतवर्ष में जलाशयों के किनारे उत्पन्न होती है परन्तु हरिद्वार से लेकर लगभग 200 फुट की ऊंचाई तक यह विशेष रूप से दर्शन देती हुई आभास कराती है कि यह विशेष रूप से ब्रह्म प्रभावित क्षेत्र है। ऐसा कहा जाता है कि इस दिव्य बूटी के सेवन से ब्राह्मी को ब्रह्म की साधना में मदद मिलती है। इसी से साधक जन प्रायः इस बूटी का सेवन करते रहते हैं।

बाह्य–स्वरूप

यह एक भूप्रसारीय अत्यन्त कोमल लता होती है, क्योंकि मण्डूक के समान पत्र वाली तथा मण्डूकवत् इतस्तत फैलने के कारण इसे मण्डूक पर्णी कहा गया है। यह गीली और तर भूमि में फैलती है। इसके पर्व संधियों से मूल निकलकर पृथ्वी में घुस जाते हैं और स्वतंत्र पौधा बन जाता है। पत्र गोल, हरे, दलदार तथा एक साथ 2–3 लगते हैं। वृन्त की तरफ का हिस्सा खुला हुआ होता है। इन पत्तों पर बहुत छोटे–छोटे चिन्ह पाये जाते हैं। पुष्पागम वर्षा ऋतु ग्रीष्म तक और इसके बाद फल लगते हैं। पुष्प श्वेत, नीलाभ होता है। ब्राह्मी के सारे पौधे का स्वाद बहुत कड़वा होता है।

रासायनिक संघटन

इसमें हाइड्रोकोटिलीन नामक क्षाराभ, ताजी पत्तियों में

Scanned by CamScanner

एशियाटिकोसाइड नाम ग्लाइकोसाइड होता है, इनके अतिरिक्त इसमें वैलेरिन, राल, तिक्त पदार्थ, पैक्टिक अम्ल, स्टेरॉल, वसा अम्ल, टैनिन, उडनशील तेल तथा एस्कार्बिक एसिड, थानकुनिसाइड नामक ग्लुकोसाइड, ब्राह्मोसाइड, ब्राह्मिक एसिड आदि पाये जाते हैं।

गुण–धर्म

प्रभाव मेध्य, स्मृति बुद्ध तथा कुष्ठ, पांडु, मस्तिष्क के रोग में लाभकारी है। यह हृदय के लिए बलकारक, स्तन्यजनन, स्तन्य शोधन, व्रणरोपण, व्रणशोधक, वयःस्थापन एवं रसायन है।[1]

औषधीय प्रयोग

स्मरण शक्ति :

1. शुष्क ब्राह्मी 1 भाग, बादाम गिरी 1 भाग, काली मिर्च चौथाई भाग, पानी से घोटकर 3–3 ग्राम की टिकिया बनायें। दिमाग को शक्ति देने के लिए एक टिकिया रोजाना प्रातः–सायं दूध के साथ दें।
2. ब्राह्मी 3 ग्राम, शंखपुष्पी 3 ग्राम, बादाम गिरी 6 ग्राम, छोटी इलायची के बीज 3 ग्राम, इन सभी को एक तोला जल में घोंट, छानकर मिश्री मिला कर पिलायें। स्मरण शक्ति के साथ–साथ यह योग खांसी, पित्त ज्वर और जीर्ण उन्माद के लिए बहुत लाभदायक है।
3. ब्राह्मी का ताजा रस लेकर, उसमें समभाग घी मिलाकर घी सिद्ध कर लें, इस घी को 5 ग्राम की मात्रा में सेवन करने से स्मरण शक्ति बढती है। इसके पंचांग का चूर्ण दूध में मिलाकर सेवन करने से स्मरण शक्ति तेज होती है।

निद्रानाश :

1. ब्राह्मी का 3 ग्राम का चूर्ण गाय के आधा किलो कच्चे दूध में घोंट छानकर एक सप्ताह तक सेवन करने से पुराना निद्रानाश रोग में अवश्य लाभ हो जाता है।
2. ताजी ब्राह्मी के 5–10 ग्राम रस को 100–150 ग्राम कच्चे दूध में मिलाकर पीने से लाभ होता है। ताजी बूटी के अभाव में लगभग 5 ग्राम चूर्ण प्रयोग करें।

उन्माद रोग :

1. ब्राह्मी का रस 6 ग्राम, कूठ का चूर्ण डेढ़ ग्राम, मधु 6 ग्राम मिलाकर रोगी को दिन में तीन बार पिलायें, यह प्रयोग जीर्ण उन्माद मिटाने के लिए लाभप्रद है।
2. ब्राह्मी 3 ग्राम, काली मिर्च 2 नग, बादाम गिरी 3 ग्राम, मगज़ के बीज प्रत्येक 3–3 ग्राम, मिश्री सफेद 25 ग्राम जल में घोंट छानकर सुबह–शाम पिलायें, यह पित्तज जीर्ण उन्माद में भी लाभकारी है।
3. ब्राह्मी तीन ग्राम, कुछ दाने काली मिर्च के जल में घोंट छानकर दिन में 3–4 बार पिलाने से पुरातन मस्तिष्क शूल और दिमागी भूल मिटती है।
4. ब्राह्मी रस 1 किलो और मिश्री 2.500 किलोग्राम मिलाकर मंदाग्नि पर शरबत समान चाशनी बनाकर नीचे उतारकर तुरन्त छान लें। 15 से 25 ग्राम तक जल के साथ दिन में 3 बार पीने से वात नाड़ियों के जीर्ण रोगों में जैसे मस्तिष्क दौर्बल्य, रक्त का दबाव कम होना और जीर्ण उन्माद आदि में लाभदायक है।
5. ब्राह्मी के रस में कुठ चूर्ण तथा मधु को मिलाकर चाटने से उन्माद रोग शांत होता है।[2]
6. ब्राह्मी की पत्तियों का रस तथा बालवच, कूठ, शंखपुष्पी इनके कल्क के साथ गाय के पुराने घी का यथाविधि पान करें। यह घृत उन्माद, अपस्मार तथा अन्य पाप कर्मों से उत्पन्न होने वाले रोगों का विनाश करता है।[3]

केशों के लिए : बाल झड़ने पर ब्राह्मी के पंचांग का चूर्ण एक चम्मच की मात्रा में सुबह–शाम नियमित रूप से कुछ हफ्ते सेवन करें। यह प्रयोग निर्बलता निवारण में भी लाभप्रद है।

मधुर आवाज : ब्राह्मी सूखी 100 ग्राम, मुनक्का 100 ग्राम, शंखपुष्पी 50 ग्राम, सब को चौगुने पानी में मिलाकर अर्क निकालें। इसके प्रयोग से शरीर स्वस्थ और आवाज साफ हो जाती है।

मूत्रकृच्छ्र : ब्राह्मी के 2 चम्मच रस में, एक चम्मच मिश्री मिलाकर सेवन करने से मूत्रावरोध मिटता है।

दाह : 5 ग्राम ब्राह्मी के साथ धनिया मिलाकर रात भर भिगो दें। प्रातः पीस, छानकर मिश्री मिलाकर पिलायें।

रक्तचाप : ब्राह्मी के पत्तों का रस एक चम्मच की मात्रा में आधे चम्मच शहद के साथ सेवन करने से उच्च रक्तचाप सामान्य हो

Scanned by CamScanner

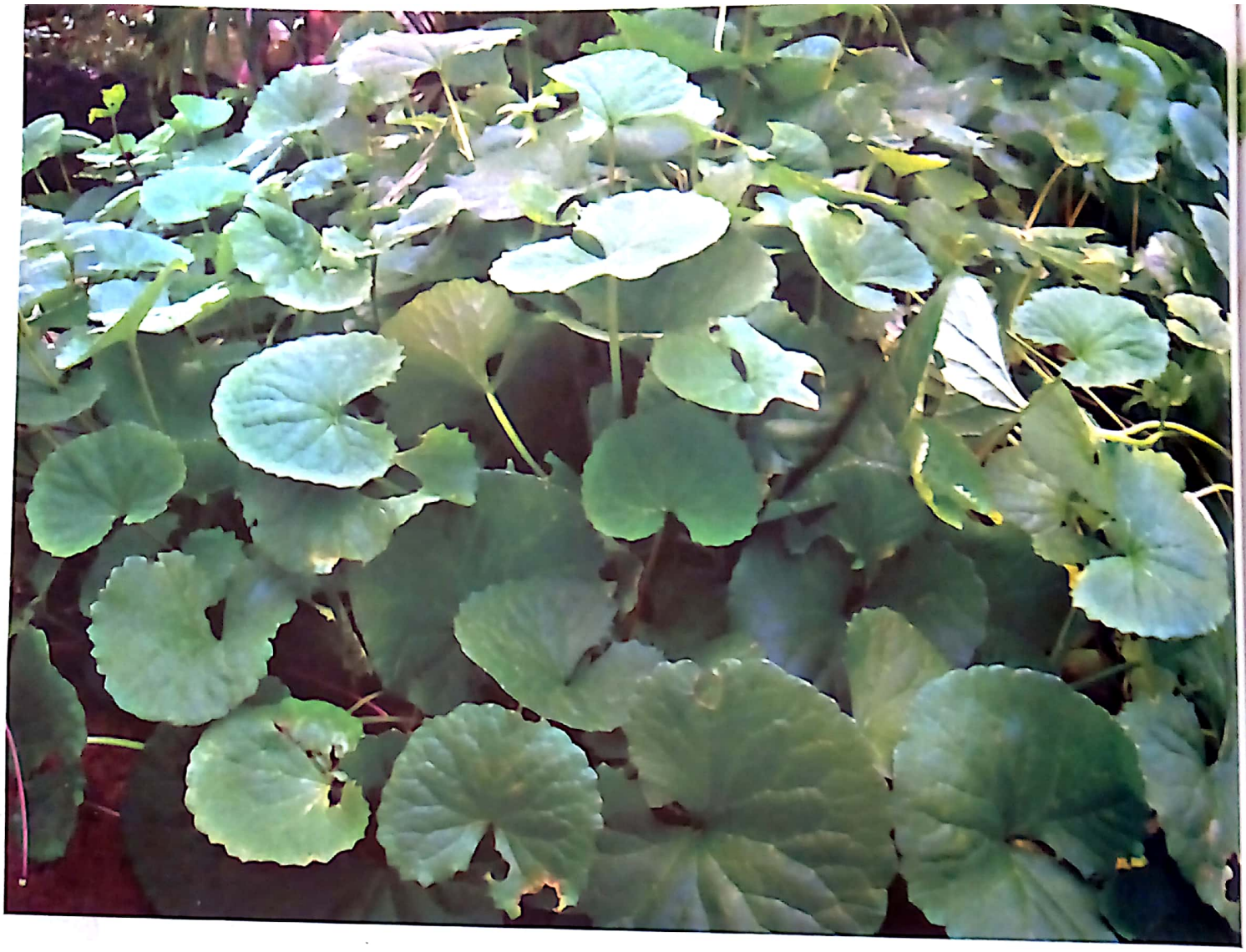

जाता है।

मसूरिका : इसके स्वरस में मधु मिलाकर पिलाने से मसूरिका मिटती है।

अहित प्रभाव : ब्राह्मी के अहितकर अतियोग से कभी–कभी शीतजन्य वातवृद्धि के कारण मद, शिरःशूल, भ्रम और अवसाद उत्पन्न होते हैं। त्वचा में लालिमा और खुजली होती है। ऐसी अवस्था में मात्रा कम कर दें या प्रयोग बंद कर दें।

निवारण : इसके अहितकर प्रभाव के निवारण के लिए सैंधव तथा अन्य वातशामक औषधियां, विशेषतः सूखी धनियां उपयुक्त होती है।

1. ब्राह्मी हिमासरा तिक्ता लघुः मेध्या च शीतला।
कषाया मधुरा स्वादुपाकायुष्या रसायनी।।
स्वर्या स्मृतिप्रदा कुष्ठपांडु मेहास्रकासजित्।
विष शोथज्वरहरी, तद्वन्मण्डूकपर्णिनी।। (भाव प्रकाश)

2. ब्राह्मीकूष्माण्डीफलषड्ग्रन्थाशंखपुष्पिकास्वरसाः।
दृष्टा उन्मादहृतः पृथगेते कुष्ठमधुमिश्राः।। (भैषज्य रत्नावली)

3. ब्राह्मीरसवचाकुष्ठषंखपुष्पीभिरेव च।
पुराणं घृतंमुन्मादा लक्ष्म्यपस्मारपापनुत्।। (चरक)

Scanned by CamScanner

चालमोंगरा

42

वैज्ञानिक नाम	:	*Hydnocarpus pentandra* (Buch.-Ham.) Oken
कुलनाम	:	Flacourtiaceae
अंग्रेजी नाम	:	Hydnocarpus oil
संस्कृत	:	तुवरक, कटुकपित्थ, कुष्ठ बैरी
हिन्दी	:	चालमुगरा, चालमोंगरा, पपीता
मराठी	:	कडुक वीठ, कडुक बठी,
बंगाली	:	चौलमुगरा
तैलगु	:	अडविवादामु
फारसी	:	बिरंजमोगरा

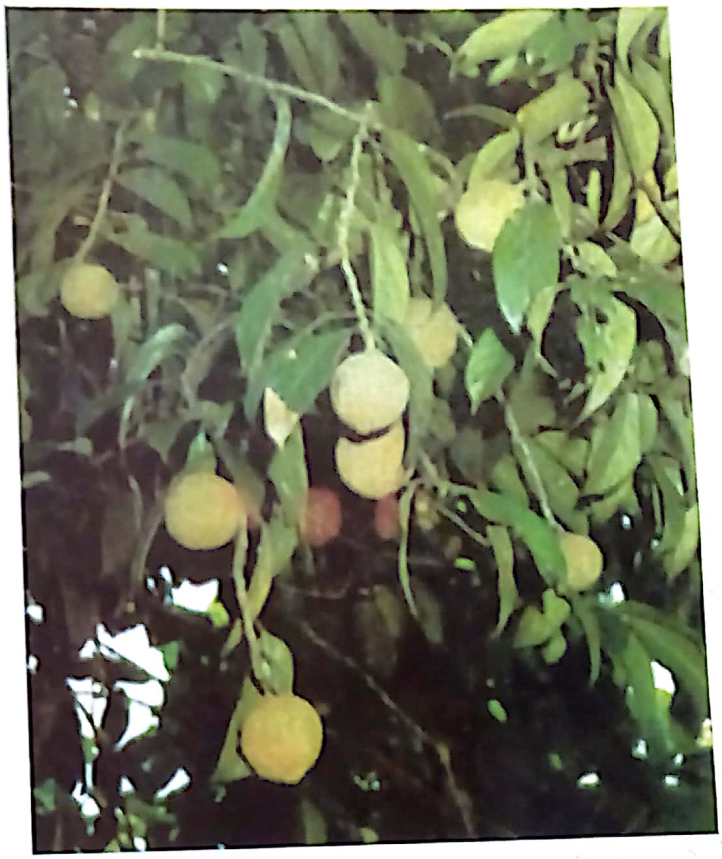

परिचय

चालमोगरा के वन्यज वृक्ष दक्षिण भारत में पश्चिम घाट के पर्वतों पर तथा दक्षिण कोंकण और ट्रावनकोर में तथा लंका में बहुतायत में पाये जाते हैं। इसके बीजों से प्राप्त होने वाले तेल का तथा बीजों का औषधीय व्यवहार किया जाता है।

बाह्य–स्वरूप

तुवरक के वृक्ष अति सुन्दर, 50 फुट या इससे अधिक ऊंचे होते हैं। पत्र–शरीफे की भांति 10 इंच लम्बे, डेढ से 4 इंच तक चौड़े, लट्वाकार, मालाकार, चिकने, कोमल तथा चमकीले व अग्रभाग पर नुकीले होते हैं। पुष्प–श्वेत, गुच्छों में तथा एकलिंगी होते हैं नर और मादा पुष्प अलग–अलग वृक्षों पर खिलते हैं। फल 2–4 इंच व्यास के सेव के सदृश परन्तु रोमश होते हैं। बीज, घूसर वर्ण अनेक कोणीय छोटे बादाम जैसे पुष्कल और हर फल में 10–20 तक बीज होते हैं।

रासायनिक संघटन

तुवरक के बीजों से स्थिर तेल प्राप्त होता है। जिसमें चालमोगरिक एसिड, हिडनोकार्पिक एसिड, पामिटिक एसिड आदि होते हैं। तुबरक तेल पीताभ या भूरे–पीले रंग का गाढ़ा होता है। इसमें एक विशिष्ट प्रकार की गंध होती है तथा 25 डिग्री सेल्सियस या इससे कम तापक्रम पर यह जमकर घी के समान सफेद और घनरूप हो जाता है।

गुण–धर्म

स्थानिक प्रयोग से कंडूघ्न, कुष्ठघ्न, व्रणरोपण, व्रणशोथघ्न, अन्तः प्रयोग से रेचक, वमन कराने वाला, कीड़ा–नाशक, प्रमेहघ्न तथा रक्त प्रसादन है।'

विशेष : चालमोगरा का तेल एक कुष्ठ–नाशक औषधि है, आजकल इंजेक्शन द्वारा भी इसका प्रयोग किया जाता है।

औषधीय प्रयोग

कंठमाला : चालमोगरा की फल की गिरी का चूर्ण 1 ग्राम की मात्रा में दिन में तीन बार खाने से कंठमाला में लाभ होता है। इसके तेल को मक्खन में मिलाकर गांठों पर लेप करें।

मूर्च्छा : बीजों का चूर्ण मस्तक पर मलने से मूर्च्छा दूर होती है।

क्षयरोग : क्षयरोग में इसके तेल की 5–6 बूंदे दूध के साथ दिन में दो बार लेने तथा मक्खन में मिलाकर छाती पर मालिश करने से बहुत लाभ होता है।

मधुमेह : इसकी फल की गिरी का चूर्ण एक चम्मच की मात्रा में दिन में तीन बार खाने से पेशाब से शक्कर जाना कम हो जाती है, जब मूत्र में शक्कर जाना बंद हो जाये तो प्रयोग बंद कर दें।

Scanned by CamScanner

गठिया : इसके बीजों का चूर्ण एक ग्राम की मात्रा में दिन में तीन बार खाने से गठिया में आराम मिलता है।

दाद : दाद के ऊपर इसके तेल की मालिश नीम के तेल या मक्खन में मिलाकर करने से एक महीने में दाद ठीक हो जाता है। 10 ग्राम तेल को 50 ग्राम वैसलीन में मिलाकर रख लें और प्रयोग करते रहें।

कुष्ठ रोग : कुष्ठ रोगी को पहले 10 बूंदे तेल की पिलानी चाहिए जिससे वमन होकर शरीर के सब दोष बाहर आ जायें। तत्पश्चात 5–6 बूंदों को कैप्सूल में डालकर या दूध व मक्खन में भोजनोपरांत सुबह–शाम दें। धीरे–धीरे मात्रा बढ़ाकर 60 बूंदे तक ले जायें। इस तेल को नीम के तेल में मिलाकर बाह्य लेप करे, कुष्ठ की प्रारम्भिक अवस्था में इस औषधि का सेवन करें। खटाई मिर्च मसाले वर्जित है।

रक्त विकार :

1. नाखून काले पड़ जायें या रक्त में कोई ओर विकार हो तो चालमुगरा तेल की 5 बूंदे, कैप्सूल में भरकर या मक्खन के साथ आधा घण्टे के पश्चात सुबह–शाम खाने से रक्त विकार दूर होते हैं।
2. इस तेल का बाह्य लेप, इसको नीम के चार गुने तेल में मिलाकर या मक्खन में मिलाकर करने से भी लाभ होता है।

खाज–खुजली : खाज–खुजली पर इसके तेल को एरण्ड तेल में मिलाकर उसमें गंधक, कपूर और नींबू का रस मिलाकर लगाने से बहुत जल्दी लाभ होता है।

पामा :

1. एरण्ड के बीजों को छिल्के सहित पीसकर एरंड तेल में मिलाकर पामा पर लेप करने से पामा मिटता है।
2. बीजों को गोमूत्र में पीसकर बनाये लेप को दिन में 2–3 बार लगाने से वेदना कम होती है।

उपदंश : पूरे शरीर में फैले हुए उपदंश के रोग और पुरानी गठिया में इसके तैल की 5–6 बूंदों से शुरू कर मात्रा बढ़ाते हुए 60 बूंद तक सेवन करने से उपदंश शांत होता है। पथ्य जब तक इस दवा का सेवन करें तब तक मिर्च, मसाले, खटाई का परहेज रखें। दूध घी और मक्खन का अधिक सेवन करें।

व्रण रोपण : बीजों को खूब महीन पीसकर उनका बारीक चूर्ण व्रण पर लगाने से रक्तस्राव बंद होकर घाव शीघ्र भर जाता है।

हैजा : इसकी फल की गिरी का एक ग्राम चूर्ण जल में पीसकर 2–3 बार पिलाने से विसूचिका में आराम मिलता है।

दोष : इसका प्रयोग सावधानीपूर्वक करना चाहिए, क्योंकि यह आमाशय को हानि पहुंचाता है। तेल को मक्खन में मिलाकर या कैप्सूल में भरकर भोजन के बाद ही लेना चाहिए।

उपद्रव निवारण : अहितकर प्रभाव निवारणार्थ दुग्ध–घृत का प्रयोग करना चाहिए।

1. तीक्ष्णोष्णं तुवरी तेलं लघु ग्राहि कफास्त्रनित्।
वह्निकृद्विषहत्कंडू कोठ क्रिमी प्रणुत। मेदो दोषा यहं चापि व्रण शोथहरं परमार (भाव प्रकाश)

Scanned by CamScanner

चमेली

43

वैज्ञानिक नाम	:	*Jasminum grandiflorum* L.
कुलनाम	:	Oleaceae
अंग्रेजी नाम	:	Sparnish or common Jasmine
संस्कृत	:	सौमनस्यायनी, सुमना, हृद्यगंधा, चेतिका, जाती
हिन्दी	:	चमेली
गुजराती	:	चबेली
मराठी	:	चबेली
बंगाली	:	चामेली
तैलगु	:	मल्लि
अरबी	:	यासमीन
फारसी	:	समन

परिचय

चमेली की बेल पूरे भारतवर्ष में घरों में, वाटिकाओं में, गमलों में, मन्दिरों में, सौन्दर्य बढाने के लिए लगाई जाती है। इसके पुष्पों से इत्र और तेल बनाया जाता है। चमेली का एक पौधा आठ से पन्द्रह वर्षो तक फूल देता है। इसके फूलों की गंध इतनी प्रिय और मनोहारिणी होती है कि अवसादित निराश हृदय में नवीन चेतना व स्पदंन का संचार कर देती है। इसीलिये इसे सुमना, हृद्य, गंध चेतिका इत्यादि नाम दिये गये है। पुष्प भेद में इसकी दो जातियाँ पाई जाती है। जो निम्न प्रकार हैं।

1. इसे स्वर्ण जाती कहते है। लैटिन में इसका नाम *Jasmine humile* है। इसके पुष्प पीले सुंगन्धित होते है।
2. *Jasmine grandiflorum* श्वेत पुष्प वाली, इसका वर्णन यहाँ किया गया है।

बाह्य–स्वरूप

इसका गुल्म लता के रूप में होता है। शाखाएं धारीयुक्त, पत्र

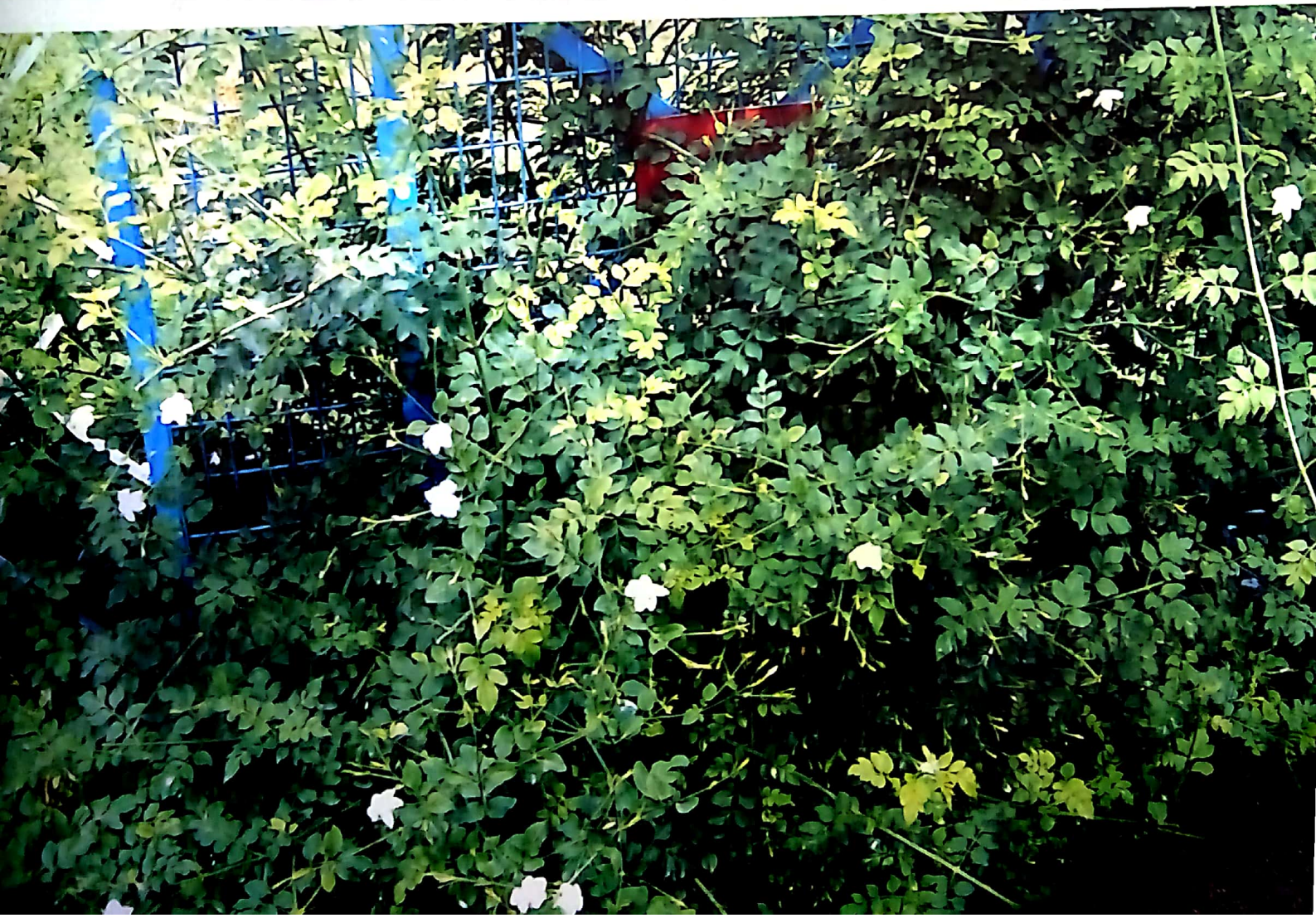

Scanned by CamScanner

अभिमुख असमपक्षवत्। पत्रक 6–11 तथा शीर्ष पत्रक सबसे बड़ा होता है। पुष्प वृन्त अक्षीय या अन्त्य पत्रों से बड़े होते हैं। पुष्प वृन्तों पर श्वेत सुगन्धित पुष्प खिले रहते है। वर्षाकाल में इस पर पुष्प खिलते हैं।

रासायनिक संघटन

इसके पत्रों में जैस्मिनाइन नामक एक उपक्षार तथा रैजिन पाया जाता है। इसके तेल में बेंजिल एसीटेट, मेथिल एंथर निलेट और आंइलिकूल नामक पदार्थ पाये जाते हैं।

गुण–धर्म

यह कफ पित्तशामक, वातशामक, त्रिदोषहर व्रणरोपण, व्रणाशोधन, वर्ण्य, वाजीकरण और वेदना स्थापन है। तेल वातशामक और सौमनस्यजनन है।

पत्र

मुखरोग नाशक, कुष्ठघ्न, कंडूघ्न तथा दांतो के लिये हितकारी है।

औषधीय प्रयोग

मुखरोग :

1. चमेली के 25 से 50 ग्राम पत्रों का क्वाथ बनाकर गंडूष करने से मुँह के छाले व मसूड़ों के रोगों में लाभ होता है।
2. इसके पत्तों को चबाने से मुंह के छालों में तथा मसूड़ों के विकार में लाभ होता है।

कर्णरोग :

1. कान में यदि शूल हो पीब निकलती हो, तब चमेली के 20 ग्राम पत्रों को 100 ग्राम तिल के तेल में उबालकर तेल को कान में 1–1 बूंद डालने से पीब बहना बन्द हो जाता है।
2. चमेली के तेल में एलुबा मिला के कान में डालने से कान की खुजली मिटती है। इसके पत्तों का 5 मिलीलीटर रस 10 मिली गौमूत्र में मिलाकर गरमकर कान में डालने से कर्ण शूल मिटता है।

मस्तक पीड़ा : इसके तीनों पत्रों को गुल रोगन के साथ पीसकर 2–2 बूंद नाक में टपकाने से मस्तक पीड़ा मिटती है।

मुख की कान्ति : इसके 10–20 फूलों को पीसकर चेहरे पर लेप करने से चेहरे की कान्ति बढ़ती है।

आंख की फूली : फूलों की 5–6 सफेद कोमल पंखुडियों को थोड़ी सी मिश्री के साथ खरल करके, आंख की फुली पर लगाने से कुछ दिनों में वह फूली कट जाती है।

अर्दित : पक्षाघात, अर्दित आदि विकारों में मूल को पीसकर लेप करने तथा तेल की मालिश करने से लाभ होता है।

उदरकृमि : इसके 10 ग्राम पत्तों को पानी में थोड़ा जोश देकर पीने से पेट के कीडे निकल जाते हैं। मासिक धर्म साफ भी होता है।

वायुशूल : चमेली के गरम तेल में रूई का फोहा भिगो के नाभि पर रखने से वायुशूल मिटता है।

उदावर्त : उदावर्त–आनाह में इसकी जड़ का क्वाथ 10–20 ग्राम की मात्रा में नियमित रूप से सेवन करना चाहिए।

नपुंसकता :

1. चमेली के पुष्प व पत्रस्वरस से सिद्ध तेल की मालिश या जड़ का लेप इन्द्री पर करने से ध्वज भंग और नपुंसकता में लाभ होता है।
2. इसके पत्रस्वरस से सिद्ध 10 मिलीलीटर तेल में 2 ग्राम राई को पीसकर मूत्रेन्द्रिय, बस्ति, और जांघों पर लेप करने से नपुंसकता मिटती है। यह लेप बहुत उग्र है। इसलिये इसका प्रयोग सावधानीपूर्वक करना चाहिये।
3. इसके 5–10 फूल पीसकर कामेन्द्रियों पर लेप करने से स्तम्भन की शक्ति बढ़ती है।
4. इसके 10–20 पुष्पों को कुचल कर नाभि और कमर पर बांधने से पेशाब साफ होता है। काम वासना बढ़ती है। और मासिक धर्म का कष्ट दूर होता है।

मासिक धर्म : चमेली के 20 ग्राम पंचाग को आधा किलो पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ सुबह–शाम पिलाने से तिल्ली आदि अंगों के बहाव की रूकावट और मासिक धर्म की रूकावट मिटती है।

उपदंश :

1. इस रोग में चमेली के पत्रों का स्वरस

Scanned by CamScanner

20 ग्राम, राल का चूर्ण 125 मिलीग्राम दोनो को मिलाकर प्रतिदिन सवेरे पीने से 15–20 दिन मे गर्मी का रोग नष्ट हो जाता है। पथ्य में सिर्फ गेहूँ की रोटी, दूध, भात और घी शक्कर का ही प्रयोग करना चाहिये।

2. इसके पत्रों के क्वाथ से उपदंश के घाव धोने से लाभ होता है।
3. इसके पत्तों का क्वाथ कृमिनाशक और मूत्रल है।
4. चमेली के पत्तों के सुखोष्ण क्वाथ में अथवा त्रिफला के सुखोष्ण क्वाथ में मूत्रेन्द्रिय को डुबाने से घोर पीड़ा शान्त होती है और रोग हल्का पड़ जाता है।[1]

बिवाई : इसके पत्तों के ताजा रस को पैरों की बिवाई पर लगाने से बिवाई अच्छी हो जाती है।

व्रणरोपण : व्रणों के शोधन एवं रोपण के लिये, इसके पत्रों के क्वाथ से व्रणों को धोना, एवं पत्रों एवं पत्रों से सिद्धतेल को लगाने में लाभदायक है।

कुष्ठ :

1. चमेली की नई पत्तियाँ, इन्द्र जौ, सफेद कनेर की जड़, करंज के फल, दारू हल्दी की छाल का लेप कुष्ठनाशक है।
2. इसकी जड़ के क्वाथ का सेवन करने से कुष्ठ रोग में लाभ होता है।

ज्वर : चमेली की पत्ती, ऑवला, नागरमोथा, यवासा, समभाग के तैयार क्वाथ में गुड़ मिलाकर दिन में दो बार 30 मि0ली0 मात्रा में सेवन करने से ज्वर के रोगी के भीतर रूके हुये दोष शीघ्र ही बाहर निकल जाते है।

चर्मरोग :

1. चमेली का तेल चर्मरोगों की एक अचूक व चमत्कारिक दवा है। इसको लगाने से सब प्रकार के जहरीले घाव, खाज, खुजली, अग्नि दाह, मर्मस्थान के नहीं भरने वाले घाव इत्यादि रोग बहुत जल्दी ठीक हो जाते है।
2. चर्म रोग तथा रक्त विकार जन्य रोगों मे इसके 8–10 फूलों को पीसकर लेप करने से बहुत आराम मिलता है।

विस्फोटक : इस रोग में इसके 1–15 फूलों का लेप शान्तिदायक है।

दाह : चमेली के फूलों से निर्मित सुगन्धित तेल दाह को ऐसे शान्त करती है जैसे जल अग्नि को।

दोष : इसके अधिक सेवन से गरम प्रकृति वालों के सिर में दर्द होता है। इसके दर्द का नाश करने के लिये, गुलाब का तेल और कपूर का प्रयोग करना चाहिये।

1. जातीयुगं तिक्तमुष्णं तुवरं लघु दोषजित्।
शिरोऽक्षिमुखदन्तार्त्तिविषकुष्ठव्रणाश्रजित्।। (भाव प्रकाश)
2. मालती तु वरा तिक्ता कटूष्णा दोषनाशिनी। (कै०नि०)
3. मुखपाके सिरावेधः शिरः कायविरेचनम्।
कार्यञ्च बहुधा नित्यं जातीपत्रस्य चर्वणम्। (भाव प्रकाश)
4. जातीपत्ररसैस्तैलं विपक्वं पूतिकर्णजित। (चक्रदत्त)
5. कोष्णो जाथा बराया का क्वाथे शिश्नं निमज्जयेत्
वेदनो परमस्तेन व्याधेस्य बल संक्षयः (मै० र०)
6. श्वेत करवीर मूलं कुटज करंजयो फल त्वचो दार्व्या
सुमनः प्रबाल युक्तो लेपः कुष्ठायहाः सिद्धः। (चरक)
7. जात्याभलक मुस्तानि तद्वद धन्वय वारूकम्।।
पिबहदोषो ज्वरितः कषाय सगुड पिबेत्। (चरक)

Scanned by CamScanner

44 चांगेरी

वैज्ञानिक नाम	:	*Oxalis corniculata* L.
कुलनाम	:	Oxalidaceae
अंग्रेजी नाम	:	Indian sorrel
संस्कृत	:	चांगेरी, अम्ल पत्रिका
हिन्दी	:	तिनपतिया
बंगाली	:	आम्रूल
मराठी	:	अंबुटी
पंजाबी	:	खट्टी बूटी, खट–मिट्ठा
गुजराती	:	आंबोती
द्राविड़ी	:	पुड़िया रै (ई)
कन्नड	:	पुल्लु पुलुचे

परिचय

चांगेरी भारतवर्ष के समस्त उष्ण प्रदेशों में तथा हिमालय में 6,000 फुट की ऊंचाई तक होता है। इस पर पुष्प और फल वर्ष भर मिलते है।

बाह्य–स्वरूप

इसका पौधा बहुत ही छोटा, प्रसरणशील 2.5 से 10 इंच तक लम्बा, पत्र लम्बे पत्रवृन्तों पर बहुत थोडे, त्रिपत्रकीय, अभिहृदयाकृत पुष्प अक्षीय प्रायः गुलाबी या पीतवर्ण के फल लम्बे, गोल, रोमश, बीज अनेक गहरे भूरे रंग के अंडाकार अनुप्रस्थ धारियों से युक्त होते हैं।

रासायनिक संघटन

इसमे पौटेशियम और आक्जेलिक अम्ल होता है।

गुण–धर्म

चांगेरी अम्ल, कषाय रस, तथा उष्ण वीर्य होती है। यह कफवात शामक, पित्तवर्धक, शोथहर, वेदनास्थापन, लेखन, मदनाशक, संज्ञा प्रबोधन, रोचन, दीपन, यकृत उत्तेजक, ग्राही, हृद्य, रक्तस्तंभन, स्पर्श में शीत, दाह प्रशमन और ज्वरघ्न है। यह विटामीन सी का अच्छा स्रोत है।

औषधीय प्रयोग

सिर दर्द : इसके रस में प्याज का रस समभाग मिलाकर सिर पर लेप करने से पित्तज शिरशूल दूर होता है।

मसूढों के रोग : इसके पत्तों के रस से कुल्ले करने पर मसूढ़ो के असाध्य रोग भी मिट जाते हैं।

मुख की दुर्गन्ध : इसके 2–3 पत्तों को मुंह में पान की तरह रखने से मुख की दुर्गन्ध मिट जाती है।

दंतमंजन : इसके सूखे हुए पत्तों से दांतों का मंजन करना चाहिए।

संग्रहणी : संग्रहणी में इसके पंचाग का स्वरस एवं इसमें पीपल मिलाकर तथा रस से चार गुनी दही मिलाकर घी पका लेना चाहिए, यह घी संग्रहणी के लिए हितकारी है।

उदरशूल : इसके पत्तों के 40–60 ग्राम क्वाथ में भुनी हुई हींग व

Scanned by CamScanner

मुरब्बा मिलाकर प्रातः–सायं पिलाने से उदरशूल मिटता है।

अंतर्दाह : इसके 5–7 पत्तों को चबाई के समान चोटकर उसमें मिश्री मिलाकर प्रातः–सायं पीने से अंतर्दाह मिटती है।

मंदाग्नि : अग्निमांद्य मे इस बूटी के 8–10 ताजे पत्तो की कढ़ी बनाकर देने से पाचन शक्ति दुरूस्त होकर भूख बढ़ती है।

अर्श:

1. अर्श में इसके पंचाग को घी में सेंक कर शाक बनाकर दही के साथ सेवन से लाभ होता है।
2. चांगेरी, निशोथ, दन्ती, पलाश, चित्रक इन सबकी ताजी पत्तियों को समान मात्रा में लेकर घी में भूनकर, इस शाक को दही मिलाकर शुष्कार्श में खिलायें।[2]

अतिसार :

1. इसका 2–5 ग्राम स्वरस दिन में दो बार पीने पर पेचिश और अतिसार में भी लाभदायक है।
2. गत शीत और इन्द्रजौ के समभाग चूर्ण को चावलों के पानी के साथ पीने को दें। जब चूर्ण पच जाये तो छाछ, चांगेरी, दाडिम का रस डालकर पकाई गयी यवागू अतिसार में खाने को दें।[1]
3. पुरानी पेचिश में इसके 4–5 पत्तों को उबालकर मट्ठे या दूध के साथ देने से बहुत लाभ होता है।

गुदभ्रंश : चांगेरी के रस में घी को सिद्ध करके गुदा पर लेप करने से कांच का निकलना बंद हो जाता है।

रक्तस्राव : इसके पंचाग के स्वरस की 5–10 मिलीलीटर मात्रा में दिन में दो बार प्रयोग करने से पतली धमनियों का संकोच होकर रक्तस्राव मिटता है।

दाह :

1. चांगेरी के 10–15 पत्तों को पानी के साथ पीसकर इनकी पुल्टिस बनाकर सूजन पर बांधने से सूजन की दाह मिटती है।
2. इसके पत्तों का लेप छोटे बच्चो के फोड़े–फुन्सियों पर भी लाभदायक है।

चौथिया ज्वर : चौथिया ज्वर में इसके लगभग एक हजार पत्तो को अच्छी तरह पीसकर, 16 गुने जल में उबालने चाहिए, जब यह गाढ़ा हो जाये तो इसमें इतना घी डाले कि रबड़ी जैसा हो जाये, इसका 5–10 ग्राम की मात्रा में सेवन करने से ज्वर तीन दिन में उतर जाता है।

धतूरे का नशा : इसके ताजा पत्तों का 20–40 मिलीलीटर रस पिलाने से धतूरे का नशा उतरता है।

मेद : इसके 8–10 पत्तों का लेप मेद पर करने से लाभ होता है।

बड़ी चांगेरी

छोटी चांगेरी

1. सनागरा निन्द्रयवान् लाभदेय बारडु लाम्बुना।
सिद्धा यबागू जीर्ण च चांगेरी तक दाडिमैः।। (चरक)

2. त्रिवृछन्ती पलाशाना, चांगेरी त्रिस्त्रस्त्रय च।
चमके मार्जितं दद्याच्छाकं दधि समन्वितम्।। (चरक)

Scanned by CamScanner

45 चित्रक

वैज्ञानिक नाम	:	*Plumbago zeylanica* L
कुलनाम	:	Plumbaginaceae
अंग्रेजी नाम	:	Leadwort
संस्कृत	:	चित्रक, दहन, अग्नि, ब्याल, कालमूल
हिन्दी	:	चित्रक, चीता
गुजराती	:	चित्रो, चित्रा
मराठी	:	चित्रमूल
बंगाली	:	चिता
पंजाबी	:	चित्रा
तेलगु	:	चित्र मूलमु
द्राविड़ी	:	चित्रमूलं
अरबी	:	शैतरज
फारसी	:	बेख बरंदा

परिचय

चित्रक की खेती पूरे भारतवर्ष में की जाती है। रंग भेद से इसकी दो जातियां, श्वेत और रक्त क्रमशः *Plumbago zeylanica* और *Plumbago indica* पाई जाती है। लाल चित्रक के रक्तवर्ण और श्वेत के पुष्प श्वेत वर्ण के होते हैं। श्वेत चित्रक विशेषतः पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, दक्षिण भारत तथा श्रीलंका में होता है। रक्त चित्रक खासिया पहाड़, सिक्किम, कूच बिहार में अधिक मिलता है। इसका मूल, अर्क तथा पत्तों का प्रयोग किया जाता है।

बाह्य–स्वरूप

चित्रक का 3–6 फुट ऊंचा झाड़ीनुमा पौधा बहुवर्षायु और सदाबहार होता है। कांड बहुत छोटा, भूमि के उपर से ही कई कोमल पतली–पतली चिकने हरे रंग की शाखायें निकलती हैं। इसके पत्ते अभिमुख लट्वाकार या आयत लट्वाकार 3 इंच लम्बे और 1 इंच तक चौड़े अग्रभाग तीक्ष्ण, बहुत फलदार तथा हरे रंग के होते हैं। पुष्प 4–12 इंच लम्बे, शाखा युक्त, पुष्प दंड पर लम्बी नलिका वाले श्वेत वर्ण निर्गन्ध गुच्छों में लगे रहते हैं। फल लम्बे, गोल तथा एकबीजीय होते हैं। इसकी जंशु अंगुली जितनी मोटी बाहर से कृष्णाभ, अरूण और भीतर से श्वेत होती है। छाल पर छोटे–छोटे उभार होते हैं जो उपमूलों के अवशेष हैं। इसकी जड़

Scanned by CamScanner

तोड़ने पर टूट जाती है। इसका स्वाद कटु तीक्ष्ण और इसकी गन्ध अप्रिय होती है। पुष्प सितम्बर–नवम्बर में लगते हैं। फल चिपचिपे रोम से भरे रहते हैं।

रासायनिक संघटन

चित्रक मूल में प्ल्म्बेजिन नामक एक तत्व पाया जाता है। इसके अतिरिक्त स्वतन्त्र द्राक्षशर्करा, फलशर्करा तथा प्रोटिएज और इन्वर्टेज एंजाइम्स होते हैं।

गुण–धर्म

यह त्रिदोष हर है। उष्ण होने से वात को शान्त करती है। तिक्त कटु और उष्ण होने से दीपन पाचन, छर्दिनिग्रहण, ग्राही, अर्शोघ्न और कृमिघ्न है। यह आमपाचन है तथा महास्रोत में मल को निकालकर बाद में स्तम्भन करता है। तिक्त होने से यह स्तन्य–शोधन, रक्तशोधक, शोथहर और कटु पौष्टिक है। यह कफघ्न, ज्वरघ्न और विषम ज्वर प्रतिबन्धक है। रूक्ष होने से यह लेखन है।[1] यह औषधि अर्शोघ्न होती है। चित्रक, करेला आदि यह आरग्वधादि–गण की वनस्पतियां श्लेष्मा, विष, कुष्ठ, प्रमेह, वमन, कंडुनाशक तथा व्रणशोधक है।[2] चित्रक, कुटज, पलाश और त्रिफला, प्रमेह, अर्श, पांडु रोगनाशक एवं शर्करा को दूर करने वाले हैं।[3] चित्रक, हरीतकी, आंवला, बहेड़ा, पाढा यह मुष्ककादिगण कफनाशक, योनिदोषनाशक, दूध का शोधन करने वाले और पाचन हैं।[4] चित्रक, अदरक, मरिच, इन्द्रयव, पाठा, जीरा, कायफल यह कफघ्न, प्रतिश्याय, वायु, अरूचिनाशक, दीपन, गुल्मनाशक एवं आम पाचक है।

औषधीय प्रयोग

नकसीर : इसके 2 ग्राम चूर्ण को शहद के साथ चाटने से नक्सीर बंद होती है।

स्वर भेद : अजमोदा, हल्दी, आंवला, यवक्षार, चित्रक के चूर्ण को मधु तथा घृत के साथ चाटने से स्वर भेद दूर होता हैं। मात्रा 1 से 2 ग्राम तक दिन में तीन बार देनी चाहिए।

अग्निवर्धक :

1. सैन्धव लवण, हरड़, पिप्पली, चित्रक इन्हें समभाग में मिश्रित कर गरम जल के साथ सेवन करने से अग्नि प्रदीप्त होती है। इसके सेवन से घी, मांस और नये चावल का ओदन क्षणमात्र में पच जाता है। मात्रा 1 से 2 ग्राम तक प्रातः–सायं।[5]
2. अरूचि, अग्निमांद्य और अजीर्ण के विकारों में इसकी ताजी जड़ के 2–5 ग्राम चूर्ण को समभाग वायविडंग और नागरमोथे के साथ प्रातः–सायं भोजन से पहले देने से पाचन शक्ति की व्यवस्था ठीक होकर नियमित भूख लगने लगती है।

संग्रहणी : चित्रक के क्वाथ और कल्क से सिद्ध किये घी का 5–10 ग्राम की मात्रा में प्रातः–सायं भोजनोपरान्त सेवन करने से संग्रहणी मिटती है।

तिल्ली :

1. घृतकुमारी के 10–20 ग्राम गूदे पर चित्रक की छाल के 1–2 ग्राम चूर्ण को बुरककर प्रातः–सायं खिलाने से तिल्ली की सूजन मिटती है।

प्लीहा : चित्रक मूल, हल्दी, अर्क (मदार) का पका हुआ पत्ता, धातकी के फूल का चूर्ण इनमें से किसी एक को गुड़ के साथ दिन में तीन बार 1 से 2 ग्राम तक खाने से प्लीहा रोग नष्ट हो जाता है।[6]

अर्श :

1. चित्रक के मूल त्वक के 2 ग्राम चूर्ण को तक्र के साथ प्रातः–सायं भोजन से पहले पीने से बवासीर में लाभ होता है।
2. इसकी जड़ को पीसकर मिट्टी के बरतन में लेप कर, इसमे दही जमाकर, फिर उसी बर्तन में बिलोकर उस छाछ को पीने से अर्श मिटता है।

सुख प्रसव : 10 ग्राम चित्रक की जड़ के चूर्ण को 2 चम्मच मधु के साथ स्त्री को चटाने से प्रसव सुखपूर्वक होता है।

वात रोग : चित्रक की जड़, इन्द्रजौं, काली पहाड़ की जड़, कुटकी, अतीस और हरड़ ये सब चीजें समान भाग लेकर चूर्ण बनाकर 3 ग्राम तक की मात्रा में प्रातः–सांय लेने से सब प्रकार के वात रोग मिटते हैं।

सन्धिवात : चित्रक मूल, आंवला, हरड़, पीपल, रेबंद चीनी और सेंधा नमक इन सब चीजों को समान भाग लेकर चूर्ण बनाकर 4 से 5 ग्राम तक की मात्रा में प्रतिदिन सोते समय गरम पानी के साथ लेने से पुराना सन्धिवात, वायु के रोग और आंतों के रोग मिटते हैं।

हिस्टीरिया : चित्रक की जड़, ब्राह्मी और वच का समान भाग चूर्ण बनाकर 1 से 2 ग्राम तक की मात्रा में दिन में तीन बार देने से हिस्टीरिया में लाभ होता है।

गठिया : लाल चित्रक मूलत्वक को तेल में मिलाकर मर्दन करने से पक्षाघात और गठिया मिटता है।

ज्वर :

1. ज्वर में इसकी जड़ के चूर्ण को

रक्त चित्रक

Scanned by CamScanner

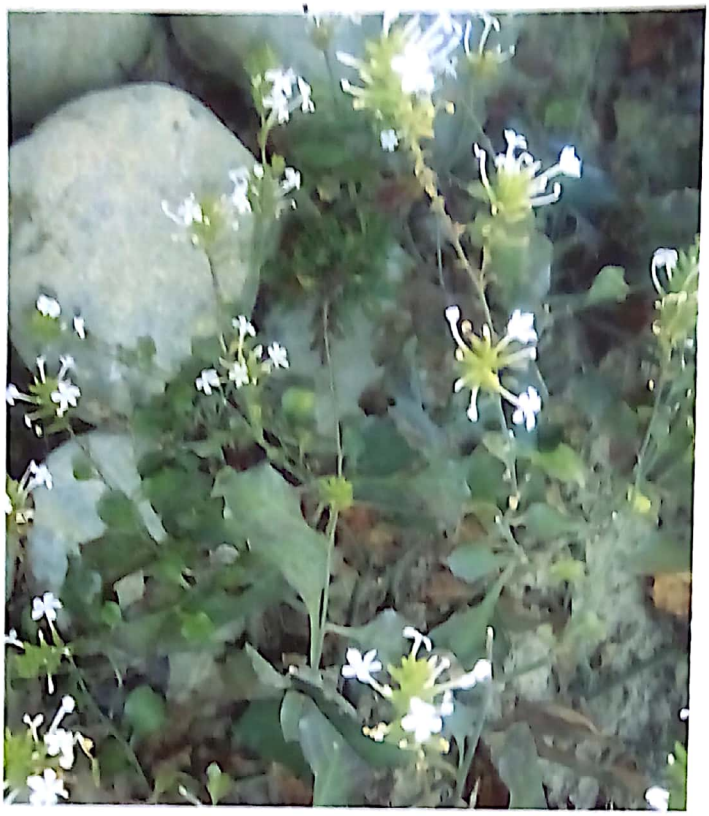

सौंठ, मरिच, पीपल के साथ 2–5 ग्राम की मात्रा में देने से अच्छा लाभ होता है।

2. ज्वर में जब रक्ताभिसरण क्रिया मन्द हो जाती है और रोगी अन्न नहीं खा सकता, उस समय चित्रक मूल के टुकड़े को चबाने से अच्छा लाभ होता है।

3. प्रसूतिका ज्वर में चित्रक की जड़ का 2–5 ग्राम चूर्ण दिन में तीन बार देने से ज्वर मन्द हो जाता है तथा दूसरे गर्भाशय उत्तेजित होकर दूषित आर्तव बहने लगता है, जिससे मक्कल शूल मिटता है। प्रसूतिका ज्वर में इसे निर्गुंडी के 10–20 मिलीलीटर स्वरस के साथ देना चाहिये।

वर्मरोग : चित्रक की छाल को दूध या जल के साथ पीसकर कोढ़ और त्वचा के दूसरे प्रकार के रोगों पर लेप करना चाहिये अथवा इन्हीं चीजों के साथ पीसकर पुल्टिस बनाकर तब तक बंधा रखना चाहिये जब तक कि छाला न उठ जाये। इस छाले के आराम होने

पर श्वेत कुष्ठ के दाग मिट जाते हैं।

खुजली : लाल चित्रक के दूध का लेप करने से खुजली मिटती है।

कुष्ठ : लाल चित्रक की सूखी जड़ की छाल के 2–5 ग्राम चूर्ण के प्रातः–सायं प्रयोग से उपदंश और कुष्ठ मिटता है।

पूतिव्रण : जिन घावों से पीप बहता हो, उनका मुंह बंद करने के लिए चित्रक छाल को जल में पीसकर लेप करना चाहिए।

चूहे का विष : इसकी छाल के चूर्ण को तेल में पकाकर तलुए पर मलने से मूषक विष उतर जाता है।

विशेष : इसका प्रयोग अधिक मात्रा में नहीं करना चाहिये, योग्य और निर्धारित मात्रा में ही इसका सेवन हितकारी है व अधिक मात्रा में इसका प्रयोग करने से ये विष का कार्य करती है।

नीला चित्रक

1. चित्रक : कटुकः पाके वह्निकृत्पाचनो लघुः।।
रुक्षोष्णो ग्रहणी कुष्ठशोथार्शः कृमिकासनुत्।
वात श्लेष्महरो ग्राही वातघ्नः श्लेष्मपित्तहृत्।। (भाव प्रकाश)
2. आरग्वधमदनगोप घोण्टाकण्टकीकुटजपाठापाटलाम्। (सुश्रुत)
3. पिप्पलीभूतावव्यचित्रकशृंगवेरमरिचहरितं।। (सुश्रुत)
4. मुष्ककादिर्गणो ह्यपेश मेदोघ्नः शुक्रदोषहृत्।
मेहार्श: पांडुरोगाश्मशर्करानाशनः परः।। (सुश्रुत)
5. सिन्धूत्थपथ्यमगधोद्भववह्निचूर्णं मुण्णाम्बुना पिबति यः खलुनष्टवह्निः।
तस्याभिषेण सघृतेन वरं नवान्नं भस्मीभवत्यशित मात्रमिहक्षणेन।। (भैषज्य रत्नावली)
6. गुडैश्चित्रक मूलं वा रजन्यर्कदलं तथा।
धातकीपुष्पचूर्णं वा प्रत्येकं प्लीहनाशनम्।। (भैषज्य रत्नावली)

Scanned by CamScanner

दालचीनी

46

वैज्ञानिक नाम	:	*Cinnamomum zeylanicum* Bl
कुलनाम	:	Lauraceae
अंग्रेजी नाम	:	Cinnamon
संस्कृत	:	गुडत्वक, चोंच, त्वक्, उत्कट, दारूसिता
हिन्दी	:	दालचीनी
गुजराती	:	तज, बेल, बालची
मराठी	:	दालचीनी, पूहरचक
बंगाली	:	दारूचिनी, पोइ
पंजाबी	:	दालचीनी
तेलगु	:	लवंण वक्ल
कन्नड़	:	लवंग पट्टे
फारसी	:	दारचीनी
अरबी	:	दारसीनी, किर्फा

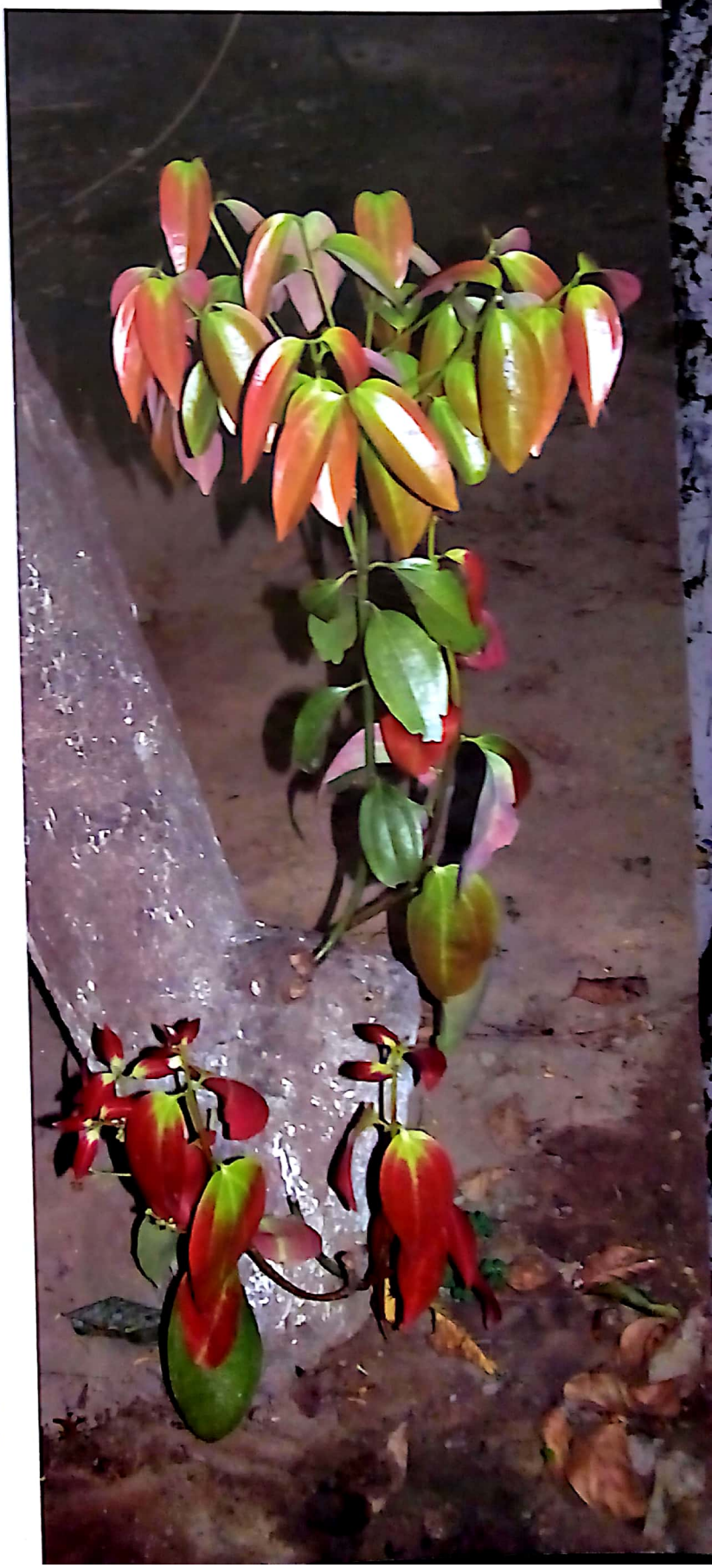

परिचय

दालचीनी, हिमालय प्रदेश, सीलोन और मलाया प्रायःद्वीप में पैदा होती है। देश भेद से यह तीन प्रकार की होती है :

1. *C. cassia* : यह चीनी से आती है और इसकी छाल मोटी होती हैं।
2. *Cinnamomum sp.* : इसका भारत में आयात श्रीलंका से किया जाता है, यह चीनी जाति से पतली, अधिक मधुर तथा कम तीक्ष्ण होती है। औषधि के लिये, सिंहल द्वीप की दालचीनी ही सर्वोत्तम है।
3. *Cinnamomum tamal* : यह मोटी, कम तीक्ष्ण तथा जल से पीसने पर लुआबदार हो जाती है। इसी के पत्र का प्रयोग तेज़पत्र के नाम से किया जाता है। भारतीय तथा चीनी जाति की दारूसिता को तज कहते हैं। तज में से तेल नहीं निकाला जाता, केवल छाल का ही प्रयोग किया जाता है। दालचीनी मसाले के रूप में हर घर में प्रयोग की जाती है।

बाह्य–स्वरूप

इसका सदाहरित वृक्ष प्रायः 20 से 25 फुट ऊँचा होता है, इसके पत्र अभिमुख, चर्मवत् 4–7 इंच लबे होते है। उनका ऊपरी भाग

Scanned by CamScanner

चमकीला होता है और सिरायें 3–5 होती है. पत्तियों के मलने पर तीक्ष्ण गंध आती है. स्वाद भी इनका कटु होता है। पुष्प लम्बे पुष्पदंडो पर गुच्छो में दुर्गन्धयुक्त होते है। फल आधे से एक इंच लम्बे, अण्डाकार, गहरे बैंगनी रंग के, घंटिकाकार परिपुष्प से आवृत्त होते है, जिनके भीतर एक बीज होता है। फलों को तोड़ने पर भीतर से तारपीन की सी गन्ध आती है। दारूसिता के नये वृक्षों की छाल चिकनी पाण्डुवर्ण की तथा पुराने वृक्षों की रूखी और भूरे रंग की प्रायः 6 मिलीमीटर मोटी और भंगुर होती है।

रासायनिक संघटन

छाल में ½ से 1 प्रतिशत तक एक तेल पाया जाता है, जिसमें सिन्नामल्डीहाइड तथा यूजीनोल होता है। प्रारम्भ में यह हल्के पीले रंग का, परन्तु रखने पर लाल हो जाता है। पत्तियों से भी एक तेल निकाला जाता है, जिसमे लवण सदृश युजिनोल होता है। बीजों से 33 प्रतिशत एक स्थिर तेल निकलता है। मूलत्वक से रंगहीन कपूर गन्धि तेल निकलता है।

गुण–धर्म

दीपन, पाचन, वातानुलोमन, यकृत उत्तेजक, पित्तशामक, वेदना स्थापक, मुख–शोधक है। मुख की दुर्गन्ध का नाश करती है। आवाज अगर बैठ जाये तो इसे खोल देती है। यह हृदय को उत्तेजना देने वाली ओजवर्धक है। अफारा, मरोड़ी अतिसार, जीर्ण अतिसार संग्रहणी और वमन बन्ध के लिये दालचीनी का प्रयोग करना चाहिये।

दालचीनी तेजपात यह सब वायु, कफ, विष को नष्ट करते है। पेट को स्वच्छ करते है। कडू, पिडिका और कुष्ठ को नष्ट करते है।

औषधीय प्रयोग

दंत शूल :

1. दंतशूल में दालचीनी के तेल का रूई का फोवा बनाकर लगाने से लाभ होता है।
2. इसके 5–6 पत्तों को पीसकर मंजन करने से दांत स्वच्छ और चमकीले हो जाते हैं।

इनफ्लूएंजा : दालचीनी 3½ ग्राम, लौंग 600 मिलीग्राम, सौंठ 2 ग्राम इन तीनों को एक किलो पानी में उबाले, 250 ग्राम शेष रहने पर उतार कर छान लें। इसको दिन में 3 बार, 50 ग्राम की मात्रा में देने से इनफ्लूएंजा ज्वर में बड़ा लाभ होता है

कान का बहिरापन : दाल चीनी का तेल कान में 2–2 बूँद टपकाने से कान के बहिरेपन में लाभ होता है।

नेत्र : दालचीनी का तेल आंखों के ऊपर लगाने से आंख का फड़कना बन्द हो जाता है और नेत्रों की ज्योति बढ़ती है।

कासरोग : एक चम्मच तेजपात का चूर्ण, 2 चम्मच मधु के साथ सुबह शाम सेवन करने से खांसी में आराम मिलता है।

कासप्रतिश्याय : एक चौथाई चम्मच दालचीनी चूर्ण में 1 चम्मच

Scanned by CamScanner

मधु को थोड़ा सा गुनगुना करके, मिलाकर दिन में तीन बार देने से कास प्रतिश्याय नष्ट होता है।

सिरदर्द :

1. तेजपात के 8–10 पत्तों को पीसकर बनाये गये लेप को कपाल पर लगाने से ठंड या गर्मी से उत्पन्न सिर दर्द में आराम मिलता है। आराम मिलने पर लेप को धोकर साफ कर लें।
2. दालचीनी के तेल को ललाट पर मलने से सर्दी की वजह से पैदा हुआ सिरदर्द मिट जाता है।
3. जुकाम के कारण शिरोवेदना में दालचीनी को घिसकर गरम कर लेप करना चाहिये या दालचीनी का अर्क निकालकर मस्तिष्क पर लेप करने से लाभ होता है।

हिक्का : दालचीनी का 10–20 ग्राम काढ़ा, 250 मिलीग्राम मस्तंगी के साथ देने से कफ की हिचकी मिटती है।

यक्ष्मा : दालचीनी के तेल का अल्प मात्रा में सेवन करने से कीटाणुओं का नाश होकर रोग ठीक हो जाता है।

प्रसवपीड़ा : प्रसव पीड़ा में मांस पेशियों की शिथिलता घटाने के लिये 5–10 ग्राम दालचीनी का प्रयोग 1 ग्राम पीपलमूल एवं 500 मिलीग्राम भाँग के साथ करने से लाभ होता है।

संधिवात : संधिवात में दालचीनी का 10–20 ग्राम चूर्ण को 20–30 ग्राम मधु में मिलाकर पेस्ट बना लें। पीड़ायुक्त संधि पर इसकी धीरे–धीरे मालिश करने से लाभ होता है। इसके साथ–साथ एक कप गुनगुने जल में 1 चम्मच मधु एवं दालचीनी का 2 ग्राम चूर्ण मिलाकर सुबह, दोपहर तथा शाम सेवन करना चाहिये।

रक्तस्त्राव :

1. दालचीनी के क्वाथ से रक्तस्राव बन्द होता है, अतः फेफड़ो में रक्तस्राव हो, गर्भाशय के द्वारा अत्यधिक रक्तस्राव हो और अन्य किसी भी प्रकार के रक्तस्राव में दालचीनी का काढ़ा 10–20 मि॰लि॰ सुबह, दोपहर तथा शाम देने से लाभ पहुंचता है।
2. शरीर के किसी भी अंग से रक्तस्राव होने पर एक चम्मच तेजपात का चूर्ण एक कप पानी के साथ 2–3 बार सेवन करने पर रोग में लाभ होता है।

कोलस्ट्रोल : एक कप पानी में दो चम्मच मधु तथा तीन चम्मच दालचीनी चूर्ण मिलाकर प्रतिदिन 3 बार सेवन करने से रक्त में कोलेस्ट्राल की मात्रा कम होती है।

उदर रोग :

1. 5 ग्राम दालचीनी चूर्ण में 1 चम्मच मधु मिलाकर, दिन में 3 बार चाटने से उदर रोग, अतिसार, जीर्ण अतिसार, ग्रहणी रोग और अफारे में लाभ होता है।
2. दालचीनी का चूर्ण 750 मिलीग्राम, कत्था चूर्ण 750 मिलीग्राम दोनों की फंकी जल के साथ दिन में तीन बार लेने से दस्त बन्द हो जाते हैं।
3. शुंठी चूर्ण 500 मिलीग्राम, इलायची 500 मिलीग्राम, दाल. चीनी 500 मिलीग्राम इन तीनों को पीसकर भोजन के पहले प्रातः–सायं लेने से भूख बढ़ती है और कब्जियत मिटती है।
4. दालचीनी का तेल पेट पर मलने से आंतों का खिंचाव दूर हो जाता है।
5. दालचीनी 4 ग्राम, कत्था 10 ग्राम, दोनों को मिलाकर पीस ले। इसमे 250 ग्राम खौलता हुआ पानी डालकर ढ़क देना चाहिये। दो घंटे बाद इसको छानकर दो हिस्से करके पीना चाहिये। इससे दस्त बन्द हो जाते है।
6. दालचीनी, इलायची और तेजपत्ता, बराबर–बराबर लेकर क्वाथ करें इसके सेवन से अमाशय की ऐंठन दूर होती है।
7. दालचीनी और लंवग का क्वाथ 10–20 ग्राम पिलाने से वमन बन्द होती है।
8. बेलगिरी के शर्बत में दालचीनी का 2–5 ग्राम चूर्ण मिलाकर प्रातः–सायं पिलाने से अतिसार मिटता है।
9. पित्तज वमन में दालचीनी का क्वाथ 10–20 ग्राम पिलाने से लाभ होता है।
10. आमाशयिक शूल एवं वमन में इसके 5–10 मिलीलीटर तेल को 10 ग्राम मिश्री के साथ खिलाने से लाभ होता है।

चर्मरोग : शहद एवं दालचीनी का मिश्रण रोग ग्रसित भाग पर लगाने से थोड़े ही दिनों में खुजली खाज तथा फोड़े फुन्सी जैसे चर्म रोग नष्ट हो जाते है।

ज्वर : शीतप्रधान संक्रामक ज्वर में 1 चम्मच शहद में 5 ग्राम दालचीनी का चूर्ण मिलाकर सुबह, दोपहर तथा सायं सेवन करने से लाभ होता है।

हानि : इसकी अधिक मात्रा उष्ण प्रकृति वालों को सिर दर्द पैदा करती है। दालचीनी गर्भवती स्त्रियों को नहीं देनी चाहिये, क्योंकि यह गर्भ को गिरा देती है। गर्भाशय में भी इसको रखने से गर्भ गिर जाता है।

प्रतिनिधि : कबाब चीनी और कुलंजन इसके प्रतिनिधि है।

दर्पनाशक : कतीरा, असारून, सफेद चन्दन, खमीरा और बनफसा हैं।

1. त्वचं लघूष्णं कटुकं स्वादु तिक्तं च रूक्षकम्।
पित्तलं कफ वातघ्नं कडूंवामारूचि नाशनम्। (भाव प्रकाश)

2. एलातगरकुष्ठमांसीध्यामकत्वक्पत्रनागपुष्पप्रियंगुहरेणु.....।। (सु॰ सू॰)

Scanned by CamScanner

47 धनिया

वैज्ञानिक नाम	:	*Coriandrum sativum* L.
कुलनाम	:	Apiaceae
अंग्रेजी नाम	:	Coriander
संस्कृत	:	धान्यक, कुस्तुम्बुरू, वितुन्नक
हिन्दी	:	धनिया
गुजराती	:	कोथमीर, धाणा
मराठी	:	धणों, कोथिब्या
बंगाली	:	धने
पंजाबी	:	धनिया
तैलगु	:	धनियालु
तमिल	:	कोतामल्लि
फारसी	:	कश्नीज
अरबी	:	कुज्वर

परिचय

सम्पूर्ण भारतवर्ष में धनिये के सूखे फलों का व्यवहारिक प्रयोग मसाले के तौर पर हर घर में किया जाता है। मसाले के रूप में धनिये की प्रसिद्धि से सब परिचित है। यहाँ पर धनिये के औषधीय गुण और औषध्यार्थ उपयोग का ही प्रस्तुतीकरण किया गया है।

बाह्य–स्वरूप

इसका वर्षायु कोमल शाखा प्रशाखायुक्त, गन्धयुक्त 1–3 फुट ऊँचा क्षुप होता है। पत्र पक्षवत् विभक्त होते है। जिसमें नीचे के पत्रक लट्वाकर, खंडयुक्त तथा दन्तुर और ऊपर के पत्रक रेखाकार होते है। पुष्प श्वेत या बैंगनी रंग के संयुक्त होते है। फल गोलाकार,

पीताभ, भूरे तथा धारीदार होते है जो दबाने पर दो भागों में विभक्त हो जाते है जिसमे एक–एक बीज होता है। शीत ऋतु के अन्त में फूल और फल होते है।

रासायनिक संघटन

धनिये में 0.36 से 1.6 प्रतिशत तक एक उड़नशील तेल तथा 13 प्रतिशत तक स्थिर तेल पाया जाता है। उड़नशील तेल में मुख्यत कोरिएन्ड्रोल पाया जाता है, धनिये को विशेष तथा चूर्ण को अच्छी तरह मुखबन्द पात्रों में भरकर शीतल स्थान में रखना चाहिये अन्यथा इसका उड़नशील तेल उड़जाने से औषधि निर्वीर्य हो जाती है।

गुण–धर्म

त्रिदोषहर, शोथहर, वेदना स्थापन, तृष्णा निग्रहण, रोचन, दीपन, पाचन, ग्राही, यकृत उत्तेजक, रक्तपित्त शामक, हृद्य, कफघ्न, मूत्रविरंजनीय मूत्रजनन, ज्वरहन मस्तिष्क बल्य, तथा शुक्रनाशक है।

औषधीय प्रयोग

नेत्ररोग :

1. 20 ग्राम धनिया को कूटकर एक गिलास पानी में उबालकर पानी को कपडे से छान कर एक–एक बूंद आंखों में टपकाने से नेत्राभिष्यन्द रोग या आँखों के दुखने में बहुत लाभ होता है। इससे आंखों की जलन कम होती है, इनमें से पानी का बहना बन्द हो जाता है।
2. धनिया के रस को स्त्री के दूध में मिलाकर आंख में एक–एक बूंद टपकाने से आंख का कठिन दर्द भी दूर हो जाता है।
3. धनिया के पत्तों के रस को आंख में एक या दो बूंद दिन में दो बार टपकाने से चेचक का दाना आंख में नहीं निकलता है।
4. 20 ग्राम धनिया को 400 ग्राम पानी में उबालकर चतुर्थांश शेष काढ़े से नेत्रों को धोने से आंख की सफेदी, पुरानी सूजन और

Scanned by CamScanner

चेचक की वजह से होने वाला आंख का जख्म मिट जाता है।

5. धनिया के बीजों को और जौ समभाग लेकर पीसकर, उनका पुल्टिस बनाकर आंखों पर बांधने से आंखों की सूजन पर लाभ होता है।

कंठमाला : 10–20 ग्राम धनिया को पीसकर जौ के सत्तू में मिलाकर लगाने से कंठमाला मिटती है।

कंठपीड़ा : धनिया के 5–10 ग्राम बीजों को दिन में दो–तीन बार चबाने से गले की पीड़ा मिटती है।

मस्तक पीड़ा : समभाग धनिया और आंवलों को रात भर पानी में भिगोकर, प्रातः काल घोटें और छानकर मिश्री मिलाकर पिलाने से, गरमी से होने वाली मस्तक पीड़ा मिटती है।

श्वांस की दुर्गन्ध : 5–10 ग्राम धनिया को नियमित रूप से चबाने से श्वास की दुर्गन्ध मिटती है।

सिरगंज : धनिया के 100 ग्राम चूर्ण को 100 ग्राम सिरका के साथ पीस कर लेप करने से सिर की गंज मिटती है।

नक्सीर : धनिया के 20 ग्राम पत्तों को पीसकर उसमें जरा सा कपूर मिलाकर 1–2 बूंद नाक में टपकाने से और सिर पर मलने से नकसीर बन्द हो जाते है।

बच्चों की खांसी : चावलों के पानी में 10–20 ग्राम धनिया को घोटकर शक्कर मिलाकर सुबह, दोपहर तथा शाम पिलाने से बच्चों की खांसी और दमें में लाभ होता है।

बवासीर :

1. 10–20 ग्राम धनिया के बीजों को एक गिलास पानी व 10 ग्राम मिश्री के साथ उबालकर पिलाने से बवासीर से बहने वाला खून रूक जाता है।
2. हरड़, गिलोय, धनिया, इनको समभाग में लेकर चार गुने पानी में उबालकर चतुर्थांश शेष क्वाथ में गुड़ डालकर सेवन करने से सब प्रकार के अर्श नष्ट होते है।

रक्तप्रदर : धनिया का क्वाथ 10–20 ग्राम दिन में दो–तीन बार पिलाने से मासिक धर्म में प्रमाण से अधिक रूधिर का बहना बन्द हो जाता है।

जोडों का दर्द : 6 ग्राम धनिया के चूर्ण में 10 ग्राम शक्कर मिलाकर सुबह–शाम खाने से गर्मी से होने वाला जोड़ो का दर्द मिट जाता है।

उदर विकार :

1. गर्मी से होने वाले उदर शूल में धनिया के 2 ग्राम चूर्ण को 5 ग्राम मिश्री के साथ दिन में दो–तीन बार देने से लाभ होता है।
2. दस्त के साथ यदि रक्त आता हो तो 20 ग्राम धनिया को एक गिलास पानी में भिगोकर पीस छानकर प्रातः–सायं पिलाना चाहिये।
3. धनिया के 1 ग्राम चूर्ण को 20 मिलीलीटर शराब के साथ पीने से पेट के कीड़े निकल जाते है। और पुनः उत्पन्न नहीं होते।
4. अतिसार में 10 ग्राम भुना हुआ धनिया खाने से दस्त फौरन बन्द हो जाते है।
5. पेट में यदि अफारा हो तो धनिया के तेल को 10–15 मि॰ली॰ मात्रा में सेवन से तुरन्त आराम होता है।

वमन :

1. गर्भावस्था की वमन में धनिया के 100 ग्राम काढे में 20 ग्राम मिश्री और चावल का पानी 20 ग्राम मिलाकर थोड़ा–थोड़ा पिलाने से गर्भवती स्त्री की वमन बन्द होती है।
2. धनियां, सौंठ, मिश्री, नागरमोथा, 5–5 ग्राम, 32 ग्राम जल में क्वाथ बनाकर गर्भवती को पिलाने से अथवा अन्य किसी को भी, किसी कारण से उल्टी होने पर पिलाने से वमन तुरन्त बन्द हो जाती है।

अग्निमांद्य : श्वास, विषम ज्वर तथा अजीर्ण में धनियां, लौंग, सौंठ तथा निशोथ, सबका समभाग चूर्ण बनाकर उष्ण जल के साथ 2–2 ग्राम सुबह–शाम सेवन करना चाहिये।

आंव :

1. धनिया तथा सौंठ के 20 ग्राम क्वाथ में एरंड मूल का चूर्ण 1 ग्राम मिलाकर दिन में दो बार पिलाना चाहिये।
2. समभाग धनिया और सौंठ का क्वाथ 10–20 ग्राम सुबह–शाम पीने से पाचन शक्ति बढ़ जाती है।

तृषा : धनिया के पानी में मधु और मिश्री मिलाकर पिलाने से पित्त रोग से पैदा हुई प्यास मिटती है।

पित्तज्वर : 10 ग्राम धनिया और चावल समभाग को रातभर भिगोकर, प्रातःकाल उनका क्वाथ कर 30 मि0ली. सुबह–शाम पिलाने से अंतरदाह और पित्त ज्वर मिटता है।

मूत्राघातः 10 ग्राम धनिया तथा 10 ग्राम गोक्षुर के फलों को

Scanned by CamScanner

400 ग्राम पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ में घी मिलाकर सुबह–शाम 20 मिलीलीटर की मात्रा में पिलाना चाहिये।

मस्से : 10–20 ग्राम धनिया को या इसकी 20–30 हरी पत्तियों को पीसकर लगाने से चहरे के तिल और मस्से मिटते है।

सकंद छाले : 5 ग्राम धनिया को 100 ग्राम पानी में रात्रि में भिगोकर सुबह मसल कर छानकर तैयार हिम, फांट, या क्वाथ के कुल्ले करने से बच्चो के मुह के सकंद छाले मिटते है।

सिरदर्द : धनिया का 6 ग्राम अवलेह नित्य लेने से मस्तक पीडा, भ्रम और चक्कर मिटते है।

बच्चों का उदर शूल : 5 ग्राम धनिया को 100 ग्राम पानी में रात्रि में भिगोकर सुबह मसलकर छान कर तैयार किया हिम बच्चे को पिलावें।

सूजन दर्दना :

1. शरीर के अन्दर कहीं भी चोंसे चलती हो तों इसके तर और ताजा पत्तों के रस को दूध या रोगन गुल बारतुंग में मिलाकर लेप करने से लाभ होता है।
2. गर्मी की सूजन मे इसके पत्तों के 10–20 ग्राम रस को 10 ग्राम सिरके में मिलाकर लगाने से सूजन मिट जाती है।

उदर्द–शीत पित्त : शरीर में पित्ती उछलने पर धनिया के पत्तों के रस को शहद और रोगन गुल के साथ मिलाकर लगाना चाहिये और साढे सत्रह ग्राम शक्कर तथा उन्नाव का पानी मिलाकर पिलाना चाहिये।

जहरबाद : जहर बाद और सख्त सूजन में धनिया के 20–25 ग्राम ताजे पत्तों को पीसकर उनमें चने का आटा और रोगन गुल मिलाकर लेप करने से फायदा होता है।

कारबकल : धनिया के रस को खरल में डालकर, रोगनगुल मिलाकर तथा शीशे के डंडे से खूब घोटकर कारबकल पर लगाने से बहुत फायदा होता हैं।

दाह:

1. धनिया के पत्तों की चटनी बनाकर खाने से दाह शान्त होती है।

2. अधकुटा धनिया 20 ग्राम, जल 120 ग्राम एक मिट्टी के बरतन में डालकर रात्रि भर पड़ा रहने दें। प्रातः काल इस शीतकषाय को छानकर 13 ग्राम खांड डालकर थोड़ा–थोड़ा पीने से पित्तज्वर जन्य अन्तर्दाह शान्त हो जाता है। इसे अत्यन्त प्यास और कब्ज होने पर पीते है।[2]

हानि : धनिया के पत्ते और बीजों को अधिक मात्रा में सेवन करने से मनुष्य की काम शक्ति कम हो जाती है। मासिक धर्म रूक जाता है। और दमे की बीमारी में नुकसान पहुँचाता है।

दर्पनाशक : इसके दर्प का नाश करने के लिये, शहद, दालचीनी और अंडे की जर्दी प्रयोग करते हैं।

1. धान्यकं सुखरं स्निग्धमदृष्यं मूत्रलं लघु।
तिक्तंकटुकमुष्णं च दीपनं स्मृतम्।।
ज्वरघ्नं रोचनं ग्राहि स्वादुपाकि त्रिदोषनुत्।
तृष्णादाहवमिश्वासकासामार्श: कृमिप्रणुत।।
आर्द्रं तु तदगुणं स्वादु विशेषात् पित्तनाशि तत्।।
(भाव प्रकाश)

2. धान्यकं कासतृड्छर्दिज्वरहृच्चक्षुषो हितम्।
कषायं तिक्तामधुरं हृद्यं रोचनदीपनम्।। (ध०नि०)

3. धान्यतुम्बरू। रोचनं दीपनं वातकफदौर्गन्ध्य नाशनम्।।
(च०सू०27)

4. आर्द्रा कुस्तुम्बरी कुर्यात् स्वादुसौगन्ध्यहृद्यताम्।। (सु०सु०)

5. धान्यनागरसिद्ध तु तोयं दद्यात् विचक्षणः।
आमाजीर्ण प्रशमनं शूलघ्नं वस्तिशोधनम्।। (बंगसेन)

6. व्युषितं धन्याक जलं प्रातः पीतं सशर्करं पुंसाम।
अन्तदहि शमथव्यथिरात् दूर प्ररूऽमपि।। (भै०र०)

Scanned by CamScanner

वैज्ञानिक नाम	:	*Woodfordia fruticosa* (L.) Kurz.
कुलनाम	:	Lythraceae
अंग्रेजी नाम	:	Fire flame bush
संस्कृत	:	धातकी, धातुपुष्पी, वह्निज्वाला, ताम्रपुष्पी
हिन्दी	:	धातकी, धवई, धाय, धाई, धावा
गुजराती	:	धावडी, धावणी
मराठी	:	धायटी, धातस, धातस
बंगाली	:	धाई, धाईफूल
पंजाबी,	:	धावी
फारसी	:	धातस, धावा
तेलगु	:	सिरीजी, एरीपुव्वु

परिचय

धातकी के लगभग 10 से 15 फुट ऊंचे गुल्म समस्त भारतवर्ष में 5,000 फुट की ऊंचाई तक देखने को मिल जाते हैं, प्राय: बंगाल के जलीय प्रदेश और दक्षिण भारत में देखने को नहीं मिलते हैं। जनवरी से अप्रैल तक, जब यह फूलों से भर जाता है, तब इसके पत्ते झड़ जाते हैं तथा फरवरी से मार्च में यह नये पत्ते धारण करता है।

बाह्य–स्वरूप

काण्ड छोटा, बहुशाखीय, काण्ड त्वक, रक्ताभ, भूरे रंग की पतले टुकड़ों में छूटती रहती है। पत्र संवृन्त दाड़िम की भांति परन्तु आकार में उनसे छोटे, पीत वर्ण के अभिमुख, अधर तल पर सूक्ष्म रोमयुक्त होते हैं। इसकी शाखाओं और पत्तों पर विशेष प्रकार के काले–काले बिन्दुओं का जमघट होता है। पुष्प चमकीले लाल रंग के, पत्रों के नीचे से निकले पुष्प दंड पर गुच्छों में लगते हैं। फल पतले व अंडाकार फल में भूरे रंग के छोटे, चिकने बीज भरे रहते हैं।[1]

रासायनिक संघटन

पुष्पों में टैनिन 24.1 प्रतिशत तथा शर्करा 11.81 प्रतिशत होती है।

पत्तियों में 12–20 प्रतिशत टैनिन तथा मेंहदी की तरह का रंजक पदार्थ लॉसोन होता है। इसकी छाल में भी टैनिन 20–27.1 प्रतिशत पाया जाता है तथा तने से एक प्रकार का गोंद निकलता है।

गुण–धर्म

1. धातकी के फूल चरपरे, शीतल, मृदुता करने वाले, कसैले, हल्के तथा तृषा, अतिसार, पित्त, रूधिर दोष, विषकृमि तथा विसर्प नाशक हैं।[2,3,4]
2. यह गर्भ–स्थापक तथा योनि से होने वाले विविध प्रकार के स्रावों को रोकता है।
3. धातकी, नागपुष्पी, चन्दन यह सब अतिसार का नाश करने वाले हैं, टूटी अस्थियों को जोड़ने वाले, पित्त में हितकारी और व्रणों का रोपण करने वाले हैं।[5]

औषधीय प्रयोग

नकसीर : धाय के फूल, मोचरस, पठानी लोध्र, आम की गुठली का रस तथा मजीठ के रस को चीनी के शरबत में पीसकर कपड़े से छानकर, निचोड़ लें, इस रस का अवपीड नस्य दें[7], इससे नकसीर में आराम मिलता है।

Scanned by CamScanner

दंत विकार : धातकी के पत्ते तथा फूल, दोनों को समभाग लेकर, बनाये गये काढ़े से गरारे करने से सब प्रकार के दंत विकारों में लाभ होता है।

प्लीहा रोग : 2–3 ग्राम धातकी के फूलों का चूर्ण, चित्रक मूल चूर्ण, हल्दी चूर्ण वा मदार का पत्ता, इनमें से किसी एक का भी सेवन 50 ग्राम गुड़ के साथ करने से प्लीहा रोग नष्ट हो जाता है।[6]

उदर कृमि : इसके चूर्ण को 3 ग्राम प्रातः खाली पेट ताजे जल के साथ कुछ समय तक सेवन से पेट में कीड़े मर जाते हैं।

अतिसार : अतिसार व प्रवाहिका में धातकी के पुष्पों का चूर्ण एक चम्मच की मात्रा में 2 चम्मच शहद या एक कप मट्ठे के साथ दिन में तीन बार लेने से लाभ होता है। जिन्हें बार–बार शौच जाना पड़ता है, उन्हें इस निरापद दिव्य औषध का सेवन कर लाभ अवश्य उठाना चाहिए।

पेचिस व प्रवाहिका : 10 ग्राम धातकी के पुष्पों को लगभग 400 ग्राम पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष रहने पर प्रातः खाली पेट व सायंकाल भोजन से 1 घंटा पहले सेवन करें। हल्का व सुपाच्य भोजन का सेवन करें। कुछ समय के लिए दूध व घृत का भी सेवन न करें, निश्चित लाभ प्राप्त होगा।

रक्तार्श : इसके फूलों का शर्बत पिलाने से रक्तार्श मिटता है। खूनी बवासीर, रक्त प्रदर या अन्य किसी प्रकार का रक्त स्राव रोकने के लिए एक चम्मच चूर्ण में दो चम्मच शहद मिलाकर दिन में 2–3 बार सेवन करने से लाभ होता है।

गर्भ स्थापन के लिए : सम्पूर्ण चिकित्सकीय परीक्षण सामान्य होने पर भी जिन महिलाओं को गर्भस्थापन नहीं होता है। उनके लिए नील कमल का चूर्ण तथा धातकी पुष्प चूर्ण दोनों को समभाग मिलाकर ऋतुकाल प्रारम्भ होने के दिन से 5 दिन तक शहद के साथ सुबह–शाम नियमित सेवन कराने से स्त्री गर्भधारण करती है। प्रयोग असफल होने पर अगले मासिक धर्म से पुनः दोहराएं।

श्वेत प्रदर :

1. स्त्रियों के श्वेत प्रदर में धातकी के फूलों का चूर्ण 2 चम्मच (लगभग 3 ग्राम) मधु के साथ सुबह खाली पेट व सायंकाल भोजन से एक घन्टा पूर्व सेवन करने से लाभ होता है।
2. धातकी के पुष्पों का चूर्ण 1 चम्मच की मात्रा में, समभाग मिश्री मिलाकर रखें। प्रातः–सायं नियमित रूप से कुछ काल तक दूध या जल के साथ दिन में दो या तीन बार सेवन करने से अवश्य लाभ होता है।

प्रमेह : धातकी के पुष्प, पठानी लोध्र, चंदन सभी समान भाग पीसकर एक चम्मच की मात्रा में दिन में 3 बार शहद के साथ कुछ हफ्ते तक सेवन करने से प्रमेह नष्ट होता है।

दाह : शरीर के किसी अंग में दाह व जलन को दूर करने के लिए धाय के फूलों को गुलाब जल में पीसकर लेप करें।

रक्त पित्त :

1. धातकी के फूल, फूल प्रियंगु, चन्दन, पठानी, लोध्र, अनन्त मूल, महुआ, नागरमोथा, अभया इन सब द्रव्यों को सम्मिलित कूटकर 30 ग्राम चूर्ण क्वाथ लगभग एक किलो पानी में भिगो दें। बाद में निथारे हुए जल में पकी हुई मिट्टी लगभग 5 ग्राम को भी भिगो दें। थोड़ी देर बाद पानी निथार लें। अब इसमें मुलेठी भिगों दें, जब मुलेठी अच्छी तरह भीग जाये तो निथार लें। निथारे हुए रस में मिश्री या चीनी मिलाकर पीने से वेग युक्त रक्त पित्त रूकता है। शरीर का बढ़ा हुआ दाह शान्त होता है। यह सरल एवं अद्भुत प्रयोग है। नित्य ताजा बनाकर दिन में दो बार कुछ दिन तक सेवन करें।
2. एक चम्मच दूर्वा रस (दूब घास का रस), एक चम्मच धाय पुष्प चूर्ण दोनों के सेवन से रक्त पित्त में लाभ होता है। कहीं से भी रक्त बह रहा हो (नकसीर, बवासीर व रक्तस्राव) कुछ दिन के प्रयोग से पूर्ण लाभ होगा। तीन सप्ताह तक प्रयोग करें।

दन्तोद्गम जन्य पीड़ा : आंवला, पिप्पली और धातकी के फूल तीनों को बराबर लेकर महीन पीस लें। इस चूर्ण को शहद में मिलाकर सुबह शाम प्रतिदिन बच्चों के मसूड़ों पर मलने से बच्चों के दांत निकलते समय के कष्ट दूर होकर, दांत सहजता से निकल जायेंगे।

पित्तज ज्वर : पित्तज ज्वर में धातकी के फूलों का 1 चम्मच चूर्ण गुलकंद के साथ सुबह शाम दूध या जल से लेने से लाभ होता है।

जख्म : जो घाव जल्दी नहीं भर रहा हो, उसको भरने के लिए इसके फूलों का चूर्ण जख्म पर लगाने से जख्म भर जाता है।

नासूर : अलसी के तेल में धातकी के पुष्प चूर्ण को फेंटकर अल्पमात्रा में शहद मिलाकर प्रतिदिन नासूर में लगाते रहने से नासूर भर जाता है।

दग्ध व्रण : इसके फूलों को पीसकर अलसी के तेल में या शहद में मिलाकर जले हुए स्थान पर लगाने से लाभ होता है और बाद में निशान भी समाप्त हो जाता है।

1. धातकी दाड़िमीपत्रा रक्तपुष्पा च मादिनी (नि०शि०)
2. धातकी कटुका शीत मदकृत्तुवरा लघुः। तृष्णातीसारपित्तास्रविषकृमिविसर्पजित्।। (भाव प्रकाश)
3. प्रवाहिकातिसारघ्नी विसर्पव्रणनाशिनी (रा०नि०)
4. धातकी कुसुमं शीतं रक्तपित्तातिसार जित् (रा०व०)
5. प्रियंगुः समङ्गाधातकी पुत्रगनागपुष्पचन्दनकुचन्दन (सुश्रुत)
6. गुडैश्चित्रक मूलं वा रजन्यर्क दलं तथा धातकीपुष्पचूर्ण वा प्रत्येकं प्लीहनाशनम्।। (भैषज्य रत्नावली)

Scanned by CamScanner

49 धतूरा

वैज्ञानिक नाम	:	*Datura metal* L.
कुलनाम	:	Solanaceae
अंग्रेजी नाम	:	Thorn apple
संस्कृत	:	धत्तूर, शिवप्रिय, धुत्तूर, उन्मत्त, कनक, मातुल
हिन्दी	:	धतूरा
गुजराती	:	धत्तूरा
मराठी	:	धत्तूरा
बंगाली	:	धतूरा
तैलगु	:	उम्मत्त
तमिल	:	उन्मत्त
फारसी	:	तातूर
अरबी	:	दातूर

परिचय

चरक संहिता मे कनक नाम से तथा सुश्रुत संहिता में उन्मत्त नाम से निर्दिष्ट धत्तूर शिव का प्रिय है। इसके फल और पुष्प शिव पर चढ़ाये जाते है। रस ग्रन्थो मे इसकी गणना विषवर्ग मे की गई है तथा रस चिकित्सा मे धत्तूर बीज अनेक योगों में पड़ता है। धतूरा के पौधे समस्त भारत में पाये जाते हैं। इसकी निम्न प्रजातियां देखने को मिलती है

1. यह वास्तव मे विदेशी पौधा है, परन्तु अब समस्त भारत मे फैल गया है। इसका क्षुप से बिल्कुल मिलता जुलता है।
2. कृष्ण धतूरा, इसके क्षुप कहीं-कहीं पाये जाते हैं। अन्य प्रजातियों की अपेक्षा यह अधिक वीर्यवान होता है।

बाह्य-स्वरूप

धतूरा के एकवर्षीय क्षुप 2-5 फुट तक ऊंचे, कांड चिकना, पत्तिया लम्बाकार, भालाकार, लम्बाग्र या अग्र पर नुकीली तथा आधार पर मध्य नाड़ी के दोनों पार्श्व विषम होते हैं। पत्रतट लहरदार, दन्तुर या किंचित मुड़े हुए होते हैं। पुष्प 5-6 इंच लम्बे, प्राय दो या

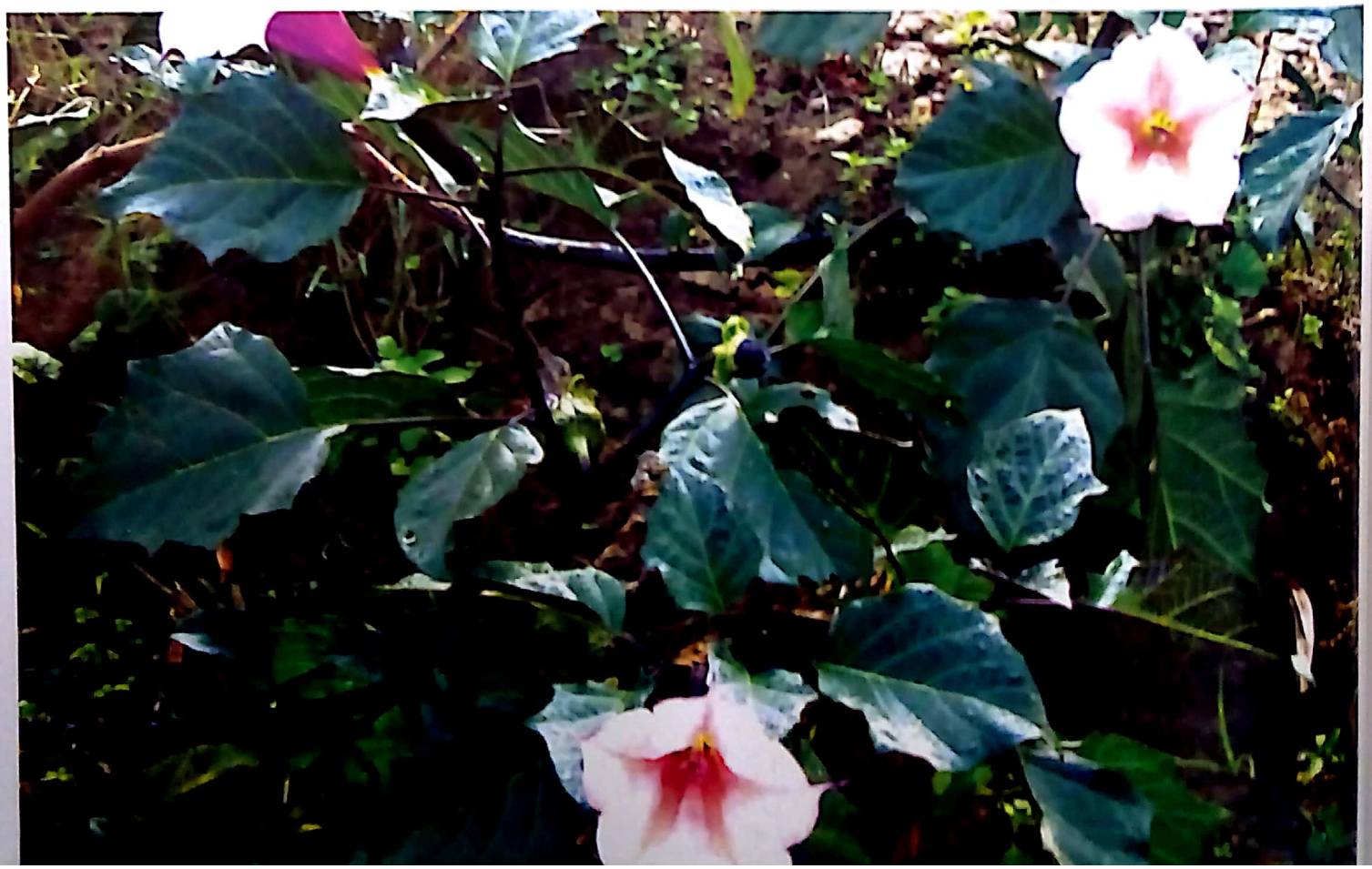

Scanned by CamScanner

तीन एक साथ, बाहर से बैंगनी और भीतर से श्वेत होते हैं। फल गोलाकार, कागजी नींबू जितने बड़े, कंटकित तथा नीचे की ओर झुके हुए। बीज चपटे पीले या हल्के भूरे रंग के होते हैं। कृष्ण धतूरे के बीज चपटे वृक्काकार तथा काले रंग के होते हैं।

रासायनिक संघटन

धतूरा के पत्र एवं बीज में हायोसायमीन और हायोसीन नामक दो क्षाराभ, 0.25 से 0.55 प्रतिशत तक पाये जाते हैं। यही इसके प्रधान सक्रिय तत्व हैं और यही दोनों क्षाराभ, अजवायन, खुरासानी में भी पाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त बीजों में कुछ रालीय तत्व एवं 15 से 30 प्रतिशत तक स्थिर तेल भी पाया जाता है।

गुण–धर्म

1. धतूरा मदकारक, वर्ण को उत्तम करने वाला, अग्नि तथा वायुकारक, कषाय, मधुर, कटु, जूं–लीख को नष्ट करने वाला और ज्वर, कोढ़, व्रण, कफ, खुजली, कृमि तथा विषनाशक है।
2. धतूरा कडुवा, रूक्ष, काँतिकारी, घावों को भरने वाला, त्वग दोषहर, ज्वरघ्न और भ्रम पैदा करता है।
3. यह कफ नाशक है। श्वास नलिका के संकोच, विस्फार प्रधान रोगों में धतूरा की बहुत उपयोगिता हैं।

काला धतूरा

औषधीय प्रयोग

मस्तक पीडा : इसके 2–3 बीज नित्य निगलने से पुरानी मस्तक पीड़ा मिट जाती है।

सिर की जुंए : सरसों का तेल 4 सेर, धतूरे के पत्तों का रस 16 सेर तथा धतूरे के पत्तों का कल्क 16 सेर, इन सबको मंदी आंच पर पकाकर जब तेल मात्र शेष रह जाये तो बोतल में भरकर रख ले। इस तेल को बालों में लगाने से सिर की जुंए नष्ट हो जाती हैं।[1]

लाल धतूरा (शोभाकर)

उन्माद :

1. कृष्ण धतूरा के शुद्ध बीजों को पित्त पापड़ा के रस में घोंटकर पीने से उन्माद शांत होता है।[2]
2. शुद्ध धतूरा के बीज और काली मिर्च बराबर लेकर, महीन चूर्ण करके 100–100 मिलीग्राम की गोली बना लें। जल के साथ खरल करके 1–1 रत्ती की गोली बनायें। 1–2 गोली सुबह व रात्रि को मक्खन के साथ देने से नया उन्माद रोग शांत हो जाता है। नया उन्माद रोग मस्तिष्क में आघात, जन्य अथवा शराब, गांजा, सूर्य के ताप में भ्रमण आदि से या प्रसूतावस्था में हुआ हो जिसमें नींद न आती हो, उस अवस्था में इस उन्मत्त वटी का सेवन कराने से थोड़े ही दिनों में मन स्वस्थ होकर शांत हो जाता है।

नेत्र रोग : धतूरा के ताजे पत्तों का रस दुःखती आंख पर लेप करने से ललाई फट जाती है। शोथ और दाह मिट जाती है।

स्तनों की सूजन :

1. स्तनों की सूजन में, इसके पत्तों को गरम करके बांधने से आराम मिलती है।

Scanned by CamScanner

सफेद धतूरा

2. जिस स्त्री के दूध अधिक होने से, स्तन में गांठे हो जाने का भय हो, तो उसके दूध को रोकने के लिए स्तन पर धतूरे के पत्ते बांधने चाहिए।

दमा :

1. धतूरा के फल, शाखा तथा पत्तों को कूटकर और सुखाकर उसके चूर्ण का धूम्रपान करने से श्वांस रोग नष्ट हो जाता है।[3]
2. धतूरा के आधे सूखे हुए पत्तों के टुकड़ों को 4 रत्ती की मात्रा में लेकर बीड़ी पिलानी चाहिए। अगर 10 मिनट तक दमे का दौरा शांत न हो तो अधिक से अधिक 15 मिनट बाद दूसरी बीड़ी पिलानी चाहिए। यदि तब भी आराम न हो तो तीसरी बीड़ी नहीं पिलानी चाहिए। जिन्हें धतूरा अनुकूल न पड़े, उन्हें नहीं देना चाहिए।
3. धतूरा, तम्बाकू, अपामार्ग और जवांसा इन चारों चीजों को समान भाग लेकर चूर्ण बना लेना चाहिए। इसमें से 2 चुटकी चिलम में रखकर पीने से दमे का दौरा बंद हो जाता है।
4. धतूरा, काली चाय, शोरा और तम्बाकू समान भाग लेकर चूर्ण करके, इस चूर्ण की बीड़ी बनाकर पीने से दमे का दौरा रुक जाता है।

हैजा : हैजे में केवल धतूरा की केसर को बताशे में रखकर निगल जायें।

गर्भधारण :

1. इसके फलों के चूर्ण को 1/4 ग्राम की मात्रा में विषम भाग घी और शहद के साथ चटाने से गर्भधारण करने में मदद मिलती है।

गठिया :

1. धतूरा के पंचांग का रस निकालकर उसको तिल के तेल में पकाकर, जब तेल शेष रह जाये, तो इस तेल की मालिश करके ऊपर धतूरा के पत्ते बांध देने से गठिया वाय का दर्द मिट जाता है। इस तेल का लेप करने से सूखी खुजली और गठिया में लाभ होता है।
2. जोड़ों के दर्द में धतूरा के सत का आधी ग्रेन की मात्रा में तीन बार देने से लाभ होता है।
3. धतूरा के पत्रों के लेप से या इसके पत्तों की पुल्टिस से गठिया और हड्डी के दर्द में लाभ होता है।

सूजन : धतूरा के पिसे हुए पत्तों में शिलाजीत मिश्रित कर, लेप करने से अंडकोष की सूजन, पेट के अंदर की सूजन, फुफ्फुस के पर्दे की सूजन, संधियों की सूजन और हड्डियों की सूजन में बड़ा लाभ होता है।

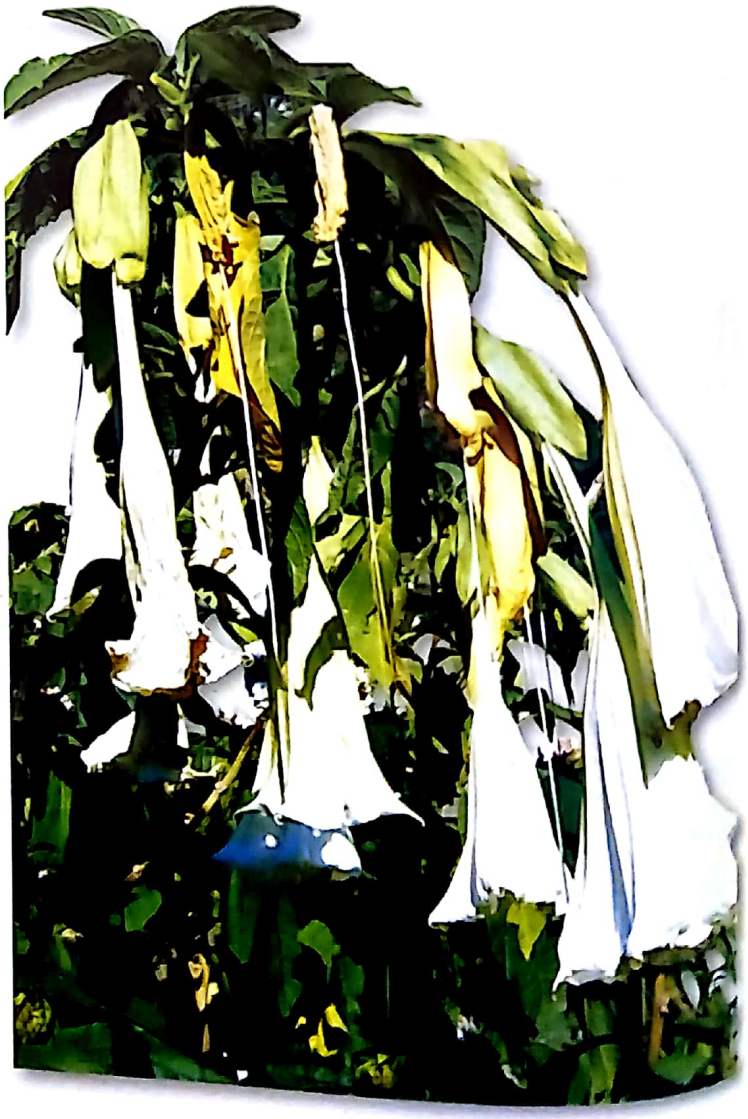

Scanned by CamScanner

काम शक्ति :

1. धतूरा के बीज, अकरकरा और लौंग इन तीनों चीजों की गोलियां बनाकर खिलाने से काम शक्ति बढ़ जाती है।
2. धतूरा के बीजों के तेल की पैरों के तलुवे पर मालिश करने के बाद स्त्री सहवास करने से बहु रतम्मन होता है।
3. धतूरा के 15 फलों को बीज सहित लेकर, पीसकर, महीन चूर्ण को 20 किलोग्राम दूध में डालकर दही जमा दें। अगले दिन दही को बिलोकर घी निकाल लें। इस घी की 125 मिलीग्राम की मात्रा पान में रखकर खाने से बाजीकरण होता है। कामेन्द्रिय पर मलने से उसकी शिथिलता दूर हो जाती है।

नारू : नारू की बीमारी में इसके पत्तों की पुल्टिस बांधने से बहुत आराम मिलता है।

ज्वर :

1. धतूरा के बीजों की राख, 125 मिलीग्राम की मात्रा में मलेरिया ज्वर के रोगियों को सुबह दोपहर शाम देने से लाभ होता है।
2. इसके बीजों के चूर्ण को 65 मिलीग्राम की मात्रा में ज्वर आने से पूर्व खिलाने से ज्वर छूट जाता है।
3. धतूरा के पत्ते, नागरबेल के पान और काली मिर्च बराबर गिनती में लेकर, पीसकर उड़द बराबर गोलियां बना लें। दिन में दो बार एक–एक गोली देने से ज्वर छूट जाता है। इसको सौंफ के अर्क के साथ लेने से पुराना प्रमेह मिटता है।

तिजारी : धतूरा के पत्तों का 5–6 बूंद रस, 25 ग्राम दही में डालकर खिलाने और ऊपर से 200 ग्राम दही पिलाने से 1 या दो बार में तिजारी चली जाती है।

बिच्छू दंश : धतूरा के पत्तों की लुग्दी, बिच्छू दंश पर लगाने से आराम मिलता है।

घाव : जिस घाव पर गहरा पीप या छिछड़े जम गये हों, उसको गुनगुने पानी की धार से धो कर दिन में 3–4 बार धतूरा के पत्तों की पुल्टिस बांधनी चाहिए।

कर्णपूय–कर्ण शोथ :

1. इसके पत्तों के रस को आग पर गाढ़ा करके, कान के पीछे की सूजन पर लगाने से आराम होता है।
2. कान में अगर मवाद बहती हो तो 8 भाग सरसों का तेल, 1 भाग गंधक, 32 भाग धतूरा के पत्रों का स्वरस मिलाकर विधिपूर्वक तेल सिद्ध करके, इसके तेल की 1 बूंद कान में सुबह–शाम डालनी चाहिए।

धतूरा तेल : धतूरा के स्वरस 400 ग्राम, धतूरा के रस में चटनी की तरह पिसी हुई हल्दी 25 ग्राम और तिल का तेल 100 ग्राम लेकर मंदी आंच पर पकायें। तेल शेष रहने से उबाल कर छान लें। यह कान के नाड़ी व्रण पर हितकारी है।

दर्पनाशक : कपास के फूल और पत्र, इनका शीत निर्यास देने से धतूरे का विष शांत हो जाता है।

दोष : अधिक मात्रा में धतूरा विष है। यह अपनी खुश्की की वजह से बदन को सुन्न कर देता है। सिर में दर्द पैदा करता है तथा पागलपन और बेहोशी पैदा कर मनुष्य को मार देता है। इसका बाह्य प्रयोग करना ही अच्छा है। अतः प्रयोग सावधानी से करना चाहिए।

1. धत्तूरो मदवर्णाग्निवातकृज्ज्वर कुष्ठनुत्।
कषायो मधुरस्तिक्तो यूकालिक्षा विनाशकः।।
उष्णो गुरुर्व्रणश्लेष्मकण्डूकृमि विषापहः।। (भाव प्रकाश)

2. धत्तूरः कटुरुष्णश्च कान्तिकारी व्रणार्तिनुत्।
त्वग्दोष कृच्छ्रकंडूतिज्वरहारी भ्रमावहः।। (ध०नि०)

3. धुस्तूर पत्र कल्केन तद्रसेन च साधितम्।
तैलअभ्यंग मात्रेण यूकां नाशयति ध्रुवम्।। (भैषज्य रत्नावली)

4. कृष्ण धुस्तूरजैः बीजैः पंचभिः पर्पटी रसः।
संप्रोज्यः प्रषमयेदुन्मादं भूतसंभवम्।। (भैषज्य रत्नावली)

5. कनकस्य फलं शाखा पत्रं संकुट्य यत्नतः।
शौषयित्वा च तद्धूमपाना च्छासो विनष्यति।। (भैषज्य रत्नावली)

Scanned by CamScanner

दूब

वैज्ञानिक नाम	:	*Cynodon dactylon* (L.) Pers.
कुलनाम	:	Poaceae
अंग्रेजी नाम	:	Conch grass, Creeping Dog's tooth grass, Brahma grass, Doob grass, Debil's grass
संस्कृत	:	अमरी, अमृता, अनंता, अनुवल्लिका, गौरी, हरसालिका, दूर्वा, शतपर्वा
हिन्दी	:	दूब, रामघास, काली घास, दूर्बा
गुजराती	:	दूर्बा, हरियाली,
मराठी	:	दूर्बा, हरियाली, हरली
बंगाली	:	दूब, दूबला, दूर्बा
तमिल	:	अरूगम–पिल्लु
तैलगु	:	धोरिचा, गोरिया गुड्डी
अरबी	:	उश्न
फारसी	:	मर्ग

परिचय

दूर्बा अर्थात हरी घास प्राणी मात्र के लिए प्रकृति का बहुमूल्य उपहार है। इस हरी–हरी मखमली घास के नैसर्गिक सौन्दर्य को देखकर जहां हृदय दिव्य आनन्द से परिपूरित हो जाता है, वहीं इस पर नंगे पांव चलने के अनेक लाभ हैं। इससे नेत्र ज्योति बढ़ती है व शरीर के अनेक विकार शांत हो जाते हैं। वर्ष भर दूब खूब फलती फूलती है। निघंटुओं में श्वेत व नील एवं भंड दूर्बा भेद दूब के तीन भेदों का उल्लेख है। श्वेत दूब वास्तव में कोई भिन्न वनस्पति नहीं है। हरी दूब ही जब श्वेत हो जाती है तो श्वेत दूब कहलाती है।

बाह्य–स्वरूप

दूब के बहुवर्षायु स्वभाव के पतले किन्तु कड़े कांड युक्त, प्रसरणशील पौधे होते हैं, जो भूमि पर चारों ओर फैलते हैं। नूतनाग्र भूमि पर आगे–आगे प्रसरण करता जाता है और पीछे–पीछे प्रत्येक पर्व से मूल निकलकर भूमि में घुसती जाती है और वायव्य कांड निकल कर नया पौधा जन्म लेता जाता है। जैसे विश्व विजय पर निकला कोई रथी पीछे सैनिक तैनात करता जाता है। पत्तियां 1–4 इंच तक लम्बी, 1/2 इंच चौड़ी रेखाकार, अग्र पर चिकनी तथा मुलायम होती है। पुष्प छोटे हरिताभ या नीलारूण होते हैं। फल छोटे–छोटे दानों के रूप में होते हैं।

रासायनिक संघटन

दूब में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट एवं रेशे पाये जाते हैं। जलाने पर 11.75 प्रतिशत भस्म प्राप्त होती है, जिसमें पोटेशियम, मैगनीशियम एवं सोडियम लवण पाये जाते हैं।

गुण–धर्म

दूब मधुर, रूचिकारक, कसैली, कड़वी, शीतल गुण वाली होती है। यह वमन, विसर्प, तृष्णा, कफ, पित्त दाह, आमातिसार, रक्त पित्त तथा खांसी को दूर करती है। गंड दूब अर्थात (गाडर दूब) शीतल लोहे को गलाने वाली, मल को रोकने वाली, हल्की, कसैली, मधुर वातकारक, पचने में चरपरी तथा तृषा–दाह–कफ–रूधिर विकार कुष्ठ, पित्त और ज्वर को दूर करने वाली है।

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

मस्तक पीडा : दूब और चूने के समभाग को पानी में पीसकर ललाट पर लेप करने से मस्तक पीड़ा मिटती है।

अपस्मार : इसके पंचांग का स्वरस, अत्यधिक मासिक धर्म, भूतोन्माद और अपस्मार में लाभकारी है। दूब के रस में सफेद चन्दन का चूर्ण और मिश्री मिलाकर पिलाने से रक्त प्रदर मिटता है।

नेत्र रोग : आंख दुःखने पर इसके पत्तों को पीसकर पलकों पर बांधने से शांति मिलती है। नेत्र मल का आना बंद हो जाता है।

नकसीर :

1. अनार के फूल के रस को दूब के रस के साथ अथवा लाक्षारस या हरड़ के साथ मिश्रित कर नस्य लेने से नासिका द्वारा प्रवृत्त त्रिदोषज रक्त पित्त रूक जाता है।
2. दूब के स्वरस की, मुनक्का, ईख के स्वरस की, गाय के दूध की, जवासा मूल के स्वरस की, प्याज के स्वरस की, दाड़िम के फूल के स्वरस की, अवपीड़ नस्य लेने से, नासिका से निकलने वाला रक्त पित्तज रक्त शीघ्र शांत हो जाता है।
3. नक्सीर में इसके पंचांग का स्वरस नाक में टपकाने से लाभ होता है।

मुखपाक : दूब के क्वाथ से कुल्ले करने से मुंह के छाले मिट जाते हैं।

पित्तज :

1. दूब का रस पिलाने पित्त जन्य वमन मिटती है।
2. दूब की चावलों के धोवन के साथ पिलाने से पित्त की वमन मिटती है।

जलोदर : दूब को काली मिर्च के साथ पीसकर दिन में तीन बार भोजन से पहले पिलाने से मूत्रवृद्धि होकर जलोदर और सर्वांग शोथ मिटता है।

अतिसार : दूब का ताजा रस संकोचक है, इसलिए यह पुराने अतिसार और पतले दस्तों में उपयोगी है।

आम अतिसार : दूब को सोंठ और सौंफ के साथ उबालकर पिलाने से आम अतिसार मिट जाता है।

गर्भपात : प्रदर रोग में तथा रक्तस्राव, गर्भपात आदि योनि व्याधियों में इसका प्रयोग करते हैं। इससे रक्त रूकता है। गर्भाशय को शक्ति प्रदान होती है तथा गर्भ को पोषण मिलता है।

पथरी : कुएं वाली दूब 30 ग्राम पानी में पीसकर, मिश्री मिलाकर सुबह–शाम पीने से मसाने की पथरी में लाभ होता है।

मूत्रविकार :

1. दूब की जड़ का काढ़ा वेदनानाशक और मूत्रल होता है, इसलिए बस्तिशोथ, सुजाक और मूत्र की जलन में यह उपयोगी है।
2. दूब को मिश्री के साथ घोंट छान के पिलाने से पेशाब के साथ खून आना बंद हो जाता है।
3. दूब को पीसकर, दूध में छानकर पिलाने से पेशाब की जलन मिटती है।

अर्श : खूनी बवासीर में इसके पंचांग को पीसकर दही में मिलाकर देने से और इसके पत्तों को पीसकर बवासीर पर लेप करने से बड़ा लाभ होता है।

रक्तपित्त :

1. दूब, भद्रश्री, लाल चन्दन, पुंडरियाका, लाल कमल, नील कमल, वानीर जल, मृणाल, मुलेठी इनका प्रयोग रक्त पित्त रोग की शांति के लिए करना चाहिए।
2. सफेद दूब को जल में पीसकर कपड़छन कर मिश्री मिलाकर पिलाने से रक्त पित्त में लाभ हो जाता है।

Scanned by CamScanner

खुजली दाद आदि :

1. दूब के चौगुने रस में सिद्ध किये हुए तेल को लगाने से दाद, खुजली और व्रण मिटते हैं।
2. दूध को हल्दी के साथ पीसकर लेप करने से भी खुजली और दाद मिटते हैं।

मलेरिया ज्वर : दूब के रस में अतीस के चूर्ण को मिलाकर, दिन में दो तीन बार चटाने से, बारी से चढ़ने वाला मलेरिया ज्वर में अत्यधिक लाभ मिलता है।

कामशक्ति ह्रास : श्वेत दूब वीर्य को कम करती है और काम शक्ति को घटाती है।

बच्चों के रोग : बड़ी–बड़ी शाखों वाली दूब जो अक्सर कुओं पर होती है। उसे पीस छानकर उसमें 2–3 ग्राम बारीक पिसे हुए नागकेसर और छोटी इलायची के दाने मिलाकर, सूर्योदय से पहले उस बच्चे को जिसका तालू बैठ गया हो, नाक में डालकर सुंघाने से तालू ऊपर को चढ़ जाती है। इसके सेवन से ताकत बढ़ती है। बच्चे दूध निकालना बंद कर देते हैं और दुबला होना बंद हो जाता है।

1. दूर्वा शीता कषाया च रक्तपित्तकफापहा। (ध०नि०)
2. दूर्बा कषायाः मधुरा च शीताः पित्ततृषारोचकवान्ति हन्त्रयः।
   सदाहमूर्च्छाग्रहभूतशांतिश्लेष्मश्रमध्वंसनतृप्तिदाश्च।।
   (रा०नि०)
3. वृक्षादनी पयस्या च लता चोत्पलसारिवा।
   यथासंख्यं प्रयोक्तव्याः गर्भस्रावे पयोयुताः।। (सुश्रुत)
4. रसो दाड़िम पुष्पस्य दूर्बारससमन्वितः।
   अलक्तकरसोपेतः पथ्यया वा समन्वितः।। (भैषज्य रत्नावली)
5. द्राक्षा रसेस्यत्तु रसस्य नस्यं क्षीरस्य दूर्बा स्वरसस्य चैव।
   यवा समूलानि पलांडुमूलं नस्यं तथा दाड़िम पुष्पतोयम्।।
6. भद्रश्रियं लोहित चन्दनं च प्रचौंऽरीक कमलोत्पले च,
   उशरिं वानरि जलं मृणालं सहस्त्र वीर्या मधुकं पपस्या।।

Scanned by CamScanner

वैज्ञानिक नाम	:	*Euphorbia thymifolia* L.
कुलनाम	:	Euphorbiaceae
अंग्रेजी नाम	:	Milk hedge
संस्कृत	:	दुग्धिका, नागार्जुनी
हिन्दी	:	दूधी, दूधियाघास
गुजराती	:	दुधेली, नानी
पंजाबी	:	दूधी, दोधक
अरबी	:	फाशरा
फारसी	:	शीरेगियाह, शीरक
मराठी	:	लाहन, नायटी

परिचय

निचली पहाड़ियों पर तथा मैदानी भागों में दूधी के स्वयंजात प्रसरण शील क्षुप पाये जाते हैं। दूधी का एक भेद भी पाया जाता है जिसे बड़ी दूधी (*Euphorbia hirta* Linn.) कहते हैं। रंग भेद से छोटी दूधी भी सफेद तथा लाल दो प्रकार की होती है। दूधी की कोमल शाखाओं को तोड़ने से सफेद दूध जैसा पदार्थ निकलता है।

बाह्य–स्वरूप

छोटी दूधी का क्षुप जमीन पर छत्ते की भांति चारों और फैला रहता है, मूल से अनेक पतली शाखाएं निकलकर चारों ओर फैल जाती है, लाल दूधी की शाखाएं लाल और सफेद की हरिताभ श्वेत होती हैं। पत्तियां सूक्ष्म, अभिमुख, पुष्प हरे या गुलाबी गुच्छों में लगते फल और बीज दोनों ही बहुत छोटे होते हैं। बड़ी दूधी का क्षुप 1–2 फुट ऊंचा होता है। पत्र अभिमुख हरित ताम्रवर्ण के एक से डेढ इंच लम्बे तथा आधा इंच से कुछ ही कम चौड़े होते हैं। फूल हरिताभ गुच्छों में लगते हैं।

रासायनिक संघटन

दूधी में एक हरितवर्ण सुगंधित तेल, जिसमें साइमोल, कार्बाक्रोल, लाइमोनिन तथा सेलिसीलिक अम्ल होते है। पत्तियों और तने में ग्लाइकोसाइड होता है।

गुण–धर्म

कफपित्तनाशक, वातवर्धक, अनुलोमन, उत्तेजक, रक्त–शोधक, कफघ्न, श्वास हर, मूत्रल, अश्मरीघ्न, आर्तवजनन, कुष्ठघ्न विषघ्न आदि।[1]

औषधीय प्रयोग

रतौंधी : छोटी दूधी के दूध से सलाई को तर करके रतौंधी के रोगी के नेत्रों में सलाई को अच्छी प्रकार फिरा दें। कुछ देर बाद नेत्रों में बहुत वेदना होगी। जो एक प्रहर के पश्चात शांत हो जायेगी, एक बार में ही रतौंधी का रोग जड़ से चला जायेगा।

गंजापन : इसके पंचाग के स्वरस तथा कनेर के पत्तों के रस को मिलाकर सिर के गंज पर घिसने से बाल सफेद होना बंद होकर गंजापन दूर होता है।

नकसीर : छाया शुष्क दूधी में बराबर की सेंगरी मिश्री मिलाकर खूब महीन चूर्ण कर लें। प्रातः सायं एक चम्मच चूर्ण गाय के दूध के साथ लेने से नक्सीर, गर्मी इत्यादि दूर होती है।

चर्मकील : चेहरे पर मुहांसों और दाद पर इसका दूध लगाने से आराम होता है।

हकलापन : दूधी की जड़ दो ग्राम की मात्रा में पान में रखकर चूसने से हकलापन दूर होता है।

Scanned by CamScanner

दुग्धवर्धन : जब किसी माता को दूध आना बंद हो जाये तो दूधी का दूध 500 मिलीग्राम से 1 ग्राम की मात्रा में 10–20 दिन प्रातः सायं पिला देने से लाभ होता है।

दमा : दमे में इसके पंचाग का काढ़ा या स्वरस 5–10 ग्राम मात्रा में मधु 1 चम्मच मिलाकर पीने से लाभ होता है।

बच्चों के दस्त : इसके पत्तों के 2 ग्राम चूर्ण या बीजों की फंकी देने से अतिसार में लाभ होता है और बच्चों के पेट के कीड़े मर जाते हैं।

अतिसार : दूधी को 10 ग्राम सुबह–शाम जल के साथ पीसकर पीने से अतिसार में लाभ होता है। कुछ दिनों तक सेवन करने से आंतों को बल मिलता है।

जलोदर : दूधी के पंचाग का अर्क, जलोदर के रोगी को पानी की जगह पिलाया जाये तो बहुत लाभ होता है।

श्वेत प्रदर : इसकी 2 ग्राम जड़ को घोंट छानकर दिन में तीन बार पिलाने से श्वेत और रक्त प्रदर मिटता है।

रक्त प्रदर : हरी दूधी को छाया में सुखाकर कूट छानकर प्रतिदिन एक चम्मच दिन में दो बार खाने से परम बाजीकरण होता है और मासिकस्राव रूक जायेगा।

मधुमेह : गुड़मार बूटी, छोटी दूधी, पारासी कयवानी, जामुन की गुठली ये चारों बूटी लेकर समभाग जल में पीसकर झाड़ी के बेर जितनी गोलियां बना लें, इसमें से दो गोली सुबह और दो गोली शाम को ताजे जल के साथ सेवन करें। परहेज, मीठी, तली, भुनी, अम्लवादी वाली वस्तुओं का परहेज रखें।

प्रवाहिका : रक्तमिश्रित प्रवाहिका तथा उदरशूल में इसके पंचाग का स्वरस 5–10 ग्राम, मधु 1 चम्मच मे मिलाकर सेवन करने से लाभ होता है।

पुरूषार्थ : दूधी को कूट छानकर इसके 2–5 ग्राम चूर्ण को 2 चम्मच शक्कर के साथ खाने से कामशक्ति बढ़ती है। छोटी दूधी प्रतिदिन उखाड़कर साफ करके 15 ग्राम की मात्रा में लेकर 6 बादाम गिरी डालकर अच्छी तरह जल के साथ घोंटकर एक गिलास मे मिश्री मिलाकर दोपहर के समय सेवन करने से गर्मी और शुक्रप्रमेह आदि दूर होकर वीर्यकोष को शक्ति प्राप्त होती है।

खुजली : ताजी दूधी या सूखी हुई दूधी 20 ग्राम लेकर बारीक पीसकर इसमें 10 ग्राम गाय का मक्खन घोल लें। इसका लेप खुजली के स्थान पर करें और चार घण्टे बाद साबुन से धो डाले। कुछ दिन के सेवन से ही सब प्रकार की खुजली दूर हो जाती है।

विस्फोटक : विस्फोटक में एरंड बीज की मींगी तथा दुग्धिका का स्वरस दोनों को महीन पीसकर विस्फोटक पर लगाना चाहिए।

सर्प विष : दूधी की 15 ग्राम पत्तियों को पीसकर 5–7 नग काली मिर्च मिलाकर सांप के काटे हुए व्यक्ति को खिलाने से सांप का विष उतर जाता है।

कांटा : शरीर में कांटा चुभ जाये तो दूधी को पीसकर लेप करने से कांटा निकल जाता है।

हानि : इसका अधिक प्रयोग हृदय के लिए हानिकारक है।

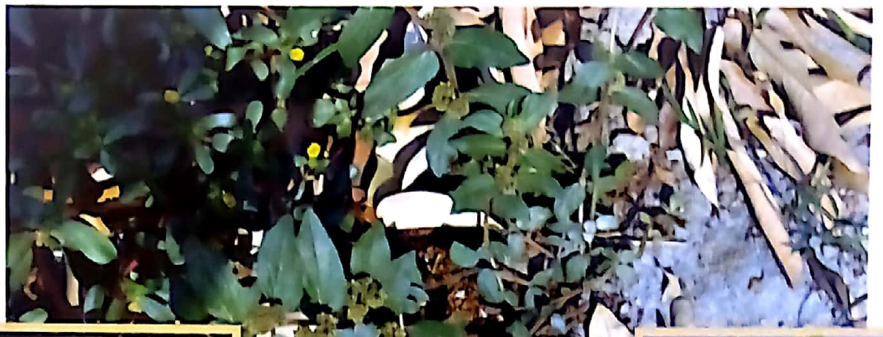

बड़ी दूधी (लाल)

छोटी दूधी (लाल)

छोटी दूधी (सफेद)

1. दुग्धिकोष्णा गुरू रूक्षा वातला गर्भकारिणी।
स्वादुक्षीरा कटुस्तिक्ता सृष्टमूत्रमलापहा।।
स्वादुर्विष्टम्भिनी वृष्या कफकोष्ठकृमिप्रणुत्।। (भाव प्रकाश)

Scanned by CamScanner

ईख

52

वैज्ञानिक नाम	:	*Saccharum officinarum* L.
कुलनाम	:	Poaceae
अंग्रेजी नाम	:	Sugar cane
संस्कृत	:	इक्षु, दीर्घच्छद, भूरिरस असिपत्र
हिन्दी	:	ईख, गन्ना
गुजराती	:	शेरडी
मराठी	:	अंस, ऊंस
बंगाली	:	उक्षुआक, इक्षुआक
तैलगु	:	चेरूकु
अरबी	:	कसबुस्सुक्कर
फारसी	:	नैशकर

परिचय

गन्ना भारतवर्ष की मुख्य फसलों में से एक है। उष्ण प्रदेशों में इसे खेती द्वारा उगाया जाता है। लाल, सफेद, काला, पौण्ड्रक मनोगुप्ता इत्यादि ईख की अनेक जातियां पाई जाती हैं।

बाह्य–स्वरूप

ईख के पौधे से सब परिचित है। इसका कांड 6–12 फुट ऊचां, गोलाकार, स्थूल एवं ग्रन्थियुक्त होता है। पत्र–चपटे 3–4 फुट लम्बे 2–3 इंच चौड़े होते है। पुष्प गुच्छ बड़ा और अनेकशाखीय होता है। वर्षा में पुष्प और शीतकाल में फल लगते है।

रासायनिक संघटन

ईख के रस में सुक्रोज, लुवाब, राल वसा एवं जल तथा ग्वानीन नामक एक जल में घुलनशील सफेद स्फटिकीय चूर्ण तथा कैल्सियम आक्जेलेट पाया जाता है।

गुण–धर्म

रक्तपित्त नाशक, बलदायक, वीर्यवर्धक, कफ कारक, पाक में तथा रस में मधुर, स्निग्ध, भारी, मूत्रवर्धक और शीतल है।[1]

बाल, युवा और वृद्ध ईख के गुण :

बाल ईख कफकारक और मेद तथा प्रमेह को उत्पन्न करने वाली है। युवा (अधपकी) ईख वातहर, मधुर, किंचित तीक्ष्ण और पित्त नाशक है तथा वृद्ध (पकी) ईख, रक्त पित्त तथा स्तन्य नाशक और बल तथा वीर्यवर्धक है।[2]

Scanned by CamScanner

गुड़ :

लघु, किंचित अभिष्यन्दी अग्निजनक पुष्टिवर्धक, मधुर, रूचिकारक, रक्त दोष निवारक, वीर्यवर्धक, हृदय के लिए हितकारी, त्रिदोषनाशक, श्रमनाशक और पथ्य है।

औषधीय प्रयोग

उदरशूल : 5 किलो ईख के रस को चिकनी मिट्टी के बरतन में भरकर मुंह कपड़ मिट्टी बांध दें। एक सप्ताह बाद खोलकर छान ले। एक महीने बाद इस रस की 10 ग्राम मात्रा में 3 ग्राम सेंधा नमक मिला, थोड़ा गरम कर पिलाने से पेट का दर्द शीघ्र ही भाग जाता है।

अरूचि : ईख के रस को धूप में या आग में तपाकर, एक उफान आने पर शीशी या चीनी मिट्टी के बरतन में भरकर रखें। एक सप्ताह बाद व्यवहार में लायें। यह उत्तम पाचक स्वादिष्ट होता है, अरूचि को दूर करता है। इसके कुल्ले करने से कंठरोध साफ हो जाता है। मात्रा 10 से 20 ग्राम।

कामला : ईख के टुकड़े कर रात्रि के समय घर के ऊपर छप्पर पर ओस में रख दें और प्रातः मुख प्रक्षालन के बाद उन्हें चूसकर रस सेवन करें। 4 दिन में ही अत्यन्त लाभ होता है।

मृत्रकृच्छ :

1. ईख के ताजे रस को भरपेट पीने से मूत्र साफ होकर सर्व मूत्र सम्बन्धी विकार दूर होते है (ईख के ताजे रस के अभाव में ईख की जड़ काम में ले सकते है)।
2. ईख की ताजी जड़ का क्वाथ 40–60 ग्राम पिलाने से मूत्र दाह आदि की शांति होती है।

क्षतजन्य कास पर : ईख के ताजा 1 किलो रस में, 250 ग्राम ताजा शुद्ध घी मिलाकर पकायें, घी मात्र शेष रहने पर, 10 ग्राम तक प्रातः– सायं सेवन करने से बहुत लाभ होता है।

तृष्णा और मूत्रकृच्छ : ईख के रस को पकाने के बाद जब रस आधा रह जाये तो ठंडा होने पर उसमें चौथाई शहद मिला, मिट्टी के बरतन में रख दें, अथवा ईख का शुद्ध ताजा रस 12 भाग, गुड़ 1 भाग और शहद 2 भाग एक साथ मिला चीनी मिट्टी के पात्र में 2 मास तक रखकर सिरका बना लें। इस सिरके को 10 से 20 ग्राम की मात्रा में जल के साथ सेवन करने से मेद रोग, ज्वर की तृष्णा और मूत्रकृच्छ्र में लाभ होता है।

मंथर ज्वर : 1 भाग आसव में 3 भाग जल मिलाकर हलके हाथों से शरीर पर लगाने से, चेचक, मसूरिका तथा मंथर ज्वर में लाभ होता है।

प्रतिश्याय : गुड़ 10 ग्राम, दही 40 ग्राम, मिर्च चूर्ण 3 ग्राम, तीनों को मिलाकर प्रातः काल तीन दिन लेने से बिगड़ा हुआ सूखा जुकाम नाक मुंह से दुर्गन्ध आना, गला पक जाना कास श्वास युक्त प्रतिश्याय नष्ट हो जाता है।

हिक्का : थोडे से गुड़ को पानी में घोलकर और उसमें थोड़ी सौंठ को घिसकर रोगी के नथुनों में टपकाने से हिक्का व मस्तक शूल मिटता है।

सिरोवेदना : 10 ग्राम गुड़ और तिल 6 ग्राम, इन्हें दूध के साथ पीसकर इसमें 6 ग्राम घी मिलाकर गरम कर सेवन करें।

गलगंड : हरड़ का चूर्ण 2–4 ग्राम फांक कर उपर से गन्ने का रस पीने से गलगंड में लाभ होता है।

स्वरभंग : गन्ने को भूभल में सेंक कर चूसने से स्वरभंग में लाभ होता है।

श्वास : गुड़ 3 से 6 ग्राम तक, समान भाग सरसों के तेल से मिलाकर सेवन करने से श्वास में लाभ होता है।

स्तन्य वृद्धि : ईख की 5–10 ग्राम जड़ को पीसकर कांजी के साथ सेवन करने से स्त्री का दूध बढ़ता है।

रक्तातिसार : ईख के रस में अनार का रस समभाग मिलाकर पीने से रक्तातिसार में लाभ होता है।

अग्निमांद्य : गुड़ के साथ थोडा सा जीरा मिलाकर सेवन करने से अग्निमांद्य, शीत और वात रोग में लाभ होता है।

रक्तार्श : रक्तार्श पर इसकी पट्टी मस्सों पर बांधने से लाभ होता है।

गर्भाशय रक्तस्राव : गर्भाशय के अत्याधिक रक्तस्राव में इस में भीगी पट्टी योनि मार्ग पर धारण करने से लाभ होता है।

मूत्रकृच्छ्र : गुड़ के साथ जौ का खार मिला, उष्ण जल के साथ सेवन करने से शर्करा, मूत्रकृच्छ्र और वातज रोगों में लाभ होता हैं।

अश्मरी : अश्मरी को निकालने के बाद रोगी को गर्म पानी में बैठा दें और मूत्र वृद्धि के लिये गुड़ को दूध में मिलाकर कुछ गर्म कर पिला दें।

वृक्कशूल : गुड़ 11 ग्राम और बुझा हुआ चुना 500 मिलीग्राम दोनों को एकत्र कर दो गोलियों बना लें, पहले 1 गोली गर्म जल से दें, यदि वेदना शांत न हो तो दूसरी गोली देवें।

प्रदर रोग : गुड़ की खाली बोरी जिसमें 2–3 साल तक गुड़ भरा रहा हो, लेकर जला डाले और भस्म को छानकर रख लें, श्वेत प्रदर और रक्त प्रदर केवल कुछ ही दिनों में प्रतिदिन प्रातः 3 ग्राम सेवन करने से ठीक हो जाता है।

वीर्यवृद्धिः गुड को आंवलों के 2–4 ग्राम चूर्ण के साथ सेवन करने से वीर्यवृद्धि, श्रमनाश, तृप्ति, रक्त पित्त, दाह, शूल और मूत्रकृच्छ का नाश होता है।

उदर्द : गुड के साथ अजवायन चूर्ण 2–4 ग्राम मिला सेवन करने से तथा पथ्यपूर्वक रहने से एक सप्ताह में रक्तज विकार विशेष कर उदर्द रोग नष्ट होता है।

कनखजुरा : कनखजुरा आदि जन्तुओं के काटने या चिपक जाने पर गुड़ को जलाकर लगावें।

Scanned by CamScanner

विविध रोग : 5 ग्राम गुड़ के साथ, 5 ग्राम अदरक या सौंठ या हरड़ अथवा पीपल इनसे से किसी एक चूर्ण को मिलाकर 10 ग्राम की मात्रा में सुबह–शाम गर्म दूध के साथ सेवन से शोथ, प्रतिश्याय, गलरोग, मुखरोग, कास, श्वास, अरूचि, पीनस, जीर्ण ज्वर, बवासीर, संग्रहणी आदि रोगों तथा कफवातज विविध अन्य विकार भी दूर हो जाते हैं।

दाह : गुड को जल में घोलकर 25 बार वस्त्र में छानकर पीने से दाह शांत होती है। ज्वर की ऊष्मा शान्ति के लिय इसे पिलाया जाता है।

कंटक शूल: कांटा, पत्थर कांच आदि के गड़ जाने पर गुड़ को आग पर रखकर गरम–गरम चिपका देने से लाभ होता है।

नलवात पर : गुड़ को धारोष्ण गाय के दूध में इतना मिलायें कि वह मीठा हो जाये और फिर खड़े–खड़े ही इसका पान करें, एक प्रहर (3 घंटे) तक बैठना नहीं चाहिये, उसी समय लाभ होता है।

मिश्री के प्रयोग:

1. मिश्री के टुकड़े के साथ एक छोटा सा कत्थे का टुकड़ा मुंह में रखकर चूसते रहने से मुंह के छाले आदि में लाभ होता है।
2. मिश्री को जल के साथ घिस कर नेत्रों में लगाने से नेत्रों की सफाई होती है तथा दृष्टिमांद्य दूर होता है।
3. मिश्री और घी मिले हुये दूध को पीना ज्वर के वेग को कम करने में अचूक औषध है।

कुछ अन्य रोगों पर विविध प्रयोग

1. ईख के रस की नस्य देने से नकसीर में लाभ होता है।
2. केवल रस का सेवन 10–20 ग्राम की मात्रा में करने से हिक्का में लाभ होता है।
3. पुराना गुड़ अदरक के साथ सेवन करने से कफ का नाश करता है।
4. ईख के शुद्ध ताजे रस के साथ जौ के सत्तू का सेवन करने से पांडु रोग में लाभ होता है।
5. ईख रस के साथ जौ की डांग या जौ की बाल पीसकर पीने से कोष्ठबद्धता में लाभ होता है।
6. ईख के रस को पकाकर, ठंडा कर पीने से अफारा मिटता है।
7. पुराना गुड़ प्रसूत सम्बन्धी विकारों को भी दूर करता है।
8. भोजन से पूर्व ईख के सेवन से पित्त का नाश होता है।
9. ईख के रस में शहद मिलाकर पीने से पित्तजन्य दाह दूर होता है।
10. ईख के रस में आँवले का रस और शहद मिलाकर सेवन करने से मूत्रकृच्छ्र मिटता है।
11. भोजन के मध्य में इसके सेवन से शरीर में अत्यन्त जड़ता आती है।
12. गुड़ की पपड़ी या गुड की चीज खाने से हृदय मजबूत होता है।
13. भोजन के बाद इसके सेवन से आहार का अच्छी तरह परिपाक होता है।
14. एक वर्ष पुराना गुड़ नवीन गुड़ की अपेक्षा अधिक गुणयुक्त होता है।
15. पुराने गुड़ को हरड़ के साथ सेवन करने से पित्त का नाश होता है।
16. पुराने गुड़ को सौंठ के साथ सेवन करने से यह समस्त वात सम्बन्धी विकारों को दूर करता है।

1. इक्षवो रक्तपित्तघ्ना बल्या वृष्या कफप्रदाः।
स्वादुपाकरसाः स्निग्धाः गुरवो मूत्रलाः हिमाः। (भाव प्रकाश)
2. बाल इक्षुः कफ कुचीन्मेदोमेहकरश्च सः।
युवातु वातहृत् स्वादु रीष तीक्ष्णश्च पित्तनुत्।
रक्त पित्तहरो वृद्धः क्षत हृद् बल वीर्यकृत।। (भाव प्रकाश)

Scanned by CamScanner

53 इलायची

वैज्ञानिक नाम	:	*Amomum subulatum* Roxb.
कुलनाम	:	Zingiberaceae
अंग्रेजी नाम	:	Greater cardamom
संस्कृत	:	बृहदेला, स्थूलैला, भद्रैला, बहुला
हिन्दी	:	बड़ी इलायची
गुजराती	:	एलचा
बंगाली	:	बड़ एलाच
मराठी	:	यालक्कि, एलक्कि
नेपाली	:	एलाच
फारसी	:	हीलकलाँ, इलायची, सुर्ख
अरबी	:	काकुले–कुबार
तेलगु	:	तेगुएलाकुलु

परिचय

इलायची के फल एवं सुगंधित कृष्ण वर्ण के बीजों से भला कौन अपरिचित हो सकता है। भारतीय पाक में यह इस तरह से रची बसी है कि इसका प्रयोग मसालों से लेकर मिष्ठानों तक में किया जाता है। इसकी एक प्रजाति, मोरंग इलायची, भी होती है। यह पूर्वी हिमालय प्रदेश में विशेषतः नेपाल, पश्चिम बंगाल, सिक्किम, आसाम आदि में पायी जाती है। छोटी इलायची का भी प्रयोग औषधीयों में होता है।

बाह्य–स्वरूप

इसका पौधा 3–4 फुट ऊंचा, पत्र 1–2 फुट लम्बे, 3–4 इंच चौड़े, दोनों पृष्ठों पर चिकने होते हैं। पुष्प मंजरी अत्यंत सघन 2–3 इंच लम्बी, पुष्प पीताभ श्वेत तथा फल 1 इंच लम्बे हरे वर्ण के बीज सान्द्र मधुर मज्जा से संसक्त रहते हैं।

रासायनिक संघटन

इसके बीजों में एक सुगंधित तेल होता हैं जिसमें सिनिओल की प्रचुर मात्रा होती है।

गुण–धर्म

यह कफ वात–शामक तथा पित्तकोपक है। यह शीतल, दीपन पाचन, पित्त–शामक और अनुलोमन है। यह हृदय को उत्तेजना देने वाली है। यह दुर्गंध–नाशक, मुखशोधक, वमनहर और वणशोधन है। यह कफ निःस्सारक व मूत्रल है। ज्वरघ्न, शीत प्रशमन तथा निषघ्न है।

औषधीय प्रयोग

शिरदर्द : इलायची पीसकर मस्तिष्क पर लेप करने से एवं बीजों को पीसकर सूंघने से सिर दर्द में आराम मिलता है।

मुखपाक : मुखपाक में इलायची पीसकर शहद में मिलाकर छालों पर लगायें।

Scanned by CamScanner

बड़ी इलायची

दंतशूल :

1. इलायची और लौंग का तेल बराबर–बराबर मात्रा में लेकर दांतों पर मलने से दंत शूल में आराम होता है।
2. 4–5 इलायची के फल को 400 मिलीलीटर पानी में उबालकर शेष बचे क्वाथ से कुल्ला करने से दंत पीड़ा में लाभ होता है।

लार का बहना : यदि अधिक थूक आता हो तो इलायची और सुपारी को बराबर–बराबर पीसकर, 1–2 ग्राम चूसते रहने से यह कष्ट दूर हो जाता हैं।

दमा : सांस की बीमारी में इलायची का 10–20 बूंद तेल मिश्री मिलाकर नियमित सेवन करें।

हिचकी : हिचकी में एक कप पानी में दो इलायची पीसकर उबालें। जब आधा पानी बचा रह जाये तो पिलायें, कष्ट तुरंत दूर होगा।

मंदाग्नि :

1. 2 ग्राम सौंफ के साथ इसके 8–10 बीजों का सेवन करने से पाचन शक्ति की निर्बलता मिटती है।
2. अधिक केले खाने पर यदि अजीर्ण हो जाये तो इलायची खाने से हाजमा ठीक हो जाता है।
3. इसके बीजों का चूर्ण और शुंठी चूर्ण दोनों की एक साथ 1 चम्मच फंकी लेने से मंदाग्नि मिटती है।

गर्भज अन्न द्वेष : इसके बीजों के चूर्ण में बराबर मात्रा में मिश्री मिलाकर 3 ग्राम की मात्रा में प्रातः–सायं सेवन करने से गर्भवती स्त्री को भूख खुलकर लगती है।

अफारा : इसके बीजों का 1 ग्राम चूर्ण काले नमक के साथ लेने से उदरशूल और आध्मान में लाभ होता है।

वमन : इलायची और पुदीना बराबर–बराबर 2–3 ग्राम की मात्रा में उबालकर सेवन करने से वमन नहीं होता।

अतिसार: इसके 1 ग्राम बीजों का चूर्ण 10 ग्राम बेल गिरी के साथ प्रातः–सायं सेवन करने से अतिसार में लाभ होता है।

मूत्रकृच्छ्र:

1. इलायची बीजों के चूर्ण में समान भाग मिश्री का बूरा मिलाकर 2–3 ग्राम की मात्रा का नियमित प्रातः–सायं सेवन करने से मूत्रकृच्छ्र मिटता है। पेशाब तुरंत खुलकर होने लगता है। यही चूर्ण किसी अन्य रोग से पैदा हुई दाह में भी लाभकारी होता है।
2. छिलकों के सहित बड़ी इलायची 10 नग लेकर जौ कूट कर 250 ग्राम दूध और 250 ग्राम जल के साथ पकावें, दूध मात्र शेष रहने पर छानकर उसमें थोड़ी मिश्री मिलाकर दिन में चार बार पिलायें। पेशाब की जलन व रूकावट दूर होती है।

नपुंसकता : इसके बीजों का चूर्ण, श्वेत मूसली और मिश्री के साथ 2–3 ग्राम की मात्रा में नियमित प्रातः–सायं सेवन करने से नपुंसकता में लाभ होता है।

स्वप्नदोष : आवंले के 20 मिलीलीटर रस में 1 ग्राम इलायची के दाने और इसबगोल बराबर–बराबर की मात्रा में मिलाकर 1–1

Scanned by CamScanner

छोटी इलायची

चम्मच सुबह–शाम सेवन करें।

पथरी : इसका चूर्ण खरबूजे के बीजों की मींगी और मिश्री मिलाकर 2–3 ग्राम की मात्रा में सेवन करने से वृक्क की अश्मरी में लाभ होता है।

यकृत विकार :

1. पिसी हुई राई के साथ इलायची का चूर्ण 2–3 ग्राम की मात्रा में नियमित लेने से यकृत के रक्त संचय आदि विकारों में लाभ होता है।
2. इलायची का 1–2 ग्राम चूर्ण का नियमित सेवन यकृत वृद्धि में उपयोगी है।

वात वेदना : वातवेदना में भी इसका 1–2 ग्राम चूर्ण का नियमित दिन में तीन बार सेवन उपयोगी है।

सूजन : इसका 2–3 ग्राम छिलका सिर दर्द, दांतों के रोग और मुख की सूजन में लाभकारी है।

ज्वर : सब प्रकार के ज्वर में इलायची के बीज 2 भाग तथा बेल वृक्ष के मूल की छाल 1 भाग का यवकूट बनाकर 1 चम्मच चूर्ण दूध और पानी में मिलाकर पकावें और केवल दूध शेष रहने पर 20 मि०ली० की मात्रा में सुबह, दोपहर तथा सायं सेवन करते हैं।

हैजा : 5–10 बूंद एला अर्क को वमन, विसूचिका अतिसार की दशा में देना लाभदायक है।

कुष्ठ : बड़ी इलायची, चित्रक मूल, कुंदरू, अडूसा की पत्ती, निशोथ, मदार की पत्ती, सौंठ इन सबके चूर्ण पलाश क्षार को गोमूत्र में घोलकर लेप बन जाने पर 8 दिनों तक पलाश क्षार की भावना देने पर इस का शरीर पर लेप कर तब तक धूप में बैठे, जब तक यह सूख न जाये। इससे शीघ्र ही मण्डल कुष्ठ फूट जाते हैं और घाव भी शीघ्र ही भर जाते हैं।[2]

1. स्थूला कटुका पाके रसे चानलकृल्लघुः।
रूक्षोष्णा श्लेष्मपित्तास्रकण्डूश्वासतृषाऽपहा।।
हृल्लासविषबस्त्यास्यशिरोरुग्वमिकासनुत्। (भाव प्रकाश)

2. भद्रैला कटुका पाके रसे पिताग्निकृल्लघुः।
रूक्षोष्णा रोचनी श्वासकासवातास्रश्लेष्महा।।
हन्तिहृल्लासतृट्कण्डूशिरोबस्त्यास्यरुग्वमीः।। (कै०नि०)

3. चित्रकमेलां बिम्बी वृषकं त्रिवृदर्कनागरकम्।
चूर्णीकृतमष्टाहं भावयितव्यं पलाशस्य।।
क्षारेण गवां मूत्रप्लुतेन तेनास्य मण्डलान्याशु।
भिद्यन्ते विलयन्ति च लिप्तान्यर्काभितप्तानि।। (चरक)

Scanned by CamScanner

अरंड

54

वैज्ञानिक नाम	:	*Ricinus communis* L.
कुलनाम	:	Euphorbiaceae
अंग्रेजी नाम	:	Castor oil plant
संस्कृत	:	गन्धर्वहस्त, वर्धमान व्याघ्रपुच्छ, उत्तानपत्रक
हिन्दी	:	अरंड, अंडी
गुजराती	:	एरंडो, दिवेलिगो
मराठी	:	एरंडी
बंगाली	:	भेरेंडा
मलयालम	:	अमन वक्कु
फारसी	:	वेद अंजीर
अरबी	:	खिर्वअ

परिचय

एक वर्षीय या बहुवर्षीय वृक्ष, कृषिजन्य या वन्यज 600 फुट की ऊंचाई तक पाये जाते हैं। इसके बीजों की मींगी से जो तेल प्राप्त होता है वह एक निरापद रेचन है। कोष्ठशुद्धि के लिये यह एक परमोपयोगी औषधि है। इसके साथ ही यह उत्तम वात–नाशक औषधि है। वात प्रकोप से उत्पन्न कब्ज में, तथा वात व्याधियों में कम मात्रा में इसका उपयोग औषधि के रूप में भी कर सकते है। अर्श, भगंदर तथा गुदभ्रंश के रोगियों में एरंडपाक के सेवन से बिना जोर लगाये पाखाना साफ होता है, जिससे रोगी को उक्त व्याधियों से होने वाले दैनिक कष्ट से मुक्ति मिल जाती है। औषधि कर्म के साथ ही यह पोषण का भी कार्य करता है। एरण्ड रक्त और श्वेत दो प्रकार का होता है। जिन वृक्षों के बीज बड़े होते हैं उनका तैल जलाने के काम आता है, और जिनके बीज छोटे होते है, उनका तेल औषधि में प्रयोग किया जाता है।

बाह्य–स्वरूप

इसका वार्षिक पौधा 8 से 15 फुट ऊंचा, पतला, लम्बा, स्निग्ध होता है। काण्ड स्निग्ध, हरित सफ़ेद शाखायें, हरापन लिये श्वेत रंग की मध्यम आकार की, दंडाकृति, पत्र चौडे 7 से 11 फांक युक्त, पत्र दंड प्रायः एक फिट लम्बा और पोला। पुष्प एक लिंगी, लाल बैंगनी रंग के फल कंटक युक्त फलों के ऊपर हरे रंग का आवरण होता है। प्रत्येक फल में 3 बीज होते है, बीजत्वचा कठोर, श्याम अरूणाभ अथवा श्याम श्वेत होते है। बीज मज्जा श्वेत स्निग्ध।

Scanned by CamScanner

रासायनिक संघटन

इसमें स्थिर तेल, मांससार, और सूत्रों के अतिरिक्त एमाइलेज, इनवर्टेज तत्व पाया जाता है। इसके अतिरिक्त, बीजावरण पत्र तथा कांड में अवस्थित राइसिनिन नामक एक मंद विषाक्त, जल में घुलनशील द्रव्य पाया जाता है। तेल में मुख्यतः राइसिन औलिक अम्ल होता है।

गुण–धर्म

कफवात शामक, पित्त वर्धक, शोथहर, वेदना स्थापन, अगंमर्दप्रशमन, भेदन, स्नेहन, कृमिनिःसारक, कफघ्न, मूत्रविशोधन, स्तन्यजनन एवं शुक्र तथा गर्भाशय शोधन, कुष्ठघ्न, ज्वरघ्न आदि।[1]

एरंड तेल :

स्रोतों का शोधन करने वाला, त्वचा के लिये हितकारी, वृष्य, वयस्थापन, शुक्रशोधन, योनिशोधन, वातहर और कफहर है।[2]

औषधीय प्रयोग

नेत्र विकार :

1. एरंड तेल के अंजन से नेत्रों में जल स्त्राव होता है, इसलिये इसे नेत्र विरेचन कहते है। एरंड तेल 2 बूंद नेत्रों में डालने से, इनके भीतर का कचरा निकल जाता है और आंखों की किरकरी बन्द हो जाती है। कुकूणक रोग में उसकी तीक्ष्णता भी कम होती है।
2. एरंड पत्रों की जौ के आटे के साथ पुल्टिस बनाकर आँखों पर बांधने से आंखों पर आई पित्त की सूजन बिखर जाती है।

स्तन ग्रंथि : जब किसी स्त्री के दूध आना बन्द हो जाता है और स्तनों में गांठे पड़ जाती है, तब एरंड के 500 ग्राम पत्तों को 20 लीटर जल में घंटे भर उबाले, तथा गरम पानी की धार 15–20 मिनट स्त्री के स्तनों पर डाले, एरंड तेल की मालिश करें, उबले हुये पत्तों को महीन पुल्टिस स्तनों पर बांधे। गांठे बिखर जायेगी और दूध का प्रवाह पुनः प्रारम्भ हो जायेगा।

स्तन चुचुक विदारण :

1. चुचुक के चारों और की त्वचा फट जाने पर एरंड तेल लगाने से तुरन्त लाभ होता है।
2. तीन एरंड बीजों गिरी की सिरके में पीसकर स्तन पर लगाने

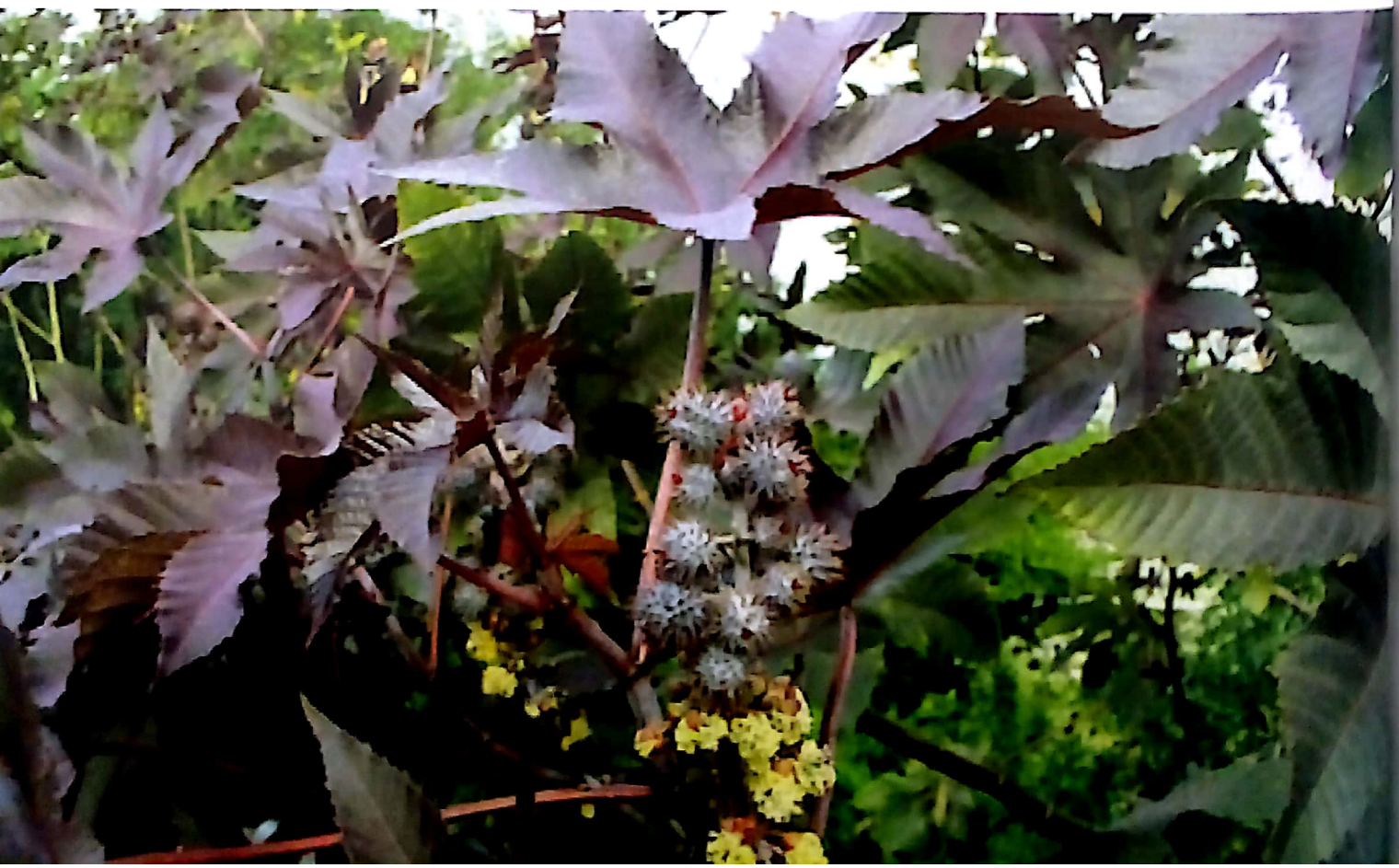

Scanned by CamScanner

स्तन की शोथ उतर जाती है।

कामला :

1. गर्भवती स्त्री को यदि कामला हो जाये और शुरूआती अवस्था हो तो, एरंड के पत्तों का 10 ग्राम रस प्रातः काल पांच दिन पिलाने से कामला दूर हो जाता है। सूजन भी दूर हो जाती है।
2. एरंड पत्रों के 5 ग्राम रस में पीपल का चूर्ण मिला के नस्य देने से या अंजन करने से कामला रोग मिटता है।
3. एरंड की जड़ का रस 6 ग्राम, दूध 250 ग्राम में मिलाकर पिलाने से कामला रोग मिटता है।
4. एरंड की जड़ के 80 मि०ली० क्वाथ में 2 चम्मच मधु मिलाकर चाटने से लाभ होता है।

कास : एरंड पत्र का क्षार 3 ग्राम, तेल एवं गुड़, समान भाग मिलाकर चटाने से खांसी दूर हो जाती है।

उदर रोग :

1. एरंड के बीजों की मींगी पीसकर, गाय के चौगुने दूध में पकायें, जब खोवा की तरह हो जाये तो उसमें 2 भाग खांड मिलाकर या चीनी की चाशनी बनाकर अवलेह बना लें। प्रतिदिन 15 ग्राम खाने से पेट की वायु मिटती है।
2. जीर्ण उदर वेदना में रोज रात्रि को सोने के समय 125 ग्राम गरम जल में एक नींबू का रस निचोड़, एरंड तेल डाल कर पीने से कुछ समय में जीर्ण उदर शूल दूर हो जाता है।

प्रवाहिका : आंव और रक्त गिरता है तो आरम्भ में ही 10 ग्राम एरंड तेल देने से आम का प्रकोप कम हो जाता है, और खून का गिरना भी कम हो जाता है।

एपैन्डिक्स (उण्डुकपुच्छ शोथ) : इस रोग के प्रारम्भ में ही एरंड तेल 5 से 10 ग्राम की मात्रा में प्रतिदिन देने से शल्य क्रिया की आवश्यकता नहीं रहती।

उदर कृमि : एरंड के पत्तों का रस नित्य 2–3 बार बच्चे की गुदा में लगाने से बच्चों के चुन्ने मर जाते हैं।

वादी की पीडा : एरंड और मेंहदी के पत्तों को पीसकर लेप करने से बादी की पीड़ा मिटती है।

प्लीहोदर : इसके पंचाग की 10 ग्राम राख को 40 ग्राम गौमूत्र में मिलाकर पिलाने से प्लीहोदर मिटता है।

अर्श :

1. एरंड के पत्तों के 100 ग्राम क्वाथ में घृतकुमारी का स्वरस 50 ग्राम मिलाकर प्रातः सायं सेवन करने से लाभ होता है।
2. एरंड तेल और घृत कुमारी का स्वरस मिलाकर मस्सों पर लगाने से जलन शान्त हो जाती है।
3. मस्से और गुदा की त्वचा फट जाने पर प्रतिदिन रात्रि को एरंड तेल देने से बहुत लाभ होता है।

पेट की चर्बी : पेट पर चढ़ी हुई चर्बी को उतारने के लिये हरे एरंड की 20 से 50 ग्राम मूल को धोकर कूटकर 200 ग्राम पानी में पकाकर 50 ग्राम शेष रहने पर पानी को प्रतिदिन पीने से पेट की चर्बी उतरती है।

प्रसव कष्ट : प्रसव काल में कष्ट कम हो सके इसके लिये गर्भवती स्त्री को 5 मास बाद, एरंड तेल का 15–15 दिन के अन्तर से

हलका जुलाब देते रहें। प्रसव के समय 25 ग्राम एरंड तेल को चाय या दूध में मिलाकर देने से प्रसव शीघ्र होता है।

योनिशूल, गर्भाशय शोथ :

1. एरंड तेल में रूई का फोहा भिगो कर योनि में धारण करने से योनिशूल मिट जाता है।
2. गर्भाशय शोथ प्रायः प्रसव पश्चात् होता है। इसमें रुग्णा को बहुत तेज ज्वर होता है। ऐसी अवस्था में एरंड के पत्तों के वस्त्रपूत स्वरस में उम्दा शुद्ध रूई का फोहा भिगोकर योनि में रखने से आराम होता है।

मासिक धर्म : एरंड के पत्तों को गर्म कर पेट पर बांधने से मासिक धर्म ठीक से होने लगता है।

अण्डकोष वृद्धि : 10 ग्राम एरंड तेल को 3 ग्राम गुग्गुलु और 10 ग्राम गौमूत्र के साथ सुबह–शाम पीने से एवं वेदना स्थान पर एरंड पत्र गरम कर बांधने से पीड़ा शीघ्र मिटती है।

वृक्कशूल : इसकी मींगीं का पीसकर, गरम लेप करने से गुर्दे की वात पीड़ा व शोथ में लाभ होता है।

कामेन्द्रिय की कमजोरी : इसके बीज और तिल का तेल दोनों को समभाग लेकर पकाकर नित्य मूत्रेन्द्रिय पर मालिश करने से मूत्रेन्द्रिय की कमजोरी मिटती है।

गृध्रसी : एरंड के बीज की गिरी 10 ग्राम, को दूध में पकाकर खीर बनाकर खिलाने से गृध्रसी, कटिशूल आमवात में लाभ होता है एवं इससे कोष्ठवद्धता में भी लाभ होता है।

वातरक्त : वातरक्त में एरंड का 10 ग्राम तेल एक गिलास दूध के साथ सेवन करना चाहिये।

रक्त के रोग : एरंड की मींगी 1 नग, दूध 125 ग्राम , जल 250 ग्राम, औंटावें, दूध मात्र शेष रहने पर 10 ग्राम खांड या मिश्री डालकर पिला दें, इस प्रकार 1 गिरी से शुरू करके, सात दिन

Scanned by CamScanner

अरंड की जड़

तक 1–1 गिरी बढ़ाकर घटाये। 1 गिरी पर लाने से रक्त के रोग मिटते हैं। यह प्रयोग अत्यन्त वात शामक भी है।

विषनाशक :

1. एरंड के पत्तों का 100 ग्राम रस पिलाकर वमन कराने से सांप तथा बिच्छू के विष में लाभ होता है। इसी प्रकार अफीम तथा दूसरी तरह के जहर में भी इससे लाभ होता है।
2. इसके 20 ग्राम फलों को पीस छान के पिलाने से अफीम का विष उतरता है।

नहरूबा : इसके पत्तों को गरम कर बांधने से नहरूबे की सूजन उतर जाती है।

नाडी व्रण : इसकी कोमल कोंपलों को पीसकर लेप करने से नाड़ी व्रण मिटता है।

शय्याक्षत (Bed Sore) : एरंड तेल लगाने से शय्याक्षत बड़ी जल्दी मिटते है। बच्चों के उल्टी दस्त और बुखार में एरंड तेल से लाभदायक कोई और वस्तु नहीं है।

चर्म रोग : इसकी जड़ 20 ग्राम को 400 मिलीलीटर पानी में काढ़ा बनाकर 100 मिलीलीटर शेष रहने पर उसे पिलाने से चर्म रोगों में लाभ होता है।

दुष्ट व्रण : बिगड़े हुये घाव और फोड़ो पर इसके पत्तों को पीसकर लगाने से वे अच्छे हो जाते है।

वात प्रकोप और वात शूल :

1. एरंड के बीजों को पीसकर लेप करने से छोटी सन्धियों और गठिया की सूजन मिटती है।
2. वात रोग में एरंड तैल उत्तम गुणकारी है कटिशूल, गृध्रसी, पार्श्वशूल, हृदय शूल, कफजशूल आमवात और सन्धिशोथ, इन सब रोगों में एरंड मूल 10 ग्राम और सौंठ का चूर्ण 5 ग्राम का क्वाथ बना कर सेवन करना चाहिये तथा वेदना स्थल पर एरंड तेल की मालिश करनी चाहिये।

विद्रधि : इसकी जड़ को पीसकर घी या तेल में मिला कुछ गरम कर गाढ़ा लेप करने से विद्रधि मिटती है।

सूजन : किसी प्रकार की सूजन, आमवात इत्यादि में एरंड के पत्तों को गरम कर तेल चुपड़ कर बांधने से लाभ होता है।

दाह : ज्वर में होने वाले दाह में एरंड के पत्र धोकर साफ कर शरीर पर धारण कराने से दाह नष्ट हो जाती है।

तिल मस्से : पत्र के वृन्त पर थोड़ा चूना लगा तिल पर बार–बार घिसने से तिल निकल जाता है।

पित्तजगुल्म : पित्तजगुल्म एवं पैत्तिक शूल में यष्टिमधु के 50 ग्राम क्वाथ में एरंड तैल 5–10 मिलीलीटर मिलाकर पिलाने से लाभ होता है।

विशेष : लाल एरंड का तेल 5 से 10 ग्राम की मात्रा में गर्म दूध के साथ लेने से योनिशूल, गुल्म, वातरक्त, हृदय रोग, जीर्णज्वर, कटि, पृष्ठ और कोष्ठशूल को मिटाता है। बुद्धि, कान्ति, आरोग्यता, स्मृति, बल और आयु को बढ़ाता है और हृदय को बलवान करता है।

हानिकारक : लाल एरंड के बीस बीजों की गिरी नशा पैदा करती है और ज्यादा खाने से बहुत वमन होता है एवं घबराहट या मूर्छा तक भी हो सकती है। यह आमाशय के लिये अहितकर होता है।

निवारण : कतीरा और मस्तगी

प्रतिनिधि द्रव्य : जमालघोटा

Scanned by CamScanner

ईसबगोल

वैज्ञानिक नाम	:	*Plantago ovata* Forsk.
कुलनाम	:	Plantaginaceae
अंग्रेजी नाम	:	Spogel seeds
संस्कृत	:	ईषद्गोल, अश्वकर्ण बीज, स्निग्ध जीरक
हिन्दी	:	ईसबगोल
गुजराती	:	ऑथर्मा, जीरु
मराठी	:	इसबगोंल
पंजाबी	:	इसपगोल
फारसी	:	अस्पगोल
तैलगु	:	हस्पगुल, इसपगोल विटुलु
अरबी	:	बज्कतूना

परिचय

ईसबगोल का मूल उत्पत्ति स्थान फारस है और यहीं से इसका हिन्दुस्तान में आयात किया जाता है। आजकल यहां पर भी इसकी खेती गुजरात, उत्तर प्रदेश, पंजाब और हरियाणा में की जाती है। औषध्यार्थ प्रयोग में इसके बीज और बीजों की भूसी प्रयुक्त की जाती है।

बाह्य–स्वरूप

इसका 1–3 फुट ऊंचा पौधा, मौसमी, कांड रहित या झाड़ीनुमा होता है। पत्र 3 शिराओं से युक्त अखंड, 6–9 इंच तक लम्बे, पुष्प दंड गेहूं की बाल सदृश जिस पर छोटे–छोटे फूलों में नाव के आकार के बीज लगते हैं, जिनके ऊपर सफेद भूसी होती है। भूसी पानी के संपर्क में आते ही चिकना लुआव बना लेती है जो गंध रहित और स्वादहीन होती है।

रासायनिक संघटन

बीजों में काफी मात्रा में म्युसिलेज तथा एल्बुमिन तत्व पाये जाते हैं। भूसी में प्रधानतया म्यूसिलेज तथा सैल्यूलोज पाया जाता है।

गुण–धर्म

स्नेहन एवं मादर्व कारक, अतिसार, प्रवाहिका नाशक, भूसी बल्य एवं मृदुसारक। ईसबगोल अत्यंत पुष्टिकारक, मधुर, ग्राही व शीतल है। चिकना, कसैला, कुछ वातकारक व पित्त तथा कफ–नाशक है। रक्त अतिसार व रक्त पित्त नाशक है।[1]

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

प्रतिश्याय :

1. पित्त प्रकृति के प्रतिश्याय में इसका लुआब निगलने से बहुत लाभ होता है।
2. कफ और प्रतिश्याय में ईसबगोल का क्वाथ पीने से लाभ होता है।

मस्तक पीड़ा : इसको यूकेलिप्टस के पत्तों के साथ पीसकर कनपटियों पर लेप करने से मस्तक पीड़ा मिटती है।

कर्णशूल : इसके 10 ग्राम लुआब में प्याज का रस 10 ग्राम मिलाकर कुछ गर्म करके कान में डालने से कान की पीड़ा मिटती है।

मुखपाक : इसके लुआब से कुल्ले करने से मुखपाक मिटता है।

दंतपीड़ा : इसको सिरके में भिगों कर दांतों के नीचे दबाकर रखने से दंत पीड़ा दूर होती है।

दमा–श्वास : ईसबगोल के 3–5 ग्राम बीजों को गर्म जल से प्रातःकाल सेवन करने से श्वांस व दमे में लाभ होता है।

उदर रोग :

1. जीर्ण आम अतिसार, रक्त अतिसार में ईसबगोल की भूसी 2 चम्मच को दही के साथ दिन में 2–3 बार सेवन करें।
2. ईसबगोल के बीजों की 1 किलो पानी में उबाले जब आधा पानी शेष रह जाये तो तीन खुराक बनाकर दिन में तीन बार देने से हर प्रकार के पेचिश, मरोड़, अतिसार इत्यादि में लाभ होता है।
3. इसके स्वच्छ बीजों को पानी में डालकर जब उनका लुआब बन जाता हैं तब इस लुआब में शक्कर डालकर पीने से एमेबिक डीसेन्ट्री, जीर्ण आम अतिसार, अतिसार, पतले दस्त, मरोड़ सब में फायदा होता है।
4. बालकों के चिरकालीन अतिसार में इसका प्रयोग बहुत लाभदायक है।
5. आंतों की दाह, शोथ को मिटाने के लिए, साबुत बीजों को या भुस्सी 10 ग्राम को ठंडे जल के साथ फंकी देनी चाहिए या उनको थोड़े जल में भिगोकर फूल जाने पर निगलवा देना चाहिए।
6. ईसबगोल के बीजों को भूनकर फंकी लेने से भी अतिसार और आम अतिसार मिटता है।

कब्ज :

1. एक से दो चम्मच की मात्रा में ईसबगोल की भूसी रात्रि में सोते समय गरम दूध के साथ लेने से कब्जियत दूर होती है।
2. ईसबगोल की भूसी व त्रिफला चूर्ण बराबर मात्रा में मिलाकर लगभग 3 से 5 ग्राम तक रात्रि को गर्म जल से सेवन करने से सुबह मल साफ होता है। उदरशोथ व पित्त विकारों में भी यह एक अनुभूत व निरापद प्रयोग है।

रक्तार्श : इसका शर्बत पिलाने से रक्तार्श का रूधिर जाना बंद हो जाता है।

तृषा : इसके लुआब में गुडहल का शरबत मिला कर पिलाने से तृषा मिटती है।

अमीबिक पेचिश : अमीबिक पेचिश में 100 ग्राम ईसबगोल की भूसी में 50–50 ग्राम सौंफ और मिश्री मिलाकर, 2–3 चम्मच की मात्रा में दिन में 2–3 बार सेवन करें।

मूत्र विकार :

1. जब मूत्र बंद हो जाये या मूत्रदाह या मूत्राशय में दाह होती हो तो चार चम्मच भूसी को 1 गिलास पानी में भिगो दें और थोड़ी देर बाद उसमें मिश्री स्वादानुसार डालकर पीने से मूत्रकृच्छ्र की पीड़ा दूर होती है।
2. शीतल मिर्च 2 ग्राम और कलमी शौरे 500 मिलीग्राम के साथ इसकी फंकी मूत्रकृच्छ्र में बहुत लाभदायक है।

स्वप्नदोष : ईसबगोल और मिश्री बराबर मिलाकर एक–एक चम्मच आधा गिलास दूध के साथ सोने से एक घण्टा पूर्व सेवन करें और सोने से पहले मूत्र त्याग कर सोने से स्वप्नदोष नही होता है।

गठिया : जोड़ों के दर्द में ईसबगोल की पुल्टिस बांधने से लाभ होता है।

कांच निगलने पर : ईसबगोल की भूसी दो चम्मच की मात्रा में दूध के साथ दिन में 2–3 बार देने से लाभ होता है।

हानिकारक : नाड़ी दौर्बल्यकारक एवं क्षुधानाशक है। यह औषधि प्रसूता के लिए हानिकारक है। इसके बीजों को पीसना नहीं चाहिए।

निवारण : सिकंज बीज एवं शहद।

1. ईषद गोलं परं वृष्यं ग्राहि शीतलम्।
   पिच्छिलं तुवरं किंचद्रातकृत कफ पित्तह्यत।।
   रक्ताहिसारास्त्रं पितं च नाशयेदिति कीर्तितम्
   (भाव प्रकाश)

Scanned by CamScanner

गाजर

56

वैज्ञानिक नाम	:	*Daucus carota* L. var. *sativa* DC.
कुलनाम	:	Apiaceae
अंग्रेजी नाम	:	Carrot
संस्कृत	:	गार्जर, पिंडमूल
हिन्दी	:	गाजर
गुजराती	:	गाजर, शर
मराठी	:	गाजर, रोही मूल
पंजाबी	:	गाजर
तेलगु	:	गज्जर गड्डा, गृज्जन
अरबी	:	ज्यजर
फारसी	:	जरदकगज्य, जर्दक

परिचय

गाजर से सब परिचित हैं। गाजर की केवल तरकारी ही नहीं, इससे अनेक व्यंजन बनाये जाते हैं, गाजर का हलवा, गाजर का अचार, मुरब्बा पाक आदि। गाजर वन्यज और कृषिजन्य दो प्रकार की होती है। रंग भेद से भी यह लाल, पीली, काली, आदि अनेक तरह की होती है।

बाह्य–स्वरूप

इसका क्षुप अनेक शाखा युक्त, एक से चार फुट ऊंचा होता है। पत्ते–पक्षवत अनेक भागों में विभक्त, फल 1/8 लम्बे एवं रोमश, मूल 2–12 इंच लम्बा एवं मांसल, इसके अनेक प्रकार के रंग व आकार होते हैं।

रासायनिक संघटन

गाजर में प्रोटीन, वसा, कार्बोहाइड्रेट, रेशे, खनिज तत्व, कैल्शियम फास्फोरस, लौहा इत्यादि पाये जाते हैं। इसमें विटामिन ए, बी, सी तथा विटामिन बी समूह के थायमिन, रीबोफ्लोविन तथा निकोटीनिक अम्ल पाये जाते हैं। इसके बीजों में एक उड़नशील तेल पाया जाता है।

गुण–धर्म

तीक्ष्ण, मधुर, कड़वी, गरम, अग्निदीपन करने वाली, हल्की ग्राही और रक्तपित्त, बवासीर, संग्रहणी, कफ तथा वातनाशक है।[1]

Scanned by CamScanner

राजनिघण्टु के मत में गाजर मीठी, रूचिकारक, किंचित चरपरी, अफारा दूर करने वाली कृमिघ्न तथा दाह–शूल पित्त और तृषा शामक है।[2]

जंगली गाजर : चरपरी, उष्ण, कफ, वात नाशक, दीपन, हृद्य, रूचिकारक, कुष्ठ, अर्श, शूल दाह, दमा और हिचकी में लाभकारी है।

बीज : इसके बीज स्नायु मंडल के लिए पौष्टिक है।

औषधीय प्रयोग

नेत्र ज्योति : 250 ग्राम सौंफ को साफ करके कांच के पात्र में रखे, इसमें बादामी रंग की गाजरों के रस की तीन भावना दें, जब सूख जाये तो 10 ग्राम रोज रात के वक्त दूध के साथ सेवन करने से नेत्रों की ज्योति बढ़ती है।

कुंजारोग : गाजर के महीन छिलकों को पीसकर आंखों में अंजन करने से कुंजा रोग मिटता है।

आधाशीशी : गाजर के पत्तों को घी से चुपड़कर गर्म करके उनका रस निकालकर 2–3 बूंदे नाक और कान में डालें, छीकें आकर आधाशीशी की वेदना जाती रहेगी।

हृदय रोग :

1. 5–6 गाजर को अंगारों में पकाये या कच्ची ही छीलकर रात भर बाहर ओस में रखी रहने दें। प्रातःकाल केवड़ा या गुलाब अर्क तथा मिश्री मिलाकर खाने से हृदय की धड़कन सामान्य हो जाती है।
2. गाजर को कद्दूकस कर दूध में उबालें, जब गाजर गल जाये तो शक्कर मिलाकर खाने से हृदय को शक्ति मिलती है।
3. गाजरों को साफ करके छोटे–छोटे टुकड़े करके शहद मिले जल में उबालें, जब गाजर कुछ नरम हो जायें तो निकालकर कपड़े पर फैलाकर कुछ खुश्क कर लें, फिर केवल शहद में उबालकर एकतार चाशनी बनायें और बरतन में रखे, इसमें एक किलोग्राम मुरब्बे में 1–2 ग्राम दालचीनी, सौंठ, इलायची, केशर, कस्तूरी तथा जायफल डाल दें। 40 दिन बाद इस मुरब्बे का सेवन 20 से 40 ग्राम तक करें, यह दिल की कमजोरी और उन्माद के लिए अति उत्तम है। यह मुरब्बा अत्यंत कामोत्तेजक है, जलोदर में भी लाभदायक है।
4. गाजर को कद्दूकस कर दूध में उबालकर खीर की तरह खाने से दिल को ताकत मिलती है, खून की कमी मिटती है।

Scanned by CamScanner

उरःशूल : गाजर को भाप में उबालकर, उसमें 10 ग्राम रस निकाले अब इसमें 20 ग्राम शहद मिलाकर पीने से छाती की पीड़ा दूर होगी।

खांसी : गाजर के स्वरस में मिश्री मिलाकर चटनी सी बना लें, अब इसमें काली मिर्च बुरककर चटाने से खांसी में लाभ होता है। कफ आराम से निकल जाता है।

अतिसार : अतिसार में गाजर का 10–20 ग्राम तक रस आवश्यकतानुसार पीने से लाभ होता है।

रक्तार्श : खूनी बवासीर में रक्त अगर अधिक गिरता हो तो दही की मलाई के साथ गाजर का 10–20 ग्राम रस पीने से लाभ होता है।

अर्श : अनारदाना या खट्टे अनार के रस तथा दही के साथ पकाया हुआ गाजर का शाक अर्श में लाभकारी होता है।

मासिक धर्म :

1. गाजर का क्वाथ सुबह–शाम पीने से गर्भाशय से दूषित पदार्थ निकालकर वह शुद्ध हो जाता है। कुछ दिन सेवन करने से मासिक धर्म ठीक प्रकार से होने लगता है और उस समय होने वाला कष्ट भी मिट जाता है।
2. 20 ग्राम गाजर के बीज, सोया, मूली, प्याज, पालक, बथुआ, मैथी, अजवायन इन सबके बीज 3–3 ग्राम, धमासा, कुटकी, बैंगन, इन्द्रायन, उलट कंबल तथा ऊंटकटारा इन सबकी जड़ 3–3 ग्राम तथा बांस की लकड़ी का चूरा तीन ग्राम, इसमें 20 ग्राम गुड़ मिलाकर एक किलोग्राम पानी में क्वाथ करें। 100 ग्राम शेष रहने पर इसकी 3 मात्रा स्त्री को तीन बार पिलाने से कष्टार्तव, मूढ़गर्भ और गर्भाशय के अन्दर का सब परिस्राव बाहर निकल कर गर्भाशय शुद्ध हो जाता है।

गर्भाशय शुद्धि : जंगली गाजर को कद्दूकस करके इसके रस में कपड़े को तर करके योनि में रखने से गर्भाशय शुद्ध हो जाता है।

प्रसव कष्ट :

1. प्रसव के समय कष्ट को कम करने के लिए गाजर के 10 ग्राम बीज और उसके 100 ग्राम पत्तों का काढ़ा बनाकर पिलाने से प्रसव कष्ट कम होता है।
2. योनि में इसके बीजों की धूनी देने से भी कष्ट कम होता है।

सूजन : सूजन से पीड़ित रोगी को गाजर की तरकारी खिलानी चाहिए।

पित्तशोथ : गाजर की पुल्टिस में नमक डालकर बांधने से वह पित्त शोथ उतर जाती है जिसमें फुन्सियां हो जाती हैं।

दग्ध : गाजर को उबालकर, पीसकर जले हुए स्थान पर लेप करने से दाह मिटती है।

व्रण:

1. बिगड़े हुए फोड़ों पर गाजर की पुल्टिस बांधने से वे ठीक हो जाते हैं।
2. गाजर को उबालकर पीस ले, इस लेप को पूय युक्त दुर्गन्धित व्रणों पर बांधने से व्रण अतिशीघ्र स्वच्छ हो जाते हैं।

अचार : गाजर का सिरके में डाला हुआ अचार यकृत और प्लीहा वृद्धि को मिटाता है। अगर कुछ हानि करे तो प्रयोग बंद कर दें।

1. गाजरं मधुरं तीक्ष्णं तिक्तोष्णं दीपनं लघु।
संग्राहि रक्तपित्तार्शो ग्रहणी कफ वात जित्।। (भाव प्रकाश)

2. गाजरं मधुरं रूच्यं किंचित कटुकफापहम्।
आध्मान् कृमिशूलघ्नं दाह पित्त तृषापहम्।। (रा०नि०)

Scanned by CamScanner

57 गंभारी शिवण

वैज्ञानिक नाम	:	*Gmelina arborea* Roxb.
कुलनाम	:	Verbenaceae
संस्कृत	:	गंभारी, श्रीपर्णी, मधुपर्णिका काश्मरी, पीतरोहिणी
हिन्दी	:	गंभारी, गंभार
गुजराती	:	शीवसा, शीवण
मराठी	:	शिवरा, शिवण
बंगाली	:	गाभार
तमिल	:	गुमादि
तेलगु	:	पद्मगोमरू

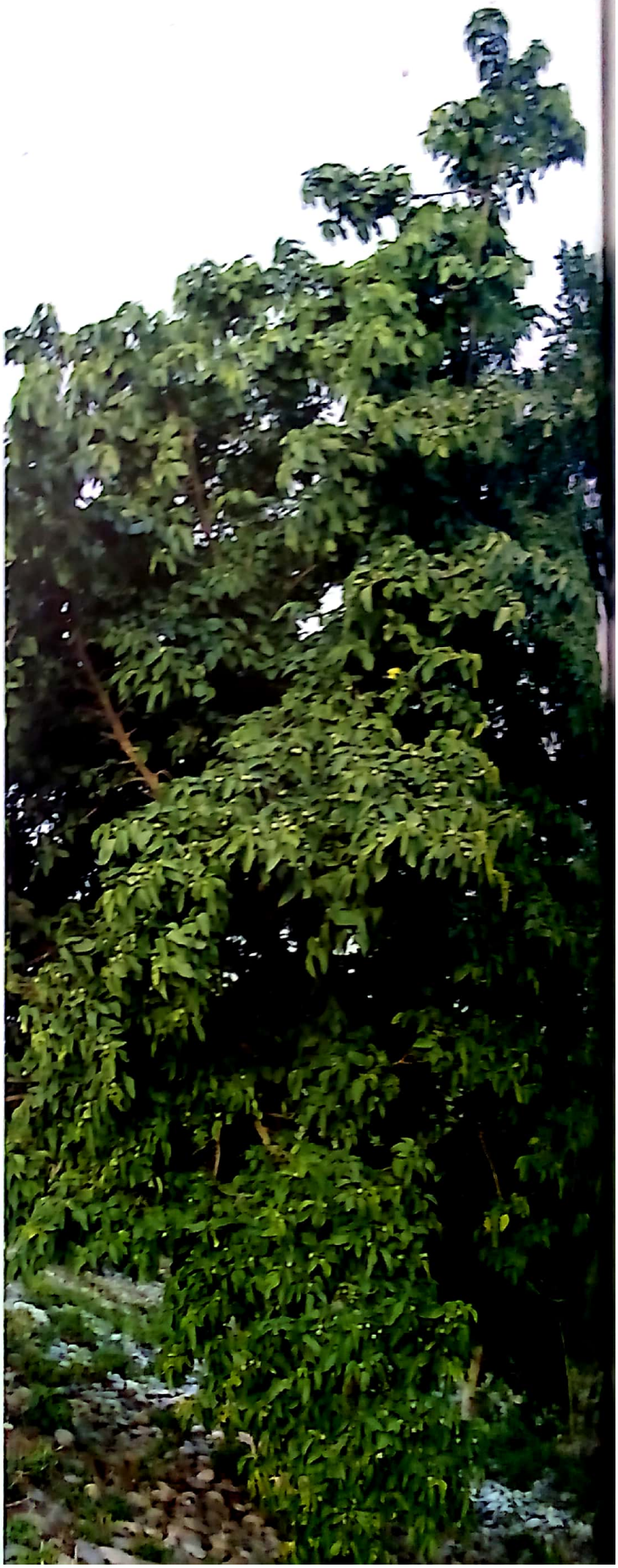

परिचय

पत्रों में मधु सदृश रस होने के कारण मधुपर्णिका, पत्र सुन्दर होने के कारण श्रीपर्णी और पीत पुष्पों से सुशोभित होने से पीतरोहिणी नामों से अलंकृत गंभारी के वृक्ष प्रायः सभी प्रान्तों में विशेषतः पार्वत्य प्रदेश हिमालय, नीलगिरी तथा पूर्वी और पश्चिमी घाटों में विशेष होता है।

बाह्य–स्वरूप

गंभारी के वृक्ष 40–60 फुट तक ऊँचे, कांडत्वक् धूसर वर्ण की और पुरानी होने पर हल्के रंगीन टुकड़ों में छूटती रहती है। अन्तर छाल ऊपर से हरी, परन्तु उसके बाद हल्की पीताभ तथा केन्द्र में श्वेत वर्ण की होती है। पत्र 4–9 इंच लम्बे, 2.5 से 8 इंच चौड़े लट्वाकार या हृदयाकार पीपल की तरह लम्बाग्र होते हैं। पुष्प रक्ताभ या पीतवर्ण के लम्बी में अंजरियों में लगते हैं। फल अंडाकार, ¼ इंच पीतवर्ण का होता है। इसके भीतर 1–2 बीज होते हैं। पतझड़ में वृक्ष निष्पत्र हो जाता है, उसके बाद पर्णहीन वृक्ष पर बसन्त में पुष्प और ग्रीष्म में फल लगते हैं।

रासायनिक संघटन

गंभारी मूल में एक पीतवर्ण का गाढ़ा तेल, और कुछ बेन्जोइक एसिड होता है। फल में ब्यूटिरिक व टार्टरिक अम्ल, एक क्षाराभ, शर्करा, राल और कुछ कषाय द्रव्य होते हैं।

गुण–धर्म

वात, पित्त, कफ तीनों दोषों का शमन करता है। यह दीपन–पाचन, मेध्य, भेदक, भ्रम तथा शोथहर है।[1] इसका फल बलकारक, वृष्य,

Scanned by CamScanner

गुरू, बालों को हितकारी, वातपित्त नाशक, तृष्णा हर, रक्तशोधक, हृद्य, है। इसका फल रसायन है तथा रक्तरोधक तथा रक्तपित्त शामक द्रव्यों में श्रेष्ठ कहा गया है।[2] इसकी पत्तियाँ स्नेहन और शीतल होती हैं, यह दाह वेदना को दूर करने वाली तथा मूत्रल है। छाल शोथहर तथा कटुपौष्टिक है। गंभारी के बीजों का तेल, मधुर, कषाय तथा कफ पित्त नाशक है।[3] गंभारी फल, मुलेठी, चंदन, लाल चंदन यह सब पित्त ज्वर नष्ट करते हैं, खासकर दाह को नष्ट करते हैं।[4] गंभारी फल, नागकेशर आदि अम्बष्ठादि गण की औषधियां टूटी अस्थियों को जोड़ने वाली, पित्त में हितकारी और व्रण का रोपण करने वाली हैं।[5]

औषधीय प्रयोग

शिरोवेदना : ज्वर में जब शिरोवेदना हो तो, इसकी पत्तियों को पीसकर सिर पर लेप करते हैं, इससे दाह और पीड़ा शांत होती है।

रक्त अतिसार : रक्त अतिसार में गंभारी के ताजे फलों को कूटकर रस निकालकर 1–1 चम्मच रस 3–4 बार कुछ दिन पिलाने से लाभ होता है।

अग्निमांद्य : अग्निमांद्य में इसकी मूल का 3 ग्राम चूर्ण का प्रातः–सायं सेवन लाभकारी है। इसकी मूल का 40 मिलीलीटर क्वाथ प्रातः सांय ज्वर, मंदाग्नि और सर्वांग जलमय शोथ आदि कई दूसरे रोगों में प्रयोग करने से लाभ होता है।

उदर शूल : इसकी मूल का 3 ग्राम चूर्ण उदर पीड़ा को कम करता है, तथा मल को ढीला कर देता है।

आंत्रकृमि : इसकी जड़ का 50 से 100 मिलीलीटर क्वाथ पिलाने से आंतों के कीड़े मर जाते हैं।

स्तन शैथिल्य के लिये : 2 किलोग्राम छाल को कूटकर 16 कि०ग्रा० जल में चतुर्थांश क्वाथ लें। 250 ग्राम छाल को पानी के साथ पीसकर चटनी बना लें, कल्क तथा क्वाथ में 1 किलोग्राम तिल का तेल मिलाकर तेल को सिद्ध कर रख लें, इस तेल में रूई को भिगोकर स्तनों पर रखते रहने से, शिथिल स्तन दृढ़ एवं पुष्ट होते हैं।

सूतिका रोग : सूतिका रोग में 20–30 ग्राम छाल को 240 मि०ली० जल में उबालकर चतुर्थांश बचे क्वाथ का नियमित प्रातः–सायं सेवन करने से, गर्भाशय का शोथ कम होकर ज्वरादि उपद्रव शान्त होते हैं, तथा स्तनों में दूध की वृद्धि होती है।

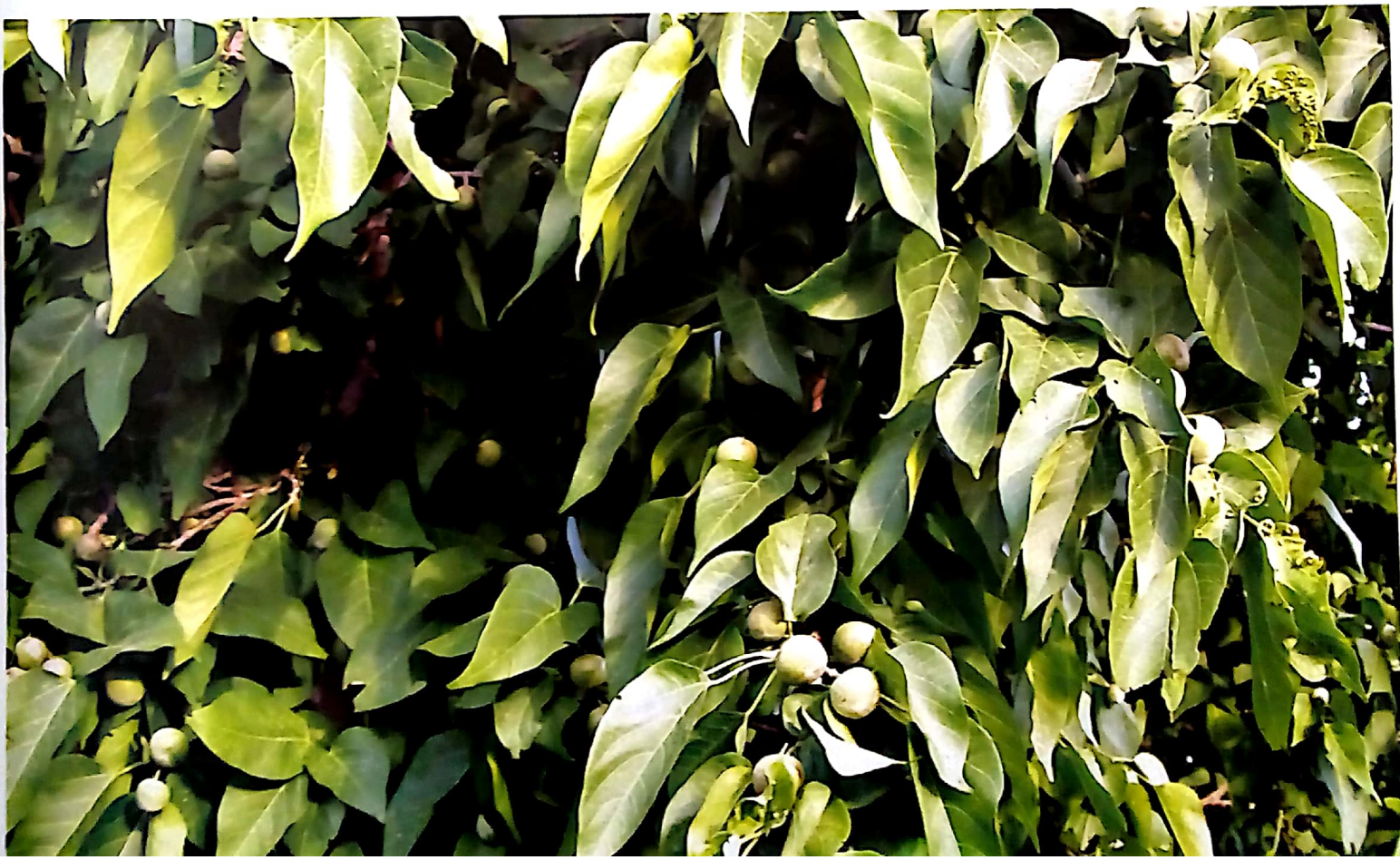

Scanned by CamScanner

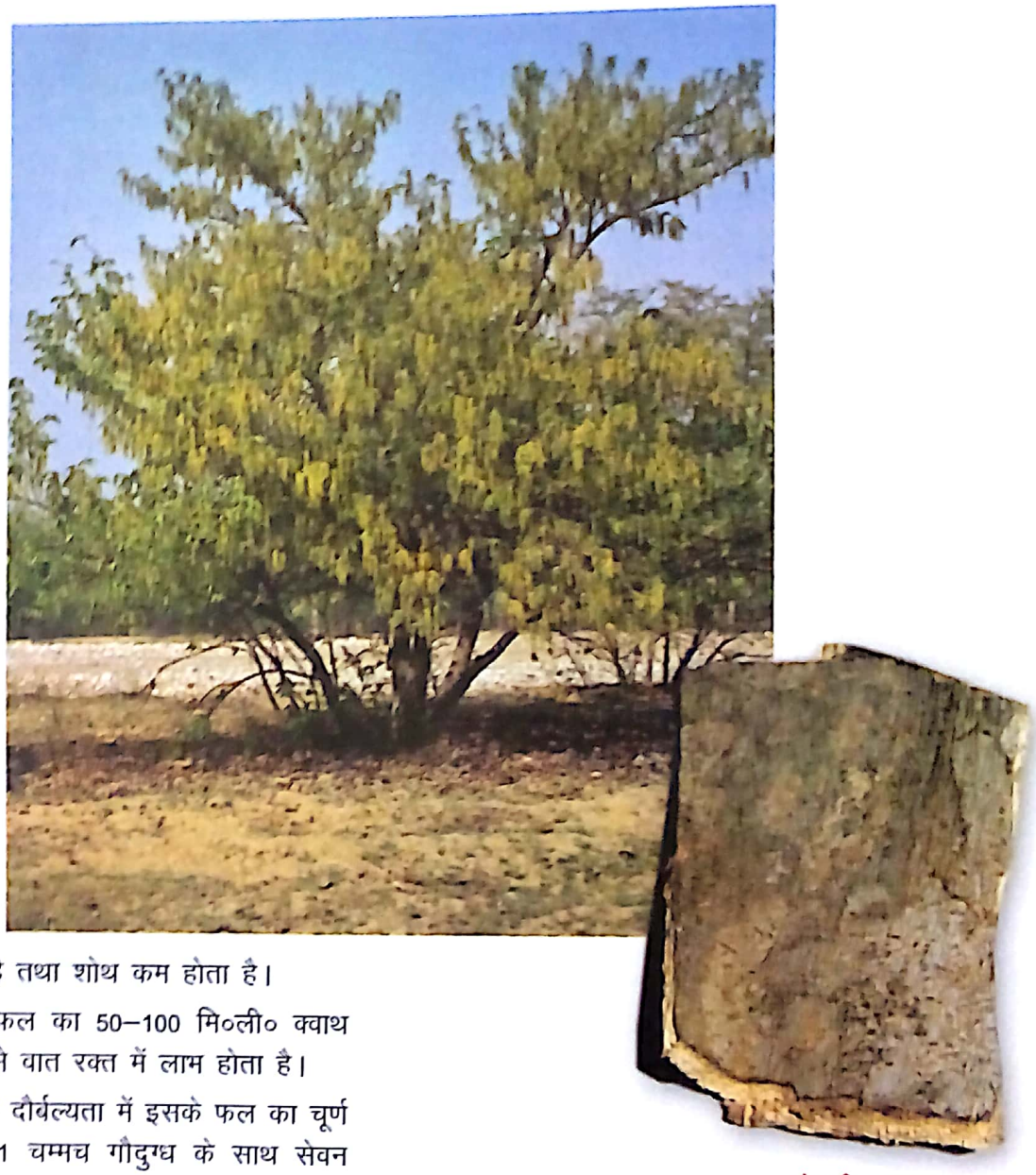

गंभारी छाल

गर्भरक्षार्थ : गंभारी फल और मुलेठी के समभाग चूर्ण में दोनों के बराबर मिश्री मिलाकर, 3 ग्राम की मात्रा में मधु के साथ प्रातः–सायं सेवन करने से गर्भावस्था में बालक की रक्षा हो जाती है।

कफज रोग : गंभारी और अड़ूसे के कोमल पत्तों के 10–20 मिलीलीटर स्वरस को प्रातः–सायं पीने से कफज रोग मिटता है।

मूत्रकृच्छ्र : इसके कोमल पत्तों के 5 ग्राम के लगभग स्वरस को पीने से मूत्रकृच्छ्र मिटता है।

पूयमेह : पूयमेह, मूत्रकृच्छ्र व बस्ति शोथ में इसके फल एवं पत्तियों का 10–20 मिलीलीटर स्वरस गौदुग्ध और मिश्री मिलाकर सेवन करने से मूत्र का गंदलापन दूर होता है, वेदना शांत होती है तथा शोथ कम होता है।

वातरक्त : मुलेठी और गंभारी फल का 50–100 मि०ली० क्वाथ बनाकर दिन में तीन बार पीने से वात रक्त में लाभ होता है।

दुर्बलता : सामान्य दुर्बलता, शुक्र दौर्बल्यता में इसके फल का चूर्ण मिश्री मिलाकर सुबह–शाम 1–1 चम्मच गौदुग्ध के साथ सेवन करें तथा ज्वर के बाद की दुर्बलता में इसकी छाल का 50–100 मिलीलीटर क्वाथ बनाकर पीना अत्यन्त लाभदायक है।

शीत पित्त : गंभारी और गूलर के सूखे या ताजे पके फलों का 50–100 मि॰ली॰ क्वाथ बनाकर प्रातः–सायं पीने से शीतपित्त रोग में लाभ होता है।

ज्वर :

1. दाह और तृष्णा युक्त विषम ज्वर में गंभारी के 40–50 मिलीलीटर क्वाथ में चीनी या मिश्री मिलाकर शीतल करके प्रातः–सायं सेवन करने से लाभ होता है।
2. गंभारी के फलों के 1 चम्मच रस का पित्तज्वर में नियमित दिन में तीन बार सेवन गुणकारी है।

क्षत : इसके कोमल पत्तों को पीसकर लेप करने से अंगुली के नख संबंधी क्षत मिटते हैं।

1. काश्मरी तुवरा तिक्ता वीर्योष्णा मधुरा गुरुः।
   दीपनी पाचनी मेध्या भेदनी भ्रमशोथजित्।
   दोषतृष्णामशूलार्शोविषदाहज्वरापहा।।
   तत्फलं वृंहणं वृष्यं गुरु केश्यं रसायनम्।।
2. वातपित्ततृषारक्तक्षयमूत्रविबन्धनुत्।
   स्वादु पाके हिमं स्निग्धं तुवराम्लं विशुद्धिकृत।।
   हन्याद् दाहतृषावातरक्तपित्तक्षतक्षयान्। (भाव प्रकाश)
3. हृद्यं मूत्रविबन्धघ्नं पित्तासृग्वातनाशनम्।
   केश्यं रसायनं मेध्यं काश्मर्यं फलमुच्यते।। (सुश्रुत)
4. काश्मर्यफलं रक्तसांग्राहिकरक्तपित्तप्रशमनानाम्। (चरक)
5. काश्मर्य तैलानि मधुरकषायाणि कफपित्तप्रशमनानि।। (सुश्रुत)
6. सरिवामधुकचंदनकुचन्दनपद्यककाश्मरीफलमधूकपुष्पाण्युशीरं चेति.....।। (सुश्रुत)

Scanned by CamScanner

वैज्ञानिक नाम	:	*Tagetes erecta* L.
कुलनाम	:	Asteraceae
अंग्रेजी नाम	:	Aztec, African marigold
संस्कृत	:	झण्डू
हिन्दी	:	गेंदा
गुजराती	:	गल गोटो
मराठी	:	झेंडु
बंगाली	:	गेंदा
तैलगु	:	बांटिचेट्टु
मलयालम	:	चेंडुमल्ली
फारसी	:	गुलहजारा

परिचय

गेंदे का पौधा अपने सुन्दर आकर्षक पुष्पों, पत्तियों से निकलती मदमस्त खुशबू (मसलने पर) की वजह से घरों और उद्यानों में लगाया जाता है। पुष्प भेद से इसकी कई जातियां होती है, परंतु इनमें (1) हजारा इसका फूल बड़ा (2) सुरनाई, (3) कौकहान–लाल और पीले रंग के दलचक्र वाला प्रमुख है।

बाह्य–स्वरूप

यह 2–3 फुट ऊंचा रोमश क्षुप होता है। कांड और शाखाएं रोमयुक्त लाल बैंगनी रंग की, पत्र एकान्तर पक्षवत, विभक्त रोमश, उग्रगंधि (मसलने पर खुशबू आती है)। मालाकार, दंतुर, पुष्प बड़े मुंडकों में गहरे पीले या नारंगी रंग के, बीज लम्बे कृष्ण वर्ण होते है।

रासायनिक संघटन

पुष्प में अनेक रंजक द्रव्य, बीजों मे प्रोटीन तथा तेल, इसके अतिरिक्त पौधे से भी एक उग्रगंधि तेल प्राप्त किया जाता है।

गुण–धर्म

गेंदा कफ पित्त प्रशमन, शोथहर, रक्तरोधक एवं रक्त शोधहर है।[1]

औषधीय प्रयोग

दंतशूल : गेंदे के पत्तों के क्वाथ से कुल्ले करने से दांतों के दर्द में फौरन आराम हो जाता है।

कर्णशूल : इसके पत्तों का रस 2–2 बूंद कान में डालने से कर्णशूल मिट जाता है।

स्तनशोथ : गेंदे के पत्तों को पीसकर स्तनों पर लगाने और कपड़ा डालकर सिकाई करने से सूजन उतर जाती है।

श्वास :

1. इसके पुष्पों के बीजों की घुंडी का 2–5 ग्राम चूर्ण, 10 ग्राम शक्कर और एक चम्मच दही के साथ दिन में 3 बार लेने से दमा और खांसी दूर होती है।
2. गेंदे के बीजों का चूर्ण बनाकर उसमें समभाग मिश्री मिलाकर एक चम्मच की मात्रा में पानी के साथ 2–3 बार सेवन करने से खांसी और दमा में लाभ होता है।

रक्त प्रदर : रक्त प्रदर में इसके फूलों के स्वरस का 5–10 ग्राम की मात्रा में सेवन करने से लाभ होता है। इसके फूलों के 20 ग्राम कल्क को 10 ग्राम घी में भूनकर सेवन करने से लाभ होता है।

गुदभ्रंश: गेंदे के 10 ग्राम पत्तों को दो चम्मच पानी मे पीसकर 5 ग्राम मिश्री मिलाकर छानकर सेवन करने से गुदभ्रंश में आराम

Scanned by CamScanner

मिलता है।

बवासीरः

1. गेंदे के पत्ते 10 ग्राम, काली मिर्च दो ग्राम, दोनों को एक साथ पीसकर पीने से अर्श रोग में लाभ होता है।
2. इसके फूल की पंखुडियों को 5 से 10 ग्राम तक घी में भूनकर दिन में तीन बार देने से बवासीर से बहने वाला खून बंद हो जाता है।
3. गेंदे के पत्तों का अर्क खींचकर पीने से अर्श में बहने वाला रक्त तुरन्त बंद हो जाता है। 250 ग्राम गेंदे के पत्ते और केले की जड़ दो किलो, इनको रात्रि में पानी में भिगो दें और सुबह अर्क खींच ले, इस अर्क की 15–20 ग्राम तक की मात्रा में सेवन करें।
4. रक्तार्श में इसके पुष्पों के 5–10 ग्राम स्वरस का दिन में दो–तीन बार सेवन भी लाभकारी है।

मूत्रविकार : गेंदे के 10 ग्राम पत्तों को पीसकर उनके रस में मिश्री मिलाकर दिन में तीन बार पीने से रूका हुआ पेशाब खुलकर आ जाता है।

अश्मरी : इसके पत्तों के 20–30 ग्राम क्वाथ को दिन में दो बार कुछ दिनों तक सेवन करने से अश्मरी गलकर निकल जाती है।

स्तम्भन : एक चम्मच गेंदे के बीज और इतनी ही मात्रा में मिश्री मिलाकर एक कप दूध के साथ सुबह–शाम नियमित रूप से कुछ दिनों तक सेवन करने से वीर्य और स्तम्भन शक्ति बढ़ती है।

चोट–मोच–सूजन : गेंदे के पंचाग का रस निकाल कर चोट–मोच और सूजन पर लगाने से आराम मिलता है।

बिवाई : गेंदे के पत्तो का रस वैसलीन में मिलाकर हाथ पैरों पर मलने से बिवाई और हाथ पैरों की खुश्की दूर होती है।

घाव : गेंदे के पत्तों को पीसकर फोड़े–फुन्सी और घाव पर लगाने से आराम होता है। अर्श के मस्सों पर भी आराम होता है।

कामशक्ति : इसके 10 ग्राम बीजों को कूटकर खाने से काम शक्ति समाप्त हो जाती है।

हानि : इसका अत्यधिक प्रयोग हानिकारक है। यह कामशक्ति को घटाता है।

1. झंडुः कटुकषायास्यातिक्ता शीता च वीर्यतः।
   कफ पित्त प्रशमनं रक्तसांग्रहिकं परम्।।

(द्रव्यगुण विज्ञान)

Scanned by CamScanner

गिलोय (अमृता)

वैज्ञानिक नाम	:	*Tinospora cordifolia* (Willd.) Hook. f. & Thoms.
कुलनाम	:	Menispermaceae
अंग्रेजी नाम	:	Tinospora
संस्कृत	:	गुडूची, अमृत वल्ली, छिन्ना, मधुपर्णी, वत्सादनी, कुण्डलिनी
हिन्दी	:	गिलोय, गुडुचि
गुजराती	:	गलो
मराठी	:	गुलवेल
पंजाबी	:	गलो, गिलो
तेलगु	:	टिप्पाटिगो
कन्नड़	:	अमृतबल्लि

परिचय

अमृता, अमृतवल्ली अर्थात कभी न सूखने वाली गिलोय बड़ी लता रूपी मोटी झाड़ी है। यह समुद्र तल से लगभग 1,000 फुट की ऊचाई तक पाई जाती है। इसका तना काफी मोटा होता है। देखने में यह रस्सी जैसा लगता है। कोमल तने तथा शाखाओं से कई वायुवीय जड़े निकलती है। इस पर पीले व हरे रंग के फूल झुंड में लगते है। पत्ते कोमल पान के आकार के तथा फल मटर के दाने जैसे होते है। यह भारतवर्ष में प्रायः कुमाऊँ से आसाम और बर्मा तक और बिहार तथा कॉकण से कर्नाटक और सीलोन तक सब जगह पाई जाती हैं। कुन्तालाकर क्रम में यह जिस वृक्ष पर चढ़ती है उसी वृक्ष के कुछ गुण भी अपने अन्दर समाहित कर लेती है, इसीलिये नीम वृक्ष पर चढ़ी गिलोय श्रेष्ठ मानी जाती है।

बाह्य–स्वरूप

गुडूची की बेल प्रायः जंगल में, खेतों की मेढ़ो, चट्टानों आदि स्थानों में कुंडलाकार चढ़ती हुई मिलती है। यह आम और नीम के वृक्षों पर भी पाई जाती है। इसका तना मोटा होता है। इसकी विशिष्ट पहचान यह है कि इसकी बाह्य छाल हल्के भूरें रंग की कागज जैसी परतो में होती है। खुरचने पर यह परतों में निकलती है। अन्दर से कांड हरा और गूदेदार होता है। इसके तने से वायवीय जड़े निकलकर झूलती रहती है, जो भूमि के अन्दर घुसकर नये पौधे को जन्म देती है। पत्ते एकान्तर पान के आकार के हृदयाकार, जाली दार और स्निग्ध होते है। पत्रावरण बहुत पतला, होता है।

पर्णवृन्त 1–3 इंच तक लम्बा तथा फूल ग्रीष्म ऋतु में छोटे–छोटे पीले रंग के गुच्छों में आते है। फल भी गुच्छों में ही लगते हैं, तथा पकने पर लाल हो जाते है। बीज सफेद चिकने कुछ टेढे मिर्च के दानों के समान होते हैं।

रासायनिक संघटन

गिलोय के कांड में लगभग 1.2 प्रतिशत स्टार्च के अतिरिक्त अनेक कडुवे जैव सक्रिय संघटक पाये गये है। गिलोय में "गिलोइन" नामक एक कडुआ ग्लूकोसाइड तथा तीन प्रकार के एल्कोलाइड होते है। इनमें एक प्रमुख क्षाराभ बर्बेरीन है। इसके अतिरिक्त तिक्त ग्लूकोसाइड, गिलोइमिन, कैसमेंथिन, पामारिन्, रीनात्पेरीन, टीनोस्पोरिक नामक जैव सक्रिय पदार्थ पाये जाते है। इसमें एक उड़नशील तेल होता है एवं वसा, अल्कोहल, ग्लिस्रौल, एक एसेंशियल आयल तथा कई प्रकार के वसा अम्ल होते है।[12]

गुण–धर्म

यह त्रिदोष शामक है। स्निग्ध होने से वात, तिक्त कषाय होने से कफ और पित्त का शमन करता है। यह कुष्ठघ्न, वेदनास्थापन, तृष्णानिग्रहण, छर्दिनिग्रहण, दीपन, पाचन पित्तसारक, अनुलोमन और कृमिघ्न है। आमाशयगत अम्लता इससे कम होती है। यह हृदय को

Scanned by CamScanner

बल देने वाली, रक्त विकार तथा पांडु रोग में गुणकारी है। कास, दौर्बल्य, प्रमेह, मधुमेह में, त्वचा के रोगों में तथा कई प्रकार के ज्वर में उत्तम कार्य करती है। आधुनिक चिकित्साशास्त्रियों के विचार से गिलोय सूक्ष्मतम विषाणु समूह से लेकर स्थूल कृमियों तक पर अपना प्रभाव दर्शाती है। क्षय रोग उत्पन्न करने वाले 'माइक्रोबैक्टीरियम ट्यूबर–कुलौसिस' जीवाणु की वृद्धि को यह सफलतापूर्वक रोकती है। शरीर के जिस भाग में भी ये जीवाणु शान्त अवस्था में पड़े हों, गिलोय वहीं पर पहुँचकर उनका नाश करती है। ई० कोलाई नामक रोगाणु को जो आंत और मूत्रवहसंस्थान के साथ–साथ पूरे शरीर को प्रभावित करता है, को जड़ से उखाड़ डालती है। इसके जल निष्कर्ष में फंगोसिटिक इंडेक्स' काफी अधिक मात्रा में पाया जाता है अर्थात रक्त के जीवाणु भक्षी कोषों की तरह इसके सूक्ष्म घटक भी आयोनिक गति से रोगाणुओं पर आक्रमण कर उन्हें मार डालने की क्षमता रखते हैं।

गिलोय के रसायन का ग्लूकोज टालरेंस तथा एड्रीनेलिन जन्य हाइपर ग्लाइसीमिया में इसका लाभकारी एवं त्वरित परिणाम होता है। यह शरीर में इंसुलिन की उत्पत्ति व रक्त में उसकी घुलनशीलता को बढ़ाती है। इससे रक्तशर्करा घटती है।

औषधीय प्रयोग

नेत्र विकार :

1. गिलोय के 11.5 ग्राम स्वरस में शहद व सैंधा नमक 1–1 ग्राम मिलाकर खूब अच्छी प्रकार से खरल कर नेत्रांजन करने से तिमिर, पिल्ल, अर्श, काच, कंडू लिंगनाश एवं शुक्ल तथा कृष्ण पटल गत नेत्र रोग नष्ट होते है।
2. गिलोय रस में त्रिफला मिलाकर क्वाथ बनाकर इसे पीपल चूर्ण व शहद के साथ प्रात–सायं सेवन करते रहने से नेत्रों की ज्योति बढ़ जाती है।

वमन :

1. धूप में घूमने–फिरने से, या पित्त प्रकोप से वमन हो, तब गिलोय स्वरस 10–15 ग्राम में 4–6 ग्राम तक मिश्री मिलाकर प्रात–सायं पीने से वमन शांत हो जाती है।
2. गिलोय के 125 से 250 मि०ली० हिम में 15 से 30 ग्राम तक शहद मिलाकर दिन में तीन बार सेवन करने से कष्ट साध्य वमन भी बन्द हो जाती है।

कान का मैल : गिलोय को पानी में घिस गुनगुना करके कान में 2–2 बूंद दिन में दो बार डालने से कान का मैल निकल जाता है।

संग्रहणी : शोंठ, मोथा, अतीस, गिलोय इन्हे समभाग लेकर जल में क्वाथ करें। इस क्वाथ को 20–30 ग्राम की मात्रा में सुबह–शाम पीने से मन्दाग्नि, निरंतर कोष्ठ का आमदोष युक्त रहना एवं आम संयुक्त ग्रहणी रोग शान्त होता है।

छर्दि :

1. अड़ूसाछाल, गिलोय, छोटी कटेरी को समभाग लेकर आधा किलो पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ के शीतल होने पर मधु मिलाकर पीने से शोथ, कास, श्वास, ज्वर तथा छर्दि शान्त होती है।[12]
2. गिलोय का 10–20 ग्राम क्वाथ अथवा हिम में 2 चम्मच मधु मिलाकर पीने से सब प्रकार की छर्दियों में लाभ होता है।[9]

हिक्का : गिलोय और सोंठ के चूर्ण की नस्य देने से हिचकी बन्द होती है। अथवा गिलोय चूर्ण एवं सोंठ के चूर्ण का हिम बनाकर उसमें दूध मिलाकर पिलायें।

कामला :

1. 20–30 ग्राम अमृता क्वाथ में 2 चम्मच मधु मिलाकर दिन में तीन–चार बार पिलाने से कामला रोग मिटता है।
2. इसके 10–20 पत्तों को पीसकर एक गिलास छाछ में मिलाकर तथा छानकर प्रातःकाल पीने से कामला मिटता है।

Scanned by CamScanner

3. इसके छोटे–छोटे टुकड़ों की माला बनाकर पहनने से कामला रोग में लाभ मिलता है।

अर्श : हरड़, गिलोय, धनिया तीनों को समभाग 20 ग्राम लेकर आधा किलो पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ में गुड़ डालकर प्रातः–सायं सेवन करने से सब प्रकार के अर्श नष्ट होते है।[5]

पांडुरोग :

1. पुनर्नवा, नीम की छाल, पटोलपत्र, सोंठ, कटुकी, गिलोय, दारुहल्दी, हरड़, प्रत्येक 20 ग्राम, क्वाथार्थ जल 320 ग्राम, शेष क्वाथ 80 ग्राम इस क्वाथ को 20 मि०ली० मात्रा में सुबह–शाम पीने से सर्वांग शोथ, उदर रोग, पार्श्वशूल, श्वांस तथा पांडु रोग नष्ट होता है।[2]
2. गिलोय रस एक किलो, कांड कल्क 250 ग्राम, दूध 4 किलो और भैंस का घी एक किलो लेकर, मन्द अग्नि पर पकाकर घी मात्र शेष रहने पर छानकर रख लें। 10 ग्राम घी चौगुने गाय के दूध में मिलाकर प्रातः–सायं पीने से पाण्डु, कामला एवं हलीमक मिटता है।

प्रमेह :

1. गिलोय, खस, पठानी लोध्र, अंजन, लाल चन्दन, नागरमोथा, आवँला, हरड़, परवल की पत्ती, नीम की छाल पद्मकाष्ठ इन सभी द्रव्यों को समभाग लेकर कूट पीस, छानकर रख लें। इनके सम्मिलित चूर्ण को 10 ग्राम की मात्रा लेकर मधु के साथ मिलाकर दिन में तीन बार देने से पित्तज प्रमेह नष्ट हो जाते है।[15]
2. गिलोय का रस, षट्पल घृत का पान, अभया या त्रिफला का क्वाथ विषमज्वर तथा प्रमेह में पीना चाहिये।[3]
3. गिलोय और चित्रक का 20–30 ग्राम क्वाथ सुबह–शाम पिलाने से सर्पि प्रमेह मिटता है। गिलोय के 10–20 ग्राम स्वरस में 2 चम्मच मधु मिलाकर दिन में दो तीन बार पीने से प्रमेह नष्ट होता है।
4. 1 ग्राम गिलोय सत् में 3 ग्राम शहद को मिलाकर प्रातः–सायं चाटने से लाभ मिलता है।

हलीमक : इसके रस से या कल्क से सिद्ध किया हुआ भैंस का घी 5–10 ग्राम लेकर चौगुने दूध में मिलाकर पीने से हलीमक मिटता है।

मूत्रकृच्छ्र : इसके 10–20 ग्राम स्वरस में पाषाण भेद का 2 ग्राम चूर्ण और 1 चम्मच मधु मिलाकर दिन में तीन–चार बार चटाने से मूत्रकृच्छ्र मिटता है।

यकृत विकार व मंदाग्नि : ताजी गिलोय 18 ग्राम, अजमोद 2 ग्राम छोटी पीपल 2 नग, नीम की सीके 2 नग इन सबको कुचलकर, रात्रि को 250 ग्राम जल के साथ मिट्टी के बरतन में रख दें। प्रातः पीस छानकर पिला दें। 15 से 30 दिन तक सेवन से पेट के सब रोग दूर होते है।

श्लीपद : 10–20 ग्राम गिलोय के रस में 50 मिलीलीटर कटु तेल (सरसों का तेल) मिलाकर प्रतिदिन सुबह–शाम खाली पेट पीने से श्लीपद नष्ट होता है।[4]

गठिया : दूध के साथ इसके 2–5 ग्राम चूर्ण की फंकी दिन में दो–तीन बार देने से गठिया और मूत्राम्लता मिटती है।

कुष्ठ : कुष्ठ रोग में इसका 10–20 ग्राम स्वरस दिन में दो–तीन बार कुछ महीनों तक नियमित पिलाना चाहिए।

शीतपित्त : गिलोय, स्वरस में 10–20 ग्राम बावची को पीस कर लेप करने तथा मलने से लाभ होता है।

जीर्ण ज्वर :

1. जीर्ण ज्वर या छः दिन से भी अधिक समय से चले आ रहे व न टूटने वाले ज्वरों में 40 ग्राम गिलोय अच्छी तरह कुचलकर, मिट्टी के बरतन में 250 ग्राम पानी मिलाकर रात भर ढककर रखते है। और प्रातः मसलकर छान प्रयोग करते है। 20 ग्राम की मात्रा दिन में तीन बार पीने से ज्वर नष्ट हो जाता है।
2. गिलोय का स्वरस 20 ग्राम, इसमें 1 ग्राम पिप्पली तथा 1 चम्मच मधु का प्रक्षेप देकर प्रातः–सायं सेवन करने से जीर्णज्वर, कफ, प्लीहारोग, कास, अरुचि आदि रोग नष्ट होते है।[5]

वातरक्त :

1. मुंडी के 2–5 ग्राम चूर्ण को 2 चम्मच शहद और 1 चम्मच घी के साथ चाटकर गिलोय के 40–60 ग्राम क्वाथ को सुबह–शाम पीने से वातरक्त शान्त होता है।[1]
2. गिलोय के 5–10 मिलीलीटर रस अथवा, 3–6 ग्राम चूर्ण, या 10–20 ग्राम कल्क अथवा 40–60 ग्राम क्वाथ को प्रतिदिन निरंतर कुछ समय तक सेवन करने से रोगी वातरक्त से मुक्त हो जाता है।[4]

Scanned by CamScanner

वातज्वर : बिल्व, अरणी, गम्भारी, श्योनाक (सोनापाठा) तथा पाढ़ल इनके जड़ की छाले तथा गिलोय, आँवला, धनिया ये सब बराबर लेकर, इनके 20–30 ग्राम क्वाथ को दिन में दो बार वातज्वर में सेवन करना चाहिये।[2]

राजयक्ष्मा (टी.बी.) : असगन्ध, गिलोय, शतावर, दशमूल, बलामूल, अडूसा, पोहकरमूल तथा अतीस को समभाग लेकर बनाये गये क्वाथ की 50–60 ग्राम मात्रा को सुबह–शाम सेवन करने से राजयक्ष्मा नष्ट होता है।[1] पथ्य–केवल दूध अथवा मांसरस।

विविध : गिलोय के 10–20 ग्राम रस के साथ गुड़ का सेवन करने से बद्धकोष्ठ मिटता है। मिश्री के साथ सेवन करने से पित्त के उपद्रव मिटते है। मधु के साथ सेवन करने से कफ मिटता है। सौठ के साथ सेवन करने से आमवात मिटता है। काली मिर्च और सुखोष्ण जल के साथ सेवन करने से हृदय शूल मिटता है। इसका प्रयोग व्याधिनुसार अनुपात के सात दिनों तक नियमित रूप से करना चाहिए।

परमपूज्य स्वामी रामदेव जी का स्वानुभूत प्रयोग

हमने अनेक रक्त कैंसर के रोगियों पर जवहर के साथ गिलोय स्वरस मिलाकर दिया तो देखा कि रक्त कैंसर ठीक हो गया। हम आज भी इसका प्रयोग कर रहे हैं और रोगी का कैंसर ठीक हो रहा है।

विधि : गिलोय लगभग 2 फुट लम्बी तथा एक अगुंली जितनी मोटी, 10 ग्राम गेहूँ की हरी पत्तियां लेकर थोडा पानी मिलाकर पीस लें, कपड़े से निचोड़ कर 1 कप की मात्रा में खाली पेट प्रयोग करें। आश्रम द्वारा दी जाने वाली औषधियों के साथ उक्त रस का सेवन कैंसर जैसे भयानक रोगो से शीघ्र मुक्ति प्रदान करने में सहयोग करता है।

1. गुडूची कटुका तिक्ता स्वादुपाका रसायनी।
संग्राहिणी कषायोष्णा लघ्वी बल्याग्निदीपनी।।
दोषत्रयामतृड्दाहमेहकासांश्च पाण्डुताम्।
कामला कुष्ठवातास्रज्वरकृमिवमीर्हरेत्।। (भाव प्रकाश)
2. अमृता सांग्राहिक–वातहर–दीपनीय
श्लेष्मशोणित्विबन्धप्रशमनानाम् (चरक)
3. ज्ञेया गुडूची गुरुष्णवीर्या तिक्ता कषाया ज्वरनाशिनी च।
दाहार्तितृष्णावमिरक्तवातप्रमेहपाण्डुभ्रमहारिणी च।। (रा०नि०)
4. कन्दोद्भवा गुडूची च कटूष्णा संनिपातहा।
विषघ्नी ज्वरभूतघ्नी वलीपलितनाशिनी।। (ध०नि०)
5. लीढ्वा मुण्डीतिका चूर्णं मधुसर्पिःसमायुतम्।
छिन्नक्वाथं पिवन् हन्ति वातरक्त सुदुस्तरम्।।
(भैषज्य रत्नावली)
6. गुडूच्याः स्वरसं चूर्णं कल्कं वा क्वाथमेव वा।
प्रभूतकालमासेव्य मुच्यते वातशोणितात्।। (भैषज्य रत्नावली)
7. पिप्पला मधु संमिक्षं गुडूची स्वरसं पिबेत्।
जीर्णा ज्वर कफ प्लहिका सारोचक नाशनम।।
8. पथ्या मृता च धनिका पाने क्वथो गुडान्वितः
सर्वेष्वर्शगसु हितः चिरजातेय व संशयम्।। (भैषज्य रत्नावली)
9. बिल्वादि पंचमूली च गुडूच्यामलके तथा।
कुस्तुम्बुरुसमो ह्येष कषायो वातिके ज्वरे।। (भैषज्य रत्नावली)
10. अश्वगन्धाऽमृताभीरूदशमूलीबलावृषाः।
पुष्करातिविषे हन्ति क्षयं क्षीररसाशिनः।। (भैषज्य रत्नावली)
11. कृतं गुडूच्या विधिवत् कषायं हिमसंज्ञितम्
तिसृष्वपि भवेत्पथ्यं माक्षिकेण समायुतम्।। (भैषज्य रत्नावली)
12. पीतो रसो गुडूच्यास्वा मधुना मेहनाशनः। (भैषज्य रत्नावली)
13. श्लीपघ्नो सरोऽभ्यासाद् गुडूच्यास्तैल संयुतः।
14. सिंहास्या मृतभण्यकी क्वाथं कृत्वां समाक्षिकम।
पीत्वा शोथं जयेज्जन्तुः श्वासं कासं ज्वरं वमिम्।।
(भैषज्य रत्नावली)
15. पुनर्नवानिम्बपटोलशुण्ठीतिक्ताऽमृतादार्वभयाकषायः।
सर्वांगशोथोदरपार्श्वशूलश्वासान्वितं पाण्डुगदं निहन्ति।।
(भैषज्य रत्नावली)
16. पिवेद् वा षट्फल सर्विरभयां वा प्रथोजयेत।
त्रिफलायाः कषाय वा गुडूच्या रसमेव वा।। (चरक)

Scanned by CamScanner

गोखरू

60

वैज्ञानिक नाम	:	*Tribulus terrestris* L.
कुलनाम	:	Zygophyllaceae
अंग्रेजी नाम	:	Small caltrops, Land caltrops, Puncture vine
संस्कृत	:	गोक्षुर, श्वदंष्ट्रा, स्वादु कंटक, चणद्रुम, वनश्रृंगाट, त्रिकंटक, इक्षुगन्धिका,
हिन्दी	:	गोखरु, हथचिकार
गुजराती	:	न्हाना गोखरु, बेठागोखरु
मराठी	:	सराटे, कांटेगोखरू
पंजाबी	:	भखड़ा
बंगाली	:	गोखरी, गोक्षुर
फारसी	:	खोरखसक
अरबी	:	हसक
तैलगु	:	पान्नेरूमुल्लु
तमिल	:	नेरूनाजि
कन्नड़	:	सन्नानेग्गुलु

परिचय

यह वनस्पति भारतवर्ष के सभी प्रदेशो, विशेषतः उष्ण प्रदेशों में बहुलता से पाई जाती है। वर्षा ऋतु में यह अधिकता से फलती फूलती है। इसके पादप भूमि पर छत्ते की तरह फैले रहते हैं।

बाह्य–स्वरूप

इसकी 2–3 फुट लम्बी शाखाएं चारों और फैली रहती हैं। पत्ते चने के पत्तों के समान परन्तु आकर में कुछ बड़े, प्रत्येक पत्ती में पत्रक युग्मों की संख्या 4–7 होती है। शाखायें बैंगनी श्वेत रोम से आच्छादित, व अनेक ग्रन्थियुक्त होती है। पुष्प पीले, छोटे चक्राकार, कांटों से युक्त, फल छोटे, गोल, चपटे, पंचकोणीय, 2–6 कंटक युक्त व अनेक बीजी होते है। जड़ मुलायम रेशेदार, 4–5 इंच लम्बी, हल्के भूरे रंग की विशिष्ट गन्ध युक्त होती हैं।

रासायनिक संघटन

फल में एक क्षारोद, स्थिर तेल अति अल्प मात्रा में, एक उड़नशील तेल, राल और पर्याप्त मात्रा में नाइट्रेट पाये जाते है।

गुण–धर्म

वात पित्तशामक, वेदना–नाशक, रक्त पित्तशामक और शोथहर है। यह हृद्य, कफ निःसारक, गर्भस्थापन तथा वृष्य है। मूत्राशय का शोधन करने वाला, मूत्रजनन, बल्य है। स्वादिष्ट तथा दीपन है। इसकी मुख्य क्रिया मूत्र पिंड पर होती है।

औषधीय प्रयोग

शिरः शूल : इसकी छाल का काढ़ा 10–20 ग्राम सुबह–शाम पिलाने से पित्तज शिरः शूल मिटता है।

Scanned by CamScanner

छोटी गोखरू

दमा : इसके फल के गूदे का 2 ग्राम चूर्ण, 2–3 नग सूखे अंजीर के साथ दिन में तीन बार कुछ दिनों तक निरन्तर सेवन करने से दमा मिट जाता है।

शोष : शोष में गोक्षुर तथा अश्वगंधा का समभाग सूक्ष्म चूर्ण 2 चम्मच मधु के साथ दिन में दो बार चाटकर, 250 ग्राम दूध पीने से थोड़े ही दिनों में शोष, कास एवं दौर्बल्य का नाश होता है।

पाचन शक्ति : इसके 100 ग्राम क्वाथ में पीपल के 5 ग्राम चूर्ण का प्रक्षेप देकर थोड़ा–थोड़ा पीने से पाचन शक्ति बढ़ती है।

अतिसार : इसके फल के गूदे को 650 मिग्रा. से 1.250 ग्राम तक

मट्ठे के साथ दिन में दो बार खिलाने से अतिसार और आम अतिसार मिटता है।

मूत्रकृच्छ्र :

1. इसकी छाल के 20 ग्राम क्वाथ में यवक्षार 125 मिग्रा. डालकर दिन में दो तीन बार पिलाने से मूत्रकृच्छ्र मिटता है।
2. इसकी पंचाग के 20 ग्राम क्वाथ में एक चम्मच मधु मिलाकर प्रातः एवं सायं सेवन करने से लाभ होता है।
3. इसके 100 ग्राम पंचाग को आधा किलो पानी में 2 घंटे तक भिगोकर मसल छानकर 20–20 ग्राम सुबह, दोपहर तथा शाम पिलाने से मूत्रकृच्छ्र मिटता है।
4. गोखरु की जड़ (10–15 ग्राम) और समभाग चावलों को एक साथ अच्छी तरह उबालकर पिलाने से मूत्रवृद्धि होती है।
5. गोखरु के 2 ग्राम चूर्ण में 2–3 नग काली मिर्च और 10 ग्राम मिश्री मिलाकर सुबह, दोपहर और शाम देने से मूत्रकृच्छ्र मिटता है तथा नपुंसकता मिटती है।

अश्मरी : गोखरु के 5 ग्राम चूर्ण को 1 चम्मच मधु के साथ दिन में तीन बार चटाकर, ऊपर बकरी का दूध पिलाने से अश्मरी मिटती है।

बांझपन : गोखरू के फल चूर्ण की 10–20 ग्राम मात्रा की फंकी देने से स्त्रियों में बांझपन मिटता है।

गर्भाशय शूल : गर्भपात के पश्चात् होने वाले शूल में गोखरू फल 5 ग्राम, काली किशमिश 5 ग्राम और दो ग्राम मुलेठी इनको पीसकर प्रातः–सायं सेवन करने से लाभ होता है।

Scanned by CamScanner

बड़ी गोखरू

आमवात : आमवात एवं संधिशोथ में इसके फल एवं समान भाग सौंठ की 10–20 ग्राम मात्रा को 400 मि०ली० पानी में उबालकर चतुर्थांश बचे क्वाथ का प्रातः एवं रात्रि में सेवन से लाभ होता है। इससे कटिशूल नष्ट होता है। पाचन शक्ति बढ़ती है तथा वेदना दूर होती है।

बाजीकरण :

1. इसके 20 ग्राम फलों को 250 ग्राम दूध में उबालकर प्रातः–सायं पिलाने से बाजीकरण होता है।
2. 10 ग्राम गोखरू एवं 10 ग्राम शतावर को 250 ग्राम दूध के साथ उबालकर पिलाने से पुरुषार्थ बढ़ता है।

ज्वर :

1. गोखरू की 15 ग्राम छाल को 250 ग्राम जल में उबालकर, चतुर्थांशं शेष रहने पर, छानकर इसकी चार खुराक बनाकर दिन में चार बार पिलाने से ज्वर उतर जाता है।
2. इसकी छाल के 2 ग्राम चूर्ण की फंकी नियमित देने से नियतकालिक ज्वर उतर जाता है।

चर्मरोग : इसके बीज की गिरी को पानी में पीसकर त्वचा रोगों पर लेप करने से लाभ होता है।

रक्तपित्त : 10 ग्राम गोक्षुर को 250 ग्राम दूध में उबालकर पिलाने से रक्तपित्त में लाभ होता है।

प्रमेहश्वासकासार्शः कृच्छ्रहृद्रोगवातनुत्। (भाव प्रकाश)

1. गोक्षुरः शीतलः स्वादुर्बलकृदवस्तिशोधनः।
   मधुरो दीपनो वृष्यः पुष्टिदश्चाश्मरीहरः।।

Scanned by CamScanner

गूलर

वैज्ञानिक नाम	:	*Ficus racemosa* L.
कुलनाम	:	Moraceae
अंग्रेजी नाम	:	Cluster fig, Country fig
संस्कृत	:	उदुम्बर, जन्तुफल, यज्ञांग, हेमदुग्धक
हिन्दी	:	गूलर
गुजराती	:	उम्बरो, उमरडो
मराठी	:	उम्बर
बंगाली	:	यज्ञडुम्बुर
फारसी	:	अंजीरे–आदम, अंजीरे–अहमक्
अरबी	:	जम्भैज, तोनुल अहमक्
उर्दू	:	डिमरी
मलयालम	:	अति
तमिल	:	अति

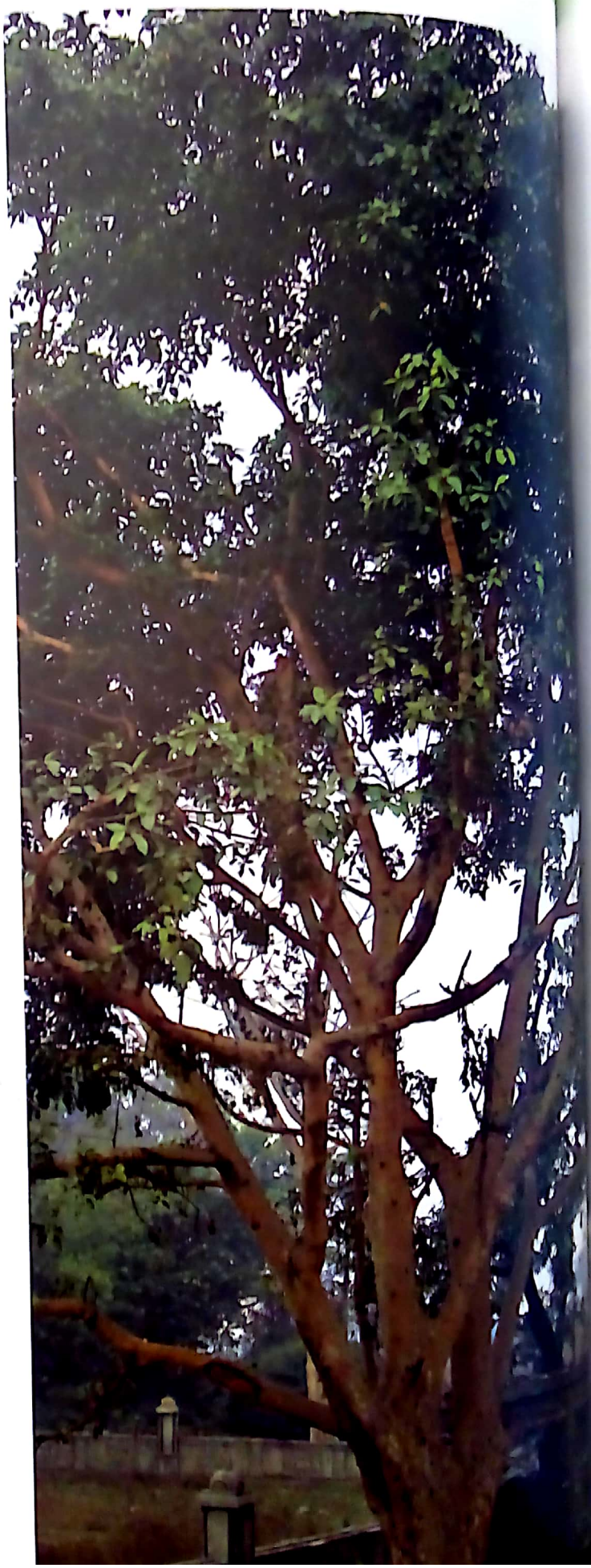

परिचय

अथर्ववेद के अनुसार गूलर पुष्टिदायक द्रव्यों में सर्वश्रेष्ठ है। कहा गया है कि गूलर फल चूर्ण तथा विदारी कन्द के कल्क का घी मिश्रित दूध के साथ सेवन करने से 'वृद्धोऽपि तरूणायते' अर्थात बूढ़ा भी तरूण समान हो जाता है। हेमदुग्धक, जन्तुफल, सदाफल आदि नामों से प्रसिद्ध गूलर के वृक्ष कृषि जन्य या वन्यज दोनों अवस्थाओं में 6,000 फुट की ऊंचाई तक सर्वत्र सुलभ हैं। जंगलों एवं नदी–नालों के किनारे इसके वृक्ष अपेक्षाकृत अधिक पाये जाते हैं। इस वृक्ष में किसी भी स्थान पर चीरा देने से श्वेत दूध निकलता है, जो थोड़ी देर रखने पर पीला हो जाता है, इसलिए इसे हेमदुग्धक और फलों में अनेक कीट होने से जन्तुफल तथा बारहमासी फल देने के कारण सदाफल कहते हैं।[1]

बाह्य–स्वरूप

इसका कांड स्कंध लम्बा एवं मोटा तथा कुछ टेढ़ा होता है। इसकी शाखाएं पार्श्वों में न फैलकर प्रायः सीधी ऊपर की ओर बढ़ती हैं। कांड त्वक–रक्ताभ धूसर, पत्र 3–4 इंच लम्बे, लट्वाकार, भालाकार तथा तीन शिराओं से युक्त होते हैं। फल 1–2 इंच व्यास के, प्रायः गोलाकार या शुंडाकार बड़े गुच्छों में निष्पत्र शाखाओं पर लगते हैं। ये कच्ची अवस्था में हरे तथा पकने पर हल्के लाल हो जाते हैं।

Scanned by CamScanner

रासायनिक संघटन

इसमें टैनिन, मोम तथा रबड़, भस्म मे सिलिका तथा फास्फोरिक एसिड पाये जाते हैं।

गुण–धर्म

छाल एवं कच्चे फल, अग्नि सादक, स्तम्भन, मूत्र संग्रहणीय, प्रमेह नाशक एवं दाह–प्रशमन है। बाह्य प्रयोग में छाल एवं पत्र क्वाथ शोथहर, वेदना स्थापन, वर्ण्य एवं व्रणरोपण है।[2] पक्व फल श्लेष्म निःसारक, मनः प्रसादकर, शीतल रक्त संग्राहिक किन्तु कृमि कारक, रक्तपित्त, मूर्च्छा, दाहनाशक है।[3] निर्यास (दूध) शीतल, स्तम्भक, रक्त संग्राहिक, पौष्टिक एवं शोथहर है। गूलर, बड़, पीपल यह सब व्रण के लिए हितकारी, संग्राही, भग्न को मिलाने वाला, रक्त पित्तनाशक, दाह तथा योनि रोगों को दूर करता है।[4]

औषधीय प्रयोग

मुख रोग : छाल के 250 मि०ली० क्वाथ में 3 ग्राम कत्था व 1 ग्राम फिटकरी मिला कुछ गरम रहते गंडूश (कुल्ला) करें।

कर्णशोथ : कर्णमूल के शोथ पर या पित्तज शोथ पर इसके गोंद का लेप करना चाहिए।

चेचक :

1. गूलर के पत्तों पर जो फफोले या श्यामवर्ण के दाने होते हैं, उन्हें पत्तों से निकालकर लगभग 3–4 ग्राम को गौदुग्ध में पीस–छानकर मधु मिलाकर प्रातः–सायं पिलाने से, चेचक के दाने में मवाद नहीं होने पाता।
2. इन उभारों को मिश्री के साथ पीसकर सेवन करने से, गर्मी से उत्पन्न मुखपाक ठीक हो जाता है।

गंडमाला : इसमें पत्तों के ऊपर के दानों को मीठी दही में पीसकर शक्कर मिलाकर नित्य एक बार पिलाने से लाभ होता है।

रक्त पित्त :

1. शरीर के किसी अंग से खून बहता हो और सूजन हो, ऐसे रोगों में गूलर एक उत्तम औषधि है। नाक से खून बहना, पेशाब के साथ रक्त आना, मासिक धर्म अधिक होना, गर्भपात वगैरहा रोगों में, इसके 2–3 पके फलों को शक्कर या खांड के साथ दिन में तीन बार देने से तुरन्त आराम हो जाता है।
2. सूखे कच्चे फलों का चूर्ण, बराबर की मिश्री मिलाकर, 5 ग्राम से 10 ग्राम तक की मात्रा में ताजे जल से प्रातः–सायं 21 दिन तक सेवन कराने से रक्त प्रदर, अधिक रक्तस्राव, गर्भपात, रक्तप्रमेह, रक्त अतिसार या ऊर्ध्वग रक्त पित्त में पूर्ण लाभ होता है।
3. 5 ग्राम चूर्ण को या सूखे हरे फलों को पानी में पीसकर मिश्री के साथ पिलाने से भी लाभ होता है।
4. कमलगट्टे और इसके फलों के 5 ग्राम चूर्ण को दूध के साथ दिन में तीन बार देने से रूधिर वमन बन्द हो जाती है।
5. इसके कांड की छाल लगभग 20–30 ग्राम को पानी में पीसकर तालु पर लगाने से नक्सीर बंद हो जाती है।
6. इसकी ताजी जड 30 ग्राम को कूटकर या सूखे हुए जड़ का छिलका 5 से 10 ग्राम उसका क्वाथ बनाकर नियमित रूप से तीन मास तक प्रातः–सायं पिलाने से गर्भपात नहीं होता है।
7. 5 ग्राम गूलर के पत्तों के रस में शहद मिलाकर पिलाने से रक्त पित्त मिटता है। इससे रक्तातिसार मे भी तुरन्त लाभ होता है।
8. ऊर्ध्वग रक्त पित्त में पत्र स्वरस 5 ग्राम के साथ पीपल वृक्ष की लाख का चूर्ण 1 ग्राम और मिश्री समभाग मिलाकर प्रातः–सायं सेवन करें। कुछ समय तक सेवन करने से निश्चित लाभ होगा।

भस्मक रोग : इसकी अंतर छाल को स्त्री के दूध में पीसकर पिलाने से छोटे बच्चों का भस्मक रोग मिटता है।

Scanned by CamScanner

अतिसार :

1. इसकी 4–5 बूंद दूध बताशे में डालकर दिन में तीन बार सेवन करने से लाभ होता है।
2. आंव व अतिसार मे इसकी जड के चूर्ण को तीन से पांच ग्राम ताजे फल के साथ दिन मे दो बार फंकी देनी चाहिए।
3. अतिसार और ग्रहणी में पत्र चूर्ण 3 ग्राम व 2 काली मिर्च, थोडे चावल के धोवन के साथ महीन पीसकर, काला नमक और छाछ मिलाकर छानकर प्रातः–सायं सेवन करने से लाभ होता है।

उदरशूल : इसका फल खाने से उदरशूल और आध्मान मिटता है।

भगन्दर : इसके दूध में रूई का फोहा भिगोकर, नासूर और भगन्दर के अंदर रखने और उसको प्रतिदिन बदलते रहने से नासूर और भगन्दर अच्छा हो जाता है।

अर्श :

1. इसके दूध की 10 से 20 बूंदें जल में मिलाकर पिलाने से खूनी बवासीर और रक्त विकार मिटता है। इसके दूध का लेप मस्सों पर भी करना चाहिए। पथ्य में घी का काफी सेवन करें।
2. कोमल पत्र 10 से 15 ग्राम महीन पीसकर, गाय के दूध की दही एक पाव व थोड़ा सेंधा नमक मिलाकर प्रातः–सायं सेवन करें।

श्वेत प्रदर : गूलर का रस 5 से 10 ग्राम मिश्री के साथ मिलाकर प्रातः–सायं पिलाने से श्वेत प्रदर मिटता है।

रक्त प्रदर : ताजी छाल 10–15 ग्राम कूटकर, 1 पाव पानी में पकायें। आधा पाव शेष रहने पर, छान कर यथेच्छा मिश्री व डेढ़ ग्राम श्वेत जीरा चूर्ण मिलाकर सुबह शाम पिलावें तथा भोजन में इसके कच्चे फलों का रायता बनाकर खिलायें।

गर्भस्थापना के बाद : गर्भ के स्थिर हो जाने पर गूलर के कच्चे फलों से सिद्ध किए हुए गाय के दूध से भोजन देना चाहिए। जिससे गर्भ की वृद्धि होकर गर्भपात होने की संभावना भी समाप्त हो जाती है।[5]

मूत्ररोग : इसके 8–10 बूंद दूध को दो बताशों में भरकर रोज खिलाने से मूत्ररोंग मिटते हैं।

मूत्रकृच्छ्र : नित्य प्रातः 2–2 पके फल रोगी को सेवन करायें।

प्रमेह :

1. पूय प्रमेह में कच्चे फलों का महीन चूर्ण समभाग खांड मिलाकर 2 से 6 ग्राम तक, या 10 ग्राम तक, कच्चे दूध में मिश्री मिली हुई लस्सी के साथ सेवन करने से सुजाक प्रथम अवस्था में विशेष लाभ होता है।
2. पित्त प्रमेह पर फलों के केवल सूखे छिल्कों को (बीजरहित) महीन पीसकर समभाग मिश्री मिलाकर, 6–6 ग्राम सुबह–शाम गाय के दूध के साथ प्रयोग करें।
3. 50 ग्राम जौकुट चूर्ण के क्वाथ में 3 ग्राम कत्था व 1 ग्राम कपूर मिलाकर, सुहाते–सुहाते क्वाथ से मूत्रेन्द्रिय को धोते रहने से अंदर के जख्म भरकर

Scanned by CamScanner

मवाद आना बंद हो जाता है।

बाजीकरणार्थ :

1. फल का चूर्ण तथा बिदारी कन्द का चूर्ण, समभाग 4–6 ग्राम की मात्रा में मिश्री और घी मिले हुए दूध के साथ प्रातः–सायं सेवन करने से पौरूष शक्ति की वृद्धि व बाजीकरण की क्षमता बढ़ जाती है। स्त्रियां यदि सेवन करें तो समस्त स्त्री रोग दूर होकर लावण्यता बढ़ती है।
2. ग्रीष्मकाल में पके फलों का शरबत, मन को प्रसन्न करने वाला, बल्य, कब्ज तथा श्वास–कास नाशक है।
3. कच्चे फलों को पीस–छानकर जल के साथ पिलाने से किसी भी वजह से बढ़ी हुई प्यास शांत होती है।

पित्त ज्वर : ताजे मूल का 5–10 ग्राम रस में या जड़ की छाल के 50 मिलीलीटर हिम (10 गुणा पानी में भिगोकर तीन घंटे बाद छानकर) में शक्कर मिलाकर प्रातः–सायं पीने से तृष्णा–युक्त ज्वर की शांति होती है।

पित्त दाह : गूलर की गोंद 1 ग्राम, शक्कर 3 ग्राम की फंकी देने से पित्त ज्वर की दाह में लाभ होता है।

पित्त विकार : इसके पत्तों को पीसकर शहद के साथ चाटने से पित्त विकार शांत होते हैं।

सूजन : इसकी छाल को पीसकर लेप करने से भिलावे की धुएं से उत्पन्न हुई शोथ उतर जाती है।

व्रण : गूलर के दूध में बावची के बीज भिगोकर, पीसकर 1–2 चम्मच की मात्रा में नियमित लेप करने से सभी प्रकार की पिंडिकाएं और व्रण मिट जाते हैं।

1. उदुम्बरः क्षीरवृक्षो हेमदुग्धः सदाफलः।
   अपुष्प फल संबद्धो यज्ञांगः शीतवल्कलः।।
   कृमिवृक्षो जन्तुफलो मशकी जघनेफलः।
   पुष्प शून्यः शीतफलः पवित्रः सुप्रतिष्ठतः।। (भाव प्रकाश)
2. उदुम्बरो हिमो रूक्षो गुरुः पित्तकफास्रजित्।
   मधुरस्तुवरो वर्ण्यो व्रणशोधनरोपणः। (भाव प्रकाश)
3. औदुम्बरं कषायं स्यात् पक्वं तु मधुरं हिमम्।
   कृमिकृत् रक्तपित्तघ्नं मूर्च्छादाहतृषापहम्।। (ध०नि०)
4. न्यासोधोदुम्बराश्वत्थप्लक्षमधुककपीतनककुभाम्र.....। (सुश्रुत)
5. व्यवस्थिते च गर्भे गव्येनोदुम्बरशलादुसिढयेन पयसा भोजयेत्। (सुश्रुत)
6. उदुम्बरक्वाथयुतं सिताढ्यं सुगंधशालिप्रभवं सितं च।
   या पिष्टमश्नाति न गर्भपातपीडामसौ विन्दति जातुनारी। (शोढल निघटु)

Scanned by CamScanner

62 गोरखमुण्डी

वैज्ञानिक नाम	:	*Sphaeranthus indicus* L.
कुलनाम	:	Asteraceae
अंग्रेजी नाम	:	East Indian globe thistle
संस्कृत	:	मुण्डी, मुंडिका, श्रावणी, भिक्षु, परिव्राजी
हिन्दी	:	गोरखमुण्डी, मुण्डी
गुजराती	:	गोरखमुंडी
मराठी		गोरखमुंडी, बोड़थरा
बंगाली	:	मुंडीरी, छांगल, मुड़मुड़िया
पंजाबी	:	बोड़तरमु

परिचय

समस्त भारत में विशेषतः हिमाचल प्रदेश में मुंडी के स्वयंजात क्षुप 5,000 फुट की ऊंचाई तक मिलते हैं। धान के खेतों में तथा नम जंगलों में इसके पौधे अधिक मिलते हैं। इस पर शीतकाल में पुष्प और बाद में फल लगते हैं। चरक संहिता में इसकी एक और जाति महाश्रावणी *S. africans* Linn. का भी वर्णन मिलता है।

बाह्य–स्वरूप

मुंडी के प्रसरणशील एवं गंधयुक्त क्षुप 1–3 फुट ऊंचे या जमीन पर फैले हुए होते हैं। कांड सपक्ष, शाखाएं कोमल, रोमयुक्त नलिकाकार, पत्र अवृन्त रोमश अभिलट्वाकार, दंतुर तथा 1-2 इंच तक लम्बे कांड सशक्त होती है। पुष्प मुंडकों में, पत्राभिमुख उभयलिंगी बैंगनी रंग के छोटे–छोटे होते हैं।

Scanned by CamScanner

रासायनिक संघटन

इसमें एक तिक्त क्षाराभ स्फेरैन्थिन तथा एक ग्लुकोसाइड पाया जाता है। इससे एक रक्ताभ सुगन्धित तेल भी प्राप्त होता है, जिसमें युजिनॉल, आसिमिन आदि घटक होते हैं। क्षुप से एक पीताभ हरित स्थिर तेल प्राप्त होता है। पुष्प मुंडक में एलब्युमिन, एक तेल, रिड्युसिंग शर्करा, टैनिन, खनिज द्रव्य, उड़नशील तेल तथा ग्लुकोसाइड पाये जाते हैं।

गुण–धर्म

यह वनस्पति दिल, दिमाग, जिगर और मेदे को ताकत देती है। दिल की धड़कन, दहशत, प्लीहा, पीलिया, आंखों का पीलापन, पित्त और वात से पैदा हुई बीमारियों, मूत्र और गर्भाशय की जलन दूर करती है। कंठमाला, क्षयजनित ग्रन्थियां, तर और खुश्क खु, जली, दाद, कोढ़ और वात सम्बन्धी रोगों में यह बहुत लाभदायक है।[1] गोरखमुण्डी कटु तिक्त आदि गुणों के कारण अपची, अपस्मार, गलगण्ड एवं श्लीपद आदि रोगों का नाश करती है।[2]

औषधीय प्रयोग

सिर पीड़ा : सूर्यावर्त, आधाशीशी आदि में इसके 3 से 5 ग्राम स्वरस में मरिच चूर्ण ¼ ग्राम मिलाकर प्रातः–सायं पिलाने से लाभ होता है।[3]

सफेद बाल : गोरखमुण्डी की जड़ या पंचांग को पुष्पागमन से पूर्व काले भांगरे (जो अब प्रायः अनुपलब्ध हैं) अथवा सामान्य भृंगराज को भी छाया शुष्क कर लें, दोनों के समभाग चूर्ण को 2–8 ग्राम तक मधु व घी से 40–80 दिन तक सेवन कराने से बालों के सब रोग दूर होते हैं तथा सफेद बाल काले होने प्रारम्भ हो जाते हैं।

नेत्र रोग :

1. गोरखमुंडी की 1 मुंडी प्रातः खाली पेट 1 सप्ताह तक साबुत निगल जाने से 1 वर्ष तक आंख नहीं दुखती।
2. प्रतिवर्ष चैत्र मास में 4–5 मुंडी के ताजे फल थोड़े दांत से चबाकर पानी के घूंट के सथ हलक में उतार लें तो मनुष्य की आंख की तंदुरुस्ती और रोशनी हमेशा कायम रहती है।
3. मुण्डी पंचांग के छाया शुष्क चूर्ण में समभाग मिलाकर गाय के दूध के साथ प्रातः–सायं खाने से नेत्रों के बहुत से रोग मिटते हैं तथा नेत्र ज्योति बनाये रखने के लिए अत्यन्त लाभप्रद है।
4. नेत्र ज्योति कम हो जाने पर, इसके पुष्पों या पत्तियों का स्वरस नेत्रों में दिन में दो बार लगाते रहने से लाभ होता है।
5. ताजे पंचांग को तांबे के बरतन में रखकर, नीम के डंडे से खूब रगड़ते हैं, जब वह काला हो जाता है, उसमें रूई को अच्छी तरह भिगोकर सुखा लेते हैं। नेत्र पीड़ा में रूई को जल में भिगोकर नेत्रों पर रखने से बहुत लाभ होता है।

मुख दुर्गन्ध : मुख दुर्गन्ध पर गोरखमुण्डी चूर्ण को कांजी में मिला थोड़ा–थोड़ा पिलायें या किसी दन्त मंजन में इसके पुष्प चूर्ण को मिलाकर मंजन करें।

Scanned by CamScanner

स्वरमाधुर्य : मुण्डी फलों के 50 ग्राम चूर्ण में 10 ग्राम शुंठी मिलाकर शहद के साथ डेढ़ ग्राम की मात्रा में दिन में 3–4 बार चटाने से लाभ होता है।

हृदय की कमजोरी : गोरखमुंडी के फलों का अर्क, नेत्ररोग, दिल की धड़कन और हृदय की कमजोरी दूर करता है। इसके लगातार सेवन से गीली और सूखी खुजली मिट जाती है। शुरू में इसको 15 ग्राम की मात्रा में लेना चाहिए। बाद में बढ़ाते रहना चाहिए। पथ्य–खट्टी और गरम चीजें, अधिक परिश्रम व मैथुन से बचना चाहिए।

पेट की वायु : बकरी या गाय के दूध के साथ इसके 3 ग्राम चूर्ण की फंकी लेने से पेट की वायु मिटती है।

आम अतिसार : गोरखमुण्डी की जड़ और सौंफ दोनों समभाग 10 ग्राम लगभग पीसकर, मिश्री–युक्त जल से प्रातः–सायं सेवन कराने से लाभ होता है।

कृमि : दोनों समय इसका चूर्ण 1 ग्राम जल के साथ सेवन करने से पेट के सब कीड़े मर जाते हैं।

अर्श : इसका पत्र स्वरस और एरंड पत्र स्वरस 25 ग्राम मिलाकर पिलाने से तथा इसके पत्तों की लुग्दी मस्सों पर बांधने से तथा पंचांग की धूनी मस्सों पर देने से लाभ होता है।

भगन्दर : मुंडी चूर्ण को बासी पानी के साथ लेने से भगन्दर मिटता है।

जलोदर : एरंड तेल 10 ग्राम के साथ मुंडी चूर्ण 3 ग्राम प्रातः–सायं लेने से जलोदर मिटता है।

प्रमेह : गौदुग्ध के साथ इसका चूर्ण लेने से चित्तभ्रम और प्रमेह मिटता है।

योनिशूल : 10 ग्राम ताजे पंचांग (न मिलने पर छाया शुष्क पंचांग) को जल से पीसकर पिलाने से भयंकर शूल दूर होता है। प्रदर में भी लाभ होता है। जीर्ण स्थाई योनिशूल और प्रदर में कुछ दिन सेवन करायें।

वातरक्त : मुंडी 3 ग्राम और कुटकी 1 भाग चूर्ण को मधु के साथ नित्य प्रति 2–3 ग्राम मात्रा में तीन बार चटाने से वातरक्त मिटता है।

आमवात : मुण्डी फल के साथ समभाग सोंठ चूर्ण, उष्णोदक से दोनों समय 3 ग्राम सेवन करें तथा फलों को महीन पीसकर पीड़ा स्थान पर लेप करें।

नपुंसकता : मुंडी की ताजी जड़ों के पीसे हुए कल्क, कलई दार पीतल की कढ़ाई में रखकर चौगुना काले तिल का तेल और सोलह गुना पानी डालकर पकायें। तेल केवल शेष रहने पर छान लें। इस तेल की कामेन्द्रियों पर मालिश करने से तथा 10–30 बूंद तक पान में लगाकर दिन में 2–3 बार खाने से नपुंसकता मिटती है।

यौवनः

1. गोरखमुंडी के पौधे को छाया में सुखाकर, पीसकर बराबर मात्रा में मिश्री मिलाकर एक चम्मच प्रातः–सायं दूध के साथ सेवन करने से मनुष्य का यौवन स्थिर रहता है तथा उसके बाल सफेद नहीं होते।
2. गोरखमुंडी के बीजों को पीसकर उनमें समभाग शक्कर मिलाकर एक हथेली भर प्रतिदिन लगातार खाने से बहुत ताकत पैदा होती है और मनुष्य दीर्घायु हो जाता है।
3. इसके चूर्ण को घी के साथ चाटने से बल बढ़ता है।
4. गोरखमुंडी के पौधे की छाया शुष्क चूर्ण में दोगुना शहद मिलाकर 40 दिन तक गरम दूध के साथ प्रातः–सायं सेवन करने से शारीरिक शक्ति की वृद्धि होती है।

रक्त पित्त : पत्र रस के साथ अडूसा पत्र रस मिलाकर 1 चम्मच दिन में तीन बार सेवन करने से लाभ होता है।

चर्म रोग : पत्तों को जल में पीसकर लेप करने अथवा पत्र स्वरस लगाने से अनेक चर्मरोग, उपदंश के व्रण एवं पुराने घाव व पारदजन्य विकारों की शांति होती है।

कम्पवात : इसके 50 ग्राम चूर्ण में 100 ग्राम लौंग मिलाकर 3 से 5 ग्राम की मात्रा में मधु मिलाकर प्रातः–सायं चटाने से लाभ होता है।

गर्भ धारणार्थ : जायफल के 1 ग्राम चूर्ण के साथ इसका 2 भाग चूर्ण मिलाकर 3 ग्राम लगभग चूर्ण बकरी के दूध के साथ प्रातः–सायं लेने से स्त्री गर्भधारण करती है।

ज्वरदाह : मुंडी चूर्ण 2 ग्राम को काली मिर्च ¼ ग्राम चूर्ण शहद या दूध के साथ लेने से ज्वर और दाह मिटती है।

1. मुण्डी तिक्ता कटुः पाके वीर्योष्णा मधुरा लघुः।
मेध्या गंडापचीकुष्ठकृमियोन्यर्तिपाण्डुनुत्।।
श्लीपदारूच्यपस्मार प्लीहमेदोगुदार्तिहृत्।
महामुण्डी च तत्तुल्या गुणैरूक्ता महर्षिभिः।। (भाव प्रकाश)

2. मुंडिका कटुतिक्ता स्यादनिलास्रविनाशिनी।
अपचीघ्नी ह्यपस्मारगण्डश्लीपदनाशिनी।। (ध०नि०)

3. पीत्त्वा मुण्डितिकोत्थं स्वरसं मरिचावचूर्णितं चोष्णम्।
भक्तादौ सप्ताहात् सूर्यावर्ताधभेदकौ हन्यात्।। (ग०नि०)

Scanned by CamScanner

गुड़हल

63

वैज्ञानिक नाम	:	*Hibiscus rosa-sinensis* L.
कुलनाम	:	Malvaceae
अंग्रेजी नाम	:	Shoe flower, China rose
संस्कृत	:	जपा, उर्ध्व पुष्प, अर्क प्रिया, औण्ड्र पुष्प
हिन्दी	:	गुड़हल
गुजराती	:	जासुस
मराठी	:	जास्वंद, जासुंदी
तैलगु	:	दासानि, पुब्बु, दासनमु
पंजाबी	:	गुड़हल
अरबी	:	अंगिरा
फारसी	:	अंगिरा
बंगाली	:	जवाफुल, जबा

परिचय

गुड़हल के फूल का वृक्ष अपने आकर्षक रंगों, नैसर्गिक सौन्दर्य तथा अत्यन्त लुभावने घंटाकार पुष्प के कारण उद्यान, घर, और मंदिरों में लगाये जाते हैं। पुष्प इकहरा, दुहरा, तिहरा, लाल, श्वेत या श्वेत लाल, बैंगनी पीला, नारंगी इत्यादि कई रंगों का होता है। श्वेत या श्वेताभ लाल रंग के पुष्पवाला गुड़हल विशेष गुणकारी होता है। इसकी केसर बाहर निकली हुई अलग से दिखलाई पड़ती है। इसमें अलग से कोई फल नहीं लगता है।

बाह्य–स्वरूप

इसका सदाबहार क्षुप 5–9 फुट ऊंचा, पत्र चमकीले, चिकने गहरे हरे रंग के कंगूरेदार तथा पुष्प बड़े घंटाकार होते हैं।

रासायनिक संघटन

गुड़हल के पुष्प में लौह, फास्फोरस, कैल्शियम, राइबोफ्लेविन, थियामीन, नियासिन व विटामिन सी अल्पमात्रा में होता है। इसके पत्तों में थोड़ी मात्रा में कैरोटिन पाया जाता है।

गुण–धर्म

यह कफ पित्तशामक है तथा पैत्तिक विकारों में प्रयुक्त होता

Scanned by CamScanner

है। यह रक्तरोधक, केश्य, स्तम्भन, शोणित स्थापन, गर्भनिरोधक, प्रदरनाशक, मूत्र संग्रहणीय तथा बल्य है।[1]

औषधीय प्रयोग

स्मरण शक्ति : गुड़हल के फूलों और पत्रों को सुखाकर, समभाग मिलाकर, पीसकर शीशी में भर लें। एक चम्मच की मात्रा में सुबह–शाम एक कप मीठे दूध के साथ नियमित रूप से पीते रहने से यौनशक्ति और स्मरण शक्ति बढ़ती है।

इन्द्रलुप्त :

1. गंजापन दूर करने के लिए काली गाय के मूत्र में गुड़हल के फूलों को पीसकर लगाने से बाल बढ़ते हैं। तथा गंजापन दूर होता है।
2. गुड़हल के पत्तों को पीसकर लुग्दी बनाकर बालों में लगा लें। दो घंटे बाद बाल धोकर साफ कर लें। इस प्रयोग को नियमित रूप से करते रहने से न केवल बालों को पोषण मिलता है, बल्कि सिर में शीतलता का भी अनुभव होता है।
3. ताजे फूलों के रस में समभाग जैतून का तेल मिलाकर आग में पका लें। जब केवल तेल शेष रह जाये तो शीशी में भरकर रख लें। प्रतिदिन बालों में मल कर जड़ों तक लगाने से बाल चमकीले और लम्बे होते हैं।
4. गुड़हल के फूल और भृंगराज के फूल, भेड़ के दूध में पीसकर लोहे के पात्र में रखें, सात दिन बाद निकालकर भृंगराज के पंचांग के रस में मिलाकर, रात को गर्म कर बालों में लगायें। प्रातः सिर धोने से बाल काले हो जाते हैं।

Scanned by CamScanner

मुंह के छाले : गुड़हल की जड़ को साफ कर, धोकर, एक–एक इंच के टुकड़ो में काट कर रख लें। दिन में 3–4 बार, एक–एक टुकड़ा चबाकर राल थूकते जायें। एक दो दिन में ही छालों में आराम मिलेगा।

श्वित्र रोग : श्वित्र रोग में गुड़हल के चार पुष्प प्रातः–सायं 2 वर्ष तक सेवन करने से रोग मिट जाता है।

खांसी : इसकी जड का क्वाथ खांसी में लाभकारी होता है।

रक्त अतिसार व अर्श : कलियों को घी में तलकर उसमें मिश्री व नागकेशर मिलाकर प्रातः–सायं सेवन करने से लाभ होता है।

गर्भधारणार्थ :

1. श्वेत गुड़हल की जड़ को गौदुग्ध में पीसकर उसमें बिजौरा नींबू के बीज का महीन चूर्ण मिलाकर, मासिक धर्म के समय पिलाने से गर्भधारण होता है।
2. मूल और फूलों का 30–50 मि०ली० क्वाथ प्रातःकाल पिलाते रहने से गर्भ स्थित बालक की पुष्टि होती है।

सुजाक :

1. इसकी 11 पत्तियों को साफ जल में पीस–छानकर उसमें यवक्षार 8 ग्राम व मिश्री 25 ग्राम मिलाकर, प्रातः–सायं दो बार पीने से विशेष लाभ होता है।
2. प्रथम दिन 1 पुष्प, दूसरे दिन दो पुष्प तथा पांचवें दिन 5 पुष्प, बतासे या मिश्री के साथ खायें। फिर 1–1 फूल घटाते हुए दसवें दिन 1 फूल खायें तथा पथ्य और परहेज से रहें।

गर्भ निरोधार्थ : पुष्पों को कांजी में पीसकर, 50 ग्राम तक पुराना गुड़ मिलाकर, मासिक धर्म के समय तीन दिन तक खाने से स्त्री गर्भधारण नहीं करती।

प्रदर रोग :

1. इसकी 4–5 कलियों को घी में तलकर, प्रातः सात दिन तक मिश्री के साथ खाने तथा गाय का दूध पीने से आराम हो जाता है।
2. मूल के चूर्ण में समभाग कमल मूल चूर्ण व श्वेत सेमल की छाल का चूर्ण मिलाकर, 4 से 6 ग्राम तक जल के साथ सेवन कराने से लाभ होता है।
3. इसके पुष्पों को घी में तलकर बूरा के साथ खिलाने से रक्त प्रदर मिटता है।

फिरंग व्रण : इसके पत्रों के क्वाथ से फिरंग व्रण होने से शीघ्र व्रणरोपण होता है।

रक्ताल्पता : गुड़हल के सूखे फूलों का एक–एक चम्मच चूर्ण, एक कप दूध के साथ प्रातः–सायं नियमित रूप से सेवन करते रहने से कुछ ही माह में रक्त की कमी दूर होकर शारीरिक स्फूर्ति व बलवृद्धि होती है।

पुरूषार्थ : इसके छाया शुष्क पुष्पों या पत्तों के चूर्ण में समभाग खांड मिलाकर 40 दिन तक 6 ग्राम की मात्रा लगातार लेने से पुरूषार्थ बढ़ता है।

दारूणरोग : इसके पुष्पों के रस में बराबर तिल तेल मिला कर उबालें, तेल शेष रहने पर उसको उतार–छानकर शीशी में भर लें। इस तेल को लगाने से दारूण रोग मिटता है।

सूजन और दर्द : गुड़हल के पत्तों को पानी में पीसकर बनाया हुआ गाढ़ा लेप सूजन पर लगाने से सूजन और दर्द में आराम मिलता है।

गुड़हल का शरबत :

1. इसके 100 फूल लेकर, हरे डंठल को दूर कर पंखुड़ियों को नींबू के साफ रस में रात्रि में किसी खुले स्थान पर कांच के बरतन में मुंह बंद कर भिगोकर रख दें। प्रातः मसल छानकर, इसमें 650 ग्राम मिश्री या चीनी, 1 बोतल उत्तम गुलाब जल मिलाकर, दो बोतलों में बंद कर धूप में दो दिन तक रखें तथा हिलाते रहें। मिश्री अच्छी तरह घुल जाने पर शरबत बन जाता है। 15 से 40 मि०ली० तक की मात्रा पीते रहने से खून की गर्मी दूर होकर, शिर पीड़ा, जी मिचलाना, बेहोशी, चक्कर, नकसीर, रक्त प्रदर, नेत्र जलन, अरूचि, छाती की जलन, उन्माद, निद्रानाश, लू लगना आदि में लाभ होता है।
2. गुड़हल के 100 पुष्प लेकर शीशे की बरणी में डालकर, 20 नींबू निचोड़ कर ढक दें। रात भर रखने के बाद, प्रातःकाल मसलकर कपड़े में छानकर रस निकाल लें। रस में 800 ग्राम मिश्री, 200 ग्राम गुले गाजबान का अर्क, 200 ग्राम मीठे अनार का रस, 200 ग्राम संतरे का रस मिलाकर मंद अग्नि पर पकायें। जब चासनी गाढ़ी हो जाये तो उतारकर 250 मिलीग्राम कस्तूरी, अम्बर 3 ग्राम, केसर, तथा गुलाब अर्क मिलाकर अच्छी तरह हिलायें। यह शरबत हृदय तथा मस्तिष्क को शांति देता है। तथा उन्माद पैत्तिक ज्वर और प्रदर में लाभकारी है।

हानिकारक : अधिक मात्रा में सेवन करने से यह आँखों में कृमि उत्पन्न करता है। यह शीत प्रकृति वालों के लिये हानिकर है। हानि निवारणार्थ काली मिर्च व मिश्री का सेवन करना चाहिये।

1 जपा संग्राहिणी केश्या..... । (भाव प्रकाश)

2. जपापुष्पं लघु ग्राही तिक्तं केश विबर्धनम्..... । (नि०र०)

Scanned by CamScanner

64 गुलदाऊदी

शेवंती

वैज्ञानिक नाम	:	*Chrysanthemum coronarium* L.
कुलनाम	:	Asteraceae
अंग्रेजी नाम	:	Chrysanthemum
संस्कृत	:	शिववल्लभा, चन्द्र मल्लिका, सेवती, गृहकमल
हिन्दी	:	गुलदाऊदी, गुलरेवती
गुजराती	:	कांटे शेवती
मराठी	:	गुलरेवती, तुरसफिल
पंजाबी	:	गेन्दी, बगोर
तमिल	:	अकरकम, शावंती
तैलगु	:	चमन्ती
बंगाली	:	चन्द्रमल्किा
अरबी	:	नसरीन

परिचय

शोभा के लिए इसके पौधे बगीचों में और घरों में गमलों में लगाये जाते हैं। अनेकोंनेक रंगों में गुलदाऊदी के मनमोहक तथा शोभायमान पुष्प होते हैं।

वाह्य–स्वरूप

इसके फूल, सफेद, नारंगी, पीले, गुलाबी, बैंगनी अनेक रंगों के होते हैं। इसकी पत्तियां भी आकार में अलग–अलग होती हैं। छोटे फूल वाली वनस्पति अधिक गुणकारी है।

रासायनिक संघटन

इसमें एसेसिंयल आयल, ग्लुकोसाइड और क्रिसेन्थेमम पाये जाते हैं।

गुण–धर्म

शीतल, कटु, पौष्टिक, हृद्य, वीर्यवर्धक, कांतिवर्धक और वातपित्त तथा दाहनाशक है। सेवती की जड़, अकरकरे की जड़ के समान मुंह में चबाने से चरमराहट उत्पन्न करती है।

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

हृदय बल : इसके फूलों का 4–6 बूंद अर्क या गुलकन्द, शीत की वजह से उत्पन्न हृदय की धड़कनों को सामान्य करता है, दिल को ताकत देता है तथा प्रसन्नता पैदा करता है।

उदरशूल : इसके फूलों का 20 ग्राम काढ़ा प्रातः–सायं पीने से वायु से उत्पन्न उदरशूल में लाभ होता है।

मूत्रकृच्छ्र : सेवती के 8–10 पत्तों को 2 नग काली मिर्च के साथ पीसकर दिन में दो–तीन बार पिलाने से मूत्रकृच्छ्र मिटता है।

अश्मरी :

1. सेवती के सूखे फूल एक ग्राम से लेकर छह ग्राम तक पीसकर समान भाग मिश्री मिलाकर खाने से गुर्दे और मसाने की पथरी टूटकर निकल जाती है।
2. गुलदाऊदी के 30 ग्राम फूलों को 400 ग्राम पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ को प्रातः–सायं पीने से पथरी भी गलकर निकल जाती है।

मासिक धर्म : सेवती के 10–20 ग्राम फूलों को 240 ग्राम पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ नियमित प्रातः–सायं पीने से मासिक धर्म की रूकावट को दूर कर उसे नियमित करता है।

बवासीर : इसके पत्तों का 5–10 ग्राम शीत निर्यास 20 ग्राम शक्कर के साथ मिलाकर पीने से बवासीर में रक्तस्राव बंद हो जाता है।

सूजन : कफ की वजह से उत्पन्न शोथ पर 10 ग्राम गुलदाऊदी फूल, तीन ग्राम सौंठ और एक ग्राम सफेद जीरा, तीनों को पीसकर लेप करने से सूजन समाप्त हो जाती है।

बल्य : सेवती के हरे पत्तों को पीसकर अंडकोशों और गुदा के बीच मलने से कामेन्द्रियों की शक्ति बढ़ती है।

दाह : इसके पत्तों का लेप प्रदाह को कम करता है।

व्रण : इसकी जड़ को घिसकर गर्म कर पके हुए फोड़े पर लेप करने से उसका मुंह खुल जाता है।

गांठ : इसकी जड़ को पीसकर पुल्टिस बनाकर बांधने से कच्ची गांठे बिखर जाती हैं और पकने वाली जल्दी पक जाती है।

विविध रोग : सेवती की जड़, कुलंजन और सौंठ तीनों समभाग लेकर इनकी 10 ग्राम मात्रा 100 ग्राम पानी के साथ उबालकर पिलाने से शूल, स्त्रियों का आवेश का रोग, मस्तक पीड़ा तथा तन्द्रा मिटती है।

Scanned by CamScanner

65 घृतकुमारी

वैज्ञानिक नाम	:	*Aloe vera* (L.) Burm. f.
कुलनाम	:	Lilliaceae
अंग्रेजी नाम	:	Indian Aloe
संस्कृत	:	घृतकुमारिका, गृहकन्या, स्थूल दला
हिन्दी	:	घी कुंआर, ग्वारपाठा
गुजराती	:	कुँबार
मराठी	:	कोरफड़
बंगाली	:	घृतकुमारी
पंजाबी	:	कुंवार गंदल
तेलगु	:	कलबदं
द्राविड़ी	:	कतालै
कन्नड़	:	तौलसरै, लोलिसार
अरबी	:	सब्बरित
फारसी	:	दरख्ते सिब्र

परिचय

यह भारतवर्ष में सर्वत्र प्राप्त होती हैं। प्रायः इसको लोग घरों के अंदर गमलों आदि में लगा लेते हैं।

बाह्य–स्वरूप

इसमें कांड नहीं होता, जड़ के ऊपर से ही चारों तरफ मोटे–मोटे मांसल पत्ते, गूदे से परिपूर्ण 1–2 फीट लम्बे दो इंच चौड़े होते हैं इनके किनारों पर छोटे–छोटे कांटे होते हैं जिससे ये आरी की तरह दिखते हैं। क्षुप के मध्य से लम्बा पुष्प ध्वज निकलता है, जिसमें रक्ताभ पुष्प, शीतकाल के अंत में लगते हैं। इसके पत्तों को काटने पर पीताभ वर्णका पिच्छिल द्रव्य निकलता है जो ठंडा होने पर जम जाता है, इसे कुमारी सार कहते हैं।

रासायनिक संघटन

कुमारी सार में एलौइन ग्लुकोसाइड समूह होता है। एलोईन का मुख्य घटक बर्बिलोइन नामक हलके पीले रंग का स्फटिकीय ग्लूकोसाइड है। इसके अतिरिक्त कुछ राल तथा एक सुगंधित तेल होता है।

Scanned by CamScanner

गुण–धर्म

यह पचने में भारी, स्निग्ध, पिच्छिल, कटु, शीतल और विपाक में तिक्त है। घृतकुमारी दस्तावर, शीतल, तिक्त, नेत्रों के लिए हितकारी, रसायन, मधुर, पुष्टिकारक, वीर्यवर्द्धक और वात, विष गुल्म, प्लीहा, यकृत, अंडवृद्धि, कफ, ज्वर, ग्रन्थि, अग्निदाह, विस्फोटक, पित्त, रूधिर–विकार तथा त्वचा रोगनाशक है।[1,2] अल्पमात्रा में यह दीपन, पाचन भेदन, यकृत उत्तेजक तथा बड़ी मात्रा में विरेचन और कृमिघ्न है। यह स्निग्ध, पिच्छिल एवं उष्ण होने के कारण गर्भाश्यगत रक्त संवहन को बढ़ा देता है तथा गर्भाशय की पेशियों को उत्तेजित कर उनका संकोच बढ़ा देता है इस कारण यह आर्त्तवजनन और गर्भस्रावकर है।[3]

औषधीय प्रयोग

शिरोवेदना : शिरोवेदना में कुमारी के गूदें में थोड़ी मात्रा में दारूहरिद्रा का चूर्ण मिश्रित कर गरम करके वेदना स्थान पर बांधने से वातज तथा कफज शिरशूल में लाभ होता है।

इन्द्रलुप्त : रक्त घृत कुमारी (जिसमें नारंगी और कुछ लाल रंग के पुष्प लगते हैं) के गूदे को स्प्रिट में गलाकर सिर में लेप करने से बाल काले हो जाते हैं। गंजे सिर पर लगाने से बाल उग आते हैं।

नेत्ररोग :

1. इसका गूदा आँखों में लगाने से लाली मिटती है, गरमी दूर होती है। वायरल कंजक्टीवाइटिस में यह लाभ करती है।
2. कुमारी के 1 ग्राम गूदें में 375 मिग्रा. अफीम मिलाकर पोटली बांध कर पानी में भिगो कर नेत्रों पर फिराने से और 1–2 बूंद नेत्रों के अन्दर डालने से नेत्र पीड़ा मिटती है।
3. इसके गूदे पर हल्दी डालकर थोड़ा गरम कर नेत्रों पर बांधने से नेत्रों की पीड़ा मिट जाती है।

कर्णशूल : इसके रस को गरम कर जिस कान में शूल हो, उससे दूसरी तरफ के कान में दो–दो बूंद टपकाने से कर्णशूल मिट जाता है।

कान के कीड़े : गर्मी के कारण कान में कीड़े पड़ गये हों तो एलुआ पानी में पीसकर कान में 2–2 बूंद डालने से कान के कीड़े मर जाते हैं।

कास : कुमारी का गूदा और सैंधा लवण दोनों की भस्म बनाकर 12 ग्राम की मात्रा में मुनक्का के साथ सुबह शाम सेवन करने से कास तथा जीर्ण कास तथा कफज श्वास नष्ट होती है।

वायु गोला : कुमारी का गूदा 6 ग्राम, गाय का घी 6 ग्राम, हरीतकी चूर्ण 1 ग्राम, सेंधा नमक 1 ग्राम, सबको मिलाकर सुबह शाम खाने से वायु गोला मिट जाता है।

उदरगांठ : इसके गूदे को पेट के ऊपर बांधने से पेट की गांठ बैठ जाती है। कठिन पेट मुलायम हो जाता है। और आँतो में जमा हुआ मल बाहर निकल जाता है।

उदरशूल : कुमारी की 10–20 जड़ को कुचलकर उबालकर छानकर उस पर भुनी हुई हींग बुरककर देने से पेट की शूल मिटती है।

गुल्म : घी कुंवार का गूदा निकाल कर समभाग घृत मिलाकर (60–60 ग्राम दोनों) उसमें हरीतकी चूर्ण तथा सैंधा लवण 10–10 ग्राम की मात्रा में मिलाकर भली भांति घोंट लेते हैं। इसको 10–15 ग्राम की मात्रा प्रातः एवं सायं सेवन करने से वातज गुल्म आदि उदर तथा वातजन्य विकारों में गुनगुने पानी के साथ प्रयोग करने से लाभ होता है।

मासिक धर्म : कुमारी के 10 ग्राम गूदे पर 500 मिलीग्राम पलाश का क्षार बुरक कर दिन में दो बार सेवन करने से मासिक धर्म शुद्ध होने लगता है।

मूत्रकृच्छ्र : कुमारी के ताजे 5–10 ग्राम गूदे में शक्कर मिलाकर खाने से मूत्रकृच्छ्र और दाह मिटती है।

रक्तार्श : अर्शाकुर में कुमारी के 50 ग्राम गूदे में 2 ग्राम पिसा हुआ गेरू मिलाकर इसकी टिकिया बनाकर, रुई के फोहे पर फैलाकर गुदा स्थान पर रखकर लंगोट की तरह पट्टी बांध देनी चाहिये। इससे मस्सों में होने वाली जलन तथा दर्द का शमन होता है एवं मस्से सिकुड़ कर दब जाते है। यह प्रयोग रक्तार्श में भी लाभदायक है।

बच्चों की कब्जीयत : छोटे बच्चे की नाभि पर साबुन के साथ इसके गूदे का लेप करने से दस्त साफ होता है।

उपदंश : उपदंशजनित व्रणों में घृतकुमारी के गूदे का बाह्य लेप लाभकारी होता है।

मधुमेह : मधुमेह में घीक्वार का 5 ग्राम गूदा 250 से 500 मिलीग्राम गूडुची सत्व के साथ देते हैं।

कामला :

1. कामला में कुमारी का 10–20 मिलीलीटर रस दिन में दो तीन बार पिलाने से पित्त नलिका का अवरोध दूर होकर लाभ हो जाता है। इस प्रयोग से नेत्रों का पीलापन एवं कब्ज दूर हो जाता है। इसके रस का रोगी की नाक में नस्य देने से नासास्राव पीतवर्ण का होने से लाभ होता है।
2. कुमारी लवण को 3–6 ग्राम तक की मात्रा में छाछ के साथ देने से प्लीहावृद्धि, यकृतवृद्धि, आध्मान शूल तथा अन्य पाचन संस्थान गत विकारों में लाभ होता है। कुमारी के पत्तों का गूदा निकालकर शेष छिलकों को मटकी में भरकर, बराबर मात्रा में नमक मिला कर मुंह बन्द कर कंडों की अग्नि में रख देते हैं। जब अन्दर का द्रव्य जलकर काला हो जाता है तो उसे महीन पीसकर शीशी में भरकर रखते हैं। इसी का औषधीय प्रयोग किया जाता है।

यकृत् दौर्बल्य : कुमारी के पत्तों का रस दो भाग तथा मधु 1 भाग दोनों द्रव्यों को चीनी मिट्टी के पात्र में मुंह बन्द कर 1 सप्ताह तक

Scanned by CamScanner

धूप में रखते हैं। तत्पश्चात् इसको छान लेते हैं। यह औषधि योग 10–20 ग्राम की मात्रा में प्रातः–सायं सेवन करने से यकृत विकारों मे अच्छा लाभ करता है। इसकी अधिक मात्रा विरेचक है, परन्तु उचित मात्रा में सेवन करने से मल एवं वात की प्रवृत्ति ठीक होने लगती है, यकृत सबल हो जाता है और उसकी क्रिया सामान्य हो जाती है।

तिल्ली : कुमारी के गूदे पर सुहागा बुरक कर खिलाने से तिल्ली कट जाती है।

गठिया : इसका कोमल गूदा नियमित रूप से 10 ग्राम की मात्रा में प्रातः–सायं खाने से गठिया मिटती है।

बंद : इसकी पत्ती के टुकड़े का एक ओर का छिल्का हटाकर उस पर रसोत और हल्दी बुरक कर, गरम कर बांधने से बंद बिखर जाती है।

कटिपीड़ा : गेहूं का आटा, घी और कुमारी का गूदा इतना होना चाहिये जितना आटे में गूंथने के लिये काफी हो, आटे को गूदे में गूथकर रोटी बना ले, इस रोटी का चूर्ण बनाकर शक्कर ओर घी मिलाकर लड्डू बनाकर खाने से कमर की बादी मिटती है। कमर की पीड़ा मिटती है।

स्नायुक : एलुआ का लेप करने से स्नायुक गल जाता है।

ज्वर : घी कुमारी की जड़ का 10–20 ग्राम क्वाथ दिन में तीन बार पिलाने से ज्वर छूट जाता है।

व्रण, चोट आदि गांठ :

1. यदि व्रण अपरिपक्व हो तो घृतकुमारी के गूदे में थोड़ी सज्जीक्षार तथा हरिद्रा चूर्ण मिलाकर व्रण शोथ पर बांधने से फोड़ा जल्दी पककर फूट जाता है।
2. यदि फोड़ा पकने के नजदीक हो तो घृतकुमारी का गूदा गरम करके बांधने से फोड़ा और शीघ्रता से पककर फूट जाता है। जब व्रण फूट जाता है तो गूदे में थोड़ा हरिद्रा चूर्ण मिलाकर बांधने से व्रण शोधन होकर, घाव जल्दी भर जाता है।
3. गांठों की सूजन पर भी कुमारी के पत्ते को एक ओर से छीलकर तथा उस पर थोड़ा हरिद्रा चूर्ण बुरक कर तथा कुछ गरम करके बांधने से लाभ होता है।
4. चोट, मोच तथा कुचले जाने पर शोथ वेदनादि लक्षण युक्त विकार पर घृतकुमारी के गूदे में अफीम तथा हल्दी चूर्ण मिलाकर बांधने से आराम मिलता है।
5. स्त्रियों के स्तन में चोट आदि के कारण या अन्य किसी कारण से गांठ या सूजन होने पर इसकी जड़ की कल्क बनाकर उसमें थोड़ा हरिद्रा चूर्ण गरम करके बांधने से लाभ होता है। इसे दिन में 2–3 बार बदलना चाहिये।
6. घृतकुमारी का गूदा व्रणों को भरने के लिए सबसे उपयुक्त औषधि है। रेडियेशन के कारण हुऐ असाध्य व्रणों पर इसके प्रयोग से असाधारण सफलता मिलती है।

अग्निदग्ध : कुमारी के गूदे को अग्नि से जले हुये स्थान पर लगाने से दाह शान्त हो जाती है, तथा फफोले नहीं उठते।

नाड़ी व्रण : एलुआ और कत्था दोनों को बराबर पीसकर लेप करने से नाड़ी व्रण मिटता है।

विशेष : इसके पत्तों के दोनों ओर के कांटे अच्छी प्रकार साफ कर छोटे–छोटे टुकड़े काट लें, 5 किलो टुकड़े में आधा किलो नमक डालकर मुंह बन्दकर 2–3 दिन धूप में रखें। बीच–2 में हिलाते रहें। तीन दिन बाद इसमें 100 ग्राम हल्दी, 100 ग्राम धनिया, 100 ग्राम सफेद जीरा, 50 ग्राम लाल मिर्च, 60 ग्राम भुनी हींग 300 ग्राम अजवायन, 100 ग्राम शूंठी, 60 ग्राम काली मिर्च, 60 ग्राम पीपल, 50 ग्राम लौंग, 50 ग्राम दाल चीनी, 50 ग्राम सुहागा, 50 ग्राम अकरकरा, 100 ग्राम कालाजीरा, 50 ग्राम बड़ी इलायची, 300 ग्राम राई को महीन पीस कर डालें।

रोगी के बल के अनुसार 3 ग्राम से 6 ग्राम तक की मात्रा में प्रातः–सायं देने से पेट के वात कफ सम्बन्धी सभी विकार मिटते हैं। सूखने पर अचार, दाल, शाक आदि में डालकर प्रयोग करें।

1. कुमारी भेदनी, शीता, तिक्ता नेत्र्या रसायनी।
मधुरा वृंहणी बल्या वृष्या वातविषप्रणुत्।
गुल्मप्लीहयकृद्वृद्धिकफज्वरहरी हरेत।।
ग्रन्थ्यग्निदग्धविस्फोटपित्तरक्तत्वगामयान्।। (भाव प्रकाश)

2. गृह कन्या हिमा तिक्ता मदगन्धि कफापहा।
पित्तकासविषश्वासकुष्ठघ्नी च रसायनी।। (रा०नि०)

3. वीरास्रावः सहासारः कुमारीरससंम्भवः।
सहासारोऽग्निजननः पित्तनिर्हरणोमत्।।
बलकृद्रेचनः पुण्यजननो गर्भपातनः।
विट्सङ्गेकृमिरोगे च सन्यासेऽपस्मृतौतथा।।
लुप्ते रजसि नारीणं शीतपित्ते शिरोरुजि।
ज्वरे श्लेष्मोद्भवे प्लीन्हिमन्देऽग्नौ च प्रयुज्यते।।
अर्शसस्तं न सेवेत नान्तर्वत्नी न पुष्पिणी।
न चासृग्दरिणी नापि यकृद्वृक्कादि रोगान। (आ०वि०)

4. यकृत्कृमिप्लीह विबन्ध गुल्मशूलादिकेष्वैलमुशान्ति वैद्याः।। (सि०भे०म०)

Scanned by CamScanner

हल्दी

वैज्ञानिक नाम	:	*Curcuma longa* L.
कुलनाम	:	Zingiberaceae
अंग्रेजी नाम	:	Turmeric
संस्कृत	:	हरिद्रा, पीतिका, गौरी, दीर्घरागा, निशा, पीता, कृमिघ्ना, योषित्प्रिया
हिन्दी	:	हल्दी
गुजराती	:	हलदर
मराठी	:	हलद
बंगाली	:	हलुद
पंजाबी	:	हरदल
तेलगु	:	पसुपु
द्राविड़ी	:	मंजल
कन्नड़	:	अरिसीन, अरसिना
अरबी	:	उरू कुस्सुफ
फारसी	:	जर्दचोब

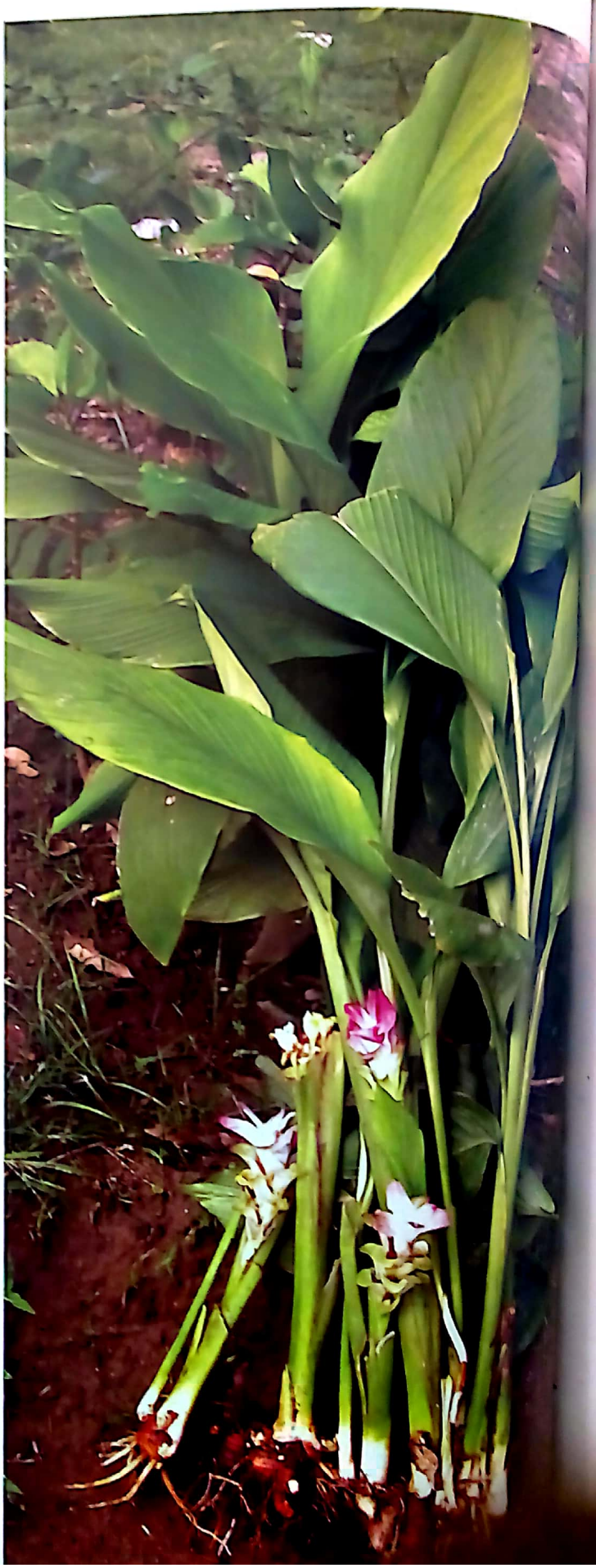

परिचय

रसोई घर में प्रयोग होने वाले मसालों में हल्दी अपना विशिष्ट स्थान रखती है। कोई भी मांगलिक कार्य बिना हल्दी के पूरा नहीं होता है। सौन्दर्य प्रसाधनों में भी इसका इस्तेमाल होता है। हल्दी की कई प्रजातियाँ पायी जाती है।

1. *Curcuma longa* : मसालों में इसका प्रयोग करते है।
2. *Curcuma aromatica* : इसके कन्द और पत्तो में कपूरमिश्रित आम्र की तरह गन्ध होती है। इसीलिये इसे आमाहल्दी (Mango ginger) कहा जाता है।
3. *Curcuma zedoaria* : यह बंगाल में बहुत पाई जाती है। यह रंगने के काम आती है। इसको जंगली हल्दी भी कहते है।
4. *Berberis aristata* : यह दारु हरिद्रा के नाम से प्रसिद्ध है और यह हल्दी के समान गुणवाली है। इसके क्वाथ में बराबर का दूध डालकर पकाते हैं। जब वह चतुर्थांश रहकर गाढ़ा हो जाता है तब उसे उतार लेते है। इसी को रसांजन या रसोत कहते है। यह नेत्रों के लिये परम हितकारी है।[1]

बाह्य–स्वरूप

सामान्य प्रयोग में आने वाली हल्दी के पौधे 2–3 फुट ऊंचे, पत्ते लम्बे

Scanned by CamScanner

भालाकार बांस के पत्तों की तरह व कुछ–कुछ केले के पत्तों की तरह होते है। पत्रों मे आम के समान गन्ध आती है। पुष्प पीत वर्ण के थोड़ी संख्या में पुष्प दंड लम्बा होता है। इसमें भूमिगत अदरक के समान पीले रंग के कंद पाये जाते है। जिनका रंग अन्दर से लाल या पीला होता है भूमिगत कंदो पर मूल व पर्णवृंतों के चिन्ह पाये जाते है। कन्दों को उबालकर फिर सुखा लिया जाता है। इसे ही हल्दी कहते है तथा यही मसाले के रूप में प्रयोग में लाई जाती है।

रासायनिक संघटन

इसमें एक उड़नशील तेल 5–8 प्रतिशत होता है। इसके मुख्य कार्यशील घटक कुर्कुमिन नामक यौगिक सुगंधित तेल टर्मरिक ऑयल तथा टर्पीनाइड पदार्थ है। इनके अतिरिक्त विटामिन ए, प्रोटीन 6.3 प्रतिशत, स्नेह द्रव्य 5.1 प्रतिशत, खनिज द्रव्य 3.6 प्रतिशत तथा कार्बोहाइड्रेट 69.4 प्रतिशत होते है।

गुण–धर्म

उष्ण वीर्य होने के कारण यह कफवात शामक, पित्तरेचक तथा वेदना स्थापन है। तिक्त होने के कारण पित्तशामक, कफघ्न, रक्त प्रसादन, रक्तवर्धक एवं रक्त स्तम्भन है। यह रुचिवर्धक तथा अनुलोमन है। मूत्र संग्रहणीय एवं मूत्र विरंजनीय है। प्रमेह के लिये यह श्रेष्ठ है। इसका लेप शोथहर, वेदनास्थापन, वर्ण्य, कुष्ठघ्न, व्रणशोधन, व्रणरोपन, लेखन है। इसका धुआं हिक्कानिग्रहण, श्वासहर और विषघ्न है। इसका प्रयोग कफ विकार, यकृत विकार, रक्त विकार, अतिसार, प्रतिश्याय, प्रमेह, कामला, चर्मरोग एवं नेत्राभिष्यंद में किया जाता है।

सुश्रुत के अनुसार

1. हल्दी, दारुहल्दी, मुस्ता, यह सब आम अतिसार नाशक, खासकर दोषो का पाचन करने वाले है।
2. हल्दी, दारुहल्दी, आंवला, बहेड़ा यह सब मुस्तादिगण कफ नाशक है। योनिदोष नाशक, दूध का शोधन करने वाला और पाचन है।
3. हल्दी, दारुहल्दी, निम्ब, त्रिफला यह सब तिक्त मधुर रस, कफ पित्तरोगो को नष्ट करने वाले, कुष्ठ कृमिनाशक एवं दूषित व्रण के शोधक है।

औषधीय प्रयोग

कामला :

1. 6 ग्राम हल्दी चूर्ण को मट्ठे में मिलाकर दिन में दो बार सेवन करने से 4–5 दिन में कामला रोग शान्त हो जाता है।
2. कामला रोग में 12 ग्राम हल्दी का चूर्ण 50 ग्राम दही में मिलाकर सेवन करने से लाभ होता है।
3. लौह भस्म, हरड़, हल्दी इनको समभाग मे मिश्रित कर (375 मि०ग्रा०) घी एवं मधु से अथवा केवल हरड़ को गुड़ और मधु के साथ कामला का रोगी चाटे।

कर्णस्राव : कान में से पूय निकलता हो तो हल्दी और फिटकरी का फूला 1:20 के अनुपात के परिमाण में मिलाकर, दिन में तीन बार 2–2 बूंद कान में डालने से पुराना कर्णस्राव ठीक हो जाता है।

नेत्राभिष्यंद : नेत्राभिष्यंद में 1 ग्राम हल्दी 25 मि०ली० पानी मे

Scanned by CamScanner

उबालकर छानकर आंख में बार–बार डालने से आंख की वेदना कम होती है। हल्दी के क्वाथ से रंगे हुये कपड़े का प्रयोग नेत्राच्छादन के लिये किया जाता है।

स्तनरोग : स्तन रोगों में हल्दी का सूखा कंद एवं लोध पानी में घिसकर स्तन पर लेप करने से लाभ होता है।

स्वरभेद : अजमोदा, हल्दी, आवंला, यवक्षार, चित्रक इनके 2–5 ग्राम चूर्ण को 1 चम्मच मधु के साथ चाटने से स्वर भेद दूर होता है।[5]

खांसी : हल्दी को भूनकर इसका 1–2 ग्राम चूर्ण मधु अथवा घृत के साथ चटाने से खांसी में लाभ होता है।

जुकाम : जुकाम में हल्दी के धुएं को रात के समय सूंघते है, उसके बाद कुछ देर तक पानी नहीं पीते, इससे जल्दी लाभ होता है।

पायरिया : सरसों का तेल, हल्दी तथा सैंधा नमक मिलाकर सुबह–शाम मसूड़ों पर लगाकर अच्छी प्रकार मालिश करने तथा बाद में गरम पानी से कुल्ले करने पर मंसूड़ों के सब प्रकार के रोग दूर हो जाते हैं।

उदरशूल : इसकी जड़ की 10 ग्राम छाल को 250 ग्राम पानी में उबालकर गुड़ मिलाकर पिलाने से उदरशूल मिटता है।

अतिसार : दारु हल्दी की जड़ की छाल और सोंठ बराबर लेकर चूर्ण बनाकर 2–5 ग्राम की मात्रा में दिन में दो तीन बार फंकी देने से अतिसार मिटता है।

प्रमेह : 2–5 ग्राम हल्दी को आंवले के रस तथा मधु मे मिलाकर प्रातः–सायं सेवन करने से सभी प्रकार के प्रमेहों में लाभ होता है।

कफज प्रमेह : हल्दी, दारु हल्दी, तगर वायविंग द्वारा बने क्वाथ को 50–60 ग्राम की मात्रा में लेकर 10 ग्राम मधु के साथ प्रातः–सायं सेवन करने से कफज प्रमेह नष्ट होता है।

प्रदर :

1. प्रदर में हल्दी का चूर्ण तथा गुग्गुल का चूर्ण समभाग मिलाकर 5–10 ग्राम की मात्रा में सुबह–शाम सेवन करने से लाभ होता है।
2. हल्दी का चूर्ण दूध में उबालकर एवं गुड मिलाकर सेवन करने से प्रदर में लाभ होता है।

अर्श :

1. सेहुंड़ के दूध में 10 ग्राम हल्दी मिलाकर लेप करने से अर्श नष्ट हो जाते है एवं अर्श पर कड़वी तुरई के चूर्ण के घर्षण से अर्श के अंकुर (मस्से) गिर जाते है।
2. सरसों के तेल में हल्दी तथा 'घोष लता' के समभाग चूर्ण को मिलाकर लेप करने से अर्श नष्ट होते है।[7]

शोथ : हल्दी, पिप्पली, पाठा, छोटी कटेरी, चित्रकमूल, सौंठ, पिप्पला मूल, जीरा, मोथा को समभाग लेकर इसके कपड़छन चूर्ण को मिलाकर रख लें। इस चूर्ण को 2–2 ग्राम की मात्रा में गुनगुने जल के साथ सेवन करने से त्रिदोषजनित शोथ तथा चिरकाल जनित शोथ का विनाश होता है।

वातरक्त : हल्दी, धात्री, नागरमोथा, इनके 100 ग्राम क्वाथ को शीतल होने पर 1 चम्मच मधु मिलाकर कफ प्रधान वातरक्त रोगी

Scanned by CamScanner

को दिन में दो बार पीना चाहिये।

गठिया :

1. दारु हल्दी की शाखाओं का 10–20 ग्राम क्वाथ पीने से पसीना और विरेचन होकर गठिया की पीड़ा मिटती है।
2. दारु हल्दी की जड़ का सूखा सत्व बच्चों को विरेचन में दिया जाता है। दुखती हुई आंख पर भी इसके सत्व का लेप करते है। सूर्य के देखने से जो आंख की ज्योति घट जाया करती है। वह इसके लेप से ठीक हो जाती है।

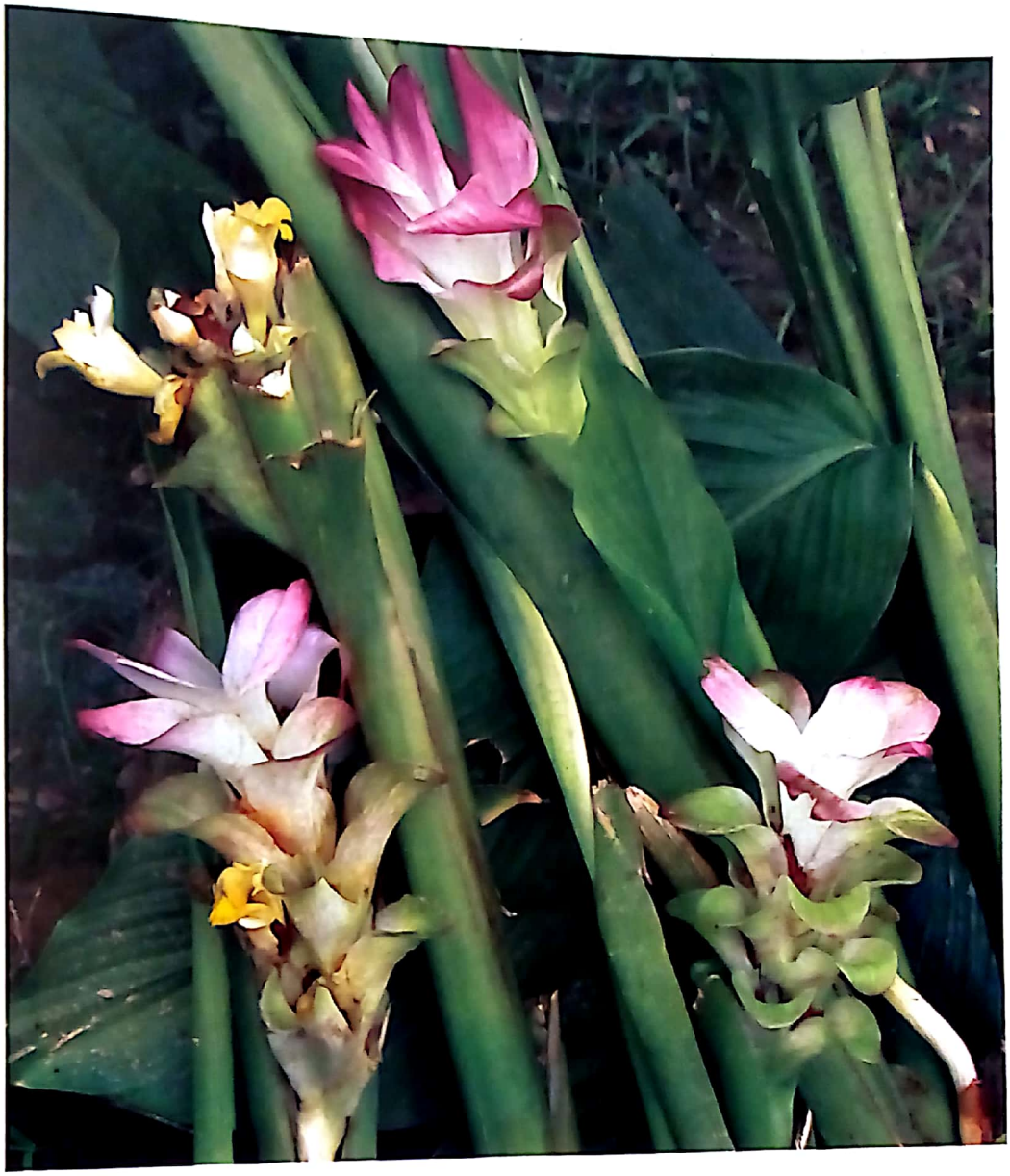

चर्मरोग : खुजली, दाद, फोड़ा, रक्त विकार एवं चर्मरोगों में हल्दी के 2–5 ग्राम चूर्ण को गोमूत्र के साथ दिन में दो तीन बार सेवन किया जाता है। हल्दी के चूर्ण को मक्खन मे मिलाकर रोग–ग्रस्त भाग पर इसका लेप किया जाता है। 5 ग्राम हल्दी के साथ 2 ग्राम मिश्री मिलाकर प्रातः–सायं सेवन करने से भी लाभ होता है।

कंडू :

1. 5 ग्राम हल्दी और नीम की पत्तियों के 20–30 ग्राम चूर्ण को मक्खन में मिलाकर लेप करने से त्वचा कोमल और कांतिवान हो जाती है, तथा कंडू आदि रोग नष्ट हो जाते हैं।
2. दूब तथा हल्दी को एक साथ पीसकर लेप करने से कण्डू, पामा, दाद एवं शीत पित्त नष्ट होता है।

व्रण शोथ : चोट, मोच, व्रण एवं पुराने धावो पर हल्दी, चूना और सरसो का तेल मिलाकर लेप करने से बहुत ही लाभ होता है। चोट के कारण उत्पन्न शोथ ठीक हो जाता है।

ज्वर : दारु हल्दी की जड़ की छाल में बहुत सा कड़वा सत्व होता है। इसलिये अन्तराल से आने वाले ज्वर को छुडाने के काम आती है।

जीर्णज्वर : दारु हल्दी की जड़ का 10–20 ग्राम क्वाथ पिलाने से निरंतर रहने वाला ज्वर शान्त हो जाता है। यह क्वाथ प्लीहा और यकृत वृद्धि में भी लाभ पहुँचाता हैं।

1. रसाञ्जनं तार्क्ष्यशैलं रसगर्भं च तार्क्ष्यजम्।
रसाञ्जनं कटुं श्लेष्म विषनेत्र विकार नुत्। (भाव प्रकाश)

2. स्नुक्क्षीरं रजनीयुक्तं लेपाद् दुर्नामनाशनम्।
कोषातकीरजोघर्षान्निपतन्ति गुदोद्भवाः।। (भैषज्य रत्नावली)

3. तुल्याश्चायोरजः पथ्याहरिद्राः क्षौद्रसर्पिषा।
चूर्णिताः कामली लिह्याद् गुडक्षौद्रेण वाऽभयाम्।। (भैषज्य रत्नावली)

4. अजमोदां निशां धात्रीं क्षारं वह्निं विचूर्णयेत्।
मधुसर्पियुतं लीढ्वा स्वरभेदमपोहति।।

Scanned by CamScanner

67 हरड़

वैज्ञानिक नाम	:	*Terminalia Chebula* (Gaertn.) Retz.
कुलनाम	:	Combretaceae
अंग्रेजी नाम	:	The Chebulic or Black myrobalan
संस्कृत	:	अभया, पथ्या, कायस्था, पूतना, अमृता, विजया, चेतकी
हिन्दी	:	हरड़
गुजराती	:	हरडे
मराठी	:	हिरड़ा, हर्तकी
बंगाली	:	हर्तकी, हरितकी
पंजाबी	:	हड़हरड़
तैलगू	:	करकाय्
द्राविड़ी	:	कडुक्काय
अरबी	:	अहलीलज
फारसी	:	हलैलाह

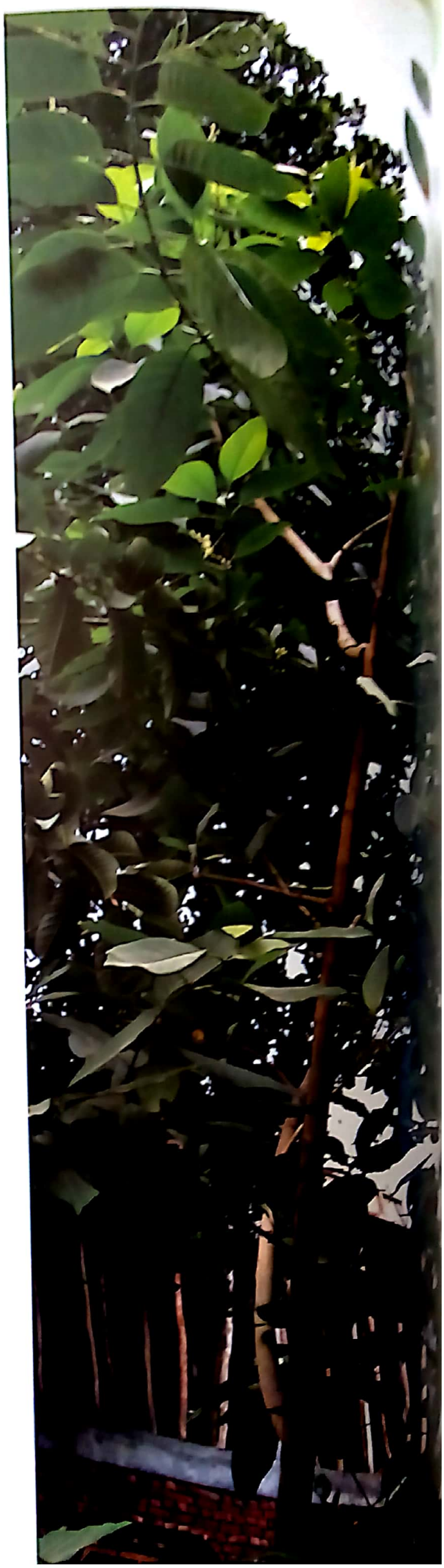

परिचय

हरड का वृक्ष पर्वत प्रदेशों और जंगलों में 5,000 फुट की ऊँचाई तक पाया जाता है। मूलतः निचले हिमालय क्षेत्र में रावी तट से लेकर पूर्व बंगाल, असम तथा देश के ऊँचे वनो में पाया जाता है। इसका वृक्ष 80–100 फुट तक ऊँचा और काफी मोटा होता है। संहिताओं में हरड़ को सात प्रकार की कहा गया है। वर्तमान में यह तीन प्रकार की ही मिलती है। जिसको लोग अवस्था भेद से एक ही वृक्ष के फल मानते है परन्तु यह सत्य नहीं है।

बाह्य–स्वरूप

हरड़ के वृक्ष का तना बहुत लम्बा और 8–12 फुट तक मोटा होता है। छाल गहरे भूरे रंग की, पत्ते– 3–8 इंच लम्बे 2–4 इंच चौड़े, लट्वाकार या अंडाकार तथा पत्र वृन्त के शीर्ष भाग पर दो बड़ी ग्रन्थिंया होती है। पत्र शिराये 6–8 जोड़ी होती है। फूल छोटे, पीताभ–श्वेत, लम्बी मंजरियों में लगते हैं। फल 1–2 इंच लम्बे, अंडाकार, फलों के पृष्ठ भाग पर पांच रेखायें पाई जाती है। जो फल कच्ची अवस्था में गुठली पडने से पहले तोड़ लिये जाते है, वही छोटी हरड़ के नाम से जाने जाते है। इनका रंग स्याह पीला होता है। जो फल प्रौढ़ावस्था अर्थात् अर्द्धपक्व अवस्था मे तोड़ लिये

Scanned by CamScanner

जाते हैं, उनका रंग पीला होता है। पूर्ण परिपक्व अवस्था में इसके फल को बड़ी हरड कहते है। प्रत्येक फल में एक बीज होता है। फरवरी–मार्च में पत्तियां झड़ जाती है। अप्रैल–मई में नये पल्लवों के साथ पुष्प लगते हैं तथा फल शीतकाल में लगते है। पक्व फलो का संग्रह जनवरी से अप्रैल तक करते है।

रासायनिक संघटन

फल में 24–32 प्रतिशत टैनिन होता है। टैनिन के घटकों में चेबुलेजिक एसिड तथा कोरिलेजिन प्रमुख है। इसके अतिरिक्त शर्करा, 18 अमीनो एसिड तथा अल्प मात्रा में फास्फोरिक, सक्सिनिक, क्विनिक, एवं शिकिनिक अम्ल होते है। ज्यों–ज्यों फल पकता है टैनिन की मात्रा घटती जाती है और अम्लता बढ़ती जाती है। बीज मज्जा से एक पीले रंग का तेल निकलता है जो 36.4 प्रतिशत तक होता है। पेड़ से एक प्रकार का गोंद भी निकलता है।

गुण–धर्म

यह रुखी, गरम, हल्की, मधुर पाक वाली, त्रिदोष हर है।[1] यह मधुर तिक्त कषाय होने से पित्त, कटुतिक्तकषाय होने से कफ तथा अम्ल मधुर होने से वात का शमन करता हैं। इस प्रकार यह त्रिदोष–हर है।[2] प्रभाव से यह वात प्रकोप नहीं करती, इसलिये त्रिदोष–हर है। यह रूखी गरम उदराग्नि वर्धक, बुद्धि को बढ़ाने वाली, नेत्रों के लिये लाभकारी, हल्की, आयुवर्द्धक, शरीर को बल देने वाली तथा वात को शान्त करने वाली है। यह श्वास, कास, प्रमेह, बवासीर, कुष्ठ, सूजन, उदर रोग, कृमिरोग, स्वर भंग, ग्रहणी, विबंध, गुल्म, आध्मान, व्रण, थकान, हिचकी, कंठ और हृदय के रोग, कामला, शूल, आनाह, प्लीहा व यकृत के रोग, पथरी, मूत्रकृच्छ्र और मूत्रघातादि रोगों को दूर करती है।[1] हरड़, देवदारु, हल्दी यह सब दोषों का पाचन करने वाला है।[2] हरड़ कफ पित्तनाशक है। प्रमेह कुष्ठ को नष्ट करता है। आंखों के लिये हितकारी है।[3] हरड़, आंवला, पिप्पली यह सब ज्वरों को नष्ट करने वाले है। आंखों के लिये हितकारी, अग्निदीपक व्रण कफ एवं अरुचि को नष्ट करता है।[4] हरड़ का फल व्रण के लिये हितकारी, उष्ण, सर, मेध्य, दोषनाशक, शोथ, कुष्ठनाशक, कषाय, अग्निदीपक अम्ल तथा आंखों के लिये हितकारी है।[5] हरड़ का चूर्ण नीम के पत्ते, आम की छाल, अनार पुष्प की कली, मेंहदी के पत्ते, इनका उबटन राजाओं के योग्य अंगराज है। हरड़ में पांचों रस साथ रहकर भी प्रकोप नहीं करते। इसलिये एक ही हरीतकी अनके रोगों में प्रयोग की जाती है। हरीतकी की मज्जा में मधुर रस, नाड़ियों में अम्ल रस, वृन्त में कड़वा रस, छाल में कटुरस और गुठली में कसैला रस रहता है।[6]

विशिष्ट गुण व कार्य

चबाकर खाई हुई हरड़ अग्निवर्द्धक, पीसकर खाई हुई दस्तावर, उबालकर खाई हुई दस्त बन्द करती है। भूनकर खाई हुई त्रिदोषहर, भोजन के साथ खाई हुई हरड़ बुद्धिबल तथा इन्द्रियों को प्रसन्न करती है, भोजन उपरांत खाई हुई, हरीतकी मिथ्या अन्न–पान से होने वाले सब विकारों को दूर करती है।[3]

औषधीय प्रयोग

शिरःशूल :

1. हरड़ की गुठली को पानी के साथ पीस कर लेप करने से आधाशीशी मिटती है।
2. 10 बड़ी हरड की छाल को कूटकर जल में भिगोकर तीन दिन धूप मे रखे, चौथे दिन मसलकर छान ले, उसमें फिर 11 बड़ी हरड की छाल डालकर तीन दिन धूप मै रख छानकर उसमें 500 ग्राम बूरा डाल शर्बत बनाके पीने से मस्तक पीड़ा और पित्त के विकार मिटते हे।

दन्त प्रयोग : इसके चूर्ण का मंजन करने से दांत साफ और निरोग हो जाते है।

नेत्र के लिये :

1. हरड़ को रातभर पानी में भिगोकर सुबह आँखें धोने से शीतल हो जाती है।
2. इसकी मींगी को पानी में 3 पहर तक भिगोकर, घिसकर अंजन करने से मोतियाबिन्द पैदा नहीं होता है।

Scanned by CamScanner

3. हरड़ की छाल को पीसकर अंजन करने से नेत्रों से पानी का बहना बन्द होता है।

मूर्च्छा : हरड़ के क्वाथ से सिद्ध किये हुये घी का सेवन करने से मद और मूर्च्छा मिटती है।

कफ निष्कासनार्थ : कफ को निकालने में हरड़ का चूर्ण बहुत अच्छा है। इस हेतु हरड़ चूर्ण की 2–5 ग्राम की मात्रा में नित्य सेवन करना चाहिए।

मुखरोग :

1. 10 ग्राम हरड़ को आधा किलो पानी में उबालकर चतुर्थांश शेष क्वाथ में किंचित फिटकरी घोलकर केवल धारण करने से शीघ्र ही मुख व कंठ में होने वाला रक्तस्त्राव शान्त हो जाता है।

कास श्वास :

1. हरड़, अडूसा की पत्ती, मुनक्का, छोटी इलायची, इन सबसे बने क्वाथ में मधु और चीनी मिलाकर थोड़ा–थोड़ा दिन में तीन बार पीने से श्वास, कास और रक्त पित्त रोग शान्त होता है।
2. हरड़ और सौंठ समान भाग लेकर चूर्ण बनावें, इसे मन्दोष्ण जल के साथ 2–5 ग्राम की मात्रा में प्रातः–सायं सेवन करने से कास, श्वास और कामला का नाश होता है।

घाव :

1. फैले हुये घाव को इसके क्वाथ से धोने से घाव सिकुड़ जाता है।
2. हरड़ की 1–2 ग्राम भस्म को 5–10 ग्राम मक्खन में मिलाकर घाव पर लेप करते है।

पाचन शक्ति : इसके 3–6 ग्राम चूर्ण में बराबर मिश्री मिलाकर सुबह–शाम भोजनोपरान्त सेवन करने से पाचन शक्ति बढ़ती है।

छर्दि : हरड़ के चूर्ण को मधु मे मिलाकर सेवन करने से दोष नष्ट होते हैं और छर्दि शान्त होती है। यह योग पित्तज वमन में बहुत उपयोगी है।

मंदाग्नि :

1. 2 ग्राम हरड़ तथा 1 ग्राम सोंठ को गुड़ अथवा 250 मिलीग्राम सैंधा नमक के साथ सेवन करने से अग्नि प्रदीप्त होती है।
2. हरड का मुरब्बा मंदाग्नि व आमातिसार में लाभदायक होता है।
3. यदि प्रातः काल अजीर्ण की शंका हो तो हरड़, सौंठ तथा सैंधा नमक का 2–5 ग्राम चूर्ण शीतल जल के साथ खायें, परन्तु दोपहर और सांयकाल भोजन थोड़ी मात्रा में खाये।
4. हरड़, सैंधा नमक, पिप्पली, चित्रक इन्हें समभाग में मिश्रित कर चूर्ण के 1 से 2 ग्राम की मात्रा में गरम जल के साथ सेवन करने अग्नि प्रदीप्त होती है। इनके सेवन से घी, मांस और नये चावलों का ओदन शीघ्र पच जाता है।

अण्डकोषवृद्धि : 5 ग्राम जवा हरड़, 1 ग्राम सैंधा नमक को 50 ग्राम एरंड के तेल और 50 ग्राम गोमूत्र में पकाकर तेल मात्र शेष रहने पर छानकर उष्ण जल के साथ प्रातः–सायं लेने से पुरानी अण्डकोष वृद्धि रूकती है।

प्रमेह : हरड़ के 2–5 ग्राम चूर्ण को 1 चम्मच मधु के साथ सुबह–शाम चटाने से प्रमेह मिटता है।

कामला : लौह भस्म, हरड़, हल्दी इनकों समभाग में मिश्रित कर 500 मिलीग्राम से 1 ग्राम मात्रा में लेकर घी एवं मधु से अथवा केवल 1 ग्राम हरड़ को गुड़ और मधु के साथ कामला का रोगी दिन में दो से तीन बार चाटें।[1]

अतिसार : जिस रोगी को अतिसार अथवा थोड़ा–थोड़ा, रुक–रुक कर दर्द के साथ मलोत्सर्ग हो उसे बड़ी हरड़ तथा पिप्पली के 2–5 ग्राम चूर्ण को सुहाते गरम जल के साथ सेवन कराये।

बद्धकोष्ठता : हरड़ सनाय और गुलाब के गुलकन्द की गोलियां बनाकर खाने से बद्धकोष्ठ मिटता है।

छः हरड़ और साढ़े तीन ग्राम दालचीनी या लौंग को 100 ग्राम जल में 10 मिनट तक उबालकर, छानकर प्रातःकाल पिलाने से अच्छा विरेचन हो जाता है।

अर्श : हरड़ के क्वाथ की पिचकारी देने से अर्श और योनिस्त्राव मिटता है।

मूत्रकृच्छ्र : हरीतकी, गोखरु, धान्यक, यवासा, पाषाण भेद समभाग लेकर 500 ग्राम जल में क्वथित करें, 250 ग्राम रहने पर उतार ले, यह क्वाथ मधु मे मिलाकर सुबह, दोपहर तथा शाम सेवन करने से मूत्रकृच्छ्र, मूत्र मार्ग की जलन आदि में लाभ करता है।

Scanned by CamScanner

शोथ रोग :

1. हरड़ में गुड़ मिलाकर शोथ रोग से पीड़ित व्यक्ति को तो खिलाना चाहिये।
2. हरड़, सौंठ और हल्दी समान भाग लेकर क्वाथ बनाकर 10–20 ग्राम की मात्रा में सुबह–शाम लेने से ज्वर के बाद होने वाला शोथ रोग दूर होता है।

सन्निपात ज्वर : हरड़, हींग, पीपल और सौंठ बराबर–बराबर लेकर चूर्ण बनाकर 500 मि०ग्रा० की मात्रा में बिजौरे के रस में मिलाकर सेवन करने से सन्निपात ज्वर में लाभ होता है।

कुष्ठ रोग :

1. कुष्ठ रोग निवारण के लिये गोमूत्र अत्यन्त श्रेष्ठ औषधि है। 20–50 मिलीलीटर गोमूत्र का 3–6 ग्राम हरड़ के साथ प्रातः–सायं सेवन करें तो निश्चय ही लाभ होता है।
2. हरड़ तथा गुड़, तिल तेल, मिर्च, सौंठ, पीपल समभाग में एक माह तक प्रातः–सायं सेवन करने से कुष्ठ रोग का नाश होता है।

दग्ध पर : 5 ग्राम हरड़ को थोड़े पानी के साथ घिस उसमें क्षारोदक और अलसी का तेल बराबर मिलाकर अग्नि से जले हुये या उष्ण जल आदि से जले हुये व्रण पर लेप करने से व्रण बहुत जल्दी अच्छे हो जाते है।

ज्वर : नागरमोथा, हरड़, नीम की छाल, पटोलपत्र, मुलहठी इनके क्वाथ को यथायोग्य मात्रा में हल्का गरम पिलाने से बालकों के सम्पूर्ण ज्वर नष्ट होते है।

विषमज्वर : इसका 2–5 ग्राम चूर्ण को मधु के प्रातः–सायं साथ चटाने से विषमज्वर छूटता है।

रक्तपित्त : हरड़ के 2–5 ग्राम चूर्ण को 1 चम्मच मधु और थोड़ी सी चीनी के साथ सेवन करने से रक्तपित्त रोग में जिन रोगियों को विरेचन कराना होता है, लाभप्रद होता है।[16]

श्लीपद रोग : 10 ग्राम हरड़ को 50 ग्राम एरंड के तेल में पकाकर 6 दिन पीने से श्लीपद रोग मिटता है।

ओजोविस्रंस : हरड़, अनार का छिलका, शतपुष्पा, आंवला, बबूल की छाल, इनके क्वाथ को 20 से 30 मिली प्रातः–सायं पीने से अत्यन्त बढ़ा हुआ ओजोविस्रंस निश्चय ही नष्ट होता है।

विशेष सेवन विधि : हरीतकी को नमक के साथ कफ रोग को, शक्कर के साथ पित्त को, घृत के साथ वात–विकारों को और गुड़ के साथ सब रोगो को दूर करती है। जो रसायनार्थ हरीतकी का सेवन करना चाहते है, उन्हें वर्षा ऋतु में नमक से, शरद में शक्कर से, हेमन्त में सौठ से, शिशिर में पिप्पली के साथ, बसन्त ऋतु में मधु के साथ और ग्रीष्म ऋतु में गुड़ के साथ हरड़ का सेवन करना चाहिये।

निषेध : जो मनुष्य मार्ग चलने से थका हुआ हो दुर्बल व रूक्ष हो, कृशकाय हो या ना खाने से दुर्बल हो गया हो, अधिक पित्त वाला हो, जिसका रक्त अधिक निकल गया हो तथा गर्भवती स्त्री को हरड़ का सेवन नहीं करना चाहिये।

1. चक्षुष्या लघुरायुष्या बृंहणी चानुलोमिनी।
श्वासकासप्रमेहार्शः कुष्ठशोथोदरक्रिमीन्।।
विसर्पग्रहणीरोगविबन्धविषमज्वरान्।
गुल्माध्मानव्रणछर्दिहिक्का कण्ठहृदामयान्।।
कामलां शूलमानाहं प्लीहाजच यकृद गदम्।
अश्मरीं मूत्रकृच्छ्रजच च मूत्राघातजच नाशयेत्।। (भाव प्रकाश)
2. वचामुस्तातिविषामया भद्रदारुणी। (सुश्रुत)
3. हरीतक्यामलविभीतकानीति त्रिफला।। (सुश्रुत)
4. आमलकी, हरीतकी, पिप्पली चित्रकाश्चेति। (सुश्रुत)
5. व्रण्यमुष्णं सरं मेध्यं दोषघ्नं शोथकुष्ठनुत्।
कषायं दीपनं चाम्लं, चक्षुष्यं चाभयाफलम्।। (सुश्रुत)
6. पथ्याया मज्जनि स्वादुः स्नाम्वाम्लो व्यवस्थितः।

Scanned by CamScanner

68 इमली

वैज्ञानिक नाम	:	*Tamarindus indica* L.
कुलनाम	:	Caesalpiniaceae
अंग्रेजी नाम	:	Tamarind tree
संस्कृत	:	अम्लिका, चिंचिका, चिंचा, अत्यम्ला, तिन्तड़ीका
हिन्दी	:	इमली
गुजराती	:	आंबली
मराठी	:	चिंच
बंगाली	:	तेतुला
फारसी	:	तिमिर हिन्दी
अरबी	:	तमर हिन्दी

परिचय

इमली के वृक्ष काफी ऊंचे होते हैं तथा सघन छायादार होने के कारण सड़कों के किनारे भी इसके वृक्ष लगाये जाते हैं। इमली से सब परिचित हैं अतः विस्तार से विवरण की आवश्यकता नहीं है।

रासायनिक संघटन

इसमें साइट्रिक अम्ल, टार्ट्रिक अम्ल, पोटेशियम बाईटार्ट्रेट तथा अंशतः मेलिक एसिड एवं शर्करा तथा अघुलनशील तत्व होते हैं।

गुण–धर्म

कच्ची इमली : खट्टी, भारी, वातविनाशक और पित्त, कफ, रूधिर विकार करने वाली है।

पकी इमली : अग्नि प्रदीपक, रूखी, दस्तावर, गर्म तथा कफ और वात–विनाशक है।[1]

बीज : प्रमेह–नाशक, संग्राही, वीर्य स्तम्भक एवं वीर्य शोषण है।

औषधीय प्रयोग

मुखपाक : इमली के पानी से कुल्ले करने से पित्त जन्य मुखपाक मिटता है।

मस्तक पीड़ा : 10 ग्राम इमली को एक गिलास पानी में भिगोकर थोड़ा मल–छानकर, शक्कर मिलाकर पीने से पित्तज मस्तक पीड़ा मिटती है।

अज्जनामिका (गुहेरी) : आंखों की पलकों पर होने वाली फुंसी पर इमली के बीज को पानी के साथ घिसकर चंदन की तरह लगाने से गुहेरी में शीघ्र लाभ होता है।

नेत्र शोथ : इमली के पुष्पों की पुल्टिस बांधने से आंख की सूजन उतरती है।

कंठ शोथ : 6 ग्राम इमली को दो किलो जल में उबालकर जब आधा रह जाये तो उसमें 10 ग्राम गुलाब जल मिलाकर छानकर कुल्ले करने से कंठ की सूजन उतरती है।

अतिसार :

1. इमली के 10–15 ग्राम पत्तों को 400 ग्राम पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ पिलाने से आमातिसार मिटता है।
2. इमली के पत्तों के 5–10 ग्राम रस को थोड़ा गर्म करके पिलाने से भी आमातिसार मिटता है।
3. इमली के बीजों के 15 ग्राम छिल्के, 6 ग्राम जीरा और मीठा हो जाने लायक ताड़ की शक्कर इन तीनों को महीन पीसकर तीन–तीन, चार–चार घण्टे के अंतर से फंकी देने से पुराना आमातिसार मिट जाता है।
4. इमली के बीजों की मींगी का चूर्ण 3–6 ग्राम पानी के साथ सुबह–सायं फंकी देने से अतिसार और आमातिसार मिटता है।
5. इमली के पुराने वृक्ष से जड़ की छाल और काली मिर्च आधी मात्रा में दोनों लेकर छाछ के साथ पीसकर, मटर के आकार की गोलियां बनाकर एक से दो गोली दिन में तीन बार देने से आमातिसार बहुत शीघ्र मिट जाता है।

रक्तार्श : इसके पुष्पों का रस 10–20 ग्राम दिन में तीन बार पिलाने से रक्तार्श मिटता है।

प्रवाहिका : इसकी पत्तियों के रस को लाल किये हुए लोहे से छोंककर 10–20 ग्राम की मात्रा में दिन में 3–4 बार कुछ दिनो तक देना चाहिए।

उदरशूल : इसकी छाल को सैंधा नमक के साथ एक मिट्टी के बरतन में रखकर जला लें, सफेद राख को 125 मि०ग्रा० की मात्रा में अजीर्ण और उदरशूल में देने से बड़ा लाभ होता है।

अरूचि : पके इमली का पानी पीने से भूख बढ़ती है और आंतों के घाव मिटते हैं।

क्षुधावर्धक पन्या : 25 ग्राम इमली को 500 ग्राम पानी में मसलकर छान लें, इसमें 50 ग्राम मिश्री, 40 ग्राम दालचीनी, 4 ग्राम लौंग और 4 ग्राम इलायची मिलाकर 4 ग्राम की मात्रा से पिलायें। शीतादिक रोगों के बाद की कमजोरी को मिटाने में और वात

Scanned by CamScanner

संबंधी शिकायतों को दूर करने में यह शर्बत बहुत अच्छा है और शुधावर्धक भी है।

प्रमेह : 125 ग्राम इमली के बीजों को 250 ग्राम दूध में भिगो दें, तीन दिन के बाद छिलके उतारकर, स्वच्छ कर पीस लें। प्रातः–सायं 6 ग्राम की मात्रा में गोदुग्ध या जल से लेने पर प्रमेह रोग दूर होता है।[1]

बहुमूत्र : इमली के बीज प्रातः 10 ग्राम की मात्रा में जल में भिगो दें, रात्रि में छिलका उतारकर भीतरी श्वेत मींगी सेवन करें, ऊपर से गौदुग्ध पीने से लाभ होगा।

वीर्यवर्धक :

1. पानी में कुछ दिन भिगोकर छिलका उतार दें, छिलके निकले सफेद बीजों को सुखाकर बारीक चूर्ण रख लें, एक चम्मच की मात्रा में दिन में तीन बार दूध के साथ सेवन करने से वीर्य का पतलापन दूर होता है।
2. इमली के बीजों को भूनकर, छिलका उतारकर चूर्ण कर, बराबर की मात्रा में मिश्री मिलाकर लगातार 15 दिन तक प्रातः–सायं सेवन करने से वीर्य का पतलापन, मूत्रकृच्छ तथा मूत्र–दाह दूर होती है।
3. इमली के चीएं 10 ग्राम को जल में चार दिन तक भिगोकर छील लें तथा उसमें गुड़ दो भाग मिलाकर चने समान गोलियां बनाकर रख लें। रात्रि में सोते समय एक–दो गोली सेवन करने से वीर्य स्तम्भन होता है।

दाद : इमली के बीज को नींबू के रस में पीसकर लगाने से दाद दूर हो जाता है।

फोड़े, फुन्सिंया :

1. इमली के 10 ग्राम पत्तों को गर्म करके उनकी पुल्टिस बनाकर बांधने से फोड़ा पककर शीघ्र फूट जाता है।
2. इसके बीजो की पुल्टिस बांधने से फुंसिया मिटती है।

मोच : अंग में मोच आ जाने पर इसकी पत्तियों को पीसकर गुनगुना कर लेप लगाने से तत्काल आराम हो जाता है।

दग्ध : जले हुए घाव पर मीठे तेल के साथ इसकी छाल का 2 से 5 ग्राम सूखा चूर्ण बुरकने से शीघ्र लाभ होता है।

शोथ : पत्तों की पुल्टिस बनाकर सूजन पर बांधने से पीड़ा मिट जाती है।

दाह–पित्त विकार :

1. दाह और पित्त विकार मिटाने के लिए इसके कोमल पत्तों और पुष्पों का शाक बनाकर खिलाना चाहिए।
2. मिश्री के साथ इमली का शर्बत बनाकर पिलाने से हृदय की दाह मिटती है।
3. 10 ग्राम इमली और 25 ग्राम छुहारों को 1 किलो दूध में उबालकर, छानकर पिलाने से ज्वर जन्य दाह और घबराहट शांत होती है।

4. पित्तज छर्दि (वमन) और गर्मी के ज्वर पर इमली का शर्बत पिलाना चाहिए।

सफेद दाग : इमली के बीजों की मींगी और बावची दोनों बराबर ले, पीसकर लकड़ी से लगाने से सफेद दाग में लाभ होता है।

पित्तज ज्वर : 25 ग्राम इमली को रात भर एक गिलास पानी में भिगोकर प्रातःकाल निथरे हुए पानी में बूरा मिला ईसबगोल के साथ पिलाने से पित्त ज्वर शांत होता है।

लू का असर :

1. फल के गूदे को ठंडे पानी में पीसकर, मुंडे हुए सिर पर लगाने से लू का असर और मूर्च्छा मिटती है।
2. पकी हुई इमली को पानी में मल उस पानी में कपड़ा भिगोकर शरीर कुछ देर तक पोंछने–फेरने से लू का असर मिटता है।

अन्य प्रयोग :

1. पुरानी इमली का एक किलो गूदा दुगने जल में भिगोकर दूसरे दिन प्रातःकाल अग्नि पर दो तीन उबाल देने के बाद अग्नि से नीचे उतारकर, मसलकर छान लें और बाद में दो किलो खांड मिलाकर चाशनी बना लें। गर्म चाशनी को छानकर, शीतल करके बोतल में भर लें, तीन–तीन घण्टे के अंतर से 10 से 40 ग्राम तक की मात्रा सेवन करने से वमन, पित्त, लू, तृष्णा, विसूचिका, अजीर्ण, मंदाग्नि व शराब का नशा दूर होता है तथा बद्धकोष्ठ मिटता है।
2. इसके बीजों की भस्म को एक से दो ग्राम तक दही के साथ चटाने से रक्तार्श मिटता है।

व्रण : पत्तों के क्वाथ से धोने से बहुत दिनों तक रहने वाला व्रण मिट जाता है।

शीतला : इमली के पत्ते और हल्दी से तैयार किया हुआ ठंडा शीतला की बीमारी में बहुत लाभदायक है।

1. पूर्व तोये वासरं वासितानां चिंचास्थीनां दुग्धकल्की कृतानाम।
पीत्वा स्यातां सुन्दरीपुरूषों हि व्राक अस्थिस्त्रावातसोमरोगां मुक्ता।। (वैद्य मनोरमा)

Scanned by CamScanner

वैज्ञानिक नाम	:	*Citrullus colocynthis* (L.) Schrad.
कुलनाम	:	Brassicaceae
अंग्रेजी नाम	:	Colocynth, Bitter apple
संस्कृत	:	इन्द्रवारुणी, विशाला, महाफला
हिन्दी	:	इन्द्रायण
गुजराती	:	इन्द्रावण
मराठी	:	इन्द्रायण, इन्द्रफल
बंगाली	:	राखालशा
अरबी	:	इंजल, अलकम
फारसी	:	खरबुज–ए–तल्ख
तैलगु	:	एतिपुच्छा

परिचय

इन्द्रायण की समस्त भारतवर्ष में, विशेषतः बालुका मिश्रित भूमि में स्वयंजात वन्यज या कृषिजन्य बेलें पाई जाती हैं। इसकी तीन जातियां पाई जाती हैं : 1. छोटी इन्द्रायण, 2. बड़ी इन्द्रायण एवं 3. लाल इन्द्रायण। हर प्रकार की इन्द्रायण में 50–100 तक फल लगते हैं।

बाह्य–स्वरूप

1. छोटी इन्द्रायण : एन्द्री, चित्रा, गावाक्षी, इन्द्रवारूणी ये छोटी इन्द्रायण के संस्कृत नाम है। इसका वैज्ञानिक नाम *Cucumis callosus* हैं। इसकी आरोहिणी बेलों के पत्र साधारण, खंडित डंठलों में रोम होते हैं। पत्र वृन्त के निकट से पुष्प तथा एक लम्बा सूत्र निकलता है जो वृक्षों से लिपटकर बेल को आगे बढ़ने में सहायता करता है। पुष्प घंटाकार, पीतवर्णी, एकलिंगी, नर और मादा पुष्प अलग–अलग होते हैं। फल गोल होते हैं।
2. बड़ी इन्द्रायणः महाफला, विशाला ये बड़ी इन्द्रायण के संस्कृत नाम हैं। इसकी लताएं अपेक्षा कृत बड़ी, पत्र–तरबूज के सदृश बहुखंडित, पुष्प–पीतवर्ण, फल 1–4 इंच व्यास के लम्बे व गोल, कच्चे फल में सफेद हरी धारियां दिखाई पडती है। छोटा रहने पर रोम व्याप्त रहता है और पकने पर धारियां स्पष्ट हो जाती है और फल का वर्ण नीलाभ हरित हो जाता है। फल मज्जा–लालवर्ण की तथा बीज पीत तथा कृष्ण वर्ण का होता है।
3. लाल इन्द्रायणः इसका वैज्ञानिक नाम *Tricosanthis palmata* है। इसकी बेल बड़ी इन्द्रायण की ही तरह होती है, परन्तु पुष्प श्वेत और फल पकने पर लाल रंग का नींबू की भांति होता है।

रासायनिक संघटन

इसकी कली में कोलोसिंथिन तथा एक तरह का गोंद जैसा पदार्थ तथा कोलोसिंथिटिन, पैन्टिन, गम तथा भस्म पाये जाते हैं। इसके बीजों में स्थिर तेल, एलब्युमिन तथा भस्म तीन प्रतिशत रहती है।

गुण–धर्म

तीव्ररेचक, कफ पित्तनाशक तथा कामला, प्लीहा, उदररोग, श्वास कास, कुष्ठ, गुल्म, गांठ, व्रण, प्रमेह, गंडमाला तथा विषरोग नाशक है। ये गुण छोटी बड़ी दोनों इन्द्रायण में पाये जाते हैं।

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

केश :

1. इसके बीजों का तेल लगाने से केश काले हो जाते हैं।
2. इसकी जड़ के 3–5 ग्राम चूर्ण का गाय के दूध के साथ सेवन करने से सफेद केश काले हो जाते हैं। परन्तु पथ्य में केवल दूध ही पीना चाहिए।

बाधिर्य : इसके पके हुए फल को या उसके छिलके को तेल में उबालकर, छानकर कान में 2–4 बूंद टपकाने से बहरापन मिटता है।

दंतकृमि : इसके पके हुए फल की धूनी दांतों में देने से दांतों के कीड़े मर जाते हैं।

अपस्मार : इसकी जड़ के चूर्ण का नस्य दिन में तीन बार देने से अपस्मार मिटता है।

कास : इसके फल में छेद करके उसमें काली मिर्च भरकर छेद बंद कर धूप में सूखने के लिए रख दें या आग के पास भूमल में कुछ दिन तक पड़ा रहने दें, फिर फल को फेंक दे और काली मिर्च के 7 दाने प्रतिदिन मधु तथा पीपल के साथ सेवन करने से कास में लाभ होता है।

स्तन–पाक : स्त्रियों के स्तनों में सूजन हो जाने पर इसकी जड़ को घिसकर लेप करते हैं या पुल्टिस बांधने से लाभ होता है।

उदर विकार :

1. इन्द्रायण का मुरब्बा खाने से पेट के विकार मिटते हैं।
2. इन्द्रायण के फल में सैंधा नमक और अजवायन भर कर धूप में सुखा लें, इस अजवायन की उष्ण जल के साथ फंकी लेने से दस्त लगके पेट की पीड़ा मिटती है।

विसूचिका : विसूचिका में इसके ताजे फल के 5 ग्राम गूदे को उष्ण जल के साथ या 2–5 ग्राम सूखे गूदे को अजवायन के साथ देना चाहिए।

मूत्रकृच्छ्र :

1. इसकी जड़ को पानी के साथ पीस छानकर 5–10 ग्राम की मात्रा में आवश्यकतानुसार पिलाने से मूत्र की रूकावट मिटती है।
2. लाल इन्द्रायण की जड़, हल्दी, हरड़ की छाल, बहेड़ा और आंवला सभी की 10–20 ग्राम मात्रा को 160 मिलीलीटर जल में उबालकर चतुर्थांश शेष क्वाथ में शहद मिलाकर सुबह–शाम पीने से मूत्रकृच्छ्र मिटता है।

मासिक धर्म की रूकावट :

1. रजोरोध में इन्द्रवारूणी के बीज तीन ग्राम, काली मिर्च 5 नग, दोनों को पीसकर 200 ग्राम जल में क्वाथ करें, जब चौथाई जल शेष रह जाये तब छानकर पिलाने से रूका हुआ मासिक धर्म पुनः चालू हो जाता है।
2. इसकी जड़ को योनि में रखने से योनिशूल और पुष्पावरोध मिटता है।

आंत्रकृमि : इसके फल के गूदे को गर्म करके पेट पर बांधने से आंतों के सब प्रकार के कीड़े मर जाते हैं।

विरेचन : इसकी फल मज्जा को पानी में उबालकर तत्पश्चात् मलछानकर गाढ़ा करके उसकी छोटी–छोटी चने के बराबर गोलियां बना लें, इसमें 1–2 गोली ठंडे दूध से लेने से प्रातःकाल शुद्ध विरेचन लग जाता है।

जलोदर : इन्द्रायण के फल को गूदा तथा बीजों से खाली करके इसके छिलके की प्याली में बकरी का दूध भरकर पूरी रात रखा रहने दें। प्रातःकाल इस दूध में थोडी सी खांड मिलाकर रोगी को पिला दें। कुछ दिन तक पिलाने से जलोदर कट जाता है। इसकी जड़ का क्वाथ तथा फल का गूदा खिलाना भी लाभदायक है, परंतु ये तेज औषधि है।

उपदंश :

1. 100 ग्राम इन्द्रायण की जड़ को 500 ग्राम एरंड तेल में पकायें जब तेल मात्र शेष रह जाये तो 15 ग्राम तेल गाय के दूध के साथ दिन में दो बार पिलाने से उपदंश आदि रोग मिटते हैं। तेल को शीशी में भरकर सुरक्षित रख लें।
2. इसकी जड़ों के टुकड़ों को पांच गुने पानी में उबालें जब तीन हिस्से पानी शेष रह जाये तब छानकर उसमें बराबर बूरा मिलाकर शर्बत बनाकर पिलाने से उपदंश और बात पीड़ा मिटती है।

सुख प्रसव :

1. इसकी जड़ों को पीसकर गाय के घी में

Scanned by CamScanner

मिलाकर भग में मलने से बच्चा तुरन्त सुख से पैदा हो जाता है।

2. इसके फल के रस में रुई का फोहा भिगोकर योनि में रखने से बच्चा सुख से हो जाता है।

सूजन : इसकी जड़ों को सिरके में पीसकर गरम करके शोथयुक्त स्थान पर लगाने से सूजन उतरती है।

संधिगत वायु : इन्द्रायण की जड़ और पीपल के चूर्ण समभाग को गुड़ में मिलाकर 10 ग्राम की मात्रा में नित्य देने से संधिगत वायु दूर होती है।

गठिया : इन्द्रायण के गूदे के आधा किलो रस में हल्दी, सैंधा नमक, बड़ें हुलहुल की छाल 10 ग्राम डालकर बारीक पीस लें। जब पानी सूख जाये तो चौथाई–चौथाई ग्राम की गोलियां बना लें। एक–एक गोली सुबह–शाम दूध के साथ देने से गठिया से जकड़ा हुआ रोगी जिसको ज्यादा से ज्यादा सूजन तथा दर्द हो थोड़े ही दिनों में अच्छा होकर चलने–फिरने लग जाता है।

गर्भधारण :

1. बेल पत्रों के साथ इसकी जड़ों को पीसकर 10–20 ग्राम की मात्रा नियमित प्रातः–सांय पिलाने से स्त्री गर्भ धारण करती है।
2. इसकी जड़ों को पीसकर प्रसूता स्त्री के बढ़े हुए पेट पर लेप करने से पेट अपनी जगह पर आ जाता है।

बिच्छु विष: इसके फल का 6 ग्राम गूदा खाने से बिच्छु का विष उतरता है।

सर्पदंश में : बड़ी इन्द्रायण के मूल का 3 ग्राम चूर्ण पान के पत्ते में रखकर खाने से लाभ होता है।

बच्चों का डिब्बा रोग : बच्चों के डिब्बा रोग में इसकी जड़ के एक ग्राम चूर्ण में 250 मिलीग्राम सैंधा नमक मिलाकर उष्ण जल के साथ दिन में 3 बार खाना चाहिए।

कर्णघाव : लाल इन्द्रायण के फल को पीसकर नारियल तेल के साथ गर्म करके कान के भीतर के व्रण पर लगाने से वह साफ होकर भर जाता है।

शिरः शूल :

1. इसके फल के रस या जड़ की छाल को तिलों के तेल में उबालकर तेल को मस्तक पर मलने से मस्तक पीड़ा या बार–बार होने वाली मस्तक पीड़ा मिटती है।
2. इन्द्रायण के फलों का रस या जड़ की छाल के काढ़े के साथ तेल को पकाकर, छानकर 20 मि०ली० सुबह–शाम उपयोग करने से आधाशीशी, शिरशूल, पीनस, कर्णशूल और अर्धांगशूल नष्ट हो जाते हैं।

केश : इसके बीजों का तेल निकाल कर सिर के बाल मुंडवाकर सिर पर इस तेल का लेप करने से बाल काले उगने लगते हैं।

श्वास : इसके फल को चिलम में रखकर पीने से श्वास मिटता है।

सुजाक : त्रिफला, हल्दी और लाल इन्द्रायण की जड तीनों का क्वाथ बनाकर 30 मि०ली० दिन में दो बार पीने से सुजाक में लाभ होता है।

फोड़े : सर्दी–गर्मी से जो नाक में ऐसे फोड़े हो जाते हैं, जिनमें से सड़ा हुआ पीप निकलता हो, उन पर इंद्रायण फल को नारियल तेल के साथ लगाने से लाभ होता है।

विद्रधि : लाल इन्द्रायण की जड़ और बड़ी इन्द्रायण की जड़ दोनों को बराबर लेकर लेप बनाकर दुष्ट विद्रधि पर लगाने से लाभ होता है।

प्लेग : इसकी जड़ की गांठ को (इसकी जड़ में गांठे होती हैं) यथासंभव सबसे निचली या सातवें नम्बर की ले, ठंडे पानी से घिसकर प्लेग की गांठ पर दिन में दो बार लगायें और डेढ़ से तीन ग्राम तक की खुराक में उसे पिलाना भी चाहिए। इस प्रयोग से गांठ एक दम बैठने लगती है और दस्त की राह से प्लेग का जहर निकल जाता है और रोगी की मूर्च्छा दूर हो जाती है।

विशेष : गर्भिणी, स्त्रियों, बच्चों एवं दुर्बल व्यक्तियों में इसका प्रयोग यथा संभव नही अथवा सतर्कता से करना चाहिए।

1. गवादनीद्वयं तिक्तं पाके कटु सरं लघु।।
वीर्योष्णं कामलापित्तकफप्लीहोदरापहम्।
श्वासकासापहं कुष्ठगुल्मग्रन्थिव्रणप्रणुत।।
प्रमेहमूढगर्भामगंडामय विषापहम्।। (भाव प्रकाश)

Scanned by CamScanner

जामुन

वैज्ञानिक नाम	:	*Syzygium cuminii* (L.) Skeels
कुलनाम	:	Myrtaceae
अंग्रेजी नाम	:	Jambol, Jaman
संस्कृत	:	जम्बू, महाफला, फलेन्द्रा
हिन्दी	:	जामुन
गुजराती	:	जांबु, जांबू
मराठी	:	जांभूल
बंगाली	:	कालाजाम
पंजाबी	:	जामुल
तेलगु	:	नेरेडू
तमिल	:	शबलनाबल्
मलयालम	:	नवल्
कन्नड	:	नेरले

परिचय

जामुन के सदाहरित वृक्ष जंगली और बोये हुये सर्वत्र पाये जाते है। जम्बूफल और वृक्ष से सबका परिचय है, अतः वर्णन विशेष की आवश्यकता नही है।

बाह्य–स्वरूप

इसका चिरहरित बड़ा वृक्ष 100 फुट तक ऊंचा ओर 12 फुट तक मोटा होता है पत्र 3–6 इंच लम्बे, 2–3 इंच चौड़े, भालाकार या लट्वाकार, चर्मवत् चिकने, चमकीले होते है। पुष्प हरिताभ श्वेत सुगंधित होते है। फल ½ से 1½ इंच लम्बे, अंडाकार, कच्चे मे हरित, प्रौढावस्था में रक्त और बैंगनी तथा परिपक्वावस्था में गहरे नीले–काले वर्ण के हो जाते है। फल के भीतर 1–2 सेन्टीमीटर लंबी गुठ्ली होती है। पुष्प अप्रैल–जून तथा फल जून–जुलाई मे लगते है।

रासायनिक संघटन

जामुन के बीज में एक क्षाराभ अल्पमात्रा में तथा एक पांडुपीत उड़नशील तेल, गैलिक एसिड, क्लोरोफिल, वसा, राल, एल्बुमिन

Scanned by CamScanner

आदि तत्व पाये जाते है। जामुन की गुठली की मधुमेह निवारक क्रिया उक्त ग्लूकोसाइड के ही कारण है। छाल में लगभग 12 प्रतिशत टैनिन पाया जाता है, तथा विजयसार के गोंद की भाँति इसमें से एक गोंद भी निकलता है।

उपयोगी अंग हैं : (1) पत्र, (2) कांड त्वक, (3) काष्ठ, (4) फल का गूदा तथा (5) गुठली का मग्ज (गिरी)। जामुन के पके फलों का सिरका भी बनाया जाता है, तथा रस से आसवन द्वारा एक आसव भी बनाया जाता है, जिसे जाम्बन कहते हैं।

गुण–धर्म

पित्तशामक, त्वग्दोषहर, दाह–प्रशमन, छर्दि निग्रहण तथा स्तम्भन है। इसका फल अग्निवर्धक, पाचन, यकृत को उत्तेजित करने वाला, वातवर्धक, तथा अधिक मात्रा में खा लेने से यह विष्टम्भ जनक है।

जम्बूफल की गिरी पाचन क्रिया को सुधारती है। इससे रक्तगत तथा मूत्रगत शर्करा कम होती है। और मूत्र का प्रमाण भी कम होता है।

औषधीय प्रयोग

दांत के रोग :

1. जामुन के पत्तों की राख दांत और मसूड़ों पर मलने से दांत और मसूड़े मजबूत होते है।
2. पाइरिया में पके हुये फलों के रस को मुख में भरकर, अच्छी तरह हिलाकर कुल्ला करने से पाइरिया ठीक होता है।

नेत्र विकार : बच्चों के जब दांत निकलते हो, उस समय होने वाले नेत्राभिष्यंद में इसके कोमल 15–20 पत्रों को 400 ग्राम पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ से नेत्र धोना लाभकारी है।

मोतियाबिन्द : जामुन की गुठली के चूर्ण को शहद में घोटकर तीन–तीन ग्राम की गोलियाँ बनाकर प्रतिदिन 1–2 गोली सुबह–शाम खाने से और इन्हीं गोलियों को शहद में घिसकर अंजन करने से मोतिया के रोग में लाभ मिलता है।

मुँह के छाले : जामुन के नरम और ताजा 5–6 पत्तों को पीसकर उनसे कुल्ले करने से मुँह के खराब से खराब छाले भी मिट जाते है।

कंठ रोग : जामुन के रस के 10–15 मिलीलीटर की मात्रा में नियमित सेवन से कंठरोग तथा मुख में हुई गरमी दूर होती है।

कर्णपूय स्राव : जामुन की गुठली का चूर्ण, शहद में घोटकर कान में डालने से कान का बहना बन्द हो जाता है।

मधुमेह :

1. जामुन की 100 ग्राम जड़, साफ कर, 250 ग्राम पानी में पीसकर 20 ग्राम मिश्री डालकर प्रातः–सायं भोजन से पहले पीने से मधुमेह में लाभ होता है।
2. जामुन की गुठली का चूर्ण 1 भाग, शुण्ठी चूर्ण 1 भाग और गुडमार बूटी 2 भाग, इन तीनों चीजों को कपडछन करके मिश्रण को घृतकुमारी के रस में तर कर बेर जैसी गोलियाँ बना लें। दिन में तीन बार 1–1 गोली मधु के साथ लेने से मधुमेह एवं प्रमेह रोग में पेशाब में जाने वाली शक्कर 1 महीने में बन्द हो जाती है। तथा मधुमेह से होने वाली प्रमेह पीडिकाएँ तथा कारबंकल इत्यादि भी मिट जाते है।
3. जामुन के सूखे बीजों का चूर्ण 300 मिलीग्राम से 1 ग्राम तक दिन में तीन बार लेने से पेशाब के साथ शक्कर का जाना बन्द हो जाता है।
4. 250 ग्राम जामुन के पके हुये फलों को 500 मिलीलीटर उबलते हुये जल में डालकर कुछ समय के लिये उबलने दे, थोडी देर बाद ठंडा होने पर फलों को मसलकर कपड़े में छान लें, प्रतिदिन तीन बार पीने से मधुमेह व धातुक्षीणता में लाभ होता है।
5. बड़े आकार के जामुन के फलों को धूप में शुष्क कर चूर्ण कर लें। 10 से 20 ग्राम तक इस चूर्ण का दिन में तीन बार सेवन 15 दिन तक करने से मधुमेह का नाश होता है।
6. जामुन की छाल की राख मधुमेह की उत्तम औषधि है। 625 मिलीग्राम से 2 ग्राम तक की मात्रा में दिन में 3 बार सेवन करने से पेशाब में शक्कर आना बन्द हो जाता है।

अर्श :

1. जामुन की कोमल कोपलों के 20 ग्राम रस में, थोडी सी शक्कर मिलाकर दिन में तीन बार पीने से बवासीर मे बहने वाला खून बन्द हो जाता है।
2. 10 ग्राम जामुन के पत्तों को 250 ग्राम गाय के दूध में घोटकर सात दिन तक सुबह, दोपहर तथा शाम पीने से बवासीर से गिरने वाला खून बन्द हो जाता है।

अतिसार : जामुन के ताजे कोमल पत्तों के 5 से 10 ग्राम रस को बकरी के दूध 100 ग्राम के साथ पिलाने से अतिसार व आम अतिसार मिटता है।

संग्रहणी : बच्चे को अगर संग्रहणी हो जाये तो इसकी छाल के रस के बराबर बकरी का दूध मिलाकर पिलाने से आराम हो जाता है।

Scanned by CamScanner

रक्त अतिसार : इसकी छाल का चूर्ण 2–5 ग्राम को 250 ग्राम दूध के साथ 2 चम्मच मधु मिलाकर पिलाने से दस्त के साथ आने वाला रक्त रुक जाता है।

प्रवाहिका : इसकी 10 ग्राम छाल को 500 ग्राम पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ प्रवाहिका और जीर्ण अतिसार में लाभकारी है। इस क्वाथ की 20 से 30 ग्राम मात्रा दिन में 3 बार देना चाहिए।

अफारा : जामुन का सिरका 10–15 मिलीलीटर की मात्रा में पौष्टिक, संकोचक तथा पेट के अफारे को दूर करता है।

प्लीहा शोथ : जामुन की गुठली का रस 15 ग्राम की मात्रा में लेने से तिल्ली की सूजन बिखर जाती है।

वमन : आम तथा जामुन दोनों के समभाग कोमल पत्रों को 20 ग्राम की मात्रा में लेकर 400 ग्राम पानी में पकाये चतुर्थांश शेष क्वाथ ठंडा कर पिलाने से पित्तज वमन बन्द हो जाती है।

यकृतविकार : जामुन फल के अन्दर लोहे का अंश पाया जाता है, जो सौम्य होने से कोई अनिष्ट पैदा नहीं करता, इसलिये जामुन का 10 ग्राम सिरका नित्य लेने से तिल्ली और यकृत की वृद्धि में बहुत लाभ होता है।

कामला : जामुन के 10–15 ग्राम रस में 2 चम्मच मधु मिलाकर सेवन करने से, कामला पांडु रोग तथा रक्त विकार में लाभ होता है।

दस्त : जामुन की गुठली मलरोधक है। इसे समभाग में आम की गुठली और काली हरड़ के साथ भूनकर खाने से पुराने से पुराने दस्त बन्द हो जाते है।

उपदंश : उपदंश फिरंग आदि त्वगविकारों में इसके पत्तों से सिद्ध किया हुआ तेल लगाते है।

पथरी :

1. पके हुये जामुन खाने से पथरी गल कर निकल जाती है।
2. जामुन के 10 ग्राम रस में 250 मिलीग्राम सैंधा नमक मिलाकर दिन में 2–3 बार कुछ दिनो तक निरन्तर पीने से मूत्राशयगत पथरी नष्ट होती है।
3. जामुन के 10–15 ग्राम कोमल पत्तों को कल्क बनाकर इसमें काली मिर्च 2–3 नग का चूर्ण बुरककर सुबह–शाम सेवन करने से अश्मरी के टुकडे–टुकडे होकर मूत्र द्वारा बाहर निकल जाते है। अश्मरी का यह एक उत्तम उपचार है।

रक्तपित्त :

1. 5–10 ग्राम पत्र स्वरस का दिन में तीन बार भोजन से पहले नियमित सेवन रक्त पित्त में लाभकारी है।
2. इसकी एक चम्मच छाल को रात में 1 गिलास पानी में भिगोकर रखें, सुबह उसे मसलकर छान लेवें। इस प्रकार तैयार हिम को मधु मिलाकर पिलाने रक्तपित्त मे लाभ होता है।

व्रण :

1. इसकी छाल का 2–5 ग्राम महीन चूर्ण व्रण पर छिड़कने से शीघ्र व्रण रोपण हो जाता है।

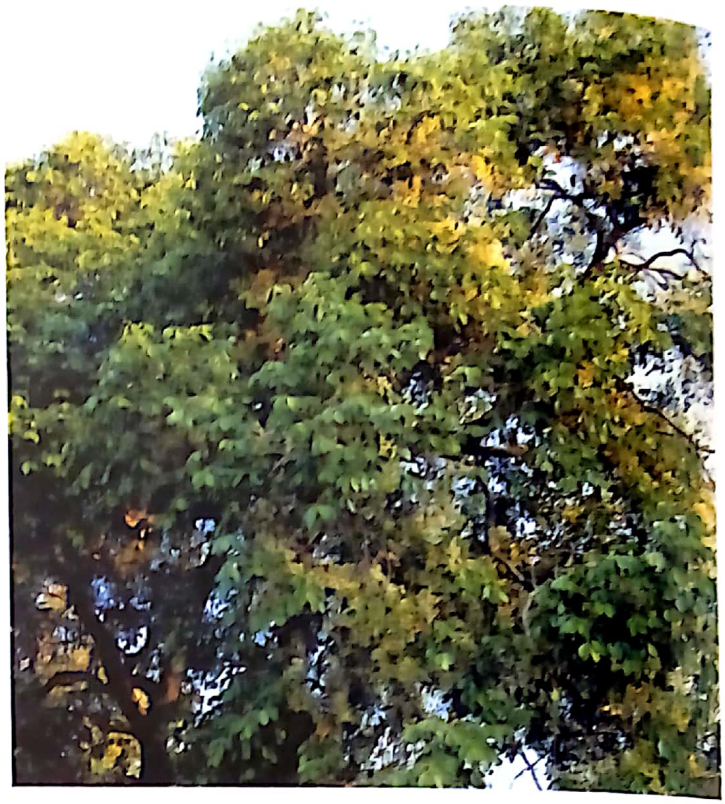

2. जामुन के 5–6 पत्तों की पुल्टिस बाधंने से दुष्ट व्रणों में से पीब बाहर निकल जाती है एवं व्रण स्वच्छ हो जाते है।

अग्निदग्ध : इसके 8–10 पत्तों को पीसकर लेप करने से अग्निदग्ध का श्वेत दाग मिट जाता है।

रक्तस्त्राव : जामुन की गुठली के 2–5 ग्राम चूर्ण में बराबर शक्कर मिलाकर खाने से पेट से खून का बहना बन्द हो जाता है।

जूते का घाव : जूता काटने से या तंग जूतो से पाँव में जख्म हो जाये तो जामुन की गुठली को पानी में पीसकर लगाने से अच्छा हो जाता है।

कुचला विष:

1. सूखी गुठली का चूर्ण 10 ग्राम देवें।
2. जामुन के ढाई पत्तों को पानी में पीसकर जहरीले जानवर के दंश में पीड़ित व्यक्ति को पिलाने से शान्ति मिलती है।

विशेष: जामुन का फल खाने से दिल की धडकन सामान्य होती है, रक्त विकार दूर होते है, और फोड़े फुन्सियों का निकलना बन्द हो जाता है। यह पित्त के अतिसार को नष्ट करता है, आवाज को साफ करता है। थकावट, दमा खांसी, मुख ग्लानि, गले की बीमारियों और मेदे के कीड़ों को नष्ट करता है। इसके शरबत से वमन, जी मिचलाना, खूनी दस्त और बवासीर में लाभ होता है।

दोष : जामुन का पका हुआ फल अधिक खाने से पेट और फेफड़ों को नुकसान पहुँचता है। यह देर से पचता है, कफ बढ़ाता है, और फेफड़ों में वायु भरता है। इसको अधिक खाने से बुखार भी आने लगता है। इसमें नमक मिलाकर खाना चाहिए।

दर्पनाशक : आँवला, अजवायन और सौंठ इसके दर्पनाशक है अर्थात् इसके द्वारा होने वाले उपद्रवों को शान्त करते हैं।

Scanned by CamScanner

जीरा श्वेत	
वैज्ञानिक नाम	*Cuminum cyminum* L.
कुलनाम	Apiaceae
अंग्रेजी नाम	Cumin seed
संस्कृत	जीराक, जरण, अजाजी, दीर्घ जीरक
हिन्दी	सफेद जीरा, जीरा
गुजराती	जीरू
मराठी	जिर्रे
बंगाली	जीरा
फारसी	जीरए सफेद
तेलगु	जीलकरी
अरबी	कम्मून, अव्यज

जीरा स्याह	
वैज्ञानिक नाम	*Cuminum cyminum* L.
कुलनाम	Apiaceae
अंग्रेजी नाम	Black caraway
संस्कृत	कृष्णा जीरक, कश्मीर जीरक
हिन्दी	स्याह जीरा
गुजराती	शाह जीरा
मराठी	शाह जिर्रे
फारसी	जीरए स्याह
तेलगु	शीमा जिलकर
अरबी	कमून, अरमनी
तमिल	शिमाई, शिरगम

परिचय

वर्ण भेद से जीरा, श्वेत और श्याम दो प्रकार का होता है। सफेद जीरे से सब परिचित हैं क्योंकि इसका प्रयोग मसाले के रूप में किया जाता है। कृष्ण जीरा भी इसी की भांति होता है। कार्वी और स्याह जीरे में इतनी समानता होती है कि इनमें भेद करना कठिन होता है। स्याह जीरा महंगा होने की वजह से इसमें अन्य कई प्रजातियाँ और मिला दी जाती है।

बाह्य–स्वरूप

जीरक और कारवी के क्षुप सौंफ के समान, पुष्प श्वेत रंग के क्षत्रकों में लगते हैं जो पकने पर फलों में बदल जाते हैं। कृष्ण जीरा की जड़ कन्दाकर होती है। जीरा की खेती समस्त भारत, विशेषकर उत्तर प्रदेश, राजस्थान और पंजाब में की जाती है। कृष्ण जीरा, गढ़वाल, कुमाँऊ, कश्मीर, अफगानिस्तान और व ब्लूचिस्तान में 6,000 से 11,000 फुट की ऊंचाई तक पाया जाता है।

रासायनिक संघटन

सफेद जीरे में अजवायन की तरह एक उड़न शील तेल, खनिज द्रव्य तथा विटामिन पाये जाते हैं। काले जीरे में भी उड़नशील तेल पाया जाता है। जिसके कारण इसकी गंध तीक्ष्ण होती है। कार्वी में उड़नशील तेल, स्थिर तेल और राल होती है।

गुण–धर्म

तीनों प्रकार के जीरे, रूखे चरपरे, उष्ण, दीपन, हल्के, ग्राही, पित्त–कारक मेध्य, गर्भाशय को शुद्ध करने वाले, ज्वरनाशक, पाचक, वीर्यवर्धक, बलकारक, रूचिकारक, कफनाशक, चक्षुष्य और आध्मान, गुल्म, वमन तथा अतिसार को नष्ट करने वाले हैं।[1]

सफेद जीरा

कड़वा, ग्राहि, पाचन, दीपन, हल्का, किंचित उष्ण, मधुर, नेत्रों को हितकारी, रूचिकारक, गर्भाशय की शुद्धि करने वाला, रूखा, बलकारी, सुगंधित, तिक्त, वात, कुष्ठ, विष, ज्वर नाशक है।[2]

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

दंतशूल : काले जीरे के क्वाथ से कुल्ले करने से दंतशूल मिटता है।

जुकाम : काले जीरे को जलाकर उसका धुआं सूंघने से जुकाम और पीनस का रोग मिटता है।

नेत्र रोग : 7 ग्राम स्याह जीरे को आधा लीटर खौलते हुए जल में डालकर इसका हिम फांट बनाकर उस जल से नेत्रों को धोने से नेत्रों की ज्योति बढ़ती है। नाखूना, रतौंधी और नेत्रों से पानी का बहना बंद हो जाता है। काले जीरे के स्थान पर सफेद जीरा भी ले सकते हैं।

रतौंधी : जीरा, आंवला तथा कपास के पत्तों को शीतल जल में पीसकर, सिर पर 21 दिन तक बांधने से लाभ होता है।

मुखरोग : 5 ग्राम जीरे को पीसकर जल में मिला लें। इस जल में चंदन घिसकर इलायची 2½ ग्राम एवं फूली हुई फिटकरी का चूर्ण 2½ ग्राम मिला लें। इस जल से कुल्ला करने से मुखगत रोगों में लाभ होता है।

हिचकी : 5 ग्राम जीरे को घी में चुपड़कर उसको चिलम में रखकर धूम्रपान करने से हिचकी बंद हो जाती है।

स्तन्यजनन :

1. प्रसूतिकाल में दूध बढ़ाने के लिए जीरे को घी में भूनकर भुने हुए आटे के लड्डूओं में डालकर, प्रसूता को खिलाने से माताओं के दूध में वृद्धि होती है। प्रसूतिकाल में घी में सेके हुए जीरे की कुछ अधिक मात्रा दाल में डालकर स्त्री को खिलाने का रिवाज है।
2. जीरे को घी में भूनकर इसका हलुआ बनाकर खिलाने से भी दूध बढ़ता है।

अतिसार :

1. अतिसार में 5 ग्राम जीरे को भूनकर तथा पीसकर दही या दही की लस्सी में मिलाकर सेवन करने से लाभ होता है।
2. बच्चों के दस्तों में जीरे को भूनकर पीसकर एक चम्मच जल में 500 मिलीग्राम घोलकर दिन में दो तीन बार पिलाने से लाभ होता है।

संग्रहणी :

1. भांग 100 ग्राम, सौंठ 20 ग्राम और जीरा 400 ग्राम तीनों को बारीक कूटकर छान लें और छने हुए चूर्ण की 80 खुराक बना लें। इनमें से एक–एक खुराक सुबह–शाम खाने से आधा घण्टा पहले 1–2 चम्मच दही के साथ सेवन करने से पुरानी से पुरानी संग्रहणी जड़ से समाप्त हो जाती है। पथ्य में दही, चावल, खिचड़ी, मट्ठा, हलका भोजन लेवें।
2. जीरा भुना हुआ और कच्ची पक्की सौंफ दोनों को बराबर

Scanned by CamScanner

मिलाकर एक–एक चम्मच की मात्रा में दो या तीन घण्टे बाद ताजे पानी के साथ फंकी लेने से मरोड़ के साथ पतले दस्त बंद हो जाते हैं।

बवासीर :

1. अर्श के मस्से जब गूदा से बाहर आकर सूज जायें, तब कृष्ण जीरे को पानी में उबालकर इस पानी से सेक करने से अच्छा लाभ होता है।
2. 5 ग्राम सफेद जीरे को पानी में उबालकर चतुर्थांश शेष रहने पर उसमें मिश्री मिलाकर दोनों समय पीने से बवासीर की वेदना पूर्ण सूजन कम हो जाती है।
3. अर्श पर इसको पानी के साथ पीसकर लेप करना चाहिए।

उदरकृमि : 15 ग्राम जीरे को 400 ग्राम पानी में उबालकर चतुर्थांश शेष काढा पिलाने से आंतों के कृमि मर जाते हैं।

वमन : जीरे को रेशमी कपडे में लपेट कर बत्ती बनाकर उसका धुआं नाक में सुंघाने से बहुत दिनों की वमन बंद होती है।

जी मिचलाना : 3 ग्राम जीरे को 3 ग्राम नीबूं के रस में भिगोकर 3 ग्राम नमक मिलाकर खटाई का जीरा बनाते हैं, यह जीरा गर्भवती स्त्री को देने से उसका जी मिचलाना बंद हो जाता है।

मंदाग्नि :

1. जीरे और धनिये के कल्क से सिद्ध किये हुए घी का प्रातः–सायं भोजन से आधा घण्टा पहले सेवन करने से मंदाग्नि और वातपित्त के रोग मिटते हैं।
2. 100 ग्राम जल में 100 ग्राम जीरा डालकर, क्वाथ करें, 25 ग्राम जल शेष रहने पर उतारकर छान ले, इसमें काली मिर्च चूर्ण 4 ग्राम, तथा नमक 4 ग्राम डालकर पीने से खट्टी डकार आनी बंद होती है तथा अंजीर्ण ठीक होकर मल शुद्धि होती है।

गर्भाशय की सूजन : गर्भाशय की सूजन में काले जीरे के क्वाथ में बैठने से लाभ होता है। काला जीरा के स्थान पर सफेद जीरा भी उपयोग में लाया जा सकता है।

मूत्रकृच्छ : स्याह जीरे को उबालकर उसमें मिश्री मिलाकर पीने से मूत्रवृद्धि होती है।

श्वेत प्रदर व रक्त प्रदर : 5 ग्राम जीरा चूर्ण तथा मिश्री चूर्ण 10 ग्राम दोनों को मिलाकर चावलों के पानी के साथ दोनों समय लेने से लाभ होता है।

मकड़ी का विष : सौंठ और जीरे को पानी के साथ पीसकर लगाने से मकड़ी का विष उतरता है।

अलर्क विष : 4 ग्राम जीरा और 4 ग्राम काली मिर्च को घोंट छानकर दोनो समय पिलाने से कुत्ते के विष मे लाभ मिलता है।

बिच्छू का विष : जीरे और नमक को पीसकर घी और शहद में मिलाकर थोडा सा गरम करके बिच्छू के डंक पर लगाने से बिच्छू का विष उतरता है।

पामा खुजली : 40 ग्राम जीरा और 20 ग्राम सिन्दूर को 320 ग्राम कडवे तेल में पकाकर लगाने से खुजली मिटती है।

ज्वर :

1. 5 ग्राम जीरे के चूर्ण को कचनार की छाल के 20 मिलीग्राम रस में मिला कर दिन में तीन बार लेने से ज्वर उतरता है।
2. जीर्ण ज्वर में 5 ग्राम जीरे को गाय के दूध में भिगोकर सुखा लें, इसका चूर्ण बनाकर मिश्री मिलाकर दिन में तीन बार खाने से दुर्बलता दूर होती है।

मलेरिया :

1. मलेरिया ज्वर में करेले के 10 ग्राम रस में जीरे का चूर्ण 5 ग्राम मिलाकर दिन में तीन बार पिलाने से लाभ होता है।
2. इसके 4 ग्राम चूर्ण को गुड़ में मिलाकर भोजन से 1 घण्टा पहले खाने से विषम ज्वर, मंदाग्नि और वातरोग शांत होते हैं।

1. जीरकत्रितयं रूक्षं कटूष्णं दीपनं लघु।
संग्राहि पित्तलं मेध्यं गर्भाशयविशुद्धिकृत्।।
ज्वरघ्नं पाचनं वृष्यं बल्यं रूच्यं कफापहम्। (भाव प्रकाश)
2. चक्षुष्यं पवनाध्मान गुल्मच्छर्द्यतिसार हृत्।।
शुभ्रजीरं कटु ग्राहि पाचनं दीपनं लघु।
किंचित् उष्णं च मधुरं, चक्षुष्यं रूचिकृन्मतम्।।
गर्भाशयशुद्धिकरं रूक्षं बल्यं सुगन्धिकम्।
तिक्तं वमिक्षयाध्मानं वातं कुष्ठं विषं ज्वरम्।
अरोचकं रक्तदोषं अतिसारं कृमींस्तथा।
पित्तं च गुल्मरोगं च नाशयेदिति कीर्त्तितम्।। (नि०र०)

Scanned by CamScanner

72 कचनार

वैज्ञानिक नाम	:	*Bauhinia variegata* L.
कुलनाम	:	Caesalpiniaceae
अंग्रेजी नाम	:	Bouhinia
संस्कृत	:	कांचनार, गण्डारि, कर्बुदार, चमरिक, कुद्दाल, युग्मपत्र
हिन्दी	:	कचनार, कचनाल, लाल कचनार
गुजराती	:	चंपाकाटी
मराठी	:	कोरल, कांचन
बंगाली	:	काञ्चन
पंजाबी	:	कचनाल, कुलाड़
तेलगु	:	देवकांचनमु
मलयालम	:	चुवन्नमंदारम्

परिचय

सम्पूर्ण भारतवर्ष के जंगलों में हिमालय के तराई प्रदेश में तथा निचली पहाडियों पर कचनार के स्वयं–जात वृक्ष पाये जाते हैं। पुष्प भेद से कचनार की तीन जातियां पायी जाती हैं। रक्त पुष्पी, श्वेत पुष्पी तथा पीत पुष्पी/पीले कचनार के वृक्ष वृहदाकार तथा पर्वतीय प्रदेशों में होते हैं। इसके पत्र तथा पुष्प दोनो से बडे होते हैं। औषध्यर्थ व्यवहार में प्रायः लाल फूल वाले रक्त कचनार का ही प्रयोग किया जाता है, परंतु गुण–धर्मों में सभी प्रकार के कचनार समान है, इसलिए एक के अभाव में दूसरे को प्रयुक्त किया जा सकता है।

बाह्य–स्वरूप

कंचनार के वृक्ष 15–20 फुट ऊंचे, शाखाएं नाजुक झुकी हुई, कांडत्वक 1 इंच मोटी, खुरदरी, भूरी व श्वेत वर्ण, पत्र एकान्तर 2–6 इंच लम्बे, 3–7 इंच चौड़े, द्विखंडित, खंड गोलाभ, हृदयाकार पत्र के अग्रभाग में चीरा इतना गहरा होता है कि 2 पत्र एक साथ जुड़े हुए मालूम होते हैं। पुष्प बडे, श्वेत, बैंगनी या गुलाबी जिनमें एक अंतर्दल किंचित पीतवर्ण होता है। फली आधे से एक फिट तक लम्बी, चपटी,

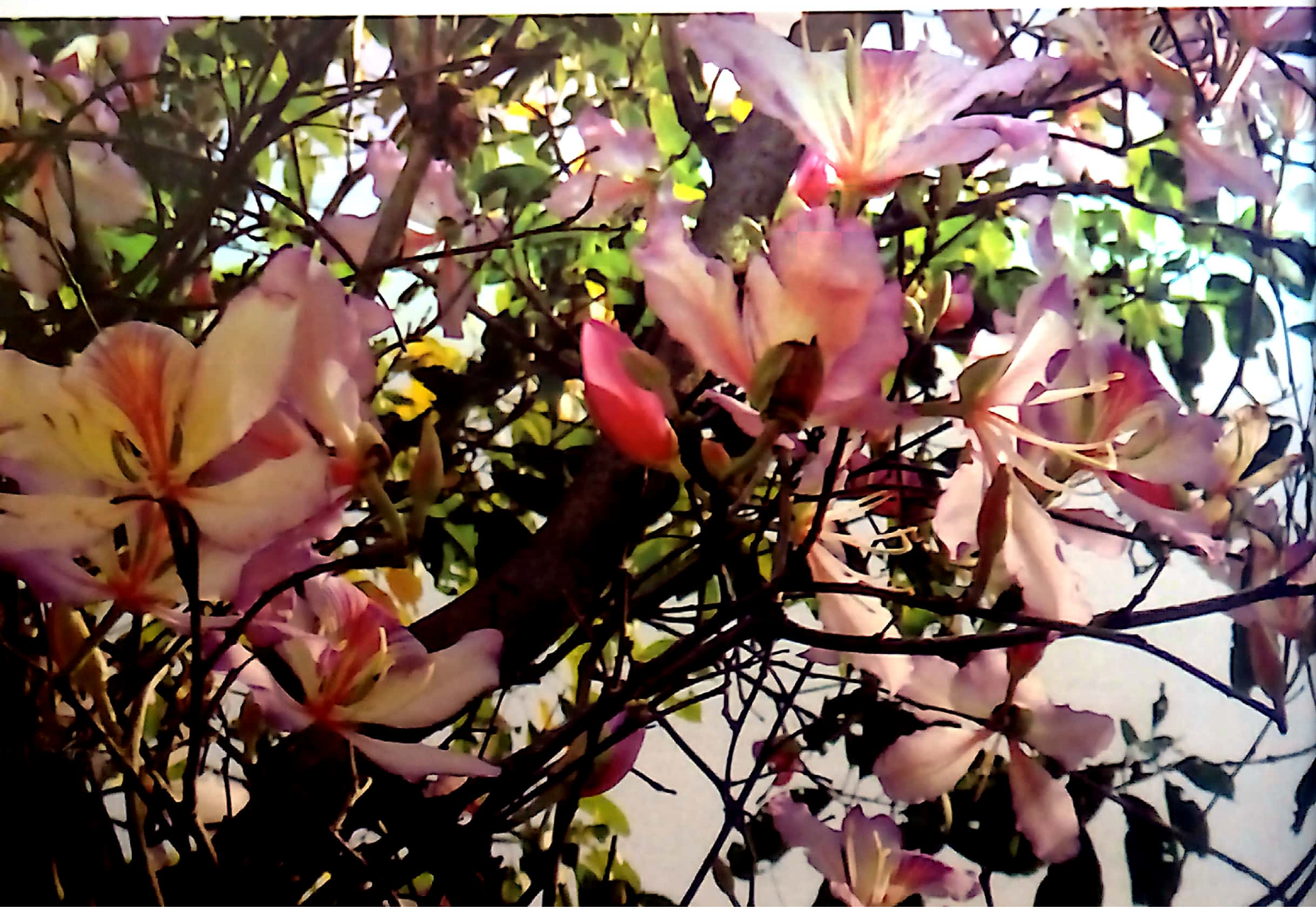

Scanned by CamScanner

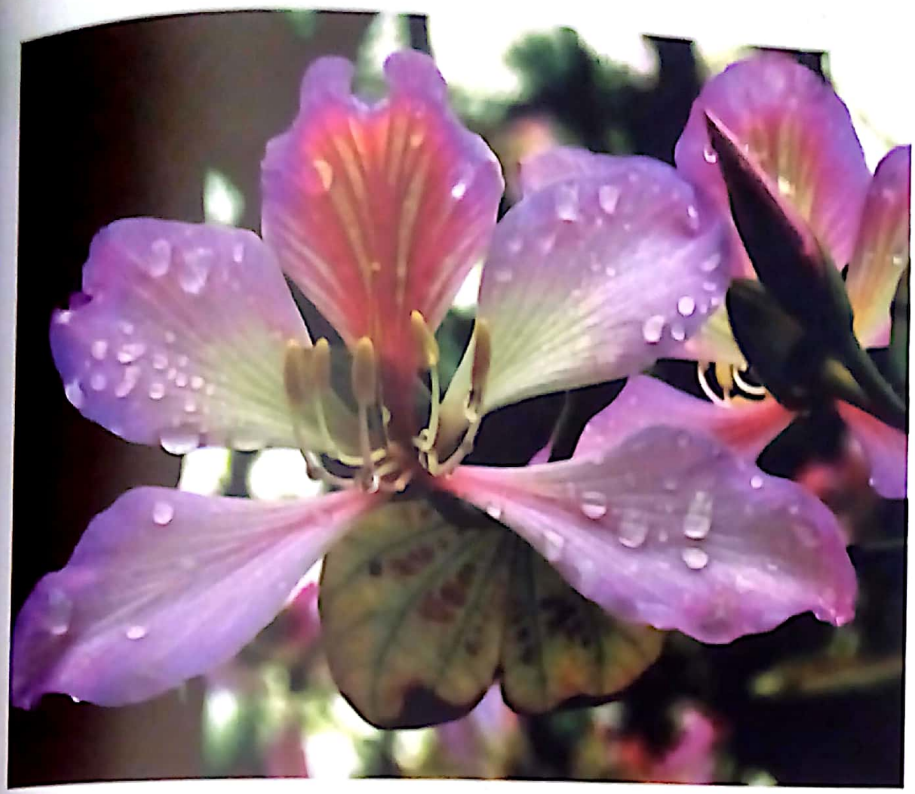

कचनार (बैंगनी)

चिकनी, कड़ी और मुड़ी हुई होती है। फरवरी–मार्च में पत्ररहित वृक्ष में पुष्प लगते हैं और फलागमन अप्रैल–मई में होता है।

रासायनिक संघटन

कचनार की छाल में टैनिन, शर्करा और एक भूरे रंग का गोंदीय पदार्थ पाया जाता है।

गुण–धर्म

व्रणशोधन, रोपण, स्तम्भन, मूत्र संग्रहणीय, रक्तस्तम्भन, मेदोरोग, कुष्ठ, प्रमेह, रक्तपित्त, गंडमाला एवं लसीका ग्रंथिशोथ नाशक।[1] कचनार फल हलके, रूखे, ग्राही, पित्त, प्रदर, क्षय, कास तथा रूधिर विकार को नष्ट करने वाले हैं।[2]

औषधीय प्रयोग

श्वेत/पीला कचनार

मुखपाक : इसकी छाल के क्वाथ, फांट या हिम के कुल्ले करने से मुखपाक मिटता है।

यकृतशोथ : पीले कंचनार की 10–20 ग्राम जड़ की छाल का क्वाथ सुबह–शाम पिलाने से जिगर का शोथ उतरता है।

मूत्रकृच्छ : इसके सूखे फल के चूर्ण का 5–10 ग्राम की मात्रा में सेवन करने से मूत्रकृच्छ मिटता है।

आमातिसार :

1. पीले कचनार के शुष्क पत्रों के 5 ग्राम चूर्ण को फांककर अनुपान में सौंफ का अर्क 2 चम्मच पीने से आमातिसार मिटता है।
2. इसके 10 ग्राम पुष्पों को अधखिली अवस्था में उबाल–छानकर दिन में दो बार पिलाने से भी आम अतिसार मिटता है।

आंव–दस्त : इसके शुष्क फल के 2 से 5 ग्राम चूर्ण को पानी के साथ दिन में 3–4 बार सेवन करने से अतिसार बंद होते हैं।

आंत्रकृमि : पीले कचनार की छाल 20 को 400 ग्राम पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ पिलाने से आंत्रकृमि मर जाते हैं।

व्रणकृमि : पीले कचनार के बीजों को सिरके में पीसकर लेप करने से घाव के अन्दर के कीड़े मर जाते हैं।

लाल कचनार

दंतशूल : इसकी सूखी टहनियों की राख को या कोयलों को घिसकर दांतों पर मंजन करने से दंतशूल में कुछ दिनों में आराम हो जाता है।

मुख के छाले :

1. कचनार वृक्ष की छाल और अनार के फूल इन दोनों के क्वाथ से कुल्ले करने से मुंह के छालों में लाभ होता है।

Scanned by CamScanner

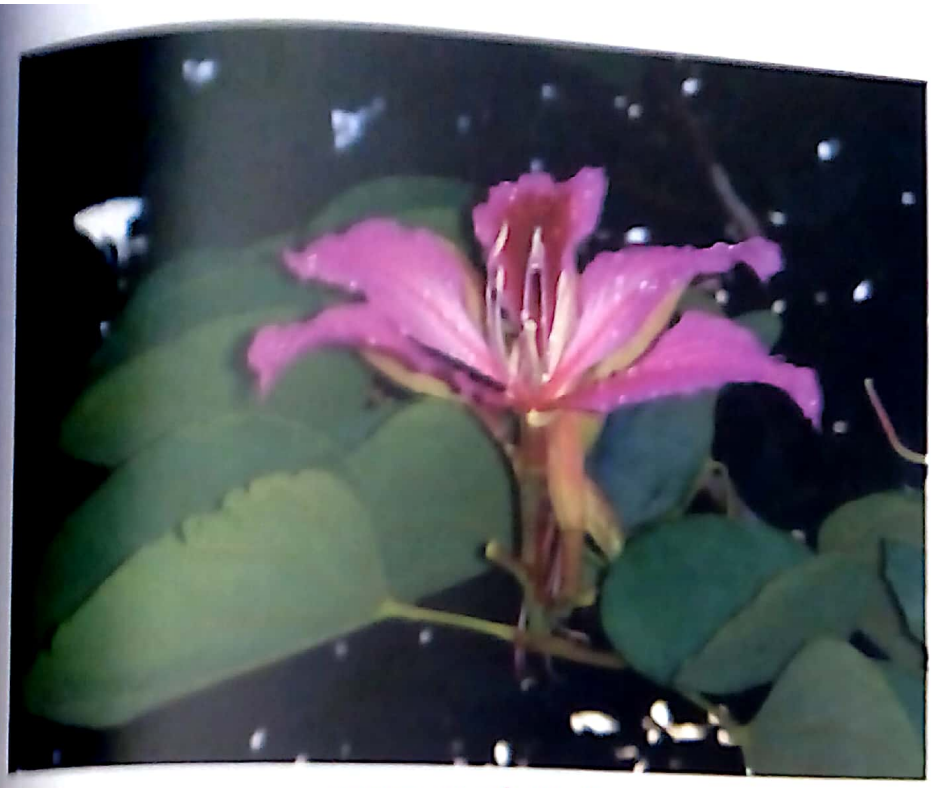

कचनार (गुलाबी-बैंगनी)

ग्राम की मात्रा में खाने से लाभ होता है।

2. इसके सूखे पुष्पों के चूर्ण की 2–5 ग्राम मात्रा को शक्कर के साथ फंकी देने से मल ढीला हो जाता है।

रक्तार्श :

1. लाल कचनार की शुष्क कलियों के 2–5 ग्राम चूर्ण में बराबर मिश्री मिलाकर मक्खन के साथ दिन में तीन बार सेवन करने से रक्तार्श मिटता है।[2]
2. जामुन, रीठा, और कचनार तीनों की छाल को पानी में उबालकर गुदा को धोने से रक्तार्श मिटता है।
3. कचनार की कलियों के गुलकन्द से भी लाभ होता है।

अतिसार : कचनार की कलियां शीतल और ग्राही है, इनका साग खाने से अतिसार मिटता है।

2. कचनार वृक्ष की अंतर छाल 50 ग्राम लेकर आधा किलो पानी में उबालें, जब आधा पानी शेष रह जाये तो इस पानी से कुल्ले करने चाहिए। किसी भी औषधि से ठीक न होने वाले छाले ठीक हो जाते हैं। सूतिका रोगग्रस्त स्त्रियों के छाले भी ठीक हो जाते हैं।

गंडमाला

1. इसकी 10–20 ग्राम छाल का 400 मिलीलीटर पानी में उबालकर चतुर्थांश बचे क्वाथ को पिलाने से गंडमाला मिटती है।
2. रक्त कचनार की छाल के 20 ग्राम क्वाथ में शुंठी चूर्ण 1 ग्राम घुरक कर सुबह–शाम पिलाने से भी गंडमाला मिटती है।
3. इसकी छाल या फूल के क्वाथ को ठंडा करके शहद मिलाकर 10–20 ग्राम दिन में दो बार सेवन करने से गंडमाला मिटती है तथा खून साफ होता है।
4. कचनार की छाल का चूर्ण 250 ग्राम इसमें 250 ग्राम चीनी मिलाकर प्रातः–सायं 5–10 ग्राम चूर्ण जल या दूध के साथ लाभकारी होता है।

मंदाग्नि : लाल कचनार की 10–20 ग्राम जडों का क्वाथ दिन में दो बार पिलाने से मंदाग्नि मिटती है।

अफारा : 3 ग्राम अजवायन के चूर्ण के साथ इसका मूल क्वाथ पिलाने से अफारा यानि पेट का फूलना बंद हो जाता है।

जीर्ण विबंध :

1. कचनार की कलियों के गुलकन्द को 5–10

दाह : इसकी छाल के 5 ग्राम रस में 20 ग्राम जीरे का चूर्ण या 250–500 मिलीग्राम कपूर मिलाकर दिन में दो बार पिलाने से दाह मिटती है।

रक्तपित्त : इसके शुष्क पुष्पों का 2–5 ग्राम चूर्ण को 1 चम्मच मधु के साथ दिन में तीन बार चाटने से रक्त पित्त मिटता है।

व्रण : कचनार की जड़ को चावलों के धोवन के साथ पीसकर पुल्टिस बनाकर बांधने से फोड़े जल्दी पक जाते हैं। घाव और अर्बुद पर इसकी छाल को पीसकर घाव पर लगाने से लाभ होता है।

1. इसकी छाल का 20 ग्राम क्वाथ 250 मिलीग्राम प्रवाल भस्म के

कचनार (श्वेत)

Scanned by CamScanner

कचनार (श्वेत–बैंगनी)

साथ दिन में 3–4 बार कुछ समय तक लगातार सेवन से लाभ होता है।

2. कचनार के पुष्प या पत्रों का चूर्ण ढाई ग्राम तथा प्रवाल भस्म 1/16 ग्राम चीनी के साथ दिन में तीन बार सेवन करने से लाभ होता है। इसके सेवन के पश्चात् दूध पिलाना चाहिए।

विविध उपयोग :

1. इसकी कलियों का काढ़ा खांसी, खूनी बवासीर, पेशाब की राह से खून आना तथा अत्यधिक रक्तस्राव पर उपयोगी है। इस काढ़े की 20 मि०ली० मात्रा में दिन में दो बार पीना चाहिये।
2. इसकी छाल को उबालकर गंडूष करने से मसूड़ों की पीड़ा मिटती है।

सफेद कचनार

दूषित पृथ्वी, जलवायु और सड़े हुए फल से पैदा हुए ज्वर में जो मस्तक पीड़ा होती है, उसको मिटाने के लिए सफेद कचनार के 10–20 ग्राम पत्तों को 400 ग्राम जल में उबालकर चतुर्थांश बचा क्वाथ पिलाना चाहिए।

1. कांचनारो हिमो ग्राही तुवरः श्लेष्मपित्तनुत्।
कृमिकुष्ठगुदभ्रंशगण्डमालाव्रणापहः।।
कोविदारोऽपि तद्वत्, स्यात् तयोः पुष्पं लघु स्मृतम्।
रूक्षं संग्राहि पित्तास्रप्रदरक्षयकासनुत्।। (भाव प्रकाश)

2. कोविदारपुष्पाणि मधुराणि मधुरविपाकानि,
रक्तपित्तहराणिच। (सुश्रुत)

3. कोविदारस्य.....। पुष्पं ग्राहि प्रशस्तं च रक्तपित्ते विशेषतः।। (चरक)

Scanned by CamScanner

कनेर

वैज्ञानिक नाम	:	*Thevetia peruviana* (Pers.) Schum.
कुलनाम	:	Apocynaceae
अंग्रेजी नाम	:	Oleander, Sweet Scented
संस्कृत	:	करवीर, हयमार, शतकुम्भ, अश्वमारक
हिन्दी	:	कनेर, कनैल
गुजराती	:	कणेर, करेण
मराठी	:	कण्हेर
बंगाली	:	करवी
पंजाबी	:	कनिर
तेलगु	:	गन्नेस, कस्तूरिपिट्टे
कन्नड़	:	काणिगद, गिड़
अरबी	:	दिफली
फारसी	:	खरजहरा

परिचय

कनेर के पौधे भारतवर्ष मे मंदिरो, उद्यानो और गृहवाटिकाओं में फूलों के लिए से लगाये जाते है। इसकी तीन प्रजातियां पायी जाती है: लाल, श्वेत और पीली कनेर। इस पर वर्ष पर्यन्त फूल आता है। श्वेत और पीली कनेर जहां सात्विक भाव जगाती है, वही लाल (गुलाबी) कनेर को देखकर ऐसा भम होता है कि जैसे यह बसंत और सावन का मिलन तो नहीं।

बाह्य–स्वरूप

यह 10–12 फुट तक ऊंचा झाड़ीनुमा पेड़ होता है, जिसका कांड छोटा बहुशाखीय और शाखाओं पर दोनो ओर 3–3 के जोड़े में 6–9 इंच लम्बे, नोकदार, 1 इंच चौड़े पत्ते लगते है। सफेद और लाल कनेर के पत्ते रूखे, परंतु पीले कनेर के पत्ते बिल्कुल हरे, चिकने चमकीले और कुछ छोटे होते है।

रासायनिक संघटन

इस पौधे का सर्वांग विषाक्त होता है। इसके मूल, त्वक, बीज में हृदय पर कार्य करने वाले ग्लाइकोसाइडों का पता चला है। इनमें नेरिओडोरिन तथा कैरोबिन स्कोपोलिन है। पत्तियों मे मुख्य हृद्य पदार्थ ओलिएंड्रीन पाया जाता है। पीले कनेर मे पेरूवोसाइड

Scanned by CamScanner

लाल कनेर

आदि पाये जाते हैं। कनेर की भस्म में पौटेशियम लवण अधिक होते हैं।

गुण–धर्म

बाह्यकर्म में यह कुष्ठघ्न, व्रणशोधन, व्रणरोपण तथा शोथहर है। कुष्ठ, व्रण तथा शोथ में एवं विशेषतः उपदंश और फिरंग में लाभकारी है। यह कफवात शामक है तथा दीपन, विदाही तथा भेदन है इसलिए उदर रोग में यह प्रयुक्त होता है। कनेर की हृदय पर तुरंत क्रिया होती है, उचित मात्रा में यह अमृत है, परंतु अधिक लेने पर हृदय के लिए यह विष है। यह रक्तशोधक भी है। यह श्वांसहर है, हृदयजनित श्वांस विकारों में यह प्रयुक्त होता है। ज्वरघ्न और विषम ज्वर प्रतिबंधक है, यह तीव्र विष है। यह मूत्रल है, मूत्रकृच्छ्र और अश्मरी में प्रयुक्त होता है।

औषधीय प्रयोग

शिरोवेदना : कनेर के पुष्प तथा आंवले को कांजी में पीसकर मस्तक पर लेप करने से शिरोवेदना हट जाती है।'

सफेद कनेर के पीले पत्तों को सुखा महीन पीस जिस ओर पीडा हो उसी ओर के नासिकाछिद्र में एक दो चावल भर सुंघाने से छींके आकर और नाक टपक कर मस्तक पीड़ा मिट जाती है।

नेत्र रोग : पीले कनेर की जड़ को सौंफ और करंज के रस के साथ पीसकर आंख में लगाने से नजला, पलकों की मुटाई जाला, फूली इत्यादि नेत्र रोगों में आराम होता है।

दातुन : सफेद कनेर की डाली से दातुन करने से हिलते हुए दांत मजबूत होते हैं और दांतों को बड़ा लाभ होता है।

उबटन : सफेद कनेर के फूलों को पीसकर चेहरे पर मलने से सुन्दरता बढ़ती है।

हृदय शूल : कनेर के जड़ की छाल 100–200 मिलीग्राम अल्प मात्रा में भोजन पश्चात सेवन से मूत्र होता है तथा हृदय वेदना कम हो जाती है।

अर्श : इसकी जड़ को ठंडे पानी के साथ पीसकर दस्त जाते समय जो अर्श बाहर निकल जाते हैं उन पर लगाने से वे मिट जाते हैं।

कामेन्द्रिय–शैथिल्य :

1. सफेद कनेर की 10 ग्राम जड़ पीसकर 20 ग्राम वनस्पति घी में पकायें, फिर ठंडा करके जमने पर कामेन्द्रिय पर मालिश करने से लाभ होता है।
2. कनेर के 50 ग्राम ताजे फूलों को 100 ग्राम मीठे तेल में पीसकर एक हफ्ते तक रख दें। फिर 200 ग्राम जैतून के तेल में मिलाकर कुष्ठ, सफेद दाग, पीठ का दर्द, बदन दर्द तथा कामेन्द्रिय पर उभरी नसों की कमजोरी दूर करने के लिए 2–3 बार नियमित मालिश करें।

उपदंश : सफेद कनेर की जड़ को पानी के साथ पीसकर उपदंश के घावों पर लगाने से लाभ होता है।

पक्षाघात में : सफेद कनेर की जड़ की छाल, सफेद गुंजा की दाल

श्वेत कनेर

Scanned by CamScanner

तथा काले धतूरे के पत्ते इनको समान मात्रा में लेकर इनका कल्क बना लेना चाहिए, इसके पश्चात, चार गुने जल में तथा कल्क के समभाग तेल मिलाकर कलई वाले बर्तन में मंदाग्नि पर पकाना चाहिए, जब केवल तेल शेष रह जाये, तब कपड़ छानकर इस तेल की मालिश करने से पक्षाघात ठीक हो जाता है।

जोडों की पीडा :

1. इसके पत्तो को पीसकर तेल में मिलाकर लेप करने से जोड़ों की पीड़ा मिटती है।
2. सफेद कनेर के पत्तों के क्वाथ से उपदंश के व्रणों को धोना चाहिए।

दाद : सफेद कनेर की जड़ की छाल का तेल बनाकर लगाने से कई प्रकार के दाद और कोढ़ मिटते हैं।

चर्मरोग : सफेद कनेर की जड़ के क्वाथ को राई के तेल में उबालकर त्वचा रोगों में लेप करते हैं।

खुजली :

1. कनेर के पत्रों से सिद्ध तेल खुजली को 1 घण्टे के अंदर कम कर देता है।
2. पीले कनेर के पत्ते या फूलों का जैतून के तेल में बनाया हुआ मलहम, हर प्रकार की खुजली में लाभदायक है।

कुष्ठ :

1. सफेद कनेर की जड़, कुटज फल, करंज के फल, दारू हल्दी की छाल और चमेली की नयी पत्तियों का लेप कुष्ठनाशक है।[1]
2. कनेर के पत्तों के क्वाथ से नियमित रूप से कुछ काल तक स्नान करने से कुष्ठ रोग में बहुत लाभ होता है।
3. इसकी छाल का लेप करने से चर्म कुष्ठ मिटता है।

संक्रामक कीटाणु : इसके पत्तों के तेल की मालिश करने से जिन जीवों से संक्रामक रोग लगते हैं वैसे कोई भी जीव शरीर पर नहीं

श्वेत कनेर

लाल कनेर

बैठते हैं।

कृमि :

1. इसके पत्तों का तेल में पुल्टिस बनाकर बांधने से घाव के कीड़े मरते हैं।
2. कीड़ों के खाये अंगों पर कनेर की मूल, वायविडंग उनको गोमूत्र में पीसकर लेप करें। इस पर गोमूत्र का परिषेक करें।

अफीम : कनेर की जड़ का महीन चूर्ण 100 मिलीग्राम की मात्रा में दूध के साथ कुछ हफ्ते तक दिन में दो बार खिलाते रहने से अफीम की आदत छूट जायेगी।

सर्पदंश : सर्पदंश में इसकी जड़ की छाल 125 से 250 मिलीग्राम की मात्रा या पत्ते 1–2 थोड़े–थोड़े अंतर पर देते हैं, जिसके कारण वमन होकर विष उतर जाता है।

विशेष : कनेर का सर्वांग विषैला होता है। इसलिए इसका आंतरिक प्रयोग कभी खाली पेट नहीं करना चाहिए। इसका प्रयोग किसी चतुर वैद्य की निगरानी में ही करना चाहिए।

Scanned by CamScanner

कटेरी (कण्टकारी) डोरली

74

वैज्ञानिक नाम	:	*Solanum surattense* Burm. f
कुलनाम	:	Solanaceae
अंग्रेजी नाम	:	Yellow berried night shade
संस्कृत	:	कण्टकारी, श्वेता, क्षुद्रा, चन्द्रहासा, लक्ष्मणा, क्षेत्रदूतिका, चन्द्रपुष्पा, व्याघ्री
हिन्दी	:	कटेरी, लघुकाई, भटकटैया
मराठी	:	भुईरिंगणी
बंगाली	:	कण्टिकारी
पंजाबी	:	कण्डियारी
तेलगु	:	कूदा
द्रविड़ी	:	कनकत्तरि
कन्नड़	:	मल्लुचि, रगुल

परिचय

कटेरी भारतवर्ष में प्रत्येक स्थान पर पाई जाती है। इसका पौधा झाड़ी के रूप में जमीन पर फैला हुआ होता है। इसको देखने से ऐसा लगता है, जैसे कोई क्रोधित नागिन शरीर पर अनेकों कांटो का वस्त्र ओढे गर्जना करती हुई मानो कहती हो, मुझे कोई छूना मत। कटेरी में इतने कांटे होते है कि इसे छूना दुष्कर है इसीलिये इसका एक नाम दुःस्पर्शा है। हरे रंग की पत्तियों पर पीले रंग के कांटे बहुत अच्छे लगते है।

बाह्य–स्वरूप

कटेरी की चमकीले हरे रंग की बहुवर्षीय झाड़ी होती है। अपने चारों ओर भूमि पर 1–4 फुट के व्यास में फैली हुई पाई जाती है। इसका रंग चमकीला हरा और उस पर पीले रंग के डेढ़ इंच लम्बे या इससे कुछ छोटे कांटे होते है। पत्र 4–6 इंच लम्बे कटे फटे खण्डित या दंतुर होते है। किनारे वाले श्वेत रेखांकित होते हैं तथा उनपर ऊपर नीचे असंख्य कांटे होते है। मध्य शिरा श्वेत होती है। पुष्प नीले या बैंगनी रंग के, पुंकेसर पीले रंग के होते है। फल गोल, हरे श्वेत रेखांकित होते है। पकने पर यह पीले हो जाते

Scanned by CamScanner

है। कटेरी दो जातियां होती है : 1. नील पुष्पी तथा 2. श्वेत पुष्पी। श्वेत पुष्पी में सफेद फूल लगते है, इसका रंग भी श्वेत ही होता है। यह कम पाई जाती है। बसन्त ऋतु में इसमें फूल आते है, वर्षा ऋतु में यह गोल–गोल फलों से लद जाती है। और शरद ऋतु में फल पक जाते है। दिसम्बर–जनवरी में जाकर इसकी बेल प्रायः जीर्ण–शीर्ण थकी हारी हो जाती है।

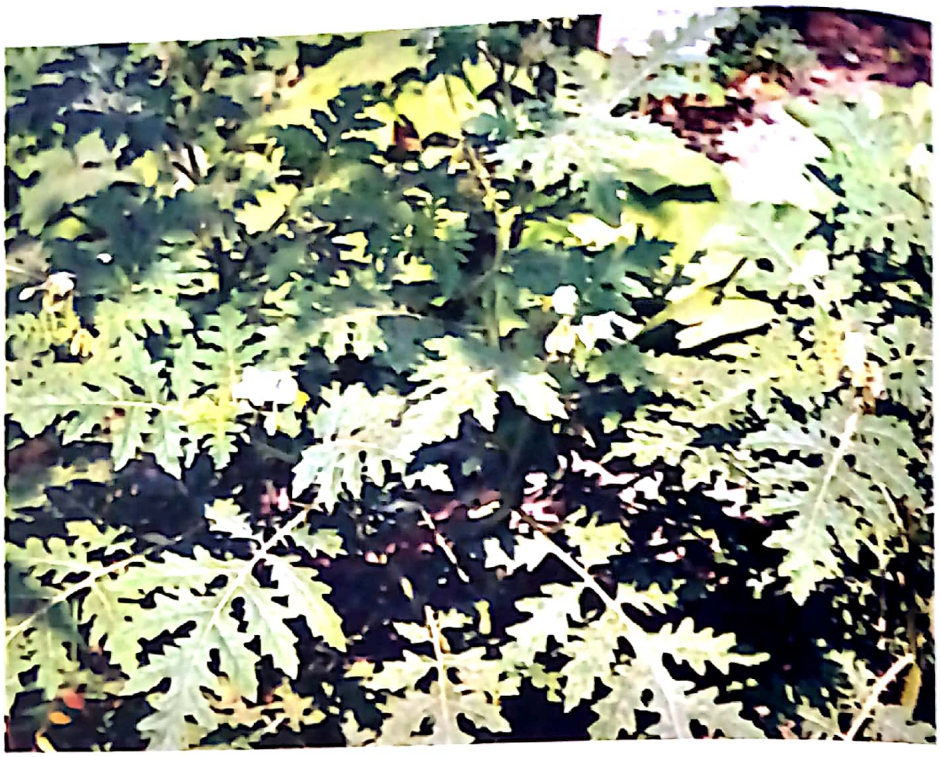

रासायनिक संघटन

इसके पंचाग की राख में पौटेशियम नाइट्रेट, कार्बोनेट और सल्फेट होता है। पंचाग में वसा तथा रालयुक्त पदार्थ और डायोसजेनिन पाये गये है। फलों में सोले सोनिज और बीजों में से हरापन लिये–पीले रंग का 19.3 प्रतिशत तेल प्राप्त होता है।

गुण–धर्म

गरम प्रकृति की होने के कारण स्वेदजनन है। उष्ण वीर्य होने के कारण कफ वात का नाश करने वाली है। कटु, तिक्त और उष्ण होने से दीपन और पाचन हैं। मन्दाग्नि और पित्त विकार को दूर करने से लिये यह औषधि बडी प्रभावशाली है। तीक्ष्ण होने से कृमिघ्न और रेचन है। यह मूत्रल, कफनिः सारक और ज्वरनाशक है। मूत्रल होने के कारण जलोदर, लीवर की वृद्धि, सुजाक, मूत्राघात और मूत्राशय की पथरी में भी यह औषधि लाभकारी सिद्ध हुई है। यह कृमिघ्न है, इसलिये दांतों की पीड़ा में बहुत उपयोगी है। यह खून को साफ करने वाली, सूजन कम करने वाली और रक्त भार को कम करती है। यह कफघ्न होने से कासहर, कण्ठ्य, हिक्का निग्रहण और श्वासहर है। श्वास नलिकाओं तथा फेफडों से हिस्टेमीन को निकालती है। यह आवाज को व्याघ्र के समान तेज करती है इसलिये इसको व्याघ्री कहते है। छोटी कटेरी और बड़ी कटेरी, चित्रक, शतावरी, वरूण यह सब कफ, मेद, शिरः शूल, और गुल्म व अन्तर्विद्रधि को नष्ट करते है। कफ अरुचि हृदयरोग, मूत्रकच्छ की पीड़ा को दूर करते है।[1]

औषधीय प्रयोग

सिर पीड़ा : कटेरी, गोखरु के क्वाथ का लाल धान के चावल से निर्मित ज्वरनाशक पेय का थोड़ी–थोड़ी मात्रा में दिन में तीन–चार बार सेवन करने से ज्वर में उत्पन्न पसलियों, बस्ति और सिर की पीड़ा का नाश होता है।[2]

मस्तक शूल : इसके फलों के रस का माथे पर लेप करने से मस्तक शूल मिटता है।

नेत्रपीडा : कटेरी के 20–30 ग्राम पत्तों को पीसकर उनकी लुग्दी बनाकर आंखों पर बांधने से आंखों का दर्द दूर होता है।

नेत्रजाला : इसकी जड़ को नीबू के रस में घिसकर आंख में अंजन लगाने से धुन्ध और जाला मिटता है।

अपस्मार : इसकी जड़ और भांग के बीज दोनों बराबर लें तथा बालक के मूत्र में पीसकर नाक में 2–2 बूंद दिन में तीन–चार टपकाने से अपस्मार मिटता है।

दंतशूल : अगर दाढ़ बहुत दुःखती हो तो कटेरी के बीजों का धुआं लेने से तुरन्त आराम होता है। कटेरी की जड़, छाल, पत्ते और फल लेकर उनका काढ़ा बनाकर कुल्ला करने से दांतो के सब प्रकार के दर्द में आराम मिलता है।

इन्द्र लुप्त : इसके पत्रों के 20–50 मिलीलीटर स्वरस में थोड़ा शहद मिला कर मर्दन करने से कुछ दिनों में कीटाणु नष्ट होकर तथा त्वचा मुलायम होकर नये बाल आ जाते है।

खांसीः

1. कटेरी के फूलों के ½ से 1 ग्राम चूर्ण को शहद के साथ चटाने से बालकों को सब प्रकार की खांसी दूर होती है।[3]
2. खांसी में 15–20 ग्राम पत्रस्वरस या 50–60 ग्राम मूल क्वाथ में 2 ग्राम छोटी पीपल एवं 250 मिलीग्राम सैंधा नमक मिलाकर देने से आराम मिलता है।
3. इसके 10–20 ग्राम क्वाथ में पीपल का 2 ग्राम चूर्ण मिला कर दिन में दो तीन बार पिलाने से खांसी मिटती है।

दमाः

1. इस वनस्पति की प्रसिद्धि कफ को नाश करने के सम्बन्ध में बहुत अधिक है। कफ, ज्वर, दमा, छाती का दर्द इत्यादि रोगों में इसका बहुत प्रयोग होता है। जब छाती में कफ भरा हुआ

Scanned by CamScanner

हो तब इसका 50–60 ग्राम काढा देने से बहुत लाभ होता है। इसके फलों के 50–60 ग्राम काढे में 2 ग्राम भुनी हुई हींग और उतना ही सैंधा नमक डालकर पीने से भयकर दमा भी बैठ जाता है।

2. पंचाग को जौ कूट कर आठ गुना पानी मिला पकावें, दो भाग शेष रहने पर स्थिर होने पर ऊपर का पानी पुनः पकावे, गाढ़ा होने पर कांच की शीशी में रखें। इसमें से 1 ग्राम मधु के साथ सुबह–शाम सेवन से श्वास कास दूर होता है।

कंठशोथ : गले की सूजन में फलों का 10–20 ग्राम स्वरस देने से लाभ होता है।

क्षयकास : मोथा, पिप्पली, मुनक्का तथा बडी कटेरी के शुष्क फल इन्हें समभाग में मिश्रित कर 5–10 ग्राम की मात्रा में लेकर घी 1 चम्मच और मधु 2 चम्मच के साथ सुबह–शाम सेवन करने से क्षयकास शान्त होता है1

जुकाम : मौसम के बदलने पर नजला, जुकाम व बुखार हो जाया करता है। उसमें पित्तपापड़ा, गिलोय और छोटी कटेरी सबको समान मात्रा में 20 ग्राम लेकर आधा किलो पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष काढ़ा पिलाने से बहुत लाभ होता है।

स्तनशैथिल्य : कटेरी की जड़, अनार की जड और कन्दोरी को समभाग लेकर पीसकर स्तनों पर लेप करने से स्तन कठोर हो जाते है।

वमन : मूल का 10–20 ग्राम स्वरस 2 चम्मच मधु में मिलाकर देने से वमन बंद होता है।

छर्दि : अडूसा, गिलोय, छोटी कटेरी इनके क्वाथ मे शीतल होने पर मधु का प्रक्षेप देकर 10–20 ग्राम की मात्रा में पीने से शोथ, कास ज्वर तथा छर्दि शान्त होती है।[4]

मंदाग्नि : कटेरी और गिलोय का रस बराबर–बराबर ले उस डेढ़ किलो रस में 1 किलों घी डालकर पकाना चाहिये, जब केवल घी

मात्र शेष रह जाये तब उसको उतार कर छान ले। इस घी को 10 ग्राम की मात्रा में सेवन करने से मन्दाग्नि और वात की खांसी मिटती है।

उदर विकार : इसके फलों के बीज निकाल कर उनको छाछ में नमक डालें तथा उबालकर सुखा देवें, फिर उनको रातभर मट्ठे में डुबोयें तथा दिन में सुखा लेवें। ऐसा 4–5 दिन तक करके उनको घी में तलकर खाने से उदर शूल और पित्त के रोग मिटते है।

अश्मरी : अश्मरी, मूत्रकृच्छ्र तथा जलोदर में छोटी कटेरी के मूल का चूर्ण बडी कटेरी के मूल के चूर्ण के साथ समभाग मिलाकर 2 चम्मच दही के साथ सात दिन तक खाने से लाभ होता है।

मूत्रकृच्छ्र : कटेरी के 10–20 मिलीलीटर स्वरस को मट्ठे में मिलाकर कपडे से छानकर पिलाने से पेशाब की रुकावट फौरन मिट जाती है।

गर्भपात : इसकी या बडी कटेरी की 10–20 ग्राम जडों को 5–10 ग्राम छोटी पीपल के साथ भैंस के दूध में पीस छानकर कुछ दिन तक नित्य दो बार पिलाते रहने से, गर्भपात का भय नहीं रहता और स्वस्थ शिशु उत्पन्न होता है।

मूत्राघात : इसके स्वरस और तक्र को वस्त्र में छानकर 10–20 ग्राम सुबह, दोपहर तथा शाम पिलाने से मूत्राघात मिटता है।

गर्भधारण हेतु : सफेद कटेरी की जड को पुष्य नक्षत्र के दिन लाकर कन्या के हाथ से पिसवा के गौ के दूध के साथ संतान की इच्छा रखने वाली स्त्री को ऋतु स्नान के उपरान्त पिलाने से वह गर्भ धारण करती है।

Scanned by CamScanner

कण्टकारी

ज्वर :

1. कटेरी की जड़ और गिलोय का समभाग क्वाथ 10–20 ग्राम की मात्रा में कास व ज्वर मे देने से पसीना आकर ज्वर कम हो जाता है। शरीर की पीड़ा भी कम हो जाती है।[5]
2. कटेरी की जड़, सौठ, बला मूल, गोखरु, गुड़ को समभाग लेकर दूध में पकाकर 100 मि०ली० सुबह–शाम पीने से मलमूत्र की रुकावट तथा ज्वर, शोथ का नाश होता है।[6]

दारुण रोग : इसके फलो के रस मे बराबर तेल मिलाकर लगाने से दारुण रोग मिटता है।

1. कटेरी सरा तिक्ता कटुका दीपनी लघुः।
   रुक्षोष्णा पाचनी कासश्वासज्वरकफानिलान्।
   निहन्ति पीनसं पार्श्वपीड़ाकृमिह्रदामयान्।।
   तयोः फलं कटु रसे पाके च कटुकं भवेत।
   शुक्रस्य रेचनं भेदि तिक्तं पित्ताग्निकृल्लघु।।
   हन्यात्कफमरुत्कण्डूकासमेदः कृमिज्वरान्।
   तद्वत्प्रोक्ता सिता क्षुद्रा विशेषाद गर्भकारिणी।। (भाव प्रकाश)
2. वरुणार्तगलशिग्रु मधु शिग्रु तर्कारीमेषश्रृंगी पूतीकनक्तमाल...।। (सुश्रुत)
3. कण्टकारीकृतः क्वाथः सकृष्णः सर्वकासहा। (भैषज्य रत्नावली)
4. सिंहास्यामृतभण्टाहाकीक्वाथं कृत्वा समाक्षिकम्
   पीत्वां शोथ जयेज्जन्तुः श्वांसकासं ज्वरं वमिम्। (भैषज्य रत्नावली)
5. पेयां वा रक्तशालीनां पार्श्ववस्तिशिरोरुजि।
   श्वदंष्ट्रा कण्टकारीभ्यां सिद्धा ज्वरहरां पिवेत्।। (भैषज्य रत्नावली)
6. त्रिकंटक बलाप्या व्याघ्री गुडनाग रसाधितम्
   वर्चोमूत्रविबन्धघ्नं शोथज्वर हरं पयः। (चरक)

Scanned by CamScanner

लता करंज

वैज्ञानिक नाम	:	*Caesalpinia bonduc* (L.) Roxb.
कुलनाम	:	Caesalpiniaceae
अंग्रेजी नाम	:	Fever nut
संस्कृत	:	लता करंज, कंटकी करंज
हिन्दी	:	कट करंज
बंगाली	:	नातु करोंजा
तमिल	:	एविल गज्जी

परिचय

करंज के सदाबहार वृक्ष प्रायः समस्त भारतवर्ष में विशेषतः समुद्र तटीय प्रान्तों में तथा मध्य एवं पूर्वी हिमालय से लेकर श्रीलंका तक पाये जाते हैं। नदियों के किनारे अथवा जलाशयों के आस–पास यह अधिक पाया जाता है।

बाह्य–स्वरूप

यह एक अंकुश तथा कंटकयुक्त लता हैं। पत्तियां 30–60 से.मी. लम्बी तथा पत्रक 6–8 युग्मक में होते हैं। पुष्प घने पीत दल तथा फल कण्टकयुक्त होते हैं। पुष्प प्रायः वर्षा ऋतु में तथा फल शीतकाल में आते हैं।

रासायनिक संघटन

बीजों में पीले तेलीय द्रव्य, सिजलपिन, आयोडीन, रूपोनीन तथा जल में अघुलनशील है।

गुण–धर्म

यह कफवातशामक, पित्तवर्धक, जंतुघ्न, कंडूघ्न तथा शोथहर है। यह दीपन, पाचन, भेदन, कृमिघ्न, यकृत उत्तेजक, रक्त प्रसादन, मूत्रसंग्रहणीय, गर्भाशय विशोधन, कुष्ठघ्न और विषनाशक है। इसके

Scanned by CamScanner

बीज गरम, कड़वे, कृमिनाशक, रक्तशोधक, रक्तवर्धक, मस्तिष्क नेत्र और चर्म रोगों मे लाभ पहुँचाने वाले हैं। बीज तेल गरम, कृमिनाशक, नेत्ररोग, आमवात, धबलरोग, कंडू और चर्मरोग तथा कुष्ठ को भी दूर करता है। पत्र कफ, वात, अर्श, कृमि, शोथ हरने वाले, भेदन, कड़वे, उष्ण, हल्के व पित्तकर हैं। इसके फल, कफवातघ्न, प्रमेह, अर्श, कृमि तथा कुष्ठ का नाश करने वाले हैं।

औषधीय प्रयोग

अर्द्धविभेदक (आधाशीशी) :

1. बीजों की गिरी के साथ समभाग सहजने के बीज, तेजपात, वच और खांड मिला कर खरल कर महीन चूर्ण बना रखें। इसके नस्य से खूब छींकें और दूषित जल का स्राव होकर आधाशीशी तथा अन्य सिर के विकार दूर होते हैं।
2. बीजों को पानी में पीसकर थोड़ा गुड़ मिला, किंचित उष्ण कर, जिस ओर पीड़ा हो, उसके विपरीत नासारन्ध्र में 1–2 बूँद टपकावें, आधा घन्टे बाद दूसरे रन्ध्र में टपकावें। ऐसा कुछ दिन करने से पूर्ण लाभ होता है।

इन्द्रलुप्त :

1. इसके तेल को सिर में लगाने से लाभ होता हैं
2. इसके फूलों को 6–12 ग्राम पीसकर सिर में लेप करने से सिर की गंज में लाभ होता है।

मिरगी रोग : मिरगी रोग में इसके पत्तों का 10–12 ग्राम रस दिन मे तीन बार देना बहुत लाभकारी है।

नेत्र रोग :

1. करंज के बीजों के चूर्ण को पलाश के फूलों के रस की 21 भावना देकर उसे सुखा लें और उसकी सलाईयाँ बना लें, इन सलाईयों को पानी में घिसकर आंख में अंजन करने से आंख की फूली कट जाती है।
2. पित्तज नेत्र रोग में (जब पलक लाल और रोम रहित हो जाये) 1–2 ग्राम बीज की गिरी, तुलसी और चमेली की कलियां समभाग लेकर कूटकर आठ गुने जल में पकावें। चौथाई रहने पर छानकर पुनः पकाकर गाढ़ा कर लें, इसे पलकों पर लगाते रहने से यह विकार नष्ट हो जाता है।

दंत रोग :

1. पायरिया में इसकी टहनी का दातुन करने से एवं इसके तेल को दांतों पर घिसने से लाभ होता है।
2. 7 ग्राम करंज के बीजों को 7 ग्राम मिश्री के साथ देने से दाँतों से खून आना बंद हो जाता है।

खाँसी :

1. करंज बीज चूर्ण 15 से 750 मिलीग्राम की मात्रा में 125 मिलीग्राम सुहागे की खील मिलाकर, शहद के साथ दिन में 3–4 बार चटाते रहने से तथा बीजों को धागे में पिरोकर गले में बाँधने से 4–5 दिन में पूर्ण लाभ होता है।
2. 10–12 ग्राम पत्र रस में काली मिर्च चूर्ण 250– 500 मिलीग्राम तक मिला कर 4 दिन तक प्रातः–सांय चाटने से लाभ होता है।
3. करंज की फलियों की माला बनाकर गले में पहनने से कुत्ता खांसी मिटती है।
4. कुक्कुर खांसी में इसके बीज 1–2 ग्राम जल में घिसकर या कूटकर या जल में उबालकर जल को दिन में तीन बार पिलाने से लाभ होता है।

मंदाग्नि : करंज के 10–12 ग्राम और चित्रक के पत्तों के रस में काली मिर्च और नमक बुरक कर पिलाने से मंदाग्नि, अतिसार और अफारा मिटता है।

उदर कृमि : इसके तेल को पीने से उदर कृमि मर जाते हैं।

यकृत कृमि : 10–12 ग्राम करंज पत्र रस में वायविडंग और छोटी पीपर का चूर्ण 125 मि०ग्रा० से 1 ग्राम तक मिलाकर प्रातः–सायं भोजन के बाद 7–8 दिन सेवन करावें।

गुल्म रोग और वात शूल : पत्तों को यवागू में उबाल कर यथोचित मात्रा में पिलाते रहने से लाभ होता है। वेदना कम होती है तथा पाचन क्रिया ठीक हो जाती है।

अर्श :

1. अगर विशेष मलावरोध हो व वायु का प्रकोप अत्यधिक हो तो इसके 1–3 ग्राम पत्तों को घी और तिल तेल में भूनकर सत्तू के साथ मिलाकर भोजन से पूर्व सेवन करावें।
2. इसके कोमल पत्तों को पीसकर लेप करने से रक्तार्श में लाभ होता है। इसके केवल 1–3 ग्राम पत्तों को ही पीस छानकर पिलाने से भी लाभ हो जाता है।
3. 500 मिलीग्राम से 2 ग्राम करंज मूल चूर्ण, चित्रक, सैंधा नमक, सौंठ, इन्द्रजौ की छाल का चूर्ण समभाग, मिलाकर 1–3 ग्राम की मात्रा में दिन में दो बार सेवन करते रहने अर्श तथा रक्तार्श नष्ट होते हैं।
4. 2 ग्राम मूल छाल के चूर्ण को गौमूत्र में पीसकर पिलावें, तथा पथ्य में केवल छाछ तीन दिन तक लेने से लाभ हो जाता है।

मधुमेह : मधुमेह व बहुमूत्र में इसके फूलों का फाँट अति उपयोगी है।

वमन :

1. वमन, कफ प्रधान उर्ध्वगत रक्त पित्त में बीज की गिरी का चूर्ण (ताजा) 2 से 3 ग्राम तक, शक्कर और शहद मिलाकर सुबह–शाम चाटने से लाभ होता है।
2. बीजों को भूनकर इसमें आधा भाग शक्कर मिला कूट पीसकर चने जैसी गोलियाँ बना रोगी को 10–10 मिनट पर 1–1 गोली सेवन करावें। शीघ्र वमन की शांति होती है अथवा बीजों को आग

Scanned by CamScanner

पर सेंक कर टुकडे कर लें। 1–2 टुकड़ा बार–बार खिलावें।

स्तम्भन : इसके पत्तों के रस को हथेली और तलुओं पर मलने से वीर्य स्तम्भन होता है। इसके एक बीज को सहवास के समय मुँह में चबाने से भी वीर्य स्तम्भन होता है।

सुजाक : इसकी 1–3 ग्राम जड़ का रस, नारियल का जल और चूने का निथरा हुआ जल, समभाग मिलाकर सुबह–शाम पिलाते रहने से मूत्र नलिका का शोथ, जलन आदि दूर होकर पूयस्राव होना बन्द हो जाता है।

पथरी : इसकी मींगों का 1 ग्राम चूर्ण व 3 ग्राम मधु, पहले दिन चटाने फिर नित्य 1 ग्राम बढाते हुए 11 दिन बाद 1 ग्राम चटाते हुए 3 ग्राम पर ले आने से पथरी मिटती है।

भगन्दर :

1. इसकी 500 मिलीग्राम से 2 ग्राम जड़ की छाल को दूधिया रस की पिचकारी देने से भगन्दर जल्दी भर जाता है।
2. दूषित कृमियुक्त भगंदर के व्रणों पर इसके पत्तों की पुल्टिस बना बाँधते रहने से अथवा कोमल पत्र स्वरस 10–12 ग्राम के साथ निर्गुण्डी या नीम पत्र रस उसमें कपास का फोहा तर कर व्रण पर बार–बार रखते रहने से लाभ होता है।
3. करंज पत्र तथा निर्गुण्डी या नीम पत्र को पीस–पुल्टिस बना कर बांधने से अथवा इसके पत्तों को कांजी में पीसकर गरम लेप करने से लाभ होता है।

चर्म रोग कुष्ठ इत्यादि :

1. 10–12 ग्राम पत्र स्वरस में चित्रकमूल, काली मिर्च और सैंधा नमक का चूर्ण यथोचित् मात्रा में मिला, दुगुने पतले दही में मिलाकर दिन में दो बार 3–4 महीने तक लगातार पीते रहने से गलित कुष्ठ का शमन होता है।
2. फल 1–2 ग्राम या बीजों को इन्द्रजौ 1–2 ग्राम के साथ पीसकर लेप करने से भी लाभ होता है।
3. करंज, नीम और खैर के पत्रों के साथ पीसकर लेप करें तथा तीनों के क्वाथ से स्नान करें और इसी पानी को पिलाते रहें।
4. 1–2 ग्राम बीजों के साथ समभाग हल्दी, हरड़ और राई पीसकर लेप करें, 10 दिन में पूर्ण लाभ होगा।
5. 1–2 ग्राम बीजों के साथ श्वेत कनेर की जड़ पीसकर लेप करने से भी लाभ होता है।
6. पामा, एक्जीमा आदि पर इसके 10–20 मिली पत्र रस से प्रक्षालन कर इसके तेल में गन्धक, नींबू रस मिलाकर लगाते रहने से शीघ्र लाभ होता है।
7. करंज तेल में समभाग नींबू का रस मिलाकर खूब मथ लें, जब पीले रंग का सुन्दर घोल तैयार हो जाये तो इसे लगाते रहने से उपदंशजन्य या किसी अन्य विकार से हुये शरीर के चट्टों पर लगाने से वे ठीक हो जाते हैं तथा कण्डू, झांई, व्यंग, विचर्चिका आदि चर्म रोग भी दूर हो जाते हैं।
8. कंडू, क्षय, पामादि रोगों पर 25 ग्राम तेल में 4 ग्राम तक जस्ता भस्म मिलाकर लगायें।
9. साधारण कुष्ठ पर इसे लगाने से तथा सफाई और पथ्यपूर्वक रहते रहने से ही लाभ हो जाता है।
10. काकणक नामक महाकुष्ठ में इसके 25 ग्राम तेल में चित्रक और सैंधा नमक का चूर्ण मिलाकर लेप करने से लाभ होता है।
11. इसके 1–2 ग्राम फल की लुग्दी बनाकर कुष्ठ और विसर्पिका रोगों में सेवन से लाभ होता है।

व्रण :

1. इसकी जड़ के रस से दूषित घावों को धोने से लाभ होता है।
2. करंज, थूहर, अर्क, अमलतास और चमेली के पत्तों को समभाग गोमूत्र के साथ पीसकर लेप करने से दद्रु, व्रण, दूषित अर्श और नाड़ी व्रण नष्ट होते हैं।
3. व्रण शोथ में इसके 1–3 ग्राम पत्रों को निर्गुण्डी के पत्रों के साथ पीसकर बांधने से सूजन कम हो जाती है।
4. इसके पत्तों की पुल्टिस बनाकर कृमियुक्त घावों पर लगाने से लाभ होता है।

विस्फोटक रोग : करंज बीज, तिल और सरसों, समभाग पीसकर लेप करने से विस्फोटक एवं दुष्ट पिडिका का नाश होता है।

वातज शूल :

1. इसके बीज के साथ समभाग काला नमक, सोंठ और हींग मिलाकर चूर्ण करें। 500 मिलीग्राम से 1 ग्राम तक सुखोष्ण जल के साथ सेवन करें।

Scanned by CamScanner

2. पार्श्व शूल में बीज की 1 मींगी और 125 मिलीग्राम शुद्ध नीला थोथा दोनों को पीसकर सरसों जैसी 12 गोलियां बना 1–1 गोली नित्य सेवन करें।
3. 10–20 ग्राम कोमल पत्तों को तिल के तेल में भूनकर नित्य सेवन कराते हैं।

ज्वर :

1. इसकी मींगी को जल में पीसकर नाभि पर टपकाने से कफ ज्वर छूटता है।
2. इसकी 3 कोपल और 2 काली मिर्च को जल में पीसकर नाभि पर लगाने से कफ ज्वर छूटता है।

1. करंजः कटुकः पाके रसे तिक्तकषायकः।
कटुको गुणतस्तीक्ष्णों वीर्योष्णो विनियच्छति।। (कै०नि०)
2. बलासपित्तकुष्ठार्शोमेहोदरव्रणक्रिमीन्।
तत्पत्रं कटुकं पाके रसे दीपनपाचनम्।।
कफवातापहं शोफविषार्शः कृमिकुष्ठजित्।। (कै०नि०)
3. करंजः कटुकस्तीक्ष्णो वीर्योष्णो योनि दोषहृत।।
कुष्ठोदावर्त्तगुल्मार्शोव्रणक्रिमीकफापहः।। (भाव प्रकाश)
4. करंज तेलानि तीक्ष्णानि लघून्युष्ण वीर्याणि कटूनि कटुविपाकानि।
सराण्यनिलकफ कृमिकुष्ठप्रमेहशिरोरोगहराणि च।
(सुश्रुत)
5. तत्पत्रं कफवातार्शः कृमिशोथहरं परम्। भेदनं कटुकं पाके वीर्योष्णं पित्तलं लघु।
तत्फलं कफवातघ्नं मेहार्शः कृमिकुष्ठजित्। (भाव प्रकाश)
6. करंज फलं जन्तुप्रमेहजित्। रूक्षोष्णं कटुकं पाके लघु वातकफापहम्।
(सुश्रुत)

Scanned by CamScanner

वैज्ञानिक नाम	:	*Momordica charantia* L.
कुलनाम	:	Cucurbitaceae
अंग्रेजी नाम	:	Bitter gourd
संस्कृत	:	कारवेल्लक, कारवेल्ली, उग्रकांड, कटफला
हिन्दी	:	करेला
गुजराती	:	करेलो, कड़वा, बेला
मराठी	:	कारलें, क्षुद्र-कारली
पंजाबी	:	करेला
अरबी	:	उलही मार, कसायुल हिमार
फारसी	:	करेला, सिमहंग
बंगाली	:	उच्छे करेला, पोटी कारक, बरामसिया

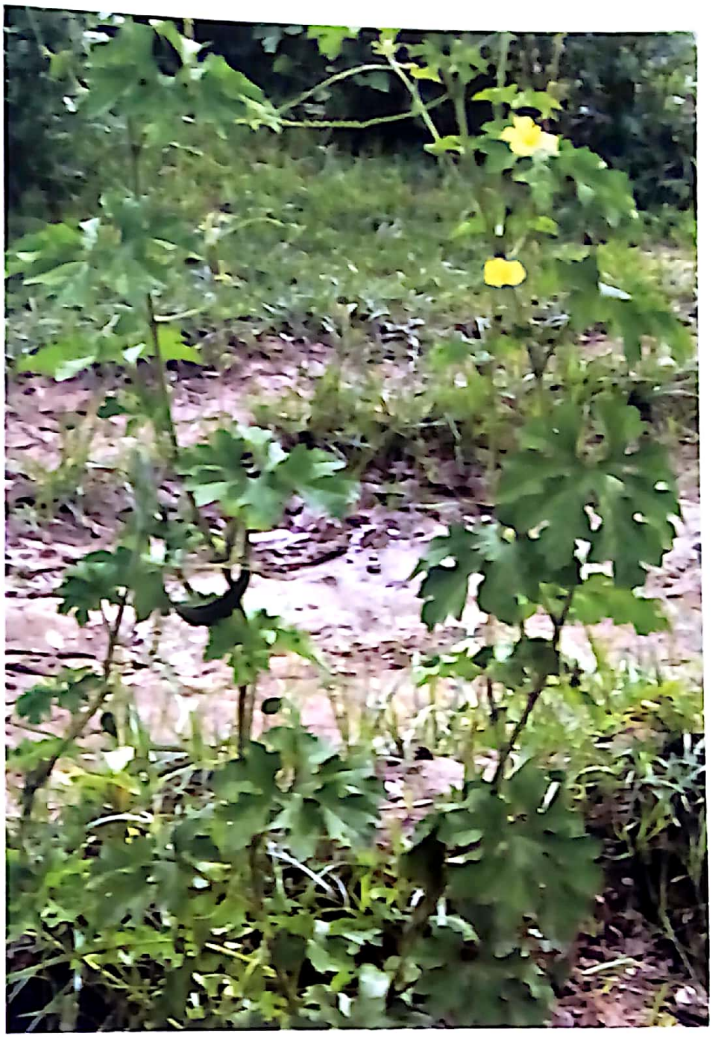

परिचय

करेला के गुणों से सब परिचित हैं। मधुमेह के रोगी विशेषतः इसके रस और तरकारी का सेवन करते हैं।

बाह्य–स्वरूप

प्रायः सब प्रांतों में इसका रोपण करते हैं। इसकी लता मृदु रोमश होती है। पत्ते 1 से 5 इंच के घेरे में गोलाकार, गहरे कटे किनारे वाले एवं 5 से 7 भागों में विभक्त रहते हैं। फूल चमकीले पीले रंग के होते हैं। फल 1 से 5 इंच लम्बे बीच में मोटे तथा दोनों तरफ नुकीले, त्रिकोणाकृति उभारों के कारण ऊवड़–खावड़ परन्तु पकने पर पीले रंग के हो जाते हैं।

रासायनिक संघटन

इसमें गन्धयुक्त उड़नशील तेल केरोटीन, ग्लूकोसाइड, सेपोनिन एवं मामोरर्डिसाइन नाम क्षाराभ पाये जाते हैं। बीजों में 32 प्रतिशत विरेचक तेल पाया जाता है।

गुण–धर्म

करेला, कड़वा, वातकारक, दीपन, भेदन, तिक्त, शीतल, वृष्य, हल्का, पित्तकारक, कफ पांडु, व्रणकृमि, श्वास–कास, प्रमेह, कुष्ठ तथा ज्वरनाशक है।[1]

भाव प्रकाश के अनुसार करेला शीतल, मलभेदक, दस्तावर, हल्का कड़वा और वातकारक है। यह ज्वर, पित्त–कफ–रक्तविकार, पाडुंरोग, प्रमेह और कृमिनाशक है।[2]

औषधीय प्रयोग

शिरः शूल : इसके 10–12 मिलीलीटर पत्र रस के साथ थोड़ा गाय का घी और पित्तपापड़े का रस मिलाकर लेप करने से, पैत्तिक शिरः शूल शीघ्र नष्ट हो जाता है।

नेत्ररोग : आँख का फूला, जाला और रतौंधी में जंग लगे हुये लोहे के बरतन में इसके पत्तों का रस और एक काली मिर्च का थोड़ा सा हिस्सा घिसकर अंजन करना चाहिये या आंख की कोटर या आंख की पपड़ियों के आसपास लगाना चाहिये।

कर्णशूल : इसके ताजे फल का अथवा पत्तों का रस गरम कर

Scanned by CamScanner

कान मे डालने से लाभ होता है।

मुँह के छाले : इसके रस मे चाक मिट्टी मिलाकर लगाने से मुँह के छाले मिटते है।

वमनार्थ : पैत्तिक रोगो में पत्रस्वरस 10–12 ग्राम में थोड़ा सिरका या सैधा नमक मिलाकर या इसके रस में सुगन्धित द्रव्यो का योग देकर पिलाने से वमन और विरेचन होकर रोग की शान्ति हो जाती है।

कंठ शोथ : सूखे करेला को सिरके में पीसकर गरम करके लेप करने से कंठ की सूजन मिटती है।

स्तन्य : करेला के 20 ग्राम पत्तो को उबालकर पिलाने से प्रसूता स्त्री का दूध बढ़ता है और रूधिर शुद्ध होता है।

तिल्ली : इसके 10–15 मिलीलीटर फल के रस या पत्तों के रस में राई और नमक बुरक कर पिलाने से गठिया में लाभ होता है।

जलोदर : इसके पत्तों के 10–15 मिलीलीटर रस में मधु मिलाकर पिलाने से जलोदर में लाभ होता है।

कामला : इसके पत्तों के 10–15 मिलीलीटर रस में बड़ी हरड़ को घिसकर पिलाने से कामला रोग में लाभ होता हैं।

शिशु उत्क्लेश : पत्र स्वरस 6 ग्राम तक लेकर उसमें थोड़ा हरिद्रा चूर्ण मिला कर पिलाने से वमन होकर बालक का आमाशय शुद्ध होता है।

रक्तार्श : मूल के ऊपरी मोटे चिकने भाग का 50–100 मिलीलीटर क्वाथ बनाकर उसमें शक्कर मिलाकर सुबह–शाम पिलाने से लाभ होता है।

अर्श : इसकी जड़ को घिसकर बादी वाले अर्श के मस्सों पर लेप करने से लाभ मिलता है।

मासिक धर्म : इसके पत्तों के 10–15 मिलीलीटर रस में सौंठ, काली मिर्च और पीपल का चूर्ण बुरक कर दिन में तीन बार पिलाने से मासिक धर्म शुद्ध होने लगता है।

मधुमेह :

1. मधुमेह में यह उत्तम कार्य करता है। यह अग्न्याशय को उत्तेजित कर इंसुलिन के स्राव को बढ़ाता है। फलों के छाया शुष्क कर महीन चूर्ण बना रखें। इसे 3–6 ग्राम तक जल या शहद के साथ सेवन करना चाहिये।
2. ताजे फलों का रस 10–12 ग्राम तक पीते रहने से भी लाभ होता है। रोगी को इसका शाक भी खाना चाहिये।
3. यही प्रयोग रक्त शुद्धि के लिये भी करें।

पथरी : करेले के हरे पत्तों का रस 30 ग्राम, दही 15 ग्राम, दोनों को मिलाकर पिला दें, ऊपर से 50 ग्राम छाछ पिला दें। तीन दिन पिलाकर, फिर तीन दिन दवा बंद कर दें। फिर 4 दिन पिलाकर दवा बंद करें, इस प्रकार 5 दिन तक बढ़ावें। पथ्य में केवल खिचड़ी और चावल ही देना चाहिये।

आन्त्रकृमि : इसके पत्तों का 10–12 ग्राम रस पिलाने से आंतों के कीड़े मरते हैं।

विसूचिका : जड़ के 50–100 मिलीलीटर क्वाथ में तिल तेल मिलाकर पिलाने से लाभ होता है।

संधिवात : फल के ऊपरी छिलके को निकाल कर शेष भाग को आग पर 10 मिनट रखकर भुर्ता बना लें, फिर उसमें शक्कर मिला रोगी को गरम गरम सुहाता हुआ

Scanned by CamScanner

खिला दें। इस प्रकार प्रातः–सायं करीब 125 ग्राम तक यह भुर्ता शक्कर मिलाकर रोगी को गरम–गरम सुहाता हुआ खिलाने से स्नायुगतवात, संधिवात आदि में लाभ होता है। पीड़ास्थान पर फलों के रस का बार–बार प्रलेप करते रहें।

गठिया : करेला के कच्चे हरे फलों के रस को गरम करके लेप करने से गठिया में लाभ होता है।

वातरक्त रोग में : मूल के ऊपरी मोटे चिकने भाग का कल्क और क्वाथ द्वारा सिद्ध किये गये घी का सेवन करने से लाभ होता है।

स्तम्भन शक्ति : इसके पत्ते और फलों के रस को आग में खुश्क कर 3–3 ग्राम की गोलियां बना लें, इसमें 1 गोली पहले थोड़ा गाय का दूध पीकर ऊपर से निगल जायें, इसके बाद थोड़ी सी शहद चाट लें, इस प्रयोग से रति शक्ति और स्तंम्भन शक्ति में बहुत वृद्धि होती है।

चर्मरोग :

1. करेला के पंचांग, दालचीनी, पीपर और चावलों को जंगली बादाम के तेल में मिलाकर लगाने से खुजली आदि त्वचा के रोग मिटते हैं।
2. इसके पत्तों का रस सिर पर लेप करने से पीप वाली फुन्सियाँ मिटती हैं। इसकी जड़ का उबटन महीन फुन्सियों पर गुणकारी है।
3. इसके पत्तों का रस दाद पर लगाने से लाभ होता है।

दाह : पैर के तलुवों की दाह पर इसके पत्तों के रस का लेप करने से दाह शान्त होती है।

विस्फोटक रोग : इसके पत्तों का 10–15 मिलीलीटर ताजा रस थोड़ी हल्दी मिलाकर दिन में तीन बार पिलाने से चेचक, खसरा और अन्य विस्फोटक रोगों में लाभ पहुँचता है।

शीतज्वर : शीतज्वर में ठंड लगने से पहिले इसके 10–15 मिलीलीटर रस में जीरे का चूर्ण मिलाकर दिन में तीन बार पिलाना चाहिये।

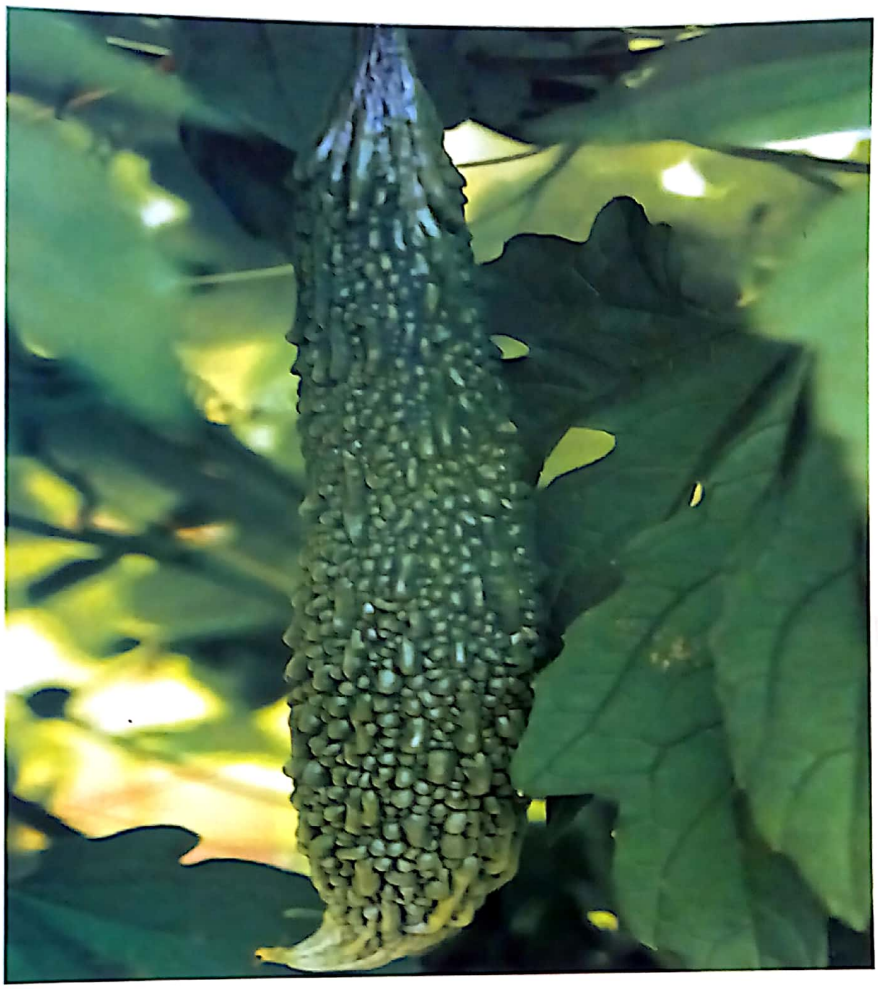

बच्चों के रोग : नवजात शिशु के मुख में इसके पत्ते का टुकड़ा रखने से उसकी छाती और अंतड़ियों का सब मल और आम निकल जाता है।

बाल निमोनियां : पत्र रस 10–12 मिलीलीटर को गुनगुना कर उसमें थोड़ी असली तथा केशर मिलाकर दिन में तीन बार पिलानें से विशेष लाभ होता है।

हानिकारक प्रभाव : अधिक मात्रा में करेला रूक्षता कारक है। अतः अतियोग से उपद्रव होने पर चावल और घी खिलाना चाहिए।

1. कारवेल्लं सकटुकं कटुपाकमवातलम्।
दीपनं भेदनं तिक्तमवृष्यमहिमं लघु।।
हन्त्यरोचकपित्तास्रकफपाण्डुव्रणक्रिमीन्।
श्वासकासप्रमेहाश्मकोठकुष्ठज्वरानपि। (कै०नि०)

2. कारवेल्लं कठिल्लं स्यातकारवेल्ली ततो लघुः।
कारवेल्लं हिमं भेदि लघु तिक्तम्वातलम्।
ज्वरपित्तकफास्रघ्नं पांडुमेहकृमीन् हरेत्।
तद्गुणा कारवेल्ली स्याद्विशेषादीपनी लघुः।। (भाव प्रकाश)

Scanned by CamScanner

77 कसौंदी (कासमर्द)

वैज्ञानिक नाम	:	*Cassia occidentalis* L.
कुलनाम	:	Caesalpiniaceae
अंग्रेजी नाम	:	Negro coffee
संस्कृत	:	कासमर्द, कासारि
हिन्दी	:	कसौंदी
गुजराती	:	कासोंदरी, संविध
मराठी	:	रणाक, कासविदा
पंजाबी	:	कासमर्द
बंगाली	:	कजू कासुदां, कालका, संदा
तैलगु	:	कर्सवेदं, कासिवेन
कन्नड	:	चुरूचुरुके
द्राविड़ी	:	पेयावारै

परिचय

कसौंदी का झाड़ीनुमा पादप वर्षा ऋतु में खाली भूमि तथा कूड़े करकट में अपने आप उग जाता है। यह भारतवर्ष के प्रायः सभी प्रान्तों में पाया जाता है। इसका एक और भेद पाया जाता है जिसे काली कसौंदी कहते है। इसकी शाखाएं कृष्णाभ बैंगनी आभा लिये होती है। मूलत्वक काली होती है जिससे जड़ जली हुई सी मालूम होती है। इससे कस्तूरी जैसी गंध आती है।

बाह्य–स्वरूप

कसौंदी का क्षुप बहुशाखीय, शाखायें जड़ के पास से अथवा उससे किंचित ऊपर से निकली होती है। पत्तियाँ पक्षाकार संयुक्त और पत्रक 3 से 5 जोड़े 2–4 इचं लम्बे, तथा आधा इंच से डेढ़ इंच चौडे, अंडाकार भालाकार और नोकदार होते हैं। पुष्प पीले, फलिया, 3 इंच तक लम्बी 1 से०मी० चौड़ी चपटी और चिकनी होती है। यह जाड़े के दिनों में फलता–फूलता और हेमन्त में परिपक्व फलों के सहित शुष्कता को प्राप्त होता है। कसौंदी को सूंघने से एक खराब गन्ध आती है।

Scanned by CamScanner

रासायनिक संघटन

कसौंदी की पत्तियों में सनाय जैसा विरेचक केथार्टिन, कुछ रंजक तत्व एवं लवण पाये जाते है। बीजों में टैनिक एसिड, वसा अम्ल चुआबी तत्व, इमोडिन, क्राइसेराबिन, अल्प मात्रा में सोडियम सल्फेट, मैगनीसियम सल्फेट तथा एक विषाक्त तत्व भी पाया जता है।

गुण–धर्म

वात, कफ शामक एवं पित्त सारक है। बाह्य प्रयोग से यह कुष्ठघ्न तथा विषघ्न है। आभ्यान्तर प्रयोग में यह दीपन, वातानुलोमन, पित्त सारक एव रेचन है। यह आक्षेप शामक तथा वेदना स्थापन है। यह कफघ्न, श्वासहर, मूत्रल तथा ज्वरघ्न है।

औषधीय प्रयोग

नेत्ररोग : कसौंदी के ताजे पत्तों का रस आँख में एक बूंद सुबह–शाम डालने से तथा आंखों पर पत्तों को बांधने से नेत्राभिष्यन्द, नेत्र लालिमा–शोथ में एक सप्ताह में आराम मिलता है।

कर्णरोग : कसौंदी के पत्तों का रस अकेले ही या दूध में मिलाकर गुनगुना कर कान में 2–4 बूंद टपकाने से कर्णशूल मिटता है।

गंडमाला : गंडमाला रोग में कासमर्द पत्रों, 10 ग्राम के साथ 2–4 नग काली मिर्च पीसकर लेप करते हैं। कसौंदी के पत्तों का लेप गंडमाला के घावों का शोधन–रोपण करने में सहायक है।

अपस्मार : अपस्मार, अपतंत्रक एवं आक्षेपक रोगों में इसकी मूलत्वक या पंचांग का क्वाथ 10–20 ग्राम दिन में 3–4 बार देने से लाभ होता है।

मानसिक रोग : अपस्मार, हिस्टीरिया में कसौंदी के फूलों को मसलकर रोगी को सुघांने से लाभ होता है। कसौंदी के शुष्क फूलों का काढ़ा 20 ग्राम दिन में तीन बार हिस्टीरिया से ग्रस्त स्त्री को देने से लाभ होता है।

कफज्वर एवं श्वास रोग :

1. इसके पत्रों का स्वरस 10–15 ग्राम 2 चम्मच मधु के साथ मिलाकर सुबह–शाम सेवन करने से लाभ होता है, इससे वमन तथा विरेचन भी होता है।
2. इसकी 8 से 10 ताजी फलियों को सेंककर खाने से खांसी मिटती है।
3. कफज कास तथा कृच्छ्रश्वास में कसौंदी के बीजों का चूर्ण, पिप्पली छोटी, काला नमक, तीनों को समभाग लेकर पानी में मिलाकर खरल करके 250 मिलीग्राम की गोलियाँ बनाकर, प्रातः या रात्रि में 1–2 गोली मुंह में रखकर चूसने से लाभ होता है।
4. प्रतिश्याय, नासा रोग तथा विशेष रूप से नासारन्ध्र अवरोध की दशा में कसौंदी पत्र स्वरस की एक–दो बूदों को नाक में टपकाने से आराम मिलता है।
5. श्वास रोग के रोगी के लिये कसौंदी के पत्तों का शाक अत्यन्त लाभकारी है। यह विक्षेप हर है।

कास :

1. इसके बीजों का चूर्ण 1–3 ग्राम, उष्ण जल के साथ प्रतिदिन तीन बार सेवन करने से लाभ होता है।
2. कसौंदी के पंचाग का चूर्ण 20 ग्राम, जल 350 ग्राम में उबालकर जब 40 ग्राम शेष रह जाये, तब छानकर एवं थोड़ा सा मधु मिलाकर सुबह–शाम सेवन करना चाहिये।

हिचकी : इसके 10 ग्राम पत्रों को 400 ग्राम पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ का सेवन करने से हिचकी और श्वांस रोग में लाभ होता हैं।

कामला : कामला रोग में कासमर्द के 20 ग्राम पत्तों को 2–4 नग काली मिर्च के साथ पीस छानकर सुबह–शाम पिलाने से कामला रोग नष्ट होता है।

उदरकृमि : इसके 20 ग्राम पत्तों को 400 ग्राम जल में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ पिलाने से सूत्रकृमि तथा अन्य उदरगत कृमि नष्ट हो जाते है, इसके साथ उपयुक्त रेचन देकर कोष्ठ शुद्धि भी की जाती है।

मूत्रकृच्छ : इसकी मूल का क्वाथ 10–20 ग्राम दिन में 2 से 3 बार पिलाना मूत्रकृच्छ, मूत्राघात, ज्वर, शोथ, विष, मूत्र विकार तथा अन्य रोग जहां मूत्रल औषधि प्रयोग करने की आवश्यकता हो, वहां उपयोगी है।

जलोदर : कसौंदी की 10 ग्राम जड़ को नींबू के रस में पीसकर उदर तथा बस्ति प्रदेश पर लेप करने से लाभ होता है। इसके साथ ही मूल का 2 ग्राम चूर्ण मट्ठे के साथ दिन में 1–2 बार देना चाहिये।

रक्तार्श : कसौंदी के बीज 10 तथा काली मिर्च के 1–2 दानों को मिलाकर पानी में पीसकर घोंट कर प्रातः–शाम जल के साथ पिलाने से खूनी बवासीर में लाभ होता है। इस को सुखरेचन के रूप में भी प्रयोग किया जा सकता है।

मलरोध : मलावरोध तथा उदर विकारों में, कसौंदी के पुष्पों का गुलकन्द 3–6 ग्राम की मात्रा में प्रयोग करने से लाभ होता है।

प्रसव : इसके पत्रों का स्वरस देने से शीघ्र प्रसव होता है।

ज्वर : कसौंदी मूल का क्वाथ 10–20 ग्राम सुबह–शाम पिलाना विषमज्वर, मलेरिया तथा अन्य दीर्घः कालिक ज्वरों में लाभदायक है। विशेष रूप से विषमज्वर प्रतिरोधक है।

वीर्यविकार : कसौंदी की मूलत्वक के चूर्ण को महीन पीसकर 1–4 ग्राम की मात्रा में 5–10 ग्राम मधु के साथ मिलाकर सुबह–शाम एक गिलास दूध के साथ लेने से वीर्य का पतलापन दूर होकर वीर्य पुष्ट होता है तथा धातु क्षय ठीक हो जाता है।

दुर्बलता : शारीरिक दुर्बलता में कासमर्द मूल का क्वाथ 20 ग्राम सुबह–शाम पिलाने से बल बढ़ता है व कमजोरी मिटती है।

चर्मरोग :

1. कसौंदी के पंचांग का 40–60 ग्राम क्वाथ सुबह–शाम पीना रक्तशोधक एवं चर्म रोगों में भी लाभकारी है।

Scanned by CamScanner

2. कसौंदी के पंचांग के क्वाथ से स्नान करने से विकारग्रस्त दैहिक स्थलों को धोने से और कुछ दिन तक स्नान करने से पामा, विसर्प, दाद, कंडू, संक्रमण इत्यादि रोग ठीक हो जाते हैं।
3. दद्रु जैसे चर्मरोग में यह अत्यन्त मूल्यवान प्रभाव डालता है, इसके बीजों का मलहम बनाकर प्रयोग किया जाता हैं।
4. इसके बीजों को मट्ठे के साथ पीसकर लेप करने से लाभ होता हैं।
5. कसौंदी की जड़ को सिरके में पीसकर दाद पर लेप करने से लाभ होता है। जड़ को नीबूं के रस में घिसकर लगाने से भी लाभ होता है।

सुजाक : उपदंश की उग्रावस्था के बाद की स्थिति में काली कसौंदी की 10–20 ग्राम ताजी पत्तियों को 200 ग्राम पानी में पकाकर तैयार फांट–क्वाथ से व्रणों का प्रक्षालन करते हैं तथा उत्तर बस्ति देते हैं।

श्लीपद : श्लीपद रोग में इसके मूल का 10 ग्राम कल्क समभाग गोघृत के साथ सुबह–शाम देने से कुछ महीनों में ही लाभ हो जाता है।

श्वेतकुष्ठ : इसके और मूली के बीजों को समभाग लेकर दुगुनी मात्रा में गंधक के साथ पीसकर लेप करने से श्वेत कुष्ठ मिटता है।

विषघ्न : सिंह की मूंछ का बाल खाने से जो विष चढ़ जाता है, उसे उतारने के लिये इसका पत्रस्वरस 50 ग्राम की मात्रा में तीन दिन पीना चाहिये।

व्रण :

1. व्रण शोथ तथा दाह युक्त चर्मरोगों में इसके ताजे पत्तों को पीसकर लेप करने से लाभ होता है।
2. इसके पत्तों को पीसकर ताजे घाव पर लेप करने से घाव तुरन्त भर जाते हैं।

वृश्चिकदंश : कसौंदी की मूल का प्रयोग बिच्छू के विष को उतारने के लिये किया जाता है। जो वैद्य कसौंदी की जड को चबाकर बिच्छू के काटे व्यक्ति के कान में फूंक मारता है, वह शीघ्र ही बिच्छू के विष को दूर करता है। साथ ही वृश्चिक दंश स्थल पर मूल को पीसकर लेप करते है। इसकी अर्धपक्व शिम्बी को भूनकर वृश्चिकदंश के व्यक्ति को खिलाने से लाभ होता है।

कीटदंश : मकड़ी, बर्र, ततैया, आदि विषैले कीडों के काटने पर कसौंदी के पत्रों का स्वरस तथा आवश्यकतानुसार पत्र कल्क, दंशित स्थान पर लगाने से लाभ होता है।

नारुरोग : कसौंदी के पत्तों का कल्क, प्याज और नमक मिलाकर, खूब महीन पीसकर पीडित स्थान पर बांधने से नारु बाहर निकल जाता है।

कासमर्द का पेय : इसके के बीजों को हल्की आंच में हल्का घी डालकर भूनकर तथा चूर्ण करके पालसन कॉफी की तरह प्रयोग किया जा सकता है। यह पेय उत्तेजक, बल्य, श्रमहर, स्फूर्तिदायक, जठराग्निदीपन, कामोद्दीपक, तथा सौमनस्यजनन योग के रूप में उपयोगी है।

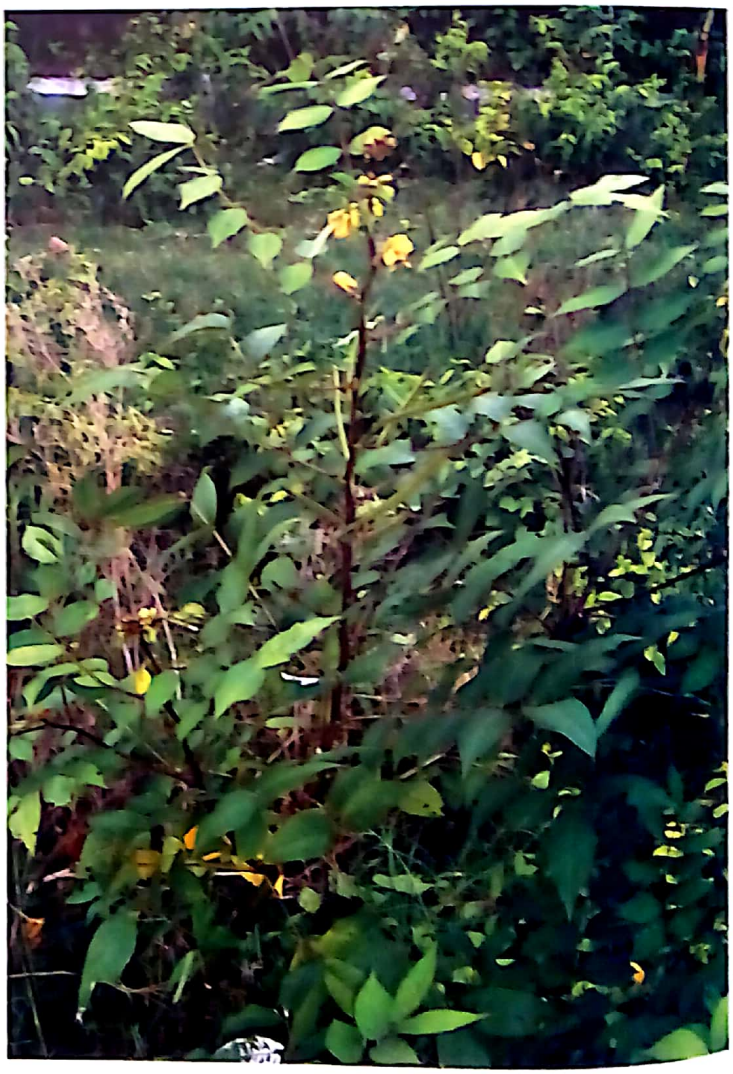

Scanned by CamScanner

कुटज (इन्द्रजौ) कुड़ा

78

वैज्ञानिक नाम	:	*Holarrhena antidysenterica* (Roth) DC.
कुलनाम	:	Apocynaceae
अंग्रेजी नाम	:	Antidysenterica, Kurchi bark
संस्कृत	:	कुटज, वत्सक, गिरिमल्लिका
हिन्दी	:	कुड़ा, कुडैया, इन्द्रजौ
मराठी	:	कुड़ा
बंगाली	:	कुरचि
पंजाबी	:	कुडाशक्ल
अरबी	:	जबाने कुंज, श्कतल्क
तैलगु	:	कौडिश्चटटु
द्राविड़ी	:	पालावेत, पाल

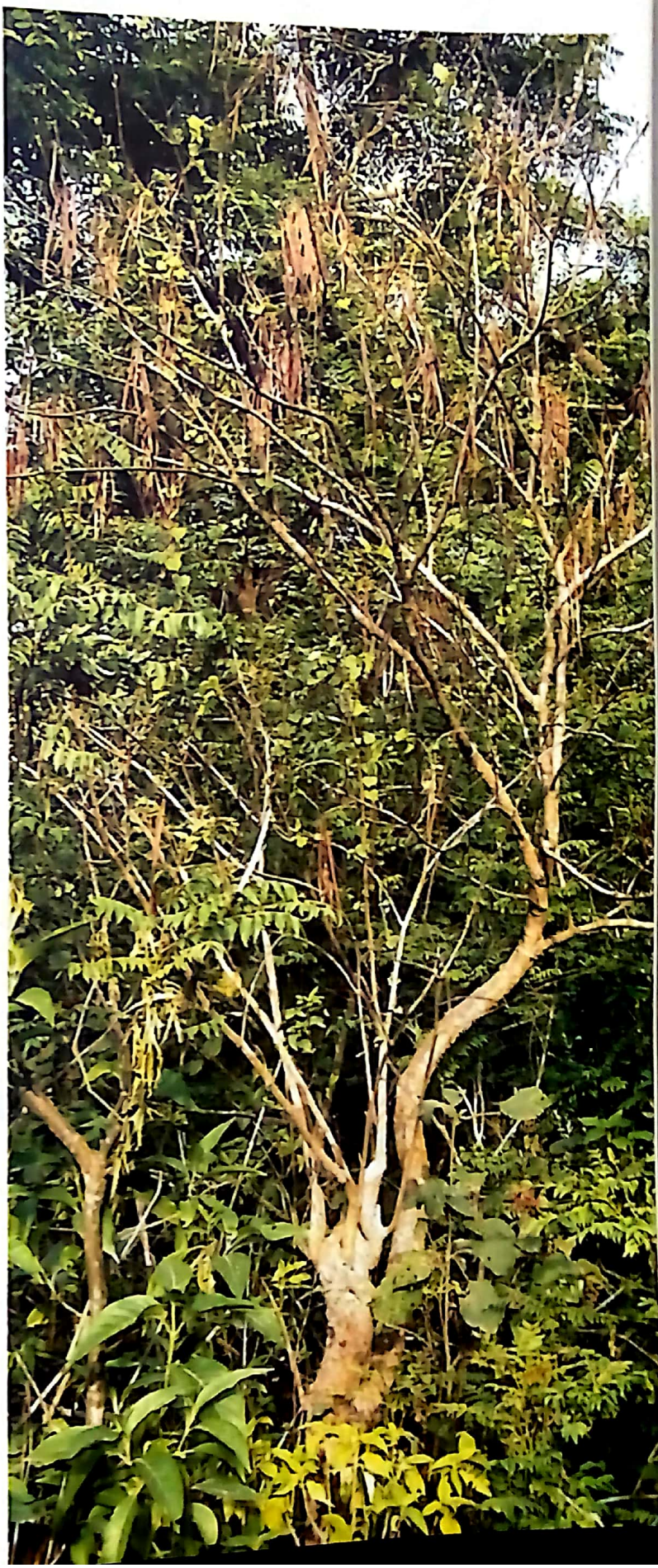

परिचय

कुटज का वृक्ष भारतवर्ष की अत्यन्त प्रसिद्ध औषधि है। अतिसार, रक्त अतिसार, पित्तातिसार, आमातिसार, मरोड़ी के दस्तों में यह औषधि मंत्र की तरह तत्काल आराम पहुँचाती है। इसकी दो जातियाँ पाई जाती है : श्वेत और कृष्ण कुटज के बीज कड़वे होते हैं। यहाँ पर उसी का विवरण दिया गया है।

बाह्य–स्वरूप

इसका वृक्ष 30–35 फुट तक ऊँचा, कांड छोटा सीधा और गोलाई में 3–4 फुट तक होता है। कांड त्वक आधा इंच मोटी, भूरी और कुछ काले रंग की खुरदरी और टुकड़ों में उतरती है। पत्र 4–8 इंच लम्बे, 3–6 इंच चौड़े, पुष्प गुच्छों में श्वेत वर्ण की फली 1–2 फीट लम्बी, और दो एक साथ जुड़ी होती है। फली के भीतर गेहूं के आकार के बीज होते है, इन्हें ही इन्द्र जौ कहते हैं। बीज के लम्बे सिरे पर मदार की तरह कोमल लम्बे रोम गुच्छ लगे रहते हैं। पुष्पागम मई–जुलाई में और फलागम शरद ऋतु में होता है।

रासायनिक संघटन

कुटज त्वक् में कोनेसीन, कोनेसिमाइन, आइसो कोनेसिमाइन, कुरचीन, कुरचीसीन आदि क्षार स्वरूप के अनेक सक्रिय तत्व पाये जाते हैं।

गुण–धर्म

कुटज त्रिदोष नाशक हैं, अतिसार, प्रवाहिका नाशक तथा दीपन,

Scanned by CamScanner

स्तम्भन, ज्वरघ्न, अर्शोघ्न, कंडूघ्न, स्तन्य शोधन एवं आस्थापनोपग है। यह विसर्प तथा कुष्ठ विकारों को जीतने वाला है। यह विषम ज्वर निबन्धक है।

यह अमीबा जन्य प्रवाहिकानाशक तथा आम, रक्त एवं जलांश का शोषक है। कुटज संग्राहिक एवं उपशोषण द्रव्यों में श्रेष्ठ माना जाता है।

औषधीय प्रयोग

दंतशूल : दंतशूल में कुटज छाल की क्वाथ से कुल्ले करने से लाभ होता है।

रक्तार्श : इसकी 10 ग्राम छाल को पीसकर 2 चम्मच मधु के साथ चटाने से रक्तार्श मिटता हैं।

अतिसार :

1. नागरमोथा, अतीस, पान, कुटज की छाल तथा लाक्षा के समभाग चूर्ण को 2–5 ग्राम की मात्रा में उरक्षत के रोगी को अतिसार में जल के साथ 3–4 बार देना चाहिये।
2. अतिसार में इसकी कांड की छाल का 5–10 ग्राम, रस 1 चम्मच मधु के साथ मिलाकर दिन में तीन बार सेवन करने से लाभ होता है।
3. 50 ग्राम इन्द्रजौ की छाल के क्वाथ को गाढ़ाकर उसमें अष्टमांश 6 ग्राम अतीस का चूर्ण मिलाकर दिन में तीन बार पिलाने से त्रिदोष जनित अतिसार मिटता है।

रक्तातिसार : 40 ग्राम इन्द्रजौ की छाल को 375 ग्राम पानी में उबालकर जब एक चौथाई शेष रह जाये, छानकर उसमें उतना ही

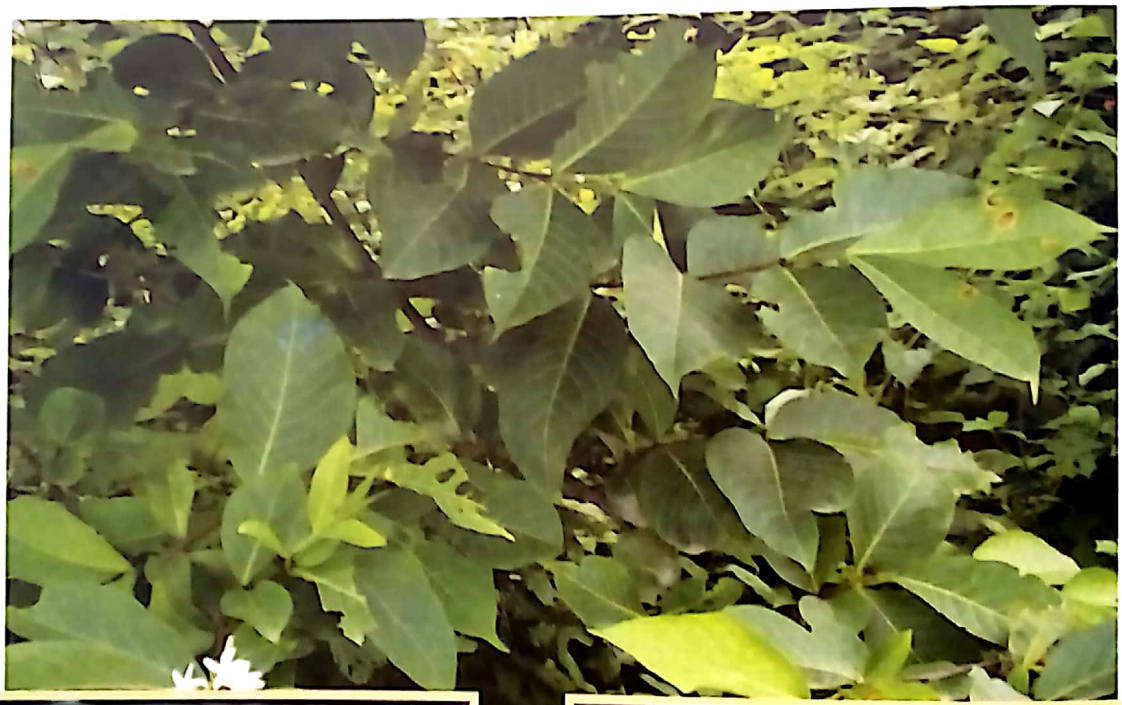

Scanned by CamScanner

अनार का रस मिलाकर अग्नि पर गाढ़ा करके उसे छः ग्राम की मात्रा में छाछ के साथ सुबह–शाम मिलाकर पिलाने से रक्त अतिसार मिटता है।

पित्तातिसार : पित्त अतिसार में इसके बीज 4 तोले जल में उबालकर, इस उबले हुये जल में मधु मिलाकर दिन में तीन बार पिलाने से लाभ होता है।

रक्तप्रवाहिका : इसकी 15 ग्राम ताजी छाल को छाछ में पीसकर सेवन करने से रक्त प्रवाहिका में तुरन्त लाभ होता है।

अश्मरी : मूल की 5 ग्राम छाल को दही में घिसकर दिन में दो बार सेवन करने से लाभ होता है।

पित्तज प्रमेह : कुटज, रोहिड़ी, बहेड़ा, कैथ, शाल, छतिवान, कबीला के पुष्पों को समभाग लेकर चूर्ण बनाकर 2–5 ग्राम की मात्रा में दो चम्मच मधु के साथ मिलाकर कफज तथा पित्तज प्रमेह के रोगी को सुबह–शाम देना चाहिये।[1]

प्रमेह : प्रमेह में कुटज के पुष्पों का शाक या 2–3 ग्राम चूर्ण का नियमित सेवन लाभकारी है।

कुटज की फली

इन्द्रिय दौर्बल्य : 6 ग्राम इन्द्रजौ को चार प्रहर भैंस के दूध में भिगोकर पीसकर, इन्द्री पर लेपकर कर पट्टी बांधें, कुछ देर पश्चात् गर्म जल से धो दें। कुछ दिन तक करने से इन्द्री पुष्ट हो जाती है।

कुष्ठ : कुष्ठ रोग में इसकी 10 ग्राम छाल को जल में पीसकर दिन में तीन बार सेवन करने से लाभ होता है।

रक्तपित्त : रक्तपित्त में इसकी छाल के कल्क से सिद्ध किया हुआ घी 5–10 ग्राम की मात्रा में नियमित सेवन करना चाहिये।

व्रण : इसकी छाल के क्वाथ से व्रण धोने से व्रणरोपण होता है।

विस्फोटक : कुटज की छाल को चावल के पानी में पीसकर लेप करने से फफोले, फुसिंयों में, लाभ होता है। इसकी ताजी छाल का प्रयोग अधिक लाभकारी होता है।

विशेष :

1. वातरक्त, कफ, दाह, पित्तजन्य कई प्रकार के शूल, अर्श अतिसार, त्रिदोष कुष्ठ, कृमि, विसर्प और रूधिर विकारों में कुटज का प्रयोग लाभकारी होता है।
2. मलेरिया ज्वर, इकतारा तथा मियादी बुखार को तोड़ने में यह औषधि बहुत प्रभावशाली है। इसके बीज पेट के अफारे को दूर करने वाले, संकोचक, कामोद्दीपक और पौष्टिक हैं। ये सीने के दर्द में, श्वांस में, उदर शूल और मूत्रकृच्छ रोग में उपयोगी होते हैं। इसकी ताजी छाल का 10 ग्राम रस चावलों के मांड के साथ सुबह–शाम लेना बवासीर, संग्रहणी आदि में लाभकारी है।

1 इन्द्रयवं त्रिदोषघ्नं, संग्राहि कटुशीतलम्।
ज्वरातीसार रक्तार्शः कृमिविसर्पकुष्ठनुत्।।
दीपन गुदकीलास्रवातास्रश्लेष्मशूलजित्।
(भाव प्रकाश)

2 कुटजः कटुकोरूक्षो दीपनस्तुवरो हिमः।
अर्शोऽतिसारपित्तास्त्रकफतृष्णामकुष्ठनुत्।
(भाव प्रकाश)

Scanned by CamScanner

79 लाजवंती (छुई-मुई)

वैज्ञानिक नाम	:	*Mimosa pudica* L.
कुलनाम	:	Mimosaceae
अंग्रेजी नाम	:	Sensitive plant
संस्कृत	:	लज्जालु, नमस्कारी, शमीपत्रा
हिन्दी	:	लजालु
मराठी	:	लाजालू
बंगाली	:	लाजक
पंजाबी	:	लालवंत
तैलगु	:	अत्तापत्ती

परिचय

लाजवंती का प्रसरणशील छोटा सा क्षुप भारत के समस्त उष्ण प्रदेशों में पाया जाता है। इस बूटी को हाथ लगाते ही यह सिकुड़ जाती है और हाथ हटाने पर पुनः अपनी पूर्व अवस्था में आ जाती है, यही इस बूटी की खास पहचान है। इस प्रजाति के पौधे अनेक रूपों में मिलते हैं।

बाह्य-स्वरूप

इसका गुल्म जातीय प्रसरणशील क्षुप, कंटकित, जमीन पर फैला हुआ या एक बालिश्त ऊपर उठा हुआ होता है। कभी-कभी 2-4 फुट ऊंचे क्षुप भी पाये जाते हैं। पत्र द्विपक्षवत्, पत्रक खैर के पत्रकों के सदृश, पुष्प मुंडको में गुलाबी रंग के, फल आधा इंच से पौन इंच लम्बे। प्रत्येक फली में 3-5 बीज होते हैं। वर्षा ऋतु में पुष्प तथा शीतकाल में फल लगते हैं।

रासायनिक संघटन

मूल में टैनिन तथा एक विषाक्त क्षाराभ माइमोसिन होता है। बीजों में म्यूसिलेज होता है।

गुण-धर्म

लाजवंती शीतल, कफ पित्त दूर करने वाली रक्तपित्त, अतिसार तथा योनि रोगों का विनाश करने वाली है।[1] यह कड़वी, चरपरी, पित्त अतिसार का नाश करने वाली, शोथ, दाह, श्रमश्वास, व्रण, कुष्ठ तथा कफ का नाश करने वाली है।[2]

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

गंडमाला : इसके पत्तों के 40 मिलीग्राम स्वरस को नियमपूर्वक पिलाने से गंडमाला मिटती है।

स्तन शैथिल्य : लज्जालू और असगंध की जड़ पीसकर लेप करने से स्तनों का ढीलापन मिटकर स्तन कठोर और पुष्ट हो जाते हैं।

खांसी : इसकी जड़ को गले में बांधने से खांसी मिटती है। यह एक विचित्र किन्तु चमत्कारिक प्रयोग है।

बवासीर :

1. इसके पत्तों का एक चम्मच चूर्ण दूध के साथ प्रातः–सायं अथवा तीन बार देने से बावासीर में लाभ होता है।
2. इसकी जड़ और पत्ते, दोनों का एक चम्मच चूर्ण दूध में मिलाकर दो बार देने से बवासीर और भगंदर में लाभ होता है।

रक्तातिसार :

1. लाजवंती मूल का 3 ग्राम चूर्ण दही के साथ खिलाने से रक्त अतिसार से तुरंत लाभ होता है।
2. लाजवंती की जड़ के 10 ग्राम चूर्ण का एक गिलास जल में क्वाथ कर चौथाई शेष क्वाथ को, सुबह–शाम पिलाने से रक्त अतिसार में लाभ होता है।

अजीर्ण : इसके पत्तों का 30 मिलीग्राम रस पिलाने से अपच दूर होता है।

कामला : इसके पत्तों के रस का सेवन करने से पहले सात दिन में ज्वर और सब प्रकार के पित्त विकार मिटते हैं। दूसरे सप्ताह में अर्श और कामला आदि रोग मिटते हैं।

पथरी : लाजवंती की 10 ग्राम जड़ का क्वाथ बनाकर दोनों समय पिलाने से पथरी गलकर निकल जाती है।

मधुमेह : मधुमेह में इसकी जड़ का काढ़ा 100 ग्राम देने से लाभ होता है।

मूत्रातिसार : इसके पत्तों को जल में पीसकर बस्ति प्रदेश पर लेप करने से मूत्रातिसार मिटता है।

योनिभ्रंश : लाजवंती के पत्तों का रस या मूल घिसकर बाहर निकले हुए गर्भाशय पर लगावें और हाथों पर लेप कर ऊपर चढ़ा, पट्टी बांधकर आराम करने से गर्भाशय ऊपर रह जाता है। कुछ समय तक नियमित रूप से योनि पर लगाने से योनि संकोचन भी होता है।

वृषण शोथ : इसके पत्तों को कुचलकर अंडकोष की सूजन पर लेप करने से लाभ होता है।

नाड़ी व्रण :

1. इसकी जड़ को घिसकर लेप करने से नासूर मिटता है।
2. इसके पत्तो को कुचलकर इसमें रूई का फोहा रखकर जीर्ण व्रण, नाड़ी व्रण में प्रयोग करने से लाभ होता है।

व्रण–शोथ :

1. इसकी जड़ को घिसकर लेप करने से सूजन बिखर जाती है।
2. इसके बीजों का चूर्ण घाव पर लगाने से लाभ होता है।

1 लजालुः शीतला तिक्ता कषाया कफपित्तजित्।
रक्तपित्तमतिसारं योनिरोगान् विनाशयेत्।। (भाव प्रकाश)

2 रक्तपादी कटुः शीता पित्तातिसार नाशिनी।
शोफदाहश्रमश्वासव्रणकुष्ठकफास्रनुत्।। (रा०नि०)

Scanned by CamScanner

80 लौंग (लवंग)

वैज्ञानिक नाम	:	*Syzygium aromaticum* (L.) Merr. & L.M. Perry
कुलनाम	:	Myrtaceae
अंग्रेजी नाम	:	Clove
संस्कृत	:	लवंण, देवकुसुम, श्रीप्रसून
हिन्दी	:	लवंग, लौंग
गुजराती	:	लवंग
मराठी	:	लवंग
बंगाली	:	लवंग
तैलगु	:	कारावल्लु
अरबी	:	करन्फ
फारसी	:	मेडक, मेखत

परिचय

लौंग का मूल उत्पति स्थल मलक्का द्वीप है, परन्तु भारत में दक्षिण में केरल और तमिलनाडु में इसकी खेती की जाती है। भारतवर्ष में इसका अधिकांश आयात सिंगापुर से किया जाता है। लौंग के वृक्ष पर लगभग 9 वर्ष की आयु में फूल लगने शुरू हो जाते है। इसकी पुष्प कलियों को ही सुखाकर बाजार में लौंग के नाम से बेचते हैं।

बाह्य–स्वरूप

इसका सदा हरित वृक्ष 40–40 फुट ऊँचा होता है। काण्ड से चारों ओर कोमल और अवनत शाखायें निकल कर फैली रहती है। पत्र हरितवर्ण 3–6 इंच अण्डाकृति होते है। पुष्प सुगन्धित, बैगनी रंग के होते है। फल लवंगाकृति होता है जो मातृलवंग कहा जाता है।

रासायनिक संघटन

इसमें एक उड़नशील तेल पाया जाता है जिसमें यूजीनोल, एमिल

Scanned by CamScanner

यूजेनॉल, कैरियोफाइलीन आदि मुख्य घटक होते हैं। इसके अतिरिक्त लौंग में अनेक तत्व पाये जाते हैं।

गुण-धर्म

लौंग चरपरी, कड़वी, नेत्र हितकारी, शीतल, दीपन-पाचन, रुचिकारक, कफ-पित्त, रक्तरोग, प्यास, वमन, अफारा, शूल, श्वास हिचकी और क्षय रोग का नाश करता है। लवंग तेल, अग्निवर्धक, वातनाशक, वेदनाशूल, कफ और गर्भिणी का वमन का नाशक है।

लौंग के कुछ विशेष गुण

1. लौंग के सेवन से भूख बढ़ती है। आमाशय की रस क्रिया को बल मिलता है, भोजन के प्रति रूचि पैदा होती है। और मन प्रसन्न होता है।
2. लौंग कृमिनाशक है, जिन सूक्ष्म जन्तुओं के कारण से मनुष्य का पेट फूलता है, उन्हें यह नष्ट कर देती है, जिससे मनुष्य की रोग निवारण क्षमता बढ़ती है।
3. यह चेतना शक्ति को जाग्रत करती है।
4. यह शरीर की दुर्गन्ध को नष्ट करती है। शरीर के किसी भी बाह्य अंग पर लेप करने से लौंग चेतना कारक, वेदना नाशक, व्रणशोधक और व्रणरोपक है।
5. लौंग मूत्रल है। यह मूत्रमार्ग की शुद्धि कर, शरीर के बिजातीय द्रव्यों को मूत्र के द्वारा बाहर निकाल देती है।

औषधीय प्रयोग

अवसादक एवं शिरःशूल : 6 ग्राम लौंग को पानी में पीसकर किंचित गरम कर गाढ़ा लेप कनपटियों पर करने से शिरः शूल एवं अवसादक में लाभ होता है।

नेत्ररोग : लौंग को तांबे के बरतन में पीसकर, शहद मिलाकर अंजन करने से नेत्र के सफेद भाग के रोग मिटते है।

नजले का मस्तकशूल : 2 लौंग और ½ ग्राम अफीम को पानी के साथ पीसकर गरम करके ललाट पर लेप करने से नजले के कारण उत्पन्न शिरोवेदना शान्त होती है।

कफ निष्कासन के लिये : लौंग के 2 ग्राम जौकूट किये हुये चूर्ण को 125 ग्राम पानी में उबाले, चतुर्थांश शेष रहने पर उतार छानकर थोड़ा गरम कर पी लेवें। यह कफ को द्रवित कर निकाल देने में अति उत्तम है।

श्वास की दुर्गन्ध : लौंग को मुंह में रखने से मुंह और श्वास की दुर्गन्ध मिटती हैं।

दमा : लौंग, आंकडे के फूल और काला नमक समभाग लेकर चने के आकार की गोली बना, मुख में रखकर चूसने से दमा और श्वास नलिका के रोग मिटते हैं।

जलन : 2–4 नग लौंग को शीतल जल में पीसकर, मिश्री मिलाकर पीने से हृदय की जलन मिटती है।

कुक्कुरकास : 3–4 नग लौंग को आग पर भूनकर, पीसकर, शहद मिलाकर चाटने से कुक्कुर खांसी मिटती है।

हैजे की प्यास : एक या डेढ़ ग्राम लौंग को करीब डेढ किलो जल में डालकर उबाले 2–3 उबाल आने पर नीचे उतार कर ढक देवें, इसमें से 20–25 ग्राम जल बार-बार पिलाने से हैजे से उत्पन्न प्यास मिटती है।

अजीर्ण : लौंग 1 ग्राम और हरड़ 3 ग्राम का क्वाथ कर उसमें थोडा सा सैंधा नमक डालकर पिलाने से अजीर्ण मिटता है और दस्त साफ होता है।

हल्लास : लौंग को पानी के साथ पीसकर किंचित उष्ण कर थोड़ा-थोड़ा पिलाने से जी मिचलाना और प्यास मिटती है।

क्षुधावर्धन हेतु : लौंग और छोटी पीपल दोनों को समभाग ले कपड़े से छानकर चूर्ण बना लें, इस चूर्ण को 1½ ग्राम की मात्रा में प्रातः-सायं मधु के साथ चाटने से ज्वर जन्य मंदाग्नि व निर्बलता दूर होती है।

अफारे में : लौंग, सौंठ, अजवायन और सैंधा नमक 10–10 ग्राम, गुड़ 40 ग्राम पीसकर 325–325 मिलीग्राम की गोलियां बना 1 गोली दिन में 2–3 बार सेवन करने से अफारा, मंदाग्नि दूर होती है।

उदर रोग :

1. बदहजमी, खट्टी डकारें आदि में लौंग, शुंठी, मिर्च, पीपल,

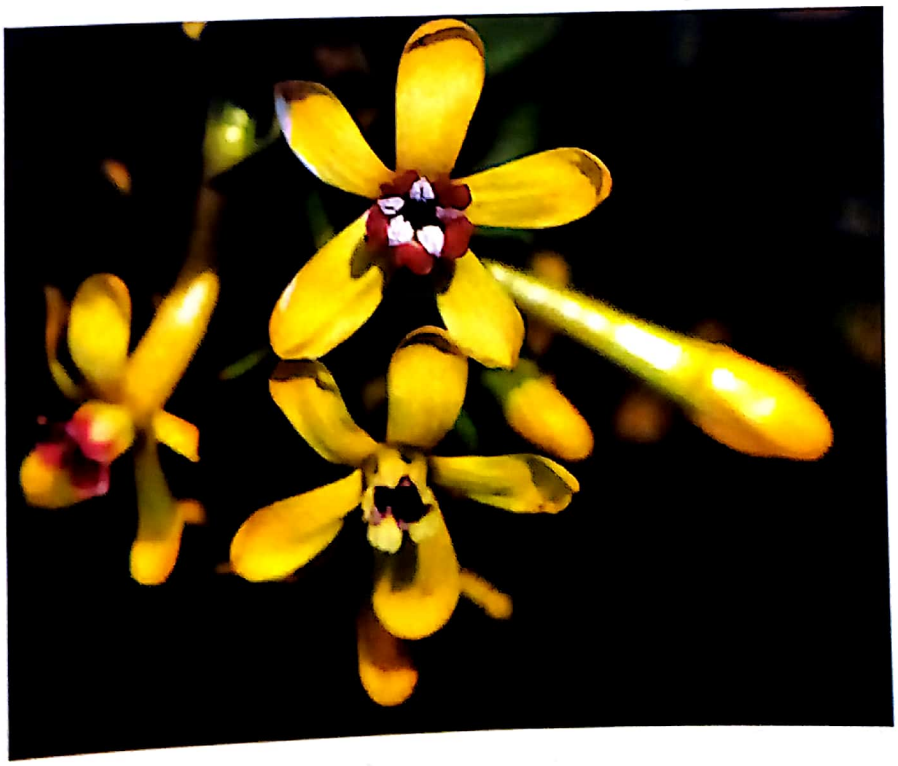

Scanned by CamScanner

अजवायन 10–10 ग्राम, सैंधा नमक 50 ग्राम, मिश्री 50 ग्राम इनको महीन पीसकर चीनी के बरतन में रखकर, नीबू का रस इतना डाले कि सब चूर्ण उसमे तर हो जाये, धूप में सुखाकर सुरक्षित कर लें। इसे एक चम्मच भोजन के बाद सेवन करने से मुंह का स्वाद अच्छा हो जाता है, तथा बदहजमी खट्टी डकारे आदि बन्द हो जाती है।

2. मंदाग्नि अजीर्ण आदि मे 1–2 ग्राम लौंग को जौ कूटकर 100 ग्राम जल में क्वाथ कर 20–25 ग्राम शेष रहने पर छानकर ठंडाकर पीने से, मंदाग्नि, अजीर्ण एवं हैजे में लाभ होता है।
3. अफारे में लौंग का फांट, या लौंग का तेल देने से तुरन्त लाभ होता है।

गर्भकाल में वमन :

1. 1 ग्राम लबंग चूर्ण को मिश्री की चाशनी व अनार के रस मे मिलाकर चाटने से गर्भवती स्त्री के वमन बन्द होती है।
2. लौंग का फांट पिलाने से गर्भवती की वमन बन्द हो जाती है।

ज्वर में यह फांट न दे।

लवण चतु: समम् : जायफल, लौंग, जीरा, समान भाग लेकर चूर्ण बनावें, इसे 2–3 ग्राम की मात्रा में लेकर शहद और शक्कर के साथ सेवन करने से आमातिसार और दर्द नष्ट होता है।

लवंग फांट : लौंग के दरदरे 10 ग्राम चूर्ण को ½ किलोग्राम उबलते हुये जल में डालकर ढक दें, आधे घंटे बाद छान लें। 25–50 ग्राम जल दिन में 3 बार पिलाने से उदरवात और अपचन दूर होकर अग्नि प्रदीप्त होती है।

लवंगादि चूर्ण : लौंग, सौंठ, 10–10 ग्राम अजवायन, सैंधा नमक 12–12 ग्राम इन सबका चूर्ण कर भोजन के बाद 1½ ग्राम जल के साथ सेवन करें– यह अजीर्ण और अम्ल रोग नाशक है।

स्तम्भन के लिये : लौंग व जायफल को घिसकर नाभि पर लेपकर स्त्री सहवास करने से स्त्री और पुरुष की स्तम्भन शक्ति बढ़ जाती है।

नासूर : 5–6 लौंग और 10 ग्राम हल्दी को पीसकर लगाने से नासूर ठीक हो जाता है।

Scanned by CamScanner

वैज्ञानिक नाम	:	*Solanum nigrum* L.
कुलनाम	:	Solanaceae
अंग्रेजी नाम	:	Black night or Night shade
संस्कृत	:	काकमाची, रसायनवरा, काकिनी, सर्वतिक्ता
हिन्दी	:	मकोय
मराठी	:	कुदा
बंगाली	:	काकमाची, गुड़कामाई
पंजाबी	:	केचूमेच, मको
तेलगु	:	काचि
कन्नड	:	गारीकेसोप्पू
अरबी	:	इनबुस्सा–लब
फारसी	:	अंगूर, रोबाह

परिचय

यह छोटा सा पौधा भारतवर्ष के छाया–युक्त स्थानों में सर्वत्र पाया जाता है। इसमें पूरे वर्ष पर्यन्त फूल और फल देखे जा सकते हैं।

बाह्य–स्वरूप

इसकी झाड़ी शाखायुक्त एक–डेढ़ फुट तक ऊँची, तथा शाखाओं पर उभरी हुई रेखाएं होती है। पत्र अंडाकार या आयताकार, दन्तुर या खण्डित, 2–3 इंच लम्बे, एक–डेढ़ इंच तक चौड़े होते है। पुष्प छोटे, श्वेत वर्ण, बहिरक्षीय पुष्प दंडो पर 3–8 के गुच्छों में नीचे झुके होते हैं। फल छोटे, स्निग्ध गोलाकार अपरिक्व अवस्था में हरे रंग के और पकने पर नीले या बैंगनी रंग के, कभी–कभी पीले या लाल होते हैं। बीज छोटे, चिकने, पीले रंग के, बैंगन के बीजों की तरह होते हैं परन्तु बैंगन के बीजों से बहुत छोटे होते है। पकने पर फल मीठे लगते हैं।

रासायनिक संघटन

मकोय की पत्तियों में प्रोटीन 5.9%, वसा खनिज 2.1%, कार्बोहाइड्रेट 8.9%, कैल्शियम 410, फास्फोरस 60, लोहा 20.5 मिलीग्राम प्रति 100 ग्राम पाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त रिबोफ्लेबिन 0.59, निकोटिनिक अम्ल 0.92, विटामिन सी 0.11 तथा बी, कैरोटिन 0.74 मिलीग्राम प्रति 100 ग्राम होते हैं। कच्चे हरे फलों में चार स्टिरायड, एल्केलायड, सोलामार्जिन, सोलेसोनिन तथा ए० आर० बी० सोले नाइग्रीन होते है। कुल शक्कर 0.101–0.431 प्रतिशत होता है। पके फलों में ग्लुकोज

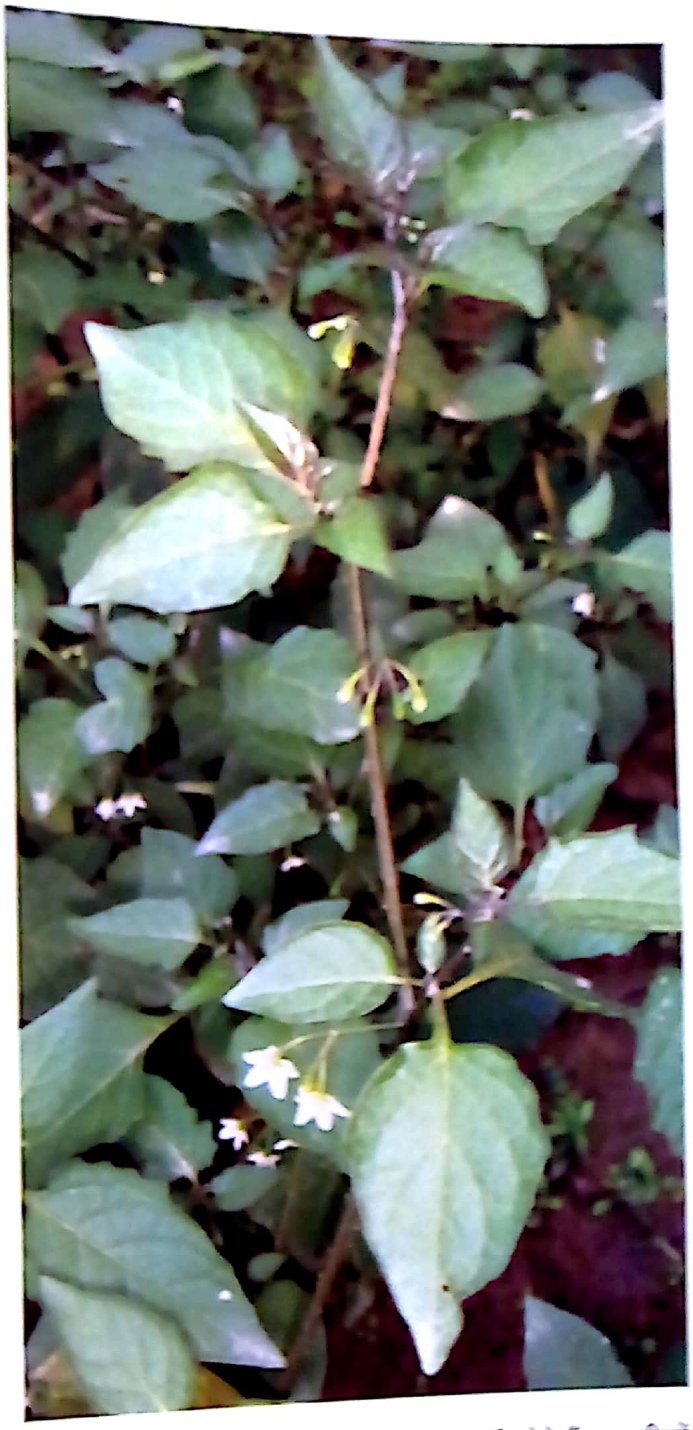

और फ्रक्टोज (15–20 प्रतिशत) तथा विटामिन सी होते हैं तथा बीजों से एक हरे पीले रंग का तेल निकलता है।

गुण–धर्म

यह त्रिदोषघ्न है। स्निग्धता और अल्पमात्रा में उष्ण होने के कारण वातशामक तिक्त और कटु होने से पित्त और कफ का शामक है। मकोय रसायन, शोथहर, वेदनास्थापक, व्रण शोधन तथा सवर्णीकरण हैं। यह दीपन, यकृत को उत्तेजना देने वाला, पित्तसारक और रेचन है। कफघ्न,

Scanned by CamScanner

हिक्का निग्रहण और श्वासहर है। यह मूत्रल, स्वेदजन कुष्ठघ्न ज्वरघ्न, कटुपौष्टिक और विषघ्न है।' ' यकृत की क्रिया बिगड़ने से जो सूजन, बवासीर, अतिसार या कई प्रकार के चर्म रोग होते है, वे इसके सेवन से नष्ट हो जाते है।

मकोय, सुरसा, भार्गी निर्गुण्डी यह सब कफ को दूर करने वाले एवं कृमिनाशक है। प्रतिश्याय, अरुचि, श्वास, कास नाशक एवं शोधक है।

औषधीय प्रयोग

अनिद्रा : इसकी जड़ों के 10–20 ग्राम क्वाथ मे थोड़ा गुड़ मिलाकर पिलाने से निद्रा आती है।

नेत्र रोग : पित्त रोग वालो की आंखों को ढक कर, आंखो को इसके घी चुपड़े फलो की धूनी देने से कीड़े बाहर निकल आते है।

कर्णशूल : नासिका एवं कर्ण रोग मे मकोय के पत्तो का किंचित उष्ण रस 2–2 बूंद कान में टपकाने से लाभ होता है।

मुखपाक : इसके 5–6 पत्तों को चबाने से मुख और जिह्वा के छाले मिटते हैं।

दाँत के लिये : इसके पत्तो के रस मे घी या तेल समभाग मिलाकर दांतों की जगह पर मलने से दांत बिना कष्ट के निकल आते हैं।

हृदय रोग तथा जलोदर : इसके पत्ते, फल और डालियों का सत्व निकालकर, 2 से 8 ग्राम तक की मात्रा में दिन में 2–3 बार देने से जलोदर और सब प्रकार के हृदय रोग मिटते हैं।

वमन : इसके 10–15 मिलीलीटर रस में 125–250 मिलीग्राम सोहागा मिलाकर पिलाने से वमन बन्द होती है।

शाक : इसके पत्ते और कोमल शाखाओं का शाक बनाया जाता है। इसके पके फल खाने के काम आते हैं।

मंदाग्नि : मकोय के क्वाथ 50–60 मि॰ली॰ में 2 ग्राम पीपल का चूर्ण डालकर प्रातः–सायं भोजनोपरान्त पिलाने से मंदाग्नि मिटती है, आंखों को धोने से नेत्र की ज्योति बढ़ती है।

यकृत वृद्धि : इसके पौधों का 150–160 ग्राम स्वरस नियमित रूप से पिलाने से बहुत दिनों से बढ़ा हुआ जिगर कम हो जाता है। एक मिट्टी के बरतन में रस को निकाल कर इतना गरम करें कि रस का रंग हरे से लाल या गुलाबी हो जाय। रात को उबालकर, सुबह ठंडा कर प्रयोग में लाना चाहिये।

प्लीहा वृद्धि : प्लीहोदर की शांति के लिये मकोय का क्वाथ 50–60 मि॰ली॰, सैंधा नमक तथा जीरा मिलाकर पीना चाहिए अथवा पके आम का रस, मधु मिलाकर पीना चाहिये।

कामला : इसके पत्तों के क्वाथ 50–60 मिलीलीटर में शोरे और नौसादर के तेजाब की 4–6 बूंद डाल कर प्रातः–सायं पिलाने से बढ़ा हुआ यकृत ठीक हो जाता है। इसके 40–60 ग्राम क्वाथ में हल्दी का 2–5 ग्राम चूर्ण डाल कर पिलाने से कामला रोग मिटता है।

Scanned by CamScanner

शोथ :

1. सर्वांग शोथ के ऊपर इसके फलों का उष्ण लेप करना चाहिये।
2. मकोय, शतावरी, बथुआ शाक, सौवर्चल, इनको घी तथा मासरस में भूनकर जिस रोगी को अनुकूल पडता हो, उसे व्यंजन करने के लिये देना चाहिये। भोजन कर लेने के बाद गाय, भैस तथा बकरी का दूध पीने के लिये देना चाहिये।[1]

वृक्क विकार : इसके अर्क को 10–15 मिलीलीटर की मात्रा मे नित्य पिलाने से अच्छा निरेचन होता है और मूत्रवृद्धि होती है। गुर्दे और मूत्राशय की शोथ एवं पीडा भी मिटती है।

कुष्ठ : काकमाची (काली मकोय) की 20–30 ग्राम पत्तियों को पीसकर लेप लगाने से कुष्ठ रोग का नाश होता है।[2]

लाल चट्टे : इसके अर्क की थोडी मात्रा देने से शरीर के बहुत दिनों के लाल चट्टे मिट जाते है।

निषेध : वरित रोगों में।

निवारण : मधु।

प्रतिनिधि द्रव्य : काकनज।

1. काकमाची त्रिदोषघ्नी स्निग्धोष्णा स्वरशुक्रदा।
   तिक्ता रसायनी शोथकुष्ठार्शोज्वरमेहजित्।।
   कटुर्नेत्रहिता हिक्काछर्दिहृद्रोगनाशिनी।। (भाव प्रकाश)
2. नात्युष्णशीतं कुष्ठघ्नं काकमाच्यास्तु तद्विधम्। (सुश्रुत)
3. त्रिदोषशमनी वृष्या काकमाची रसायनी।
   नात्युष्णशीतवीर्या च भेदिनी कुष्ठनाशिनी।। (चरक)
4. ईषतिक्तं त्रिदोषघ्नं शाकं कटु सतीनजम्।
   सुनिषण्णा कवेत्राम्न काकमाची शतावरी।
   वास्तु कोपादिका शाकं शाकं सौवर्चल तथा।।
   पृथक मांस रसैर्भृष्टं शाक सात्म्याय दापयेत।
   व्याजनार्थ तथा गव्यं माहिषाजं पयो हितम्।। (चरक)

Scanned by CamScanner

82 मैनफल

वैज्ञानिक नाम	:	*Xeromphis spinosa* (Thunb.) Keay
कुलनाम	:	Rubiaceae
अंग्रेजी नाम	:	Emetic nut
संस्कृत	:	शल्यक, मदनफल, विषपुष्पक
हिन्दी	:	मैनफल
गुजराती	:	मींढल
मराठी	:	गेलफल
बंगाली	:	मयनफल
तैलगु	:	मंगा, मंगरी, वंसतकडिमिचेटु
अरबी	:	जौजुल कौसल

परिचय

मैनफल के छोटे आकार के विरल वृक्ष समस्त भारतवर्ष में 4,000 फुट की उंचाई तक देखने को मिलते है।

बाह्य–स्वरूप

मैनफल के झाड़ीनुमा वृक्ष का कांड हाथ की भुजा जितना मोटा, छाल पतली परतों में उतरती हुई दिखती है। पत्ते अभिलट्वाकार गोलाभ या लम्बाग्र 1–3 इंच लम्बे पंत्र दंड के पास से संकरे दोनों पृष्ठ श्वेत रोमयुक्त तथा शाखाओं पर समूह बद्ध उगते हैं। पत्रों के अक्षिप्रदेश में दोनो और से 1½ इंच लम्बे तीक्ष्ण कांटे होते हैं। पुष्प सफेद पीली आभायुक्त, सुगन्धित, लोमयुक्त तथा इनमें मोगरे जैसी मधुर गन्ध आती है। फल अखरोट की भांति लम्बे, गोल, भीतर चार भागों में विभक्त और प्रत्येक खंड में बीज रहते हैं। जेठ मास में फल आते है और शीतकाल में पक जाते है।

रासायनिक संघटन

मैनफल के फलों में मुख्य कार्यकारी तत्व सैपोनिन होता है, इसके अतिरिक्त फलमज्जा में प्रोटीन, शर्करा और अन्य कार्बोहाइड्रेट अम्ल होते हैं। बीजों से तेल प्राप्त होता है जो मक्खन के समान पीताभ हरित होता है। फूलों से भी एक सुगन्धित तेल निकलता है।

गुण–धर्म

मैनफल मधुर, तिक्त, उष्णवीर्य, हल्का, वमनकारक, विद्रधिनाशक, रुक्ष, प्रतिश्याय नाशक, व्रण, कोढ़, कफ, अफारा, सूजन और गुल्म तथा व्रण को नष्ट करता है।[1]

देशी चिकित्सा विज्ञान में जितनी वामक औषधियां है उनमें मैनफल सर्वश्रेष्ठ है। बिना किसी उपद्रव के इसके फलों के सेवन से वमन हो जाता है।[2]

औषधीय प्रयोग

कफ पित्त विकार : 2–3 अच्छे मैनफल लेकर, ऊपर का छिलका हटा दें, और दरदरा कूटकर रात में 60 ग्राम जल में भिगों दें, तथा प्रातः काल अच्छी तरह मल छानकर पीने से तत्काल वमन होकर कफ–पित्त के विकार शान्त हो जाते हैं।

अर्धावभेदक : मैनफल और मिश्री बराबर–बराबर लेकर, थोड़े से गाय के दूध के साथ पीसकर सूर्योदय से पहले ही नस्य देने से सूर्य उदय के साथ आरम्भ होने वाला शिरः शूल मिटता है।

दमा : मैनफल, अर्कमूल त्वक् तथा मुलेठी तीनों को समान भाग

Scanned by CamScanner

लेकर, 2–5 ग्राम की मात्रा में चूर्ण कर प्रयोग करे, यह दमा और प्रतिश्याय की उत्कृष्ट औषधि है।

वमन कर्म प्रयोग :

1. 6 ग्राम मैनफल बीज चूर्ण 6 ग्राम सैंधा नमक तथा 1½ ग्राम पीपल के चूर्ण को गरम जल के साथ देने से वमन होकर कफ निकल जाता है।
2. 50 ग्राम मुलेठी को कूटकर 2 किलोग्राम जल में पकावें, 1 किलोग्राम जल शेष रहने पर मलकर छान लें। 6 ग्राम मैनफल बीजों की मीगीं के चूर्ण को फांकर 50 ग्राम मुलेठी क्वाथ में 11 ग्राम मधु व 11 ग्राम सैंधा नमक डालकर पीने में 2–3 बार में खूब उल्टी हो जाती है।
3. वमन के लिये 3–6 ग्राम बीजों के चूर्ण को 25 ग्राम जल में एक घंटा भिगोकर पत्थर के खरल में घोटकर कपड़छन कर, मधु और सैंधा नमक मिला खाली पेट पिलाने से फिर वमन हो जाता है। कफप्रधान ज्वर, गुल्म, शूल, प्रतिश्याय आदि में वमनार्थ प्रयोग करते हैं।
4. मैनफल के छिलके और गूदा अलग कर बीजों को शुष्क कर कूटकर छिलके अलग कर केवल बीजों की गिरी के चूर्ण को महीन पीसकर शीशी में भरकर रख लें। मात्रा 2 से 4 ग्राम प्रयोग करें।

प्रसूतिकष्ट : इसके शुष्क फलों की धूनी योनि में देने से प्रसव शीघ्र हो जाता है।

बांझपन : मैनफल के 1 ग्राम सुखाये हुये बीजों का चूर्ण, दूध शक्कर और केसर के साथ सेवन करने से तथा 1 ग्राम बीजों के चूर्ण की बत्ती बनाकर योनिमार्ग मे धारण करने से योनिमार्ग और गर्भाशय के सब विकार दूर हो जाते है। मासिक धर्म की रुकावट, वेदना, अनियमितता आदि कष्ट दूर हो जाते है। गर्भाशय की शुद्धि होकर स्त्री गर्भ धारण करती है।

शूल :

1. मैनफल के बीजों का चूर्ण 2–4 ग्राम कांजी अथवा छाछ में पीसकर, गरम करके नाभि के चारों और लेप करने से शूल मिटता है।
2. उदरशूल मे इसके फल को सिरके मे पीसकर नाभि के चारों और लेप करने से लाभ होता है।

कफज विसर्परोग : मैनफल, मुलेठी, नीम की छाल और कटु इन्द्र–जौ इन सबके चूर्ण से वमन करानी चाहिये।

लेप : 140 ग्राम भैंस के ताजे मक्खन को गरम कर, उसमें 11.5 ग्राम मोम मिला दें, जब मोम पिघल जाये तो उसमें 11.5 ग्राम मैनफल चूर्ण और समभाग सैंधा नमक मिलाकर रख ले। इसे निरन्तर 1 सप्ताह तक लगाने से दाह शांत होती है। और फटे हुये पैर कमल के समान कोमल मुलायम हो जाते हैं।

विशेष हानिकारक : उष्ण प्रकृति के व्यक्तियों में इसका प्रयोग सावधानी पूर्वक करना चाहिए।

दुष्प्रभाव निवारण : कतीरा एवं शीतल पदार्थ

प्रतिनिधि–द्रव्य : राई

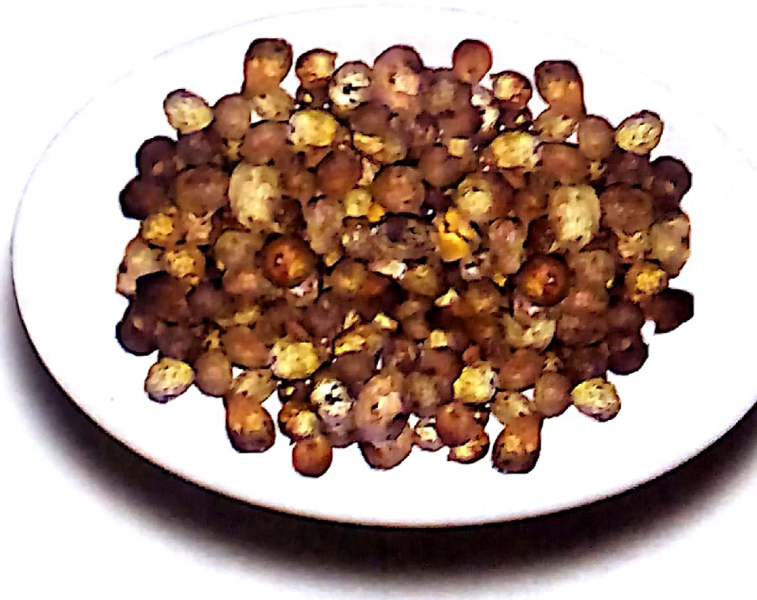

1. मदनो मधुरस्तिक्तो वीर्योष्णो लेखनो लघुः।
वान्तिकृद्विद्रधिहरः प्रतिश्यायव्रणान्तकः।।
रूक्षः कुष्ठकफानाह शोथगुल्मव्रणापहः। (भाव प्रकाश)

2. वमन द्रव्याणां मदनफलानि श्रेष्ठतमानि आचक्षतेऽनयायित्वात्। (चरक)

Scanned by CamScanner

83 काली मिर्च

वैज्ञानिक नाम	:	*Piper nigrum* L.
कुलनाम	:	Piperaceae
अंग्रेजी नाम	:	Black pepper
संस्कृत	:	मरिच, यवनेष्टं, शिरोवृत्तम, कृष्ण
हिन्दी	:	काली मिर्च
गुजराती	:	सरी
मराठी	:	मिरी
बंगाली	:	गोलमरिच
तैलगु	:	मिरियालु, मिरियालतिगे
फारसी	:	फिल्–फिल् स्याह
पंजाबी	:	काली मिरच
अरबी	:	फिल–फिल–अस्वद

परिचय

बहुवर्षीय, ताम्बूल सदृश, पर्णवाली, अतिप्रसरणशील, कोमल वल्लरी, ग्रंथि पर्वों से उत्पन्न तंतुओं के सहारे मार्ग में आये वृन्त का आलिंगन करती हुई, दृढ़ शाखाओं के माध्यम से वृद्धि को प्राप्त करती है। किन्चित वन प्रदेशों में स्वयं उत्पन्न होती है परन्तु दक्षिणी भारत के उष्ण और आर्द्र भागों में काली मिर्च की बेलें बोई जाती हैं। अधिकतर एक वर्ष में इसकी दो उपज प्राप्त होती है। पहली उपज अगस्त–सितम्बर में और दूसरी मार्च–अप्रैल में प्राप्त होती है। बाजारों में श्वेत मिर्च और काली मिर्च के नाम से यह दो प्रकार की बिकती है। कुछ निघंटुकार श्वेत मिर्च को काली मिर्च की एक विशेष जाति मानते हैं। कोई सहिंजना के बीजों को ही श्वेत मिर्च मान लेते हैं। वस्तुतः यह दोनों में से कोई नहीं है। श्वेत मिर्च काली मिर्च का रूपान्तर है। अर्द्धपक्व फलों की तो काली मिर्च बनती है तथा पूर्ण प्रगल्भ फलों को पानी में भिगोकर, हाथ से मसलकर ऊपर का छिल्का उतर जाने से श्वेत मिर्च बन जाती है। छिल्का हट जाने से इसका विदाही धर्म कुछ कम हो जाता है तथा गुणों में कुछ सौम्यता आ जाती है।

बाह्य–स्वरूप

यह एक झाड़ीदार, आरोहिणी या भूमि पर फैली हुई लता है। पत्र, ताम्बूल सदृश 5–6 इंच लम्बे, 2–5 इंच चौड़े, 2–3 जोड़ी दृढ़ शिराओं से युक्त होते हैं। पुष्प छोटे एकलिंगी, श्वेत धूसर वर्ण के। फल वर्षाकाल में गोल–गोल गुच्छों में लगते हैं। अपक्व अवस्था

Scanned by CamScanner

में हरे, पकने पर लाल और सूखने पर काले पड़ जाते है। यह अर्धपक्व दशा में ही तोड़कर सुखा लिये जाते है। ये ही काली मिर्च कहलाते हैं।

रासायनिक संघटन

काली मिर्च में मुख्य क्षाराभ पाइपरिन, पाइपरिडिन, पाइपरेटिन तथा चाविकिन होते हैं। इन्हीं के कारण इसमें कटुता होती है। इसके अतिरिक्त उड़नशील तेल, वसा, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, खनिज पदार्थ, कैल्शियम, लौह, फास्फोरस, थियामिन, राइबोफ्लेविन, निकोटिनिक एसिड तथा विटामिन ए पाये जाते हैं।

गुण–धर्म

यह वात–शामक, कफघ्न और कफ निःसारक है। तीक्ष्ण और उष्ण होने से लालास्रावजनक है। दीपन पाचन, यकृत उत्तेजक, वातानुलोमन, श्वास, शूलनाशक और कृमिघ्न है।'[23] यह मूत्रल है, ध्वज भंग और रजोरोध, चर्मरोग, ज्वर तथा कुष्ठ में लाभकारी है और नेत्रों के लिए विशेष हितकारी है। अल्पमात्रा में यह तीक्ष्णता के कारण शरीर के समस्त स्रोतों से मलों को बाहर निकाल कर स्रोतसों का शोधन करता है अतः प्रमाथी द्रव्यों में प्रधान माना गया है।

औषधीय प्रयोग

शिरः शूल :

1. एक काली मिर्च को सुई की नोंक पर लगाकर उसे दीपक पर जला लें, जब उसमें से धुंआ निकलने लगे तो उस धुंए को नाक के रास्ते मस्तक में चढ़ाने से हिचकी और सिर का दर्द दूर होता है।
2. चूल्हे की लाल हुई मिट्टी के चूर्ण तथा काली मिर्च के चूर्ण का समभाग मिलाकर नस्य लेने से भी अर्धावभेदक शांत हो जाता है।[6]
3. भांगरे के रस अथवा चावलों के पानी के साथ काली मिर्च को पीसकर मस्तक पर लेप करने से आधाशीशी मिटती है।

हिस्टीरिया : खाली पेट, खट्टी दही के साथ मीठी बच 3 ग्राम और काली मिर्च का चूर्ण 1 ग्राम दिन में 3 बार खाने से हिस्टीरिया नष्ट हो जाता है।

सिर के जुएं आदि :

1. जुएं नष्ट करने के लिए 10–12 सीताफल के बीज और 5–6 काली मिर्चों को सरसों के तेल में मिलाकर रात्रि में सोने से पूर्व बालों की जड़ों में मलें, सुबह बाल धोकर साफ कर लें। जुएं नष्ट हो जायेंगी।
2. सिर के बाल यदि दाद आदि के कारण झड़ते हो तो इसे प्याज व नमक के साथ पीसकर लगाने से लाभ होता है।

नेत्र रोग :

1. काली मिर्च को दही के साथ पीसकर आंखों में अंजन करने से रतौंधी मिट जाती है।
2. काली मिर्च का सेवन प्रातः घी और मिश्री के साथ किया जाये तो मस्तिष्क शांत रहता है तथा दृष्टि बलवान होती

Scanned by CamScanner

है। मात्रा– ½ से 1 ग्राम तक काली मिर्च, 1 चम्मच घी, आवश्यकतानुसार मिश्री मिलाकर चाटें, बाद में दूध पीयें।

3. पैरों की पत्तकों पर कष्टदायक फुंसी होने पर इसे जल में घिसकर लेप करने से फुंसी पककर फूट जाती है या दब जाती है।

4. काली मिर्च के 1/2 ग्राम चूर्ण को 1 चम्मच देशी घी में मिलाकर खाने से अनेक प्रकार के नेत्र रोग मिटते हैं।

दंत शूल : काली मिर्च के 1–2 ग्राम चूर्ण को 3–4 जामुन के पत्ते या अमरूद के पत्तों या पोस्तदानों के साथ पीसकर कुल्ले करने से दांतों का दर्द जाता रहता है। कंठ विकार व स्वरभंग होने पर भी यह प्रयोग लाभप्रद है।

प्रतिश्याय

1. काली मिर्च के चूर्ण 2 ग्राम को गरम दूध तथा मिश्री के साथ पी लेने अथवा इसके 7 दाने निगलने से प्रतिश्याय में लाभ होता है।

2. 50 ग्राम दही, 15–20 ग्राम गुड़ और एक–डेढ़ ग्राम काली मिर्च चूर्ण इन तीनों को मिलाकर दिन में 3–4 बार सेवन करने से जुकाम नष्ट हो जाता है।

श्वास–कास

1. 2–3 ग्राम मिर्च चूर्ण को मधु और घी (विषम भाग) मिलाकर सुबह–शाम चाटने से सर्दी, आमतौर से होने वाली खांसी, दमा और सीने का दर्द मिटता है तथा फेफड़ों का कफ निकल जाता है।

2. गाय के दूध में मिर्च चूर्ण को पकाकर पिलाने से श्वास–कास में लाभ होता है।

3. यदि खांसी बार–बार उठती हो, भोजन निकलने में कष्ट हो तो दिन में 2–3 बार इसके फांट से कुल्ले करें।

4. कष्टदायक खांसी में मिर्च चूर्ण 2 भाग, पीपल चूर्ण 2 भाग, अनारदाना 4 भाग, जौखार 1 भाग, चूर्ण बनाकर 8 भाग गुड़ में मिलाकर 1–1 ग्राम की गोलियां बनाकर दिन में 3 बार सेवन करने से लाभ होता है।

5. गले की खराश व खांसी में 2–3 काली मिर्च मुख में रखकर चूसने मात्र से लाभ होता है।

विसूचिका

1. मिर्च चूर्ण 1 भाग, भुनी हींग 1 भाग, अच्छी तरह खरल कर, शुद्ध देशी कपूर 2 भाग, मिलाकर 2–2 रत्ती की गोलियां बनाकर, आधा घंटे के अंतर से 1–1 गोली देने से हैजे की प्रथम अवस्था में लाभ होता है।

2. मिर्च चूर्ण 1 ग्राम, भुनी हींग 1 ग्राम, अच्छी तरह खरल कर उसमें 3 ग्राम अफीम मिलाकर शहद में घोटकर 12 गोलियां बनाकर 1–1 गोली 1 घंटे के अंतर से दें। परन्तु बहुत समय तक न दें। इससे प्रवाहिका में भी अत्यन्त लाभ होता है। इसमें अफीम का योग होने से सावधानी से प्रयोग करें।

3. अतिसार में मिर्च चूर्ण 1/2 ग्राम, हींग 1/4 ग्राम, अफीम 100 मि.ग्रा. का मिश्रण जल के साथ या शहद के साथ सुबह, दोपहर तथा सायं देवें।

उदर कृमि : एक कप छाछ के साथ 4–6 काली मिर्च का चूर्ण प्रातः काल खाली पेट सेवन करने से पेट के कीड़े निकल जाते हैं।

उदर रोग :

1. 8–10 काली मिर्च और 5–7 ग्राम के लगभग शिरीष के पत्ते घोंट, छानकर पीने से उदर शोथ, वायु जन्य उदर पीड़ा मिटती है।

2. एक कप पानी में आधा नीबू निचोड़कर, 5–6 काली मिर्च का चूर्ण मिलाकर भोजन के बाद सुबह–शाम पीने से पेट की वायु, ऊर्ध्ववात, मन्दाग्नि, विषमाग्नि की शिकायत दूर हो जाती है।

3. मिर्च चूर्ण के साथ सौंठ, पीपल, जीरा और सैंधा नमक समभाग चूर्ण कर 1–1 ग्राम की मात्रा में भोजनोपरान्त गरम जल के साथ सेवन करने से मंदाग्नि मिटती है।

4. अजीर्ण और अफारा होने पर काली मिर्च, सौंठ, पीपल तथा हरड़ चूर्ण मिलाकर शहद के साथ देने से अथवा इसके फांट को पिलाने से लाभ होता है।

अर्श :

1. मिर्च चूर्ण 2 ग्राम, भुना जीरा 1 ग्राम, शहद या शक्कर 15 ग्राम, इन तीनों को मिलाकर, गर्म जल से इस योग को दिन में दो बार छाछ के साथ या गरम जल के साथ सेवन करें।

2. मिर्च चूर्ण 25 ग्राम, भुना जीरा चूर्ण 35 ग्राम और शुद्ध शहद 180 ग्राम एकत्र कर मिलाकर अवलेह बना रखें। इस अवलेह को 3 से 6 ग्राम की मात्रा में दिन में तीन बार चटायें।

3. मिर्च और जीरे के मिश्रण में सैंधा नमक मिला दिन में दो बार तक्र के साथ 3–4 मास सेवन करते रहने से रोग जन्य निर्बलता से या वृद्धावस्था से हुई अर्श या गुदभ्रंश व्याधियां दूर हो जाती हैं। इससे पेट का पाचन व जठराग्नि ठीक रहती है। विबन्ध, आनाह, वायु गुल्म में भी यह प्रयोग लाभप्रद है।

गुदभ्रंश : 1 ग्राम मिर्च चूर्ण दिन में 3 बार शहद के प्रयोग से गुदा का बाहर निकलना बंद हो जाता है।

मूत्रकृच्छ : काली मिर्च 1 ग्राम और खीरा ककड़ी के बीज 10–15 ग्राम जल के साथ पीस मिश्री मिलाकर छानकर पिलाने से मूत्र की रूकावट मिटती है। इससे शरीर को शीतलता व ताजगी की प्राप्ति होती है।

सूजन : काली मिर्च को पानी के साथ पीसकर उसका लेप करने से सूजन बिखर जाती है।

पीनस रोग : काली मिर्च 2 ग्राम को गुड़ और दही के साथ सेवन करें।

अर्दित रोग :

1. यदि जीभ में जकड़न हो तो इसके चूर्ण को जीभ पर घिसने से लाभ होता है।

2. मिर्च चूर्ण को किसी भी वातहर तेल में मिलाकर लकवा ग्रस्त अंग पर मालिश करने से बहुत लाभ होता है।

Scanned by CamScanner

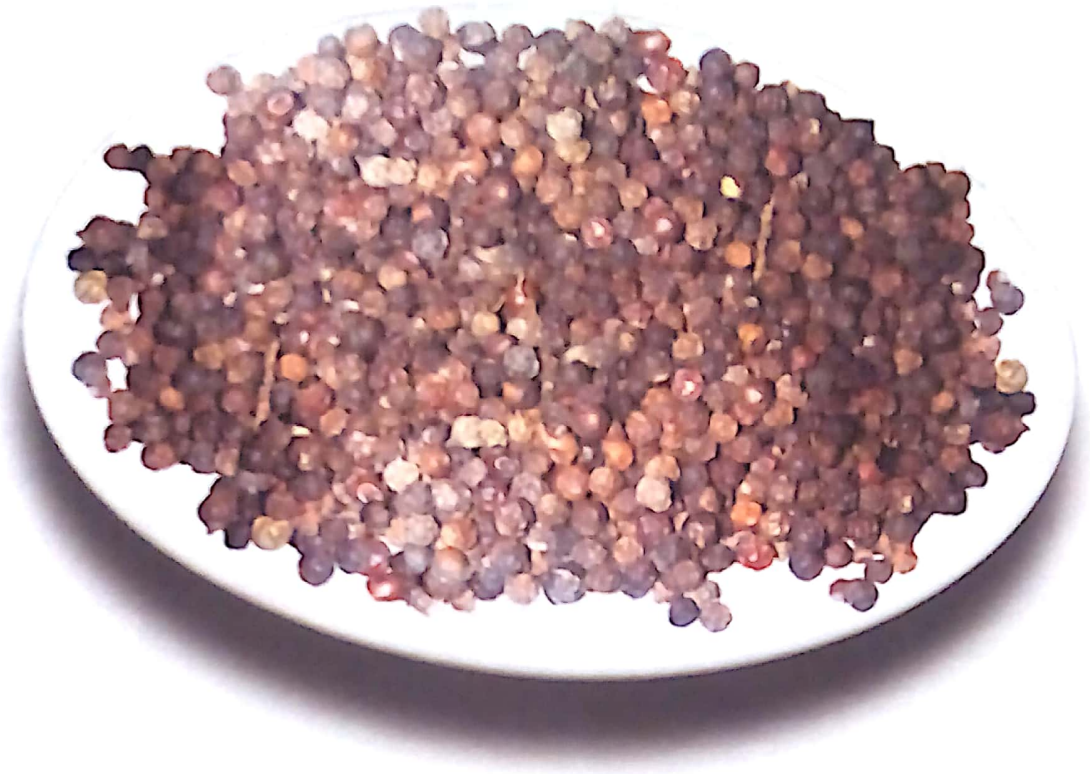

आमवात, गठिया, अंगघात एवं कंडू में : मिर्च सिद्ध तेल की मालिश करने से बहुत लाभ होता है।

दौर्बल्यता : आलस्य, उदासीनता आदि दूर करने के लिए काली मिर्च 4–5 दाने, सौंठ, दालचीनी, लौंग और इलायची थोड़ी–थोड़ी मात्रा में मिलाकर चाय की तरह दूध और शक्कर मिलाकर पान करें।

वीर्य पुष्टि : वीर्य पुष्टि करने के लिए एक गिलास दूध में 8–10 काली मिर्च को डालकर अच्छी तरह उबालकर, सुबह–शाम नियमपूर्वक सेवन करें (गर्मी के मौसम में मात्रा कम की जा सकती है)।

ज्वर :

1. साधारण ज्वर में इसके 1–3 ग्राम चूर्ण में आधा लीटर पानी और 20 ग्राम मिश्री मिलाकर अष्टमांस क्वाथ सिद्ध कर सुबह, दोपहर तथा शाम पिलाने से लाभ होता है।
2. विषम ज्वर में इसके 5 दाने, अजवायन 1 ग्राम और हरी गिलोय 10 ग्राम, सबको 1 पाव पानी में पीस, छानकर पिलाने से लाभ होता है। 300 मि०ग्रा० से 2 ग्राम तक मिर्च चूर्ण शहद के साथ दिन में 3 बार चाटने पर यह बादी से आने वाले बुखार को रोकता है और पेट के शूल को मिटाता है।

उदर्द रोग : मिर्च के चूर्ण को घी में मिलाकर मालिश करने से उदर्द रोग मिटता है।

शीत पित्त : 4–5 मिर्च घी के साथ खिलाने से तथा घी में मिलाकर मालिश करने से शीघ्र लाभ होता है।

फुंसी : फोड़े–फुंसियों पर काली मिर्च को जल में पीसकर लेप करना चाहिए। इससे घाव दूषित होने का भय भी नहीं रहता।

1. यदार्द्र मधुरं पाके नात्युष्णं कटुकं गुरु।
   किंचिततीक्ष्णगुणं श्लेष्मप्रसेकिस्यादपित्तलम्।। (भाव प्रकाश)
2. स्वादुपाक्यार्द्रमरिचं गरु श्लेष्मप्रसेकि च।
   कटुष्णंलघुतच्छुष्कमवृष्यं कफवातजित्।।
   नात्युष्णं नाति शीतं च वीर्यतो मरिचं सितम्।
   गुणवन्मरिचेभ्यः च चक्षुष्यं च विशेषतः। (सुश्रुत)
3. नात्यर्थमुष्णं मरिचमवृष्यं लघु रोचनम्। (चरक)
4. लिह्यान्मरिचं चूर्णं वा सघृतक्षौद्रशर्करम्।
   सर्वकासहरं श्रेष्ठं लेहं कासार्दितो नरः।। (चरक)
5. दहना निघृष्टं मरिच राज्यन्धाजनमुत्तमम्।
   ताम्बूलं युक्त खद्योत् भक्ष्णा च तदर्थ कृते।।
   (भैषज्य रत्नावली)
6. दग्ध चुल्ली मृत्तिका चूर्ण मरिच चूर्ण योग समांधम्।
   मिलितं कृत्वा नस्यम् इति योगमितम्।।

Scanned by CamScanner

84 मरूआ सब्जा

वैज्ञानिक नाम	:	*Origanum vulgare* L.
कुलनाम	:	Lamiaceae
अंग्रेजी नाम	:	Sweet marjoram
संस्कृत	:	मरूबक, खरपत्र
हिन्दी	:	मरूआ
गुजराती	:	मरबो
मराठी	:	सब्जा, मर्बा
तैलगु	:	मरूवमु
तमिल	:	मुर्रू
मलयालम	:	मरूवमु
फारसी	:	मरजनजोश
अरबी	:	मरजनजोश
पंजाबी	:	मरूआ

परिचय

मरूवे का मूल स्थान यूरोप, अफ्रीका तथा एशिया माइनर है, परन्तु आजकल भारतवर्ष में यह सब जगह पाया जाता है।

बाह्य–स्वरूप

इसका बहुशाखीय, सुगंधित बहुवर्षायु क्षुप 1–3 फुट ऊंचा, पत्र आयताकार, पर्णवृन्त दीर्घ एवं पुष्प अन्त्य गुच्छों में छोटे, श्वेत व बैंगनी, बीज छोटे, भूरे, अंडाकार होते हैं।

रासायनिक संघटन

इसमें एक उड़नशील तेल तथा एक स्थिर तेल पाया जाता है।

गुण–धर्म

यह हल्का, रूखा, तीक्ष्ण, कडुवा, चरपरा तथा गरम होता है। तथा कफवात–शामक और पित्तवर्धक है। यह कुष्ठघ्न कृमिघ्न, विषघ्न, वेदनास्थापन तथा दुर्गन्धिनाशक है। यह रोपन, दीपन, आर्तवजनन, हृदय–उत्तेजक, ज्वरघ्न तथा कटु, पौष्टिक है।[1,2,3]

मरूबा, कसौंदी, सिन्दुवार, भार्गी यह सब कफ को दूर करने वाले

Scanned by CamScanner

एवं कृमिनाशक है। प्रतिश्याय, अरूचि, श्वास, कासनाशक एवं व्रणनाशक है।[4]

औषधीय प्रयोग

शिर शूल : इसके ताजा पौधे से तैयार किया हुआ शीतनिर्यास मज्जा तंतुओं की खराबी से होने वाले मस्तक शूल को रोकता है।

क्षय : इसकी जड़ का रस 5 से 10 ग्राम तक सुबह–शाम सेवन करने से तपेदिक में लाभ होता है।

उदरशूल : उदरशूल में इसके पत्ते और बीजों का 4 ग्राम चूर्ण सुबह–शाम उष्णोदक के साथ देने से लाभ होता है।

अतिसार : तीव्र प्रवाहिका मे इसके तेल को पेट पर मलकर सिकाई करने से लाभ होता है।

विरेचन : विरेचन के लिए इसका 20–40 ग्राम फांट बनाकर देने से कब्जियत दूर हो जाती है।

मासिक धर्म : मासिक धर्म अगर बंद जो जाये तो इसका 20–30 ग्राम फांट बनाकर नियमित देने से रजः स्राव पुनः आरम्भ हो जाता है।

गठिया : इसके पंचाग का क्वाथ बनाकर 100 मि॰ली॰ दिन में तीन बार पीने से गठिया रोग में लाभ होता है।

मोच : इसमें पाये जाने वाले उड़नशील तेल की मालिश से मोच और रगड़ पर आश्चर्यजनक लाभ होता है।

वेदना शोथ : इस वनस्पति की टहनियों को पानी में उबालकर बफारा देने से वेदना युक्त सूजन और संधिवात में लाभ होता है।

बैंगनी मरुआ

सफेद मरुआ

1. मरूदग्निप्रदो हृद्यस्तीक्ष्णोष्णः पित्तलो लघुः।
   वृश्चिकादिविषश्लेष्मवातकुष्ठकृमिप्रणुत।।
   कटु पाकरसो रूच्यस्तिक्तो रूक्षः सुगन्धिकः। (भाव प्रकाश)
2. मरूवः कटु तिक्तोष्णः कृमि कुष्ठ विनाशनः।।
   विड्बन्धाध्मानशूलघ्नो मांद्यत्वग्दोषनाशनः।। (रा०नि०)
3. रुबकः कफहरो रूच्यो मुखसुगंधकृत्। (ध०नि०)
4. सुरसा श्वेत सुरसा फणिज्झकार्जक भूस्तृणसुगंधकुसुम।। (सुश्रुत)

Scanned by CamScanner

85 मेंहदी

वैज्ञानिक नाम	:	*Lawsonia inermis* L.
कुलनाम	:	Lythraceae
अंग्रेजी नाम	:	Henna
संस्कृत	:	रक्त, रंगा, राग, गर्भी, रंजिका, नखरंजनी, मदयन्तिका
हिन्दी	:	मेंहदी
गुजराती	:	मेंदी
मराठी	:	मेंदी
तैलगु	:	गोराता
तमिल	:	कुरंजी, विदाई
अरबी	:	हीना, अलहीना

परिचय

मेंहदी की पत्तियों का प्रयोग रंजक द्रव्य के रूप मे किया जाता है, तथा इसकी सदाबहार झाड़ियां बाड के रूप में लगाई जाती हैं। स्त्रियों के शृगांर प्रसाधनो मे विशिष्ट स्थान प्राप्त होने के कारण, मेंहदी बहुत लोकप्रिय है। मेंहदी की पत्तियों को सुखाकर बनाया हुआ महीन पाउडर बाजारों मे पंसारियो के यहां तथा अन्य विक्रेताओं के यहां आकर्षक पैक में बिकता है।

बाह्य–स्वरूप

यह एक प्रसिद्ध गुल्म जातीय पौधा है। पत्र 3/4– 1½ इंच लंबे, ह्रस्ववृन्त, भालाकार या अंडाकार, अभिमुख सनाय के सदृश होते है। पुष्प सुगन्धित, श्वेतवर्ण के शीर्षस्थ पिरामिड सदृश बड़ी मञ्जरियों में होते हैं। फल मटर के समान, गोलाकार होते है जिनके भीतर छोटे–छोटे पिरामिड की आकृति के, चिकने अनेक बीज होते हैं। अक्टूबर–नवम्बर में पुष्प और उसके बाद फल लगते हैं।

रासायनिक संघटन

मेंहदी की पत्तियों में टैनिन तथा वासोन नामक मुख्य रजंक द्रव्य पाये जाते हैं। इनके अतिरिक्त गैलिक एसिड, ग्लूकोज मैनिटोल, वसराल, म्यूसिलेज तथा एक क्षाराभ होता है। इससे एक गाढ़े भूरे रंग का सुगन्धित तेल भी प्राप्त किया जाता है।

गुण–धर्म

कफ पित्तशामक, कुष्ठघ्न, ज्वरघ्न, दाह, कामला रक्तातिसार, आदि का नाश करती है। इसका लेप वेदना–स्थापन, शोथहर, स्तम्भन, केश्य, वर्ण्य, दाह प्रशमन, कुष्ठघ्न व्रणशोधन और व्रण रोपण है।[1]

औषधीय प्रयोग

सिर दर्द :

1. गर्मी तथा पित्त की वजह से सिर में दर्द होता हो, तो मेंहदी के 25 ग्राम पत्तों को 50 ग्राम तेल में उबालकर इस तेल को सिर में लगाने से तथा 10 ग्राम फूलों का 100 ग्राम पानी में बनाया हुआ फांट पिलाने से लाभ होता है।
2. मेंहदी के 8–10 फूलों को सिरके तथा जल में पीसकर मस्तक

Scanned by CamScanner

और तलुए के स्थान पर लेप करने से पीड़ा शीघ्र शान्त हो जाती है।

3. साढ़े चार ग्राम मेंहदी के फूल पानी में पीसकर कपड़े से छान लें, इसमें 7 ग्राम शहद मिलाकर कुछ दिन पीने से गर्मी से उत्पन्न शिरोवेदना शीघ्र शान्त हो जाती है।

4. जिस व्यक्ति को गर्मी के कारण सिर में पीड़ा रहती हो, वह और सब तेलों को त्याग कर सिर में केवल मेंहदी का तेल लगाये।

सिर की जलन : मेंहदी के फूल चार ग्राम, कतीरा 3 ग्राम दोनों को रात्रि के समय पानी में भिगो दें और प्रातः मिश्री मिलाकर पिलावें, कुछ दिनों के सेवन से आराम हो जाता है।

सिरदर्द : मस्तिष्क के रोगों में मेंहदी के 3 ग्राम बीजों को शहद के साथ चाटने अथवा इसके फूलों का क्वाथ पिलाने से अच्छा लाभ होता है। दवा खाने के तुरन्त बाद ही गेहूं की रोटी खांड तथा घी मिलाकर खिलायें, इससे सिर का चकराना दूर होगा।

मुंह के छाले : 10 ग्राम मेंहदी पत्तो को 200 ग्राम पानी में भिगोकर रख दें, थोड़ी देर बाद छानकर इस सुनहरी पानी से गड़ूष करने से मुंह के छाले शीघ्र शान्त हो जाते हैं।

अनिद्रा : मेंहदी के सूखे फूलों को रूई के स्थान पर तकिये में भरकर जिन व्यक्तियों को नींद न आती हो उनके सिरहाने रख देने से उन्हें नींद अच्छी आ जाती है।

सौन्दर्य प्रसाधन : हरड का चूर्ण, नीम के पत्ते, आम की छाल, दाड़िम के पुष्पों की कली और मेंहदी, इनको सम मात्रा में मिलाकर कषाय छान करके उबटन करने से शारीरिक सौन्दर्य निखरता है एवं चर्म रोग मिटते हैं।

नकसीर : मेंहदी, जौ का आटा, धनियां, मुलतानी मिट्टी सबको समान मात्रा में लेकर बारीक पीस लें, और पानी मिलाकर लेप बना लें, मस्तक और ललाट पर लेप करें, और ऊपर से मलमल का कपड़ा पानी से तर करके रखते हैं। पावं के तलवों पर भी मेंहदी लगायें, कुछ दिन के प्रयोग से स्थायी लाभ होगा।

केश रंगने के लिये :

1. मेंहदी के पत्तों का चूर्ण और नील के पत्तों का चूर्ण समभाग लेकर, पीसकर सिर पर लगाने से सफेद बाल कृत्रिम रूप से काले हो जाते है।

2. मेंहदी, दही, नींबू, चाय की पत्ती, सबको मिलाकर 2–3 घंटे बालों में लगाने से फिर सिर धो लेने से बाल घने, मुलायम, काले और लम्बे हो जाते हैं।

नेत्रों की लाली :

1. मेंहदी 10 ग्राम तथा जीरा 10 ग्राम दोनों को दरदरा कूटकर रात्रि में गुलाब जल में भिगो दें और प्रातः छानकर स्वच्छ शीशी में रख लें और 1 ग्राम भूनी हुई फिटकरी बारीक पीसकर मिला लें और आवश्यकता के समय नेत्रों में डालने से आंखों की ललाई दूर होती है।

2. मेंहदी के हरे पत्तों को खरल में घोटकर टिकिया बना लें। रात्रि में टिकिया को आँख पर बांधकर सोने से नेत्रों की पीड़ा, टीस लालिमा दूर हो जायेगी।

कामला : मेंहदी के पत्ते 5 ग्राम लेकर रात्रि को मिट्टी के बरतन में भिगो दें और प्रातः काल इन पत्तियों को मसलकर तथा छानकर रोगी को पिला दें। एक सप्ताह के सेवन से पुराना पीलिया रोग में अत्यन्त लाभकारी है।

तिल्ली : मेंहदी की छाल बारीक पिसी हुई 30 ग्राम, नौसादर पीसा हुआ, 10 ग्राम दोनों को मिला लें, प्रातः सायं काल 3 ग्राम मेंहदी के पत्तों को गरम जल के साथ देने से दो सप्ताह में तिल्ली की सूजन जाती रहेगी।

नोट : मेंहदी की छाल कामला में भी बहुत लाभकारी है।

पथरी

1. मेंहदी की छाल 10 ग्राम रात को मिट्टी के बर्तन में उबालकर रखें। प्रातः काल उसको छानकर पिलाने से गुर्दे की पथरी गलकर निकल जाती है।

2. मेंहदी के पत्ते व लकड़ी 30 ग्राम को रात में एक गिलास पानी में भिगो दें तथा प्रातः काल पानी निहार लें। पहले जौ का क्षार (यवक्षार) 2 ग्राम लेकर ऊपर से उस पानी को पिलायें। कुछ

Scanned by CamScanner

दिनों के निरंतर प्रयोग से पथरी मूत्राशय द्वारा रेत बनकर निकल जाती है।

रक्त अतिसार : इसके बीज बारीक पीसकर, घी मिलाकर झाड़बेर जितनी गोलियां बना लें। इन गोलियों का प्रातः–सायं जल के साथ सेवन करें।

वीर्यस्राव : मेंहदी के 5–10 ग्राम पत्र स्वरस में थोड़ा जल और मिश्री मिलाकर वीर्यस्राव रूक जाता है।

सुजाक : 50 ग्राम मेंहदी के पत्तों को आधा किलो पानी में भिगोकर सुबह मसल कर छानकर तैयार किये गये हिम को 20–30 ग्राम की मात्रा में दिन में 3–4 बार पिलाये।

मूत्रकृच्छ : मेंहदी के 50 ग्राम हिम में कलमीशोरा 1 ग्राम मिलाकर प्रातः–सायं पिलायें।

घुटनों का दर्द : मेंहदी और एरंड के पत्तों को समभाग में पीसकर थोड़ा गरम करके घुटनों पर लेप करने से घुटनों की पीड़ा में लाभ होता है।

शान्ति व शक्ति : निर्बल मनुष्य को मेंहदी के फूल सुंघाने से और पीसकर ललाट पर लेप करने से शान्ति व शक्ति मिलती है।

कुष्ठ :

1. पत्रों तथा पुष्पों का रस दिन में दो बार आधा–आधा चम्मच देने से कुष्ठ रोग में लाभ होता है।
2. कुष्ठ और दूसरे असाध्य चर्म रोगों में इसकी छाल 100 ग्राम को 200 ग्राम पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ सुबह–शाम पीने से लाभ होता हैं।
3. मेंहदी के 75 ग्राम पत्तों को रात भर पानी में भिगोकर सवेरे मसलकर छानकर पीने से सभी प्रकार के कुष्ठ रोग में अवश्य लाभ होता है।

मूर्च्छा : गर्मी और सर्दी की मूर्च्छा को रोकने के लिये इसके पत्तों का रस 5 से 10 ग्राम दिन में 3–4 बार 250 ग्राम दूध के साथ देना चाहिये।

शीतला : शीतला में इसके पत्तों को पीसकर रोगी के पैर के तलुवे में लेप करने से आंखों पर शीतला का भार कम हो जाता है।

ज्वर दाह : मेंहदी के 10 ग्राम फूलों को 200 ग्राम पानी में उबालकर ठंडा करके बनाये गये फॉट का ज्वर के अन्दर दाह को शान्त करने, सिर दर्द को कम करने, हृदय को संरक्षण देने और नींद लाने के लिये प्रयोग करना चाहिये।

फोड़े फुन्सी : मेंहदी के पत्तों के क्वाथ से सब प्रकार के फोड़े फुन्सियों को धोने से बड़ा लाभ होता है।

अग्नि दग्ध : अग्नि से जले हुये स्थान पर इसकी छाल या पत्तों को पीस कर गाढ़ा लेप करने से शान्ति मिलती है।

1. मदयंती लघू रूक्षा कषाया तिक्तशीतला।
कफपित्तप्रशमनी कुष्ठघ्नी सा प्रकीर्तिता।।
निहन्ति ज्वरकण्डूतिदाहासृक्पित्तकामलाः।
रक्तातीसारहृद्रोगमूत्रकृच्छ्रभ्रमव्रणान्।। (द्रव्यगुण विज्ञान)

2. हरीतकीचूर्णमरिष्टपत्रं चूतत्वचं दाड़िमपुष्पवृन्तम्।
पत्रं च दद्यान्मदयन्तिकाया लेपोऽङ्गरागो नरदेवयोग्यः।। (सुश्रुत)

Scanned by CamScanner

लाल मिर्च

वैज्ञानिक नाम	: *Capsicum annuum* L.
कुलनाम	: Solanaceae
अंग्रेजी नाम	: Red chillies
संस्कृत	: लंका, कटुवीरा, रक्तमरिच, पित्तकारिणी
हिन्दी	: लाल मिर्च
गुजराती	: मरचाँ
मराठी	: मुलुक, मिरची लाल
बंगाली	: लंका, मारिच, गाछ मरिच
तैलगु	: मिर्चाकाया
अरबी	: फिलहिले अहमर
फारसी	: फिलहिले सुर्ख
उर्दू	: सुर्ख मिर्च

परिचय

लाल मिर्च अपने तीखे स्वभाव के कारण बहुत प्रसिद्ध है, यह कटुरस और लाला स्राव जनन द्रव्यों में प्रधान है। अपक्व अवस्था में इसके हरे फलों का उपयोग अचार और तरकारी बनाने में होता है, तथा पके और लाल फल, शुष्क अवस्था में मसाले के लिये उपयोग में लाये जाते हैं।

बाह्य–स्वरूप

यह वर्षायु 2–3 फुट ऊँचा क्षुप होता है, पत्र लम्बे, भालाकार, तीक्ष्णाग्र होते हैं, पुष्प श्वेत वर्ण, पत्तियों के अग्रभाग में एकाकी होते हैं। फल कच्ची अवस्था में हरे तथा पकने पर लाल, पीले अनेक वर्ण के होते हैं। बीज एक फल में अनेक छोटे और चपटे, बैंगन के बीज के सदृश होते हैं।

रासायनिक संघटन

मिर्च में एक स्फटिकीय कटु द्रव्य कैप्सेकिन के कारण इसमें कटुता और तीक्ष्णता होती है। इसमें प्रोटीन, वसा, कार्बोहाइड्रेट, सूक्ष्म खनिज पदार्थ, लौहा, फास्फोरस, कैल्शियम इत्यादि, विटामिन 'सी', कैरॉटिन

Scanned by CamScanner

इत्यादि होते हैं। इसके अतिरिक्त विटामिन ई, एल्युमीनियम, बेरियम, ताम्र, लिथियम, मैंगनीज, सिलिकन, टिटेनियम भी सूक्ष्म मात्रा में होते हैं। सूखे फलों से एक लाल भूरा स्थिर तेल तथा अल्पमात्रा से एक उड़नशील तेल प्राप्त होता है।

गुण-धर्म

यह कफ वात शामक, पित्तवर्धक, रक्त-उत्क्लेशक, वातहर, निद्राजनन, हृदय उत्तेजक, मूत्रल वाजीकरण, धातुनाशक, ज्वरघ्न, विशेषतः विषमज्वर प्रतिबन्धक है। तीक्ष्णता के कारण यह लाला स्रावजनन, दीपन पाचन और अनुलोमन है। अति मात्रा में यह विदाही है।[1]

औषधीय प्रयोग

स्वर भंग : शक्कर और बादाम के साथ थोड़ी सी लाल मिर्च की गोली बना के देने से गवैयों और व्याख्यान देने वालों का स्वर भंग मिटता है।

उदरशूल :

1. 100 ग्राम गुड़ में लपेट कर मिर्च के 1 ग्राम पाउडर की गोली बना के देने से उदरशूल मिटता है।
2. ½ ग्राम लाल मिर्च चूर्ण को 2 ग्राम शुंठी चूर्ण के साथ प्रयोग करने से अजीर्ण, उदरशूल और पेट का अफारा मिटता है।

अरूचि : पित्त प्रकोप के कारण जिसको भोजन के प्रति अरूचि उत्पन्न हो गई हो, भूख न लगती हो, उसको आवश्कतानुसार मिर्च के बीजों के तेल की 5–30 बूंद बतासे में भरकर या शक्कर के साथ खाने से भूख खुल जाती है।

विसूचिका :

1. लाल मिर्च के बीज अलगकर छिल्कों को महीन पीस कपड़छन कर थोड़ा कपूर और हींग मिला लें (हींग और कूपर के अभाव में केवल मिर्च ही ले लें) इन तीनों को शहद में घोटकर 2–2 रत्ती की गोलियां बना लें। वैसे ही निगलवा दें, डूबती हुई, बिल्कुल मंद पड़ी हुई नाड़ी फिर से चलने लगती है।
2. अफीम और भुनी हुई हींग की गोली देने के बाद, मिर्च का क्वाथ पिलायें।
3. हैजे में प्रत्येक उल्टी और दस्त के बाद, रोगी को 1/2 चम्मच मिर्च तेल पिलाने से 2–3 बार में ही विसूचिका के रोगी को आराम आ जाता है।
4. लाल मिर्चों को बारीक पीसकर, झड़बेर जैसी गोलियां बनाकर रख लें। हैजे के रोगी को 1–1 घन्टा के अन्तर से 1–1 गोली व लौंग सात नग देने से विसूचिका की प्रत्येक दशा में आराम हो जाता है।

प्रमेह : मिर्च बीजों के एक बूँद तेल को बतासे में रख, दूध की लस्सी के साथ खाने से प्रमेह में बहुत लाभ होता है।

मूत्रकृच्छ : ईसबगोल की 3 ग्राम भूसी पर इसके तेल की 5–10 बूंदे मिलाकर जल के साथ फंकी देने से पित्तज मूत्रकृच्छ मिटता है।

कब्ज रोग :

1. शूल, कटिशूल, पार्श्वशूल और गृध्रसी में इसके तेल की मालिश करने से अथवा जले हुये फलों का लेप लगाने से लाभ होता है।
2. डिप्थीरिया तथा कंठ शूलक में भी इसका लेप करते हैं।
3. इसके तेल को खाज खुजली, संधिशोथ, श्वान एवं ततैया के काटने के स्थान पर लगाने से आराम होता है।
4. इसके तेल की मालिश आमवात में भी लाभदायक है।
5. बुखार में यदि बच्चे को हवा लगकर पैरों में लकवे की आशंका हो तो मिर्च के महीन सूखे चूर्ण में तेल मिलाकर मालिश करने से लाभ हो जाता है।

श्वान दंष्ट : कुत्ते के काटे हुये स्थान पर मिर्चों को जल में पीसकर लेप करने से कुछ देर पश्चात विष बाहर निकल जाता है, वेदना शान्त होती है तथा घाव में पीब नहीं पड़ता।

मिर्च तेल : 125 ग्राम सूखी लाल मिर्चों को आधा किलो तिल तेल में पकायें, जब मिर्च काली पड़ जाये तो तेल छानकर शीशी में भर लें।

फोड़े, फुन्सी कंडू इत्यादि :

1. बरसात के मौसम में होने वाले फोड़े–फुन्सियों और खुजली इत्यादि इसके तेल के लेपन से फौरन ठीक हो जाते हैं।

Scanned by CamScanner

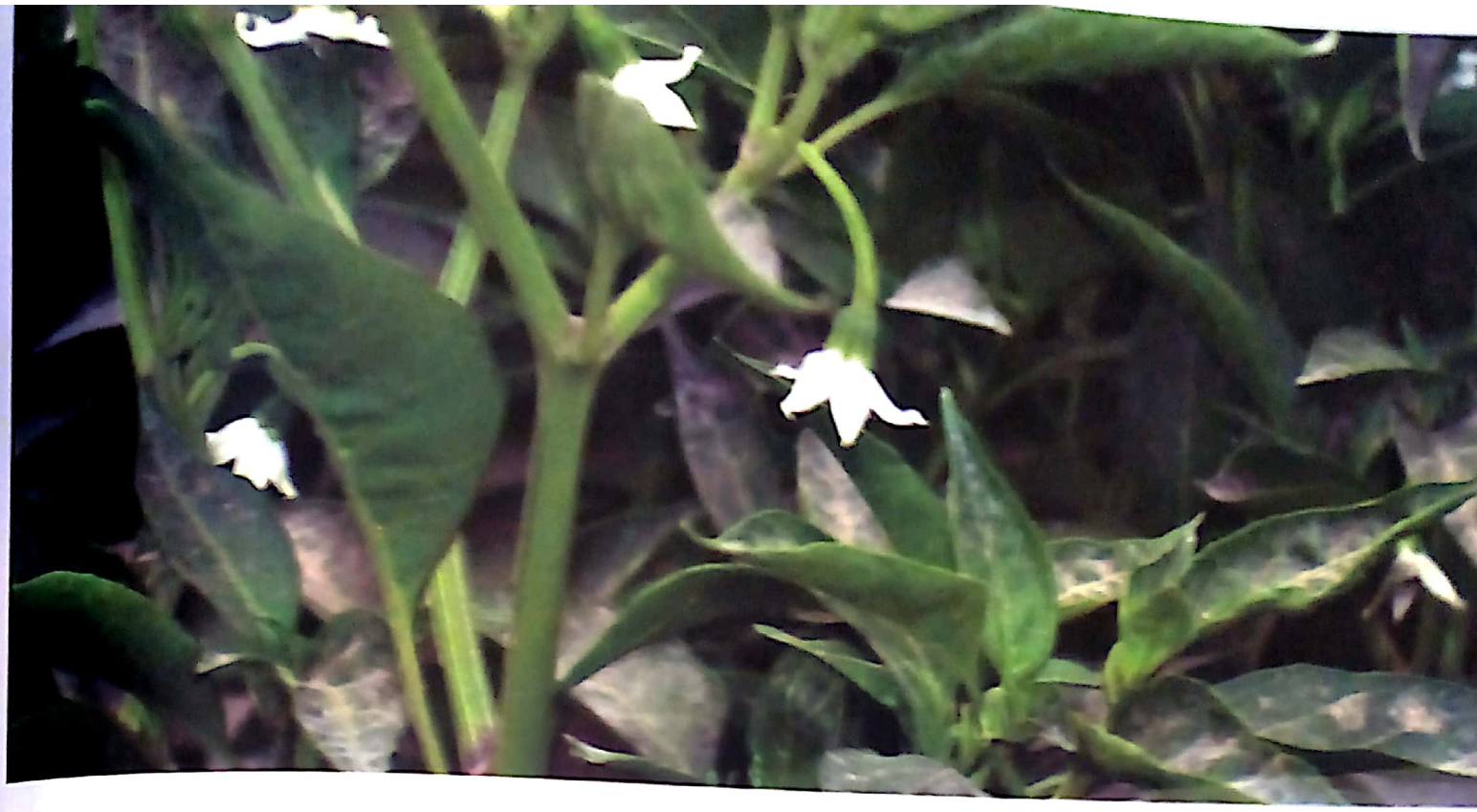

2. गर्मी के मौसम में शरीर पर जो फुन्सियां हो जाती है, उन पर इसके बीजों का तेल लगाने से शीघ्र आराम हो जाता है।

खटमल नाशन : लाल सूखी मिर्चों को जल में उबालकर, जल को उस स्थान पर जहां खटमलों का वास हो, छिड़कने से वहां पर दुबारा खटमल उत्पन्न नहीं होते।

मद्यज भ्रम : शराबियों के भ्रम में 1 ग्राम मिर्च का चूर्ण 20 ग्राम गुनगुने जल में दिन में 2 या 3 बार देने से शराब का नशा उतर कर भ्रम दूर हो जाता है। इस प्रयोग से सन्निपात में भी आराम होता है।[3]

सन्निपातिक ज्वर : 500 मिलीग्राम लाल मिर्च के बीजों के महीन चूर्ण को 1 छटाँक गरम पानी के साथ दिन में 2–3 बार देने से मद्यपान जनित सन्निपात में आश्चर्यजनक लाभ होता है।

गले के रोग : 1 लीटर पानी में 10 ग्राम पिसी हुई मिर्च (मिर्च ज्यादा तेज हो तो 5 ग्राम या आवश्यकतानुसार कम ज्यादा करें) डालकर क्वाथ या हिम फांट बना लें, इस पानी से कुल्ले करने से मुखपाक मिटता है, और गले के बिगडे हुये घाव, चाहे वे वहीं हुये हों या किसी दूसरे स्थान के सम्बन्ध से हुये हों मिट जाते हैं।

(मिर्च का अधिक सेवन पित्त प्रकृति वाले व्यक्तियों के लिये हानिकारक है।)

दर्पनाशक : दूध, घी इसके दर्पनाशक हैं।

1. लंका तीक्ष्णा कटूष्णाऽति लालास्त्रावकरी मता।
विदाहजननी पित्तकारिणी कफवातहृत्।। (द्रव्यगुण विज्ञान)

2. अरोचरेतः कफवातहारिणी विपाचनी, शोणितपित्तकारिणी।
मेदोऽक्षिनिद्रानलमान्द्यकारिणी विसूचिकां कृन्तति
पित्तकारिणी।। (सि०भै०म०)

3. नरं लुप्तधरं क्षीणं सन्निपातनिपीडितम्।
नष्टेन्द्रियगणं तीक्ष्णा मृत्योराकृष्य जीवयेत्।। (आ०वि०)

Scanned by CamScanner

87 मौलसिरी

वैज्ञानिक नाम	:	*Mimusops elengi* L.
कुलनाम	:	Sapotaceae
अंग्रेजी नाम	:	Bullet wood tree
संस्कृत	:	तिरपुष्प, मधुगन्ध
हिन्दी	:	मौलसिरी
गुजराती	:	बोलसरी
मराठी	:	बकुल
बंगाली	:	बकुल, गाद्य
तेलगु	:	पगादामानु, पामड़ा

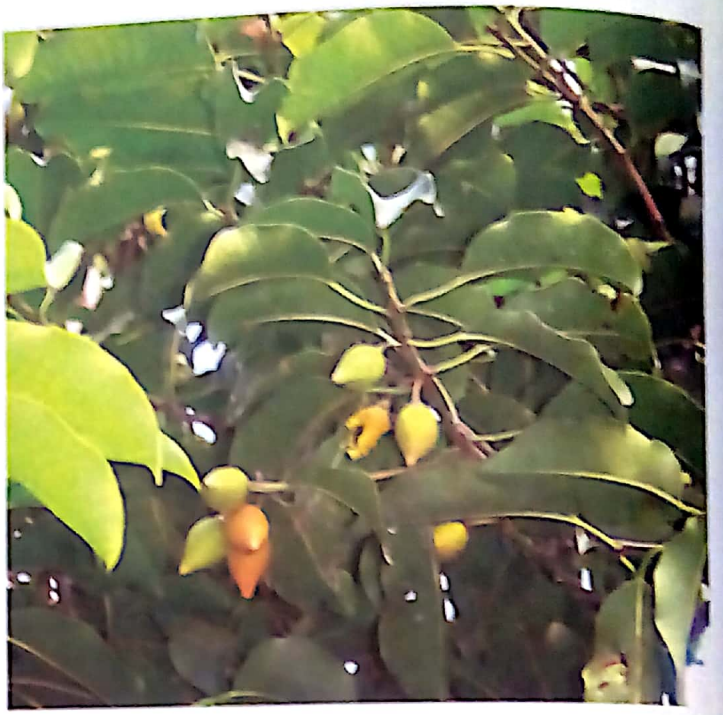

परिचय

चित्त को अति आनंद देने वाले मनोरम सुगंधित पुष्पों से युक्त बकुल के सदा हरित वृक्ष, सड़कों के किनारे, गृहवाटिकाओं में यहां वहां सर्वत्र लगाये हुए मिलते हैं। इसके फूल इतने सुगंधित होते हैं कि शुष्क होने पर भी उनमें सुगंध बनी रहती है।

बाह्य–स्वरूप

कांड छोटा, सीधा, बहुशाखीय। सघन पत्र 2–4 इंच लम्बे, अग्र पर सहसा नोकीले तथा वृन्त की ओर गोल व कम चौड़े जामुन सदृश होते हैं। पुष्प श्वेत वर्ण के दलचक्र में 24 पंखुडियां होती हैं, एकाकी या मंजरियों में निकलते हैं। फल एक इंच तक लम्बा अंडाकार, अपक्व अवस्था में हरा पकने पर नारंगी या पीले रंग का हो जाता है। प्रत्येक फल में अंडाकार, चपटा, चमकीले भूरे रंग का एक बीज होता है। ग्रीष्म से शरद ऋतु तक इसमें पुष्प लगते हैं और बाद में फल आते हैं।

रासायनिक संघटन

इसकी छाल में टैनिन, रंजक द्रव्य, मोमीय पदार्थ, स्टार्च एवं क्षार पाई जाती है। फूलों में एक उड़नशील तेल, बीजों में एक स्थिर तेल तथा फल मज्जा में शर्करा व सैपोनिन पाया जाता है।

गुण–धर्म

यह पित्त, कफ शामक, स्तम्भक, ग्राही, कृमिघ्न, गर्भाशय की शिथिलता, शोथ एवं योनिस्राव को दूर करता है। बस्ति एवं मूत्र मार्ग के स्राव और शोथ को कम करता है।[1] पुष्प हृद्य और मेध्य तथा सौमनस्य जनन होते हैं। फल तथा छाल पौष्टिक, रक्त स्तम्भक, ज्वरघ्न एवं विषघ्न तथा कुष्ठघ्न है तथा दांतों के लिए विशेष लाभकारी है।[1,2]

औषधीय प्रयोग

दंत रोग :

1. इसकी 50 ग्राम छाल को 500 ग्राम पानी में उबालकर 100 ग्राम शेष रहे काढ़े से कुल्ला करने से हिलते हुए दांत स्थिर हो जाते हैं।
2. इसके 1–2 फलों को नियमित रूप से चबाने से भी दांत मजबूत हो जाते हैं।
3. इसकी छाल के चूर्ण का मंजन करने से दांत वज्र की तरह मजबूत हो जाते हैं।
4. मौलसिरी की छाल के 100 ग्राम क्वाथ में 2 ग्राम पीपल, 10 ग्राम शहद और 5 ग्राम घी मिलाकर कुछ देर तक मुख में बार–बार चलाने से दांतों का दर्द दूर होता है।
5. मौलसिरी की दातौन करने से अथवा दांतों के नीचे रख कर चबाने से हिलते हुए दांत स्थिर व दृढ़ हो जाते हैं।
6. इसकी शाखाओं के अग्रिम कोमल भाग का क्वाथ दूध या जल के साथ मिलाकर प्रतिदिन पीने से वृद्धावस्था में भी दांत मजबूत हो जाते हैं।

शिरोरोग : इसके सूखे फूलों का महीन चूर्ण नस्य की तरह सुंघाने से शिरोवेदना उसी समय शांत हो जाती है।

Scanned by CamScanner

मुखरोग : बकुल, आंवला और कत्था इन तीनों वृक्षों की समभाग छाल के क्वाथ से दिन में दस–बीस बार कुल्ला करने से मुंह के छाले, मसूड़ों की सूजन और हर प्रकार के मुख रोगों में तत्काल आराम हो जाता है और दांत बहुत मजबूत हो जाते हैं।

हृदय : इसके फूलों के अर्क के 5–10 बूंद के सेवन से दिल की धड़कन दूर होती है, मस्तिष्क को बल मिलता है।

खांसी : 20–25 ग्राम ताजा फूलों को रात भर आधा किलो पानी में भिगोकर रखें प्रातःकाल 10–20 ग्राम की मात्रा में सुबह–शाम 3–6 दिन तक उस पानी को बच्चे को पिलाने से खांसी मिट जाती है।

कब्जियत : बच्चों का कब्ज दूर करने के लिए इसके बीजों की मींगी की बत्ती, पुराने घी के साथ बनाकर, बत्ती को गुदा में रखने से 15 मिनट में मल की कठोर गांठे दस्त के साथ निकल जाती हैं।

अतिसार :

1. बकुल के 8–10 बीजों को ठंडे पानी में पीसकर देने से अतिसार दूर होता है। पुराने अतिसार में इसके पके हुए फल के गूदे को 10–20 ग्राम प्रतिदिन सेवन करना चाहिए।
2. बीजों की मींगी के तेल की 20–40 बूंद की मात्रा, 2–3 दिन तक प्रयोग करने से आंव के दस्त बंद हो जाते हैं।

मूत्राशय के रोग :

1. मौलसिरी की छाल 5 ग्राम का क्वाथ बनाकर सुबह शाम कुछ दिनों तक पीने से मूत्र में रक्त का जाना बंद हो जाता है।
2. इसकी छाल के चूर्ण को 1–2 ग्राम की मात्रा में 1 चम्मच तक मधु के साथ दिन में 2–3 बार सेवन करने से योनिस्राव नष्ट हो जाता है। इस चूर्ण के सेवन से शुक्रप्रमेह, शुक्रतारल्यता और कटिशूल नष्ट होता है।

गर्भाशय शुद्धि :

1. जिन स्त्रियों के गर्भ न रहता हो उन स्त्रियों को इसकी छाल के 5–10 ग्राम चूर्ण या 10–20 ग्राम क्वाथ का सेवन कराने से कुछ ही दिनों में उनका गर्भाशय शुद्ध होकर वे गर्भ धारण के योग्य हो जाती हैं।
2. इसकी छाल के 5–10 ग्राम चूर्ण में समान भाग शक्कर मिलाकर खिलाने से गर्भाशय से पानी का बहना बंद हो जाता है।

व्रण : इसकी छाल के क्वाथ से दूषित व्रण और गहरे घावों को धोने से लाभ होता है।

1. बकुलस्तुवरोऽनुष्णः कटुपाकरसो गुरुः।
कफपित्तविषश्वित्रकृमिदन्तगदापहः।। (भाव प्रकाश)

2. तत्फलं मधुरं स्निग्धं कषायं मिश्रदं हिमम्।
कफपित्तहरं ह्रद्यं वल्यं ग्राहि च वातलम्।। (धन्वन्तरि)

Scanned by CamScanner

वैज्ञानिक नाम	:	*Raphanus sativus* L.
कुलनाम	:	Brassicaceae
अंग्रेजी नाम	:	Radish
संस्कृत	:	चाणक्यमूलक, भूमिकक्षार, दीर्घकन्द
हिन्दी	:	मूला, मूली
गुजराती	:	मूला
मराठी	:	मुड़ा
बंगाली	:	मूला
पंजाबी	:	मूली
अरबी	:	फजलहुज़ल

परिचय

मूली सम्पूर्ण भारतवर्ष में तरकारी के रुप में खाई जाती है। इसके बीज और जड़ से सफेद रंग का तेल निकाला जाता है।

बाह्य–स्वरूप

मूली का कन्द गाजर के समान परन्तु सफेद होता है। पत्ते नवीन सरसों के पत्तों के समान, फूल–सफेद सरसों के फूलों के आकार के और फल भी सरसों ही के समान किन्तु उससे कुछ मोटा और लगभग 1–2 इंच लम्बा होता है। बीज सरसों से बड़े होते हैं।

रासायनिक संघटन

इसके बीजों में उड़नशील तेल होता है। कन्द में आर्सेनिक 0.1 मिलीग्राम प्रति 100 ग्राम में रहता है। मूल तथा बीज में स्थिर तेल भी पाया जाता है।

Scanned by CamScanner

गुण–धर्म

दीपन, कृमिघ्न, वातहर अर्बुद अर्श और सब प्रकार की सूजन में मूली उपयोगी है। हृदय रोग, हिचकी, कुष्ठ, विसूचिका अैर नष्टार्तव में यह उपयोगी है। कच्ची मूली कटु, तिक्त, उष्ण, रूचिकारक, दीपन, हृद्य, तीक्ष्ण, पाचन, सारक, मधुर, ग्राही बल्य तथा मूत्रविकार, अर्श गुल्म, क्षय, श्वास, कास, नेत्र रोग, नाभिशूल, कफ, वात, पित्त और रुधिर के विकारों को दूर करती है। पुरानी मूली उष्ण वीर्य, शोथ, दाह, पित्त और रुधिर के विकारों को उत्पन्न करती है। पकी हुई मूली चरपरी, गरम और अग्निवर्धक है। मूली की फली किंचित गरम और कफ–वात नाशक होती है।

औषधीय प्रयोग

कंठशुद्धि : मूली के 5–10 ग्राम बीजों को पीसकर उष्ण जल के साथ दिन में 3–4 बार फंकी लेने से गला साफ होता है।

कर्णविकार :

1. मूली के पानी को तिल के तेल में जलाकर कान में 2–2 बूंद डालने से कर्णशूल मिटता है।
2. मूली का क्षार 3 ग्राम, शहद 20 ग्राम, दोनों को मिलाकर इसमें बत्ती भिगोकर कान में रखने से पूय आना बन्द हो जाता है।
3. मूली के पत्तों से 30 ग्राम तेल सिद्ध करके इसकी 2–4 बूदें कान में टपकाने से कान की पीड़ा मिटती है।

आंख का जाल : मूली का पानी, आंख का जाला व धुंध को दूर करता है।

श्वास : मूली का 500 मिलीग्राम से 2 ग्राम क्षार 1 चम्मच शहद में मिलाकर दिन में 3–4 बार चाटने से श्वांस रोग में आराम होता है।

हिचकी व श्वास : मूली का यूष पीयें। सूखी मूली का क्वाथ 50 से 100 ग्राम तक एक–एक घंटे पर पिलावें।

वातजकास : मूली का शाक खायें।

पाचन : मूली का प्रयोग भोजनोपरांत करना चाहिये, भोजन से पहले यह पाचन में भारी, और भोजन के बाद भोजन को पचाती है।

अम्लपित्त : कोमल मूली को मिश्री मिलाकर खायें अथवा पत्तों के 10–20 ग्राम रस में मिश्री मिलाकर नियमित प्रयोग करना चाहिए।

उदरशूल : मूली के 25 मिलीग्राम स्वरस में आवश्यकतानुसार नमक और तीन–चार काली मिर्च का चूर्ण डालकर 3–4 बार पिलाने से उदरशूल में लाभ होता है।

कामला :

1. मूली के ताजे पत्तों को जल के साथ पीसकर उबाल लें दूध की भांति झाग ऊपर आ जाता है। इसको छानकर दिन में तीन बार पीने से कामला रोग मिटता है।
2. मूली स्वरस पत्तों सहित निकालें, दिन में तीन बार 20–20 ग्राम पीने से पाण्डु रोग में लाभ होता है।
3. 70 ग्राम मूली स्वरस में 40 ग्राम शक्कर मिलाकर पीना लाभ करता है।
4. पत्र स्वरस 60 ग्राम व खाड़ 15 ग्राम मिलाकर पीयें।
5. मूली की सब्जी का सेवन करने से सभी पीलिया और कामला रोग मिटता है।

जलोदर : मूली का रस 60 ग्राम सुबह के वक्त लेना जलोदर रोग में लाभदायक है।

यकृत प्लीहा रोग : मूली की चार फांक करके चीनी के बरतन में छह ग्राम पिसा नौसादर छिड़क कर रात को ओस में रखकर सुबह जो पानी निकले उसको पीकर ऊपर से मूली की फांके खालें, सात दिन में रोग कट जाता है।

Scanned by CamScanner

मूली के बीज : एक ग्राम सुबह शाम खाने से जिगर तिल्ली के रोग कटते हैं।

रक्तार्श

1. मूली के कन्दों का ऊपर का सफेद मोटा छिलका उतारकर तथा पत्तो को अलग कर रस निकाले, इसमें छह ग्राम घी मिलाकर नित्य सुबह–सुबह सेवन करने से रक्तार्श दूर हो जाता है व रक्तार्श में लाभ होता है।
2. फिटकरी 10 ग्राम को मूली की शाखों का रस एक किलोग्राम में उबाले, गाढ़ा होने पर बेर के समान गोलियां बना लें। एक गोली मक्खन में लपेटकर निगलवा देवे। ऊपर से 125 ग्राम दही पिला दें, रक्तार्श पर उत्तम योग है।

मूत्रकृच्छ विकार :

1. मूत्रकृच्छ की खराबी से यदि पेशाब बनना बंद हो जाये तो मूली का 20–40 ग्राम रस दिन में दो–तीन बार पीने से फिर से बनने लगता है।
2. मूत्राघात रोग में मूली खाने से बंद पेशाब फिर से जारी हो जाता है।
3. मूली के पत्तो के 10–20 ग्राम रस में 1–2 ग्राम कलमी शोरा मिलाकर पिला देने से मूत्र साफ आ जाता है।
4. गुर्दे के दर्द में कलमी शोरा 10 ग्राम, 120 ग्राम मूली के रस में घोंटकर रस सुखा दें, गोलियां बनाकर 1–2 गोली दिन में दो बार सेवन करें।

पथरी :

1. मूली की शाखों का रस 100 ग्राम निकाल के दिन में 3 बार पीने से पथरी के टुकड़े हो जाते हैं।
2. मूली के पत्तों के 10 ग्राम रस में 3 ग्राम अजमोद मिलाकर दिन में तीन बार पीने से पथरी गल जाती है।
3. मूली में गड्ढा कर उसमें शलगम के बीज डालकर गुंथा हुआ आटा ऊपर लपेटकर अंगारों पर सेंक लें, जब भरता हो जाये या पक जाये तब निकाल कर आटे को अलग करके खा लें। इससे पथरी के टुकड़े–टुकड़े होकर निकल जाते हैं।
4. मूली के बीजों को 1 से 6 ग्राम तक दिन में तीन से चार बार लेने से मूत्राशय की पथरी गल जाती है।

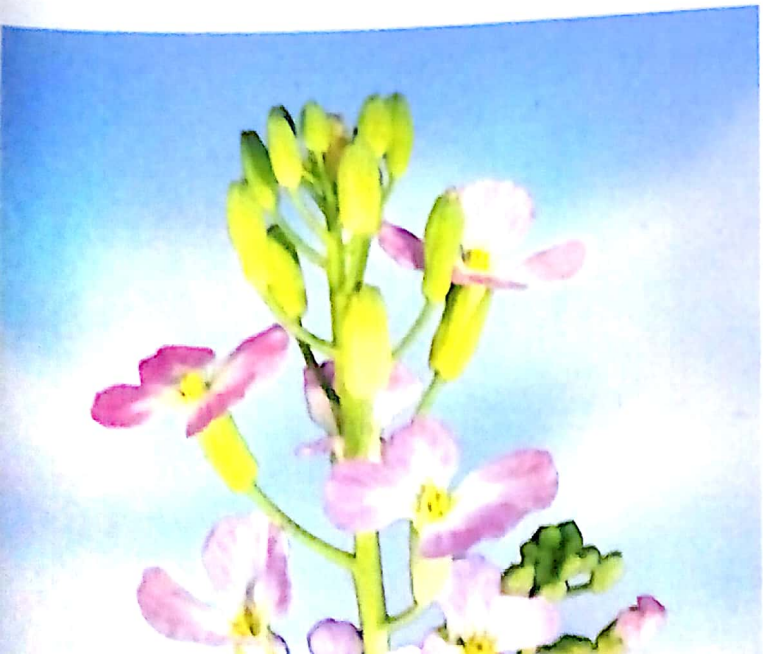

अतिसार : कोमल मूली के 40–60 ग्राम क्वाथ में 1–2 ग्राम पीपर का चूर्ण मिलाकर पिलावें।

इन्द्रिय शैथिल्य : मूली के बीजों को तेल में औटाकर उस तेल की कामेन्द्रिय पर मालिश करने से कामेन्द्रिय की शिथिलता दूर होकर उसमें उत्तेजना पैदा होती है।

मासिक धर्म : इसके बीजों के चूर्ण को 3 ग्राम की मात्रा में देने से मासिक धर्म की रूकावट मिटकर मासिक धर्म साफ होता है।

सुजाक : मूली की चार फांके करके उन पर भूनी फिटकरी का चूर्ण छह ग्राम छिडक कर रात्रि में ओस में रख देवें। सुबह वे फांके खाकर ऊपर से जो पानी निकला है, इसे पी लेवें। इससे सुजाक में लाभ होता है और पथरी गल जाती है।

बवासीर :

1. बवासीर और उदरशूल को दूर करने के लिये यह एक मशहूर औषधि है। बवासीर में इस की सब्जी बनाकर खाने से आराम मिलता हैं।
2. मूली का 20 ग्राम रस निकालकर उसमें 50 ग्राम गाय का घी मिलाकर सेवन करने से कुछ ही दिनों में बवासीर नष्ट हो जाता है।
3. मूली के पत्तों को छाया में सुखाकर, पीसकर समान मात्रा में शक्कर मिलाकर 40 दिन तक 25 से 50 ग्राम की मात्रा में सेवन करने से बवासीर में लाभ होता है।
4. सूखी मूली की पुल्टिस करके मस्से पर सेक करना चाहिए।
5. अर्श में सूखी मूली का 20–50 ग्राम यूष, पानी अथवा बकरी के मांस यूष में मिलाकर पियें।

सूजन :

1. 5 ग्राम तिलों के साथ मूली के एक से दो ग्राम बीजों का सेवन दिन में दो–तीन बार करने से सब प्रकार की सूजन मिट जाती है।
2. इसके ताजे पत्तों का रस मूत्रल और मृदु विरेचक होता है।

लकवा : मूली का 20–40 मिलीलीटर तेल लकवा रोग में दिन में तीन बार पीने से लाभ होता है।

ग्रन्थि विसर्प में : सूखी मूली की लुग्दी को कुछ गरम करके लेप करें।

सिध्म कुष्ठ : मूली के 10–20 ग्राम बीज बहेड़ा के पत्तों के रस में पीसकर लगाने से लाभ होता है।

दाद : मूली के बीजों को नींबू के रस में पीसकर लगाने से दाद में लाभ होता है।

Scanned by CamScanner

89 मुलेठी जेष्टमध

वैज्ञानिक नाम	:	*Glycyrrhiza glabra* L.
कुलनाम	:	Papilionaceae
अंग्रेजी नाम	:	Liquorice root
संस्कृत	:	मधुयष्टिका, यष्टीमधु, मधुक
हिन्दी	:	मुलेठी
गुजराती	:	जेठीमध,
बंगाली	:	यष्टिमधु
पंजाबी	:	मुलहटी
फारसी	:	बिखेमहक
अरबी	:	अस्लुस्सूस
तैलगु	:	यष्टिमधुकम्
मराठी	:	जेष्टिमध

परिचय

मुलेठी से सब परिचित हैं। भारतवर्ष में इसका उत्पादन कम ही होता है। यह अधिकांश रूप से विदेशों से आयातित की जाती है। मुलेठी की जड़ एवं सत् मुलेठी सर्वत्र बाजारों में पंसारियों के यहाँ मिलती है।

रासायनिक संघटन

मुलेठी में ग्लिसिराइजिन नामक मधुर सत्व तथा शर्करा, सुक्रोज एवं डेक्स्ट्रोज, स्टार्च, प्रोटीन, बसा रेजिन एवं ऐस्पेरिगिन आदि तत्व पाये जाते है।

गुण–धर्म

मुलेठी वात पित्तशामक, बाह्यलेप – वर्ण्य, कंडूघ्न, चर्मरोग नाशक, केश्य, शोथहर है। आंतरिक प्रयोग में वातानुलोमन, मृदुरेचन, शोणित स्थापन। मूत्रल, मूत्र विरंजनीय एवं मूत्रमार्ग स्नेहन। कफ निःस्सारक एवं कंठ्य। चक्षुष्य। शुक्रवर्धक, जीवनीय, रसायन एवं बल्य।' ज्वरघ्न, मुलेठी, नागरमोथा, हरड़ ये सब आम अतिसार

Scanned by CamScanner

नाशक एवं दोषों का पाचन करने वाले है।[2] मुलेठी, पाठा, वंशी कटेरी ये सब पित्त वायुनाशक, कफ अरूचि, हृदय रोग, मूत्रकृच्छ की पीड़ा को दूर करते है।[3] मुलेठी, गिलोय ये सब पित्त रक्त वायु के नाशक है, वृंहण, वृष्य हैं, दूध एवं कफ, केशवर्धक हैं।[4] मुलेठी, सारिवा, लालचन्दन, ये सब पित्त ज्वरनाशक तथा खासकर दाह को नष्ट करने वाले है।[5]

औषधीय प्रयोग

शिरोवेदना : किसी भी प्रकार की शिरोवेदना में मुलेठी का चूर्ण एक भाग, इसका चौथाई भाग कलिहारी का चूर्ण तथा थोडा सा सरसों का तेल मिलाकर नासिका में नसवार की तरह सूंघने से लाभ होता है।

नेत्र : मुलेठी के क्वाथ से नेत्रों को धोने से नेत्रों के रोग दूर होते है। इसकी जड के चूर्ण में बराबर मात्रा में सौंफ का चूर्ण मिलाकर एक चम्मच प्रातः–सायं खाने से आखों की जलन मिटती है तथा नेत्र ज्योति बढ़ती है।

नेत्राभिष्यन्दः मुलेठी को पानी में पीसकर, उसमें रुई का फोहा भिगोकर नेत्रों पर बांधने से नेत्रों की लालिमा मिटती है।

मुंह के छालेः मुलेठी की जड़ का टुकड़ा शहद लगाकर चूसते रहने से लाभ होता है।

स्वरभेदः स्वर भंग में मुलेठी को मुंह मे रखकर चूसने से लाभ होता है।

वर्ण्यः मुलेठी को पानी में पीसकर शरीर पर लेप करने से शरीर की रंगत निखरती है।

केश्यः

1. मुलेठी के क्वाथ से बाल धोने से बाल बढ़ते हैं।
2. मुलेठी एवं तिल को भैंस के दूध में पीसकर सिर पर लेप करने से बालों का झड़ना बन्द हो जाता है।

अपस्मारः मुलेठी के 1 चम्मच महीन चूर्ण को घी में मिलाकर दिन में 3 बार चटाने से लाभ होता है।

स्तन्यालपता : 2 चम्मच मुलेठी का चूर्ण और 3 चम्मच शतावर का चूर्ण एक कप दूध में उबालें, जब दूध आधा रह जाये तो आग पर से उतार लें। इसमें से आधा सुबह और आधा शाम को एक कप दूध के साथ सेवन करें। कुछ दिनों में ही दूध अधिक आने लगेगा।

तृषाः मुलेठी को चूसने से प्यास मिटती है।

हृदयरोगः मुलेठी तथा कुटकी का चूर्ण जल के साथ सेवन करने से लाभ होता हैं।

कासः खांसी में मुलेठी का टुकड़ा मुंह में रखकर चूसने से राहत मिलती है।

शुष्क कासः सूखी खांसी में कफ पैदा करने से लिये इसकी 1 चम्मच मात्रा को मधु के साथ दिन में 3 बार चटाना चाहिये। इसका 20–25 ग्राम क्वाथ प्रातः–सायं पीने से श्वास नलिका साफ हो जाती हैं।

अल्सरः उदर और आंत के घाव में इसकी जड़ का चूर्ण एक चम्मच की मात्रा में एक कप दूध के साथ दिन से 3 बार सेवन

Scanned by CamScanner

करते रहने से अल्सर कुछ ही हफ्तों में भर जायेगें। मिर्च मसालों से परहेज रखें।

उदरशूल : पेट और आंतों की ऐंठन व क्षोभ से उत्पन्न दर्द में जड़ का चूर्ण एक चम्मच की मात्रा में शहद के साथ दिन में 3 बार सेवन करें।

हिचकी : मुलेठी को चूसने से हिचकी दूर होती है।

रक्तपित्त जन्य वमन :

1. मुलेठी, नागरमोथा, इन्द्रजौ, मैनफल, समान भाग लेकर चूर्ण करें। इस चूर्ण के 1 चम्मच को 3–5 ग्राम मधु के साथ मिलाकर दिन में 3 से 4 बार सेवन करने से रक्तपित्त की वमन मिटती है।
2. 3–5 ग्राम मुलेठी का नियमित प्रातः–सायं प्रयोग करने से रक्तपित्त शान्त होता है, रक्त विकार और रक्ताल्पता मिटती है।

रक्तवमन :

1. रक्तवमन में मुलेठी तथा चन्दन को अच्छी तरह दूध में पीस कर 1–2 चम्मच की मात्रा में पिलाने से उल्टी में रूधिर आना बन्द हो जाता है।
2. एक चम्मच मुलेठी जड़ का चूर्ण शहद के साथ सुबह–शाम लेने से रक्त वमन में लाभ होता है।

उदराध्मान : 2–5 ग्राम मुलेठी चूर्ण जल और मिश्री के साथ सेवन करने से लाभ होता है।

मूत्रदाह : मुलेठी का चूर्ण एक चम्मच की मात्रा में एक कप दूध के साथ लें।

कामला : पाण्डु रोग में एक चम्मच मुलेठी चूर्ण मधु के साथ मिलाकर, या इसका क्वाथ पीने से लाभ होता है।

वातरक्त : वातरक्त में मुलेठी तथा गंभारी से सिद्ध किये हुये तेल की मालिश करने से लाभ होता है।

दौर्बल्य : एक चम्मच मुलेठी का चूर्ण आधा चम्मच शहद और एक चम्मच घी मिलाकर एक कप दूध के साथ सुबह शाम रोजाना 5–6 हफ्ते तक सेवन करने से बल बढ़ता है।

गर्भशोष : गर्भस्थ शिशु सूखता जा रहा हो तो ऐसी अवस्था में गंभारी फल, मुलेठी एवं मिश्री समभाग 15–20 ग्राम मात्रा को प्रातः–सायं दूध में उबालकर नियमित गर्भवती महिला को पिलाना चाहिये।

व्रण वेदना : शस्त्र के घाव के कारण उत्पन्न हुई तीव्र वेदना रोगी को कष्ट देती रहती है। यह वेदना मुलेठी के चूर्ण को घी में मिलाकर थोड़ा गरम करके लगाने से शीघ्र शान्त होती है।[2]

दाहः लाल चन्दन के साथ मुलेठी घिस के लगाने से दाह मिटती है।

फोड़ेः फोड़ों पर इसका लेप लगाने से वे जल्दी पककर फूट जाते है।

1. यष्टी हिमा गुरुः स्वाद्वी, चक्षुष्या बलवर्णकृत्।
सुस्निग्धा शुक्रला केश्या स्वर्या पित्तानिलास्रजित्।।
व्रणशोथविषच्छर्दि तृष्णाग्लानिक्षयापहा। (भाव प्रकाश)

2. या वेदना शस्त्रनिपातजाता तीव्रा शरीरं प्रदुनोतिजन्तोः।
घृतेन सा शान्तिमुपैति सिक्ता कोष्णेन यष्टीमधुकान्वितेन।।
(सुश्रुत)

Scanned by CamScanner

नागरमोथा

१०

वैज्ञानिक नाम	:	Cyperus rotundus L.
कुलनाम	:	Cyperaceae
अंग्रेजी नाम	:	Nut grass
संस्कृत	:	मुस्तक, चारिन, कचरुहा
हिन्दी	:	नागरमोथा
गुजराती	:	मोथ, नागरमोथ
बंगाली	:	मुथा, नाग्मुता
तमिल	:	मुथाकच, कोरइ
तेलगु	:	तुंगमुस्ते, नागरमुस्तेलु
द्राविडी	:	कोरककइंग
मराठी	:	मोथ
कन्नड	:	कोन्नारि
अरबी	:	सोअद् कूफी

परिचय

नागरमोथा समस्त भारत के जलीय तथा आर्द्र प्रदेशों में 6 हजार फुट की ऊँचाई तक होता है। यह अधिकांशत: नालों और नदियों के किनारे नमी वाली भूमि में पैदा होता है। पुष्प जुलाई में तथा फल दिसम्बर में लगते हैं।

वाहा–स्वरूप

इसकी बहुवर्षीय, तृणजातीय, छोटी सी झाड़ी 1–3 फुट तक ऊंची होती है। पत्र लम्बे पतले भूमिगत कांड से निकलते है। भूमिगत कांड में आधा इंच व्यास के अंडाकार सुगन्धित बाहर से पीत वर्ण के परन्तु अन्दर से श्वेत वर्ण के अनेक कन्द लगे रहते हैं।

रासायनिक संघटन

इसके कन्द में एक सुगन्धित तेल और एक सुस्वादु तेल होता है। इसके अलावा प्रोटीन स्टार्च और अन्य कार्बोहाइड्रेट भी होते हैं।

गुण–धर्म

नागरमोथा, चरपरा, शीतल, कड़ुआ, करौला, हल्का रूक्ष और

Scanned by CamScanner

कफ–पित्त–रूधिर विकार, तृषा, ज्वर, अरुचि तथा कृमिनाशक है।[1,2] इसका लेप शोथहर तथा स्तन्यजनन है। यह चर्मरोग नाशक, ज्वरघ्न, विषघ्न, बल्य, गर्भाशय संकोचक, स्तन्यशोधन और मूत्रल है। यह मेध्य और नाड़ियों के लिये बल्य है। मुस्ता संग्राहक तथा दीपन पाचन द्रव्यों में सर्वोत्तम माना गया है।[3]

औषधीय प्रयोग

मिर्गी : इसको उत्तर दिशा की तरफ से पुण्य नक्षत्र में अच्छे दिन में उखाड़ कर ऐक रंग की गाय के दूध से पिलाने से मिर्गी रोग में लाभ मिलता है।

स्त्री दूध शुद्धि : इसको जल में उबालकर पिलाने से स्त्रियों का दूध बढ़ता है और दूध शुद्ध होता है।

क्षयज : मोथा, पिप्पली, मुनक्का तथा बड़ी कटेरी के अच्छे पके फलों को बराबर–बराबर मात्रा में लेकर भली प्रकार घोटकर घी और मधु के साथ चाटने से क्षयकास शान्त होता है।[4]

तृषा : मोथा तृषानाशक है। जिस ज्वर में बार–बार प्यास लगती है उसमें नागरमोथा, पित्तापापड़ा, उशीर (खस), लाल चन्दन, सुगन्ध वाला सौंठ इन द्रव्यों को डालकर क्वाथ किये जल को शीतल करके रोगी को प्यास तथा ज्वर की शान्ति के लिये पिलाना चाहिये।[6]

अग्निवर्धक : इसकी जड़ अग्निवर्धक और हृदय के लिए हितकारी है।

उदर कृमि : इसकी चूर्ण की अधिक मात्रा लगभग 10–20 ग्राम देने से पेट के कीड़े मरते हैं।

आम पाचन : नागरमोथा, सौंठ, अतीस इनका क्वाथ आम का पाचन करता है, अथवा नागरमोथा, अतीस, हरड़ चूर्ण अथवा सौंठ का चूर्ण गर्म पानी के साथ सेवन करने से आम का पाचन होता है।[10]

अरूचि ज्वर : नागरमोथा 10 ग्राम तथा पित्तापापड़ा 10 ग्राम दोनों का क्वाथ बनाकर प्रातः–सायं भोजन से 1 घण्टा पहले पीने से ज्वर का नाश होता है। अग्नि प्रदीप्त होती है। तृषा तथा भोजन के प्रति अरूचि का नाश होता है।[6]

वमन : नागरमोथा, इन्द्रजौ, मैनफल तथा मुलेठी इन सब को समान मात्रा में लेकर कूट पीसकर कपड़छन करने के बाद चूर्ण में मधु मिलाकर सेवन करने से वमन होता है।[7]

दस्त आंव : नागरमोथा के 1 भाग में 3 भाग पानी डालकर पकायें, जब केवल दूध मात्र शेष रह जाये तो इस दूध के 200 मि.ली. सुबह, दोपहर तथा शाम को सेवन से आंव के दस्त बंद होते हैं।

अतिसार : संकोचक होने के कारण इसकी जड़ का प्रयोग प्रवाहिका तथा अतिसार में लाभदायक है।[11]

हलीमक : हलीमक को नष्ट करने के लिये नागरमोथा चूर्ण 3–6 ग्राम में 125 मिलीग्राम लौह भस्म मिश्रित कर फंकी लेवे, ऊपर से खैर सार का काढ़ा पीना चाहिये।

मासिक धर्म : नागरमोथा को पीसकर गुड़ मिलाकर गोलियां बनाकर खाने से स्त्रियों का मासिक धर्म ठीक होने लगता है।

सुजाक : मूत्रल होने के कारण सुजाक के रोग में इसका क्वाथ लाभदायक होता है।

उपदंश : उसवे के साथ इसको जोश देकर पीने से उपदंश में लाभ होता है।

प्रमेह : नागरमोथा, दारूहल्दी, देवदारू, त्रिफला इन चारों पदार्थों को समान मात्रा में लेकर इनका क्वाथ बनाकर प्रमेह के रोगी प्रातः–सायं देना चाहिए।[9]

वातरक्त : नागरमोथा, हल्दी, आंवला इन तीनों का क्वाथ बनाकर शीतल होने पर मधु मिश्रित कर सेवन करने से वात रक्त रोग से मुक्ति प्राप्त होती है।

रक्तपित्त : नागरमोथा, सिंघाड़ा, धान का लावा, खजूर, कमल, केशर को समान भाग लेकर 3 ग्राम चूर्ण की मात्रा को मधु के साथ रक्त पित्त के रोगी को दिन में तीन से चार बार चटाने से लाभ होता है।[8]

ज्वर :

1. नागरमोथा और गिलोय का क्वाथ पिलाने से ज्वर छूट जाता है।
2. नागरमोथा और पित्तपापड़े का क्वाथ या फांट 20–40 ग्राम की मात्रा में पिलाने से शीत ज्वर छूटता है और पाचक शक्ति बढ़ती है।
3. नागरमोथा, सौंठ तथा चिरायता 10–10 ग्राम लेकर क्वाथ बना लेना चाहिये। यह क्वाथ कफ, वात, आम तथा ज्वर को नष्ट करता है। तथा पाचन क्रिया को बढ़ाता है।

पिड़िका : नागरमोथा, मुलेठी, कैथ की पत्ती, लाल चंदन को समान भाग लेकर पीस कर लेप लगाने से पिड़िकाएं शांत हो जाती है।

जोंक : नागरमोथा के कन्द को मुंह में रखने से अगर कंठ में जोंक चिपक गई हो तो निकल जाती है।

व्रण : फैलने वाले व्रणों पर इसके चूर्ण को लगाने से व्रण फैलते नहीं। इसकी ताजी जड़ को घिसकर गाय का घी मिलाकर घाव पर लगाने से घाव ठीक हो जाता है।

स्वेदजनन : इसकी मूल और कंद दोनों के क्वाथ के सेवन से पसीना एवं मूत्र आता है तथा मुख से लार गिरना बंद हो जाता है।

अन्य रोग :

1. वायबिडंग, नागरमोथा, ये दोनों 75–75 ग्राम लेकर चूर्ण बना लें, इसमें दुगनी मात्रा में मंडूर लेकर आठ गुने गोमूत्र में पकाएं, जब रस गाढ़ा हो जाये तो 2 चम्मच की मात्रा मट्ठे के साथ सुबह–शाम खाने से पांडुरोग, मंदाग्नि, अरूचि, बवासीर, संग्रहणी, कृमि, प्लीहा, उदर रोग, गलरोग, सब मिट जाते हैं।
2. शुंठी, काली मिर्च, पीपल, हरड़, बेहड़ा, आमला, नागरमोथा

Scanned by CamScanner

बायविडंग, चंदन, चित्रक, दारूहल्दी, सोना माखी, पीपलामूल, देवदारू, सभी की 50–50 ग्राम मात्रा लेकर इनका अलग–अलग महीन चूर्ण करें, इन सबके बराबर दुगनी मात्रा में महीन शुद्ध मंडूर लेकर पहले मंडूर को आठ गुने गोमूत्र में पकाकर फिर सब औषधियां डालकर गूलर के फल जितनी गोलियां बनायें, रोगानुसार योग्य मात्रा में रोगी को दें व डकार बंद हो जाने पर पथ्य देना चाहिए। यह मंडूरवटी पांडुरोगी को प्राण देने वाली है। कुष्ठ, अजीर्ण, शोथ, स्तंभ, कफ के तमाम रोग, बवासीर, कामला, मेद और प्लीहा का भी नाश करती है।[12]

3. अदरक और नागरमोथा को पीसकर मधु के साथ 250 मिलीग्राम चटाने से आम अतिसार मिटता है।

4. ताजे नागरमोथा को पीसकर स्त्री के स्तनों पर लेप करने से स्तन्य दुग्ध में वृद्धि होती है।

5. तक्र के साथ नागरमोथा के चूर्ण की फंकी देने से मूत्रवृद्धि होती है।

स्वानुभूत प्रयोग : राजस्थान में भरतपुर जिला में बयाना एक जगह है, वहां हम लोग एक योग शिविर में गये हुए थे वहां पता चला कि यहां एक व्यक्ति घुटने के दर्द का कैप्सूल देता है और उससे रोगी ठीक हो जाता है। उनसे सम्पर्क किया तो पता चला कि वह केवल नागरमोथा मूल कैप्सूल में भर कर देते थे। हमने जब यहां रोगियों पर यह प्रयोग किया तो पाया कि उससे तुरन्त आराम मिलता है।

1. मुस्तं हिमं कटु ग्राहि तिक्तं दीपनपाचनम्।
कषायं कफपित्तास्रतृड्ज्वरारूचिजन्तुहित्।। (भाव प्रकाश)

2. मुस्ता तिक्तकषायातिशिशिरा श्लेष्मरक्तजित्।
पित्त ज्वरातिसारघ्नी तृष्णाकृमिविनाशिनी।। (ध०नि०)

3. मुस्ता संग्राहकदीपनीयपाचनीयानाम्। (चरक)

4. क्वाथश्च मुस्तककृतः समधुः सुशीतः पीतः
प्रवृद्ध– मतिसारगदं निहन्ति।। (वंगसेन)

5. श्वेत वर्षाभुवो मूलं वरूणकस्य च।
जलेन क्वथितं पीतमपक्वं विद्रधिं जयेत्।। (भैषज्य रत्नावली)

6. मुस्तपर्पटकोशीरचंदनोदीच्यनागरैः।
शृतशीतं जल दद्यात् पिपसाज्वर शांतये।। (चरक)

7. सनागरं पर्यटकं पिबेद् वा सदुरालभम्।। (चरक)

8. शृंगार काना लाजानां मुस्तखर्जूरयोरपि।
लित्थाच्चूर्णानि मधुनां पद्यानां केसरस्य च।। (चरक)

9. दार्वी सुराह्वां त्रिफलां समुस्तां कषाय मुत्क्वाथ्य पिवेत प्रमेहि।
क्षौद्रेण युक्तामथवा हरिद्रां पिवेद् रसेनामलकी फलानाम्।। (चरक)

10. नागराति विषा मुस्त क्वाथः स्यादाम् पाचनः।
मुस्तात कटकः पथ्या वा नागरचोष्णा–वारिणा।। (चरक)

11. बिडंग मुस्त युक्ता च भागा स्त्रिपल सिम्मिता।।
दावंत्येतानि चूर्णानि भंडूरं द्विगुणां तत।
पक्वा चाष्ट गुणों मूत्रे धनीक्षृते तद्धुरेत।
ततो उक्ष मात्रान् बटकान् पिबेत्त केन तत्रश्रुक्र।
पांडुरोग जयत्युग्न मंदाग्नित्वमरोचकम।।
अशीर्स ग्रहणी दोषान् उरूस्तंभ मथापिबा।
कृमिप्लीहान मुदरं गल रोग च नाशयेत।
मंडूर बज्रनामोऽयं रोगानीक प्रणाशनः।।

12. त्रयूषणां त्रिफला मुस्तं बिडंगं चव्य चित्रकम्
दार्वीत्वक माक्षिको धातु ग्रंथिकं देवदारू चं।।
एषां द्विपालिकाना भागान चूर्ण कृत्वा पृथक–पृथक।
मंडूर द्विगुणां चूर्णात शुद्धभजन सन्निमम् ।।
मूत्रे चाष्ट गुणों पक्वा तस्मिंतु, प्रक्षिपेत्तत।।
उडुंम्बरसमा कुर्य्या हटकास्तां यथाग्नि तु।।
उपयुंजीव तक्रेणा सात्मे जीर्णो तु भोजनं
मंडूर बाटका होते प्रशादा पांडुरोगिणाम्।।
कुष्ठान्य जीर्णकं शोथ मुरूस्तंम्य कफामयान्
अर्शीसि कामलां भेदं प्लीहान शमयंति च।।
(भैषज्य रत्नावली)

Scanned by CamScanner

91 नीम

वैज्ञानिक नाम	:	*Azadirachta indica* (L.) A. Juss.
कुलनाम	:	Meliaceae
अंग्रेजी नाम	:	Margosa tree
संस्कृत	:	निम्ब, अरिष्ट
हिन्दी	:	नीम
गुजराती	:	लीमड़ो
मराठी	:	कडूनिंब
पंजाबी	:	नीम
फारसी	:	आज़ाद–दरख्ते–हिन्दी
अरबी	:	आज़ाद–दरख्तुल–हिन्द

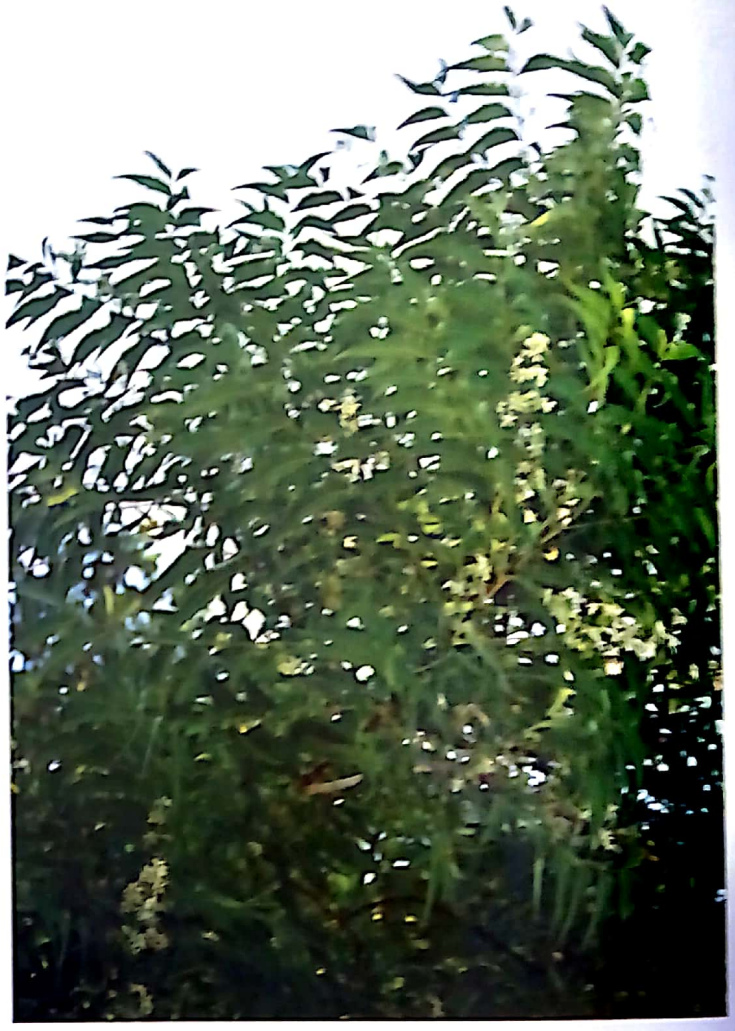

परिचय

शास्त्र कहता है कि रात्रि में वृक्ष के नीचे शयन करना रोग को आमंत्रण देना है, परन्तु यह उक्ति नीम पर चरितार्थ नहीं होती, क्योंकि रात्रि में अन्य वृक्ष कार्बन डाईआक्साइड गैस बाहर छोड़ते हैं, परन्तु नीम का वृक्ष प्राणदायक, आरोग्यता वर्धक, रोगनाशक वायु का ही उत्सर्जन करता है। अरिष्ट (न रिष्ट शुभम् स्यात्) अर्थात जिससे शरीर को कोई हानि न हो, जो स्वास्थ्यवर्धक, एवं आरोग्यता प्रदान करने वाला है, ऐसा वृक्ष नीम का है। निम्वति सिंचति स्वास्थ्य इति निम्बम्। वास्तव में नीम मृत्युलोक का कल्पवृक्ष कहा जाता है। यह सब प्रकार की व्याधियों को हरने वाला है। सर्वरोग हरो निम्ब– ऐसा इसके विषय में शास्त्रों में कहा गया है। वैद्यक ग्रन्थों में बसन्त ऋतु (विशेषतः चैत्र मास) में नीम के कोमल पत्तों के सेवन की विशेष प्रंशसा की गई है। इससे रक्त शुद्ध होता है तथा चेचक आदि भयंकर व्याधियाँ नहीं होने पाती।

कहा है जो मेष के सूर्य में नीम पत्र साग के साथ मसूर की दाल खाता है, उसे 1 वर्ष तक विष से कोई भय नहीं रहता तथा विषैले जन्तु के काटने पर भी कोई बाधा नहीं होती है। नीम पत्र का क्वाथ व्रणो के प्रक्षालनार्थ कार्बोलिक साबुन से भी अधिक उपयोगी है। कुष्ठ आदि चर्म विकारों पर भी नीम बहुत लाभदायक है। चरक ने चन्दन, जटामाँसी, अमलतास आदि 10 कंडूघ्न औषधियों में नीम की गणना की है। नीम चर्मरोग नाशक होने के साथ–साथ अनेक घातक जीवाणुओं जैसे ई० कोलाई, सालमोनेला टाइफी, स्टैफीलोकोकस, एलवस एवं एरियल आदि कीटाणुओं को नष्ट करता हैं। शोधों से ज्ञात हुआ है कि नीम लगभग 200 कीटों की जातियों की लिये घातक है। यह एक प्रचंड जीवाणुनाशी है, इसके रोम–रोम मे रक्तशोधक गुण भरे पड़े है। नीम का तेल क्षय रोग को जन्म देने वाले जीवाणु की तीन जातियों का नाश करता पाया गया है। नीम की पत्तियों के गाढ़े लेप से शीघ्र बढ़ने वाली कोशिकाओं की वृद्धि दर कम हो जाती है। अगर इस पर शोध किये जाये तो कैंसर–रोधी कोई दवा खोजी जा सकती है। नीम का तेल शुक्राणुओं को मारने में समर्थ होता है एवं मादा हारमोन्स की क्रिया में व्यवधान डालकर संतानोत्पत्ति को रोकता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के एक कार्य दल ने नीम को प्रजनन विरोधी पौधो की सूची में रखा है।

बाह्य–स्वरूप

नीम के 25–30 फुट की ऊंचाई के सदाबहार वृक्ष होते हैं। कांड त्वक खुरदरी भूरे रंग की, पत्तियां चमकदार हरे रंग की, एवं प्रत्येक सींक पर नव पर्णक थोड़ा मुड़े हुये उपर से चमकदार नीचे से खुरदरे होते है। पुष्पागम मार्च से मई तक, पुष्प श्वेत छोटे व विशिष्ट गंध युक्त, फल छोटे अंडाकार हरित पीले रंग के, बीज केवल एक होता है जो बादामी रंग के गूदे में धँसा रहता है।

Scanned by CamScanner

रासायनिक संघटन

नीम की छाल से निम्बीन, निम्बोनीन, निम्बीडीन, एक उड़नशील तेल, टैनिन और नार्बोसेन नामक एक तिक्त घटक होता है। नीम से एक और रासायनिक तत्व प्राप्त होता है जिसे लिमोनायड कहते हैं वैज्ञानिकों ने नीम के विभिन्न हिस्सों से भिन्न-भिन्न प्रकार के लिमोनायड प्राप्त किये हैं, जिनके गुण व कार्यशैली भिन्न-भिन्न होती है। यही कारण है कि लगभग 200 कीट जातियों पर नीम का असर होता है।

नीम का तेल :

नीम के बीजों से 45 प्रतिशत तक एक स्थिर तेल प्राप्त होता है इसमें पामेटिक, ओलिक, स्टेरिक, लिनोलिक व आरकेडिक अम्ल पाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त गन्धक, एक क्षाराभ, राल, ग्लूकोसाइड तथा वसा अम्ल होते है। निम्ब नीरा में स्वतंत्र एमिनो एसिड होते है। नीम के सार भाग में टैनिक, कैल्शियम, पोटेशियम तथा लौह लवण पाये जाते है। नीमकी ताड़ी नीम के कुछ पुराने वृक्षों से तब वे उत्तेजना पर आते हैं, तब उनमें से एक प्रकार का मद या ताड़ी झरने लगती है, कई वृक्षों से यह मद वर्ष भर तक झरता है। जिस समय यह मद झरता है उस समय नीम का वृक्ष एक प्रकार की मधुर आवाज निकालता है। इसी मद को नीम की ताड़ी कहते है। यह स्वाद में मधुर, पिच्छिल, कटु व अप्रिय ग्रन्थी होता है। नीम का यह मद दुर्लभ औषधि है। यह रक्तशोधक है, तथा चर्मरोगों में बहुत उपयोगी है।

नीम का गोंद : नीम की छाल से पारदर्शी हल्के पीले रंग का गोद प्राप्त होता है।

गुण-धर्म

राजनिघंटुकार ने नीम को शीतल और रूक्ष लिखा है, उनके विचार में यह कफघ्न, व्रणरोपण, छर्दि निग्रहण और शोथहर है। नाना प्रकार के पित्त के उपद्रवों को जीतता है, हृदय की दाह को शान्त करता है, परन्तु सुश्रुत ने नीम को उष्ण, रूक्ष और कटुविपाकी लिखा है। जिससे मालूम होता है कि नीम चाहे तात्कालिक परिणाम से शीतल हो, परन्तु अन्तिम परिणाम में उष्ण ही है। इसलिये हो सकता है नीम अनुष्ण हो।

1. नीम पत्र – चक्षुष्य, विपाक में कटु, कृमिघ्न, कुष्ठघ्न और पित्त, अरूचि तथा विष विकार को दूर करते हैं।
2. नीम की कोपल – नीम के कोमल पत्ते संकोचक, वातकारक तथा रक्तपित्त, नेत्र रोग और कुष्ठ को नष्ट करने वाले है।
3. नीम की सीक – रक्त, खांसी, श्वास, बवासीर, गुल्म, कृमि और प्रमेह को दूर करने वाले है।
4. नीम के फूल – पित्तनाशक, कड़वे तथा कृमि और कफ को नष्ट करने वाले है।
5. कच्ची निबौरी – कटुरस, विपाक में तिक्त, स्निग्ध, लघु, उष्ण तथा गुल्म, कृमि और प्रमेह को दूर करने वाली है।
6. पक्की निबौरी – मधुर, कटु, स्निग्ध तथा रक्त पित्त, नेत्र रोग, उरःक्षत तथा क्षय रोगों को नष्ट करने वाली है।
7. नीम की छाल – स्वाद में कटु, संकोचक कफघ्न, अरूचि, वमन, ग्रहणी, कृमि तथा यकृत विकारों में लाभदायक है।
8. नीम का पंचाग– रूधिर विकार, खुजली, व्रण, दाह और कुष्ठघ्न है।
9. नीम का बीज – रेचक और कृमिघ्न है। पुरानी गठिया, पुराने जहर और खुजली पर इसका लेप करने से लाभ होता है।
10. नीम का तेल चर्म रोग नाशक है।

औषधीय प्रयोग

रक्तार्बुद : नीम की लकड़ी को पानी में घिसकर एक इंच मोटा लेप करने से रक्तार्बुद मिट जाती है।

नकसीर : नीम की पत्तियों और अजवायन दोनों को समभाग पीसकर कनपटियों पर लेप करने से नकसीर बन्द हो जाती है।

नीम और केशों की समस्याएं :

1. पलितरोग (बालों का असमय श्वेत होना) – नीम बीजों को भांगरा के स्वरस की तथा असना वृक्ष की छाल के क्वाथ की अनेक भावना देकर उनका तेल निकालकर विधिवत 2–2 बूँद नस्य लेने और केवल दूध भात पर रहने से पलित रोग समूल नष्ट होता है।
2. बीजों के साधारण तेल का विधिपूर्वक 2–2 बूँद नस्य लेने और केवल गाय के दूध का सेवन करने से यह रोग नष्ट हो जाता है।
3. बाल काले करने हेतु – नीम के बीजों को भागंरा और विजय सार के रस की कई भावनायें देकर बीजों का तेल निकलवाकर 2–2 बूँद नस्य लेने से तथा आहार में केवल दूध भात का प्रयोग करने से सफेद बाल काले हो जाते है।
4. गंजापन तथा केश वृद्धि के लिये – नीम पत्र 1 भाग, बेर पत्र 1 भाग दोनों को अच्छी तरह पीसकर इसका उबटन या लेप सिर पर लगाकर 1–2 घंटे बाद धो डालें, एक महीने में नये बाल उग आयेंगे।
5. नीम पत्रों को पानी में खूब उबालकर ठंडा हो जाने पर इसी पानी से सिर को धोते रहने से केश सुदृढ़ होते है, उनका गिरना या झड़ना रूक जाता है। तथा वे काले भी होने लगते हैं। इसके अतिरिक्त सिर के कई रोग फुन्सियां आदि निकलना बन्द हो जाता है।

सिर की खुजली : सिर पर छोटी-छोटी फुन्सियां हों, उनसे पूय निकलता हो या केवल खुजली चलती हो ऐसे अरूंषिका तथा क्षुद्र

Scanned by CamScanner

रोग में सिर को नीम के क्वाथ से धोकर नीम तेल नित्य लगाते रहने से शीघ्र लाभ होता है। बीजों को पीसकर लगाने से या नीम के पत्तों के क्वाथ से सिर धोने से सिर की जुँए और लीखें मर जाती हैं।

युवानपिडिका :

1. नीम पत्र, अनार का छिलका, लोध्र, हरड़ समभाग लेकर दूध के साथ पीसकर नित्य मुख पर उबटन की भांति लगाने से चेहरा साफ हो जाता है।
2. जड़ की छाल रहित लकड़ी को पानी के साथ चंदन की तरह घिसकर मुहासों पर लगाते रहने से सात दिन में पूर्ण लाभ होता हैं तथा मुहांसे समूल नष्ट हो जाते है।

दंत विकार :

1. दांतों के विकार दूर करने के लिये नीम की दातुन करनी चाहिये।
2. नीम की जड़ की छाल का चूर्ण 50 ग्राम, सोना गेरू 50 ग्राम, सैंधा नमक 10 ग्राम तीनों को एक साथ खूब खरल करे, फिर इसमें नीम पत्र स्वरस की 3 भावनायें देकर शुष्क कर शीशी में रख लें, इसके मंजन से दाँतों में से खून गिरना, पीव निकलना, मुंह में छाले पडना, मुंख से दुर्गन्ध आना, जी का मिचलाना आदि विकार दूर होते हैं।
3. 100 ग्राम जड़ को यवकूट कर आधा किलो पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ से गंडूष करते रहने से दांतों के अनेक रोग दूर होते हैं।

नीम और नेत्र रोग :

1. जिस नेत्र में पीड़ा हो उसके दूसरी और के कान में नीम के कोमल पत्तों का रस गरम कर 2–2 बूँद टपकावें। दोनों नेत्रों में पीड़ा हो तो दोनों कान में टपकावें।
2. नीम पत्र और लोध्र के समभाग मिश्रित चूर्ण को पोटली में बांधकर उस पोटली को जल में भिगोये हुये रखें। इस पानी को आंखों में डालने से नेत्र शोथ आदि नेत्र रोग नष्ट होते हैं।
3. यदि आंखों के ऊपर शोथ के साथ ही वेदना हो और भीतर खुजली चलती हो तो नीम पत्र तथा सौंठ को पीस थोड़ा सैंधा नमक मिलाकर कुछ गरम कर रात के समय एक वस्त्र की पट्टी पर रखकर बांधते रहने से 2–3 दिन में नेत्र का यह विकार दूर हो जाता है। इस समय ठंडे पानी एवं शीतवायु से नेत्रों को बचाना चाहिये।
4. आंखों में खुजली के साथ जलन हो तो 500 ग्राम नीम के पत्तों को दो मिट्टी के सराव के मध्य में रख कंडो की आग में फूँक देवें। स्वांगशीत होने पर अन्दर की भस्म को 100 ग्राम नीबूं रस में खरलकर सुखा लें। इसका अंजन करने से लाभ होता है तथा नेत्रों के विकार नष्ट होते हैं।
5. 50 ग्राम नीम पत्रों को जल के साथ महीन पीस टिकिया बना सरसों के तेल में पकावें। जब वह जलकर काली हो जाये तब उसे उसी तेल में घोटकर उसमें दसवां भाग कपूर तथा दसवा हिस्सा कलमीशोरा मिला खूब घोटकर कांच की शीशी में भर लें, इसे रात्रि के समय आँख में अंजन करने से तथा प्रातः त्रिफला के पानी से प्रक्षालन करने से खुजली, जलन, लालिमा, जाला, धुन्ध आदि दूर होकर ज्योति बढ़ती है।
6. नीम की कोंपले 20 नग, जस्ता भस्म 20 ग्राम, लौंग 6 नग, छोटी इलायची 6 नग और मिश्री 20 ग्राम सबको एकत्र खूब महीन पीस छानकर सुर्मा बना लें। प्रातः–सायं सलाई से लगाने से धुंध जाला आदि विकार नष्ट होकर नेत्र ज्योति बढ़ती है।
7. 10 ग्राम साफ रूई को फैलाकर उस पर 20 नीम के सूखे पत्ते बिछाकर 1 ग्राम कपूर का चूर्ण छिड़क कर रूई को लपेट कर बत्ती बना लें। इस बत्ती को 10 ग्राम गाय के घी में भिगोकर इससे काजल बना लें, इस काजल को रात्रि के समय नेत्रों में लगाने से नेत्रों का कसकसाना, धुंध मालूम होना, पानी गिरना, लाली आदि समस्त नेत्र रोग मिट जाते है, यह बच्चों के लिये और भी गुणकारी है।
8. वमनी (सलाक रोग), जिसमें आखों की पलके मोटी हो जाती है, खुजली होती है, बरौनी झड़ जाती है, तथा पलकों का किनारा लाल हो जाता है, नीम पत्र के रस को गाढ़ा कर अंजन के रूप में लगाते रहने से लाभ होता है।

मोतियाबिंद : बीज की मींगी का चूर्ण नित्य 1 या 2 सलाई नेत्रों में लगाने से लाभ होता है।

आंख की फूली : नीम के छाया शुष्क पुष्पों में समभाग कलमी शोरा मिलाकर महीन पीस कपडे में छान लें, इसको आंख में अंजन की तरह प्रयोग करने से आंख की फूली, धुंध जाला इत्यादि रोगों में लाभ होता है और आंखों की ज्योति बढ़ती है। रतौंधी में कच्चे फल का दूध नेत्रों में लगायें।

सिर दर्द :

1. आधाशीशी में सूखे नीम के पत्ते, काली मिर्च और चावल समभाग महीन चूर्ण कर, सूर्योदय से पूर्व जिस ओर पीड़ा हो, उसी ओर की नाक में 125 से 250 मिलीग्राम तक नस्य लेने

नीम के बीज

Scanned by CamScanner

से पुरानी से पुरानी व्याधि शीघ्र नष्ट होती है।

2. गर्मी से घूमने फिरने से होने वाले सिर दर्द मे नीम तेल की मालिश ललाट पर करें।

ज्वर :

1. इन्फ्लुएन्जा में नीम पत्र, गिलोय, तुलसी पत्र, हुरहुर के पत्र 20–20 ग्राम तथा काली मिर्च 6 ग्राम महीन पीस जल के साथ खरल कर 250–250 मिलीग्राम की गोली बनायें, तथा 2–2 घंटे के अन्तर पर 1–1 गोली गरम जल से सेवन करें।

2. नीम की छाल 5 ग्राम, लौंग 500 मिलीग्राम या दाल चीनी 500 मिलीग्राम चूर्ण कर 2 ग्राम की मात्रा में सुबह–शाम जल के साथ लेने से साधारण ज्वर, नियतकालिक ज्वर एवं रक्त विकार दूर होते हैं।

3. नीम की छाल, धनिया, लाल चन्दन, पदमकाष्ठ, गिलोय, और सौंठ का क्वाथ सब प्रकार के ज्वरों का नाशक है।

कर्णस्राव :

1. नीम के मद में समभाग मधु मिलाकर कान को अच्छी प्रकार साफ कर 2–2 बूँद प्रातः–सायं नित्य डालने से 1–2 माह में लाभ होता है।

2. कान से पूय निकलती हो तो निम्ब तेल में शहद मिलाकर उसमें रूई की बत्ती भिगोकर कान में रखने से लाभ होता है।

3. नीम तेल 40 ग्राम, मोम 5 ग्राम, आग पर रखकर मोम गल जाने पर उसमें फुलाई हुई फिटकरी का 750 मिलीग्राम चूर्ण भली प्रकार मिलाकर शीशी में रख लें, कान साफ कर 3–4 बूंद दिन में 2 बार डालने से अक्सीर में लाभ होता है।

4. नीम पत्र रस 40 ग्राम को, 40 ग्राम तिल तेल में पकावें, तेल मात्र शेष रहने पर छान कर 3–4 बूंद कान में डालें।

स्तन पाक (स्तनव्रण) :

1. नीम के पत्तियों की राख 25 ग्राम, सरसों का तेल 50 ग्राम, आग पर रखकर नीम के डंडे से खूब घोंट ले, नीम पत्र के क्वाथ से व्रण को धोकर, राख मिला तेल चुपड दे, तथा कुछ सूखी राख ऊपर से चुपडकर पट्टी बांध दें। 2–3 दिन में काफी आराम हो जाता है। फिर प्रतिदिन नीम क्वाथ से धोकर नीम तेल लगाते रहे, व्रण शीघ्र भरकर सूख जाता है।

2. दूध बन्द करने के लिये नीम पत्तों का कल्क लेप करते रहें।

यक्ष्मा : नीम तेल की 4–4 बूंदे कैप्सूल में भरकर दिन मे 3 बार देवें।

दमा : नीम के बीजों का शुद्ध तेल 3–6 बूंद तक पान में रखकर खाने से श्वास रोग में लाभ होता है।

हिक्का : 2 नग सींक को 10 ग्राम जल में पीस, मोरपंख के चांद की भस्म 125 मिलीग्राम मिला कर सेवन करें।

गलित कुष्ठ : नीम की छाल और हल्दी 1–1 किलो, गुड 2 किलो, बडे मटके में भरकर उसमें 50 किलो जल डालकर मुंह बन्दकर घोडे की लीद से मटके को ढक दें, 15 दिन बाद निकाल कर अर्क खीच ले। 100 ग्राम की मात्रा में सुबह–शाम सेवन कराने से गलित कुष्ठ में लाभ होता है। दवा सेवन के बाद बेसन की रोटी घी के साथ सेवन करायें।

उदर कृमि :

1. आंत्रकृमि में नीम की अन्तर छाल, इन्द्रजौ और वायबिडंग का सम्मिलित चूर्ण – 1½ ग्राम, भुनी हींग 250 मि०ग्रा० चारों द्रव्यों को मधु मिला दिन में 2 बार सेवन कराते रहने से आंत्र में रहने वाले सब प्रकार के कृमियों का नाश हो जाता है।

2. बैंगन या किसी और सब्जी के साथ नीम के 8–10 पत्तों को छौंक कर खाने से पेट के कीड़े मर जाते हैं।

अम्लपित्त :

1. नीम की सींक, धनियां, सौंठ और शक्कर 6–6 ग्राम एक साथ मिलाकर बनाया गया क्वाथ प्रातः–सायं पीने से खट्टी डकारें, अपचन, अधिक प्यास दूर होती है। पित्तज्वर में भी यह लाभकारी है।

2. पंचाग का महीन चूर्ण 1 भाग, विधारा चूर्ण 2 भाग, सत्तू 10 भाग तीनों को मिलाकर रखें। उचित मात्रा में शहद के साथ सेवन करने से भयंकर अम्लपित्त नाश होता है।

उदरशूल : नीम के मोटे वृक्ष के तने की अन्तर छाल 40–50 ग्राम को जौ के साथ कूटकर 400 ग्राम जल में पकायें व इसमें 10 ग्राम नमक भी डाल दें। आधा शेष रहने पर गरम–गरम ही छानकर पिलाने से शीघ्र लाभ होता है।

अतिसार : जौ कूट की हुई नीम की 50 ग्राम अन्तर छाल को 300 ग्राम जल में आधा घंटे उबालकर छान लें, फिर इसी छनी हुई छाल को पुनः 300 ग्राम जल में पकायें, 200 ग्राम शेष रहने पर छानकर शीशी में भर लें, और इसमें पहले छना हुआ जल भी मिला दें, रोगी को 50–50 ग्राम दिन में 3 बार पिलाने से पतले दस्त आने बन्द हो जाते हैं।

आमातिसार : अन्तर छाल की राख 10 ग्राम को दही के साथ दिन में दो बार सेवन करें।

रक्तातिसार : नित्य प्रातः पकी निबौलियां 3–4 खाने से लाभ होता है।

मंदाग्नि : पकी निबौली 3–4 खाने से मंदाग्नि भी मिटती है।

पाडु व कामला :

1. पंचाग का महीन चूर्ण 1 ग्राम की मात्रा में दिन में दो बार 5 ग्राम घी और 10 ग्राम शहद मिलाकर सेवन करें।

2. यदि घी और शहद अनुकूल न हो तो पंचाग का 1 ग्राम चूर्ण गोमूत्र या जल या दूध किसी एक के साथ भी ले सकते है।

Scanned by CamScanner

रोग

1. नीम की सींक 6 ग्राम और श्वेत पुनर्नवा मूल 6 ग्राम दोनों को जल में पीस छानकर कुछ दिनों तक पिलाते रहने से अवश्य लाभ होता है।
2. नीम पत्र, गिलोय पत्र, गूमापत्र और छोटी हरड़ 6–6 ग्राम सबको कूटकर 200 ग्राम पानी में पकावें, 50 ग्राम शेष रहने पर छानकर 10 ग्राम गुड़ मिलाकर, प्रातः–सायं सेवन करने से पांडु में विशेष लाभ होता है। इस क्वाथ के सेवन से पूर्व 200 मि०ग्रा० शिलाजीत 6 ग्राम मधु के साथ चाट लें।
3. मिट्टी खाने से उत्पन्न पाडुं रोग में तथा मिट्टी की आदत छुड़ाने के लिये नीम पत्र के रस की यथेष्ट भावनायें देकर मिट्टी खिलाने से पाडुं रोग नष्ट होता है।
4. यदि पित्तनलिका में मार्गावरोध होने से कामला रोग हो तो 100 ग्राम नीम पत्र रस में 3 ग्राम सौंठ का चूर्ण और 6 ग्राम शहद मिलाकर 3 दिन प्रातः पिलाने से लाभ होता है। घी, तेल, शक्कर व गुड़ से पहरेज रखें। पथ्य में दही भात का सेवन करें।
5. नीम पत्र, नीम की जड़ की छाल, फूल और फल समभाग शुष्क कर महीन चूर्ण कर 1 ग्राम की मात्रा में दिन में दो बार घी व शहद में मिला गोमूत्र जल या दूध के साथ सेवन करें।
6. 10 ग्राम नीम पत्र स्वरस में 10 ग्राम अडूसा पत्र स्वरस व 10 ग्राम मधु मिला नित्य प्रातः सेवन करें।
7. नीम पत्र रस 200 ग्राम में थोड़ी शक्कर मिलाकर, किंचित उष्ण कर, सेवन करें। 3 दिन तक दिन में एक बार सेवन से भी लाभ हो जाता है।
8. नीम के 5–6 कोमल पत्तों को पीसकर, शहद मिलाकर सेवन करने से भी पाडुं, मूत्रविकार और उदर विकार में भी लाभ होता है।
9. 10 ग्राम पत्ररस में 10 ग्राम मधु मिश्रित कर 5–6 दिन पीने से कामला में आशातीत लाभ हो जाता है।

प्रमेह और सुजाक :

1. नीम पत्रों को पीस टिकिया बनाकर थोड़े से गाय के घी में तले, टिकिया जल जाने पर, घी को छानकार रोटी के साथ खाने से सात दिन में लाभ होगा।
2. नीम पत्र रस 10 ग्राम में मधु मिलाकर प्रतिदिन सेवन करें। सुजाक 20 ग्राम नीम पत्र रस में 1 ग्राम नीला थोथा घोटकर सुखा लें, कौड़ियों में रखकर भस्म करें। 250 मिलीग्राम की मात्रा में गाय के दूध के साथ दिन में दो बार सेवन करें।

मलेरिया :

1. नीम की जड़ की 20 ग्राम अन्तर छाल यवकूट कर, इसमें 160 ग्राम जल मिला मटकी में रात भर भिगोकर प्रातः पकायें, 40 ग्राम जल शेष रहने पर छानकर सुखोष्ण पिलाये, इसी प्रकार रात्रि में पिलायें, या दिन में 3 बार पिलाये।
2. नीम जड़ की 50 ग्राम अन्तर छाल, यवकूट कर 600 ग्राम जल में 18 मिनट तक उबाल कर छान लें। मलेरिया ज्वर में जब किसी औषधि से लाभ न हो तो इस फांट को 40 से 60 ग्राम की मात्रा में ज्वर चढ़ने से पूर्व 2–3 बार पिलाने से ज्वर रूक जाता है।

संग्रहणी : इसकी ताड़ी को सुबह–सायं 7–7 बूंद ताजे तक्र में मिलाकर 21 दिन सेवन करें।

हैजा :

1. 10 ग्राम नीम पत्र के साथ 1½ ग्राम कपूर के सेवन करने से हैजे का आक्रमण नहीं होने पाता।
2. हींग 5 ग्राम, इलायची बड़ी 1, लौंग 5 नग तथा नारियल जटा भस्म 250 मिलीग्राम, सबको 50 ग्राम जल में महीन पीस छानकर थोड़ा गरम कर 2–2 घंटे से देवें। पेशाब बन्द हो गया हो तो नीम के फूलों को पानी में पीस पेडू पर बांध देवे।

अरूचि कोमल : 8–10 कोमल पत्तों को घी में भूनकर खाने से तीव्र अरूचि शीघ्र दूर होती है।

वमन :

1. नीम की 7 सीकों को 2 बड़ी इलायची और 5 काली मिर्च के साथ महीन पीसकर 250 ग्राम जल के साथ सेवन करें।
2. वमन अरूचि आदि में छाल का 5–10 मिलीग्राम स्वरस मधु मिलाकर पिलाने से लाभ होता है।
3. नीम पत्र 20 ग्राम को अच्छी तरह पीसकर 100 ग्राम जल में घोल व छानकर 50–50 ग्राम पिलाये।
4. 5 ग्राम नीम पत्र के कल्क की गोली पानी से या मधु से दें।

अर्श :

1. 50 ग्राम नीम तेल, कच्ची फिटकरी 3 ग्राम, चौकिया सुहागा

नीम की गिरी

Scanned by CamScanner

3 ग्राम खूब महीन पीसकर मिला दें। शौच क्रिया में प्रक्षालन के बाद इसे उंगली से गुदा के भीतर तक लगाने से कुछ ही दिनों में मस्से मिट जाते हैं।

2. नीम के बीजों की तथा बकायन के बीजों की शुष्क गिरी, छोटी हरड़, शुद्ध रसौत 50–50 ग्राम, घी में भूनी हींग 30 ग्राम सबका महीन चूर्ण बनाकर उसमें 50 ग्राम बीज निकली हुई मुनक्का घोटकर मटर जैसी गोलियां बना लें, 1–4 गोली दिन में 2 बार बकरी के दूध के साथ या ताजे जल के साथ सेवन करने से सब प्रकार की बवासीर में लाभ होता है। खूनी बवासीर में खून गिरना बन्द हो जाता है। तथा वातार्श की वेदना दूर होती है।

3. छिलके सहित कूटी हुई सूखी निबौरी के 10 ग्राम महीन चूर्ण को प्रातः काल बासी जल के साथ सेवन करने से अर्श के रोगी को विशेष लाभ होता है (सेवन काल में घी का प्रयोग अवश्य करें, अन्यथा नेत्र ज्योति क्षीण हो सकती है)।

4. नीम बीज की गिरी, एलुआ और रसौत समभाग एक साथ खरल कर झड़बेरी जैसी गोलियां बनाकर नित्य प्रातः 1 गोली तक्र के साथ सेवन करना अति लाभदायक है।

5. निम्ब गिरी का तेल 2–5 बूंद तक शक्कर के साथ खाने से या कैप्सूल में भर कर निगलने से हर प्रकार की बवासीर में लाभ होता है। सेवन काल में केवल दूध और भात का आहार लें।

6. बीजों की गिरी 100 ग्राम और वृक्ष की जड़ की छाल 200 ग्राम दोनों को पीसकर 1–1 ग्राम की गोलियां बना 4–4 गोली दिन में 4 बार सात दिन तक खिलाने से तथा नीम क्वाथ से मस्सों का धोने से अथवा पत्रों की लुगदी मस्सों पर बांधने से आशातीत लाभ होता है।

अर्शांकुर या मस्सों पर लेपन :

1. 100 ग्राम सूखी निबौली 50 ग्राम तिल के तेल में तलकर पीस लें, बाकी बचे तेल में 6 ग्राम मोम, 1 ग्राम फूला हुआ नीला थोथा मिलाकर मलहम बना लें। इसे दिन में 2–3 बार मस्सों पर लगाने से मस्से नष्ट जाते है।

2. निम्ब बीज गिरी 20 ग्राम, फिटकरी का फूला 2 ग्राम और सोना गेरू 3 ग्राम, सभी को घोटकर मलहम जैसा बना लें। यदि मलहम जैसा न बने तो उसमें थोड़ा घी या मक्खन मिला कर या गिरी का तेल मिला कर घोटना चाहिये। इसे लगाने से मस्सों की पीड़ा तत्काल दूर होती है। रक्तस्राव बन्द होता है, एवं मस्से मुरझा जाते हैं।

3. 50 ग्राम कपूर, नीम बीज गिरी 50 ग्राम, दोनों का तेल निकाल कर अल्प मात्रा में मस्सों पर लगाते रहने से, वे कुछ ही दिनों में सूख कर गिर जायेंगे।

नीम की गिरी, रसौत, कपूर व सोना गेरू सभी को पानी में पीसकर लेप करते रहने से, या इन चारो द्रव्यों को एरण्ड तेल में घोट कर मलहम बनाकर लगाते रहने से मस्से मुरझा जाते है।

नीम और स्त्री रोग :

1. योनिशूल – निबौरी को नीम पत्र रस में 12 घंटे पीस कर लम्बी गोलियां बना लें, गोली को कपडे के भीतर रख सिल लें और एक डोरा लटकता रखें। 1 गोली योनिमार्ग में धारण करने से शूल मिट जाता है।

2. नीम के बीजों की गिरी और एरंड के बीजों की गिरी तथा नीम पत्र रस तीनों को समभाग घोटकर तथा बत्ती बना योनि में धारण करने से योनिशूल मिट जाता है।

रजोरोध :

1. नीम की छाल 20 ग्राम जौकूट की हुई, गाजर के बीज 6 ग्राम, ढाक के बीज 6 ग्राम, काले तिल और पुराना गुड़, 20–20 ग्राम सबको मिट्टी के बरतन में 300 ग्राम पानी के साथ पकावें, 100 ग्राम शेष रहने पर छानकर सात दिन तक पिलावें, मासिक धर्म खुलकर होने लगता है (गर्भवती स्त्री को नहीं देना चाहिये)।

2. नीम की छाल 4 ग्राम, पुराना गुड 20 ग्राम दोनों को 300 ग्राम पानी में पकावें, 100 ग्राम पानी शेष रहने पर छान कर पिलावें। रूका हुआ मासिक धर्म होने लगता है।

3. योनि शैथिल्य – छाल को अनेक बार पानी में धोकर, उस पानी में रूई को भिगोकर प्रतिदिन योनि में रखें, तथा धोने से बची हुई छाल को सुखाकर जलाकर उसका धुंआ योनि मुख पर देने से तथा नीम के पानी से बार–बार योनि को धोने से योनी एक दम प्रगाढ़ हो जाती है।

अश्मरी :

1. नीम पत्रों की 20 ग्राम राख कुछ दिनों तक लगातार जल के साथ दिन में 3 बार खाने से पथरी गल जाती है।

2. 120 ग्राम नीम पत्र पीसकर, 2 किलो पानी में उबालें, जब चौथाई पानी जल जाये, तब नीचे उतारकर बफारा देने से पथरी निकल जाती है।

3. 2 ग्राम नीम पत्रों को 50 से 100 ग्राम तक जल में पीस छानकर डेढ़ मास तक सुबह, दोपहर तथा शाम पिलाते रहने से पथरी गल जाती है।

प्रदर :

1. नीम की छाल और बबूल की छाल बराबर–बराबर मात्रा में दरदरा कूट, चतुर्थांश क्वाथ सिद्ध कर प्रातः–सायं सेवन करने से श्वेत प्रदर में लाभ होता है।

2. कफज रक्त प्रदर पर 10 ग्राम छाल के साथ समभाग गिलोय को पीसकर 2 चम्मच मधु मिला कर दिन में 3 बार पिलावें।

कष्ट प्रसव :

1. कष्ट प्रसव एवं सूतिका रोग में 3–6 ग्राम निम्ब बीज चूर्ण ग्राम का सेवन लाभकारी है। शुष्क फलों के चूर्ण का दाल तथा शाक में छौंक लगाने से वे विशेष गुणकारी एवं अनेक

Scanned by CamScanner

रोगनाशक हो जाते हैं।

2. प्रसव के पश्चात रुके हुये दूषित रक्त को निकालने के लिये छाल का क्वाथ 10–20 ग्राम की मात्रा में 6 दिन तक प्रातः–सायं पिलाना चाहिये।

3. प्रसूता को नीम की 6 ग्राम छाल पानी के साथ पीसकर 20 ग्राम घी मिला, कांजी के साथ पिलाने से सूतिका रोग शीघ्र ही शान्त हो जाता है।

मूत्रकृच्छ : सींक और पत्तरस 25 ग्राम उन्नाव के साथ पिलायें।

कफज मेह : सींकों के क्वाथ में 1 ग्राम त्रिकटु चूर्ण घुरककर 1 महीने तक सेवन करने से कफज मेह दूर हो जाते हैं।

उपदंश

1. 20 ग्राम छाल को जौकूट कर 1 किलो खौलते हुए जल में डालकर, रात भर रहने दें, सुबह छानकर 50 ग्राम रोगी को पिलावे, शेष जल से उपदंश के व्रणों को साफ करें। पथ्य में केवल घी, खांड और गेहूं की पतली रोटी देवें।

सिकता मेह : निम्ब छाल के क्वाथ को 10–20 ग्राम नियमित रूप में प्रातः काल सेवन करें।

सुजाक : छाल का जौकूट चूर्ण 40 ग्राम, 2½ किलो जल के साथ मिट्टी के बरतन में पकायें, 200 ग्राम शेष रहने पर छान कर पुनः पकावें और 20 या 25 ग्राम कलमी शोरा चूर्ण चुटकी से डालते जायें और नीम की लकड़ी से हिलाते जायें। शुष्क हो जाने पर पीस छानकर रख लें। 250 मिलीग्राम की मात्रा प्रतिदिन गाय के दूध की लस्सी के साथ सेवन कराने से शीघ्र लाभ हो जाता है।

गर्भ निरोध :

1. नीम के शुद्ध तेल में रूई का फोहा तर करके सहवास से पूर्व योनि के भीतर रखने से शुक्राणु 1 घंटे के भीतर ही मर जाते है और गर्भ स्थापित नहीं होता।

2. 10 ग्राम नीम के गोंद को 250 ग्राम पानी में गलाकर कपड़े में छान लें, उसमें 1 हाथ लम्बा और एक हाथ चौड़ा साफ मलमल का कपड़ा भिगोकर छाया में सुखा ले, सुखने पर रूपये बराबर गोल–गोल टुकडे काटकर साफ शीशी में भर लें। सहवास से पूर्व एक टुकड़ा अन्दर सांठ ले, इससे गर्भ नहीं ठहरता एक घंटे बाद निकालकर फेंक दें।

वातरक्त, गठिया :

1. नीम पत्र 20 ग्राम, कड़वे परवल के पत्र 20 ग्राम दोनों को 300 ग्राम जल में पकाकर, चौथाई क्वाथ शेष रहने पर शहद मिला कर प्रातः–सायं सेवन करने से रक्त की शुद्धि, दोषों का

Scanned by CamScanner

पाचन व शमन होकर लाभ होता है। इसके साथ ही नीम के पत्तों को कांजी या छाछ मे उबाल पीस कर लेप करते रहना चाहिये।

2. 20 ग्राम नीम की अन्तर छाल को पानी के साथ खूब महीन पीसकर वेदना स्थल पर गाढा लेप करने से तथा सूख जाने पर उतार कर पुनः लेप करने से 3–4 बार मे ही दर्द मिट जाता है।
3. नीम की छाल का अर्क 10–20 बूँद 2–4 दिन तक सेवन करें, इसके दो घंटे पश्चात् ताजी बनी हुई रोटी घी के साथ आहार में लेने से लकवा, अर्द्धाङ्ग व गठिया में लाभ होता है, व कई प्रकार के अन्य विकार भी दूर होते हैं।
4. आमवात (गठिया) में तेल की मालिश करने से लाभ होता है।
5. तेल की कुछ बूंदे पान में लगाकर खिलाने से तथा रास्नादि क्वाथ में इसकी 30 बूंद डाल कर पिलाने से ऐंठन तथा कई तरह के वात विकार दूर हो जाते है।

कफज्वर : नीम छाल, सौंठ, पीपलामूल, हरड, कुटकी और अमलतास को समभाग लेकर 1 किलो पानी में पकायें। अष्टमांश शेष क्वाथ की 10–20 ग्राम सुबह–शाम सेवन करें।

विषों पर :

1. निबौरी 2 भाग तथा सैंधा नमक व काली मिर्च का चूर्ण 1–1 भाग सबको एकत्र घोटकर घी और मधु मिलाकर खिलाने से स्थावर और जागंम विष नष्ट होता है।
2. 8–10 पकी व कच्ची निबौलियों को पीसकर गरम जल में मिलाकार पिलाने से उसी समय वमन होकर अफीम, संखिया, बच्छनाभ आदि विषों से ग्रस्त व्यक्ति शीघ्र ही स्वस्थ हो जाता है।

जीर्णज्वर : निम्ब छाल, मुनक्का और गिलोय समभाग मिलाकर 100 ग्राम जल में क्वाथ कर 20 ग्राम की मात्रा में कुछ दिन सुबह, दोपहर तथा सायं सेवन करें।

मलेरिया :

1. नीम तेल की 5–10 बूंद दिन में 1 या 2 बार सेवन करनी चाहिये।
2. नीम के कोमल पत्तों में अर्ध भाग फिटकरी भस्म मिला खरलकर 500–500 मिलीग्राम की गोलिया बना लें। 1–1 गोली मिश्री के शरबत के साथ लेने से सब प्रकार के ज्वर विशेषतः मलेरिया में विशेष लाभ होता है।

रक्त विकार : नीम की जड़ की छाल रक्त शुद्धिकारक द्रव्यों में सर्वश्रेष्ठ है। इसका क्वाथ या शीत निर्यास बनाकर 5–10 ग्राम की मात्रा नित्य पीने से रक्त विकार दूर होते है।

रक्तपित्त :

1. रक्तपित्त के रोगी को नीम पत्र 10 ग्राम का कल्क बनाकर सेवन करना चाहिये।
2. नीम पत्र रस और अडूसा पत्र रस 20–20 ग्राम दोनों में थोड़ा मधु मिला दिन में 2 बार सेवन करने से उत्तम लाभ होता है।

प्लेग :

1. नीम की 20 ग्राम अंतर छाल को 50 ग्राम पानी के साथ पीस–छानकर प्रातः–सायं पिलाने से तथा पत्तों को बारीक पीसकर पुल्टिस बाँधने से प्लेग की गांठे बिखर जाती है और ज्वर में शान्ति मिलती है।
2. नीम के पंचाग को पानी में कूट–छानकर 10–10 ग्राम की मात्रा में 15–15 मिनट के अंतर से पिलाने से और गांठों पर इसके पत्तों की पुल्टिस बांधने से तथा आसपास इसकी धूनी करते रहने से प्लेग के रोग में बड़ा लाभ होता है।
3. जब प्लेग फैला हुआ हो, उस समय नीम के सेवन से प्लेग का आक्रमण नहीं होता। नीम एक योगवाही द्रव्य है जो शरीर के छोटे–छोटे छिद्रो में पहुंचकर वहां के जन्तुओं को नष्ट करता है।
4. नीम की ताड़ी में कपास या

Scanned by CamScanner

कपड़े को खूब तर कर प्लेग की गांठ पर बांधते रहने से लाभ होता है।

लू लगने पर : पलाश चूर्ण 10 ग्राम, मिश्री 10 ग्राम, एकत्र पानी के साथ पीस-छानकर पिलाने से लू लगने के उपद्रव शान्त हो जाते है।

चेचक और नीम

1. नीम की रक्तवर्ण की कोमल पत्तियां 7 नग और काली मिर्च 7 नग, इनको 1 महीने तक नियम पूर्वक खाने से 1 साल तक चेचक निकलने का डर नहीं रहता।
2. नीम के बीज, बबूल के बीज और हल्दी इन तीनों को बराबर मात्रा में लेकर शीतल जल में पीस-छानकर कुछ दिनों तक पीने से शीतला निकलने का डर नहीं रहता है।
3. 3 ग्राम नीम की कोंपलों को 15 दिन तक लगातार खाने से 6 मास तक चेचक नहीं निकलती, अगर निकलती भी है तो आंखे खराब नहीं होती।
4. चेचक के दानों में अगर बहुत गर्मी हो तो नीम की 10 ग्राम कोमल पत्तियों को पीसकर उसका रस बहुत पतला कर लेप करना चाहिये, चेचक के दानों पर कभी भी मोटा लेप नहीं करना चाहिये।
5. नीम के बीजों की 5–10 गिरी को भी पानी में पीसकर लेप करने से चेचक के दानों की जलन शांत होती है।
6. चेचक के रोगी को अधिक प्यास लगती हो तो नीम की छाल को जलाकर उसके अंगारों को पानी में डालकर बुझा लें और इस पानी को छानकर रोगी को पिलाने से प्यास बुझ जाती है अगर प्यास इससे भी शान्त न हो तो 1 किलो पानी में 10 ग्राम कोमल पत्तियों को उबालकर जब आधा पानी शेष रह जाये, तब छान कर पिलाये। प्यास के अतिरिक्त यह चेचक के विष एवं ज्वर के वेग को भी हल्का करता है। चेचक के दाने भी शीघ्र सूख जाते है।
7. यदि चेचक खुलकर ना निकले और रोगी बैचेन हो, छटपटाने और प्रलाप करने लगे तो नीम की हरी पत्तियों का रस 10 ग्राम सुबह, दोपहर तथा शाम को पिलाना चाहिये।
8. जब चेचक ठीक हो जाये तो नीम के पत्तों के क्वाथ से स्नान करना चाहिये।
9. जब चेचक के दानों के खुरंड सूखकर उतर जाते है तो उनकी जगह पर छोटे-छोटे गड्ढे दिखाई देते हैं और आकृति बिगड़ जाती है, उन स्थानों पर नीम का तेल अथवा नीम के बीजों की मगज पानी में घिसकर लगाया जाये तो दाग मिट जाते हैं।
10. रोगी के अगर बाल झड़ जाये तो सिर में कुछ दिनों तक नीम का तेल लगाने से बाल फिर से जम जाते हैं।
11. नीम का उबटन – नीम की जड़ की ताजी छाल और नीम के बीज की गिरी 10–10 ग्राम दोनों को अलग-अलग नीम के ताजे पत्र रस में पीसकर एकत्र कर भली प्रकार मिला लें। मिलाते समय ऊपर से पत्ते का रस डालते जाये, जब मिलकर उबटन की तरह हो जाये, तब प्रयोग में लाये, यह उबटन शरीर के मैल, खुजली, दाद, वर्षा तथा ग्रीष्म में होने वाली फुन्सिया, शीतपित्त, शारीरिक दुर्गन्ध, पसीने में अधिक नमक का अंश निकलना आदि त्वचा के सभी विकारों को दूर करता है।
12. चेचक के उपद्रवों पर 10 ग्राम नीम के कल्क में 5 नग काली मिर्च का चूर्ण बुरककर, नित्य प्रात: कुछ दिन सेवन करने से बहुत लाभ होता है।

भूत बाधा निवारणार्थ : नीम की लकड़ी सूतिका गृह में जलाने से नवजात शिशु को किसी प्रकार की भूतबाधा का भय नहीं रहता।

नीम और कुष्ठ रोग : नीम मनुष्य के शरीर में उत्पन्न होने वाले अनेक रोगों में लाभकारी है, परन्तु इसका प्रधान क्षेत्र कुष्ठ, चर्मरोग और रक्तरोग है। चर्म रोगों को दूर करने के लिये संसार में इसके तुल्य कोई दूसरी औषधि नहीं है। कुष्ठरोगी को निम्न नियमों का पालन करना चाहिये।

1. कुष्ठ रोगी को बारह मास नीम वृक्ष के नीचे निवास करना चाहिये।
2. नीम की लकड़ी की दातुन करनी चाहिये।
3. शय्या पर नीम की ताजी पत्तियाँ बिछानी चाहिये।
4. नीम की पत्तियों के क्वाथ से स्नान करना चाहिये।
5. नीम के तेल में नीम की पत्तियों की राख मिलाकर व्रणों पर रोज लगाना चाहिये।
6. प्रातःकाल 10 मिलीलीटर नीम की पत्तियों का स्वरस पीना चाहिये।
7. पूरे शरीर में नीम पत्र स्वरस व नीम तेल की मालिश करनी चाहिये।
8. भोजनोपरांत दोनों समय 50–50 ग्राम नीम का मद्य पीना चाहिये।
9. पंचांग का 10 ग्राम चूर्ण ब्रह्मचर्य पूर्वक नियमित रूप से खैर के 20 ग्राम क्वाथ के साथ सेवन करने से बहुत लाभ होता है।
10. नीम के पांचो अंग 1–1 भाग लेकर शुष्क चूर्ण बनालें, फिर उसमें त्रिकटु व त्रिफला के प्रत्येक द्रव्य और हल्दी का चूर्ण 1–1 भाग मिलाकर सुरक्षित रखें। 2 से 3 ग्राम तक शहद, घी या गरम जल के साथ सेवन करने से खांसी, विष, प्रमेह पिडिका एवं कुष्ठादि रोग नष्ट होते है।
11. नीम के बीजों की गिरी कुष्ठ रोगी को प्रथम दिन 1 गिरी, दूसरे दिन 2 गिरी, इसी प्रकार क्रमश: 1–1 गिरी बढ़ाते हुये, सौ गिरी तक खिलावें, फिर घटाते हुये 1 गिरी पर आ जाये और इसका सेवन बन्द कर दें। पथ्य सेवन काल में चने की रोटी और घी के अतिरिक्त कुछ भी नहीं देना चाहिय। कुष्ठ

Scanned by CamScanner

पर यह योग परम लाभदायक है।

श्वेत कुष्ठ

1. ताजे नीम पत्र पांच नग और हरा आवंला 10 ग्राम (हरे आवले के अभाव में शुष्क फल 6 ग्राम) लें। प्रात: सूर्योदय के पूर्व ही ताजे जल में पीस छान कर पीने से तथा केले के क्षार में हल्दी गौमूत्र के साथ पीसकर श्वेत दागों पर लगाते रहने से लाभ होता है।
2. गोरखमुंडी के फूल, कच्ची हल्दी और गुड़ समभाग कूटकर मटके में भर कर उसमें 10 गुना जल डालकर अच्छी तरह मुंह बन्द कर 15 दिन घोड़े की लीद में दबाकर रख दें, फिर अर्क खींच लें, 100 ग्राम की मात्रा में प्रात–सायं 3–4 मास सेवन करने से समस्त शरीर का श्वेत कुष्ठ भी नष्ट हो जाता है। सेवन काल में दूध, दही तथा छाछ से परहेज रखें। नमक का प्रयोग कम करें। श्वेत कुष्ठ के अतिरिक्त अन्य कुष्ठ पर भी लाभकारी है।
3. नीम पत्र, पुष्प तथा फल समभाग लेकर जल के साथ महीन पीस लें। 2 ग्राम की मात्रा में जल के साथ सेवन करने से श्वेत कुष्ठ में लाभ होता है।

चर्म रोग

1. छाजन, दाद, खुजली, फोड़ा, फुंसी, उपदंश आदि पर 100 वर्ष पुराने नीम वृक्ष की छाल की सूखी छाल को महीन पीस लें, रात्रि में 3 ग्राम चूर्ण को 250 ग्राम जल में भिगो दो और प्रातः छानकर शहद मिलाकर पिलावे।
2. एग्जीमा गीला हो या शुष्क, नीम पत्र रस में पट्टी को तर कर बांधने से और बदलते रहने से लाभ होता है।
3. गीली छाजन में 8–10 पत्तों को पीसकर बांधना चाहिये।
4. पत्तों को 5–10 ग्राम रात्र चुरकना भी लाभकारी है।
5. असाध्य या दुःसाध्य छाजन में 10 ग्राम छाल के साथ समभाग मंजिष्ठादि क्वाथ के द्रव्य तथा पीपल की छाल और नीम मिलाय मिला क्वाथ सिद्ध कर नित्य नियमपूर्वक 10–20 ग्राम की मात्रा सुबह–शाम 1 मास तक पिलाने से पूर्ण लाभ होता है।

दाद

1. नीम के 8–10 पत्तों को दही में पीसकर लेप करने दाद मिटता है।
2. नीम पत्र के रस में कत्था, मन्थाक, सुहागा, पित पापड़ा, नीला थोथा व कलौंजी समभाग खूब घोट–पीसकर गोली बना लें, गोली को पानी में घिसकर दाद पर लगायें।

शीतपित्त नीम की अंतर छाल का फांट आवले के 4 ग्राम चूर्ण के साथ दिन में 2 बार देते रहने से, पुराने से पुराना जिद्दी शीतपित्त नष्ट हो जाता है। शरीर के ददोरे पर काली मिर्च के चूर्ण को घी में मिलाकर मसलते रहना चाहिये या तेल में कूपर मिलाकर मालिश करें।

श्लीपद तथा व्रणों पर

1. श्लीपद में नीम छाल और खैरसार 10–10 ग्राम लेकर दोनों को 50 ग्राम गौमूत्र में पीस छानकर 6 ग्राम मधु मिलाकर सुबह, दोपहर तथा शाम पिलाने से लाभ होता है।
2. जो फोड़ा हमेशा बहता रहता हो, उस पर नीम छाल की गरम

Scanned by CamScanner

लगायें। प्रथम नीम पत्तों के क्वाथ से अच्छी प्रकार धोकर फिर छाल की राख उसमें भर देने से 7–8 दिन में पूर्ण लाभ होता है।

नीम की गिरी को 100 ग्राम तेल में 20 ग्राम मोम डालकर पकायें, जब दोनों अच्छी तरह मिल जाये तो आग से उतार कर 10 ग्राम राल का चूर्ण मिला, अच्छी तरह हिलाकर रख लें। यदि व्रण में दाह और जलन हो तो उसमें थोड़ा लगजराहत भी मिला दें, यह मलहम, अग्नि से जले हुये और अन्य घावों के लिये लाभदायक है।

200 ग्राम नीम के तेल को अग्नि पर रख उसमें 50 ग्राम हरोजा दरदरा कूट कर डाल दें, तेल के साथ मिल जाने पर 50 ग्राम शुद्ध मोम मिला दें। इस मलहम को लगाते रहने से सब प्रकार के व्रण, फोड़ा फुन्सी आदि शीघ्र सुधर जाते हैं।

अग्नि से जले हुये स्थान पर रूई को नीम के तेल में तर कर रखने से शीघ्र लाभ होता है। इससे जलन भी शांत हो जाती है।

50 ग्राम नीम के तेल में 10 ग्राम कपूर मिला कर रख लें, इसमें रूई का फोहा डुबोकर घाव पर रखने से घाव साफ होता हुआ भर जायेगा। इससे पूर्व घाव को नीम पत्र क्वाथ में थोड़ी फिटकरी डाल कर साफ कर लें।

भगन्दर एव अन्य स्थानों के व्रणों पर नीम तेल में कपूर मिलाकर उसकी बत्ती अन्दर रखें एवं ऊपर भी इसी तेल की पट्टी बाधने से लाभ होता है। इस उपचार से कंठमाला गलगंड आदि में भी लाभ होता है।

दुष्ट व्रणों के शोधन के लिये उन पर 8–10 नीम पत्रों को शहद के साथ पीसकर लेप करें।

निम्ब पंचांग चूर्ण 6 ग्राम की मात्रा में नित्य नियमपूर्वक सेवन करने से जीर्ण भगन्दर दूर होता है।

फुन्सी : वर्षा ऋतु में बच्चों के फोड़े फुंसियां निकल आती है, नीम की 6–10 पकी निबौली 2–3 बार जल के साथ देने से फुन्सियां शीघ्र ही दूर हो जाती है।

घर का वैद्य :

1. सुबह उठते ही नीम की दातुन करने से, फूलों के क्वाथ से गूंडष करने से दांत और मसूढे निरोग और मजबूत होते हैं।
2. दोपहर को इसकी धूनी और शीतल छाया में विश्राम करने से शरीर स्वस्थ रहता है।
3. संध्याकाल में इसकी सूखी पत्तियों के धूएं से मच्छर भाग जाते हैं, अतः रात में नीद अच्छी आती है।
4. इसकी मुलायम कोंपले चबाने से हाजमा ठीक रहता है।
5. सूखी पत्तियों को अनाज में रखने से उनमें कीड़े नहीं पड़ते।
6. नीम की पत्तियों को पानी में उबाल कर स्नान करने से अनेक रोगों से मुक्ति मिल जाती है। सिर स्नान से बालों की जुएं मर जाती है।
7. नीम की जड़ को पानी में घिसकर लगाने से कील मुंहासे मिट जाते है। और चेहरा सुन्दर हो जाता है।
8. नीम के तेल में डुबोकर तैयार पिचु को योनि में धारण करने से गर्भ नहीं ठहरता, अतः परिवार नियोजन का अच्छा साधन है।
9. नीम के पत्तों का रस खून साफ करता है, और खून बढ़ाता भी है। इसे 5 से 10 मिलीलीटर की मात्रा में नित्य सेवन करना चाहिए।
10. प्रतिदिन नीम के 21 पत्तों को भिगोई हुई मूंग की दाल के साथ पीसकर, बिना मसाला डालें, घी में पकौडी तल कर 21 दिन खाने से और पथ्य में केवल छाछ और अधिक भूख लगने पर भात खाने से बवासीर में लाभ हो जाता है। नमक बिल्कुल न खायें (थोड़ा सैंधा नमक ले सकते हैं)।
11. शमशान में भी नीम के वृक्ष लगाये जाते हैं और शवदाह के पश्चात लोग इसके कोमल पत्तों को चबाकर घर लौटते हैं, ताकि भूत बाधा ना हो। इसीलिये नीम को घरेलू वैद्य कहा जाता है।

विशेष : दुर्बल काम शक्ति वालों को नीम का प्रयोग नही करना चाहिये, क्योंकि यह काम शक्ति का ह्रास करता है। प्रातः काल उठकर मद्यपान करने वालों को भी इसका सेवन नहीं करना चाहिये।

प्रतिनिधि द्रव्य : बकायन

दर्पनाशक : सैंधा नमक, घी और गाय का दूध इसके अहितकर प्रभाव को दूर करते हैं।

1. निम्बः शीतोलघुर्ग्राही कटुस्तिक्तोऽग्निवातकृत्।
अह्रद्यः श्रमतृट्कासज्वरारूचिकृमिप्रणुत।। (भाव प्रकाश)
2. निम्ब पत्रं स्मृतं नेत्र्यं कृमिपित्तविषप्रणुत्।।
वातलंकटुपाकं च सर्वारोचककुष्ठनुत्। (भाव प्रकाश)
3. शलाका निम्बपत्रस्य कासश्वासविनाशिनी।
कृमिघ्ना तु वरिष्ठा स्यात् कुष्ठज्वरविनाशिनी।। (कै०नि०)
4. चक्षुष्यं निम्बपुष्पं च कृमिपित्तविषप्रणुत्।
वातलं कटुपाकं स्यात् सर्वारोचकनाशनम्।। (कै०नि०)
5. फल तिक्तरसं पाके कटुकं भेदनं लघु।
अरूक्षमुष्णं कुष्ठघ्न गुल्मार्शः कृमिमेहनुत्
निम्बस्य पक्वं मधुरं सतिक्तं स्निग्धं फलं शोणितपित्तरोगे।
कफे प्रशस्तं नयनामयघ्नं क्षतक्षयघ्नं गुरू पिच्छिलं च।।
निम्बबीजस्य मज्जा च कृमिकुष्ठविशोधनः। (कै०नि०)
6. निम्बस्य तेलं प्रकृतिस्थमेव नस्तो निषिक्तं विधिना यथावत्।
मासेन गोक्षीरभुजो नरस्त्र यवाग्रभूतं पलितं निहन्ति
(भेषज्य रत्नावली)

Scanned by CamScanner

92 नींबू

वैज्ञानिक नाम	:	*Citrus aurantiifolia* (Christm.) Swingle.
कुलनाम	:	Rutaceae
अंग्रेजी नाम	:	Lemon of India, Lime
संस्कृत	:	निम्बुक
हिन्दी	:	नींबू, कागजी नींबू
गुजराती	:	लिंबू, कागदी लीम्बु
मराठी	:	लिबूं
पंजाबी	:	नींबू
बंगाली	:	कागजी लेंबु, पतिलेंबु
फारसी	:	लींमू, लिमुने तुर्श
अरबी	:	लिमुने हाजिम, लेमु हाजिम
तमिल	:	एलुमिच्चै

परिचय

नींबू से सब परिचित हैं, नींबू का अचार, नींबू की चटनी को सब लोग बडे चाव से खाते हैं। नीबू की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि जहां दूसरे फल पकने पर मीठे हो जाते हैं, वहीं नींबू हर अवस्था में अम्लीय रहता है। यह विटामिन 'सी' का मुख्य स्त्रोत है अतः इसमें स्कर्वी निवारक गुण पाया जाता है। दूसरी विशेषता इसमें यह है कि यह अम्लीय होने पर भी पित्तशामक है। नींबू की कई जातियां पाई जाती है, जैसे : कागजी नींबू, बिजौरी नींबू, जम्मीरी नींबू, मीठा नींबू इत्यादि। औषध्यार्थ व्यवहार में प्रायः कागजी नींबू का ही प्रयोग करना चाहिए।

बाह्य–स्वरूप

नींबू के छोटे झाड़ीनुमा कंटीले वृक्ष होते हैं। पत्तियां छोटी, पर्णवृन्त छोटे एवं सपक्ष होते हैं। पत्तियों को मसलने पर सुगंध आती है। पुष्प भी सुगन्धित होते हैं। फल गोल, चिकने, अपक्व अवस्था में हरे तथा पकने पर पीले रंग के होते हैं।

रासायनिक संघटन

फल रस में सिट्रिक एसिड, फास्फोरिक एसिड, मेलिक एसिड एवं शर्करा आदि तत्व पाये जाते हैं। फलत्वक में तेल तथा तिक्त स्फटिकीय ग्लूकोसाइड हेस्पेरिडिन (विशेषतः छिलके के सफेद भाग में) पाया जाता है।

गुण–धर्म

कागजी नींबू खट्टा, वातनाशक, दीपक–पाचक और हल्का है। नींबू कृमि समूह का नाशक, उदरशूल नाशक, गृह बाधा नाशक, रूचिकारक, वात पित्त कफ तथा शूल में अत्यंत लाभदायक है।

औषधीय प्रयोग

उन्माद :

1. नींबू के रस को मस्तक पर लेप करने से पागलपन जैसे रोग में लाभ मिलता है।
2. इसके बीजों से शांति मिल जाती है।

आवेश रोग : स्त्रियों के आवेश रोग से बढ़ी हुई हृदय की धड़कन को सामान्य करने के लिए 13 ग्राम नींबू का रस पिलाना चाहिए।

मस्तक पीड़ा : नींबू की दो फांके कर गरम करके कनपटियों पर एक घण्टे तक सेक करने से मस्तक पीड़ा मिटती है।

Scanned by CamScanner

नींबू के रस में आँवला के फलों को पीसकर बालों में लगाने से रूसी मिटती है। बालों का झड़ना रूकता है।

मेथी दाना एक चम्मच और बेर के 10–15 पत्ते बारीक पीसकर सिर में लगायें और एक घण्टे बाद सिर धो लें, बाल घुंघराले हो जायेंगे।

नींबू के रस को लोहे की खरल में लोहे के दस्ते से घोंटते-घोंटते जब रस काला पड़ जायें, तब नेत्रांजन या नेत्र के आसपास पतला–पतला लेप करने से नेत्र पीड़ा मिटती है।

नींबू के रस में अफीम को लौहे के तवे पर पीसकर लेप करना चाहिए।

कटे हुए नींबू के आधे भाग को लोहे के जंग पर रगड़कर पीले कपडे में पोटली बनाकर नेत्रों पर स्पर्श कर घुमाने से खुजली तथा लाली सभी नेत्र विकार नष्ट हो जाते हैं।

पानी, लौंग और काली मिर्च इसके रस में हरे कांच की चूड़ी को महीन पीस कर अंजन करने से फूली और जाला कटता है।

कील मुहांसे:

नींबू के रस को चेहरे पर मलने से कील मुहांसे ठीक हो जाते हैं।

नींबू, तुलसी और काली कंसौदी का रस बराबर मिलाकर धूप में रखें, जब वह गाढ़ा हो जाये तो मुंह पर मले, यह मुहांसों को दूर कर देता है।

चेहरे की झुर्रियां मिटाने के लिए नींबू के रस में शहद मिलाकर लगायें।

अण्डे की सफेदी में नींबू का रस मिलाकर मुँह पर चुपड़ने से व फिर गुनगुने पानी से धोने से चेहरे पर निखार आ जाता है।

छाले : जीभ पर उत्पन्न छालों व मसूढ़ों पर नींबू का छिल्का रगड़ने व नींबू का 20–30 ग्राम रस नियमित पीने से शीघ्र लाभ होता है।

तृषा : नींबू का शर्बत तृषाशामक है।

उदरशूल: कच्चे नींबू का छिलका दिन में दो तीन बार खाने से पेट में होने वाली बादी का शूल मिट जाता है।

वमन : भोजन के बाद होने वाले वमन को रोकने के लिए ताजे नींबू का रस 5–10 मिलीलीटर की मात्रा में पीना चाहिए।

मंदाग्नि : एक नींबू के रस में थोड़ी अदरक एवं थोड़ा काला नमक मिलाकर सेवन करने से अजीर्ण, मंदाग्नि, तथा आमवात का नाश होता है।

अजीर्ण व उदरशूल : नींबू का रस तीन ग्राम, चूने का पानी 10 ग्राम, मधु 10 ग्राम तीनों को मिलाकर 20–20 बूंद की मात्रा में लेने से दोनों रोग शांत हो जाते हैं।

अरूचि :

1. नींबू के शर्बत में दुगना पानी, 1–2 नग लौंग और काली मिर्च मिलाकर पीने से अरूचि मिटती है।
2. नींबू को काटकर काला नमक बुरक कर चाटने से भी अरूचि मिटती है।
3. इसका रस गर्मी की मंदाग्नि को मिटाता है।

कृमिरोग : नींबू के रस का सेवन करने से आतों के अन्दर टायफायड, अतिसार, हैजा इत्यादि जो भी कीटाणु पैदा हो जाते हैं, वे मर जाते हैं।

कामला : इसका रस नेत्र में लगाने से कामला मिटता है।

यकृत उत्तेजक :

1. गुनगुने पानी में नींबू का रस व मिश्री मिलाकर सुबह चाय की तरह पीने से यकृत की क्रिया सुधरती है।
2. यकृत और प्लीहा के रोगों में भुनी हुई अजवायन और सेंधा नमक मिलाकर नींबू का रस पीने से बहुत लाभ होता है।

मोटापा : सुबह–सुबह खाली पेट 200 ग्राम गुनगुने जल में 2 चम्मच नींबू व शहद 1 चम्मच डालकर पीने से मोटापा घटता है।

हैजा : हैजे में प्रतिदिन दो नींबू के रस का सेवन भोजन से पूर्व करने से या रस में मिश्री मिलाकर सेवन करने से हैजा प्रभावहीन हो जाता है।

पित्त : एक नींबू के रस में 5 ग्राम मिश्री मिलाकर सेवन करने से पित्त का शमन होता है।

अतिसार : कागजी नींबू का रस दिन में 30 ग्राम की मात्रा में 2–3 बार देने से अतिसार में लाभ होता है।

तिल्ली :

1. नींबू का अचार खाने से बढ़ी हुई तिल्ली में लाभ होता है।
2. कागजी नींबू और प्याज का 20 ग्राम रस मिलाकर 14 दिन तक प्रातः–सायं पिलाने से बढ़ी हुई तिल्ली घटती है। पथ्य दाल व चावलों का पानी पीना चाहिए।

Scanned by CamScanner

विषम ज्वर : नींबू का रस तेज कहवा में बिना दूध मिलाये हुए पीने से मलेरिया ज्वर शीघ्र दूर हो जाता है।

मौसमी बुखार : नींबू रस 25 ग्राम, चिरायते का काढ़ा 25 ग्राम, दोनों को मिलाकर थोड़ा-थोड़ा करके पीने से मौसमी बुखार दूर हो जाता है।

इन्फ्लुएंजा : इसमें नींबू की चाय (गरम पानी में नींबू रस, मिश्री) बहुत गुणकारी है।

चर्मरोग : दाद, खाज, चमड़ी पर काले दाग इत्यादि रोगों पर नींबू को काटकर रगड़ने से लाभ होता है।

खाज : नींबू के रस में करोदा की जड़ पीसकर लगाने से तुरंत लाभ होता है।

स्कर्वी रोग : नींबू का ताजा रस 4 औंस, पौटेशियम क्लोरेट 60 ग्रेन, कुनेन 6 ग्रेन, शक्कर 2 औंस की मात्रा में 3-4 बार लेने से स्कर्वी रोग में बहुत लाभ होता है। पथ्य में नींबू, अनार, जामुन, आंवला, टमाटर, संतरा इत्यादि फल और वनस्पतियां विशेष मात्रा में प्रयुक्त करनी चाहिए।

परमपूज्य स्वामी रामदेव जी का स्वानुभूत प्रयोग

1 कप चाय के पीने लायक गर्म दूध में आधा नींबू निचोड़-कर दूध फटने से तुरन्त पहले पी जाये। यह रक्तस्राव को तुरन्त बंद कर देता है। उक्त प्रयोग को एक या दो बार से अधिक ना करें।

आमवात : आमवात में नींबू का रस एक दो ग्राम चार-चार घण्टे के अन्तर पर सेवन करना चाहिए।

कीटदंश : मच्छर आदि विषैले कीटों के दंश पर नींबू का रस लगाना चाहिए।

बिच्छु का विष : नींबू के बीजों की मींगी 9 ग्राम, सैंधा नमक 8 ग्राम, दोनों की फंकी देने से बिच्छु का विष उतरता है।

ज्वर : नींबू के दो भागकर एक भाग में पिसी हुई काली मिर्च और सैंधा नमक भरकर तथा दूसरे भाग में मिश्री भरकर दोनो को गरम कर चूसने से और वर्षा ऋतु के बाद आने वाला आन्त्रज्वर, जिसमें पित्त के वमन आते हैं, छूट जाता है।

1. निम्बूकमम्लं वातघ्नं दीपनं पाचनं लघु।।
निम्बूकं कृमिसमूहनाशनंतीक्ष्णमल्लमुदरग्रहापहम।
वातपित्तकफशूलिने हितंकष्टनष्टरूचिरोचन परम्।।
त्रिदोषवह्निक्षयवातरोगी निपीड़ितानां विषवह्निलानाम्।
मन्दानले बद्धगुदे प्रदेयं विषूचिकायां मुनयो वदन्ति।।
(भाव प्रकाश)

2. बीजपुरो मातुलुंगो रुचकः फलपूरकः।
बीजपूरफलं स्वादु रसेऽम्लं दीपनं लघु ।।
रक्तपित्तहरं कंठजिह्वाहृदयशोधनम्।
श्वासकासारूचिहरं हृद्यं तृष्णाहरं स्मृतम्।। (भाव प्रकाश)

Scanned by CamScanner

नींबू बिजौरा

कागदी लिंबू

वैज्ञानिक नाम	:	*Citrus medica* L.
कुल नाम	:	Rutaceae
अंग्रेजी नाम	:	Adam's apple, Citron

परिचय

इसका फल नींबू से काफी बड़ा होता है। यह मीठे और खट्टे के भेद से दो प्रकार का होता है। मीठे फल का बिजौरा लाल गुलाबी रंग का होता है। इसका छिलका बहुत मोटा होता है।

गुण–धर्म

दीपन, कंठ्य, जीभ, हृदय को शुद्ध करने वाला, और दमा–कास, अरुचि, पित्त तथा तृषानाशक है। इसकी जड़ कृमिनाशक है तथा कब्ज या गांठ के रोग में प्रयोग की जाती है। कलियां और फूल उत्तेजक, आंत्र संकोचक, उदर विकारों में लाभदायक है। फल का छिल्कातिक्त तेलयुक्त होता है।

औषधीय प्रयोग

वमन : इसकी 10–20 ग्राम जड़ों को 200 मिलीलीटर पानी में उबालकर चतुर्थांश शेष क्वाथ पिलाने से वमन बंद होती है।

मंदाग्नि : भोजन करने के बाद अगर उल्टी आती है तो सायंकाल के समय इसका ताजा रस 5–10 ग्राम पिलाना चाहिए।

तिल्ली : इसका अचार खाने से तिल्ली कटती है।

मूत्रविकार : मूत्र में रेती आने पर इसकी मूल की छाल का 2–5 ग्राम चूर्ण का सेवन सुबह–रात के बासी जल के साथ करना चाहिए।

उदरकृमि : इसके बीजों की 5–10 ग्राम गिरी की फंकी उष्ण जल

Scanned by CamScanner

के साथ देने से आंतों के कीड़े मरते हैं।

रक्तपित्त: बिजौरी नींबू की जड़ और इसके फूलों का चूर्ण बराबर–बराबर मात्रा में लेकर चावल की माड़ के साथ सेवन करने से रक्तपित्त ठीक हो जाता है।

ज्वर :

1. इसके रस में थोड़ा कुनैन घुलाकर सुबह, दोपहर तथा शाम पिलाने से पित्त ज्वर और नियत कालिक ज्वर दूर हो जाता है। पत्तों का फाट भी लाभकारी होता है।
2. इसकी जड़ की छाल का क्वाथ 10–20 ग्राम दिन में तीन बार पिलाने से ज्वर दूर हो जाता है।

पित्तज्वर : पित्तज्वर में अधिक प्यास लगने पर इसकी कलौं, मधु तथा सेंधा नमक एक साथ पीसकर मुख के तालवे पर लेप करने से प्यास एक दम मिट जाती है।

खुजली : गन्धक को इसके रस में मिलाकर लगाने से खुजली मिटती है।

विषघ्न:

1. निद्रा लाने वाले तीक्ष्ण विषों के प्रभाव को नष्ट करने के लिए इसका रस 10–20 ग्राम मात्रा में थोड़ी–थोड़ी देर से पिलाना चाहिए।
2. विषैले जीवों के काटने से जो विष चढ़ जाता है उसे उतारने के लिए इसका अर्क 20–30 बूंद पिलाना चाहिए।

विविध रोग : इसके 10 ग्राम रस में 500 मि.ग्रा. यवक्षार और 2 चम्मच मधु मिलाकर पिलाने से छाती की पीड़ा, कटिशूल और कूल्हे के जोड़ की पीड़ा मिटती है।

बाह्य प्रयोग :

1. इसके पत्तों को गरमकर पीड़ा युक्त स्थानों पर बांधने से लाभ होता है।
2. बीजों को पीसकर इनका लेप सूजन तथा चर्म रोगों में लाभकारी है।

नींबू जम्भीरी

लैटिन नाम	: *Citrus limon* L. (Neembu Jambhiri)
कुल नाम	: Rutaceae

परिचय

इसका फल नारंगी के फल के समान और बहुत खट्टा होता है।

औषधीय प्रयोग

ज्वर: ज्वर और अन्य प्रादाहिक पीड़ाओं में इसके रस को पानी मिलाकर तथा शक्कर के साथ पिलाने से लाभ होता है।

स्कर्वी:

1. स्कर्वी रोग में इसका रस 2–5 ग्राम पीना बहुत लाभदायक है।
2. इसके पके फल का रस शीतादि रोग प्रतिरोधक होता है।

चर्म रोग : इसके तेल को गिलसरीन के साथ मिलाकर खुजली और फोड़े फुन्सियों पर लगाने से लाभ होता है।

खुजली: इसके रस में गन्धक मिलाकर गीली खुजली पर लगाने से अच्छा लाभ होता है।

Scanned by CamScanner

निर्गुण्डी

वैज्ञानिक नाम	:	*Vitex nigundo* L.
कुलनाम	:	Verbenaceae
अंग्रेजी नाम	:	Five leaved chaste
संस्कृत	:	सिन्दुवार, निर्गुण्डी, सिन्दुक
हिन्दी	:	सम्हालू, मेउड़ी
गुजराती	:	नगड, नगोड़
मराठी	:	निगड, निर्गुण्डी
बंगाली	:	निशिन्दा
अरबी	:	अस्लक
फारसी	:	पंजंगुस्त
तेलगु	:	तेल्लागाविली
तमिल	:	नौची
मलयालम	:	इन्द्राणी

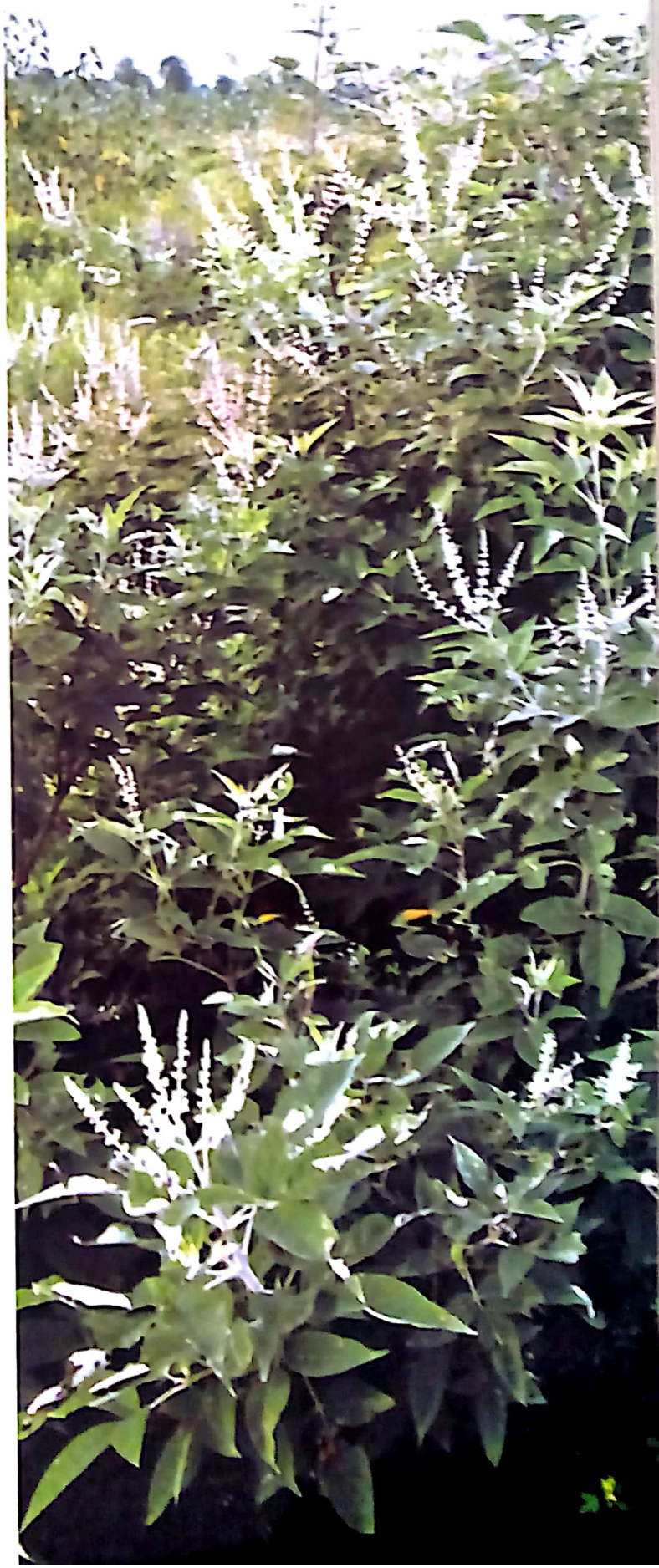

परिचय

"निर्गुडति शरीरं रक्षति रोगेभ्यः तस्माद निर्गुण्डी" अर्थात् जो शरीर की रोगों से रक्षा करे वह निर्गुण्डी कहलाती है। इसके स्वयं–जात क्षुप यत्र तत्र सर्वत्र पाये जाते है। इसके पत्रों को मसलने पर उनमें से एक विशिष्ट प्रकार की दुर्गन्ध आती है। यह बूटी वातव्याधियों के लिये एक प्रसिद्ध औषधि है। पुष्प भेद से निघुटंओं ने इसकी दो जातियां नील तथा श्वेत पुष्पी बतलाई हैं। नील पुष्पी का नाम निर्गुण्डी परन्तु श्वेत पुष्पी का सिदुवार है।

बाह्य–स्वरूप

इसका 6–12 फुट ऊँचा, बहुशाखीय झाड़ीनुमा क्षुप, सूक्ष्म रोमों से ढका रहता है। कांडत्वक, पतली चिकनी, किंचित नीलाभ, पर्णवृन्त लम्बा और अग्र भाग पर 3–5 पत्रक निकलते है। पत्रको के किनारे सादे या कंगूरेदार, पुष्प 2–6 इंच लम्बी मंजरियों में छोटे, बैंगनी आभा लिये नीले या श्वेत होते हैं। फल छोटे गोल सफेद और काले मिश्रित रंग के होते हैं। मूलत्वक हरितवर्ण, अन्तरछाल पीले रंग की होती है।

गुण–धर्म

कफवात शामक, वेदनास्थापन और मेद्य है। इसका बाह्य लेप वेदनास्थापन, शोथहर, व्रणशोधन, व्रणरोपण, केश्य तथा जन्तुघ्न है। आन्तरिक प्रयोग में यह दीपन, आम पाचन, यकृत उत्तेजक,

Scanned by CamScanner

कृमिघ्न तथा शोथहर है। यह कफघ्न और कासहर है, मूत्रजनन एवं उष्णता के कारण आर्त्तवजनन है, कुष्ठघ्न एवं कंडूघ्न, ज्वरघ्न विशेषतः विषमज्वर प्रतिबन्धक है। यह बल्य और रसायन वधुष्य है तथा कर्णस्राव को मिटाता है।

औषधीय प्रयोग

शिरो रोग :

निर्गुण्डी के फल के 2–4 ग्राम चूर्ण की फंकी दिन में दो तीन बार देने से स्नायु और मस्तक सम्बन्धी रोग मिटते है।

शिरः शूल :

निर्गुण्डी के पत्तो को कूटकर, टिकिया बनाकर, कनपटी पर बांधने से मस्तक पीड़ा मिटती है।

कंठशूल और मुखपाक :

1. कंठशूल और मुखपाक मे इसके पत्तों के क्वाथ से कुल्ले करने से लाभ होता है।
2. मुँह में छाले हो जाने पर तथा मुख पाक में निर्गुण्डी का तेल मुंह, जीभ तथा होटों में लगाने से तथा हल्के गरम पानी मे तेल मिलाकर मुंह में कुछ देर धारण करने से लाभ होता है।
3. गले की खराश में, गला पक जाने पर तथा गले की सूजन आदि में हल्के गुनगुने पानी में निर्गुण्डी के तेल को मिलाकर तथा थोड़ा पिसा नमक मिलाकर गंडूष करने से लाभ होता है।
4. फटे होटों पर भी निर्गुण्डी तेल लगाने से लाभ होता हैं।

कर्णरोग : कान के अन्दर अगर पीप पड़ गई हो तो इसके पत्तों के स्वरस से सिद्ध किये तेल को शहद के साथ मिलाकर 1–2 बूंद कान में डालना चाहिये।

गंडमाला : संभालू की जड़ को जल से यथावत् पीसकर नस्य लेने से गंडमाला मिटती है।[5]

निर्गुण्डी की जड़ को बालक के गले में लटकाने से दांत जल्दी निकल जाते हैं।

ज्वर :

1. इसके के 20 ग्राम पत्रों का 400 ग्राम पानी में उबालकर चतुर्थांश शेष क्वाथ में पीपल का चूर्ण 2 ग्राम बुरक कर सुबह–शाम 10–20 ग्राम दिन में तीन बार पिलाने से प्रतिश्याय, ज्वर और सिर का भारीपन और बाधिर्य में लाभ होता है।
2. इसके 10 ग्राम पत्तों को 100 ग्राम पानी में उबालकर प्रातः–सायं देने से ज्वर प्रतिश्याय और गठिया के रोग मिटते हैं।

पाचन शक्ति : अफारा और उदरशूल में इसके पत्तों के 10 ग्राम स्वरस को 2 नग काली मिर्च और अजवायन के साथ सुबह–शाम सेवन करने से पाचन शक्ति सुधर जाती है तथा शूल मिट जाता है। वायु बाहर निकलकर अफारा दूर हो जाता है।

मासिक धर्म : कष्टार्त्तव तथा मासिक धर्म कम होने पर इसके बीजों के 2 ग्राम चूर्ण की फंकी सुबह–शाम देने से मासिक धर्म ठीक होने लग जाता है।

यकृत : मलेरिया ज्वर में अगर रोगी की प्लीहा और जिगर बढ़ गई हो तो निर्गुण्डी के पत्तों का 2 ग्राम चूर्ण हरड़ 1 ग्राम और गोमूत्र 10 मिलीग्राम के साथ देना चाहिये, अथवा 2 ग्राम निर्गुण्डी चूर्ण को काली कुटकी व रंसोत 500–500 मिलीग्राम के साथ सुबह–शाम देना चाहिये।

Scanned by CamScanner

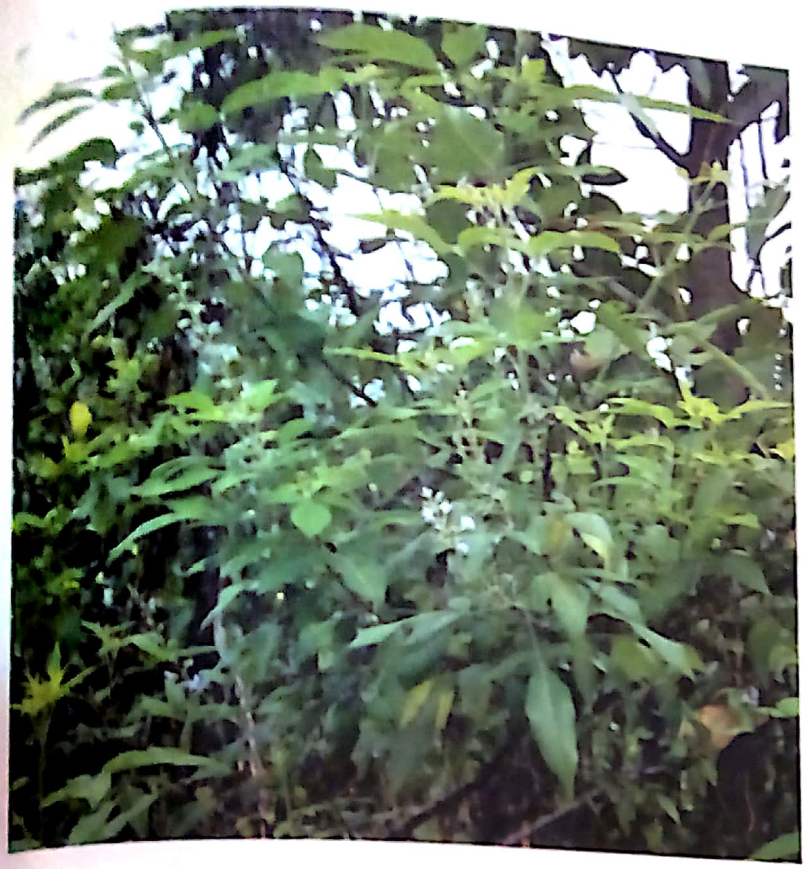

सूतिका : सूतिका ज्वर में इसके प्रयोग से गर्भाशय का संकोच होता है और भीतर की गन्दगी निकल कर बाहर आ जाती है। आंतरिक सूजन भी उतर जाती है और गर्भाशय अपनी पूर्व स्थिति में आ जाता है।

प्रसव : इसे पीसकर नाभि, बस्ति प्रदेश और योनि पर लेप करने से प्रसव सुख से हो जाता हैं।

सुजाक : सुजाक की प्रथम अवस्था में निर्गुडी के पत्तों का काढ़ा बहुत फायदेमन्द है। जिस रोगी का मूत्रबन्ध हो गया हो, उसमें इसके 20 ग्राम को 400 ग्राम पानी में उबालकर चतुर्थांश शेष काढ़े को 10–20 ग्राम दिन में तीन बार पिलाने से पेशाब बहुत जल्दी आता है।

गृध्रसी : मन्द अग्नि पर सिद्ध किये हुये 50 ग्राम पत्तों का आधा किलो पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ 10–20 ग्राम दिन में दो–तीन बार पीने से गृध्रसी रोग शीघ्र मिटता है।[4]

स्लिपडिस्क : सियाटिक, स्लिप्डडिस्क, मांस पेशियों को झटका लगने के कारण आई सूजन में निर्गुण्डी की छाल का 5 ग्राम चूर्ण या पत्र का क्वाथ कम अग्नि में पकाकर 20 ग्राम की मात्रा में दिन में तीन बार देने से कष्ट तुरन्त समाप्त हो जाता है।

कामशक्ति :

1. 40 ग्राम निर्गुण्डी और 40 ग्राम शुंठी को एक साथ पीसकर आठ खुराक बनाकर एक खुराक रोज दूध के साथ सेवन करने से मनुष्य की काम शक्ति बढ़ती है।
2. निर्गुण्डी को घिसकर कामेन्द्रिय पर लेप करने से, कामेन्द्रिय की शिथिलता मिट जाती है।

दुर्बलता : सामान्य दुर्बलता, पैरों की बीमारी इत्यादि में इसके तेल की मालिश लाभकारी है।

निरोग : निर्गुण्डी की मूल, फल और पत्रों के स्वरस से सिद्ध घी की 10–20 ग्राम की मात्रा को नियमित पीने से क्षय का ह्रास होता है और मनुष्य देवताओं की भांति निरोग हो जाता है।[1]

दीर्घायु : निर्गुण्डी के एक किलो रस को हल्की आंच पर तब तक पकायें जब तक यह गुड़ की चाशनी के समान गाढा न हो जाये, दमा, खांसी, क्षय रोगियों को वमन, विरेचन इत्यादि पंचकर्मों से शरीर को शुद्ध कर लें, तत्पश्चात इस अवलेह का सात दिन तक सेवन करें। तीन महीने के सेवन से मनुष्य की वृद्धावस्था दूर होकर दीर्घायु प्राप्त होती है। पथ्य में केवल दूध पीना चाहिये।

कफज्वर :

1. कफज्वर और फेफडो की सूजन होने पर निर्गुण्डी का स्वरस अथवा इसके पत्तों का 10 ग्राम काढा, 1 ग्राम पीपल चूर्ण मिलाकर देना चाहिये और इसके पत्तों का सेंक करना चाहिये।[3]
2. निर्गुण्डी के पत्तों के 30–40 मिलीलीटर काढे की एक मात्रा में 500 मिलीग्राम काली मिर्च का चूर्ण मिलाकर, कफज्वर में जबकि जंघाओं में बल न हो तथा बाधिर्य हो पीना–चाहिये।
3. सर्दी लगकर होने वाले तेज बुखार में, न्यूमोनियां आदि में अगर छाती में जकडन हो तो निर्गुण्डी के तेल की मालिश करनी चाहिये। प्रयोग को ज्यादा असरदार बनाने के लिये तेल में अजवायन, और लहसुन की 1–2 कली डाल दे तथा तेल हल्का गुनगुना कर लें।

श्लीपद : धतूरा, एरंड मूल, संभालू, पुनर्नवा, सहजन की छाल, सरसों इन्हें एक साथ मिश्रित कर लेप करने से चिरकालीन श्लीपद

निर्गुण्डी के बीज

Scanned by CamScanner

नष्ट होता है।[1]

नारु : नारु रोग में इसके पत्तों का 10–20 ग्राम स्वरस सुबह–शाम पिलाने, और इसके पत्तों से सेंक करने से लाभ होता है।

सर्वरोग : सब प्रकार के रोगों में निर्गुण्डी को शिलाजीत के साथ देने से बड़ा लाभ होता है। इन दोनों का योग अमृत के समान है।

घाव : निर्गुण्डी के पत्तों से सिद्ध किये हुये तेल को लगाने से पुराने से पुराना घाव भर जाता है।

व्रण : निर्गुण्डी की मूल और पत्तों से सिद्ध किये तेल को लगाने से, दुष्ट व्रण, पामा, खुजली, विस्फोटक व सब प्रकार के घाव ठीक हो जाते है।[2]

बंदगांठ: इसके पत्तों को गरम करके बांधने से बंद गांठ बिखर जाती है।

टिटनेस: इसका स्वरस 3–5 ग्राम दिन में तीन बार शहद के साथ देने से टिटनेस जैसे रोग में भी लाभ होता है।

विविध प्रयोग :

1. शिरोवेदना, अंडशोथ, जोड़ों की सूजन, आमवात आदि रोगों में जिनमें सूजन के कारण पीड़ा होती है, इसके पत्रों को गरम करके बांधने से तथा उपनाह देने से लाभ होता है।
2. पक्वाशय शूल, गर्भाशय–वृषण और गुर्दे की सूजन में इसके क्वाथ से कटिस्नान करते है।
3. सन्धिवात, आमवात, सन्धिशोथ, सन्धि अभिघात तथा सन्धिगत अन्य विकृतियों में निर्गुण्डी के पत्तों से सिद्ध तेल की मालिश करने से तथा हल्का गरम करके तेल लगाकर कपड़ा बांधने से बहुत आराम मिलता है।
4. सर्दी में अधिक पानी के साथ काम करने से हाथ छिल जाते है। निर्गुण्डी का तेल लगाने से फायदा होता है।
5. देह मे किसी भी जगह कट फट जाने पर, रगड़ लगने या छिल जाने पर या ऐसी ही अन्य अभिघातज या शस्त्र जनित अवस्थाओ मे निर्गुण्डी के तेल का बाहालेप बहुत लाभदायक है। यदि रक्त निकलता हो, और घाव बन जाये तो पिसी हुई हल्दी बुरक कर पट्टी बांध देनी चाहिये।

निर्गुण्डी पंचांग (सूखा)

1. सिन्दुकः स्मृतिदस्तिक्तः कषायः कटुको लघुः।
केश्यो नेत्रहितो हन्ति शूलशोथाममारुतान।।
कृमिकुष्ठारूचिश्लेष्मज्वरन्नीला पि तद्विधा।
सिन्दुवार दलं जन्तुवातश्लेष्महरं लघु।। (भाव प्रकाश)
2. सिन्दुवारः कटुस्तिक्तः कफवातक्षयापहः।
कुष्ठकण्डूतिशमनः शूलहृत काससिद्धिदः।।
कटूष्णा नीलनिर्गुण्डी तिक्ता रूक्षा च कासजित्।
श्लेष्मशोफसमीरार्त्ति प्रदराध्मानहारिणी।। (रा०नि०)
3. सिन्दुवारदलक्वाथं सोषणं कफजे ज्वरे।
जङ्घयोश्च बले क्षीणे कर्णे वा पिहिते पिबेत्।।(भैषज्य रत्नावली)
4. शेफालिकादलक्वाथो मृद्वग्निपरिसाधितः।
दुर्वारं गृध्रसीरोगं पीतमात्रं समुद्धरेत्।। (भैषज्य रत्नावली)
5. गण्डमालाऽऽमयार्त्तानां नस्यकर्मणि योजयेत्।
निर्गुण्ड्यास्तु शिफां सम्यग्वारिणां परिपोषिताम्।।
(भैषज्य रत्नावली)
6. धुस्तूरैरण्डनिर्गुण्डीवर्षाभूशिग्रुसर्षपैः।
प्रलेपः श्लीपदं हन्ति चिरोत्थमपि दारूणम्।। (भैषज्य रत्नावली)
7. समूलफलपत्रायाः निर्गुण्ड्याः स्वरसैः घृतम्।
सिद्ध पीत्वा क्षयक्षीणो निर्व्याधिः भाति देववत्।। (चक्रदत्त)

Scanned by CamScanner

प्याज

94

वैज्ञानिक नाम	:	*Allium cepa* L.
कुलनाम	:	Liliaceae
अंग्रेजी नाम	:	Onion
संस्कृत	:	पलाण्डु, यवनेष्ट, मुखदूषक
हिन्दी	:	प्याज, कांदा, लाल प्याज
गुजराती	:	कांदो, डुंगली, डुंगरी
मराठी	:	कोंदा
बंगाली	:	पेंचाज
पंजाबी	:	प्याज, गंडा
तैलगु	:	निरूली
अरबी	:	वस्ल
तमिल	:	वंजयम
उर्दू	:	प्याज
फारसी	:	पियाज

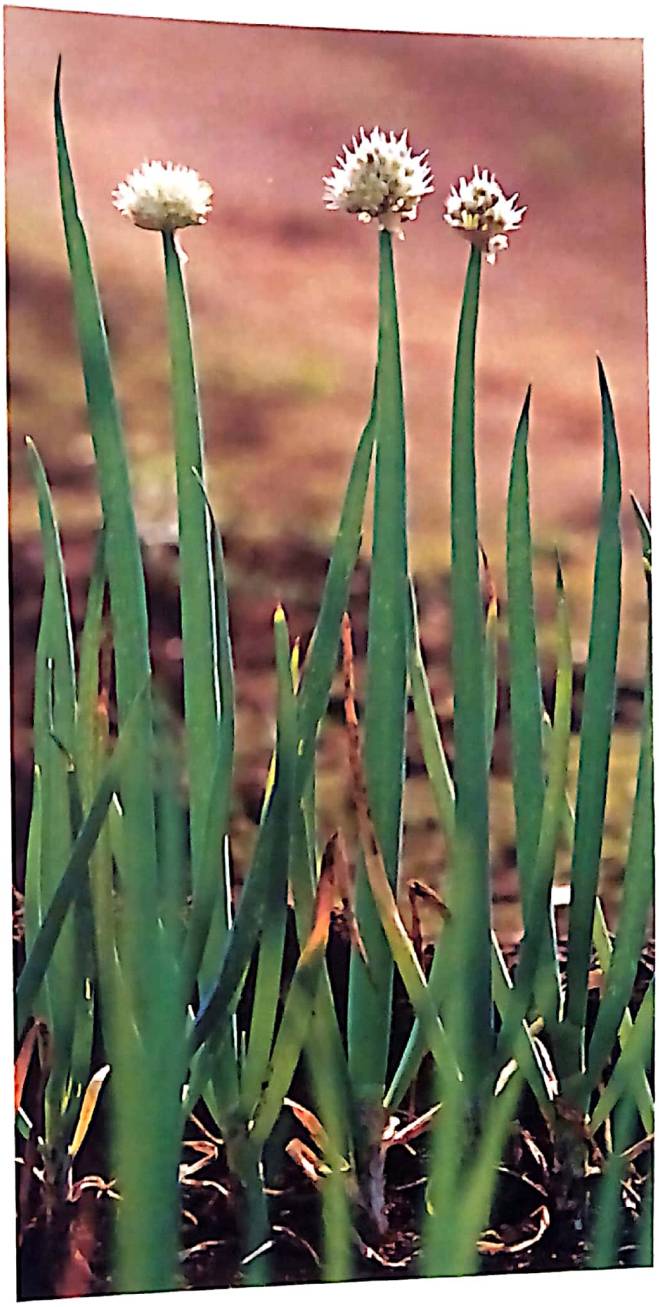

परिचय

प्याज की रंग भेद से रक्त और श्वेत दो जातियां होती हैं। इसका सम्पूर्ण भारतवर्ष में तरकारी के रूप में प्रयोग किया जाता है।

बाह्य–स्वरूप

इसका क्षुप 2 से 3 फुट ऊंचा होता है। पत्र लम्बे, मांसल, पोले तथा रंभाकार होते हैं। पुष्पदण्ड हरे रंग का लम्बा होता है, जिसके अग्रभाग में सवृन्तमूर्धज छोटे श्वेत पुष्प होते हैं, कभी–कभी इसके साथ कलिका कन्द भी दिखलाई पड़ते हैं। फल त्रिकोष्ठीय होता है, जिसमें छोटे काले बीज होते हैं।

रासायनिक संघटन

प्याज के कंद में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, कैल्शियम, लौह, विटामिन ए, बी, तथा सी होते हैं। कंद और इसकी ताजी पत्तियों में कुछ अप्रिय गंधवाला उड़नशील तेल होता है। इसमें एक स्थिर तेल भी होता है, जिसमें एलाइड, प्रोपाइल, डाइसल्फाइड नामक पदार्थ होता है।

गुण–धर्म

यह पाचन में भारी, चरपरी, स्निग्ध, स्वाद में मीठी किंचित कडुवी होती है। भावप्रकाश के अनुसार प्याज स्वादुपाकी, स्वादिष्ट, अनुष्ण, वात विनाशक, बलकारी, वीर्यवर्धक और भारी होता है।[1] लाल प्याज शीतल, पित्तनाशक, काम को दूर करने वाला दीपन और अत्यंत निद्राकारक होता है। प्याज के बीज वृष्य, दंतकृमि और प्रमेह का नाश करने वाले है। द्रव्य गुण विज्ञान के अनुसार– पलाण्डु वात शामक, पित्तवर्धक, कफवर्धक, वेदनास्थापन, शोथहर, व्रणशोथपाचन एवं त्वचा के दोषों को दूर करता है। मन के रज और तम दोनों को बढ़ाने के कारण अमेध्य है। यह दीपन, पाचन, अनुलोमन, मूत्रल व वृष्य है। शुक्र जनन, रक्त स्तम्भन आर्तव जनन, बाजीकरण, बल्य, ओजोवर्धक और कडूघ्न है।[2]

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

अनिद्रा : प्याज के बीजों की बनाई हुई चाय अनिद्रा रोग को दूर करती है। चिड़चिड़े बच्चों को जब अफीम वगैरह से कुछ फायदा नहीं होता, तब यह लाभ पहुंचाती है।

नजला : प्याज के 10–20 मिलीलीटर रस में 1 चम्मच शहद मिलाकर दिन में दो–तीन बार चाटने से नजला मिटता है।

रतौंधी : इसके कंद को दबाकर निकाले हुए रस में जरा सा लवण मिलाकर आंख में 2–2 बूंद डालने से रतौंधी में लाभ मिलता है।

नेत्र ज्योति : इसके स्वरस को मुध मिलाकर नेत्रों में लगाने से नेत्र ज्योति बढ़ती है।

दंतशूल : प्याज और कलोंजी को बराबर लेकर चिलम में रखकर उसका धुआं पीने से मसूड़ों की सूजन और दांतों का दर्द मिट जाता है।

परमपूज्य स्वामी रामदेव जी का स्वानुभूत प्रयोग

सफेद प्याज का रस 10 मि०ली०, अदरक का रस 10 मि०ली०, नींबू का रस 10 मि०ली०, शहद 50 मि०ली०, उक्त सभी का मिलाकर रखें। नियमित रूप से 2–2 बूँद आखों में डालने से मोतियाबिन्द कट जाता है। उक्त दवा आश्रम के दिव्य नेत्र ज्योति के नाम से तैयार की जाती है, जिसके प्रयोग से अनेकों रोगी लाभ पा चुके हैं।

गले के रोग : इसको सिरके में पीसकर चाटने से गले के रोग मिटते हैं।

मूर्च्छा : इसके कंदों को कुचलकर सुघांने से मूर्च्छा ओर हिस्टीरिया से होने वाली बेहोशी दूर हो जाती है।

कर्णशूल : कर्णशूल में प्याज के स्वरस को गरम कर 2–4 बूंद कान में डालने से कर्णशूल मिटता है।

कान की सूजन : अलसी को प्याज के रस में पकाकर छान लें, इस रस की 4–8 बूंद की मात्रा कान में डालने से कान के अंदर की सूजन मिट जाती है।

स्वरभंग : प्याज को आग में दबाकर भुरता बना लें। 250 मिलीग्राम भुना सुहागा खिलाकर ऊपर से भुरता खिलाने से, आवाज खुल जायेगी।

कफ रोग :

1. छोटे बच्चों को कफ रोगों में प्याज के 5–10 मि०ली० रस में 10 ग्राम शक्कर मिलाकर देनी चाहिए।
2. छोटे शिशुओं की माताओं को 1–2 नग प्याज पानी में उबालकर देने से कफ रोगों में लाभ होता है। इससे वात की कमी होती है, कफ पतला होकर बाहर निकल जाता है, घबराहट कम हो जाती है और पित्त भी बाहर निकल जाता है।

दमा : दमे में भी इसके काढ़े को 40–60 ग्राम की मात्रा में सुबह–शाम पिलाने से लाभ होता है।

पाचन : प्याज के रस के सेवन से या कच्चा प्याज खाने से आंतों की क्रिया शक्ति बढ़ती है। दस्त साफ होता है।

रक्तस्त्राव : सफेद प्याज के 20–30 मिली रस का सेवन दिन में दो–तीन बार करने से रक्तस्राव बंद हो जाता है। सफेद प्याज को छाछ के साथ देना और भी गुणकारी है।

अफारा : इसके 20 मिलीलीटर रस में 125 मिलीग्राम हींग और 1 ग्राम काला नमक मिलाकर दिन में तीन बार पिलाने से वादी का दर्द और पेट का फूलना बंद हो जाता है।

उदरशूल : नींबू का रस तथा नमक थोड़ी–थोड़ी मात्रा में मिलाकर प्याज का 1–2 चम्मच रस निकालकर आवश्यकतानुसार पिलावें।

कोष्ठ बल्य : 1–2 नग प्याज को 50 ग्राम सिरके के साथ मिलाकर खाने से आमाशय को ताकत मिलती है।

पथरी : प्याज का 10–20 मिलीलीटर ताजा रस दिन में तीन बार तक तीन महीनें तक पीने से गुर्दे और मसाने की पथरी गलकर निकल जाती है और पेशाब साफ होता है।

मूत्रदाह : प्याज का क्वाथ पिलाने से पेशाब की जलन मिटती है।

Scanned by CamScanner

विरेचन : मध्यम आकार के तीन प्याज और 10–15 ग्राम इमली के पत्तों की गोली बनाकर खिलाने से विरेचन होता है।

बीज तेल : इसके बीजों का 5–10 मिलीलीटर तेल का सेवन मूत्रवर्धक और कफनिःसारक है।

विसूचिका :

1. प्याज का रस 6 ग्राम, काली मिर्च का महीन चूर्ण 125 मि०ग्रा०, कपूर 250 मि०ग्रा० तथा चूने या केले का पानी 25 ग्राम एकत्र मिलाकर 15–15 मिनट बाद या आधा घण्टे के अंतर से देने से वमन तथा दस्त बंद हो जाते हैं तथा शरीर की ऐंठन भी दूर हो जाती है।
2. प्याज के रस में चूने का पानी समभाग मिलाकर पिलाने से लाभ होता है।
3. प्याज 25 ग्राम व काली मिर्च छह नग बिल्कुल महीन खरल करें जो पानी में एक दम मिल जाये फिर रोगी को जितना पी सके, उतना पिला दें। एक बार देने से लाभ हो जाता है। इसमें थोड़ी मिश्री मिला दे तो अति उत्तम है।
4. रोगी के मुख में 250 मि०ग्रा० कपूर डालकर ऊपर से 10 ग्राम प्याज का रस डाल देने से असाध्य हैजा भी दूर हो जाता है।
5. प्याज का रस 15–15 मिनट देने से भी लाभ होता है।

सुजाक : प्याज का रस 6 ग्राम, गाय का घी 4 ग्राम और मधु 3 ग्राम प्रातः–सायं चाटने से तथा रात्रि को दूध पीने से हस्तमैथुन जन्य नपुंसकता तथा सुजाक प्रमेह का नाश होता है।

बल : प्याज के रस में समभाग घी मिश्रित कर पीने से शारीरिक शक्ति बढ़ती है।

अर्श :

1. 2 नग प्याज को पीसकर लेप करने से अर्श और गुदा भ्रंश में लाभ होता है।
2. अर्श के मस्सों के लिए दो प्याज भूसल में सककर छिलका उतारकर लुगदी बनाकर मस्सों पर बांधने से तत्काल समाप्त हो जाती है।

रक्तार्श : प्याज के 125 ग्राम रस में 20 ग्राम मिश्री मिलाकर एक समय पिलाने से खूनी बवासीर में आराम हो जाता है।

मासिक धर्म : प्याज को कच्ची अवस्था में नित्य खाने से मासिक धर्म नियमित होता है।

आमातिसार : एक प्याज के अंदर 60 मिलीग्राम अफीम रखकर उसको अंगारों पर रखकर सेंककर खिलाने से आम अतिसार मिटता है।

काम शक्ति :

1. प्याज को किसी बरतन में भरकर, बरतन का मुंह इस प्रकार बंद कर देना चाहिये कि उसमें हवा न जाने पाये, फिर इस बरतन को जहां गाय बंधती हो उस जमीन में गाड़ देना चाहिए। चार महीने बाद निकालकर एक प्याज रोज खाने से काम शक्ति बढ़ती है।
2. प्याज का रस और शहद क्रमशः आधा एवं 2 कि०ग्रा०, शक्कर

Scanned by CamScanner

250 ग्राम, मिलाकर शर्बत के रूप में 25 ग्राम प्रतिदिन सेवन करें।

3. प्याज रस, मधु, व ब्रांडी 15–20 ग्राम प्रतिदिन खाने से अत्यंत शक्ति का संचार होता है व शोष रोग दूर होता है।

4. काम शक्ति बढ़ाने के लिए प्याज की तीस गांठों को लेकर बरतन में रखकर उन पर ताजा दूध इतना डाले कि दूध 8 अंगुल ऊपर रहे, फिर इसे आंच पर इतना पकायें की प्याज गल जायें। पकने पर आग से नीचे उतार लें, फिर प्याज के बराबर गोघृत और समभाग मधु मिश्रित कर फिर से थोडी देर पकाये अंत में कुलंजन 60–60 ग्राम डालें। इस औषधि की 3–4 चम्मच की मात्रा का सेवन काम शक्ति वर्धक है।

जलोदर : बुखार जलोदर, जुकाम, पुरानी खांसी में इसका नित्य प्रयोग लाभदायक है।

गठिया : प्याज का रस और राई का तेल बराबर मिलाकर मालिश करने से गठिया की पीडा मिटती है।

बंद गांठ : 1–2 नग प्याज में इसको बच्चे के पेशाब में पीसकर गरम करके बंद गांठ पर लगाने से बंदगांठ बिखर जाती है।

श्वेत कुष्ठ : प्याज के बीजों का लेप श्वेत कुष्ठ मे लाभदायक है।

दाद : प्याज को सिरके में पीसकर दाद या ऐसी सूजन पर जो काले दाग वाली हो लगाने से बहुत लाभ होता है।

रक्त विकार : प्याज का रस 50 ग्राम, मिश्री 10 ग्राम तथा श्वेत जीरा भुना हुआ एक ग्राम नित्य सेवन से छाजन, पामा आदि रक्त विकार दूर होते हैं।

फुन्सी : गांठ, फोड़े, फुन्सी, यौवन पिंडिका, नारू, कंठमाला इत्यादि रोगों पर इसको घी में तलकर बांधने से अथवा इसके रस को लगाने से अच्छा लाभ होता है।

व्रणशोथ : नाडी शूल या व्रणशोथ में इसके कल्क को गरम कर बांधने से लाभ होता है।

ज्वर : मध्यम मोटाई की एक प्याज के ऊपर काली मिर्च बुरक कर दो बार खाने से दुष्ट वायु आदि से पैदा हुआ ज्वर छूट जाता है।

जहरीले कीड़े : जहरीले कीड़ों के काटने पर इसका रस मलने से दंशजनित दाह मिट जाती है।

बिच्छू का दंश : प्याज को काटकर उस पर बुझा हुआ चूना लगाकर बिच्छू के डंक पर रगड़ने से बिच्छू का जहर फौरन उतर जाता है।

लू लगना : प्याज का ताजा रस शरीर पर मलने से लू का प्रभाव तुरंत समाप्त हो जाता है।

कनखजूरा विष : प्याज और समभाग लहसुन को पीसकर लगाने से कनखजूरे का जहर उतर जाता है।

रोग प्रतिषेध : हवा से शीघ्र फैलने वाले रोगों के उपद्रवों से बचने के लिए प्याज काट कर पास में रखना चाहिए या दरवाजे पर बांध देना चाहिए।

1. स्वादुः पाके रसेऽनुष्णः कफकृन्नातिपित्तलः।
हरते केवलं वातं बलवीर्य करो गुरु।। (भाव प्रकाश)

2. श्लेष्मलो मारुतघ्नश्च पलाण्डुर्न च पित्तहृत्।
आहारयोगी बल्यश्च गुरुर्वृष्योऽथ रोचनः।। (चरक)
नात्युष्णवीर्योऽनिलहा कटुश्च तीक्ष्णो गुरुर्नातिकफावहश्च।

3. बलावहः पित्तकरोऽथ किंचित पलांडुरग्निं परिवर्धयेत्तु।।
स्निग्धो रुचिष्यः स्थिरधातुकारी बल्योऽथ मेधाकफपुष्टिदश्च।
स्वादुर्गुरुः शोणित पित्तशस्तः सर्पिश्छिलः क्षीरपलाण्डुरुक्तः।
(सुश्रुत)

4. बीजं पलाण्डोः वृष्यः स्यात् दंतकीटप्रमेहजित् (नि०र०)

5. रसखडयूषयवागूसंयुक्तः केवलोऽथवा जयति।
रक्तमतिवर्त्तमानं वातश्च पलाण्डुरूपयुक्तः।। (चरक)

6. लशुननान्तरं वायोः पलाण्डुः परमौषधम्।
साक्षादवस्थितं यत्र शकाधिपतिजीवितम्।।
यस्योपयोगेन शकाङ्गनानां लावण्य सारादिविनिर्मितानाम्।
कपोलकान्त्या विजितः शशाभ्रो रसातलं गच्छति निर्विषण्णः।।
(अ०सं०)

Scanned by CamScanner

टेसू (पलाश)

वैज्ञानिक नाम	:	*Butea monosperma* (Lam.) Taub.
कुलनाम	:	Fabaceae
अंग्रेजी नाम	:	Jungle flame, Flame of the forest
संस्कृत	:	रक्तपुष्पक, ब्रह्मवृक्ष, पलाश, किंशुक, ब्रह्मपादप, याज्ञिक
हिन्दी	:	ढाक, टेसू
गुजराती	:	खाखरो
मराठी	:	पलस
बंगाली	:	पलाश
पंजाबी	:	पलाश
तैलगु	:	मोदुग
मारवाड़ी	:	छिबरो
द्राविड़ी	:	पेलाशं
कन्नड	:	मुत्तुग

परिचय

पलाश के वृक्ष भारतवर्ष में सब जगह मिलते हैं। इसको बहुत प्राचीन काल से एक दिव्य औषधि की तरह काम मे लिया जाता है।

बाह्य–स्वरूप

पलाश के वृक्ष 5–15/20 फुट तक ऊंचे, कांडत्वक 1/2 इंच मोटी खुरदरी, पत्र 4–8 इंच लम्बे, चर्मवत ऊपर चमकीले और नीचे धूसर रोमश, बीच का पत्रक अभिलंटवाकार अग्रभाग पर गोल या द्विविभक्त, पार्श्व पत्रक छोटे एवं विषम होते हैं। पुष्प चमकीले नारंगी, लाल रंग के होते हैं। ग्रीष्म ऋतु मे त्वचा को क्षत करने पर एक रस निकलता है जो जमने पर लाल गोंद बन जाता है, इसको कमर कस भी कहते हैं।

रासायनिक संघटन

इसकी छाल और गोंद मे काइनोटैनिक ऐसिड तथा गैलिक ऐसिड, पिच्छिल द्रव्य तथा क्षार पाये जाते हैं बीजों मे पलासोनिन पाया जाता है। इसके अतिरिक्त इसमें एक स्थिर तेल होता है।

गुण–धर्म

इसके पुष्प स्तम्भन, तृष्णाशामक, रक्तास्तम्भन, मूत्रल, कुष्ठघ्न, ज्वरघ्न, दाह प्रशमन है। ये कफ पित्तशामक है। उत्तम भेदन, कृमिघ्न, रक्तरोधन, उत्तेजक, कुष्ठघ्न और विषघ्न व प्रमेहघ्न है। फल स्तम्भन व प्रमेहघ्न है। गोंद स्तम्भक अम्लतानाशक, ग्राही, वृष्य, और बल्य है। यह संग्रहणी, मुखरोग खांसी को दूर करता है। मत्र शोथहर, वेदना स्थापन है। पंचाग रसायन है। यह दीपन, ग्राही, यकृत उत्तेजक, कफवात शामक है। क्षार अनुलोमन और भेदन है। पलाश की जड़ का स्वरस नेत्र रोग, रतौंधी और नेत्र की फूली को नष्ट करता है, यह नेत्रों की ज्योति को बढ़ाता है। पलाश, कुटज, त्रिफला यह सब

Scanned by CamScanner

मेदोनाशक तथा शुक्रदोष को मिटाने वाले हैं। प्रमेह, अर्श, पाण्डुरोग नाशक एवं शर्करा को दूर करने के लिए श्रेष्ठ है।

औषधीय प्रयोग

नेत्र रोग : पलाश की ताजी जड़ों का अर्क एक बूंद आंखों में डालते रहने से आंख की झांक, खील, फूली मोतियाबिंद, रतौंधी इत्यादि सब प्रकार के नेत्र रोग नष्ट होते हैं।

नकसीर : रात्रि भर शीतल जल में भीगे हुए 5–7 पुष्पों को छानकर सुबह थोड़ी मिश्री मिलाकर पीने से नकसीर बंद हो जाती है।

मिर्गी : इसकी जड़ों को पीसकर 4–5 बूंद नाक में टपकाने से मिर्गी का दौरा बंद हो जाता है।

गलगंड : इसकी जड़ को घिसकर कान के नीचे लेप करने से गलगंड मिटता है।

मंदाग्नि : पलाश की ताजी जड़ों के अर्क की 4–5 बूंदे नागरबेल के पत्ते में रखकर खाने से भूख बढ़ती है।

अफारा :

1. पलाश की छाल और शुंठी का काढ़ा 30–40 मिलीलीटर दिन में दो बार पिलाने से अफारा और उदरशूल दूर होता है।
2. पलाश के पत्तों का 30–40 मिलीलीटर काढ़ा बनाकर पिलाने से अफारा और उदरशूल दूर होता है।

उदरकृमि :

1. पलाश के बीजों के चूर्ण को एक चम्मच की मात्रा दिन में दो बार खाने से पेट के सब कीड़े मरकर बाहर आ जाते हैं।
2. पलाश के बीज निसोत, किरमानी, अजवायन, कबीला, वायविडंग को समभाग मिलाकर 3 ग्राम की मात्रा गुड़ के साथ देने से सब प्रकार के कृमि नष्ट हो जाते हैं।

प्रमेह :

1. इसकी मुंहमुदी कोंपलों को छाया में सूखाकर कूट–छानकर गुड़ में मिलाकर 9 ग्राम की मात्रा में प्रात–काल सेवन करने से प्रमेह मिटता है।
2. ढाक की जड़ों का रस निकाल कर उस रस में 3 दिन तक गेहूं के दानों को भिगो दें। तत्पश्चात इन दानों को पीसकर हलवा बनाकर खाने से प्रमेह, शीघ्रपतन और कामशक्ति की कमजोरी दूर होती है।

सफेद पलाश की दुर्लभ प्रजाति

रक्तार्श : पलाश के पंचाग की राख 10 से 20 ग्राम तक गुनगुने घी के साथ पिलाने से खूनी बवासीर में बहुत लाभ होता है। इसके कुछ दिन लगातार सेवन करने से मस्से सूख जाते हैं।

अर्श : अर्श में इसके ताजे पत्रों में घी की छौंक लगाकर दही की मलाई के साथ सेवन करने से लाभ होता है।

अतिसार :

1. ढाक के गोंद 625 से 2 ग्राम तक थोड़ी दाल चीनी और चावल भर अफीम मिलाकर पिलाने से अतिसार तुरंत बंद हो जाता है।
2. पलाश के बीजों का क्वाथ 1 चम्मच, बकरी का दूध 1 चम्मच, दोनों को मिलाकर खाना खाने के पश्चात् दिन में तीन बार सेवन करने से अतिसार में लाभ होता है। बकरी का उबला हुआ शीतल दुग्ध और चावल ही लेने चाहिए।

मूत्रकृच्छ :

1. पलाश के फूलों को उबालकर गरम–गरम पेडू पर बांधने से रुका हुआ पेशाब, वृक्क शूल और शोथ दूर होती है।
2. 20 ग्राम पलाश के पुष्पों को रात भर 200 मिलीलीटर ढंडे पानी में भिगोकर सुबह थोड़ी मिश्री मिलाकर पिलाने से गुर्दे का दर्द, मूत्र के साथ रक्त आना बंद हो जाता है।
3. ढाक की सूखी हुई कोंपलें, ढाक का गोंद, ढाक की छाल और ढाक के फूलों को मिलाकर चूर्ण बना लेना चाहिए। इस चूर्ण में समभाग मिश्री मिलाकर 9 ग्राम चूर्ण प्रतिदिन दूध के साथ सायंकाल लेने से मूत्रकृच्छ मिटता हैं

सूजन : इसके फूलों की पुल्टिस बनाकर बांधने से सूजन बिखर जाती है।

सन्धिवात : पलाश बीजों को महीन पीसकर मधु के साथ वेदना स्थान पर लेप करने से संधिवात में लाभ होता है।

बंदगांठ :

1. ढाक के पत्तों की पुल्टिस बांधने से बंदगांठ में लाभ होता है।
2. इसकी जड़ की 3–5 ग्राम अन्तरछाल को दूध के साथ पीने से बंदगांठ में लाभ होता है।

पित्तशोथ : इसके गोंद को पानी में गलाकर नियमित लेप करने

Scanned by CamScanner

से कष्ट साध्य पित्तशोथ मिट जाती है।

अंडकोष शोथ :

1. इसके फूलों की पुल्टिस बनाकर नाभि के नीचे बांधने से मूत्राशय के रोग मिटते हैं और अंडकोष की सूजन भी बिखर जाती है।
2. पलाश की छाल को पीसकर उसको 4 ग्राम की मात्रा में जल के साथ दिन में दो बार देने से अंडवृद्धि मिटती है।

घाव : घावों पर पलाश के गोंद का चूर्ण बुरकने से लाभ होता है।

दंश : पलाश के बीजों को अर्क के दूध में घिसकर दंश पर लगाने से वेदना कम होकर आराम मिलता है।

कुष्ठ : पलाश के बीजों के तेल का इंजेक्शन कुष्ठ रोग में चाल मोंगरे के बीजों के तेल से अधिक गुणकारी है।

दाद : ढाक के बीजों को नींबू के रस के साथ पीसकर लगाने से दाद और खुजली में लाभ होता है।

नारू : पलाश के बीज, कुचला के बीज, रस कपूर, सादा कपूर और गूगल इन सब औषधियों को समभाग लेकर बारीक पीसकर पानी के साथ खरल करके फिर एक पीपल के पत्ते पर उनका लेप करके उस पीपल के पत्ते को नारू के फोले के ऊपर बांध देना चाहिए। इस पट्टी को तीन दिन तक बांधने से नारू का कीड़ा शीघ्र मर जाता है।

श्लीपद : श्लीपद रोग में इसकी मूल के 100 ग्राम रस में समभाग सफेद सरसों का तेल मिलाकर दो चम्मच सुबह–शाम पीने से लाभ होता है।

रसायन :

1. इसके छाया में सूखे हुए पंचाग का चूर्ण मधु एवं घृत के (मधु एवं घृत असमान मात्रा में) साथ 1 चम्मच की मात्रा में प्रातः और सायंकाल सेवन करने से मनुष्य निरोगी और दीर्घायु होता है।
2. इसके कोमल–कोमल नये अंकुरित पत्रों को गाय के दूध में पीसकर 2 चम्मच की मात्रा गाय के दूध के साथ ही पीने से शक्तिशाली बालक का जन्म होता है।

वाजीकरण :

1. जड़ के अर्क की 5–6 बूंद की मात्रा दिन में दो बार सेवन से

अनैच्छिक वीर्यस्त्राव रूकता है और काम शक्ति प्रबल होती है।

2. पलाश के बीजों के तेल की 2–4 बूंदे कामेन्द्रिय के ऊपर सीवन सुपारी छोड़कर मालिश करने से कुछ ही दिनों में सब प्रकार की नपुंसकता दूर होती है और प्रबल कामशक्ति जाग्रत होती है।

गर्भनिरोध :

1. पलाश के बीज 10 ग्राम, शहद 20 ग्राम और घी 10 ग्राम इन सबको घोंटकर इसमें रूई को भिगोकर बत्ती बनाकर स्त्री प्रसंग से तीन घण्टे पहले योनिभाग में रखने से गर्भधारण नही होने पाता।
2. पलाश के बीजों को जलाकर इनमें आधी मात्रा में हींग मिलाकर चूर्ण बनाकर 2 से 3 ग्राम तक की मात्रा में तीन मासिक धर्म के भीतर, ऋतुस्राव प्रारंभ होते ही और उसके कुछ दिन बाद तक सेवन करने से स्त्री की गर्भधारण शक्ति नष्ट हो जाती है।

1. कषायः कटुकस्तिक्तः स्निग्धो गुदजरोगजित्।
तत्पुष्पं स्वादु पाके तु कटु तिक्तं कषायकम्।
वातलं कफपित्तास्रकृच्छ्रजित्, ग्राहि शीतलम्।
तृड्दाहशमनं वातरक्तकुष्ठहरं परम्।।
फलं [illegible] वातकफापहम्। [illegible] प्रकाश)

भग्नसंधानकृद्दोषग्रहण्यर्शः कृमीन् हरेत्। (भाव प्रकाश)

3. क्षारश्रेष्ठः कृमिघ्नश्च संग्राही दीपनः परः।
प्लीहगुल्मग्रहण्यर्शोवातश्लेष्मविनाशनः।
किंशुकस्यापि कुसुमं सुगन्धि मधुरं च तत्।
बीजं तु कटुकं स्निग्धमुष्णं कृमिबलासजित्।। (धन्वं०)
मष्ककपलाशचित्रकमदनवृक्षाकशिंशपा वज्रवृक्षास्त्रि।। (सुश्रुत)

Scanned by CamScanner

96 पान

वैज्ञानिक नाम	:	*Piper betle* L.
कुलनाम	:	Piperaceae
अंग्रेजी नाम	:	Betel
संस्कृत	:	नागवल्लरी, नागिनी, नागवल्लिका, वर्णलता, ताम्बूल, सप्तशिरा, मुखभूषण
हिन्दी	:	पान, ताम्बूल
गुजराती	:	नागरवेल
मराठी	:	नागवेल
बंगाली	:	पान
तेलगु	:	नागवल्ली, तामालपाकू
अरबी	:	तम्बोल, तम्बूल
फारसी	:	बर्गे तम्बोल, तंबूल

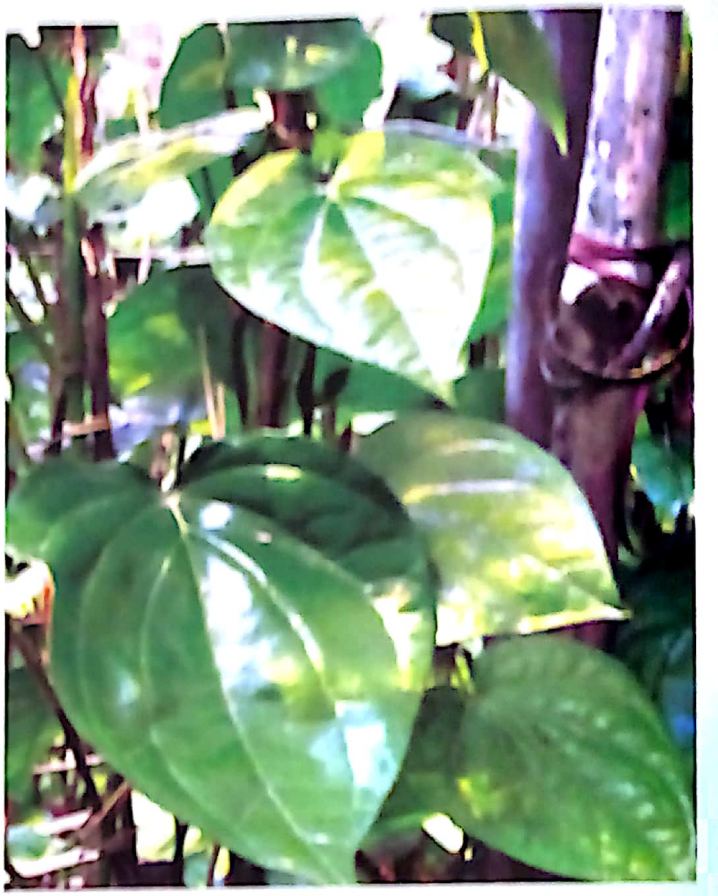

परिचय

यह उष्ण और आर्द्र प्रदेशों विशेषत: बिहार, बंगाल, उड़ीसा, बनारस, महोबा, साची, लंका और मालवा के रामपुरा–मानपुरा जिले में बहुत बोया जाता है। बनारस का पान सर्वोत्तम माना जाता है।

बाह्य–स्वरूप

इसकी मूल रोहिणी लता अत्यन्त सुन्दर और कोमल होती है। कांड अर्द्ध काष्ठ में, मजबूत तथा गांठों पर मोटा रहता है। पत्ते पीपल के पत्तों के समान बडे चौडे तथा हृदयाकृति शिराओं से युक्त चिकने मोटे एवं करीब 1 इंच लम्बे पर्ण वृन्त वाले होते हैं। पुष्प–क्रम स्पाईक होता है। फल 2 इंच लम्बे, मांसल, लटकते हुए व्यूहाक्ष में छोटे–छोटे बहुत फल रहते हैं। पान में मनोहर गंध रहती है। इसका स्वाद कुछ ऊष्ण एवं सुगन्ध युक्त रहता है।

रासायनिक संघटन

पान पत्र में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, खनिज द्रव्य तथा टैनिन होते हैं। इसमें कैल्शियम, फास्फोरस, लौह, आयोडीन तथा पोटैशियम पाये जाते हैं। विटामिन ए, बी, सी तथा पत्तियों में एक उडनशील तेल पाया जाता है। तेल में फिनोल और टार्पिन नामक तत्व होते हैं। फिनोल के कारण पत्तियों में विशिष्ट गंध होती है और इसी तत्व पर इसकी गुणवत्ता निर्भर करती है।

गुण–धर्म

धन्वन्तरि निघंटु ने पान पत्र के तेरह ऐसे गुणों का वर्णन किया है जो स्वर्ग में भी दुर्लभ हैं। पान, चरपरा, कटु, उष्ण, मधुर, क्षारगुण युक्त, कसैला तथा वातकृमि, कफ और दु:ख को हरने वाला है। यह धारण शक्ति और काम शक्ति का वर्धन करता है।[1] भाव प्रकाश के मतानुसार पान विषघ्न, रूचिकारक, सुगन्धित, तीक्ष्ण, मधुर, हृदय को हितकारी, जठराग्नि को दीप्त करने वाला, कामोद्दीपक, बलकारक, दस्तावर और मुख को शुद्ध करने वाला है।[2]

राजनिघंटु के मतानुसार पान, चरपरा, तीक्ष्ण, कड़वा और पीनस वात कारक तथा खांसी में लाभदायक है। यह रूचिकारक, दाहजनक और अग्निदीपक है।[3] पान पत्र तीक्ष्ण, गरम, कड़वा, पित्त को प्रकुपित करने वाला, सुगन्धित, विशद्, वात कफघ्न, संग्रहन, कड़वा, कसैला, लालस्राव, जनन, कंडू मल और दुर्गन्ध का नाश करने वाला है।[4] पान का तेल कफीय पीड़ा, गला, मुंह व श्वांस नाड़ी प्रदाह में विशेष उपकारी है। इसमें सड़न रोधक शक्ति है। पुराना पान अत्यन्त रसभरा, रूचिकारक, सुगन्धित, मधुर, तीक्ष्ण, दीपन, कामोद्दीपक, बल्य, रेचक और मुख को शुद्ध करने वाला है। नवीन पान त्रिदोषकारक, दाहजनन, अरूचिकारक, रक्त को दूषित करने वाला, विरेचक और वमनकारक है। वही पान अगर बहुत दिनों तक जल

Scanned by CamScanner

से सींचा हुआ हो तो श्रेष्ठ होता है। यह रूचिकारक वर्ण्य और त्रिदोषनाशक है।

औषधीय प्रयोग

मस्तक पीड़ा : कनपट्टियों पर पान बांधने से मस्तक की वायु की पीड़ा मिट जाती है।

आवेश रोग : स्त्रियों का आवेश रोग मिटाने के लिए पान का रस दूध में मिलाकर पिलाना चाहिए।

रतौंधी : पान के पत्तों का रस आंख में डालने से रतौंधी की बीमारी में बहुत लाभ होता है।

हृदय विकार :

1. हृदय की दुर्बलता तथा हृदय अवसाद की अवस्था में इसका प्रयोग लाभदायक है। डिजिटेलीस के स्थान पर इसका प्रयोग कर सकते हैं।
2. इसका शर्बत पीने से हृदय का बल बढ़ता है, कफ और मंदाग्नि मिटती है।

स्तनशोथ : जिन स्त्रियों का बच्चा मर गया हो, और स्तनों में दूध भरकर सूजन आ गई हो उन स्त्रियों के स्तनों पर पान को गरम करके बांधने से सूजन कम हो जाती है और दूध उड़ जाता है।

बच्चों की सर्दी : बच्चों को सर्दी लग जाने से पान को गरम करके, जरा सा एरंड का तेल चुपड़कर छाती पर बांधने से, बच्चों की घबराहट कम हो जाती है और सर्दी का जोर मिट जाता है।

प्रतिश्याय : पान की जड़ और मुलेठी को पीस मधु के साथ चटाने से प्रतिश्याय सम्बन्धी रोग मिटते हैं।

मधुर आवाज : गवैये लोग राग साफ करने के लिए और अपनी आवाज सुधारने के लिए पान की जड़ चूसा करते हैं। कण्ठ में जमा हुआ कफ के निस्तारण व स्वरभंगता ठीक करने के लिए कुलंजन (पान की जड़) अत्यन्त लाभप्रद है।

डिप्थीरिया :

1. इस रोग में जब श्वासावरोध उत्पन्न होकर रोगी को अत्यन्त कष्ट होता है तब पान के रस का सेवन करने से गले की सूजन कम हो जाती है और कफ टूटने लगता है। इस रोग में 2–5 पत्तों का रस थोड़े गुनगुने पानी में मिलाकर कुल्ले करने से भी फायदा होता है।
2. पान के रस 3–4 ग्राम को शहद के साथ चटाने से सूखी खांसी मिटती है।
3. पान की डंठल को घिसकर शहद मिलाकर चटाने से बच्चों की सर्दी व कफ में आराम मिलता है।

पाचन :

1. पान के चूसने पर लार की मात्रा अधिक निकलती है, जिससे पाचन क्रिया में मदद मिलती है। यह पेट की वादी को मिटाने वाला उत्तेजक और ग्राही है। इससे श्वास में मिठास हो जाता है। बोली स्पष्ट हो जाती है और मुख की दुर्गन्ध दूर हो जाती है।
2. आर्द्र पृथ्वी और देश के दूषित जलवायु से होने वाले विकार पान खाने वालों को नही होते।

प्यास : पान खाने से प्यास कम लगती है।

कब्ज : पान के डंठल पर तेल चुपड़कर बच्चों की गुदा में रखने से बच्चों की कब्ज और वादी के रोग मिट जाते हैं।

ध्वज भंग : ध्वज भंग रोग में इसे चबाने से और शिश्न पर बांधने से लाभ होता है।

निर्बलता : पान के शर्बत में चरपरी चीजें, अर्थात उष्ण बेसबार मिलाकर 25–25 ग्राम दिन में तीन बार पिलाने से, शरीर की निर्बलता मिटती है।

ज्वर : साढ़े तीन ग्राम पान के अर्क को गरम करके दिन में 2–3 बार पिलाने से ज्वर आना बंद हो जाता है।

ग्रन्थि सूजन : सूजन होने पर पान को गरम करके बांधने से सूजन और पीड़ा की कमी होकर गठान बैठ जाती है।

व्रण : व्रणों के ऊपर पान को बांधने से, व्रण जल्दी भर जाते हैं।

पान खाने से लाभ : पान खाना भी एक व्यसन है। लगातार खाने से इसकी आदत पड़ जाती है। पहली बार खाने से मस्तिष्क पर कुछ खास असर मालूम पड़ता है। जैसे कुछ चक्कर आना, घबराहट,

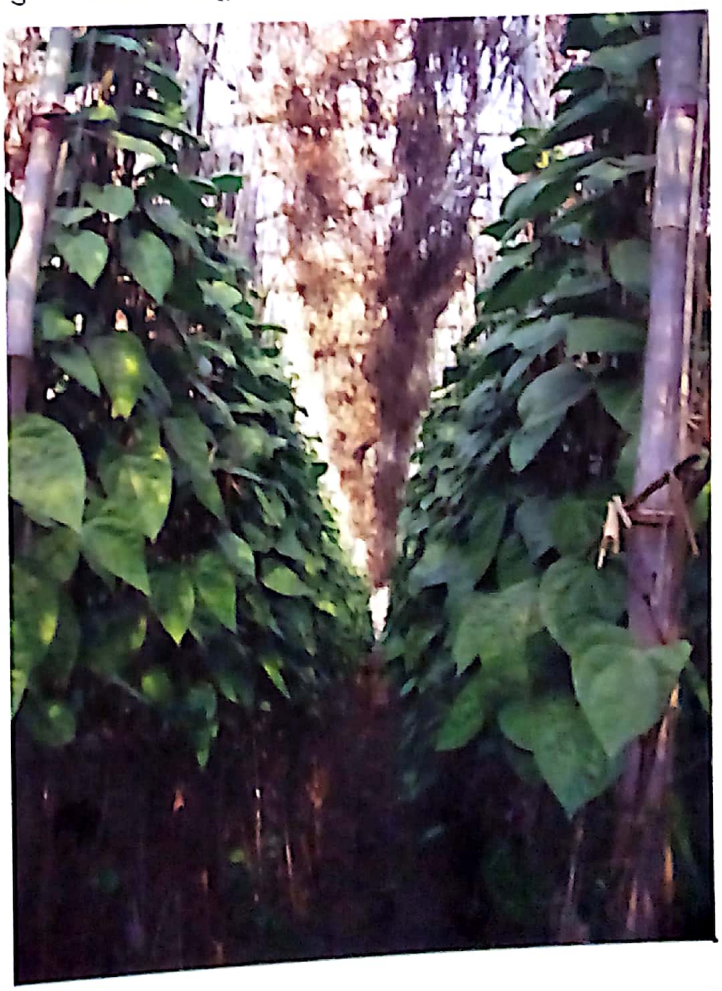

Scanned by CamScanner

बेचैनी आदि, किन्तु पान खाने की आदत बन जाने पर ये सब शिकायतें धीरे–धीरे दूर हो जाती हैं। पान के चूसने पर लार की मात्रा अधिक निकलती है, जिससे पाचन क्रिया में मदद मिलती है, परन्तु अधिक मात्रा में पान का सेवन अहितकर है।

दोष : तीक्ष्ण, उष्ण और पित्त प्रकोपक होने के कारण यह रक्त पित्त उरःक्षत मूर्च्छा आदि पैत्तिक विकारों में यह निषिध है। पान के अधिक खाने से भूख कम लगती है। दिन–दिन मेदा कमजोर होता जाता है। इसलिए इसको हमेशा नियमित मात्रा में खाना चाहिए। इसमें हेपिक्साइन नामक जहरीला पदार्थ होता है। सुपारी में अर्कीडाइन नामक विषैला पदार्थ रहता है, इसलिए सुपारी भी कम लेनी चाहिए। ज्यादा कत्थे से फेफड़े में खराबी पैदा हो जाती है। अधिक चूना दांतों को खराब कर देता है। पान के विषय में आयुर्वेद का कहना है– ताम्बूलं न हितं दन्त दुर्बलेक्षणरोगिणाम्। विष मूर्च्छा मदार्त्तानां क्षतिर्ना रक्तपित्तिनाम्।।

1. ताम्बूलं कटुतिक्तमुष्णमधुरं क्षारंकषायान्वितं, वातघ्नं कफनाशनम् कृमिहरं दुर्गन्धनिर्णाशनम्।
वक्त्रस्याभरणं विशुद्धिकरणं कामाग्निसंदीपनं, ताम्बूलस्य सखे!
त्रयोदशगुणा स्वर्गेऽपि ते दुर्लभाः। (ध०नि०)

2. ताम्बूलं विशदं रुच्यं तीक्ष्णोष्णं तुवरंसरम्।
बल्यंतिक्तं कटुक्षारं रक्तपित्तकरं लघु।
बल्यं श्लेष्मास्यदौर्गन्ध्यमलवातश्रमापहम्। (भाव प्रकाश)

3. नागवल्ली कटुस्तीक्ष्णा तिक्ता पीनसवातजित्।
कफ कासहरा रूच्यादाहकृद्दीपनी परा। (रा०नि०)

4. ताम्बूलपत्रं तीक्ष्णोष्णं कटु पित्तप्रकोपणम्।
सुगन्धि विशदं स्वर्यं तिक्तं वातकफापहम्।।
स्रंसनं कटुकं पाके कषायं वह्निदीपनम्।
वक्त्रकण्डूमलक्लेददौर्गन्ध्यादिविनाशनम्। (सु०सू०)

Scanned by CamScanner

पवाँड़ (चक्रमर्द) तरोता

वैज्ञानिक नाम	:	*Cassia tora* L.
कुलनाम	:	Caesalpiniaceae
अंग्रेजी नाम	:	Foetid carria, Ringworm plant
संस्कृत	:	चक्रमर्द, दद्रुघ्न, प्रपुन्नाड, एडगज, मेषलोचन, चक्री
हिन्दी	:	पवाँड़, चक्रवड़
गुजराती	:	कुवाडियो
मराठी	:	टाकला
बंगाली	:	चाकुन्दा, चाबुका
तेलगु	:	तगिरिसे
अरबी	:	कुवन्च, कुतब
फारसी	:	संगेसबूया

परिचय

चक्रमर्द के पौधे वर्षा ऋतु में उष्ण कटिबन्धीय प्रदेशों में परित्यक्त भूमि पर, कूड़े करकट, नदी नालों के किनारे, सर्वत्र समूह–बद्ध उगे हुये मिलते हैं। इसका पादप विशेष गंध युक्त होता है। पत्तों को मसलने से एक प्रकार की अग्राह्य गंध आती है। कहीं–कहीं इसके कोमल पत्तों का शाक बनाकर खाया जाता है।

बाह्य–स्वरूप

चक्रमर्द के 1 से 5 फुट ऊँचे, एक वर्षायु, स्वावलम्बी क्षुप होते हैं। पत्र संयुक्त, पर्णवृन्त दो ग्रन्थि युक्त, पत्रक 3 जोड़ो में पत्रक 1 इंच से $2^1/_2$ इंच लम्बे अभिलट्वाकार, गोल तथा कुंठिताग्र या नताग्र, रात में परस्पर मिल जाते हैं। वर्षा ऋतु में पत्र जोड़ों से एक साथ या एकाकी मटमैले पीले रंग के आधा इंच व्यास के पुष्प निकलते है। शिम्बी–शीतकाल में, 6 इंच तक लम्बी चतुष्कोणा अग्रभाग में नुकीली कुछ मुड़ी हुई होती है। प्रत्येक फली में, भूर रंग के लम्बे, गोल बीज (जो रूपरेखा में ईख की गडेरी की भांति लगते हैं) जिनके दोनों किनारे तिरछे कटे से होते है।

रासायनिक संघटन

बीज तथा पत्र दोनों में क्राइसोफैनिक एसिड की तरह का एक ग्लुकोसाइड, पत्र में कैथार्डीन के समान एक सत्व, एक रजंक द्रव्य और खनिज द्रव्य होते हैं।

गुण–धर्म

चक्रमर्द लघु, मधुर, रूक्ष, हृदय को हितकारी, शीतल और पित्तवात, कफ, श्वास, कोढ़, दाद तथा कृमि को नष्ट करने वाला है।[1] इसका फल गरम तथा चरपरा है और कोढ, खुजली, दाद, विष, वात, गुल्म, खांसी, कृमि, श्वास इन सब रोगों को हरने वाला है।[2]

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

आधाशीशी : आधाशीशी में इसके 20–25 ग्राम बीजों को कांजी में पीसकर मस्तक पर लेप करने से लाभ होता है।

कंठमाला : पंवाड के 10–12 पत्तों को, फिटकरी तथा सैंधा नमक मिला, थोडे जल के साथ पीसकर, गुनगुनी टिकिया बनाकर कंठमाला की गांठों पर नित्य बाधने से लाभ होता है।

गंडमाला :

1. भांगरे का स्वरस 2 किलोग्राम, पंवाड, मूल त्वक 115 ग्राम, सरसों का तेल 450 ग्राम, तीनों को मिलाकर मंद अग्नि पर पकावें, जब केवल तेल शेष रह जाये तो उसमें 115 ग्राम सिन्दूर मिलाकार नीचे उतार लेवें। इस तेल के लेप से भयंकर गंडमाला, अति शीघ्र नष्ट होती है।
2. 10–20 ग्राम पंवाड़ की जड़ को नींबू के रस में पीसकर लेप करने से गडंमाला मिटती है।

खांसी : बीजों के 1–2 ग्राम चूर्ण को गरम जल के साथ कुछ दिन तक देने से लाभ होता है।

सोमरोग : स्त्रियों के रक्त प्रदर या श्वेत प्रदर पर इसकी 5–10 ग्राम जडों को चावलों की धोवन के साथ पीस–छानकर पिलाने से स्त्रियों का बहुमूत्र रोग तथा श्वेत प्रदर ठीक होता है।

मधुमेह (वसामेह) : पवाँड़ की जड़ों को 10 ग्राम लेकर 400 ग्राम पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ सेवन करने से लाभ होता है।

प्रमेह : पवांड पुष्प 100 ग्राम तथा शक्कर दस ग्राम, दोनों को मिलाकर सुबह खाने से, कुछ ही दिनों में मूत्र का गंदलापन एवं बार–बार जाना बन्द हो जाता है।

कटिशूल : कमर दर्द में स्थानीय स्त्रियाँ बीजों को भूनकर 2–4 ग्राम चूर्ण कर, खांड, गुड़ आदि मीठा और थोड़ा घी मिलाकर लड्डू बनाकर खाती है। इससे कमर दर्द में लाभ होता है।

रक्तशुद्धि के लिये : इसके मूल को धोकर, शुष्क कर महीन चूर्ण कर लें, नित्य प्रातः 4 ग्राम चूर्ण को 10 ग्राम घी तथा 10 ग्राम शक्कर के साथ सेवन करने रक्तशुद्ध होकर शक्ति की वृद्धि होती है।

वालातिसार : दांत निकलने के समय हरे पीले दस्तों में, उदरशुद्धि के लिये, पत्तों का क्वाथ 5–10 ग्राम देने से लाभ होता है।

शीतपित्त : जड के महीन चूर्ण 2–4 ग्राम को घी मिलाकर सेवन करने से शीत–पित्त मिटता है।

व्रणों पर :

1. अपक्व व्रणों पर इसके 6–7 पत्तों की पुल्टिस बनाकर बांधने वे शीघ्र पक जाते है।
2. दुर्गन्ध युक्त व्रणों पर 8–10 पत्तो को एरंड तेल में भून कर पुल्टिस बना कर बांधने से लाभ होता है।
3. वातरक्त, गृध्रसी तथा संधिवात मे भी पुल्टिस से लाभ होता है।

सर्वांगशोथ पर :

1. पत्तों को जल में उबाल तथा निचोड़ कर उस जल को 50 ग्राम की मात्रा सेवन करने से, सब अंगों की सूजन उतर जाती है।
2. इसके पत्तों का शाक बनाकर खाने से भी 6 दिन में पूर्ण लाभ होता है।

दाद :

1. पवाँड के 200 ग्राम पंचाग को कुचलकर, 400 ग्राम मक्खन वाली दही में मिलाकर 3–4 दिनों तक मिट्टी की पतीली में रख छोड़े, 4–5 दिन में दो बार उबटन की तरह दाद के स्थान पर मले और घंटे बाद पानी से धो डाले, 4–5 दिनों में दाद मिट जाता है।
2. चर्म रोग में इसके पत्तों का साग बनाकर खाना गुणकारी है।
3. चर्म रोगों में इसके पत्तों की चटनी गुड़, तथा खटाई मिलाकर (राई नहीं मिलानी चाहिये) सेवन करने से लाभ होता है।
4. इसके पंचांग के क्वाथ से दाद आदि को धोते रहने या स्नान कराने से सब चर्म रोग दूर हो जाते है।
5. इसके 10–20 ग्राम बीजों को तक्र में भिगोकर, जब वे फूल जाँये, पीसकर उबटन की भांति दाद पर मल कर 1 घंटे बाद फिटकरी मिले किंचित उष्ण जल से साफ करे दें। 7 दिन के प्रयोग से पूर्ण लाभ होगा।
6. 200 ग्राम बीजों के चूर्ण को 450 ग्राम दूध, तेल 1 किलोग्राम तथा 6 ग्राम गंधक, मिलाकर मंद अग्नि पर पकाकर तेल सिद्ध कर ले, इस तेल को दाद पर दिन में 3–4 बार प्रयोग करें।
7. बीजों में समभाग जीरा, तथा थोड़ी सी सुदर्शन की जड़ इन तीनों को एकत्र फीसकर लेप करने से दाद नष्ट होता है।
8. पंवाड़ के 5–10 ग्राम बीजों को ही मूली के रस में पीसकर लेप करने से दाद नष्ट हो जाता है।
9. 100 ग्राम बीज चूर्ण को करंज तेल में मिलाकर लगाते रहने से भी लाभ होता है।
10. पंवाड़ के बीज 1 ग्राम, आमला 1 ग्राम, राल 1 ग्राम, सेहुंड का दूध 1 ग्राम, इस सबको कांजी के साथ पीसकर मलने से दाद

Scanned by CamScanner

नष्ट होता है।

पवाँड़ के ताजे पत्ते 100 ग्राम, तथा गंधक, राल, फिटकरी चौकिया सुहागा और रस कपूर 10–10 ग्राम, इनको थोडे जल में पीसकर बेर जैसी गोलियां बना लें, इसे पानी में घिसकर दाद पर लगाने से कुछ ही दिनों में दाद नष्ट हो जाती है।

छाजन (ब्यूची, एग्जिमा) :

1 बीजों के 1 किलोग्राम महीन चूर्ण को, 2 किलोग्राम गाय के दूध में मिलाकर, 200 ग्राम गाय का घी, तथा 20 ग्राम गन्धक चूर्ण मिला दें। मंद अग्नि पर पकाकर, जब दूध जल जावें तब उतार लें। इसके मलने से दाद छाजन दूर होती है। इस रोग में, खट्टी दही डालकर ताँबे के बरतन में एक दिन के लिये रख दें। अगले दिन से प्रयोग करें। इस लेप से पुरानी से पुरानी छाजन दूर हो जाती है।

2 इसके बीज 60 ग्राम, बाबची बीज 80 ग्राम और गाजर के बीज 20 ग्राम, इन तीनों का चूर्ण बनाकर 8 दिन तक गोमूत्र में भिगो कर रखें। मटकी में से आवश्यकतानुसार लगाते रहने से छाजन दूर होती है, सूख जाने पर गोमूत्र डालते रहें। यह एक वर्ष तक प्रयोग किया जा सकता है।

खाज खुजली :

1. 1 किलोग्राम बीजों के चूर्ण को खूब महीन पीसकर चिकने मिट्टी के बरतन में, 5 किलो मट्ठे में मिलाकर मुंह बन्द कर जमीन में गाड़ दे, 6 दिन बाद निकालकर खाज पर मलने से कैसी भी दुष्ट खाज हो 3 दिन में दूर हो जाती है।
2. 50 ग्राम बीजों के महीन चूर्ण को 1 किलोग्राम गाय के मठ्ठे में 3 दिन भिगोकर लगाने से खाज खुजली, मुख की झाई आदि दूर होती है।
3. पवाँड़ के बीजों को गोमूत्र में सात दिन तक भिगोकर छाया में सुखाकर पाउडर करके रखें, प्रातः सांय 1 से 2 ग्राम ताजे जल से लेने से समस्त प्रकार के चर्मरोग, कुष्ठ, दाद, खाज, खुजली में अत्यन्त लाभप्रद है। इसमें नमक, खटाई, बैंगन, अचार, अरबी, उडद की दाल, तली चीजों का विशेष परहेज करें।

कुष्ठ

1. चक्रवड़ के 10–20 ग्राम बीजों को दूध में पीसकर एरंड का तेल मिलाकर लेप करने से सर्व प्रकार के कुष्ठ रोग नष्ट होते हैं।
2. यदि कुष्ठ स्रावयुक्त गोल ठोस, अतिखाज युक्त और काला हो तो बीजों को थूहर के दूध की भावना देकर, गोमूत्र में पीसकर, धूप में गरम कर उसमें समभाग शराब की गाद मिलाकर लेप करने से लाभ होता है।

शीतज्वर : इसके पंचाँग को महीन पीसकर इसके कल्क को प्रातः काल हाथों की कलाई पर बांध देने से शीतज्वर की पारी रुक जाती है।

बाल रोग : पवाँड़ के बीज, हालो, राई, सरसों, मालकांगनी, तिल और नारियल की गिरी– बराबर–बराबर ले, नारियल की गिरी को छोड़कर सबका महीन चूर्ण कर ले, अब नारियल की गिरी को कतरकर चूर्ण में मिलाकर मशीन से तेल निकलवा ले। इस तेल को गरम करके मालिश करने से बाल रोग से जकड़े कमर जाँघ पिंडली आदि अंग ठीक हो जाते है। पुरानी रोगियों को इससे बहुत लाभ होता है।

पवाँड़ कॉफी : चकवड़ के 1 किलोग्राम बीजों को घी में सेक ले, अधिक जलने नहीं चाहियें, कूट कर महीन चूर्ण कर ले। इसमें जायफल, जावित्री, सौंठ, लौंग, खसखस 6–6 ग्राम, केसर 3 ग्राम दाल चीनी 11 ग्राम छोटी इलायची के बीज 23 ग्राम सबका चूर्ण कर मिला लें। विधिवत काफी बनाकर सेवन करने से थकावट व आलस्य दूर होता हे। मन प्रसन्न होता है। मंदाग्नि शिरोवेदना आदि नष्ट होते हैं, भूख अच्छी लगती है। यह काफी पौष्टिक तथा वल्य है। बच्चे बूढे युवा सभी इसका प्रयोग कर सकते हैं।

विशेष : यह आंतो के लिये हानिकारक है। हानि निवारणार्थ दही, दूध या अर्क गुलाब उत्तम है।

प्रतिनिधि द्रव्य : बावची है।

पवाँड़ के बीज

1 चक्रमर्दो लघुः स्वादु रूक्षः पितानिलापहः।
हृद्या हिमः कफ श्वास कुष्ठ दद्रुकृमीन हरेत्

2 हन्त्युष्णं तत्फलं कुष्ठकडूंपद्रुविषानिलान्।
गुल्मकास कृमिश्वासनाशनं कटुकं स्मृतम्।। (भाव प्रकाश)

Scanned by CamScanner

98 पर्णबीज

वैज्ञानिक नाम	:	*Bryophyllum pinnatum* (Lam.) Oken
कुलनाम	:	Crassulaceae
अंग्रेजी नाम	:	Sprout leaf plant
संस्कृत	:	पर्णबीज, अस्थिभक्षका, रक्तकुसुम
हिन्दी	:	जख्मेहयात
बंगाली	:	पथरकुची
पंजाबी	:	जख्मेहयात
तैलगु	:	सिमाजमुदु
कन्नड़	:	गंडुकालिंगा

परिचय

यह बहुवर्षायु पौधा होता है। यह वनस्पति भारतवर्ष के प्रायः सभी उद्यानों में लगाई जाती है।

बाह्य–स्वरूप

इसका कांड पोला, लाल या हरा 3–4 फुट तक ऊंचा होता है। इसके पत्ते अंतर, मांसल, तल प्रदेश के पत्ते साधारण और अग्र भाग के पत्ते संयुक्त जिनमें पत्रकों की संख्या 6–7 तक होती है। प्रत्येक पत्रक विपरीत क्रम में लगते हैं। इसके पत्रों की दंतुरित गोल किनारी की खांच से अंकुरित प्ररोह निकलते है जिससे वंशवृद्धि होती है। पुष्प बड़े नलिकाकार रक्ताभ, हरित एवं नीचे की ओर झुके हुए 2–3 इंच लम्बे होते हैं। इसके पत्रों में बड़ी सुगन्ध आती है।

रासायनिक संघटन

इसमें एक सुगन्धित तेल होता है, जिसका प्रमुख घटक कार्वाक्रोल है।

Scanned by CamScanner

गुण–धर्म

यह पथरी को भेदने वाला, वस्तिशोधक, भेदक तथा त्रिदोष शामक, बवासीर, गुल्म, मूत्रकृच्छ, व्रण रोग को नष्ट करता है। पत्र व्रणरोपक व रक्त स्तंभक होते हैं। इनका प्रयोग रक्तस्राव, चोट, अतिसार, अश्मरी तथा विसूचिका में किया जाता है।' मूत्रकृच्छ और पथरी की यह एक लोकप्रिय औषधि है। पाषाण भेद, अपामार्ग, गोखरू यह सब वात विकार नाशक अश्मरी, शर्करा, मूत्रकृच्छ, मूत्राघात की पीड़ा को शांत करता है।[2]

औषधीय प्रयोग

नेत्रपीडा : इसके पत्तों का रस आंख के चारों ओर लेप करने से सफेद भाग की पीड़ा मिटती है।

शिरोवेदना : शिरोवेदना में इसके पत्रों को पीसकर सिर पर लेप करने से लाभ होता है।

रक्तचाप : इसके हवाई अंगों का 5–10 बूंद सत् रक्तदाब को कम करता है।

दमा : इसकी पत्तियों का 50–60 मिलीलीटर काढ़ा दमा और श्वांस रोग–ग्रस्त व्यक्तियों को पिलाया जाता है।

उदरशूल :

1. बच्चों के पेट की शूल मिटाने के लिए इसके 5 मिलीलीटर पत्तों के रस में आवश्यकतानुसार शक्कर मिलाकर प्रातः–सायं पिलानी चाहिए।
2. इसका 50 मिलीलीटर क्वाथ पिलाने से पेट की पीड़ा मिटती है।
3. इसके पत्तों के 10 मिलीलीटर रस में ½ से 1 ग्राम सौंठ बुरक कर पिलाने से पेट की पीड़ा मिटती है।

मंदाग्नि : इसके पत्तों का 5–10 मिलीलीटर रस दिन में दो बार भोजन से 1 घण्टा पहले पिलाने से पुरानी मंदाग्नि मिटती है।

पथरी : पथरी और मूत्राशय के रोग मिटाने के लिए पाषाण भेद के पंचाग का 40–50 मिलीलीटर क्वाथ दिन में दो बार पिलाना चाहिए।

अश्मरी : इसके 40 मिलीलीटर क्वाथ में 500 मिलीग्राम शिलाजीत और 2 ग्राम मधु मिलाकर प्रातः–सायं पिलाने से पित्ताश्मरी मिटती है।

प्रमेह : इसके पत्तों का 5 मिलीलीटर रस प्रमेह तृषा, आध्मान उदरशूल, श्वास रोग, जीर्ण कास, अपस्मार मूत्र संस्थान अवरोध में लाभकारी है।

मूत्र रोग : पुरूषों के मूत्रसंबंधी रोगों में इसके 40–60 मिलीलीटर क्वाथ में 2 ग्राम मधु मिलाकर प्रातः–सायं पिलाना चाहिए।

योनिस्राव : स्त्रियों की योनिस्राव में इसके 40–60 मिलीलीटर क्वाथ में 2 ग्राम दिन में दो बार मधु मिलाकर सेवन करना चाहिए।

रक्तातिसार : इसके पत्रों का स्वरस 3–6 ग्राम, इसमें जीरा तथा दुगने प्रमाण में घी मिलाकर दिन में तीन बार सेवन करने रक्तस्राव बंद हो जाता है।

मूत्रकृच्छ : अश्मरी जन्य मूत्रकृच्छ में इसकी मूल का 40 मिलीलीटर क्वाथ दिन में दो बार पिलाना लाभकारी है।

रक्त कैंसर : इसके हवाई अंगों का 5–10 बूंद सत् रक्त कैंसर में भी लाभदायक है।

हैजा : विसूचिका में इसके पत्रों का 5–10 ग्राम स्वरस पीने से लाभ होता है।

व्रण : चोट, मोच, व्रण, फोड़े तथा कीटदंश में इसके पत्रों को थोड़ा सा गरम करके, कूटकर रोगग्रस्त भाग पर बांधने से सूजन, रक्तिमा तथा वेदना कम होकर लाभ होता है।

घाव : पत्रों को थोड़ा सा गरम करके मसलकर घाव पर बांधने से घाव जल्दी भर जाते हैं और बाद में निशान तक नहीं छोड़ते।

विशेष : इसके पत्तों के रस का अधिक मात्रा में सेवन करने से नशा हो जाता है।

1. अश्मभेदो हिमस्तिक्तः कषायो बस्तिशोधनः।।
भेदनो हन्ति दोषार्शो गुल्म कृच्छाश्महृद्रुजः।
योनिरोगान्प्रमेहांश्च प्लीहशूल व्रणानि च।। (भाव प्रकाश)

2. वीरतरूसहचरद्वय दर्मवृक्षादनी गुन्द्रानल कुशकाशा श्म.....।। (सुश्रुत)

Scanned by CamScanner

वैज्ञानिक नाम	:	*Ficus religiosa* L.
कुलनाम	:	Moraceae
अंग्रेजी नाम	:	Peepal tree, Sacred fig, The Holy big tree
संस्कृत	:	बोधिद्रु, अश्वत्थ, पिप्पल, चलपत्र, गजाशन
हिन्दी	:	पीपल
गुजराती	:	पीपलो
मराठी	:	पिंपल
बंगाली	:	अश्वत्थ
पंजाबी	:	पीपल
तेलगु	:	रावीचेट्टु
तमिल	:	अश्वत्थम, अरशम्भर
कन्नड	:	अश्वत्थ

परिचय

सर्वत्र उपलब्ध, भारतीय धर्म शास्त्रों में वर्णित और चर्चित, पीपल का वृक्ष सच में केवल वृक्ष नहीं ये तो पूरा शिवाला है। सदा सरल आडम्बरहीन, अवधूत पंथ के जोगी सा, पीता है विष का प्याला, बदले में अमृत देता है। यह शुद्ध सात्विक, भूषणहीन, 24 प्रहर विश्वास करता है, अर्थात प्राणवायु छोड़ता है और विषैली कार्बन डाइआक्साईड सोखता है। इसकी छाया बहुत शीतल होती है।

बाह्य–स्वरूप

इसका वृक्ष बहुवर्षायु, पुराने वृक्ष की छाल फटी, श्वेत धूसर होती है। पत्र सिरायुक्त चिकने लट्वाकार नीचे को लटके रहते हैं। फल वृन्त गोलाकार, आधा इंच व्यास के पकने पर बैंगनी या काले हो जाते हैं।

रासायनिक संघटन

इसकी छाल में टैनिन होता है।

गुण–धर्म

यह वर्ण्य अर्थात शरीर की रंगत को निखारने वाला, व्रणरोपण, वेदनास्थापन, शोथ हर तथा रक्तशोधक है। इसके लेप से घाव जल्दी भर जाते हैं। पीड़ा शांत होती है, सूजन मिटती है तथा

Scanned by CamScanner

रक्त शुद्ध होता है।[1] इसकी छाल मधुर, कषाय, शीतल, कफघ्न, स्तंभन, रक्त संग्राहक, गर्भस्थापन, मूत्रल, संकोचक और व्रणरोपण है, यह रक्तपित्तशामक एवं योनि दोष दूर करता है।[2] मृदु, विरेचक, स्नेहन और अनुलोमन है। मधुर रस होने से यह गर्भस्थापन और वाजीकरण है। इसका पत्र व्रणरोपण होता है एवं मूल गर्भस्थापन तथा वाजीकरण है।

औषधीय प्रयोग

आंख का दर्द : इसके पत्तों की जड़ में से जो दूध निकलता है उसको आंख में लगाने से आंख का दर्द मिट जाता है।

पागलपन : इसकी 6 छोटी-छोटी डालियां को उबालकर पिलाने से पागलपन में लाभ होता है।

दंतरोग : इसकी और वट वृक्ष की छाल दोनों को समान मात्रा में मिलाकर जल में पकाकर कुल्ले करने से दंत रोग मिटते हैं।

दातुन : पीपल की ताजी टहनी से प्रतिदिन दातुन करने से दांत मजबूत होकर मंसूड़ों की सूजन खत्म होती है एवं मुंह में आने वाली दुर्गंध भी खत्म हो जाती है।

हकलाहट : पके फलों का चूर्ण आधी चम्मच की मात्रा में शहद के साथ सुबह-शाम सेवन करने से हकलाहट में लाभ होगा और वाणी में सुधार होता है।

खांसी : कुक्कुर खांसी में छाल का 40 मिलीलीटर क्वाथ या स्वरस दिन में तीन बार देने से लाभ होता है।

दमा:

1. पीपल की छाल और पके फल का चूर्ण समभाग मिलाकर पीस लें, आधा चम्मच की मात्रा में दिन में तीन बार सेवन करने से दमे में लाभ होता है।
2. इसके सूखे फलों को पीसकर 2-3 ग्राम की मात्रा 14 दिन तक जल के साथ सुबह-शाम देने से श्वास मिटता है।

तृषा : इसकी 50-100 ग्राम छाल के धुओं रहित कोयलों को पानी में बुझा उस पानी को निथार के पिलाने से वमन और तृषा मिटती है।

चर्मरोग : पीपल की कोमल कोपलें खाने से खुजली और त्वचा पर फैलने वाले चर्मरोग नष्ट हो जाते हैं। इसका 40 मिलीलीटर काढ़ा बनाकर पीने से भी यही लाभ होता है।

हिचकी : इसकी 50-100 ग्राम छाल के कोयलों से बुझे हुए पानी को पीने से हिचकी बंद होती है।

अरूचि : इसके पके फलों के सेवन से कफ, पित्त, रक्त दोष, विष दोष, दाह, वमन तथा अरूचि का नाश होता है।

उदरशूल : उदरशूल मिटाने के लिए पीपल के ढाई पत्ते पीसकर 50 ग्राम गुड़ में गोली बनाकर दिन में 3-4 बार खाना चाहिए।

बद्धकोष्ठ :

1. इसके 5-10 फल नियमित खाने से बद्धकोष्ठ मिटता है।
2. इसके पत्ते और कोमल कोपलों का 40 मिलीलीटर क्वाथ पिलाने से विरेचन लगता है।

रक्त अतिसार : रक्त अतिसार में इसकी कोमल टहनियां, धनियां के बीज तथा मिश्री समभाग मिलाकर 3-4 ग्राम नियमित प्रात:-सायं सेवन करने से लाभ होता है।

मुत्रविकार : इसकी छाल का क्वाथ या फांट पिलाने से मूत्रकृच्छ मिटता है।

उपदंश : उपदंश में इसके कांड की 50 ग्राम सूखी छाल की राख, उपदंश पर बुरकने से उपदंश शुष्क होकर ठीक हो जाते हैं।

बांझपन : इसके सूखें फलों के 1-2 ग्राम चूर्ण की फंकी कच्चे दूध के साथ मासिक धर्म के शुद्ध होने के पश्चात् 14 दिन तक देने से स्त्री का बांझपन मिटता है।

वाजीकरण :

1. इसके फल का चूर्ण आधा चम्मच की मात्रा में दिन में तीन बार दूध के साथ सेवन करते रहने से नपुसंकता दूर होकर, बल, वीर्य तथा पौरूष बढ़ता है।
2. फल, मूल, त्वक तथा शुंठी समभाग 5 ग्राम की मात्रा से सिद्ध दूध का मिश्री और मधु मिलाकर नियमित सुबह-शाम सेवन करते रहें।

पीलिया : पीपल के 3-4 नये पत्रों को पानी से घोलकर मिश्री के साथ खरल में खूब घोंटे। इन्हें बारीक पीसकर 250 ग्राम पानी में घोलकर छान लें। यह शर्बत रोगी को 2-2 बार पिलायें। 3-5 दिन प्रयोग करें। पीलिया रोग के लिए अनुभूत राम बाण औषधि है। अवस्थानुसार पत्तों का प्रयोग करें।

पीपल की छाल

Scanned by CamScanner

प्लीहा शोथ : इसकी 10–20 ग्राम छाल को जलाकर उसकी राख में समान भाग कलमी शोरा मिलाकर इस चूर्ण को एक पके हुए केले पर छिड़ककर एक रोज खाने से तिल्ली की सूजन मिटती है। इसकी छाल का 40 मिलीलीटर काढ़ा पिलाने से पित्तज और नील प्रमेह मिटता है।

पोलियो : पोलियो रोग में पीपल के 2–2 ताजे पत्तों को इतने ही लिसोढे के पत्रों के साथ घोंटकर, छानकर नमक के साथ नित्य लेने से अतिशीघ्र लाभ होता है।

रक्त विकार : वातरक्त आदि रक्त विकारों में छाल का 40 मिलीलीटर क्वाथ में 5 ग्राम मधु मिलाकर सुबह–शाम पिलाते हैं। रक्तपित्त में छाल तथा फल का क्वाथ देते हैं।[1]

खाज–खुजली :

1. खाज, खुजली में 50 ग्राम पीपल की छाल की राख तथा आवश्यकतानुसार चूना व घी मिलाकर अच्छी प्रकार से खरल कर लेप करने से लाभ होता है।
2. इसकी छाल का 40 मिलीलीटर क्वाथ नियमित प्रातः–सायं पिलाने से खुजली मिटती है।

रक्तपित्त : फल का चूर्ण और मिश्री समभाग मिलाकर 1 चम्मच की मात्रा में दिन में तीन बार शीतल जल से लेने पर कुछ ही दिन में रक्त पित्त में लाभ होता है।

रक्त शुद्धि : इसके 1–2 ग्राम बीजों का चूर्ण मधु के साथ सुबह–शाम चटाने से रक्त शुद्ध होता है।

सर्प दंश : सर्प दंश में जब तक चिकित्सक उपलब्ध न हो, पीपल के पत्तों का रस 2–2 चम्मच की मात्रा में 3–4 बार पिलायें और मुंह में पत्ते चबाने के लिए देते रहें, विष का प्रभाव कम होगा।

फुंसी :

1. इसकी छाल को जल में घिसकर फोड़े फुन्सियों पर लगाने से वे जल्दी ठीक हो जाती हैं। पित्तशोथ मिट जाती है।
2. फोड़ों को पकाने के लिए इसकी छाल का पुल्टिस बांधना चाहिए।

अग्नि दग्ध : अग्नि से जले हुए व्रणों पर इसकी सूखी छाल का चूर्ण घी में पकाकर व्रणों पर लगाना चाहिए।

घाव :

1. पीपल की छाल का महीन चूर्ण, चोट पर लगाने से रक्तस्राव बंद होकर घाव शीघ्र भर जाता है।
2. सड़े हुए तथा न भरने वाले घावों पर पीपल की अंतर छाल को गुलाब जल में घिसकर लगाने से घाव जल्दी शुद्ध होकर भर जाते हैं। भगंदर और कंठमाला में भी इससे लाभ होता है।

जीर्ण घाव : इसकी नरम कोपलों को जलाकर कपड़े में छानकर, पुराने बिगड़े हुए फोडों पर बुरकाने से लाभ होता है।

स्नायुक : इसके पत्तों को गरम करके बांधने से स्नायुक गल जाती है। इसके 21 कोमल पत्ते पीस, गुड़ में गोलियां बनाकर 7 दिन सुबह–शाम खिलाने से चोट की पीड़ा मिटती है।

बद : इसके पत्ते गरम करके, सीधी ओर से बांधने पर बद बैठ जाती है।

बिवाई : हाथ पांव फटने पर पीपल के पत्तों का रस या दूध लगायें।

विस्फोटक : इसके कोमल पत्रों को गेहूं के गीले आटे में पीसकर इसका लेप चर्म सूजन तथा विस्फोटक पर लगाने से लाभ होता है।

अन्य प्रयोग : इसमें से निकलने वाली लाख कडुवी, स्निग्ध, लघु, बल्य, भग्न संधानकारक वर्णप्रद एवं शीतल है। इसके सेवन से पित्त, विष, रक्त विकार, विषमज्वर, खांसी, कुष्ठ, व्रण, त्वचा रोग एवं दाह का नाश होता है।

परमपूज्य स्वामी रामदेव जी का स्वानुभूत प्रयोग

पीपल के ताजे पत्ते लेकर कूट–पीसकर रस निकाल लें। 5–5 बूंद नासिका में टपका देने से शीघ्र ही नकसीर बंद हो जाती है। 10–15 मि०ली० स्वरस में थोडी मिश्री मिलाकर पीने से भी लाभ मिलता है।

1. पिप्पली दुर्जरः शीतः पित्तश्लेष्मव्रणास्रजित्।
गुरुस्तुवरको रूक्षो वर्ण्यो योनिविशोधनः।। (भाव प्रकाश)
2. पिप्पलः सुमधुरस्तु कषायः शीतलश्चकफपित्तविनाशी।
रक्तदाहशमनः स हि सद्यो योनिदोषहरणः किल पक्वः।। (रा०नि०)
3. बोधिद्रुयकषायं तु पिवेत्तंन्मधुना सह।
वातरक्तं जयत्याशु त्रिदोषमपि दारुणम्।। (चरक)

Scanned by CamScanner

पिप्पली

100

वैज्ञानिक नाम	:	*Piper longum* L.
कुलनाम	:	Piperaceae
अंग्रेजी नाम	:	Long pepper
संस्कृत	:	पिप्पली, वैदेही, मागधी, कृष्णा, चपला, कणा
हिन्दी	:	पीपल
गुजराती	:	पीपल
मराठी	:	पिपली
पंजाबी	:	मघाँ
तेलगु	:	पिप्पलु
तमिल	:	तिप्पिली
कन्नड़	:	हिप्पली
अरबी	:	दार–फिल–फिल
फारसी	:	फिलफिल–दराज

परिचय

वैदेही, कृष्णा, मागधी, चपला आदि पवित्र नामों से अलंकृत, सुगन्धित पिप्पली भारतवर्ष के उष्ण प्रदेशों में उत्पन्न होती है। राजनिघंटुकार ने इसकी चार जातियों का वर्णन किया है, परन्तु व्यवहार में छोटी और बड़ी दो प्रकार की पिप्पली ही आती है। बड़ी पिप्पली मलेशिया, इंडोनेशिया और सिंगापुर से आयात की जाती है, परन्तु छोटी पिप्पली भारतवर्ष में प्रचुर मात्रा में उत्पन्न होती है। इसका वर्षा ऋतु में पुष्पागम होता है तथा शरद ऋतु में इसकी बेल फलों से लद जाती है। बाजारों में इसकी जड़ पीपलामूल के नाम से मिलती है।

बाह्य–स्वरूप

वैदेही की कोमल कांड युक्त वल्लरी अन्य पादपों का आश्रय लेकर या भूमि पर पसरकर वृद्धि को प्राप्त होती है। शाखाएं सूक्ष्म रोमश, पत्र 2–4 इंच लम्बे, डेढ़ से दो इंच तक चौड़े, हृदयाकार, एकान्तर, ताम्बूल पत्र सदृश, चिकने कोमल और अग्रभाग पर नुकीले होते हैं। पत्र में पांच स्पष्ट शिराएं होती हैं। मध्य की तीन शिराएं आपस में मिल जाती हैं और पार्श्व की मध्य तक रह जाती है। पुष्प एकलिंगी तथा अलग–अलग लताओं पर खिलते हैं। फल लम्बा, शुंडाकार, पकने पर हल्का लाल और सूखने पर कृष्णाभ धूसर वर्ण का हो जाता है। फलों को ही पिप्पली कहते हैं।

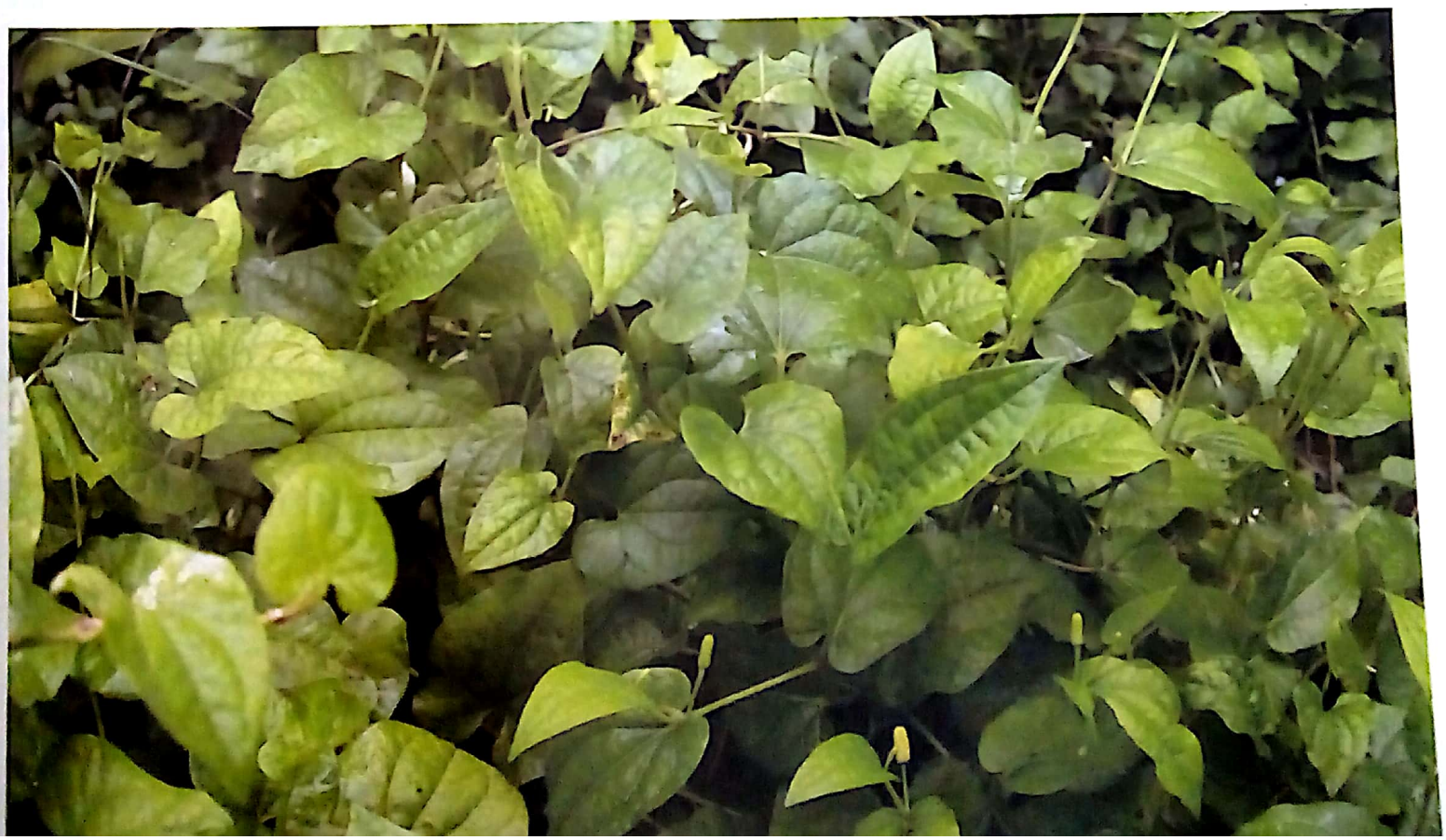

Scanned by CamScanner

पिप्पली की जड़ काष्ठमय, ग्रंथिल, कड़ी, भारी, कृष्णाभ धूसर वर्ण की तथा तोड़ने पर अंदर से श्वेत रंग की दिखती हैं। इसी से शाखाएं या उपमूल निकलकर भूमि पर फैलती है। मूल जितना अधिक वजनदार और मोटा हो, उतना ही अधिक गुणदायक माना जाता है। पिप्पली की अपेक्षा यह सौम्य किन्तु अधिक वीर्यवान एवं उत्तेजक है।

रासायनिक संघटन

इसमें एक उड़नशील, सुगन्धित तेल पाइपरीन, पिपलाटिन, सिसेनिन तथा पिपला-स्टिरॉल पाये जाते हैं। पिप्पली मूल में पाइपरिन, पिपलार्टिन, पाइपरलौंगुमिनिन एक स्टिरॉयड तथा ग्लाइकोसाइड पाये जाते हैं।

गुण-धर्म

पिप्पली हल्की, स्निग्ध, कटु स्वाद, तीक्ष्ण व किन्चित उष्ण है।[1] आर्द्र पिप्पली भारी, मधुर रस, शीतल व कफ कारक है।[2] आर्द्र अवस्था में यह पित्त का प्रशमन करती है तो शुष्क अवस्था में पित्त को कुपित करती है।[3] पिप्पली दीपन अर्थात अग्नि को बढ़ाने वाली, वृष्य, पाक से मधुर रसायन और बल्य है।[4] यह मृदु रेचक, श्वांस खांसी, उदर, ज्वर, कोढ, प्रमेह, गुल्म, बवासीर, प्लीहा, शूल तथा आमवात को नष्ट करने वाली है।[5] शुष्क अवस्था में यह कफ वातशामक तथा आर्द्र अवस्था में वातकफ वर्धक और पित्त शामक है।[6] जिस प्रकार काली मिर्च की विशेष क्रिया पाचन तंत्र पर होती है, उसी प्रकार पिप्पली की विशेष क्रिया फेफडों और गर्भाशय पर होती है।[7] शीत प्रधान और कफ प्रधान रोगों में यह विशेष लाभकारी है। यह क्षय रोग नाशक, हिक्का, ज्वरघ्न, कृमिघ्न, रक्तशोधक, रक्त वर्धक, मेध्य, मूत्रल और वातहर है। पिप्पली मूल गर्भाशय संकोचक, जठराग्नि को दीपन करने वाला, कडुवा, चरपरा, उष्ण, पाचक, रूक्ष, लघु, पित्तकारक, भेदक, कफ-वात नाशक, दाह हर तथा प्लीहा, गुल्म, कृमि और श्वास को नष्ट करने वाला है।[8,9]

औषधीय प्रयोग

शिर शूल :

1. पिप्पली, काली मिर्च, मुनक्का, मुलेठी और सौंठ के समभाग 2 ग्राम चूर्ण को गाय के मक्खन में पकाकर, छानकर, उसका नस्य लेने से सिर पीड़ा नष्ट होती है।
2. पीपली को पानी में पीसकर लेप करने से मस्तक पीड़ा मिटती है।
3. पीपली चूर्ण का नस्य देने से सर्दी की मस्तक पीड़ा मिटती है।

अनिद्रा पर : केवल पिप्पली मूल के महीन चूर्ण को 1-3 ग्राम तक की मात्रा में मिश्री या दुगुने गुड़ के साथ मिलाकर प्रातः-सायं सेवन करते रहने से, पाचन संबंधी विकार दूर होकर अच्छी नींद आने लगती है। नींद के लिए बूढ़े लोग इस योग का प्रयोग विशेष रूप से करते हैं।

आधाशीशी : पीपल और बच का चूर्ण सममात्रा में लेकर 3 ग्राम की मात्रा में नियमित रूप से दो बार दूध या गर्म जल के साथ फंकी लेने से आधाशीशी मिटती है।

पिप्पली मूल

रतौंधी : आंख में पिप्पली का काजल बनाकर लगाने से लाभ होता है।

दृष्टिमांद्य व नेत्र रोग :

1. पिप्पली के खूब महीन चूर्ण को सलाई से आंखों में मांजते रहने से नेत्रों की धुंध, रतौंधी व जाला आदि रोगों मे लाभ मिलता है।
2. पिप्पली एक भाग और हरड़ दो भाग दोनों को एकत्र जल के साथ खूब महीन पीसकर बत्तियां बनाकर नेत्रों में फेरते रहने से भी तिमिर, नेत्रकण्डू, नेत्रस्राव आदि विकार दूर होते हैं।
3. रतौंधी में पिप्पली को गौ मूत्र में घिसकर नेत्रांजन करने से भी लाभ होता है।

दंतशूल : पिप्पली के 1-2 ग्राम चूर्ण को सैंधा नमक, हल्दी और सरसों का तेल मिलाकर दांत पर लगाने से दंतशूल मिटता है।

कर्णशूल : पिप्पली चूर्ण को निर्धूम अंगारे पर रखने से धुंआ निकले उसे किसी नली द्वारा कान में प्रविष्ट कराने से कान पक कर होने वाला शूल नष्ट हो जाता है।

प्रतिश्याय व स्वर भंग पर : पीपल, पीपलामूल, काली मिर्च और सौंठ समभाग का चूर्ण 2 ग्राम की मात्रा में शहद के साथ चटाते रहने से अथवा पिप्पली के क्वाथ में शहद मिलाकर थोड़ा-थोड़ा पिलाने से प्रतिश्याय में लाभ होता है।

श्वास कास :

1. एक ग्राम पिप्पली चूर्ण को दोगुना शहद में मिलाकर चाटने से श्वास कास, हिक्का, ज्वर, स्वरभंग व प्लीहा रोग में लाभ होता है।[10] यह मधु पिप्पली योग कफरोग में बहुत लाभकारी है।
2. इसके 1 ग्राम चूर्ण के साथ समभाग त्रिफला मिलाकर दिन में तीन बार सुबह खाली पेट व दोपहर रात्रि को भोजन से आधा

Scanned by CamScanner

धनिया पहले शहद मिलाकर भोजन के समय चाटने से हिक्का, श्वास कफ, ज्वर और पीनस का नाश होता है।

3. श्वास रोग में इसकी मूल के 3 ग्राम चूर्ण को मधु के साथ, दिन में तीन बार चटाने से लाभ होता है।

4. कास, श्वास, हिक्का और वमन पर पिप्पली, आमला, मुनक्का, बंसलोचन, मिश्री व लाख समभाग लेकर सबको पीसकर 3 ग्राम चूर्ण, 1 ग्राम घी और 4 ग्राम शहद में मिलाकर दिन में तीन बार नियमित 10–15 दिन लेने से शुष्क खांसी नष्ट होती है।

5. पिप्पली चूर्ण 2 ग्राम तथा मोरपंख की भस्म 300 मि०ग्रा० मिलाकर, शहद के साथ बार–बार चाटने से प्रबल हिचकी, अत्यन्त बढ़ा हुआ खास और दुःसाध्य वमन में लाभ होता है।

6. पिप्पली को तिल के तेल में भूनकर पीस लें। उसमें मिश्री मिलाकर रख लें, इसे 1/2 से 1 ग्राम तक कटेली के 40 मिलीलीटर क्वाथ में मिलाकर पीने से कफज कास में विशेष लाभ होता है।

7. पिप्पली, पीपलामूल, सौंठ और बहेडा समभाग लेकर चूर्ण बना लें। इसे 3 ग्राम तक, दिन में 3 बार शहद के साथ चटाने से खांसी नष्ट होती है। विशेषकर पुरानी खांसी व बार–बार होने वाली खांसी में यह अत्यन्त लाभप्रद है।

8. पिप्पली के 3–5 ग्राम कल्क को घी में भूनकर सैंधा नमक और शहद मिलाकर सेवन करने से कफज कास दूर होती है।

परमपूज्य स्वामी रामदेव जी का स्वानुभूत प्रयोग:

छोटी पिप्पली 1 नग लेकर गाय के दूध में 10–15 मिनट उबालें। उबालकर पहले पिप्पली खाकर ऊपर से दूध पी लें। अगले दिन 2 पिप्पली लेकर दूध में अच्छी तरह उबालकर पहले पिप्पली खा लें, फिर दूध पी लें। इस प्रकार 7 से 11 पिप्पली तक सेवन करके पुनः क्रमशः कम करते जाये अर्थात जिस तरह एक–एक पिप्पली बढ़ाई थी, वैसे ही एक–एक पिप्पली कम करते हुऐ 1 नग पर वापस लौट आयें। यदि अधिक गर्मी न लगे तो अधिकतम 15 दिन में 15 पिप्पली तक भी इस कल्प में ले सकते हैं। यह कल्प कफ, अस्थमा, नजला, जुकाम, व पुरानी खांसी में लाभप्रद है। इससे मंदाग्नि, गैस, अपचन आदि रोग भी दूर हो जाते हैं। यह पिप्पली युक्त दूध प्रातः काल सेवन करे। दिन में सादा आहार लें। घी, तेल व किसी प्रकार की खट्टी चीज ना लें।

दुग्ध वृद्धि के लिए :

1. पिप्पली फल का चूर्ण 2 ग्राम, शतावर आधा चम्मच की मात्रा में शहद के साथ सुबह–शाम सेवन करके बाद में दूध पीने से प्रसूता के स्तनों में दूध की वृद्धि होती है।
2. पिप्पली, सौंठ और हरड़ के चूर्ण समान मात्रा में लेकर लगभग 3 ग्राम चूर्ण को गुड़ में मिलाकर, उसमें थोड़ा घी मिलाकर, दूध के साथ दिन में दो बार खिलाने से माताओं का दूध बढ़ जाता है। यह प्रयोग लगभग दो माह तक करें।

हृदय रोग :

1. पीपलामूल और छोटी इलायची, बराबर–बराबर लेकर, महीन

चूर्ण बनाकर 3 ग्राम तक की मात्रा में घी के साथ प्रातः–सायं सेवन करने से कब्ज, हृदय रोग शीघ्र नष्ट होता है।

2. पिप्पली चूर्ण में बिजौरे नींबू की जड़ की छाल का चूर्ण बराबर मात्रा में मिलाकर प्रातः काल खाली पेट 3 ग्राम चूर्ण, अर्जुन के काढ़े के साथ सेवन करने से हृदयशूल तथा दुःसाध्य हृदय रोग नष्ट होता है।
3. पिप्पली चूर्ण 1 ग्राम की मात्रा में नियमित रूप से मधु मिलाकर सुबह सेवन करने से, कोलेस्ट्राल की मात्रा नियमित होकर, दिल की कमजोरी दूर हो जाती है।

हिचकी :

1. पिप्पली व मुलेठी का चूर्ण समभाग एकत्र कर उसमें चूर्ण के समभाग शक्कर मिलाकर रखें। 3 ग्राम की मात्रा में लेकर बिजौरे नींबू के रस को पानी में डालकर पीने से हिचकी दूर होती है। यह योगवमन को भी नष्ट करता है। यह प्रयोग शहद के साथ सेवन करके उपर से जल पीने से भी लाभ होगा।
2. पिप्पली चूर्ण में समभाग शक्कर मिलाकर पानी के साथ

Scanned by CamScanner

फांकने से भी हिक्का में लाभ मिलता है।

उदावर्त : पीपलामूल को पीसकर दूध और अङ्डूसे के रस में मिलाकर पीने से उदावर्त मिटता है।

संग्रहणी : पिप्पली, भांग और सौंठ का समभाग चूर्ण 2 ग्राम की मात्रा में शहद के साथ दिन में दो या तीन बार भोजन से पहले सेवन करते रहने से भयंकर संग्रहणी व आंव भी नष्ट होती है।

जीर्ण अतिसार या प्रवाहिका : पिप्पली को पीसकर 2 ग्राम की मात्रा में बकरी के दूध के साथ या गाय के दूध के साथ देने से पुरानी प्रवाहिका मिटती है। यह प्रयोग सुबह खाली पेट करना चाहिए।

मरोड़ : पीपल और छोटी हरड़ बराबर–बराबर मिलाकर, पीसकर एक चम्मच की मात्रा में सुबह–शाम गर्म पानी से सेवन करने से पेट दर्द, मरोड़ चिकने व दुर्गन्ध युक्त दस्त के बार–बार लगने में आराम मिलेगा।

उदरशूल : पीपल के 2 ग्राम चूर्ण में 2 ग्राम काला नमक मिलाकर गर्म जल के साथ फंकी देने से उदरशूल मिटता है।

उदररोग : पिप्पली एक भाग, सौंठ एक भाग और काली मिर्च 1 भाग, तीनों को बराबर–बराबर मिलाकर, महीन पीसकर 1 चम्मच चूर्ण गरम जल के साथ भोजन के पश्चात दो बार नियमित रूप से कुछ दिन तक सेवन करने से उदररोग शांत होता है।

पांडुरोग : पांडुरोग, अग्निमांद्य, धातुक्षय में शहद एक भाग, घी 2 भाग, पिप्पली 4 भाग, मिश्री 8 भाग, दूध 32 भाग, दाल चीनी, तमाल पत्र, इलायची, नागकेशर 6–6 भाग, सबको भली प्रकार

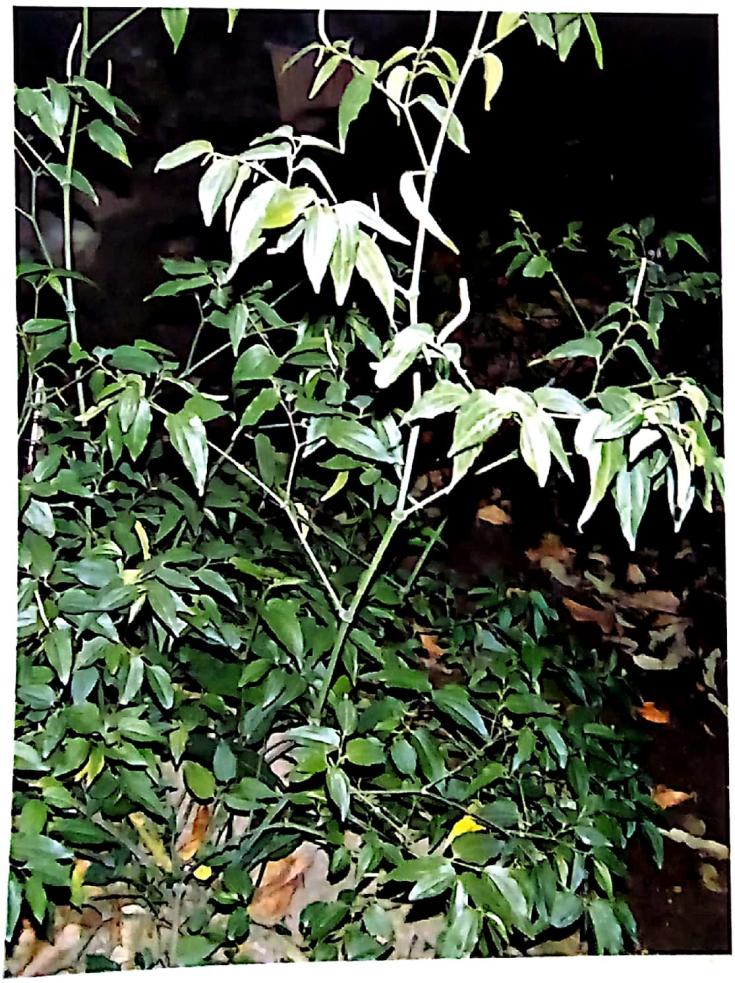

पिप्पली

मसलकर पकाकर लड्डू बना लें। प्रतिदिन एक लड्डू का सेवन करना चाहिए। घी और मिश्री की मात्रा आवश्यकतानुसार बढ़ाकर भी यह प्रयोग किया जा सकता है।

आंत्रवृद्धि : पिप्पली, जीरा, कूठ, बेर और गाय का गोबर समभाग, कांजी के साथ खूब महीन पीस कर लेप करने से लाभ होता है। यह प्रारम्भिक स्थिति में लाभ करता है। अधिक वृद्धि होने पर शल्य कर्म ही आंत्रवृद्धि की चिकित्सा है।

यकृत–प्लीहा वृद्धि :

1. पिप्पली का 2 से 4 ग्राम चूर्ण, 1 चम्मच शहद के साथ सुबह–शाम नियमित देने से यकृत वृद्धि में लाभ होता है।
2. पिप्पली का क्वाथ स्रोतस स्थित कफ और गुरूता को हटाने वाला, अग्निदीपक, वात कफ जन्य रोग को दूर करने वाला तिल्ली तथा ज्वर नाशक है।' इसके लिए पिप्पली 3 ग्राम को 1 गिलास पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष रहने पर छानकर 1 चम्मच शहद मिलाकर सुबह–शाम पीयें।

मंदाग्नि : पीपल और गुड़ का कल्क 250 ग्राम, गाय का घी 1 किलो, बकरी का दूध 4 किलो; न मिलने पर गाय का दूध, चारों को मंदी आंच पर पकायें, जब केवल घी मात्र शेष रह जायें तो इस घी का प्रयोग मंदाग्नि, क्षय तथा कास में करें। मात्रा 1 चम्मच दिन में तीन बार।

अर्श :

1. पिप्पली चूर्ण आधा चम्मच, समभाग भुना जीरा तथा थोड़ा सा सैंधा नमक मिलाकर छांछ के साथ प्रातः खाली पेट सेवन करने से बवासीर रोग में आराम मिलता है।
2. पिप्पली, सैंधा नमक, कूठ और सिरस के बीज समभाग महीन चूर्ण कर उसे सेंहुड (थूहर) या बकरी के दूध में घोटकर लेप करने से अर्श के मस्से नष्ट हो जाते हैं। सेहुण्ड का दूध तीक्ष्ण होता है अतः मस्सों पर सावधानी से लगायें।

मासिक पीड़ा व गर्भधारणार्थ :

1. पिप्पली, सौंठ, मरिच और नागकेशर समभाग, लेकर चूर्ण बना लें। इस चूर्ण को घी में मिलाकर दूध के साथ खाने से बांझ

Scanned by CamScanner

स्त्री के भी सन्तान उत्पन्न हो जाती है।

इससे गर्भाशय गत विकार व शोथ समाप्त होता है। मासिक धर्म के समय होने वाले दर्द व अंतस्रावी ग्रन्थि (हार्मोन्स) के विकार में भी यह लाभप्रद है। दो तीन माह तक प्रातः–सायं सेवन करें।

प्रसव कष्ट : प्रसव कष्ट में शीघ्र प्रसूति के लिए पीपलामूल 3 ग्राम और पुष्करमूल 3 ग्राम कुल 6 ग्राम चूर्ण को लगभग 400 ग्राम पानी में उबालकर 100 ग्राम शेष रहने पर छानकर थोड़ा सा शहद व हींग मिलाकर पिलाने से प्रसव पीड़ा बढ़कर, शीघ्र प्रसूति हो जाती है। प्रसव के पश्चात आंवल गिराने के लिए तुरन्त ही उपरोक्त क्वाथ को ठण्डा करके पिला देना चाहिए।

सूतिका रोग : प्रसूति के बाद अत्यधिक स्राव को बंद करने के लिए पीपली चूर्ण घी में मिलाकर चटाने से लाभ होता है।

गृध्रसी व उरुस्तम्भ :

1. पीपल और सौंठ, दोनों के मिश्रण से सिद्ध किए हुए तेल की मालिश करने से उरुस्तम्भ और गृध्रसी में लाभ होता है।
2. पिप्पली चूर्ण 3 ग्राम को गोमूत्र 100 ग्राम और अरंडी के तेल 10 ग्राम के साथ मिलाकर दिन में दो बार पिलाने से लाभ होता है।
3. पिप्पली फल का आधा चम्मच चूर्ण, 2 चम्मच अरंडी के तेल के साथ सुबह–शाम नियमित सेवन से साइटिका रोग दूर होता है।

विषदंश : पीपल को पीसकर विषैले जंतुओं के डंक पर लगाने से बहुत लाभ होता है।

ज्वर : सूतिका ज्वर, विषम ज्वर, आमवात और कफ ज्वर में पीपल को शहद के साथ दिया जाता है। पीपल चूर्ण आधा चम्मच की मात्रा में सुबह–शाम सेवन करना चाहिए। यह सरल किन्तु अत्यन्त प्रभावशाली है।

बाल रोगों पर :

1. बच्चों के जब दांत निकलते हों, उस समय 1 ग्राम पिप्पली चूर्ण को 5 ग्राम शहद में मिलाकर मसूढ़ों पर घिसने से दांत बिना कष्ट के निकलते हैं।
2. बड़ी पिप्पली को घिसकर लगभग 125 मिलीग्राम की मात्रा में

छोटी पिप्पली

मधु के साथ चटाते रहने से, बच्चों के ज्वर, कास तथा प्लीहा वृद्धि में विशेष लाभ होता है।

3. यदि बालक अधिक रोता है तो उसे पिप्पली और त्रिफला के समभाग मिले हुए चूर्ण को, 200 मि०ग्रा० से एक ग्राम तक की मात्रा में घी और शहद मिलाकर सुबह–शाम चटाना चाहिए।

पीड़ा : शरीर के किसी भी अंग में पीड़ा हो, पिप्पली की जड़ का चूर्ण आधा चम्मच की मात्रा में गरम दूध या पानी से सेवन करने से किसी भी अंग के दर्द में शीघ्र ही आराम मिलता है और नींद भी अच्छी आती है। दूध में आधी चम्मच हल्दी मिलाकर यदि प्रयोग किया जाये तो चोट, मोच के दर्द में भी अत्यन्त लाभ होगा।

विषम ज्वर : पिप्पली मूल के 3 ग्राम चूर्ण को 2 ग्राम घी और 5 ग्राम शहद में मिलाकर दिन में तीन बार चाटने से तथा इसके साथ गाय का गरम दूध पीने से कास सहित विषम ज्वर में तथा हृदयरोग में भी लाभ होता है।

मोटापा : पिप्पली चूर्ण, 2 ग्राम की मात्रा में, मधु मिलाकर दिन में 3 बार कुछ हफ्ते तक नियमित रूप से सेवन करने से मोटापा कम हो जाता है। मोटापा कम करने के लिए पिप्पली चूर्ण के सेवन के एक घंटे तक आवश्यकता होने पर जल को छोड़कर कुछ भी सेवन न करें, निश्चित तौर पर मोटापा कम हो जायेगा।

1. अनुश्णा कटुका स्निग्धा वातष्लेष्म हरी लघुः।
2. आर्द्रा कफप्रदा स्निग्धा षीतला मधुरा गुरूः।
3. आर्द्रा पित्तप्रषमनी सा तु षुश्का पित्त प्रकोपनी।।
4. पिप्पली दीपनी वृश्या स्वादुपाका रसायनी।
5. पिप्पली रेचनी हन्ति वातश्लेश्मोदरज्वरान्। (भाव प्रकाश)
   कुश्ठप्रमेहगुल्मार्षः प्लीहषूलाभमारूतान्।।
6. लेष्मला मधुरा चार्द्रा गुर्वी स्निग्धा च पिप्पली। (चरक)
   सा षुश्का कफवातघ्नी कटुश्णा वृश्यसंमता।।
7. तेशां गुर्वी स्वादुषीता पिप्पल्यार्द्रा कफावता।
   षुश्का कफानिलघ्नी सा वृश्या पित्ताविरोधिनी। (सुश्रुत)
8. दीपनं पिप्पलीमूलं कटूश्णं पाचणं लघु।
   रूक्षं पित्तकरं मेद कफ वातोदरापहम्। (भाव प्रकाश)
   अनाहप्लीहगुल्मघ्नं कृमिष्वासक्षयापहम्।। (चरक)
9. पिप्पलीमूलं दीपनीयपाचनीयानाहप्रशमनानाम्।।
10. क्षौद्रोपकुल्यासंयोगः श्वासकासज्वरापहः।
    प्लीहानं हन्ति हिक्काष्च बालाना नजचा शस्यते।। (भैषज्य रत्नावली)

Scanned by CamScanner

101 पिठवन (पृश्निपर्णी)

वैज्ञानिक नाम	:	*Uraria picta* (Jacq.) Desv. ex DC.
कुलनाम	:	Fabaceae
संस्कृत	:	पृश्निपर्णी, पृथक् पर्णी
हिन्दी	:	पिठवन
गुजराती	:	कुवडियो, पीठवण
मराठी	:	पिठवण
बंगाली	:	शंकरजटा, चाकुले, चाकुलिया
तेलगु	:	कोल्कु पोन्ना

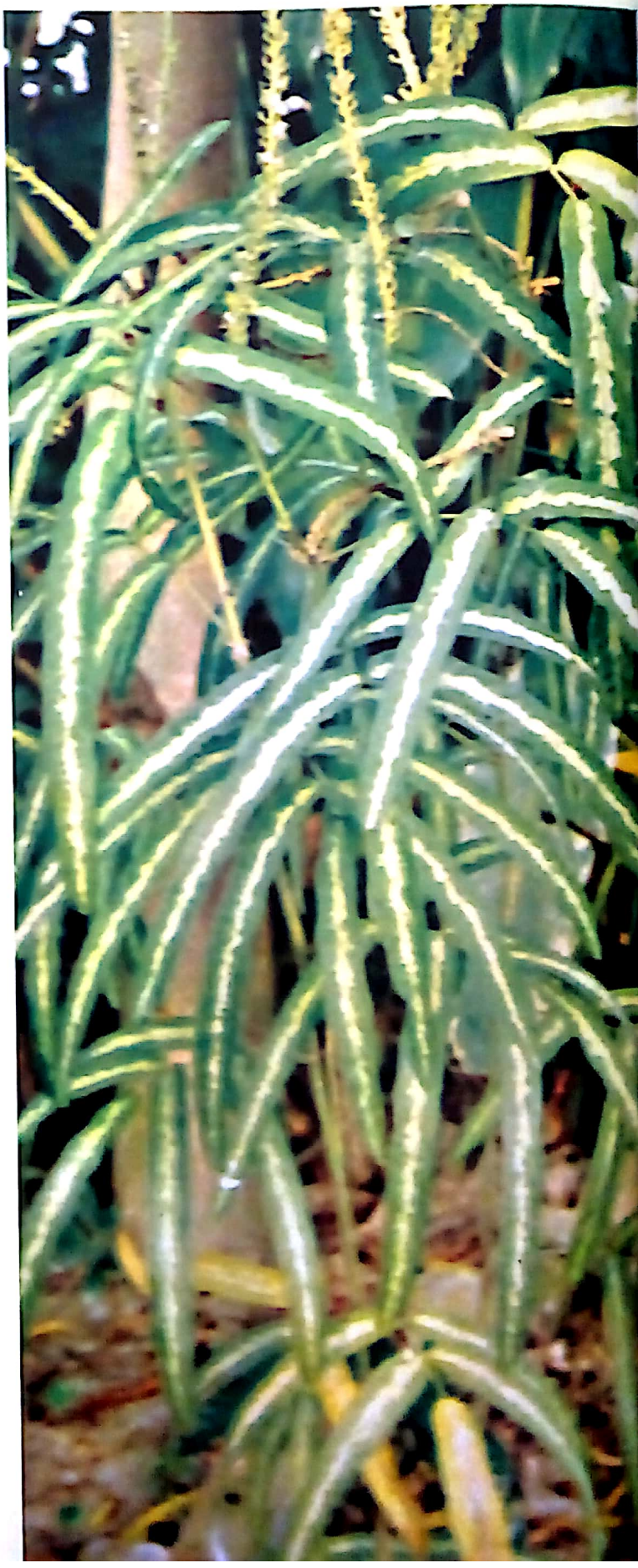

परिचय

पिठवन के पौधे समस्त भारत की ऊसर भूमि तथा जंगल प्रदेशों में, विशेषतः बंगाल तथा हिमालय प्रदेश में 6 हजार फुट की ऊंचाई तक नैसर्गिक रूप से उत्पन्न होते हैं, यूरेरिया पिक्टा के अतिरिक्त पिठवन की *Uraria lagopoides* तथा *Uraria rufescens* आदि जातियां पाई जाती है। दोनों के गुणधर्म समान है, तथा दोनों ही प्रकार के पिठवन दशमूल में लघुपंचमूल के अंग है। इन पर वर्षाकाल में पुष्प तथा शीतकाल में फली आती है।

बाह्य–स्वरूप

पिठवन के बहुवर्षीय पौधे 2–4 फुट ऊंचे, पत्र संयुक्त विभिन्न आकार के, नीचे के पत्ते छोटे, गोलाकार इन पर 3 से 5 पत्रक होते हैं, ऊपर के पत्रक 3–6 इंच लम्बे, रेखाकार सफेद रंग की चौड़ी धारियो से युक्त होते है। पुष्प छोटे, लाल या बैंगनी रंग के, सघन मंजरी में लगते हैं, फल लगने पर ये मंजरिया सियार की पूंछ जैसी दिखती हैं। फली 3–6 पर्वयुक्त, चिकनी प्रायः श्वेत होती है। बीज वृक्काकार, पीताभ होते है।

गुण–धर्म

पिठवन त्रिदोष नाशक, वीर्यवर्धक, गरम, मधुर, दस्तावर और दाहज्वर, रक्त अतिसार, प्यास तथा वमन नाशक है। पृश्निपर्णी रसायन बल्य व स्तम्भक है, ज्वर, प्रतिश्याय, कफ रोग एवं दुर्बलता के लिये प्रयुक्त होती है।[1,2]

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

प्रतिश्याय (जुकाम, नजला) : पिठवन की 10 ग्राम जड़ों को 400 ग्राम पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ को मिश्री मिलाकर पीने से प्रतिश्याय में लाभ होता है।

रक्तार्श : रक्तार्श और शराब की अधिकता से उत्पन्न उपद्रवों में पिठवन और खिरेटी का क्वाथ समभाग 10–20 ग्राम की मात्रा में देना अत्यन्त लाभदायक है।

सूतिकाज्वर : इसकी जड़ों को पीसकर, इसका लेप नाभि बस्ति और योनि पर करने से बच्चा सुख से उत्पन्न हो जाता है, बच्चा होते ही लेप को धो दें।

रक्तप्रदरादिका : पिठवन की जड़ के क्वाथ 10–20 ग्राम को बकरी के 250 ग्राम दूध के साथ पिलाने से लाभ होता है।

भगन्दर :

1. पिठवन के 8–10 पत्तों को पीसकर लेप करना बहुत लाभदायक है।
2. पत्तों के 10 ग्राम स्वरस का नियमित रूप से कुछ दिनों तक सेवन करने से भगन्दर रोग नष्ट होता है।
3. पत्तों में थोड़ा कत्था मिलाकर पीसकर लेप करने से या कत्था तथा काली मिर्च समभाग मिलाकर पीसकर पिलाने से भगन्दर में लाभ होता है।

प्लीहा वृद्धि :

1. इसके पत्ते और जड़ों का रस 10–20 ग्राम की मात्रा में पिलाने से लाभ होता है।
2. पृश्निपर्णी के पंचाग को मोटा–मोटा कूटकर छाया में सुखाकर रखें, प्रात:–सायं 10 ग्राम की मात्रा में लेकर 400 ग्राम पानी में पकायें, जब 100 ग्राम क्वाथ शेष रहे तब छानकर पीयें, इससे प्लीहावृद्धि, जलोदर, यकृत व उदर सम्बन्धित रोगों में लाभ होता है।

अस्थिभग्न : पिठवन की जड़ों का चूर्ण 5 ग्राम की मात्रा में 2 ग्राम हल्दी के साथ 21 दिन तक सेवन करने से लाभ होता है।

विष : वत्सनाभ के विष पर इसके पंचाग का 40 ग्राम तक स्वरस शक्कर मिलाकर देने से लाभ होता है।

ज्वर में : अच्छी तरह से फूले फले पौधे की जड़ों को लाल धागे में बांधकर, मस्तक पर धारण करने से ज्वर छूट जाता है।

1. पृश्निपर्णी त्रिदोषघ्नी वृष्योष्णा मधुरा सरा।
   हन्ति दाहज्वरश्वासरक्तातीसारतृड्वमी।। (भाव प्रकाश)
2. पृश्निपर्णीरसे स्वादुर्लघुष्णाऽस्त्रित्रिदोषजित्।
   कासश्वासप्रशमनी ज्वरतृड्दाहनाशिनी।। (धन्वन्ति)
3. पृश्निपर्णी सांग्राहिकवातहर–दीपनीय–वृष्याणाम्। (चरक)

Scanned by CamScanner

पिया बासा (कटसरैया)

वैज्ञानिक नाम	:	*Barleria prionitis* L.
कुलनाम	:	Acanthaceae
संस्कृत	:	कुरण्टक, पीतकुरव
हिन्दी	:	पिया बासा, कटसरैया
गुजराती	:	काँटासेरियो
मराठी	:	पीवला, कोरंटा, कालसुद
बंगाली	:	पीक, झांटी, गाछ
तेलगु	:	मुल्लुगोरण्ट

परिचय

कटसरैया के बहुशाखी क्षुप, बाग बगीचों में, बाड़ो में खेतों के किनारें कहीं भी देखने को मिल जाते हैं। पुष्प भेद से कटसरैया श्वेत, नीला या बैंगनी, लाल तथा पीला, चार प्रकार का होता है। पीले फूल वाला कटसरैया सर्वत्र सुगमता से उपलब्ध होने के कारण औषध्यार्थ प्रायः इसी का प्रयोग किया जाता है। प्रस्तुत विवरण, विशेषरूप से पीली कटसरैया के विषय में हैं।

बाह्य–स्वरूप

पिया बासा के क्षुप कांटेदार, 2 से 5 फुट ऊंचे होते हैं, शाखायें मूल से निकलती है। पत्र आरम्भ में लम्बे, छोटे, नोंकदार क्रम से स्थित तथा पर्णान्त छोटे होते है। पत्तियों और शाखाओं के बीच से काटों के जोड़े निकलते हैं। पुष्प छोटे किंचित घंटाकार लालिमा युक्त पीले वर्ण के होते है। फल बीज या डोडी भी कांटों से युक्त होती हैं। डोडी 1 इंच लम्बी, चिपटी, द्विकोष्ठीय, प्रत्येक बीज कोष में 1–1 बीज होता है।

गुण–धर्म

उष्ण होने से यह कफ–वातशामक है, इसका लेप शोथहर, वेदनाहर, वेदनास्थापन, व्रणशोधन, कुष्ठघ्न एवं केश्य है। यह नाड़ियो के लिए बलप्रद होता है।

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

दाँत और मसूढ़ो के रोग :

1. दांत और मसूढ़ो मे यदि कीड़े लग गये हो तो इसके 10–12 पत्तों को पानी में उबालकर दिन में कई बार मुख में धारण कर कुल्ले करने से हिलते हुये दांत मजबूत हो जाते हैं, तथा वेदना भी मिट जाती है।
2. मसूढ़े यदि सूज गये हों, खून निकलता हो तो इसके पत्तों के रस मे थोड़ा सैधा नमक मिलाकर, मुख में बार–बार धारण कर कुल्ले करने से लाभ होता है।
3. 50 ग्राम पत्तियों को सैधा नमक के साथ पीस कर मंजन करने से दाढ़ या दांत का दर्द दूर होता है।
4. 5–7 पत्तियों के साथ थोड़ा अकरकरा पीस कर लगाने या दाढ़ के नीचे दबाये रखने से दर्द मिट जाता है। खून निकलना भी बन्द हो जाता है।

खांसी : खांसी में विशेषकर सूखी खांसी में इसके पत्तों का क्वाथ बनाकर 1 या दो चाय के चम्मच में, (आवश्कतानुसार अधिक भी ले सकते हैं) शुद्ध शहद मिलाकर दिन में 2–3 बार पिलाने से तुरन्त आराम हो जाता है।

अतिसार : इसके 10–20 ग्राम क्वाथ में शुंठी चूर्ण बुरक कर पिलाने से बच्चों का अतिसार मिटता है।

उपदंश : 8–10 पत्रों के साथ 2–3 नग काली मिर्च को पीसकर और पानी को छान कर पिलाने से लाभ होता है।

पित्तवृद्धि : पियाबासा के पत्र स्वरस में, तुलसी तथा भांगरे का रस समभाग मिलाकर तथा उसमें दूध और मिश्री मिलाकर पिलाने से लाभ होता है।

शुक्रमेह : सफेद फूल वाली कटसरैया के पत्र स्वरस 5–10 ग्राम में जीरे का 1–2 ग्राम चूर्ण मिलाकर सेवन करने से शुक्रमेह मिटता है।

गर्भधारण : इसकी 10 ग्राम जड़ों को पीसकर गाय के दूध के साथ, स्त्री पुरुष दोनों को तीन दिन तक पिलाने से स्त्री गर्भ धारण करती है।

सूतिका रोग : सूतिका रोग में प्रतिदिन शाम को क्वाथ बनाकर रख दें तथा दूसरे दिन प्रातः काल छानकर थोड़ा छोटी पिप्पली का चूर्ण बुरक कर कुछ दिन पिलाने से सूतिका के सब प्रकार के प्रसूति सम्बन्धी उपद्रव शान्त होते है।

बच्चों के कफ ज्वर में : कफ जन्य ज्वर में 5–10 ग्राम पत्र स्वरस में

थोड़ा शहद मिलाकर दिन में 3–4 बार चटाने से लाभ होता है।

सूजन :

1. इसके 20 ग्राम पंचाग को यवकूट कर आधा किलो पानी में उबालकर क्वाथ बनाकर बफारा देने से सूजन उतरती है।
2. ग्रन्थि शोथ पर इसकी जड़ों को पीसकर गर्म कर बांधने से या लेप करने से लाभ होता है।

व्रण :

1. इसके पत्तों और मूल त्वक को पीसकर, तिल के तेल में मिलाले तथा तेल से दुगना पानी मिलाकर पकायें, जब केवल तेल शेष रह जाये तब छानकर लगाने से, व्रण शीघ्र ठीक हो जाते है। यह तेल दांत की पीडा, दाद, खुजली आदि में भी गुणकारी है।
2. पत्तों की राख को अच्छी तरह कपडे मे छानकर, देसी घी में मिलाकर लगाने से, नही पकने वाले व्रण तथा बिगडे हुये फोड़े भी ठीक हो जाते है।

Scanned by CamScanner

103 पुनर्नवा

वैज्ञानिक नाम	:	*Boerhavia diffusa* L.
कुलनाम	:	Nyctaginaceae
अंग्रेजी नाम	:	Spreading hogweed
संस्कृत	:	पुनर्नवा, शोथघ्नी
हिन्दी	:	गदहपुरना, साठी, गदहबिण्डो
गुजराती	:	साटोडी, बसेडो
तमिल	:	सुकुएट्टि
तेलगु	:	आतावासा, मिदि
पंजाबी	:	इटसिट
मराठी	:	घेटुली
अरबी	:	हन्दकूकी
कन्नड़	:	मुचोहुमोसी

परिचय

पुनर्नवा का बहुवर्षायु क्षुप भारतवर्ष में वर्षा ऋतु में सब जगह उत्पन्न होता है। इसकी दो जातियां लाल और सफेद पाई जाती हैं। इनमें रक्त जाति वनस्पति का प्रयोग अधिकता से औषधि के रूप में किया जाता है। इसका कांड पत्र पुष्प सभी रक्त वर्ण के होते हैं। फलों के पक जाने पर वायवीय भाग सूख जाता है। परंतु मूल भूमि में पड़ी रहती है, जो वर्षा ऋतु में फिर से उग आती है। इसलिए इसका नाम पुनर्नवा है।

बाह्य–स्वरूप

यह बहुवर्षीय प्रसरणशील 2–3 मीटर लम्बा क्षुप कई कोमल शाखाओं और प्रशाखाओं से युक्त, पत्र आधे से एक इंच लम्बे गोल या अंडकार मृदु–रोमश आमने सामने लगे होते हैं। पुष्प छोटे गुलाबी छोटे–छोटे मुण्डकों में प्रायः अवृन्त होते हैं। फल 1/2 इंच लम्बे, पंच रेखीय ग्रंथि युक्त होते हैं। मूल स्थूल दृढ और श्वेत होता है। वर्षाकाल में पुष्प और फल आते हैं।

रासायनिक संघटन

इसमें पुनर्नवीन नामक एक किंचित चरपरा क्षाराभ, पौटेशियम नाइट्रेट, भस्म में क्लोरायड, नाइट्रेट और क्लोरेट पाये जाते हैं।

गुण–धर्म

पुनर्नवा शोथहर, शीतल, हृदयोत्तेजक, शूलहर, मूत्रल है इसका प्रयोग शोथ रोग, हृदय रोग, जलोदर, पांडु और मूत्रकृच्छ तथा वृक्क विकारों में किया जाता है। इसका विशिष्ट प्रभाव गुर्दो और मूत्र वह संस्थान पर पडता है। इसलिए यह मूत्रल और शोथहर है। यह रक्त वह संस्थान और हृदय पर भी अच्छा असर डालती है।

यह मूत्रल, शोथघ्न, विषघ्न, हृद्य, रसायन दीपनीय, व्रणरोपन, व्रणशोथपाचन, वृष्य, रक्त भारवर्धक, अनुलोमन, रेचन, कासघ्न, स्वेदजनन, कुष्ठघ्न, ज्वरघ्न तथा मेदोहर है। पौटेशियम नाइट्रेट की उपस्थिति के कारण यह हृदय की मांसपेशियों की संकुचन क्षमता को बढ़ाता है। दूसरी मूत्रल औषधियां जहां शरीर में पौटेशियम

Scanned by CamScanner

यूरिया की मात्रा का ह्रास करती है, वही पुनर्नवा मूत्रल होने के साथ–साथ पोटेशियम प्रदायक है।

औषधीय प्रयोग

अनिद्रा : पुनर्नवा का क्वाथ 50–100 मि०ली० पिलाने से रोगी को नींद आ जाती है।

नेत्र रोग :

1. इसकी जड़ों को पीसकर घी में मिलाकर अंजन करने से आंख की फूली कट जाती है।
2. इसकी जड़ों को पीसकर शहद में मिलाकर अंजन करने से आंख की लालाई दूर होती है।

आंख की खुजली : इसकी जड़ों को भांगरे के रस के साथ घिसकर आंखों में लगाने से आंखों की खुजली दूर हो जाती है।

तिमिर रोग : इसकी जड़ो को केवल जल के साथ घिसकर आंखों में लगाने से तिमिर रोग दूर हो जाता है।

मुखपाक : मुखपाक में पुनर्नवा की जड़ों को दूध में घिसकर छालों पर लेप करने से लाभ होता है।

हृदय रोग : हृदय रोगों में पुनर्नवा के पत्तों का शाक अत्यन्त लाभकारी है।

उर क्षत : यदि उरः क्षत के रोगी के थूक में बार–बार रक्त आ रहा हो तो 5–10 ग्राम पुनर्नवा मूल तथा शाठी चावलों के चूर्ण को मुनक्का के रस, दूध और घी में पकाकर पीने के लिए रोगी को दें।[2]

कास : इसकी जड़ों के चूर्ण में शक्कर मिलाकर दिन में दो बार खाने से शुष्क कास का नाश होता है।

दमा : पुनर्नवा मूल के तीन ग्राम चूर्ण में 500 मिलीग्राम हल्दी मिलाकर प्रातः–सायं खिलाने से दमा मिटता है।

बच्चों की बीमारी : पुनर्नवा पत्र स्वरस 100 ग्राम, मिश्री चूर्ण 200 ग्राम तथा पिप्पली चूर्ण 12 ग्राम इन तीनों को मिलाकर पकायें, जब चाशनी गाढ़ी हो जाये तो उतारकर बन्द बोतल में भर ले, इस शरबत की 4–10 बूंद तक बच्चों को दिन में तीन बार चटाने से बच्चों की खांसी, श्वास, फुफ्फुस विकार, बहुत लार बहना, जिगर बढ जाना या जिगर की अन्य खराबी, प्रतिश्याय व शीत को प्रभाव सहित अनेक बीमारियों में आराम होता है।

वमन : पुनर्नवा मूल का 2–5 ग्राम चूर्ण अधिक मात्रा में वमनकारी है।

भूख : पुनर्नवा मूल के 3 ग्राम चूर्ण को पीसकर साथ खाने से भूख बढ़ती है।

विरेचक : पुनर्नवा मूल का चूर्ण दिन में दो बार चाय के चम्मच जितनी मात्रा में लेने से मृदु विरेचक का काम करता है।

उदर रोग : पुनर्नवा मूल को गोमूत्र के साथ देने से सब प्रकार के शोथ तथा उदर रोगों का शमन हो जाता है।

मूत्रकृच्छ :

1. इसके 5–7 पत्तों को 2–3 नग काली मिर्च के साथ घोंट छानकर पिलाने से मूत्र वृद्धि होकर मूत्रकृच्छता मिटती है।
2. इसके 5 से 10 मिलीलीटर पत्र रस को दूध में मिलाकर पिलाने से मूत्र की रूकावट मिटती है।
3. पुनर्नवा का पंचांग या मूल का सूखा चूर्ण शोथ, मूत्रकृच्छ तथा हृदय विकार में प्रयोग करना लाभप्रद है। इसकी लगभग 3 ग्राम की मात्रा में मधु या किंचित उष्ण जल से नित्य प्रातः और सायं देना चाहिये।

शरीर पुष्ट : इसको दूध के साथ सेवन करने से शरीर पुष्ट होता है।

प्रदर रोग : पुनर्नवा की 3 ग्राम मात्रा को जलभांगरे के रस के साथ खाने से प्रदर मिटता है।

योनिशूल : स्त्रियों के योनिशूल में पुनर्नवा स्वरस को योनि में लेप करने से लाभ होता है।

सुखप्रसव : पुनर्नवा मूल को तेल में स्निग्ध करके योनि में धारण करने से प्रसव शीघ्र हो जाता है।

ड्रोप्सी : ड्रोप्सी की बीमारी में पुनर्नवा लाभकारी है।

पांडु : पुनर्नवा पीलिया रोग की बहुत गुणकारी औषधि है। पांडु रोग में इसके पंचाग के 10–20 ग्राम रस में हरड़ का 2–4 ग्राम चूर्ण मिलाकर पीने से पीलिया रोग कट जाता है।

वृक्क विकार : इसके 10–20 ग्राम पंचाग का क्वाथ गुर्दे के विकारों को भी दूर करता है।

जलधर : पुनर्नवा के 40–60 ग्राम सूखे फांट में 1–2 ग्राम शोरा डालकर पिलाने से जलधर मिटता है।

प्लीहा : प्लीहा रोग में श्वेत पुनर्नवा की 10–20 ग्राम मूल को तंडुलोदक के साथ पीसकर देने से प्लीहावृद्धि ठीक हो जाती है।

वातकंटक : श्वेत पुनर्नवा मूल को तेल में सिद्ध करके पैरो में मालिश करने से वातकंटक रोग दूर हो जाता है।

आमवात : पुनर्नवा के क्वाथ के साथ कपूर तथा सौंठ के 1 ग्राम चूर्ण को सात दिन तक आमवात में सेवन करने से आमवात के

Scanned by CamScanner

आम का पाचन होता है।[1]

शोथ : पुनर्नवा की जड़, नागरमोथा, प्रत्येक द्रव्य को 10 ग्राम की मात्रा में लेकर इसका कल्क बना ले। इसे 640 ग्राम गाय के दूध में यथाविधि पकाकर वातज शोथ में प्रातः–सायं पीने से लाभ होता है।

सर्वांगशोथ : पुनर्नवा, नीम की छाल, पटोल पत्र, सौंठ, कटुकी, गिलोय, दारूहल्दी, हरड़ मिश्रित 20 ग्राम क्वाथार्थ जल 320 ग्राम, जब चतुर्थांश शेष रह जाये तो इसे छानकर 20 से 30 मि०ली० मात्रा सुबह–शाम पीने से सर्वांग शोथ, उदर रोग, पार्श्वशूल, श्वास, पांडु रोग नष्ट होता है।[2]

सूजन : पुनर्नवा मूल, देवदारु तथा मूर्वा को मिश्रित कर 3 ग्राम की मात्रा आवश्यकतानुसार मधु के साथ देने से गर्भावस्था से उत्पन्न शोथ उतर जाती है।

जलमय शोथ : पुनर्नवा की जड़, चिरायता और शुंठी, तीनों को समान मात्रा में मिलाकर इसकी 20 ग्राम मात्रा लेकर 400 मि०ली० पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष काढ़ा पीने से सर्वांग जलमय शोथ में लाभ होता है।

हड्फूटनी : पुनर्नवा 3 ग्राम की मात्रा को खेर की लुग्दी के साथ खाने से हड्फूटनी मिटती है।

बाइटें : इसकी 25 से 50 ग्राम जड़ों से बना क्वाथ सुबह–शाम पीने से बाईटें मिटते हैं।

कुष्ठ : इसको सुपारी के साथ खाने से कुष्ठ में लाभ होता है।

ज्वर :

1. श्वेत पुनर्नवा मूल की 2 ग्राम मात्रा चातुर्थिक ज्वर में दूध अथवा ताम्बूल के साथ सुबह–शाम दिया जाता है।

पुनर्नवा मूल

2. पुनर्नवा पेशाब की जलन मूत्र मार्ग में संक्रमण के कारण उत्पन्न ज्वर में भी तुरन्त लाभ पहुँचाता है।
3. लाल पुनर्नवा, परवल की पत्ती, परवल का फल, करेला, पाठा, ककोड़ा इन सबका शाक ज्वर में हितकारी होता है।

सर्पविष : यह सभी प्रकार के सर्पविषों का एंटीडोट है।

विद्रधि : श्वेत पुनर्नवा की 5 ग्राम जड़ को 500 ग्राम पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ 20 से 30 मि०ली० मात्रा सुबह–शाम पीने से अपक्व विद्रधि नष्ट होती है।[3]

नारू : पुनर्नवा की जड़ और सौंठ को, पुनर्नवा के ही रस में पीसकर नारू पर बांधने से नारू मिटता है।

बिच्छू दंश :

1. पुनर्नवा के पत्ते और अपामार्ग की टहनियों को पीसकर बिच्छू के डंक पर मसलने से बिच्छू का विष उतरता है।
2. रविवार और पुष्य नक्षत्र के दिन उखाड़ी हुई पुनर्नवा की जड़ को चबाने से बिच्छू का विष उतरता है।

फोड़ा : स्तन के फोड़े पर पुनर्नवा की मूल को छाछ के साथ पीस–कर लेप करने से लाभ होता है।

रसायन प्रयोग :

1. रोगनिवारण के बाद कमजोरी दूर करने के लिये इसे प्रयुक्त किया जाता है। यह एक रसायन है और बलवर्द्धक टानिक है।
2. महिलाओं के लिये सर्वश्रेष्ठ टानिक है।
3. यह हृदय रोगजन्य अस्थमा में अत्यन्त लाभकारी है।
4. 20 ग्राम पुनर्नवा नित्य दूध के साथ 6 मास तक लगातार पीने से आयु बढ़ती है।

अन्य प्रयोग :

1. अनार्तव, गर्भाशय विकार जन्य अनार्तव में इसकी जड़ और कपास की जड़ का फांट देते हैं।
2. इसकी जड़ों का चूर्ण दो ग्राम गाय के दूध के साथ सेवन करने से वृद्ध शरीर भी नवीन हो जाता है।
3. इसकी जड़ों का घनक्वाथ बनाकर समभाग असगंध का चूर्ण मिलाकर मटर जैसी गोलियां बना लें, एक–एक गोली खाकर ऊपर से मिश्री मिला दूध पीने से वीर्य दोष दूर होकर शरीर की झुर्रियां दूर हो जाती है अथवा पंचांग के चूर्ण को दूध और शक्कर के साथ सेवन करें।

प्रमेह : इसके फूलों को सुखाकर चूर्णकर एक ग्राम की मात्रा में लेकर तीन ग्राम मिश्री मिलाकर खाने से ऊपर से दूध पीने से बल बढ़ता है और प्रमेह नष्ट होता है।

1. पटोल पत्र सफल कुलाम पापचेलिकम्।
कर्कोटंक कठिल्ल च पियाचध्हक ज्वरे हितम्।। (चरक)
2. चूर्ण पोनर्नवं रक्तशालि तपुल शर्करम
रक्तष्टीवी पिबेत सिद्ध द्राक्षा रस पयो घृतै।
3. शटी विश्वौषधिकल्कं वर्षाभूक्वाथसंयुतम्।
सप्तरात्रं पिबेज्जन्तुरामवातविनाशनम्।। (भैषज्य रत्नावली)
4. पुनर्नवानिम्ब पटोलशुण्ठीतिक्ताऽमृतादार्वभया कषायः।
सर्वाङ्गशोथोदर पार्श्वशूलकासान्वितं पाण्डुगदं निहंति।।
(भैषज्य रत्नावली)
5. श्वेतवर्षाभुवो मूलं वरुणकस्य च।
जलेन क्वथितं पीतमपक्वं विद्रधिं जयेत्।। (भैषज्य रत्नावली)

Scanned by CamScanner

वैज्ञानिक नाम	:	*Brassica juncea* (L.) Czern. & Coss.
कुलनाम	:	Brassicaceae
अंग्रेजी नाम	:	Indian mustard
संस्कृत	:	राजिका, राजी, आसुरी, तीक्ष्णगंधा
हिन्दी	:	राई
गुजराती	:	राई
मराठी	:	मोहरी
बंगाली	:	राई, सरिशा
तेलगु	:	अबालु
अरबी	:	खदरल, कुब्र
फारसी	:	सर्शप

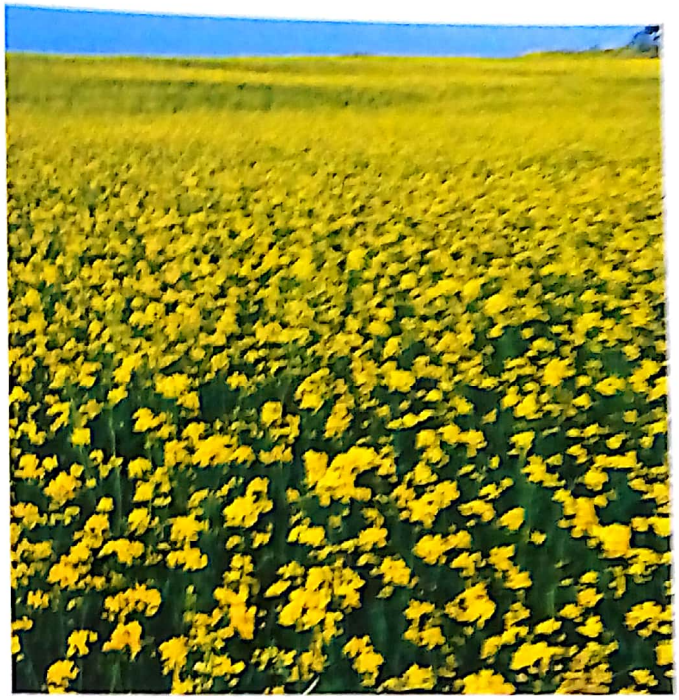

परिचय

राई को समस्त भारतवर्ष में खेती द्वारा उत्पन्न किया जाता है। इससे सब परिचित है। *Brassica integrifolia* नाम से इसकी एक और प्रजाति पाई जाती है।

बाह्य–स्वरूप

इसका क्षुप 2–3 फुट ऊंचा होता है। पत्र दीर्घवृन्तयुक्त गहरे कटे हुए, ऊपरी खण्डित या अखण्ड कभी–कभी 1 फुट तक लम्बे होते है। पत्रवृन्त पर छोटे पत्रक या वर्णक होते है। यह रबी की फसलों के साथ बोई जाती है। पुष्प चमकीले पीले होते हैं। फली 1–2 इंच लंबी, ऊपर से नीचे की और कुछ दबी हुई, अग्रचञ्चु बहुत छोटा ओर लम्बाग्र होता है। बीज रक्ताभ भूरे, सिकुडनयुक्त और सरसों से कुछ छोटे होते हैं।

रासायनिक संघटन

बीज में मायरोसीन, सिनिग्रिन, तेल और सिनपीन प्रभृति द्रव्य पाये जाते हैं।

गुण–धर्म

तीक्ष्ण, गरम, किंचित् रूखी, कफ पित्तनाशक, रक्तपित्त कारक, अग्निवर्धक, तथा कंडू, कुष्ठ, कोष्ठरोग और कृमिरोग को दूर करती है।[1]

विशेष :

अल्प मात्रा में राई का सेवन दीपन पाचन उत्तेजक और पसीना लाने वाला है। इसका अधिक मात्रा में सेवन वामक है। राई का लेप आयुर्वेद चिकित्सा शास्त्र में बहुत प्रसिद्ध है।

पत्तों का शाक :

चरपरा, गरम, बलकारक, स्वादिष्ट, पित्तकारक, कृमिनाशक, वात–कफ नाशक और कंठ रोग को दूर करने वाला है।

तेल :

दीपन, लघु, तीक्ष्ण, वातहर, पुंसत्वनाशक, केश्य, त्वक दोषहर, कफघ्न और मेदोहर है। अर्श, सिर दर्द, कर्णरोग, कंडू, कुष्ठ, कृमि और शीतपित्त को दूर करता है। यह विशेषतः मूत्रकृच्छकारक है।

औषधीय प्रयोग

सन्निपातज भ्रम : इस अवस्था में कंठ पर राई का लेप करें, त्वचा लाल होने पर हटाकर घी, तेल लगा दें।

गाँठ : कुक्षि (बगल) में होने वाली गांठ को पकाने के लिये, गुड़, गुग्गुल और राई को बारीक पीस, जल में मिला, कपड़े की पट्टी पर लेप कर चिपका देवे, गांठ पककर बिखर जाती है।

कर्णमूलशोथ : सन्निपात ज्वर में या कान में पीव होने पर कान के मूल में सूजन आ जाती है, इसमें राई के आटे को सरसों के तेल या एरंड तेल में मिलाकर लेप कर देने से रक्त बिखर जाता है।

Scanned by CamScanner

अंजननाभिका : नेत्र की पलकों पर फुन्सी होने पर, राई के चूर्ण को घी मे मिलाकर लेप करने से, तुरन्त आराम हो जाता है।

पीनस रोग (नाक मे फोडा होना) : राई का आटा 10 ग्राम, कपूर डेढ ग्राम और घी 100 ग्राम, तीनों का मलहम बनाकर लगाने से, छींकें आकर पीब, कफ आदि निकलकर जख्म शुद्ध हो जाता है। अब इस पर कपूर और सफेद कत्थे को घी से मिलाकर मलहम बनाकर लगाने से जख्म शीघ्र भर जाता है।

दन्तशूल : राई को निवाये जल में मिलाकर कुल्ला करने से वेदना शांत होती है

सिरगंज : राई के हिम या फांट से सिर धोने से बाल गिरने बन्द हो जाते है। तथा सिर में जुंए, फुंसी, तथा खुजली आदि रोग दूर हो जाते है।

सिर दर्द : ललाट पर राई का लेप लगायें।

प्रतिश्याय : राई 500 से 750 मिलीग्राम, शक्कर 1 ग्राम दोनों को मिलाकर थोडे जल के साथ देने से प्रतिश्याय दूर हो जाता है।

श्वांस : 500 मिलीग्राम राई चूर्ण को घी तथा मधु मिलाकर, सुबह–शाम चटाने से कफ प्रकोप के साथ–साथ श्वांस रोग का भी शमन हो जाता है।

हृदरोग : हृदय की शिथिलता में हृदय में कम्प या वेदना हो, व्याकुलता व बैचेनी हो, कमजोरी महसूस होती है, तब हाथ–पैरों पर राई के चूर्ण की मालिश करने से लाभ होता है।

हैजा:

1. हैजे में जब रोगी को बहुत उल्टी दस्त होते हो तो राई के लेप से उल्टी दस्त बन्द हो जाते है।
2. किसी भी प्रकार के उल्टी दस्त राई के लेप से बन्द हो जाते हैं।

अर्श : मस्सों में खुजली लगती हो, देखने में मोटे और स्पर्श करने में दुःख न होता हो, छूने पर अच्छा लगता हो, राई का तेल लगाने से ऐसे मस्से मुरझा जाते हैं।

अपचन और उदरशूल : राई का 1 से 2 ग्राम चूर्ण, शक्कर मिलाकर फांक लें, ऊपर से आधा कप जल पी लें।

अफारा : 2 ग्राम राई को शक्कर मिलाकर फंकी लें तथा ऊपर से 750 मिलीग्राम से 1 ग्राम चूने को आधा कप जल में मिलाकर पिलाने से आफारा दूर होता है।

राई दाना

हैजा : हैजे की प्रारम्भिक अवस्था में 1 ग्राम राई को शक्कर के साथ सेवन कराने से लाभ होता है।

मासिक धर्म की रूकावट : मासिक धर्म की रूकावट में, मासिक धर्म में कष्ट होता है या स्राव कम होता हो, तब निवाये जल में राई का चूर्ण मिलाकर, उसमें रोगी स्त्री को कमर तक डूबे जल में बिठाने से लाभ होता है।

गर्भाशय कर्कटार्बुद : गर्भशय में कैंसर होने पर, सप्ताह में 2–3 बार राई के निवाये जल की पिचकारी द्वारा धोने से लाभ होता है। 25 ग्राम राई को 1 कप ठंडे जल में भिगोवें, मसलकर लुआब बनाकर फिर 750 ग्राम निवाये जल में मिला लें।

गर्भाशय की वेदना : गर्भाशय की विविध वेदना, अति तीव्र वेदना में, नाभि के नीचे या कमर पर राई के प्लास्टर का प्रयोग बार–बार करना चाहिये।

कफ प्रकोप : खांसी में कफ गाढ़ा हो जाने पर सुगमता से ना निकलता हो तो, राई 500 मिलीग्राम, सैंधा नमक 250 मिलीग्राम और मिश्री मिलाकर सुबह–शाम देते रहने पर कफ पतला होकर सरलता से बाहर निकलने लगता है।

गृध्रसी रोग : सियाटिका दर्द में वेदना स्थान पर राई का लेप लगाने से लाभ होता है।

संधिशूल अर्धागवात : आमवात या सुजाक के कारण या अन्य किसी कारण से जोड़ो पर सूजन और पीड़ा हो, तथा नवीन अर्धागवात से शून्य हुये अंग पर राई के लेप में कपूर मिलाकर मालिश करने से बहुत लाभ होता है।

वातवेदना :

1. राई और शक्कर को पीसकर, कपड़े की पट्टी पर लेप कर, वेदना स्थान पर लगा दें।
2. यदि वेदना हल्की हल्की कई दिनों तक बनी रहे, राई और सहिजने की छाल को मट्ठे में पीसकर पतला–पतला लेप करें।

अर्न्तदाह और सूजन : जिन रोगों के साथ सूजन रहती है तथा जिसमें शरीर के अन्दर अन्तर्दाह रहता है, ऐसे रोगों में राई का लेप हितकारी है। फेफड़ों की सूजन, फेफडों के कोष की सूजन, यकृत कोष की सूजन, श्वास नलिका में सूजन हो, मस्तिष्क रोगों की सूजन में राई का लेप बहुत फायदेमन्द है। हृदयदौर्बल्य में हाथ पांव और हृदय के ऊपर राई का लेप किया जाता है।

कांटा : त्वचा के भीतर कांटा या धातु का कण घुस जाये तो, राई के आटे में घी और शहद मिलाकर लेप करने से कांटा ऊपर आ जाता है, और दिखाई देने लगता है।

कुष्ठ:

1. राई के आटे को 8 गुने पुराने गाय के घी में मिलाकर लेप करने से दाग दूर हो जाते है।
2. पामा, एक्जिमा, दाद आदि पर उक्त मलहम लगाने से लाभ होता है।

Scanned by CamScanner

घाव व व्रण :

1. 100 ग्राम सरसों का तेल या तिल का तेल अच्छी प्रकार से उबालें, उबाल आने पर आंच बन्द कर दें। कुछ ठंडा होने पर 10 ग्राम राई, 10 ग्राम लहसुन और डेढ़ ग्राम कपूर डालकर ढक कर रख दें। ठंडा होने पर छानकर, बोतल में भरकर रख लें, कान में 4–5 बूंदे डालते रहने से स्त्राव दूर हो जाता है और जख्म भर जाता है।
2. घाव या फोड़े में कीड़े पड़ गये हो तो, राई के 24 ग्राम चूर्ण में शहद मिलाकर लेप कर देने से सब कीड़े मर जाते हैं।

सूजन:

1. हाथ पैर मुड़ जाने से दर्द सूजन आ जाये तो, अरंड के पत्ते पर राई का लेप चुपड़ कर निवाया कर बांध देने से सूजन उतर जाती है।
2. राई और नमक को जल में पीसकर लेप करने से भी सूजन उतर जाती है।

गांठ : किसी भी अंग में अगर गांठ बढ़ती हो तो राई और समभाग काली मिर्च के चूर्ण को घी में मिलाकर लेप करने से, गांठ का बढ़ना रुक जाता है। रसौली और अर्बुदों को बढ़त रोकने के लिये राई अच्छा काम करती है।

विषप्रभाव:

1. अफीम के विष के प्रभाव से या सर्प विष प्रभाव से, रोगी यदि बेहोश हो गया हो तो कांख छाती, जंधा आदि स्थानों पर राई का लेप लगाने से मूर्च्छा दूर हो जाती है। मूर्च्छा दूर होने पर लेप अधिक से अधिक 1 घंटे रखें।
2. ज्वर और विसूचिका में भी मूर्च्छा आ जाने पर, कांख छाती और जंघा पर राई का लेप प्रभावकारी है।

लेप बनाने की विधि:

1. राई का लेप हमेशा ठंडे जल में बनायें। राई का लेप सीधे त्वचा पर न लगाये, इससे फुंसी फफोले आदि उठने का भय रहता है। त्वचा के लाल होने पर लेप को उतार दें और उस अंग को पोंछ कर वहां पर घी या तेल लगा दें। राई को शीतल जल के साथ महीन पीसकर लेप को साफ मलमल के कपड़े पर पतला–पतला लेपकर कपडें को रोगी अंग पर रख दें, ध्यान रहें लेप सीधा त्वचा के सम्पर्क में न आये।
2. आंतरिक प्रयोग के लिऐ राई का छिलका उतार कर प्रयोग करें, इसके लिये राई को हल्के से पानी में भिगोकर हिलाते रहें, तत्पश्चात चक्की में से निकालकर जब छिलका उतर जाये तो सुखा लें तथा पीसकर आटा बनाकर शीशी में सुरक्षित रख लें।

वात वृद्धि : राई के तेल में पकौडे या पूरी तलकर खायें। राई के तेल की मालिश कर, निवाये जल से स्नान करें। मस्तिष्क नेत्र

आदि कोमल भागों पर राई के तेल की मालिश न करें।

राई का प्लास्टर या लेप:

1. राई की पुल्टिस बनाने के लिये, वयस्क व्यक्ति के उपयोग हेतू 3 भाग अलसी चूर्ण और 1 भाग राई को ठंडे जल में घोटकर बनायें।
2. बच्चों के लिये राई चूर्ण 1 भाग तथा अलसी चूर्ण 10–15 गुणा अधिक लें।
3. 10–20–30 मिनट में चमड़ी लाल होने पर पुल्टिस या लेप को हटा लें।
4. राई का लेप 1 भाग राई चूर्ण और 3 गुना गेहूँ या चावल का आटा, ठंडे जल में घोलकर आवश्यकतानुसार बनाकर प्रयोग में लायें।
5. राई की पुल्टिस या लेप कपड़े पर लगाकर प्रयोग करें।

विष प्रभाव :

1. राई के 10 ग्राम चूर्ण को शीतल जल में पीसकर, लगभग एक–डेढ़ गिलास जल में डालकर पिला दें, वमन होकर तत्काल विष निकल जाता है। और अन्य वामक औषधियों के समान शरीर में शिथिलता नहीं आती है।
2. अफीम के विष पर विसूचिका की शुरुआती अवस्था में, जुकाम या श्वांस में कफ की अधिकता होने पर तथा मूर्च्छा का उपक्रम होने पर राई के सेवन से वमन कराना अति निर्भय और श्रेष्ठ उपाय है।

कफज्वर : जिह्वा पर सफेद मैल सा जम जाये, भूख प्यास न लगती हो, साथ–साथ हल्का–हल्का ज्वर भी रहता हो, ऐसे लक्षणों में राई का आटा, 500 मिलीग्राम सुबह–शाम शहद के साथ चाटने से लाभ होता है।

1. रजिका कफ वातहनी तीक्ष्णोष्णा रक्तपित्तकृत।
   [illegible] कृमीन्हरेत्।। (भाव प्रकाश)

Scanned by CamScanner

105 काली राई

वैज्ञानिक नाम	:	*Brassica nigra* (L.) Koch.
कुलनाम	:	Brassicaceae
अंग्रेजी नाम	:	Black mustard
संस्कृत	:	राजिका, राजी, आसुरी, तीक्ष्णगंधा
हिन्दी	:	राई
गुजराती	:	राई
मराठी	:	मोहरी
बंगाली	:	राई, सरिशा
तेलगु	:	अबालु
अरबी	:	खदरल, कुब्र
फारसी	:	सर्शप

परिचय

काली राई के बीज कृष्ण वर्ण के होते है। काली राई भी गुण–कर्म में लाल राई के समान ही परन्तु यह उससे बहुत उग्र होती है।

औषधीय प्रयोग

गले की सूजन : गले की हलकी सूजन पर इसके तेल की मालिश करने से लाभ होता है।

आधाशीशी : राई और कबूतर की बीट को पीसकर लेप करने से आधाशीशी रोग मिटता है।

सिर की गंज : आधी कच्ची और आधी सेकी हुई राई को पीसकर कड़वे तेल में मिलाकर लगाने से सिर के गंजेपन में लाभ मिलता है।

जुकाम : राई के तेल को पैरों और पैरों के तलुवे पर मालिश करने से मस्तक की सर्दी और जुकाम एक रात में मिट जाते है। नाक पर इसके तेल की मालिश करने से नाक का बहना तुरन्त बन्द हो जाता है।

बच्चों की खांसी : बच्चों की छाती पर राई के तेल की मालिश करने से उनकी खांसी मिट जाती है।

मंदाग्नि : राई की फंकी 2–4 ग्राम लेने से कब्जियत की वजह से पैदा होने वाली मंदाग्नि मिट जाती है।

वमन : राई के आटे को पानी में घोलकर पिलाने से बहुत शीघ्र और निरुपद्रव वमन होता है। राई के प्लास्टर को पेट और कलेजे पर लगाने से भयंकर और हठीले वमन भी बन्द हो जाते है।

Scanned by CamScanner

गठिया:

1. राई का प्लास्टर करने से गठिया की वेदना फौरन मिट जाती है।
2. राई के तेल में कपूर मिलाकर लेप करने से भी गठिया में लाभ होता है।

शोथ : राई के तेल की मालिश करने से पट्ठों की पुरानी सूजन उतर जाती है।

आलस्य : इसके ताजे और शुद्ध तेल की मालिश करने से आलस्य मिटता है, चुस्ती तथा फुर्ती आती है।

बिच्छू का विष : कपास के पत्ते और राई को पीसकर लेप करने से बिच्छू का विष उतर जाता है।

दाद : राई को सिरके के साथ पीसकर लेप करने से दाद मिटता है।

बद गांठ : राई का लेप लगाने से बद गांठ बिखर जाती है।

कोष्ठ विद्रधि : राई को जल के साथ पीसकर लेप करने से विद्रधि मिट जाती है।

सर्पविष : राई को अधिक मात्रा में खिलाने से वमन होकर विष का प्रभाव हल्का पड़ जाता है।

रुधिर का जमाव : शरीर के भीतर अगर कहीं रूधिर का जमाव हो जाये तो वहां इसके तेल की मालिश करके सेंक कर देने से जमाव बिखर जाता है।

वात शूल : राई और सहजने की छाल को मठ्ठे में पीसकर लेप करने से वातशूल मिटता है।

पित्तशोथ : पित्त की सूजन में राई की पुल्टिस बांधने से बहुत जल्दी लाभ होता है।

सरसों दाना

Scanned by CamScanner

रीठा

वैज्ञानिक नाम	*Sapindus mukorossi* Gaertn.
कुलनाम	Sapindaceae
अंग्रेजी नाम	Soapnut tree
संस्कृत	अरिष्टक, फेनिल, फेनिल
हिन्दी	रीठा
गुजराती	अरीठा
मराठी	रिठा
पंजाबी	रेठा
तेलगु	फेनिलामु, कुंकुडुकायालु
तमिल	पल्लान कोट्टाई
असमी	हैथामुटी
फारसी	फुदुक

परिचय

रीठे की दो जातियां पाई जाती हैं।

1. *Sapindus mukorossi* : इसके जंगली वृक्ष हिमालय क्षेत्रों में 4,000 फुट की ऊँचाई तक पाये जाते हैं। परन्तु उत्तर भारत, आसाम आदि में इसके मनुष्यों द्वारा लगाये हुए वृक्ष बाग–बगीचों में या गांवों के आसपास पाये जाते हैं।
2. *Sapindus, trifoliatus* : इसके वृक्ष विशेषतः दक्षिण भारत में मिलते है, इसके फल 3–3 एक साथ जुड़े होते हैं। फलों की आकृति वृक्काकार होती है और पृथक होने पर जुड़े हुए स्थान पर हृदयाकार चिन्ह पाया जाता है। ये पकने पर किंचित लालिमा लिए भूरे रंग के होते हैं।

बाह्य–स्वरूप

इसका वृक्ष 50 फुट तक ऊंचा, प्रायः 5 फुट परिधि का होता है। पत्र 5–12 इंच लम्बा होता है। पुष्प श्वेतवर्ण 1/5 इंच लम्बे, रोमश अत्यन्त सघन मंजरियों में आते हैं। फल मांसल 2–3 खण्डीय,

Scanned by CamScanner

1/2–3/4 इंच लम्बे, तरूणावस्था में रोमयुक्त, सूखने पर कृष्णाभ भूरे रंग के, सिकुड़नयुक्त होते हैं। बीज मटर सदृश, काली चिकनी मज्जा में संसक्त रहते हैं। पुष्प नवम्बर–दिसम्बर में आते हैं तथा फल फरवरी से अप्रैल तक तैयार हो जाते हैं।

रासायनिक संघटन

फल में सैपोनिन, शर्करा और पेक्टिन नामक कफघ्न पदार्थ पाया जाता है। बीज में 30 प्रतिशत चर्बी होती है। जिसका उपयोग साबुन बनाने में किया जाता है।

गुण–धर्म

यह त्रिदोष नाशक, गर्भपातन और ग्रहों को दूर भगाता है। रीठा वामक, रेचक, कृमिघ्न कफ निःसारक, गर्भाशय संकोचक होता है। इसका नस्य अर्धावभेदक, मूर्च्छा एवं अपतंत्रक नाशक है। विषघ्न, विशेषकर अफीम का विष दूर करने में प्रयुक्त। इसका विशेष प्रयोग कफ वात रोगों में किया जाता है।[1,2,3]

औषधीय प्रयोग

आधाशीशी : रीठे के फल को 1–2 काली मिर्च के साथ घिसकर नाक में 4–5 बूंद टपकाने से आधाशीशी का रोग तुरंत मिट जाता है।

नेत्र रोग : सरल अभिष्यंद में रीठे के फल को जल में उबालकर इस जल को पलकों के नीचे रखने से लाभ होता है।

दंतरोग : रीठे के बीजों को तवे पर जलाकर पीस ले और इसमे बराबर मात्रा में पिसी हुई फिटकरी मिलाकर दांतों पर मलने से दांतों के सब प्रकार के रोग दूर हो जाते हैं।

अपतन्त वायु : प्रसव के पश्चात् वायु का प्रकोप होने से स्त्रियों का मस्तिष्क शून्य हो जाता है। आंखों के आगे अंधकार छा जाता है। दांतों की बत्तीसी भिड़ जाती है। इस समय रीठे को पानी में घिसकर फेन पैदाकर आंखों में अंजन लगाने से तत्काल वायु का असर दूर होकर स्त्री स्वस्थ हो जाती है।

अपस्मार : बीज, गुठली और छिलके समेत रीठे को पीसकर मिर्गी के रोगियों को नित्य सुंघाने से मिर्गी रोग ठीक हो जाती है।

केशवर्धक :

1. कपूर कचरी 100 ग्राम, नागरमोथा 100 ग्राम और कपूर तथा रीठे के फल की गिरी 40–40 ग्राम, शिकाकाई 25 तोला, आंवले 200 ग्राम, इन सबका चूर्ण करके इनमें से 50 ग्राम मात्रा में पानी मिलाकर लुग्दी बनाकर बालों में मसलना चाहिए। उसके बाद बालों को गरम पानी से खूब स्वच्छ कर ले। इससे सिर के अंदर की जूं–लीकें मर जाती है और बाल मुलायम हो जाते हैं।
2. रीठा, आंवला, सिकाकाई तीनों के मिश्रण से भी बाल धोने से बाल सिल्की, चमकदार, रूसी–रहित और घने हो जाते हैं।

दमा :

1. इसके फल को पीसकर उसकी सुंघनी सुंघाने से तुरन्त लाभ होता है।
2. इसके फल को जल के साथ पीसकर उसमें 1–2 नग काली मिर्च भी पीसकर इस जल की 5–6 बूंद नाक में टपकाने से दमें में लाभ होता है।

परमपूज्य स्वामी रामदेव जी का स्वानुभूत प्रयोग :

रीठा चूर्ण 1 ग्राम, 2–3 ग्राम त्रिकुट चूर्ण को 50 ग्राम पानी में डालकर रखें। प्रातः काल जल को निखार कर अलग शीशी में भर लें। इस जल की 4–5 बूंद प्रातः काल खाली पेट नियमित रूप से नाक में डालने से अन्दर जमा हुआ कफ बाहर निकल जाता है। नासा रन्ध्र फूल जाते हैं तथा सिर दर्द में भी तुरन्त लाभ मिलता है।

खूनी बवासीर : रीठे के फल में से बीज निकालकर फल के शेष भाग को तवे पर जलाकर कोयला कर लें, फिर इसमें इतना ही पपड़ियां कत्था मिलाकर अच्छी तरह से पीस कर कपड़–छन कर लें। इस में से 125 मिलीग्राम औषधि सुबह–शाम मक्खन या मलाई के साथ 7 दिन तक सेवन करे। जब तक दवा चले तब तक नमक और खटाई नहीं खानी चाहिए।

अतिसार : इसकी साढे चार ग्राम गिरी को पानी में मथके जब फेन पैदा हो जाये तो इस जल को बिसूचिका और अतिसार के रोगी को पिलायें।

मूत्रकृच्छ : 25 ग्राम रीठे को रात भर 1 लीटर पानी में भिगोकर उसका निथरा हुआ पानी थोड़ी–थोड़ी मात्रा में पिलाने से मूत्रकृच्छ

रीठा फल

Scanned by CamScanner

में लाभ मिलता है।

नष्टार्तव : रजोरोध में इसके फल की छाल या गिरि को महीन पीसकर शहद में मिलाकर बत्ती बनाकर योनि में रखने से रूका हुआ मासिक धर्म आरम्भ हो जाता है।

प्रसव : शीघ्र प्रसव के लिए इसके फल के फेन में रूई का फोहा भिगोकर योनि में रखने से बच्चा सुख से उत्पन्न हो जाता है।

शूल : इसकी गिरी के 250 मिलीग्राम चूर्ण को शरबत या जल के साथ देने से शूल मिटता है।

वीर्य वृद्धि : रीठे की गिरी को पीसकर उसमें समभाग गुड़ मिलाकर एक चम्मच की मात्रा सुबह–शाम एक कप दूध के साथ सेवन करें।

विष : इसके फल को पानी में पकाकर, अल्प मात्रा में लेने से वमन होकर विष निकल जाता है।

अहिफेन विष : पानी में रीठे को इतना उबालें कि भाप आने लगे, इस पानी को आधा कप की मात्रा में पिलाने से अफीम का विष उतर जाता है।

वृश्चिक विष :

1. इसके फल की मज्जा को तम्बाकू की तरह हुक्के में रखकर पीने से बिच्छु का विष उतरता है।
2. रीठे के फल गिरी को पीसकर उसमें गुड़ समभाग मिलाकर 1–2 ग्राम की गोलियां बनायें, उन्हें पांच–पांच मिनट बाद पानी के साथ 15 मिनट में ही तीन गोली देने से बिच्छु का विष उतरता है।
3. रीठे के फल को पीसकर आंख में अंजन लगाने से तथा दंशित स्थान पर लगाने से भी बिच्छु के विष में लाभ होता है।

विषैले कीट : रीठे की गिरी को सिरके से पीसकर विषैले कीटों के काटने के स्थान पर लगाने से लाभ होता है।

दोष : गरम प्रकृति वालों को इसका अधिक प्रयोग नहीं करना चाहिए।

1. अरिष्टकस्तु मङ्गल्यः कृष्णवर्णोऽर्थसाधनः।
रक्तबीजः पीतफेनः फेनिलो गर्भपातनः।
अरिष्टकस्त्रिदोषघ्नो ग्रहजिद्गर्भपातनः।। (भाव प्रकाश)

2. अरिष्टः कटुकः पाके तीक्ष्णोष्णो लेखनोऽगुरुः।
दोषत्रयहरो गर्भपातनो ग्रहशान्तिकृत्।।
तज्जलं बामकं पानान्नस्याच्छीर्षरुजापहम्।
अर्धशीर्षव्यथां हन्ति वमनाद्विषनाशनः। (नि०स०)

3. रीठाकरंजस्तिक्तोष्णः कटुः स्निग्धश्चवातजित्।
कफघ्नः कुष्ठकंडूतिविषविस्फोटकनाशनः। (रा०नि०)

Scanned by CamScanner

वैज्ञानिक नाम	:	*Moringa oleifera* Lam.
कुलनाम	:	Moringaceae
अंग्रेजी नाम	:	Horse radish tree, Drum stick plant
संस्कृत	:	शोभांजन, शिमु, मोचक, तीक्ष्णगंधा
हिन्दी	:	सहजन, सहिजन, सोहाजन, मुनगा
गुजराती	:	सरगवो, सेकटो
मराठी	:	शेवगा, शेगटा
बंगाली	:	शजिना
पंजाबी	:	सोहांजना
तेलगु	:	मुनगा

परिचय

सहिजन के वृक्ष हिमालय की तराई मे जंगली अवस्था में बहुलता से पाये जाते है। जंगली वृक्षों की फलियाँ और लगाये हुये वृक्षों की फलियाँ मीठी और शाकार्थ व्यवहृत की जाती है। पुष्प वर्ण भेद से शास्त्रकारों ने शोभांजन के श्वेत और रक्त दो भेद किये है, श्वेत जाति कटु और अरुण जाति मीठी होती है। कटुशिमु सर्वत्र सुलभ होती है, परन्तु मीठी शिमु कम पाई जाती है।

बाह्य–स्वरूप

सहिजन के छोटे या मध्यम आकार के वृक्ष होते हैं। छाल और काष्ठ मृदु होता है, जिससे जब वृक्ष फलियों से लद जाते हैं तो डालियां अक्सर टूट जाती हैं। सहजन के लिए यह कहावत मशहूर है– सहिजन अति फूले–फले, तबहुं डारपात की हानि। पत्र संयुक्त, पत्राकार 1–2 इंच लम्बा जिससे पत्रक 6–9 जोड़े चौथाई इंच से पौन इंच लम्बे, अंडाकार, अभिमुख क्रम में लगे रहते है। पुष्प नीलाभ श्वेत वर्ण के गुच्छों में निकलते हैं। फलियाँ 6–18 इंच लम्बी 6 शिराओं से युक्त और धूसर होती हैं। बीज पक्षसहित, त्रिकोणाकार और कटु होते हैं।

रासायनिक संघटन

मूलत्वक में मौरिंगन नामक दो क्षाराभ होते है। मूल में एक सक्रिय प्रतिजीव तत्व टेरिगोस्पर्मिन होता है। जो अनेक जीवाणुओं एवं कैंसर की वृद्धि को रोकता है। पत्रस्वरस में भी जीवाणु नाशक क्षमता पाई जाती है। कांड से एक गोंद निकलता है। जो प्रारम्भ

में सफेद और बाद में लाल भूरे रंग का हो जाता है। मूल में एक अत्यन्त कटु और दुर्गान्धित उड़नशील तेल होता है। बीजों के दबाने से एक स्थिर तेल निकलता है जो स्वच्छ वर्णरहित और गाढ़ा होता है। व्यापार में यह बेन या बेहन तेल के नाम से बिकता है।

गुण–धर्म

इसकी त्वचा और पत्तों का लेप विदाही शोथहर और विद्रधिपाचन है। बीजचूर्ण का नस्य शिरोविरेचन हेतू प्रयुक्त होता है। बीज तेल वेदनास्थापन और शोथहर है। यह नाडी तंत्र को उत्तेजित करता है। आंतरिक प्रयोग में यह रोचन, दीपन पाचन, विदाही, ग्राही, शूलप्रशमन और कृमिघ्न है। मीठा सहजन पिच्छिल और मधुर रस होने के कारण सारक होता हैं। उष्णता के कारण यह हृदय को उत्तेजित करता है, रक्तभारवर्धक एवं शोथहर हैं। यह कफघ्न है। तीक्ष्णता और उष्णता के कारण यह गुर्दे को उत्तेजित करता है। मूत्र की क्षारीयता और मात्रावर्धक है। उष्णता से आर्तवजनन,

Scanned by CamScanner

शुक्रघ्न, मेदघ्न तथा विषघ्न है। यह स्वेदजनन व ज्वरघ्न है। इसके बीजों का प्रयोग लेखन और चक्षुष्य है।

औषधीय प्रयोग

शिरोवेदना : शिरोवेदना में इसके मूल के रस मे समभाग गुड़ मिलाकर 1–1 बूंद नस्य देने से शिरोवेदना में लाभ होता है।

मस्तिष्क ज्वर : इस रोग में भी इसकी छाल को जल मे घिसकर इसकी एक दो बूंद नासिका मे डालने से तथा सेवन से लाभ होता है।

मस्तक पीड़ा :

1. इसके पत्तों के रस में काली मिर्च को पीसकर लेप करने से मस्तक पीड़ा मिटती है।
2. इसके पत्तों को पानी के साथ पीसकर लेप करने से सर्दी या अन्य प्रकार की मस्तक पीड़ा मिटती है।

नेत्ररोग:

1. इसके पत्तों को पीसकर टिकिया बनाकर नेत्रों पर बांधने से श्लेष्माऽभिष्यंद मिटता है।
2. इसके पत्रों के 50 ग्राम रस में 2 चम्मच शहद मिलाकर आँखों में अंजन करने से तिमिरादि सर्व नेत्र रोगों में लाभ होता है।
3. वात, पित्त, कफ या सन्निपात से उत्पन्न नेत्र शोथ मे इसके पत्रों के रस में समभाग मधु मिलाकर 2–2 बूंद आंख में डालने से वेदना का शमन होता है।

स्वरभंग : स्वरभंग में भी इसकी जड़ के क्वाथ से कुल्ले करने से लाभ होता है।

दंतरोग : इसके गोंद को मुंह में रखने से दांत का सड़ना रुक जाता है।

अपस्मार : अपस्मार और स्त्रियों के आवेश के रोग में भी इसकी मूल का क्वाथ 20–50 ग्राम सुबह–शाम पिलाने से लाभ होता है।

श्वास : सहजन की जड़ों का रस और अदरक का रस समभाग मिलाकर 10–15 ग्राम की मात्रा नियमित प्रातः–सायं पिलाने से श्वांस रोग मिटता है।

मंदाग्नि :

1. इसकी ताजी जड़, सरसों और अदरक को समभाग पीसकर 1–1 ग्राम की गोली बनाकर 2–2 गोली का प्रातः–सायं सेवन करने से तिल्ली व मंदाग्नि मे लाभ होता है।
2. मुख और गले के छाले मिटाने के लिये इसकी 2 चम्मच जड़ के चूर्ण को 400 मिलीलीटर पानी में उबालकर चतुर्थांश शेष क्वाथ से गंडूष करें।

पाचन शक्ति : इसकी जड़ के 10 ग्राम रस में सौंठ 2 ग्राम डालकर सुबह–शाम पिलाने से पाचन शक्ति बढ़ती है।

अफारा उदरशूल : इसकी 100 ग्राम छाल में 5 ग्राम हींग और 20 ग्राम शुंठी मिलाकर जल के साथ पीसकर 1–1 ग्राम की गोलियां बना लें, इनमें से 1–1 गोली दिन में 2–3 बार खाने से उदरशूल अफारा, गैस की पीड़ा शान्त होती है।

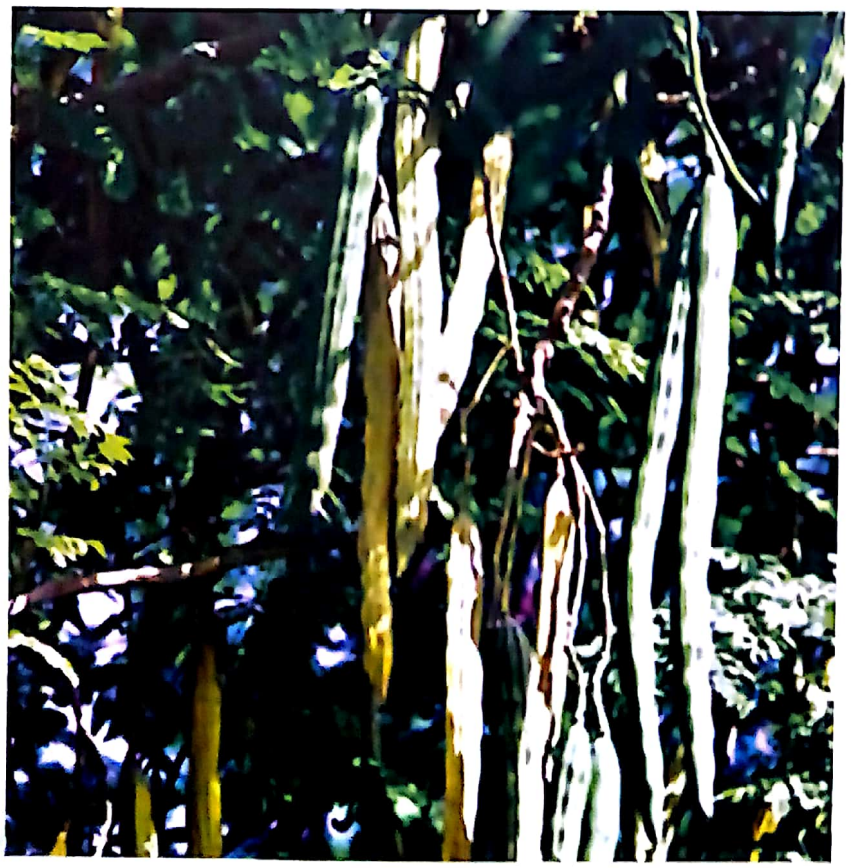

आंत्रकृमि : सहजन की फलियों का शाक खाने से आंत्रकृमि मर जाती है। अथवा आंतों में कीड़े नहीं पड़ते है।

मूत्रकृच्छ : इसके 10 ग्राम गोंद को नित्य 7 दिन तक दही के साथ खाने से मूत्रकृच्छ मिटता है।

जलोदर : इसकी 50 ग्राम जड़ का 200 ग्राम पानी में तैयार किया गया हिम या फांट थोड़ा–थोड़ा पिलाने से जलोदर मिटता है।

वृक्काश्मरी : इसकी छाल या मूल का क्वाथ 20 ग्राम दिन में 3 बार पिलाना चाहिये।

आंवल: इसकी छाल के 100 ग्राम क्वाथ में 20 ग्राम गुड़ मिलाकर पिलाने से आंवल जल्दी गिर जाती है।

आंतरिक सूजन : इसकी छाल को जल में घिसकर 10 ग्राम की मात्रा में सेवन करने से सब प्रकार की सूजन उतर जाती है। इसकी छाल को स्वदेशी पेन्सिलीन कहा जाता है।

शोथ : न्यूमोनिया, पसलियों का शूल, उदर शूल आदि में इसकी छाल का लेप बाह्य–रूप से करने से सूजन मिटकर आराम मिलता है। अंदर या बाहर, हर प्रकार की सूजन में इसका लेप लाभदायक है।

Scanned by CamScanner

आमवात : इसके बीजों के तेल की संधिवात, आमवात तथा वातरक्त में मालिश करने से लाभ होता हैं।

पुरुषार्थ : इसके 8–10 पुष्पों को 250 ग्राम दूध में उबालकर प्रातः–सायं पीने से पुरूषार्थ बढ़ता है।

दाद : दाद पर इसकी मूल की छाल जल में पिसकर लेप करने से लाभ होता है।

स्थान दर्द : सहजन के पत्ते, लहसुन, हल्दी, नमक तथा काली मिर्च सबको समभाग एक साथ पीसकर कटे हुये स्थान पर लगाने से सूजन उतर जाती है तथा ज्वर ठीक हो जाता है। इस कल्क की 10–15 ग्राम की मात्रा का सुबह–शाम सेवन करने से भी लाभ होता है।

ज्वर : इसकी 20 ग्राम ताजी जड़ों को 100 ग्राम पानी में उबालकर पिलाने से नियतकालिक ज्वर छूट जाता है।

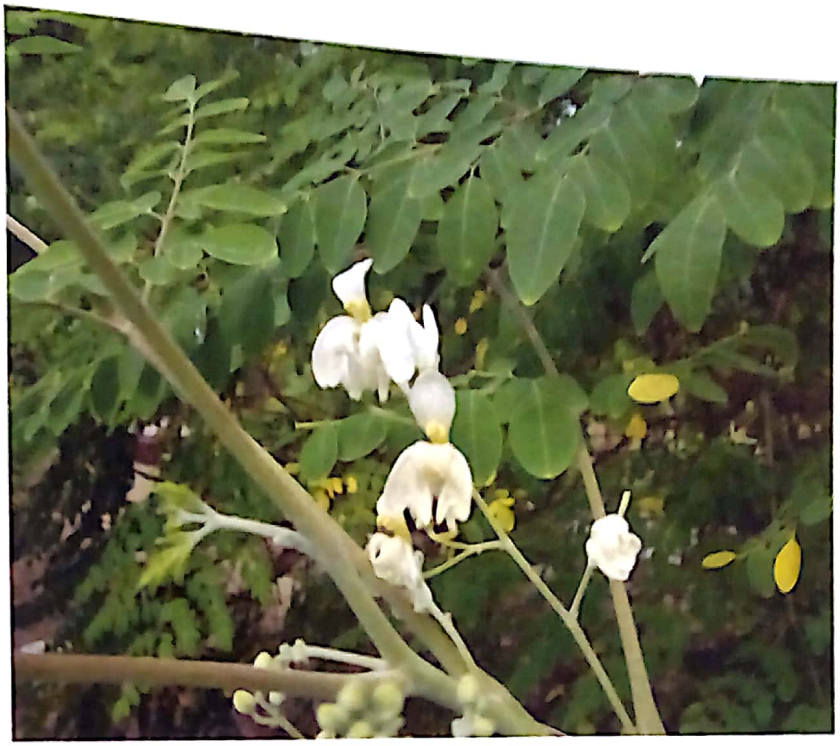

सहिजन का फूल

कैंसर : यकृत कैंसर में इसकी 20 ग्राम छाल का क्वाथ बनाकर आरोग्य वर्धिनी 2 गोली के साथ दिन में तीन बार सेवन करने से लाभ होता हैं।

विद्रधि : इसकी जड़ की छाल और बच्छ–नाग को पीसकर लेप करने से विद्रधि मिटती है।

बाह्य–लेप :

1. इसकी ताजी जड़ को अदरक और सरसों के साथ पीसकर लेप करने से गठिया मिटती हैं।
2. इसके गोंद का लेप करने से गठिया की सूजन मिटती हैं।
3. इसके पत्तों को पानी के साथ पीसकर गुनगुना कर लेप करने से वायु की पीड़ा मिटती हैं।
4. इसके पत्तों को बराबर के तेल के साथ महीन पीसकर, गुनगुना कर लेप करने से घुटनों की पुरानी पीड़ा मिटती है।
5. इसके पत्तों को तेल के साथ पीसकर लेप करने से और धूप में बैठने से चोट व मोच की पीड़ा मिटती है।
6. इसकी छाल और राई को पीसकर लेप करने से कान के नीचे की सूजन मिटती हैं।
7. इसकी जड़ की छाल को पीसकर लेप करने से स्नायु रोग मिटता हैं।
8. इसकी जड के कल्क को सरसों के तेल में पकाकर जलाकर मलने से खुजली मिटती हैं।
9. इसकी जड को पीसकर उष्ण करके लेप करने से श्लीपद मिटता है।
10. इसके गोंद को तिल के तेल में गर्म कर कान में 2–2 बूंद टपकाने से कर्णशूल मिटता है।
11. इसकी जड का 20 मि०ली० रस, सैंधा नमक 125 मि०ग्रा०, मधु एक चम्मच और तेल 50 मि०ली० को गर्म कर कान में 2–2 बूंद टपकाने से कान की शूल मिटती है।
12. सहजन की जड और देवदारू की जड़ को समभाग कांजी के साथ पीसकर गुनगुना कर लेप करने से दुःसाध्य अपची मिटती है।

विविध : यकृत तिल्ली रक्तवाहिनी नसों की पीडा, धर्नुस्तम्भ, स्नायु दुर्बलता किसी अंश का सूनापन, पीप वाली फुन्सी और कुष्ठ में इसकी फलियों का शाग सेवन करना बहुत लाभकारी है।

1. शिग्रुः सरः कटुः पाके तीक्ष्णोष्णो मधुरोलघुः।
दीपनः रोचनो रुक्षः क्षारस्तिक्तो विदाहकृत।।
संग्राह्यशुक्रलो हृद्यः पित्तरक्तप्रकोपणः
चक्षुष्यः कफवातघ्नो, विद्रधिश्वयथुक्रिमीन्।। (भाव प्रकाश)

2. चक्षुष्यं शिग्रुजं बीजं तीक्ष्णोष्णं विषनाशनम्।
अवृष्यं कफवातघ्नं तन्नस्येन शिरोऽर्तिहृत्।। (भाव प्रकाश)

3. शिग्रुतोलानि तीक्ष्णानि लघुन्युष्णवीर्याणि कटूनि कटुविपाकानि सराण्यनिलकफकृमिकुष्ठप्रमेह शिरोरोगापहराणि चेति। (सुश्रुत)

4. शिग्रुस्तिक्तः कटुश्चोष्णः कफशोफसमीरजित्।
कृम्यामविषमेदोघ्नो विद्रधिप्लीहगुल्मनुत्।। (ध०नि०)

5. सौतं, सुहागा, सेंधा, गोंधी। सहिजन के रस में बरिया बोंधी।।
सत्तर शूल और अस्सी बाई। कहे धनन्तर छन में जाई।
(लोकोक्ति)

Scanned by CamScanner

शरपुंखा वात

वैज्ञानिक नाम	:	*Tephrosia purpurea* (L.) Pers.
कुलनाम	:	Fabaceae
अंग्रेजी नाम	:	Purple tephrosia, Wild indigo
संस्कृत	:	शरपुंखा, प्लीह शत्रु, नील वृक्षाकृति
हिन्दी	:	सरफोंका
गुजराती	:	शरपंखो
मराठी	:	उन्हाली, शीरपंखा
बंगाली	:	बननील
तेलगु	:	वेपलि
फारसी	:	वर्गसुफार

परिचय

समस्त भारतवर्ष में, तथा हिमालय क्षेत्रों में 6,000 फुट की ऊंचाई तक इसके स्वयंजात पौधे होते है। पुष्प भेद से शरपुंखा के दो भेद होते हैः रक्त पुष्पी और श्वेत पुष्पी। प्रायः शरपुंखा के नाम से लाल या बैंगनी रंग के फूल वाली वनस्पति का ग्रहण एवं प्रयोग किया जाता है। शरपुखां पर फूल वर्षा ऋतु में तथा फल शरद् ऋतु मे लगते है।

बाह्य–स्वरूप

इसके बहुशाखी पादप 1–3 फुट ऊँचे, सीधे, कांड बेलनाकार, चिकने व किंचित रोमशः, पत्तियां, विषम पक्षवत् जिनमें 5–9 जोड़ें पत्रक होते है, पत्रक 1 इंच लम्बे, 1/2 इंच चौडे, प्रति भालाकार नताग्र या रोमशाग्र होते है। पत्रकों को तोड़ने पर बाण के समान नुकीले टूटते हैं। पुष्प लाल या बैंगनी रंग के 3–6 इंच लम्बी मञ्जरियों में निकलते हैं, फली 1–2 इंच लम्बी, सीधी किंचित चपटी रोमश, कुंठिताग्र एक चोंच जैसी नोक, बीज 4–10 छोटे वृक्काकार पीतवर्ण द्विदल तथा इनका बाह्य छिलका चितकबरा होता है।

रासायनिक संघटन

शरपुखां के पौधे से 6 प्रतिशत राख प्राप्त होती है, जिसमें अल्प मात्रा में मैंगनीज, क्लोरोफिल, भूरे रंग का रालीय पदार्थ, मोम,

Scanned by CamScanner

क्षारीय एल्ब्युमिन, रंजक द्रव्य एवं क्वेसेटीन या क्वेरसाइट्रीन के समान एक द्रव्य होता है।

गुण-धर्म

यह कफ वातशामक, प्लीहोदर नाशक है। इसका–बाह्यलेप शोथहर, कुष्ठघ्न, विषघ्न, जन्तुघ्न व्रणरोपण, रक्त रोधक और दन्त्य है। आतरिक प्रयोग मे यह दीपन, अनुलोमन, पित्तसारक, कृमिघ्न और प्लीहघ्न है। यह रक्तशोधक और कफ निःसारक है। यह मूत्रल और गर्भाशय उत्तेजक है। कुष्ठघ्न, ज्वरघ्न व विषघ्न है। श्वेत शरपुंखा अधिक गुणकारी और रसायन है।

औषधीय प्रयोग

दंतरोग : शरपुंखा के मूल के 100 ग्राम क्वाथ में हरड़ की लुग्दी 10 ग्राम डालकर 100 ग्राम तेल में पकायें, जब तेल का जलीयांश जल जाये तब उतारकर, ठण्डा होने पर रूई के फोहे में लगाकर दंत शूल के लिए प्रयोग करना चाहिए। दंत रोगो में इसके मूल को कूटकर दुखते दांत के नीचे रखने से भी बहुत लाभ होता है।

कास : खांसी में इसके सूखे मूल का धुआं सूंघने से लाभ होता है।

श्वास रोग : श्वास रोग में शरपुंखा का 2 ग्राम लवण मधु के साथ दिन में तीन बार चटाना चाहिये।

गुल्मरोग : इसके क्षार में समान भाग हरड़ का चूर्ण मिलाकर चार ग्राम की मात्रा में भोजन के बाद सुबह–शाम देने से गुल्म रोग मिटता हैं।

मन्दाग्नि : शरपुंखे की 10 ग्राम कड़वी जड़ को 200 ग्राम पानी में उबालकर सुबह–शाम पिलाने से मंदाग्नि मिटती हैं।

संग्रहणी : शरपुंखे के 20 ग्राम क्वाथ में 2 ग्राम सौंठ डालकर प्रातः–सायं पीने से संग्रहणी मिटती है।

अफारा : इसकी जड़ के 10–20 ग्राम क्वाथ में भुनी हुई 250 से 500 मिलीग्राम हींग मिलाकर प्रातः–सायं पिलाने से अफारा मिटता है।

उदरशूल : इसकी ताजी जड़ की छाल 10 ग्राम को 2–3 नग काली मिर्च के साथ पीसकर गोली बनाकर दिन में तीन बार देने से हठीला और दुःसाध्य उदरशूल मिटता है।

अतिसार: शरपुंखे के 5 ग्राम क्वाथ में 1–2 नग लौंग डालकर दिन में 3–4 बार पीने से अतिसार मिटता है।

उदर कृमि :

1. शरपुंखे के 10 ग्राम क्वाथ में वायबिडंग का 2 ग्राम चूर्ण समभाग मिलाकर रात में सोते समय पिलाने से बच्चो के पेट के कृमि नष्ट हो जाते है।
2. इसके 5 से 10 ग्राम बीजों का प्रयोग उष्ण जल के साथ बच्चों के कृमिरोग में लाभकारी है।

विसूचिका : इसकी जड़ों को पीसकर दो ग्राम की मात्रा मे सुबह–शाम पिलाने से हैजे में लाभ होता है।

मूत्रकृच्छ : मूत्रकृच्छ में इसके 20–25 पत्तों को पीसकर पानी के साथ उनमें 3–4 नग काली मिर्च डालकर पिलाने से बहुत लाभ होता है।

बवासीर : शरपुंखे के पत्ते और भांग के पत्तों को समान मात्रा में पीसकर उनकी लुग्दी बनाकर, गुदा पर बांधने से खूनी बवासीर मिटती है।

प्लीहावृद्धि:

1. इसकी जड के 10 ग्राम कल्क को 250 ग्राम छाछ के साथ दिन में दो बार पिलाने से बढ़ी हुई तिल्ली कम हो जाती है।
2. यकृत एवं प्लीहावृद्धि में इसके मूल को दातुन की तरह चबाकर इसका रस अन्दर उदर में उतारने से बहुत लाभ होता है।
3. प्लीहावृद्धि में शरपुंखा के पादप को जड़ सहित उखाड़कर छाया में सुखाकर चूर्ण बनाकर 3 से 5 ग्राम की मात्रा में सुबह–शाम सेवन करने से प्लीहा रोग ठीक हो जाता है।
4. यकृत प्लीहा वृद्धि में शरपुंखे की मूल की 10 से 20 ग्राम कल्क का प्रयोग 2 ग्राम हरड और एक गिलास मट्ठे के साथ प्रातः–सायं करने से लाभ होता हैं।

चर्मरोग: इसके बीजों के तेल को कंडू, खुजली आदि दुःसह्य चर्म रोगों पर लगाने से लाभ होता है।

कुष्ठ: शरपुंखा के पत्रों का 10–20 मिलीलीटर स्वरस दिन में दो

शरपुंखा का पंचांग (सूखा)

Scanned by CamScanner

तीन बार पीने से कुष्ठ रोग में लाभ होता है।

व्रण:

1. शरपुंखा की 15–20 ग्राम मूल को जल में पीसकर उसमें 2 चम्मच मधु मिलाकर व्रण पर लेप करने से दुष्ट व्रण का रोपण शीघ्र हो जाता है।[3]
2. शरपुंखा, काकजंघा, नवजात भैंसे का प्रथम मल, लज्जालु इनमें से किसी एक को आवश्यकतानुसार लेकर लेप कर देने से सद्यक्षत नष्ट होता है।[4]
3. शरपुंखे की जड़ के एक ग्राम चूर्ण को तंडुलोदक के साथ पीने से अतिशय रक्तस्राव शान्त होता है।[5]

दाह: शरपुंखा के 10–20 ग्राम बीजों को एक गिलास ठंडे पानी में भिगोकर मसल कर, छानकर पिलाने से शरीर की दाह और ऊष्मा मिटती हैं।

फोड़े फुन्सी: शरपुंखे के 10–20 ग्राम क्वाथ में मधु 2 चम्मच मिलाकर खाली पेट सुबह–शाम पिलाने से रूधिर शुद्ध होता है और शरीर के फोड़े फुन्सी मिट जाते है।

1. शरपुंखा प्लीहशत्रुर्नीलवृक्षाकृतिश्च सा।
शरपुंखा यकृत्प्लीहगुल्मव्रणविषापहः।।
तिक्तः कषायः कासास्रश्वासज्वरहरोलघुः (भाव प्रकाश)
2. शरपुंखा कटूष्णा कृमिवातरूजापहा।
श्वेता त्वाशुगुणाढ्या स्यात् प्रशस्ता च रसायने।।
कण्ठपुंखा कटूष्णा च कृमिशूलविनाशिनी। (रा०नि०)
3. मधुयुक्ता शरपुखां दुष्टव्रणरोपणी कथिता।
शरपुंखायू लघुभ्यां लेपः।। (भैषज्य रत्नावली)
4. शरपुंखा काकजंघा प्रथमं माहिषिसुतम्।
मलं लज्जा च सद्यस्क व्रणघ्नं पृथगेव तु।।
(भैषज्य रत्नावली)
5. मूलश्चं शरपुखां पेयथेत्तडुलाम्बुम।
पीत्वा च भाषायात्राम्बू अतिरक्त शान्तयेत।।
(भैषज्य रत्नावली)

Scanned by CamScanner

वैज्ञानिक नाम	:	*Argemone mexicana* L.
कुलनाम	:	Papaveraceae
अंग्रेजी नाम	:	Prickly poppy, Mexican poppy
संस्कृत	:	स्वर्णक्षीरी, काञ्चनक्षीरी, पीतदुग्धा, कटुपर्णी
हिन्दी	:	पीला धतूरा, फिरंगीधतूरा, सत्यानाशी, स्याकांटा, भड़भांड
गुजराती	:	दारुड़ी
मराठी	:	काटे धोत्रा, मिल धात्रा
बंगाली	:	सोना खिरनी, शियालकाँटा
पंजाबी	:	भटकटैया करियाई, कटसी, सत्यानाशी
तैलगु	:	ब्रह्मदंडी, इट्टूरि
तमिल	:	कुश्मकं, कुडियोट्टि

परिचय

यह एक अमेरिकन वनस्पति है, परन्तु भारतवर्ष में अब यह सब जगह उत्पन्न होती है। इस पादप के किसी भी अंग को तोड़ने से उसमें से स्वर्ण सदृश, पीतवर्ण दूध निकलता है, इसलिये इसका नाम स्वर्णक्षीरी भी है। इसका फल चौकोर, कंटकित, प्यालानुमा होता है, जिसमें राई के समान छोटे–छोटे कृष्ण बीज भरे रहते हैं, जो दहकते कोयलों पर डालने से भड़भड़ बोलते हैं। उत्तर प्रदेश में इसे भड़भाँड़ कहते हैं। इसके पूरे पौधे पर कांटे होते हैं।

बाह्य–स्वरूप

सत्यानाशी के 2–4 फुट ऊँचे झाड़ का कांड छोटा, पत्र लम्बे कटे–कटे, कंटकित, मध्य शिरा मोटी, श्वेत और अन्य शिरायें भी सफेद होती है। पुष्प चमकीले पीले रंग के, फल एक–डेढ़ इंच लम्बे चौकोर, कंटकित तथा बीज अनेक, राई के समान बारूद जैसे छोटे–छोटे कृष्ण वर्ण के होते है। इसकी जड़ को चोक कहते हैं।

रासायनिक संघटन

इसमें बर्बेरीन, प्रोटोपिन नामक क्षाराभ, बीजों में 22–26 प्रतिशत तक अरूचिकर तिक्त स्थिर तेल होता है।

Scanned by CamScanner

गुण–धर्म

यह कफपित्त हर है। बाह्य प्रयोग में इसका दूध, पत्र स्वरस, तथा बीज तेल, व्रणशोधन, व्रणरोपण तथा कुष्ठघ्न है। इसके मूल का लेप शोथहर और विषघ्न है। बीज वेदनास्थापन है। आभ्यान्तर प्रयोग में इसके मूल तथा बीजों का तेल रेचन है। यह हृल्लास–कारक और कभी–कभी वामक भी होता है। मूल कृमिघ्न है।[1] इसके मूल का स्वरस रक्तशोधक तथा दूध शोथहर है। मूल तथा दूध विषम ज्वरघ्न है। इस वनस्पति के पंचाग का धनक्वाथ रोचक, जड़ कृमिघ्न और कुष्ठनाशक और पीला दूध मूत्रल, कुष्ठनाशक व्रणशोधक, व्रणरोपण, शोथघ्न, ज्वर को दूर करने वाला होता है।

औषधीय प्रयोग

नेत्र रोग:

1. इसके दूध की एक बूंद में, तीन बूंद घी मिलाकर नेत्रों में अंजन करने से नेत्र शुष्क रोग, अधिमंथ रोग और नेत्रों का अंधापन दूर होता है।[2]
2. सुवर्ण क्षीरी का क्षार एक ग्राम, 50 ग्राम गुलाब जल में मिलाकर प्रतिदिन दो बार दो–दो बूंद नेत्रों में डालने से नेत्र शोथ, नेत्रों की लाली, धुंध, जाली तथा नेत्रफूली दूर होकर नेत्रों को लाभ पहुंचाता है।
3. इसके पत्तों का स्वरस भी नेत्रों में 2–2 बूंद डालने से सब प्रकार के नेत्र रोग दूर होते हैं।

श्वास कास : श्वास रोग तथा कास में इसके मूल का चूर्ण आधा से 1 ग्राम उष्ण जल या दूध के साथ प्रातः–सायं पिलाने से कफ बाहर निकल जाता है, अथवा इसका पीला दूध 4–5 बूंद बतासे में डालकर खाने से लाभ होता है।

कफ प्रकोप :

1. सत्यानाशी के पंचाग का 500 ग्राम रस निकालकर उसको आग पर उबालना चाहिए। जब वह रबडी के समान गाढा हो जाये तब उसमें पुराना गुड़ 60 ग्राम और राल 20 ग्राम मिलाकर, खरल करें, 250–250 मिलीग्राम की गोलियां बना लेनी चाहिए, 1–1 गोली दिन में तीन बार गरम पानी के साथ देने से दमे में आशातीत लाभ होता है।
2. अथवा इसके पत्रों के रस का घनक्वाथ बनाकर इसमें बैन्जोइक एसिड समभाग मिलाकर चने के बराबर गोलियां बनाकर, 1–1 गोली दिन में तीन बार श्वांस रोगी को खिलाने से लाभ होता है।

स्नोफीलिया : स्नोफीलिया के रोगी को भी इसकी 1 ग्राम मात्रा दिन मे दो बार दूध से प्रयोग करने पर लाभ होता है।

उदरशूल : इसके 3–5 मिलीलीटर पीले दूध को 10 ग्राम घी के साथ पिलाने से उदरशूल मिटता है।

रेचन : इसका तेल विरेचक है, परन्तु सब मनुष्यों पर इसका प्रभाव समान नहीं होता, किसी को 3–4 दस्त होते हैं, तो किसी को 15–16, परन्तु इसके प्रयोग में प्रारम्भ में ही वमन हो जाने पर भी निर्बलता नहीं आती।

Scanned by CamScanner

मूत्रविकार : मूत्रनली में यदि जलन हो तो इसके 20 ग्राम पंचाग को 200 ग्राम पानी में भिगोकर तैयार हिम या फांट पिलाने से मूत्रवृद्धि होती है और मूत्रनली की दाह मिटती है।

कामला : 10 ग्राम गिलोय के रस में इसके तेल की 8–10 बूंद डालकर प्रातः–सायं पिलाने से कामला मिटता है।

शूल: इसके तेल की 30 बूंद एक ग्राम सौंठ के साथ देने से शूल मिटता है।

जलोदर :

1. जलोदर में इसका (पंचाग) स्वरस 5–10 ग्राम दिन में 3–4 बार पिलाने से मूत्र खुलकर आता है तथा जमा हुआ पानी बाहर निकल जाता है।
2. 2–3 ग्राम सैंधा नमक में इसके तेल की 4–5 बूंदें डालकर फंकी देने से भी लाभ होता है।

सिफिलिस : कटुपर्णी के पंचाग का रस निकालकर इसमें से 5 ग्राम लेकर दूध में मिलाकर दिन में 3 बार पिलाना चाहिए तथा इसके छालों पर दूध भी लगाना चाहिए।

सुजाक : इसके 2–5 मिलीलीटर पीले दूध को मक्खन और कीड़ा मारी के साथ देने से अथवा इसके पत्तों के 5 ग्राम रस को 10 ग्राम घी में मिलाकर दिन में दो तीन बार देने सुजाक में लाभ होता है।

नपुंसकता : नपुंसकता दूर करने के लिए कटुपर्णी की एक ग्राम छाल तथा बरगद का दूध दोनों को गरम कर चने के बराबर गोलियां बनाकर 14 दिन तक पान के साथ प्रातः–सायं सेवन करने से नपुंसकता दूर होती है।

कुष्ठ रोग :

1. कुष्ठ रोग और रक्त पित्त में इसके बीजों का तेल शरीर पर मालिश करने से और पत्रों का स्वरस 5 से 10 ग्राम, 250 ग्राम दूध में मिलाकर प्रातः–सायं पिलाने से लाभ होता है।
2. सुवर्णक्षीरी को पुराने व्रण एवं खुजली में लगाने से लाभ होता है।
3. छाले, फोड़े, फुंसी, विस्फोटक, खुजली दाह, फिरंग, उपदंश आदि पर इसके पंचाग का रस या पीला दूध लगाने से लाभ होता है।
4. कुष्ठ रोग में इसके स्वरस में थोड़ा नमक डालकर लम्बे समय तक सेवन से लाभ होता है। प्रतिदिन 5 से 10 ग्राम रस का सेवन लाभकारी है।

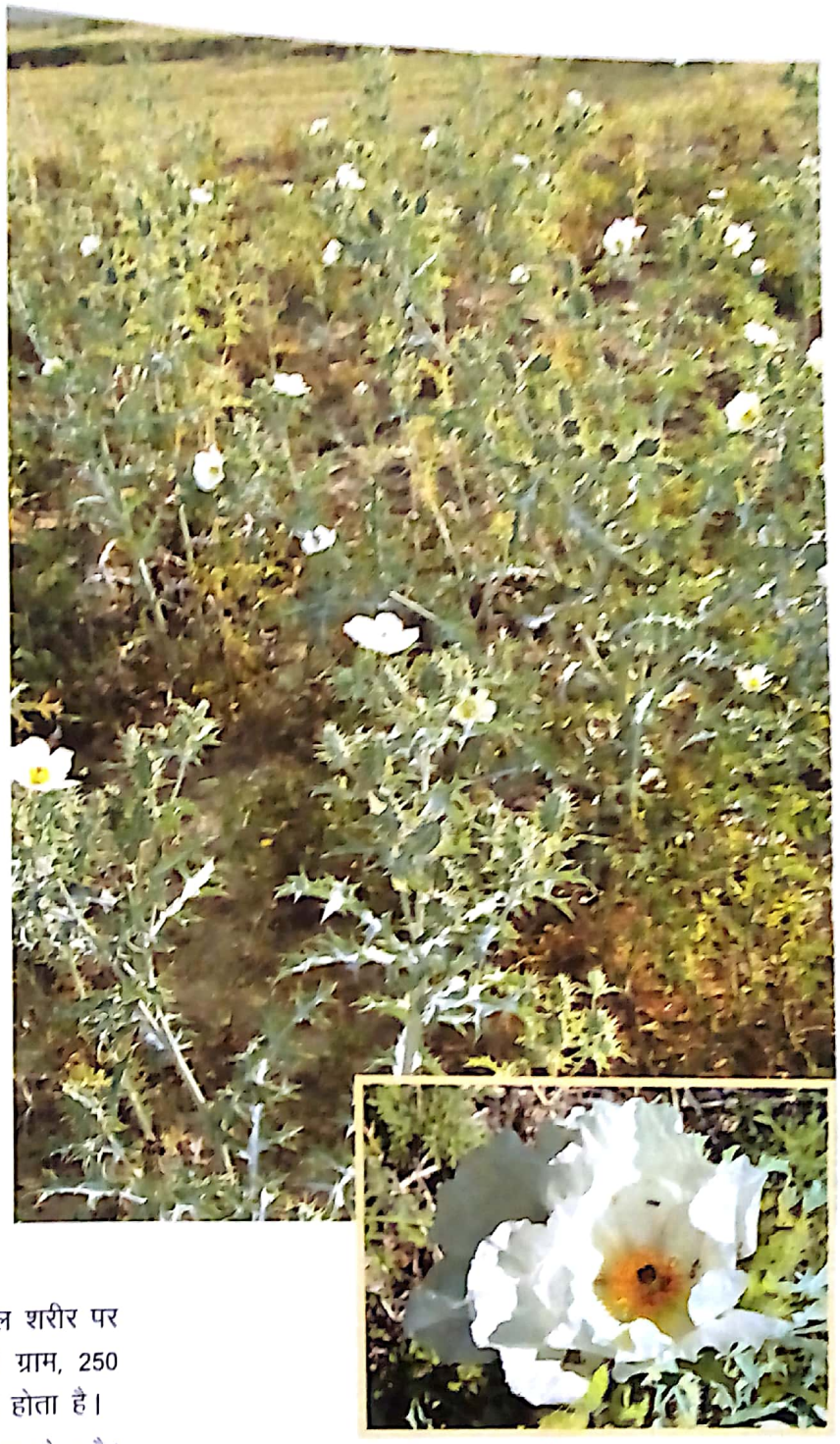

श्वेत सत्यानाशी - *Argemone ochroleuca*

दाद : दद्रु रोग में इसके पत्र स्वरस या तेल को लगाने से शांति मिलती है।

विसर्प : इसमें भी इसका तेल लगाने से लाभ होता है।

व्रण : न भरने वाले घावों पर इसका दूध लगाने से पुराने और बिगड़े हुए फोड़े स्वच्छ हो जाते हैं।

1. हेमाह्वा रेचनी तिक्ता भेदन्युत्क्लेशकारिणी।
   कृमिकण्डू विषानाहकफपित्तास्रकुष्ठनुत्।। (भाव प्रकाश)
2. तस्य दाश्मि बिन्दुमात्रं नेत्रेलिप्तम घृतप्लुतम्।
   शुक्लम् ब्रह्मादि मारनं च नेत्रांध्यम् च विनाशयेत्।। (गण–निघंटु)

Scanned by CamScanner

110 सौंठ (अदरक)

वैज्ञानिक नाम	:	*Zingiber officinale* Rosc.
कुलनाम	:	Zingiberaceae
अंग्रेजी नाम	:	Ginger
संस्कृत	:	आर्दक, आर्द्रशाक
हिन्दी	:	आदी, अदरक, सौंठ
गुजराती	:	आदु
मराठी	:	आलें
बंगाली	:	आदा, सूंठ
तैलगु	:	सल्लम, शोंठि
द्राविड़ी	:	हमिशोठ
अरबी	:	जजबील, रतन
कन्नड़	:	शूंठि
फारसी	:	शंगवीर

परिचय

अदरक भारतवर्ष के सब स्थानों में बोया जाता है। भूमि के अन्दर उगने वाला कन्द आर्द्र अवस्था में अदरक, व सूखी अवस्था में सौंठ कहलाता है।

बाह्य–स्वरूप

यह उर्वरा तथा रेत मिश्रित भूमि में पैदा होने वाली गुल्म जाति की वनस्पति का कन्द है, हर कोई इसे जानता है। इसके पत्ते बांस के पत्तों से मिलते जुलते तथा एक या डेढ़ फीट ऊँचे लगते हैं।

रासायनिक संघटन

अदरक में आर्द्रता 80.9, प्रोटीन 2.3, वसा 0.9, सूत्र 2.4, कार्बोहाइड्रेट 12.3, खनिज 1.2 प्रतिशत, कैल्शियम 20, फास्फोरस 60, लौह 2.6 मि०ग्रा० प्रति 100 ग्राम तथा कुछ आयोडीन और क्लोरीन भी होता है। विटामीन ए, बी, और सी भी होते है। सौंठ में नमी 10–9, प्रोटीन 15.4, सूत्र 6.2, स्टार्च 5.3, कुल भस्म 6.6, उड़नशील तेल 1–2.6 प्रतिशत होता है। उड़नशील तेल छिलके वाली सौंठ से प्राप्त किया जाता है, क्योंकि अदरक के छिलके में ही तेल कोषाणु विशेष रूप से मिलते हैं। यही तेल अदरक से भी निकाला जा सकता है, इस तेल का नाम सौंठ तेल (ऑयल आफ जिंजर) है। इसमें कटुता नहीं होती। इस तेल में जिंजी बेरीन तथा जिंजीबराल आदि तत्व होते है।

सौंठ में उपस्थित रहने वाला कटु तत्व उड़नशील नहीं होता। अतः सौंठ के चूर्ण को अल्कोहल या ईथर में रखने पर एक गाढ़ा गहरे भूरे रंग का तेलीय राल, जिसे जिंजरीन[2] भी कहते हैं, प्राप्त होता है। द्रव्य की सारी कटुता इसी में होती है। यह लगभग 6.5 प्रतिशत होता है। इसके अतिरिक्त तेलीय राल में सुगन्धित तेल 6–28 प्रतिशत तथा अकटु पदार्थ 30 प्रतिशत होते है। कटु तत्वों में जिजंरोल, शोगाओल तथा जिजंरीन प्रमुख है।

गुण–धर्म

यह उष्ण होने से कफ–वात शामक है। सर्दी का नाश करने वाला, शोथहर और वेदनास्थापन है। यह नाड़ियों को उत्तेजना

Scanned by CamScanner

देने वाला और वातशामक है। यह तृप्तिघ्न, रोचन, दीपन, पाचन, वातानुलोमन, शूल प्रशमन तथा अर्शोघ्न है। उष्ण होने के कारण हृदय एवं रक्तवह संस्थान को उत्तेजित करता है। यह शोथहर तथा रक्त शोधक है। अदरक कटु और स्निग्ध होने के कारण कारण यह स्त्रोतोवरोध का भी निवारण करती है।

कफघ्न और श्वास हर है। यह मधुर विपाक होने से वृष्य और उष्ण होने से उत्तेजक है। यह ज्वरघ्न और शीत प्रशमन है। सौंठ एक उत्तम आमपाचन है। अतः शरीरस्थ आमदोष का पाचन कर आम से उत्पन्न होने वाले विविध विकारों को दूर करती है। तीक्ष्णता के

औषधीय प्रयोग

शिरोवेदना : दूध से चतुर्थांश सौंठ का कल्क मिलाकर, नस्य लेने से नाना दोषों से उत्पन्न तीव्र शिरोवेदना नष्ट होती है।

प्रतिश्याय : 2 चम्मच अदरक के रस में मधु डालकर प्रातः–सायं सेवन करने से श्वास कास तथा प्रतिश्याय आदि रोग शान्त होते हैं।

नजला : 2 चम्मच अदरक का रस गर्म करके उसमें शहद मिलाकर पीने से नजले–जुकाम का वेग कम होता है। शीत प्रशमन होता है।

दमा : जो रोगी पिप्पली तथा सैंधा नमक इनके मिश्रित चूर्ण को अदरक के रस के साथ सोने के समय सेवन करता है, वह सात दिन के अन्दर ही श्वास रोग से मुक्त हो जाता है।[3]

मूर्च्छा : इसके रस की नस्य देने से ज्वर में होने वाली मूर्च्छा मिटती है।

दंतशूल : सर्दी की दन्त पीड़ा में इसके टुकडे को दांतों के बीच दबाने से लाभ होता है।

कर्णशूल : इसका रस गुनगुना कर 2–5 बूंद कान में डालने से कर्णशूल मिटती है।

निमोनिया : अदरक रस में 1 या दो वर्ष पुराना घी व कपूर मिलाकर गरम कर छाती पर मालिश करें।

आम पाचन : सौंठ, अतीस, नागरमोथा, इनका क्वाथ आम का पाचन करता है अथवा सौंठ, अतीस, नागरमोथा का कल्क, केवल पथ्या का चूर्ण अथवा सौंठ का चूर्ण मिलाकर गरम पानी के साथ सेवन करने से भी आम का पाचन होता है। (मात्रा–500 मि०ग्रा० से 2 ग्रा० तक)।[2]

संग्रहणी : सौंठ, नागरमोथा, अतीस, गिलोय, इन्हें समभाग लेकर जल से क्वाथ करे। इस क्वाथ को प्रातः–सायं पीने से मंदाग्नि, निरन्तर कोष्ठ का आम दोष युक्त रहना एवं आम संयुक्त ग्रहणी रोग शान्त होता है।[1] (मात्रा 20 से 25 मि०ली०)

ग्रहणी : गिलोय, अतीस, सौंठ, नागरमोथा, इन चारों का क्वाथ आमयुक्त ग्रहणी रोग को हरता है। ग्राही, दीपन तथा पाचन है। (मात्रा 20 से 25 मि०ली० दिन में दो बार)

दीपन :

1. 2 ग्राम सौंठ का चूर्ण घृत के साथ अथवा केवल सौंठ का चूर्ण उष्ण जल के साथ प्रतिदिन प्रातः काल खाने से भूख बढ़ती है।
2. प्रतिदिन भोजन के प्रारम्भ में लवण एवं अदरक की चटनी खाने से जीभ एवं कंठ की शुद्धि होती है। अग्नि प्रदीप्त तथा हृदय बलवान होता है।[4]
3. इसका अचार खाने से भूख बढ़ती है।

अजीर्ण : यदि प्रातः काल अजीर्ण (रात्रि का भोजन न पचने) की शंका हो तो हरड़, सौंठ तथा सैंधा नमक का चूर्ण जल के साथ चम्मच खा लेवें। दोपहर अथवा सांयकाल थोड़ा भोजन कर लेवें।[1]

अरुचि :

1. सौंठ और पित्तपापड़ा का पाक ज्वरनाशक, अग्नि प्रदीप्त करने वाला तृष्णा तथा भोजन की अरुचि को शान्त करने है।[2] इसे 5–10 ग्राम की मात्रा में नित्य सेवन करें।
2. सौंठ, चिरायता, नागरमोथा, गुरुच का पाक्यभी ज्वर नाशक अग्नि प्रदीप्त करने वाला, तृष्णा एवं भोजन की अरूचि को शान्त करने वाला होता है।[3]

उदर रोग : सौंठ, हरीतकी, बहेड़ा, आँवला इनको समभाग लेकर कल्क बनाले। गाय का घी तथा तिल का तेल ढाई किलोग्राम, दही का पानी ढाई किलोग्राम, इन सबको मिलाकर विधिपूर्वक घी का पाक करें, तैयार हो जाने पर छानकर रख लें। इस घृत का पान 10–20 ग्राम की मात्रा में प्रातः–सायं करने से सभी प्रकार के उदररोगों का नाश होता है तथा कफज, वातज एवं गुल्मरोग में भी इसका प्रयोग होता है।[8]

मंदाग्नि :

1. अजवायन, सैंधा नमक, हरड, सौंठ इनके चूर्णो को समपरिमाण में एकत्रित करें। मात्रा 500 से 250 मि०ली० तक। यह चूर्ण शूल को नष्ट करता है। तथा मन्द अग्नि को प्रदीप्त करता है।[3]
2. इसके 10–20 ग्राम रस में समभाग नींबू का रस मिलाकर पिलाने से मंदाग्नि दूर होती है।

वमन : इसके 10 ग्राम रस में, 10 ग्राम प्याज का रस मिलाकर पिलाने से लाभ होता है।

बहुमूत्र : इसके 2 चम्मच रस में मिश्री मिला प्रातः–सायं सेवन करने से लाभ होता है।

अर्शजनित वेदना : दुरालभा और पाठा, वेल का गूदा और पाठा, अजवाइन व पाठा अथवा सौंठ और पाठा इनमें से किसी एक योग

Scanned by CamScanner

का सेवन करने से अर्शजनित वेदना का शमन हो जाता है।

मूत्रकृच्छ : सौंठ, कटेली की जड़, बला मूल, गोखरु इन सबको 2–2 ग्राम मात्रा तथा 10 ग्राम गुड़ को 250 ग्राम दूध में उबालकर प्रातः–सायं पीने से मल–मूत्र की रुकावट का, ज्वर का तथा शोथ का नाश होता है।

अण्डकोषवृद्धि : इसके 10–20 ग्राम स्वरस में 2 चम्मच मधु मिलाकर पीने से वातज अंडकोषवृद्धि मिटती है।

कामला : अदरक, त्रिफला और गुड का मिश्रण देने से कामला मिटता है।

अतिसार :

1. सौंठ, खस, विल्वगिरी, मोथा, धनियाँ, मोचरस तथा नेत्रबाला का क्वाथ अतिसार नाशक तथा पित्त–कफ ज्वर नाशक है।[3]
2. धनिया 10 ग्राम, सौंठ 10 ग्राम इनका विधिवत क्वाथ करके रोगी को प्रातः–सायं सेवन करने से वातश्लेष्मज्वर, शूल और अतिसार नष्ट होता है।
3. सौंठ और इन्द्र जौ के समभाग चूर्ण को चावल के पानी के साथ पीने को दें, जब चूर्ण पच जाए, उसके बाद चांगेरी, तक्र, दाडिम का रस डालकर पकायी यवागू अतिसार में खाने को दें।[5]

वातरक्त : अंशुमती के क्वाथ से 640 ग्राम दूध को पकाकर उसे 80 ग्राम मिश्री मिलाकर पीने के लिये दें। उसी प्रकार पिप्पली और सौंठ का क्वाथ तैयार करके 20 मि०ली० प्रातः–सायं वातरक्त के रोगी को पीने के लिये दें।

वातशूल : सौंठ तथा एरण्डमूल के क्वाथ में हींग और सौवर्चल नमक का प्रक्षेप देकर पीने से वात शूल नष्ट होता है।[2]

शोथ :

1. सौंठ, पिप्पली, जमालगोटा की जड़, चित्रक मूल, वाय विडंग इन सभी द्रव्यों को समान भाग लें और दूनी मात्रा में हरीतकी चूर्ण लेकर इस चूर्ण का सेवन 3–6 ग्राम की मात्रा में गरम जल के साथ प्रातः–सायं करें।[6]
2. सौंठ, पिप्पली, पाण, गज पिप्पली, छोटी कटेरी, चित्रकमूल, पिप्पलामूल, हल्दी, जीरा मोथा इन सभी द्रव्यों को समभाग लेकर इनके कपडछन चूर्ण को मिलाकर रख ले, इस चूर्ण को 2 ग्राम की मात्रा में गुनगुने जल के साथ दिन में 3 बार सेवन करने से त्रिदोष जनित शोथ तथा चिरकाल जनित शोथ का विनाश होता है।
3. अदरक का 10 से 20 ग्राम स्वरस गुड मिलाकर प्रातः काल पी ले। सब प्राकर की शोथ शीघ्र ही नष्ट हो जाती है। (पथ्य केवल बकरी का दूध)

शूल : सौंठ के क्वाथ के साथ काला नमक, हींग तथा सौंठ के मिश्रित चूर्ण के सेवन करने से कफवातज हृच्छूल, पार्श्व शूल, पृष्ठशूल, उदरजल, तथा विसूचिका, प्रभृति रोग नष्ट होते हैं। यदि मल बन्ध होता है तो इसके चूर्ण को जौ के क्वाथ के साथ पीना चाहिये।

सधिपीडा : अदरक के एक किलोग्राम रस में 500 ग्राम तिल का तेल डालकर आग पर पकाना चाहिये, जब रस जलकर तेल मात्र रह जाये, तब उतारकर छान लेना चाहिये। इस तेल की शरीर पर मालिश करने से जोड़ों की पीडा मिटती है।

ज्वर तृषा : सौंठ, पित्तपापड़ा, नागरमोथा, खस लाल चन्दन, सुगन्ध बेला इन सबको समभाग लेकर बताये गये क्वाथ को थोड़ा–थोड़ा पीने से ज्वर तथा प्यास शान्त होती है। यह उस रोगी को देना चाहिये जिसे ज्वर में बार–बार प्यास लगती है।[1]

कुष्ठ : सौंठ, मदार की पत्ती, अडूसा की पत्ती, निशोथ, बडी इलायची, कुंदरू इन सबका समान–समान मात्रा में बने चूर्ण को पलाश के क्षार और गोमूत्र में घोलकर बने लेप को लगाकर धूप में तब तक बैठे जब तक वह सूख न जाए, इससे मण्डल कुष्ठ फूट जाता है और उसके घाव शीघ्र ही भर जाते हैं।[4]

ज्वर : समस्त ज्वरों में सौंठ एव धमासा का कषाय पंचविध कषाय बनाकर पीयें।

अदरक कच्चा

अदरक सूखा (सौंठ)

Scanned by CamScanner

दाह ज्वर : सौंठ, गन्धबाला, पित्तपापड़ा खस, मोथा, लाल चन्दन इनका क्वाथ ठंडा करके सेवन करने से तृष्णा–वमन पित्तज्वर तथा दाह का निवारण होता है।[2]

हैजा : अदरक का 10 ग्राम, आक की जड़ 10 ग्राम, इन दोनों को खरल कर इसकी काली मिर्च के बराबर गोली बनालें। इन गोलियों को गुनगुने पानी के साथ देने से हैजे में लाभ पहुँचता है इसी प्रकार अदरक का रस व तुलसी का रस समान भाग लेकर उसमें थोड़ी सी शहद अथवा थोड़ी सी मोर के पंख की भस्म मिलाने से भी हैजे में लाभ पहुँचता है।

इन्फ्लुएंजा : 6 ग्राम अदरक रस में, 6 ग्राम शहद मिलाकर दिन में 3–4 बार सेवन करें।

सन्निपात ज्वर: त्रिकुट, सैंधा नमक और अदरक का रस मिलाकर कुछ दिनों तक सुबह–शाम चटायें।

शरीर शैत्य : सन्निपात की दशा में जब शरीर ठंडा पड जाये तो इसके रस में थोड़ा लहसुन का रस मिलाकर मालिश करने से गरमाई आ जाती है।

1. मुस्तपर्पटकोशीर चन्दनोदीच्यनागरैः।
श्रृतंशीतं जलं दद्यात् पिपासा ज्वरशान्तये। (चरक)

2. मत ऊर्ध्व प्रवक्ष्यन्ते कषाया ज्वर नाशनाः।
पाक्यं शीत कषायं वा मुस्त वर्षपरकं जिबेत।। (चरक)

3. सनागरं पपर्टकं पिबेद् वा सदुरालभम्।
किराततिक्तं मुस्तंगुडूची विश्वभेषजम्।
पाठामुशीरं सोदीच्यं पिबेद् वा ज्वरशान्तये।
ज्वरघ्ना दीपनश्चैते कषाया दोष पाचनाः।।
तृष्णा रूचि प्रशमनामुखवैरस्यनाशनाः। (चरक)

4. चित्रकमेला बिम्बी वृषकं त्रिवृदर्कनागरम्।
चूर्णीकृतमष्टाहं भावयितव्यं पलाशस्य।।
क्षारेण गवां मूत्रसूत्रेण तेन तेनास्य मंडलान्याशु।।
मिद्यन्ते विलयन्ति च लिप्तान्यर्काभितप्तानि।। (चरक)

5. सनागरा मिन्द्रयवान पामयेत् तंडूलाम्बुना।
सिद्धां भवाम् जीर्णे च चाङ्गरीत कदाडिमैः।। (चरक)

6. योगान् संशभनात्रछणु।
पिप्पली नागरं पन्तति चित्रकं द्विगुणाभागम्।
विङ्गरायुत चूराभितेतदुष्णांम्बुना पिवेत। (चरक)

7. कृष्णा सपाढा राज पिप्पली च निदिग्धिका चित्रक नागरे च।
सपिप्पली मूलरजन्यजजी मुस्त च चूर्ण सूख होयपीताम्।। (चरक)

8. नागरत्रिफलाप्रस्थं घृततेलात्तथाऽऽढकम्।
मस्तुन साधयित्वैतत् पिबेत् सर्वोदरापहम्।
कफ मारुत सम्भूतै गुल्मे चैतत प्रशस्यते।। (चरक)

9. अंशुमत्या श्रृतः प्रस्थः पचसो द्विसितोपलः। (चरक)
पाने प्रशस्यतै तद्वत् पिप्पलीनागरैः श्रृतः।।

10. दुःस्पर्शकेन विल्वेन यवान्या नागरेण वा। (चरक)
एकैकेनापि संयुक्ता पाठा हन्त्यर्शसां रुजम्।।

11. नागरातिविषामुस्तक्वाथः स्यादामपाचनः। (चरक)
मुस्तान्तकल्कः पथ्या वा नागरं चोष्णावारिणा।

12. पक्त्वा ज्वरे कषायं वा मुस्तपर्पटकं श्रृतम्।
सनागरं पर्पटकं पिबेद् वा सदुरालभिम्।। (भैषज्य रत्नावली)

13. विश्वाम्बु पर्पटोशीर धन चन्दन साधितम्।
दद्यात् सुशीतलं वारि तृटछर्दिज्वरदाहनुत।। (भैषज्य रत्नावली)

14. नामरो शरी बिल्वाष्ट् धाम्य मोचरसाम्बुभि।
कृत क्वाथो भवेद ग्राही पित्तश्लेष्म ज्वरापहः। (भैषज्यरत्नावली)

15. धन्याकं विश्व संयुक्तमामघ्नं वह्निदीपनम्।
वातश्लेष्मज्वरहरं, शूलातीसारनाशनम्।। (भैषज्य रत्नावली)

16. शुंठी समुस्तातिविषां गुडूची पिवेज्जलेन क्वथितं समांशम्।
मन्दानलत्वे सततामामानुबन्धे ग्रहणीठादे च।। (भैषज्य रत्नावली)

17. गुडूच्यतिविषशुण्ठीमुस्तैः क्वाथः कृतोजयेत।
आमानुपक्तां ग्रहणीं ग्राही दीपन पाचनः।। (भैषज्य रत्नावली)

18. समयवशूक नागरचूर्ण लीढं घृतेन गोसर्गे।
कुरुते क्षुधां सुखाम्भः पीतं विश्वौषधं वैकम्।। (भैषज्य रत्नावली)

19. भोजनाग्रे सदा पथ्यं, लवणार्द्रकभक्षणम्।
अग्नि सदीपनं रुच्यं जिह्वाकण्ठ विशोधनम्।।

20. भवेद्यदा प्रातरजीर्णशप्रा तदाऽभयां, नागर सैन्धवाभ्याम्।
विचूर्णितां शीतजलेन भुक्तवा भुंज्जयादशप्रं मितमन्नकाले।। (भैषज्य रत्नावली)

21. विश्वभैषज मूलं क्वाथयित्व जलं पिबेव।
हिंङ्ग सौवर्चलोपेतं सद्य शूल निवारणम् ।। (भैषज्य रत्नावली)

22. दीप्यकं सैन्धव पथ्या नागरञ्च चतुः समम्।
चूर्णशूलं जयत्याशु मन्दस्याग्नेश्च दीपनम्।। (भैषज्य रत्नावली)

23. चूर्ण समं रुचक हिङ्ग महौषधानां शुंय्यम्बुमा कफ समीरणा।
सम्मवासुः। हत्पार्श्व पृष्ठ जठणर्त्ति विषूचिकासु तथा यवरसेन
विऽविकधे।। (भैषज्य रत्नावली)

24. अद्रिकस्य रसः पीतः पुरणा गुडः मिश्रितः।
अजाक्षीणशिनां शोधं सर्वशोथ हरो मवेत्।। (भैषज्य रत्नावली)

25. गिरिकर्ण फलं रसं मूलचं नस्य माचरेत्
मूलं वा बन्धेयव् कर्णो।।

Scanned by CamScanner

सेहुंड

वैज्ञानिक नाम	:	*Euphorbia neriifolia* L.
कुलनाम	:	Euphorbiaceae
अंग्रेजी नाम	:	Milk bush, Milk hedge
संस्कृत	:	सेहुंड, स्नुही, सुधा, समन्त, दुग्धा
हिन्दी	:	थूहर, सेहुण्ड
गुजराती	:	कंटालो, थोर
मराठी	:	वाय नियडुइंग
बंगाली	:	मनसारिज
पंजाबी	:	दंडे, थोहर, थोर
मलयालम	:	इल्लैकल्लि
अरबी	:	जकूम

परिचय

सेहुंड की कई जातियाँ होती है। साधारणतया जिसे सेहुंड कहते हैं उसका कांड व शाखायें कांटों से परिपूर्ण होती हैं। इसे बगीचों के चारों और बाड के रूप में लगाया जाता है। इसकी कई किस्में हैं, जिनमें थूहर और सीज है – इनकी डालियाँ पतली, पोली और मुलायम होती हैं। थूहर की जातियों में त्रिधारा, चर्तुधारा, पंच, षष्ठ और चतुर्दश धारा तथा विंश धारा भी होती है।

त्रिधारा थूहर एक प्रसिद्ध वनस्पति है जो सारे भारतवर्ष में सूखे स्थानो में अकसर पाई जाती है। इसकी डालियाँ त्रिधारी और पंचधारी होती है। इसके पत्तें बहुत–छोटे होते हैं, किसी किसी झाड़ में नहीं भी लगते हैं।

बाह्य–स्वरूप

इसका छोटा वृक्ष मांसल 6–20 फुट तक ऊँचा होता है। तना और शाखाएं कंटकित, संधियुक्त, गोलाकार या अस्पष्ट पंचकोशीय होता है। कांटे छोटे उपपत्रीय युग्म अनुलम्ब या कुन्तली रेखाओं में उभारों पर स्थित होते हैं। पत्र 6–12 इंच लम्बे, मांसल, अभिलट्वाकार, आयताकार शाखाओं के अग्रभाग पर समूहबद्ध होते हैं। पुष्प हरित पीत अधः मुख होते हैं।

गुण–धर्म

थूहर रेचक, तीक्ष्ण, अग्निप्रदीपक, चरपरा, भारी और शूल, अष्ठीलिका, आफारा, कफ गुल्म, उदर रोग, वात, उन्माद, प्रमेह, कुष्ठ, बवासीर, सूजन, मेद, पथरी, पांडु, व्रण, ज्वर, प्लीहा, विष और दूषी विष को नष्ट करने वाली है।

थूहर का दूध :
उष्ण वीर्य, स्निग्ध, चरपरा, हल्का, गुल्म, कुष्ठ, उदर रोग कृमियों को तथा दीर्घ उदर रोग व कोष्ठबद्धता में विरेचन के लिए हितकर है।

थूहर का कांड :
बहुत से कांटों वाला और अल्प कांटों वाला होता है। आचार्य चरक के मत में बहुकांटो वाला अधिक तीक्ष्ण होता है। दो या तीन वर्ष के पुराने सेहुंड को पतझड़ के अन्त में, उसमें किसी अस्त्र से चीर कर दूध निकालना चाहिये।[1] सेहुंड, पलाश, शीशम, त्रिफला यह सब मेदोनाशक एवं शुक्रदोष को मिटाने वाला है। प्रमेह अर्श, पांडुरोग नाशक एवं शर्करा को दूर करने के लिये श्रेष्ठ है।[1]

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

नेत्र रोग: थूहर के रस में तिला के तेल में काजल को खरल करके सुखाकर, आँख में अंजन करने से आँख का दुःखना बन्द हो जाता है।

खांसी :

1. थूहर के दो पत्तों को आग पर गरम करके, मसलकर, रस निकाल कर थोड़ा सा नमक मिलाकर, पीने से खांसी में आराम होता है।
2. इसके अन्त के कोमल डंडों को आग में गर्म कर उनका रस निकालकर, उसमें गुड़ मिलाकर पिलाने से बच्चे को वमन और विरेचन होकर खांसी मिटती है।
3. थूहर का साग बना कर खिलाने से कफ और श्वांस मिटता है।
4. त्रिधारा के रस में अड़ूसे के 10–20 पत्तों को पीसकर छोटी–छोटी गोलियां बनाकर 1 से 2 गोली दिन में दो–तीन बार चूसने से खांसी मिटती है।

कर्ण शूल : इसके रस को गरम कर कानों में 2–2 बूंद डालने से कान का दर्द दूर होता है।

बहरापन : 10–20 ग्राम थूहर के दूध को सरसों के तेल में पकाकर, जब तेल मात्र शेष रह जायें, तब 2–2 बूंद तेल कान में डालने से बहरापन दूर होता है।

दांत निकालने के लिए : इसका दूध हिलते हुये दांत पर लगाने से वह दांत सहज से गिर जाता है परन्तु दूसरे दांत पर दूध नहीं लगना चाहिये।

दंतशूल : त्रिधारा के दूध में रुई का फोहा भिगोकर उसको घी में जलाकर दाढ में रखने से उसका दर्द मिटता है।

आंत्रकृमि: त्रिधारा की जड़ और हींग को पीस कर पेट पर लेप करने से बच्चे की आंतो के भीतर के कीड़े मर जाते हैं।

रेचन :

1. उदर रोगों में काली मिर्च को इसके दूध में डुबोकर सुखा लें। तीव्र रेचन की आवश्यकता होने पर 1–2 दाने खिलाने से रेचन हो जाता है।
2. हरड़, पीपल और निशोथ आदि रेचक औषधियों को इसके दूध में तर करके खिलाने पर तीव्र विरेचन होकर जलोदर, सूजन व अफारा मिट जाता है।

जलोदर : इसके रस को लम्बे समय तक ज्वर आने के कारण पैदा हुये जलोदर रोग में तथा विस्फोटक रोगों में 5–10 मिलीलीटर की मात्रा में प्रयोग लिया जाता है।

अर्श : थूहर के दूध और हल्दी के चूर्ण को समभाग लेकर मिलाकर लेप तैयार करें, इस लेप को लगाने से अर्श नष्ट हो जाता है।[8]

सूजन : पेशियो की सूजन पर इसका दूध लगाने से सूजन बिखर जाती है और पकती भी नहीं है।

व्रण : थूहर, अर्क, करंज तथा चमेली के पत्तों को गोमूत्र के साथ पीसकर लेप करने से दूषित व्रण, अर्श और नाड़ी व्रण नष्ट होते हैं।

मस्से : त्वचा के ऊपर जो मस्से और दूसरे कठोर फोड–फुन्सीं हो जाते हैं, वे इसके दूध को लगाने से मिट जाते हैं।

अन्य प्रयोग : जिस घर की छत पर त्रिधारा के गमले पड़े हों उस पर बिजली नहीं गिरती।

स्वानुभूत प्रयोग : किसी भी प्रकार के चर्म रोग में हमने अपने रोगियों पर देखा है कि सेहुंड का स्वरस निकाल कर उसमें बराबर का सरसों का तेल मिलाकर, पकाकर लगाने पर सोराइसिस तक ठीक हो जाता है।

(1) सेहुण्डः सिंह तुण्डः स्याद्वज्रा ब्रजद्रुमोऽपि च।
सुधा समन्त दुग्धा च स्नुक स्त्रियां स्यातस्नुही गुडा।।
(भाव प्रकाश)

(2) सेहुण्डोरेचनस्तीक्ष्णो दीपनः कटुको गुरुः।
शूलामाष्ठीलिका फगुल्मोदरानिलान्।। (भाव प्रकाश)

(3) उन्मादमेहकुष्ठार्शः शोथमेदोश्मपाण्डुताः।
व्रणशोथज्वरप्लीह विषदूषीविषंहरेत्।। (भाव प्रकाश)

(4) उष्णवीर्यं स्नुहीक्षीरं स्निग्धं च कटुकं लघु
गुल्मिनां कुष्ठिनां चापि तथैवोदररोगिणाम्।।
हितमेतद्विरेकार्थं ये चान्ये दीर्घरोगिणः (भाव प्रकाश)

(5) द्विविधः स मतो यश्च बहुभिश्चैव कंटकैः।
सुतीक्ष्णैः कंटकैरल्पैः प्रवरो बहुकंटकः।।
स नाम्ना स्नुग्गुडा नन्दा सुधा निस्त्रिंशपत्रकः।
तं विपाट्याहरेत् क्षीरं शस्त्रेण मतिमान् भिषक्।।
द्विवर्षं वा त्रिवर्षं वा शिशिरान्ते विशेषतः (चरक)

(6) मुष्ककपलाशधवचित्रक मदनवृक्षकशिंश
पावजवृक्षास्त्रि–फला चेति। (सुश्रुत)

(7) श्यामामहाश्यामात्रिवृद्दन्तीशंखिनीतिल्वककम्पिल्लक। (सुश्रुत)

(8) स्नुही क्षीर युक्त हरिद्रा चूर्णमालेपः।। (सुश्रुत)

(9) पूतीकार्क सुङ्नरेन्द्रद्रुमाणां। (सुश्रुत)

Scanned by CamScanner

शंखपुष्पी

वैज्ञानिक नाम	:	*Convolvulus microphyllus* Sieb. ex Spreng.
कुलनाम	:	Convolvulaceae
अंग्रेजी नाम	:	Shankh pushpi
संस्कृत	:	शंख मालिन, शंखपुष्पी, शंखाह्य
हिन्दी	:	शंखाहुली, शंखपुष्पी
गुजराती	:	शंखावली, संखावली
मराठी	:	शंखाहुली
बंगाली	:	शंखाहुली

परिचय

वर्षा ऋतु में समस्त भारतवर्ष में पथरीली एवं परती भूमि मे नैसर्गिक रूप से उत्पन्न शंखपुष्पी के प्रसरणशील छोटे–छोटे घास के समान पौधे पाये जाते हैं। बहुत से स्थानों पर यह बारह मास देखी जा सकती है। मूलस्तम्भ प्रायः बहुवर्षायु होता हैं। पुष्प के रंग भेद से इसकी तीन जातियां पाई जाती है, (1) श्वेत, (2) नील (3) औषध कर्म में श्वेत फूल वाली शंखपुष्पी का ही व्यवहार करना चाहिये। प्रस्तुत विवरण इसी के विषय में है।

बाह्य–स्वरूप

काष्ठीय मूल स्तम्भ से 4–12 इंच लम्बी, रोमश, शखायें कुछ ऊँचा उठकर, बाद में जमीन पर फैल जाती है। पत्र 1/2 इंच से $1^1/_2$ इंच तक लम्बे, कुछ मोटे वृन्त की ओर संकरे सिरे की और चौड़े तथा चिकने होते हैं, मलने से मूली के पत्ते जैसी गंध आती है। फूल, श्वेत या फीके अथवा गहरे गुलाबी रंग के, फनेल के आकार के गोल होते हैं। फल भूरे रंग का, छोटा, चिकना और चमकदार होता है, इसमें भूरे या काले रंग के 4 बीज होते हैं। पूरे क्षुप पर जामुनी या भूरें रंग के रोये होते हैं।

रासायनिक संघटन

इसमे एक क्षाराभ शंखपुष्पीन, एवं दो स्फटिकीय द्रव्य पाये जाते है।

गुण–धर्म

कषाय, शीतवीर्य, स्निग्ध, पिच्छिल, तिक्त, मेध्य, रसायनी, अपस्मार आदि मानसिक रोगों को दूर करने वाली, स्मृति कान्ति तथा बलवर्धक। कुष्ठ, कृमि और विष को नष्ट करने वाली है।[1]

प्रयोज्य अंग : पत्र पुष्प, फल बीज, मूल – पचांग

औषधीय प्रयोग

स्मरणशक्ति वर्धनार्थ :

1. 3 से 6 ग्राम तक शंखपुष्पी का चूर्ण शक्कर व दूध के साथ हमेशा प्रातः काल लेने से स्मरण शक्ति बढ़ती है। अध्ययन से उत्पन्न थकावट दूर होती है।
2. शुंखपुष्पी 2–4 ग्राम एवं बच मीठी का लगभग 1 ग्राम चूर्ण बच्चों को देते रहने से, वह बहुत बुद्धिशाली एवं चतुर होते हैं।
3. प्रातः काल शंखपुष्पी स्वरस 10–20 मिलीग्राम अथवा चूर्ण 2–4 ग्राम को गाय घी एवं शक्कर के साथ 6 मास तक सेवन करने से वृद्धावस्था की झुर्रिया दूर होकर शरीर मे बल एवं स्मरण शक्ति तथा मेधा की वृद्धि होती है।
4. शंखपुष्पी का 3–6 ग्राम चूर्ण, शहद मिलाकर चाटे और ऊपर से दूध पीयें। इसके सेवन से बुद्धि बढ़ती है।

Scanned by CamScanner

अपस्मार :

1. शंखपुष्पी का रस 2 ग्राम सुबह शाम शहद में मिलाकर पिलाने से अपस्मार रोग में लाभ हो जाता है।
2. शंखपुष्पी, बच और ब्राह्मी को बराबर–बराबर लेकर चूर्ण कर लें। इस चूर्ण को 3 ग्राम की मात्रा में दिन में तीन बार देने से अपस्मार, हिस्टीरिया और उन्माद रोग में लाभ हो जाता है।
3. छाया में सुखाई हुई शंखपुष्पी 1 कि०ग्रा०, शर्करा 2 कि०ग्रा०, दोनों को पीसकर छान दें और बोतलों में भरकर रख लें। इस चूर्ण को 5 ग्राम से 10 ग्राम तक की मात्रा में दूध के साथ लेने से मस्तिष्क बलवान होता है।
4. शंखपुष्पी का रस 10 से 20 ग्राम तक, कूठ का चूर्ण 500 मिलीग्राम थोड़े शहद के साथ लेते रहने से उन्माद अपस्मार मिटता है ।
5. इसका स्वरस 10–20 मिलीग्राम मधु के साथ देने से सब प्रकार के उन्माद में अच्छा लाभ होता है।

शिरोवेदना : शंखपुष्पी 1 ग्राम, खुरासानी अजवायन 250 मिलीग्राम, उष्ण जल के साथ देने से शिर की वेदना सिर्फ 5 मिनट में दूर हो जाती हैं।

वमन : इसके पंचाग के दो चम्मच रस में एक चुटकी काली मिर्च का चूर्ण मिलाकर मधु के साथ बार–बार पिलाने से वमन पर नियन्त्रण हो जाता है।

शैय्यामूत्र : बच्चे रात्रि में सोते समय मूत्र कर देते हैं, उनको रात्रि

शंखपुष्पी–नीलपुष्प (Evolvulus alsinoides)

में सोते समय शंखपुष्पी चूर्ण 2 ग्राम व काले तिल 1 ग्राम मिलाकर दूध के साथ देना चाहिये।

मधुमेह :

1. शंखपुष्पी के 6 ग्राम चूर्ण को, सुबह–शाम गाय के मक्खन के साथ या पानी के साथ सेवन करने से मधुमेह में बहुत लाभ होता है।
2. मधुमेह की कमजोरी को दूर करने के लिये, इसका 2–4 ग्राम चूर्ण अथवा स्वरस 10–20 मिलीग्राम लेना हितकारी है।

लू लगने पर ज्वर में जब रोगी बेसुध हो जाता है, और प्रलाप करने लगता है, उस समय नींद लाने के लिये शंखपुष्पी चूर्ण 5–10 ग्राम चूर्ण को दूध एवं मधु के साथ देने से बहुत लाभ होता है।

रक्तस्त्रावः शंखपुष्पी का 10–20 मिलीग्राम स्वरस मधु के साथ देने से रक्त बहना तुरन्त बन्द हो जाता है।

उच्चरक्त चापः ताजी शंखपुष्पी का 10–20 मिलीग्राम स्वरस सुबह, दोपहर तथा शाम, कुछ दिनों तक सेवन करने से उच्चरक्त चाप से हमेशा के लिये छुटकारा मिल जाता है।

1. शंखपुष्पी हिमा तिक्ता मेधाकृत् स्वर–कारिणी।
ग्रहभूतादिदोषघ्नी, वशीकरण सिद्विदा।। (रा०नि०)
2. शंखपुष्पी सरा स्वर्या कटुस्तिक्ता रसायनी।
अनुष्णा वर्णमेधाग्निबलायुः कान्तिदा हरेत्।।
अपस्मारमथोन्मादमनिद्रां च तथा भ्रमम्।। (के०)

Scanned by CamScanner

वैज्ञानिक नाम	:	*Asparagus racemosus* Willd.
कुलनाम	:	Liliaceae
अंग्रेजी नाम	:	Asparagus
संस्कृत	:	शतावरी, नारायणी, इन्द्रीवरी, शतपदी, शतवीर्या, बहुसुता, शतमूली
हिन्दी	:	शतावर
गुजराती	:	शतावरी
मराठी	:	शतावरी
बंगाली	:	शतमूली
तैलगू	:	पिन्न पिचर, चल्ला गड्डा
कन्नड	:	आषाढि
फारसी	:	गुर्जदस्ती
अरबी	:	मिसरी

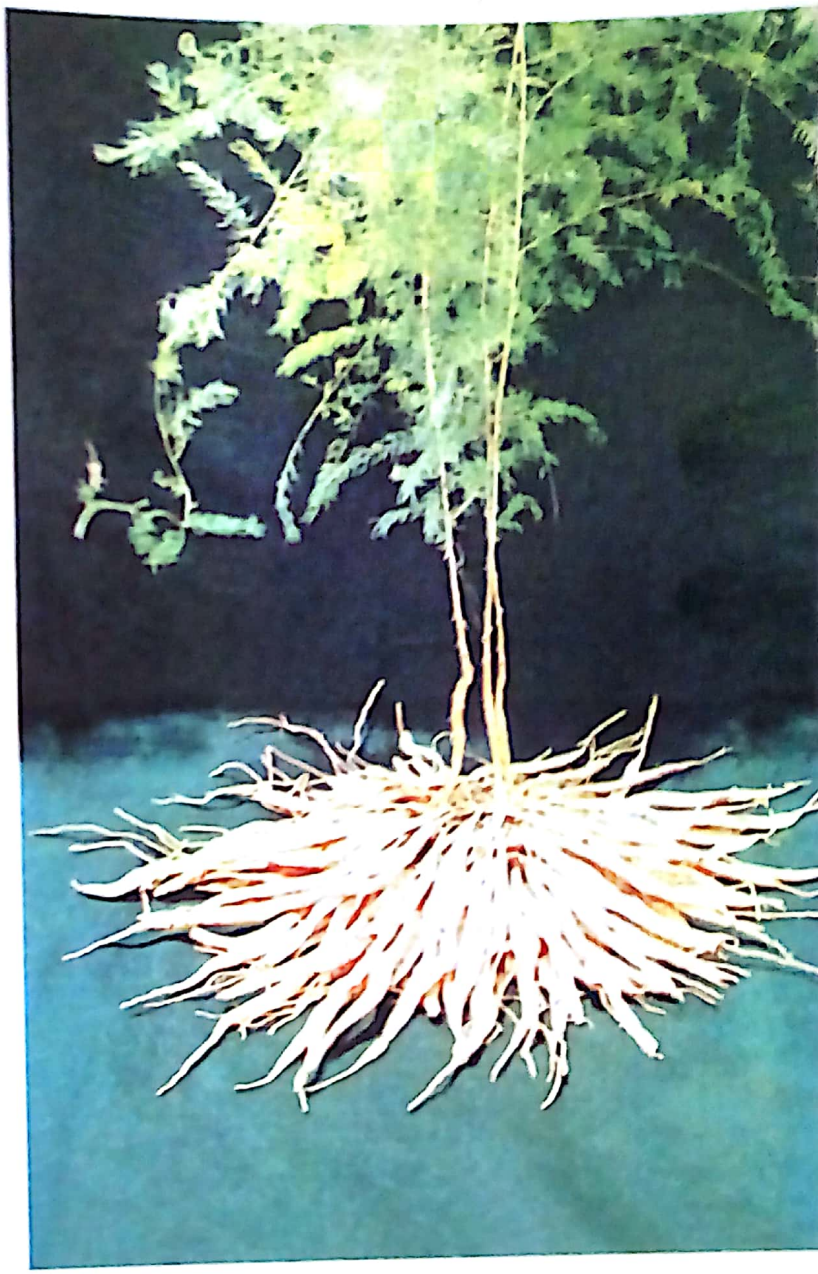

परिचय

शतावरी की बेल पूरे भारतवर्ष में पाई जाती है।

बाह्य–स्वरूप

इसकी कंटक युक्त झाडीनुमा आरोहिणी लता होती है। कांटे 1/4–1/2 इंच लम्बे, सीधे या कुछ वक्र होते है। पत्र पर्वसन्धि में 2–6 एक साथ गुच्छे में हंसिया के आकार के नीचे की ओर झुके हुए होते हैं। पुष्प मञ्जरी 1–2 इंच लम्बी एकल या गुच्छवद्ध सरल या शाखायुक्त होती है। फल मटर के आकार के कठोर गुठली के रूप में होते हैं। जो पकने पर लाल हो जाते हैं। इसकी जड में सफेद और लम्बे कन्द होते हैं, यह लम्बे कन्द ही बाजार में शतावर के नाम से बिकती है।

गुण–धर्म

इसके गुण–धर्म के विषय में आयुर्वेदाचार्यो के मत निम्न प्रकार से हैं:

1. भावप्रकाश निघण्टुकार के अनुसार यह गुरु, शीत, तिक्त रसायन है, यह बुद्धिवर्धक, अग्निवर्धक, वात, पित्त, शोक निवारक, शुक्र दुर्बलता को दूर करने वाली तथा स्तन्य क्षय को दूर करने वाली है।[1]
2. आचार्य सुश्रुत के मत में शतावरी सूखा रोग कमजोरी में भी बल प्रदायक है तथा दूषित शुक्र का शोधन करती है, बुद्धिवर्धक एवं अग्निवर्धक है।
3. धन्वन्तरी निघंटुकार के अनुसार शतावर जीर्ण–से–जीर्ण रोगी को पुनः बल तथा रोग से लडने की सामर्थ्य प्रदान करती है अर्थात् शरीर इसके सेवन से रोग निवारक क्षमता को पुनः प्राप्त करता है। यह वात पित्तशामक, शुक्रजनन, शीतल, मधुर एक दिव्य रसायन है।[3]
4. शतावरी (वृद्धरूहा) शुक्रजनन होती है शतावरी, सारिवा, पुनर्नवा, एरण्ड, हंसराज ये सब पित्त एवं वायु का नाश करने

Scanned by CamScanner

वाले तथा गुल्म कासरोग का भी नाश करने वाले है।[4]

5 आचार्य चरक ने शतावर को बल्य और वय:स्थापन मधुरस्कंध बताया है। आधुनिक वैज्ञानिक प्रयोगों से यह निष्कर्ष निकला है कि शतावर की जड़ हृदय को प्रभावित कर बल प्रदान करती है। हृदय की संकोचन क्षमता बढ़ाती है। प्रत्येक धड़कन के साथ शरीर के समस्त अंगों को शुद्ध रक्त की प्राप्ति होती है। आधुनिक चिकित्सा शास्त्रियों के अनुसार यह गर्भाशय उत्तेजना शामक है। गर्भाशय की गति को संतुलित करता है।

औषधीय प्रयोग

अनिद्रा रोग: शतावर की खीर में घी मिलाकर खाने से अनिद्रा रोग दूर होता है।

स्तौंधी : घी में शतावरी के कोमल पत्रों का शाक बनाकर सेवन करने से स्तौंधी दूर हो जाती है।

मस्तक पीड़ा : शतावर की ताजी जड़ को कूट, रस निकाल उसमें बराबर तिल का तेल डालकर उबाल लेना चाहिये। इस तेल की सिर पर मालिश करने से मस्तक पीड़ा और आधाशीशी मिटती है।

स्वर भंग : शतावर, खरैटी और शक्कर को मधु के साथ चाटने से स्वरभंग मिटता है।

वातजकास : शतावरी के किंचित गरम क्वाथ में पीपल का 1 ग्राम चूर्ण मिलाकर दिन में 3 बार पिलाने से वातज कास और शूल नष्ट हो जाता है।

सूखी खांसी : 10 ग्राम शतावरी, 10 ग्राम अड़ूसे के पत्ते और 10 ग्राम मिश्री को 150 ग्राम पानी के साथ उबालकर दिन में 3 बार पीने से सूखी खांसी मिटती है।

श्वास मूर्छा : इसका कल्क एक भाग, घी एक भाग, दूध चार भाग इन सबको उबालकर घी सिद्ध करके बलानुसार पीने से अम्लपित्त, रक्त पित्त, वात और पित्त के विकार, श्वास, मूर्च्छा और तृष्णा आदि रोग मिटते हैं।

दुग्ध वृद्धि : दूध के साथ इसके 10 ग्राम चूर्ण की फंकी देने से स्त्री का दूध बढ़ता है अथवा शतावरी को गाय के दूध में पीस कर सेवन करने से दूध मधुर और पौष्टिक भी हो जाता है।

रक्तातिसार : गीली शतावर को दूध के साथ पीस–छानकर दिन में 3–4 बार पीने से रक्त अतिसार मिटता है।

पुरूषार्थ : इसका पाक बनाकर सेवन करने से अथवा दूध के साथ इसके चूर्ण की खीर बनाकर खाने से पुरुषार्थ बढ़ता है।

धातुवृद्धि : गीली शतावर को चीरकर बीच के तिनके निकाल कर दूध के साथ पीसी मिश्री मिलाकर पीने से धातु बढ़ती है।

मूत्रविकार : शतावर और गोखरू का शर्बत बनाकर पीने से मूत्रविकार मिट जाता है।

कमजोरी : शतावरी का घृत मर्दन करने से शरीर की निर्बलता मिटती है।

वीर्य वृद्धि : 5–10 ग्राम शतावरी घृत को नित्य प्रयोग करने से वीर्य बढ़ता है।

मूत्रकृच्छ : 20 ग्राम गोखरू के पंचांग के साथ समभाग शतावर को आधा किलो पानी में उबालकर, छानकर उसमें 10 ग्राम मिश्री और 2 चम्मच मधु

Scanned by CamScanner

मिलाकर थोड़ा-थोड़ा पिलाने से मूत्रदाह और मूत्र की रुकावट मिटती है या शतावरी व गोखरू का दुग्धावशेष क्वाथ, प्रात:-सायं सेवन करने से तथा पथ्य में रहने से मूत्रकृच्छ ठीक होता है।

मूत्रकृच्छ : शतावर की जड़ के क्वाथ में मधु और शक्कर मिलाकर पीने से त्रिदोषज मूत्रकृच्छ मिटता है।

अश्मरी : इसके 20-50 ग्राम रस में बराबर गाय का दूध मिलाकर पीने से पुरानी पथरी शीघ्रता से गल जाती है।

प्रमेह : 20 ग्राम शतावर के रस को 80 ग्राम दूध में मिलाकर पीने से सम्पूर्ण प्रमेह का नाश होता है।[2]

अनार्श : अर्श के मस्से जो बाहर से दिखाई नहीं पड़ते, वह शतावरी का चूर्ण 2-4 ग्राम दूध के साथ सेवन करने से दूर हो जाते हैं।

पित्तज प्रदर: इसके 10-20 ग्राम स्वरस में 1 चम्मच मधु मिलाकर सुबह-शाम पीने से पित्तज प्रदर मिटता है।

वात-ज्वर : समभाग शतावर और गिलोय के 10 ग्राम रस में थोड़ा गुड़ मिलाकर पीने से या अथवा दोनों के 50-60 ग्राम क्वाथ में 2 चम्मच मधु मिलाकर पीने से वात-ज्वर मिट जाता है।

विषनाश : इसकी जड़ का रस दूध मे मिलाकर, पिलाने से विष

की शान्ति होती है।

व्रण रोपण : शतावरी के 20 ग्राम पत्तों का कल्क बनाकर दुगने घी में तल कर अच्छी तरह पीस कर, व्रणों पर लगाते रहने से पुराने

Scanned by CamScanner

बडी शतावरी

से पुराना व्रण भी भर जाता है।

पित्तज रोग : शतावर के रस में मधु मिलाकर, दाह, शूल तथा अन्य सब पैत्तिक रोगों की शान्ति के लिये पीना चाहिये।[1]

स्वप्नदोष हर चूर्ण : ताजी शतावर की जड़ का चूर्ण 250 ग्राम, मिश्री 250 ग्राम कूट–पीसकर लें तथा 6–11 ग्राम की मात्रा 250 ग्राम दूध के साथ सुबह–सायं देने से प्रमेह, स्वप्नदोष दूर होकर शरीर पुष्ट होता है।

स्वानुभूत प्रयोग : हम लोग एक बार आसाम के आदिवासी इलाके में घूम रहे थे। हमने देखा कि एक भैंस दूध नहीं दे रही थी। उसका थन सूजा हुआ था, वहां के लोगों ने शतावर की आधा कि०ग्रा० जड़ों को भैंस को खिलाया तो सूजा हुआ थन (थनैला) तुरन्त ठीक हो गया। पूछने पर पता चला कि यदि शतावर की जड़ ताजी न हो तो सूखी जड़ 100 ग्राम देने से भी थनैला ठीक हो जाता है।

1. शतावरी हिमातिक्ता स्वाद्वी गुर्वी रसायनी
सुस्निग्ध शुक्रलाबल्यास्तन्यमेदोऽग्निपुष्टिदा।।
चक्षुष्यागतपित्रास्य, गुल्मातीसारशोथाजित (कै०नि०)

2. वातपित्तहरी वृष्या स्वादुतिक्ता शतावरी।
महती चैव हृद्या च मेध्याग्निबलवर्धिनी।। (सुश्रुत)

3. शतावरी हिमातिक्ता रसेस्वादुक्षयास्रजित।
वातपित्तहरी वृष्यारसायनवरा स्मृता।। (ध०नि०)

4. जीवकर्षभककाकोली मुद्गपर्णी माषपर्णी मेदा वृद्धरुहा जटिला कुलिङ्गा इति– देशेभासि शुक्र जननानि भवन्ति।
भुक्तवां वरी क्षीरयुतां विलासी भुक्ते शतं सुन्दरी! सुन्दरीणाम्।
(वैद्य जीवन)

Scanned by CamScanner

शीशम

114

वैज्ञानिक नाम	:	*Dalbergia sissoo* Roxb. ex DC.
कुलनाम	:	Fabaceae
अंग्रेजी नाम	:	Sissoo, The blackwood, Rosewood
संस्कृत	:	शिंशपा, कृष्णसारा, पिच्छिला, भस्मगर्भा
हिन्दी	:	शीशम, शीशो
गुजराती	:	सीसम
मराठी	:	शिशव
बंगाली	:	शिशुगाध, शिशू
पंजाबी	:	सीसम, शरई
तैलगु	:	इरूबुदु, शिशुपा
कन्नड़	:	बिरिडि

परिचय

शीशम का काष्ठ भवनों और फर्नीचर में प्रयोग किया जाता है। समस्त भारतवर्ष में शीशम के लगाये हुये अथवा स्वयंजात वृक्ष मिलते हैं। इस वृक्ष की लकड़ी और बीजों से एक तेल प्राप्त किया जाता है, जो औषधियों में प्रयोग किया जाता है।

बाह्य–स्वरूप

शीशम के 100 फुट तक ऊँचे पर्णापीत वृक्ष होते हैं। इसकी छाल मोटी, भूरे रंग की तथा लम्बाई के रूख में कुछ विदीर्ण होती है। नई शाखाएं कोमल एवं अवनत होती हैं। पत्र एकान्तर, पत्रक संख्या में 3–5 एकान्तर, 1–3 इंच लम्बे, रूपरेखा में चौड़े लट्वाकार होते हैं। पुष्प पीताभ–श्वेत, फली लम्बी, चपटी तथा 2 से 4 बीज युक्त होती है। इसका सारकाष्ठ पीताभ भूरे रंग का होता है। इसकी एक दूसरी प्रजाति का सारकाष्ठ कृष्णाभ भूरे रंग का होता है।

रासायनिक संघटन

काष्ठ में एक तेल पाया जाता है और फलियों में टैनिन और बीजों में भी एक स्थिर तेल पाया जाता है।

गुण–धर्म

शीशम, कड़वा, चरपरा, कसैला, शोथहर, उष्णवीर्य, गर्भपात कराने वाला, मेद, कोढ़, श्वेत–कुष्ठ वमन, कृमि, बस्ति रोग, व्रणदाह, रक्तविकार, सूजन तथा कफ को नष्ट करने वाला है।[1] शिंशपा – कड़वा, उष्ण, कण्डुदोषघ्न, बस्ति रोग नष्ट करने वाला, वर्ण्य, हिक्का, शोथ तथा विसर्प को नष्ट करने वाला है।[2] शिंशपा सार – स्नेहन, तिक्त, कड़वा, कसैला, दुष्ट व्रणों का शोधन करने वाला, कृमि–कफ–कुष्ठ नष्ट करने वाला है।[3] शीशम, अर्जुन, ताड़, चंदन यह सब साल सारादिगण, कुष्ठनाशक, प्रमेह – पांडु रोगनाशक, कफ और मेद के शोधक हैं। शीशम, पलाश, त्रिफला, चित्रक यह सब मेदोनाशक तथा शुक्र दोष को मिटाने वाले, प्रमेह, अर्श, पांडु रोगनाशक एवं शर्करा को दूर करने वाले हैं। शीशम, अगरू इन लकड़ियों का स्नेह दद्रु, कुष्ठ, कृमि में प्रयोग होता है।

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

नेत्ररोग : शीशम के पत्रों का रस और मधु मिलाकर इसकी बूंदें आंखों में डालने से दुःखती आंखें ठीक होती हैं।

स्तनों की सूजन : इसके पत्तों को गरम कर स्तनों पर बाँधने से और इसके काढ़े से स्तनों को धोने से स्तनों की सूजन उतरती है।

उदर दाह : उदर की जलन में 10–15 मिलीलीटर पत्र स्वरस देने से लाभ होता है। पाण्डुरोग में भी पत्र स्वरस 10–15 मिलीलीटर प्रातः–सायं देने से लाभ होता है।

विसूचिका : सुगंधित और चरपरी औषधियों के साथ इसकी गोलियां बनाकर विसूचिका में देते हैं।

पूयमेह, मेह : पूयमेह और लालामेह में 10–15 मिलीलीटर पत्र स्वरस दिन में 3 बार देने से लाभ होता है।

मूत्रकृच्छ : मूत्रकृच्छ की अत्यंत पीड़ा में इसके पत्तों का 50–100 मिलीलीटर क्वाथ दिन में 3 बार पिलाने से लाभ होता है।

रजोरोध / कष्टार्त्तव : सार चूर्ण 3–6 ग्राम अथवा क्वाथ 50–100 मिलीलीटर रजोरोध या कष्टार्त्तव में दिन में 2 बार देने से लाभ होता है।

रक्त प्रदर : 10–15 मिलीलीटर पत्र स्वरस रक्त प्रदर में प्रातः–सायं देने से लाभ होता है।

परमपूज्य स्वामी रामदेव जी का स्वानुभूत प्रयोग

शीशम के 8–10 पत्ते, व मिश्री 25 ग्राम दोनों को मिलाकर घोट–पीसकर प्रातः काल सेवन करें। कुछ ही दिनों के सेवन से मासिक धर्म में होने वाला रक्तस्राव सामान्य हो जाता है। श्वेत प्रदर तथा पुरूषों का प्रमेह रोग भी ठीक हो जाता है। सर्दियों में या ठण्ड के मौसम में इस प्रयोग के साथ–साथ 4–5 काली मिर्च भी प्रयोग में लेनी चाहिऐ। मधुमेह के रोगी बिना मिश्री के प्रयोग में लायें।

चर्म रोग : शीशम का तेल चर्म रोगों पर लगाने से लाभ पहुँचता है। नीली खुजली, शरीर की जलन, दुष्ट व्रणों पर शीशम का तेल लगाने से लाभ होता है।

कुष्ठ :

1. शीशम के 10 ग्राम सार कषाय को, 500 ग्राम पानी में उबाल लें, आधा शेष रहने पर उसमें सार का ही शर्बत मिलाकर नित्य 40 दिन तक प्रातः–सायं पीने से कोढ़ में बहुत लाभ होता है।
2. इसके पत्तों के लुआब को तिल के तेल में मिलाकर, छिली हुई चमडी पर लगाने से शान्ति रहती है।
3. इसके पत्तों का 50–100 मिलीलीटर क्वाथ प्रातः–सायं पिलाने से फोड़े–फुन्सी मिटते हैं। कोढ़ में भी इसके पत्तों या बुरादों का क्वाथ पिलाया जाता है।
4. इसके पत्तों या बुरादे का 50–100 मिलीलीटर क्वाथ पिलाने से फोड़े–फुन्सी मिटते हैं।

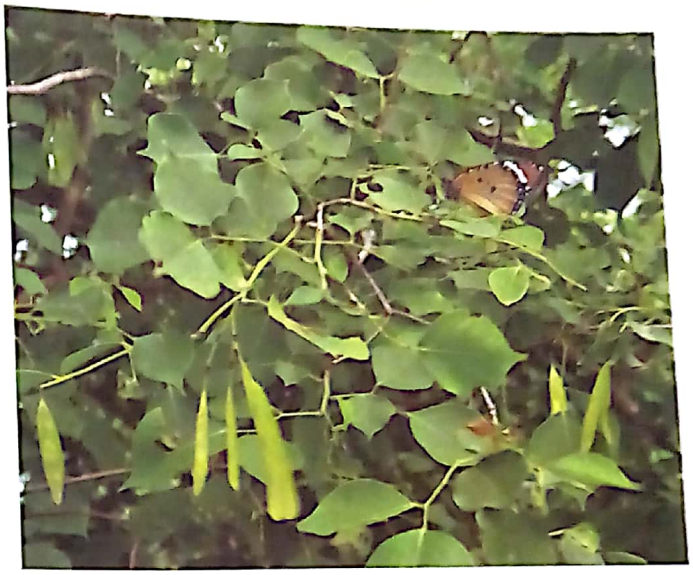

रक्त विकार :

1. शीशम के 3–6 ग्राम बुरादे का शरबत बनाकर पिलाने से रक्त विकार मिटता है।
2. इसके 1 किलोग्राम बुरादे को, 3 किलो पानी में भिगोकर रख लें, फिर उबाल लें, जब आधा रह जाये तो छान लेवें, उसमें 750 ग्राम बूरा डालकर शर्बत बना लें, यह शर्बत रक्तशोधक है।

गृधसी : शीशम की 10 किलो छाल का मोटा चूरा 23.5 किलोग्राम जल में उबालें, पानी का आठवां भाग जब बाकी रहे तब ठंडा होने पर कपड़े में छानकर फिर इसको चूल्हे पर चढ़ाकर गाढा करें। इस गाढ़े पदार्थ की 10 ग्राम की मात्रा में घी युक्त दूध पाक के साथ 21 दिन तक दिन में 3 बार लेने से गृधसी रोग मिटता है।

ज्वर : प्रत्येक प्रकार के ज्वर में शीशम का सार 20 ग्राम, पानी 320 ग्राम, दूध 160 ग्राम, इनको मिलावें। दूध मात्र शेष रहने पर दिन में 3 बार पिलावें, यह दूध प्रत्येक तरह के ताप को मिटाता है।[5]

1. शिशपा कटुका तिक्ता कषाया शोथहारिणी।
   उष्णवीर्या हरेन्मेदः कुष्ठश्वित्रवमिक्रिमीन्।
   बस्तिरूग्व्रणदाहास्र बलासान् गर्भपातिनी (भाव प्रकाश)
2. कटूष्णं कण्डुदोषघ्नं बस्तिरोगविनाशम्।
   शिंशपायुगलं वर्ण्यं हिक्काष्शोथविसर्पजित् (ध०नि०)
3. शिंशपासारस्नेहास्तिक्तकटुकषाया दुष्टव्रणशोधनाः
   कृमिकफकुष्ठानिलहराश्च। (सुश्रुत)
4. मुष्ककपलाशंधवचित्रकमदनं वृक्षकशिंशपावज्रवृक्षा–
   स्त्रिफलचेति।। (सुश्रुत)
5. उदकाद् द्विगुणं क्षीरं शिंशपासारसंयुतम्।
   तत् क्षीरोशेष क्वथितं पेयं सर्वज्वरापहम्।। (सुश्रुत)

Scanned by CamScanner

सिरस (शिरीष)

वैज्ञानिक नाम	:	*Albizia lebbeck* (L.) Willd.
कुलनाम	:	Mimosaceae
अंग्रेजी नाम	:	Siris tree
संस्कृत	:	शिरीष, भण्डिल, शुक पुष्प, शुकप्रिय
हिन्दी	:	सिरीस, सिरस
गुजराती	:	काकीयो, सरस, सरसडो
मराठी	:	शेवगा, शेगटा
पंजाबी	:	सरीह, शरीं, सिरस
तैलगु	:	दिरसेनमु, दिरासना
अरबी	:	सुल्तानुल्–अशजार
फारसी	:	दरख्तेजक्रिया

परिचय

समस्त भारतवर्ष में 8,000 फुट की ऊंचाई तक सिरस के जंगली और लगाये हुए वृक्ष पाये जाते हैं। इसकी लाल, श्वेत और कृष्ण कई जातियां मिलती हैं। कुछ वृक्ष छोटे और कुछ बहुत ऊंचे होते हैं। यह पर्णपाती और छायादार वृक्ष हैं। इसकी फलियों और पुष्पों में भेद होने से यह काला, पीला, श्वेत कई प्रकार का होता है।

बाह्य–स्वरूप

इसका वृक्ष मध्यमाकार तथा शाखाएं चहुँ ओर फैली हुई, कांड त्वक भूरे रंग की खुरदरी विदीर्ण, बाह्य स्तर लम्बे–लम्बे चप्पड़ों से युक्त होता है। अंतर छाल रक्त, कड़ी एवं खुरदरी केन्द्र में सफेद रंग की होती है। पत्र द्विधा पक्षवत्, इमली के पत्तों जैसे परन्तु उनसे कुछ बड़े, पुष्प अवृन्त तथा पीताभ श्वेत चंवर जैसे सुगन्धित, शिम्बी 4–12 इंच लम्बी चपटी, पतली इसमें 6–22 तक बीज होते हैं। वर्षाकाल में पुष्प और शरद्काल में फल लगते हैं जो काफी समय तक पेड़ों पर लगे रहते हैं।

रासायनिक संघटन

इसकी छाल में सैपोनिन, टैनिन एवं रालीय तत्व पाये जाते हैं।

गुण–धर्म

सिरस त्रिदोष शामक, वेदनास्थापन, वर्ण्य, विषघ्न, शिरोविरेचन तथा चक्षुष्य है। यह स्तम्भन, विसर्पघ्न, कासघ्न, वृष्य, कुष्ठघ्न और विषघ्न है। यह प्रमेह, पांडु रोगनाशक, कफ और मेद का शोधक है।

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

मूर्च्छा : सिरस के बीज और काली मिर्च समान भाग लेकर बकरी के मूत्र के साथ पीसकर आंख में अंजन करने से सन्निपात मूर्च्छा मिटती है।

उन्माद रोग :

1. सिरस के बीज, मुलेठी, हींग, लहसुन, सौंठ, वच और कूठ समान भाग लेकर, सबको बकरे के मूत्र में घोंटकर अंजन बनायें। इसकी नस्य देने से तथा इसका अंजन लगाने से उन्माद रोग नष्ट हो जाता है।
2. सिरस के बीज और करंज के बीजों को पीसकर लेप करने से, उन्माद, अपस्मार और नेत्र रोग मिटते हैं।

नेत्र विकार :

1. इसके पत्तों के रस का अंजन करने से नेत्र पीड़ा मिटती है।
2. रतौंधी के अंदर इसके पत्तों का काढ़ा पिलाने से और इसके स्वरस का अंजन करने से बहुत लाभ होता है।
3. इसके पत्तों के रस में कपड़ा भिगोकर सुखा लें। तीन बार भिगोयें और सुखायें। फिर इस कपड़े की बत्ती बनाकर चमेली के तेल में जला काजल बना लें। इस काजल के प्रयोग से नेत्रों की ज्योति बढ़ती है।

कर्ण पीड़ा : सिरस के पत्ते और आम के पत्तों के रस को गुनगुना कर कान में टपकाने से कर्ण पीड़ा मिटती है।

दंत रोग :

1. सिरस मूल की क्वाथ का गंडूष करने से तथा मूलत्वक चूर्ण से मंजन करने से पके हुए मसूड़ों का रोग मिटता है और दांत मजबूत होते हैं।
2. सिरस के गोंद और काली मिर्च को पीसकर मंजन करने से दंत पीड़ा मिटती है।

गंडमाला :

1. सिरस के 6 ग्राम बीजों को पीसकर उनकी प्रातः–सायं फंकी लेने से गंडमाला की पेशियों की सूजन उतरती है। इसके बीजों को पीसकर लेप करने से भी गंडमाला की सूजन उतरती है।
2. सिरस के बीज 1 भाग के चूर्ण को, दुगुने मधु में मिलाकर कोरी हांडी में डालें, मुंह अच्छी प्रकार बंद करके, दो सप्ताह तक धूप में रखें, दो सप्ताह के बाद निकालकर प्रतिदिन 10 ग्राम तक प्रातः–सायं प्रयोग करें।

खांसी : पीले सिरस के पत्तों को घी में भूनकर दिन में तीन बार देने से खांसी मिटती है।

अतिसार : इसके बीजों के चूर्ण की फंकी दिन में तीन बार देने से अतिसार मिटता है।

जलोदर : सिरस की छाल का क्वाथ पिलाने से जलोदर की सूजन उतरती है।

सिफलिस : पत्तों की राख, घी या तेल में मिलाकर लगाने से सिफलिस की चांदी को जल्दी सुखा देती है।

अंडकोष की सूजन : इसकी छाल को पीसकर लेप करने से अंडकोषों की सूजन मिटती है।

मूत्र विकार :

1. सिरस के 10 ग्राम पत्तों को घोट–छानकर, मिश्री मिलाकर प्रातः–सायं पिलाने से मूत्रकृच्छ मिटता है।
2. सिरस के बीजों के तेल को दूध की लस्सी में डालकर पीने से भी मूत्रकृच्छ मिटता है।

अर्श :

1. 6 ग्राम सिरस के बीज और 3 ग्राम कलियारी की जड़ को पानी से पीसकर लेप करने से अर्श का नाश होता है।
2. इसके तेल का लेप करने से अर्श मिट जाता है।
3. सिरस के बीज कूठ, आक का दूध, पीपल और सैंधा नमक, समान भाग लेकर सबको एकत्र कर पीस लें। ये लेप अर्श को शीघ्र नष्ट करता है।
4. कलियारी की जड़, दंती मूल और चीता समान भाग लेकर सबको एकत्र पीस लें। ये लेप अर्श का शीघ्र नाश करता है।
5. मुरगे की बीट, गुंजा (चौंटली), हल्दी, पीपल समभाग लेकर जल के साथ पीसकर लेप बनायें। यह लेप अर्श को शीघ्र नष्ट करता है।

Scanned by CamScanner

चर्म रोग :

1. कृमि कुष्ठ आदि चर्म रोग तथा दुष्ट व्रणों में सिरस का तेल लगाने से लाभ होता है।
2. श्वेत सिरस की छाल का शीत निर्यास, लोशन की तरह घाव, खुजली और दूसरे चर्म रोगों में उपयोग में लिया जाता है।
3. इसके पत्तों की पुल्टिस बनाकर फोड़े–फुन्सियों और सूजन के ऊपर बांधने से लाभ होता है।
4. इसके पुष्प ठंडे हैं। गर्मी के फोड़े–फुंसी और पित्त शोथ पर इनका लेप करते हैं।
5. सिरस के बीज अर्बुद और गाँठ को गलाने में लाजवाब हैं।

व्रण : सिरस की छाल के क्वाथ से धोते रहने से और पत्रों की राख का मरहम लगाने पर व्रण शुद्ध होकर भर जाता है।

व्रण रोपणार्थ :

1. सिरस की छाल, रसांजन और हरड़ का चूर्ण छिड़कें या शहद मिलाकर लगाने से लाभ होता है।
2. इसके पत्तों की पुल्टिस चाहे जैसी गाठें हों, उन पर आधा–आधा घंटे बाद बदल कर बांधने से उनको ऊपर लाकर फोड़ देती है।

विस्फोटक : सिरस की छाल, तगर, जटामॉसी, हल्दी और कमल समभाग ठंडे पानी में महीन पीसकर लेप करने से समस्त विस्फोटक नष्ट होते हैं।

विष विकार :

1. सिरस की छाल, मूल छाल, बीज और फूलों के चूर्ण को गौमूत्र के साथ दिन में 3 बार पिलाने से सब प्रकार के विष विकार में लाभ होता है।
2. सिरस की जड़, छाल, पत्र, पुष्प और बीजों को गौमूत्र में पीसकर लेप करने से सब प्रकार के विष नष्ट होते हैं।

मंडूक विष : सिरस के बीजों को थूहर के दूध में पीसकर लेप करने से मंडूक के दंश का विष उतर जाता है।

कीट दंश : इसके पुष्पों को पीसकर विषैले जीवों के दंश पर लेप करने से लाभ होता है।

शक्तिवर्धक : इसकी छाल का चूर्ण 1 से 3 ग्राम तक घी

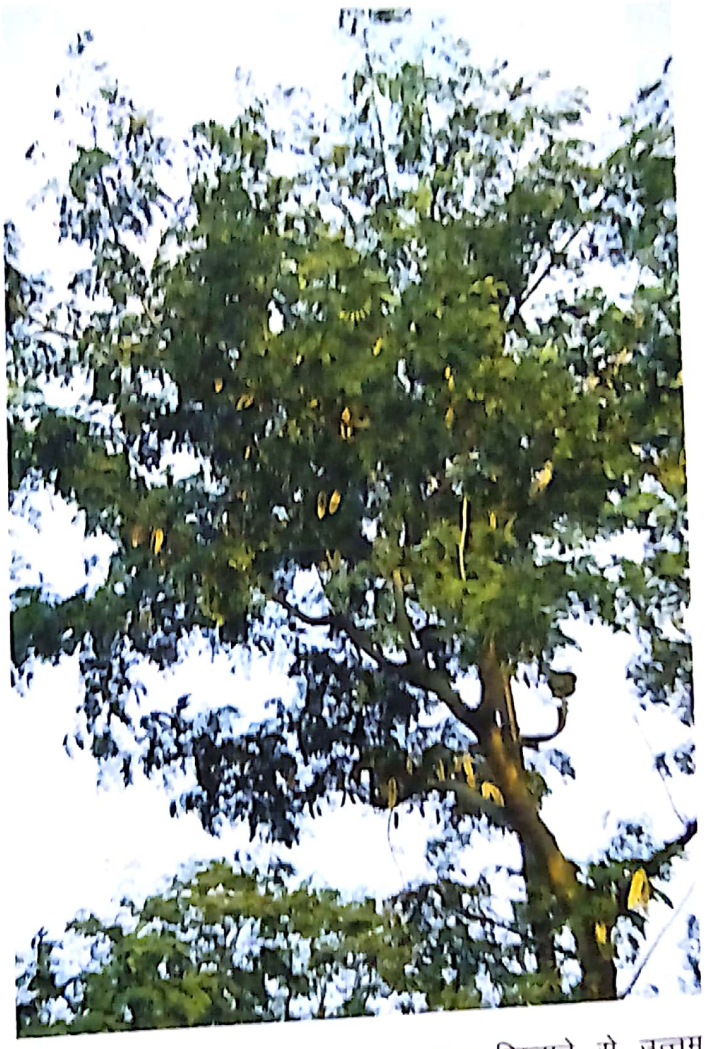

के साथ मिलाकर प्रतिदिन सुबह–शाम खिलाने से उत्तम शक्तिवर्धक और रक्त शोधक वस्तु का काम करता है।

वीर्यपुष्टि : इसके बीजों का 2 ग्राम चूर्ण, दुगुनी शक्कर मिलाकर प्रतिदिन गरम दूध के साथ प्रातः–सायं लेने से वीर्य बहुत गाढ़ा हो जाता है।

विसर्प रोग : इसकी छाल के महीन चूर्ण को सौ बार भिगोये हुए घी में मिलाकर लेप करने से विसर्प रोग मिटता है।

कुष्ठ : सिरस के पत्ते 15 ग्राम और काली मिर्च 2 ग्राम, दोनों को पीसकर 40 दिन तक पीने से कुष्ठ मिट जाता है।

1. शिरीषो मधुरोऽनुष्णस्तिक्तश्च तुवरोलघुः।
दोषशोथविसर्पघ्नः कासव्रणविषापहः।। (भाव प्रकाश)

2. तिक्तोष्णो विषहा वर्ण्यस्त्रिदोषशमनो लघुः।
शिरीषः कुष्ठकण्डूघ्नस्त्वग्दोषश्वासकासहा।। (कैं०नि०)

Scanned by CamScanner

सूरजमुखी

वैज्ञानिक नाम	:	*Helianthus annuus* L.
कुलनाम	:	Asteraceae
अंग्रेजी नाम	:	Sunflower, Lady elewen
संस्कृत	:	सूर्यावर्त्त, सुवर्चला
हिन्दी	:	सूरजमुखी, हुरहुल
गुजराती	:	सूरजमुखी
मराठी	:	सूच्यफूला, ब्रहमीका
बंगाली	:	सूरजमुखी
फारसी	:	आफताबी, गुले आफताब
अरबी	:	अक्षवान
तैलगु	:	आदित्य भक्ति

परिचय

सूरजमुखी दिनभर सूर्य के चारों ओर घूमता रहता है। जिस दिशा में भी सूर्य होता है, सूरजमुखी का पुष्प उसी दिशा में अपना मुँह कर लेता है। इसके फूल सूर्योदय पर खिलते हैं, तथा सूर्यास्त के समय बंद हो जाते हैं। श्वेत, बैंगनी और पीले पुष्प सुरजमुखी में मिलते हैं। इसके पौधे गांवों के आस-पास परित्यक्त भूमि में, बगीचों, सड़कों के किनारे तथा जोते हुए खेतों में मिलते हैं। बैंगनी पुष्प का सूरजमुखी विशेषत: बिहार एवं उड़ीसा से लेकर गुजरात तथा दक्षिणी भारत में पाया जाता है। गुण-कर्म की दृष्टि से तीनों ही प्रकार के सूरजमुखी प्राय: मिलते हैं तथा एक दूसरे के प्रतिनिधि के रूप में ग्राह्य हैं।

बाह्य-स्वरूप

सूरजमुखी के पौधे 1-4 फुट ऊँचे, पत्तियाँ 5 पत्रकों वाली परन्तु ऊपर के पत्र विपन्नक होते हैं। पुष्प श्वेत, बैंगनी और पीले मुंडकों में फूल के मध्य भाग में केसर कोष रहते हैं, और इन्हीं के मध्य में बीज रहते हैं। इसके पौधों का रोपण बीज द्वारा ही होता है।

रासायनिक संघटन

सूरजमुखी के ताजे पौधे को कुचलने से एक तेल प्राप्त होता है, जिसमें लहसुन तथा सरसों के समान गुण-कर्म होते हैं। शुष्क पौधो में यह नहीं पाया जाता। बीजों से एक स्थिर तेल प्राप्त होता है।

गुण-धर्म

इसका प्रधान कर्म कफ और वात का शमन करना है। इसके पंचाग के अल्कोहल सत्व में कैंसर विरोधी क्रिया पाई जाती है। यह दीपन पाचन, अनुलोमन, शूलघ्न और कृमिघ्न है, विशेषत: केचुओं का नाशक एवं कोष्ठ वात प्रशमन है। तीनों प्रकार के सूरजमुखी

Scanned by CamScanner

स्थानिक प्रयोग से राई के समान क्रिया करते है, ये दाहजनन, उत्तेजक, पूतिहर, वेदना स्थापन हैं।

औषधीय प्रयोग

आधाशीशी : सूरजमुखी के पत्तों के रस में इसके बीजों का खरल कर, कपाल पर दो तीन दिन तक लेप करने से, आधाशीशी की वेदना बंद हो जाती है।

कर्णरोग :

1. कर्ण शूल एवं पूतिकर्ण में पत्र कल्क एवं स्वरस से सिद्ध तेल कान में डालने से लाभ होता है। इसका पत्र स्वरस अकेला भी प्रयोग किया जा सकता है।
2. कान में यदि कीड़े पड़ गये हो तो इसके पत्र स्वरस में थोड़ा सा त्रिकटु (सौंठ, काली मिर्च, पीपल) का समभाग चूर्ण मिलाकर गुनगुना कर एक से दो बूंद कान में डालने से कान के कीड़े मर जाते हैं।

गलगंड : सूरजमुखी का मूल और लहसुन दोनों को पीसकर, टिकिया बनाकर गले पर बाँधने से गलगंड फूट जाता है और बह कर साफ हो जाता है मगर इसकी वेदना बहुत होती है।

उदरशूल : बच्चों के उदरशूल तथा आध्मान में इसके फूलों के रस की दस बूंदे दूध में डालकर पिलाने से लाभ होता है।

रेचन : रेचन के लिये इसके बीजों के तेल की एक बूंद नाभि में गिराने से रेचन क्रिया होकर पेट साफ हो जाता है।

मूत्रकृच्छ : इसके बीजों को बारीक पीसकर बासी पानी के साथ पीने से लाभ होता है।

अर्श : इसके बीजों का चूर्ण 3 ग्राम लेकर उसमें 3 ग्राम शक्कर मिलाकर प्रतिदिन प्रातः–सायं खाने से वायु की वजह से होने वाले बवासीर नष्ट हो जाता है, मगर पथ्य में घी, खिचड़ी और छाछ का ही प्रयोग करना चाहिये।

योनिदाह : सूरजमुखी की जड़ को मांड में घिसकर लगाने से लाभ होता है।

अश्मरी : इसकी जड़ को गाय के दूध में पीसकर पिलाने से अश्मरी शीघ्र निकल जाती है।

केंचुआ कृमिनाशक :

1. 1 से 3 ग्राम की मात्रा में इसके बीज खिलाने से केंचुआ व उदरगत कृमि का निर्हरण होता है।
2. डेढ ग्राम से 3 ग्राम तक बीजों का चूर्ण, शक्कर मिलाकर दिन में दो बार दो दिन तक देते हैं, और तीसरे दिन एरंड तेल का विरेचन देते हैं, इससे विशेषतः गंडूपद कृमि निकल जाते हैं।

सूजन :

1. फोडे के ऊपर इसके पत्ते बांधने से उनकी सूजन बिखर जाती है।
2. दुष्ट व्रणों को इसके पत्तों के क्वाथ से धोने से लाभ होता

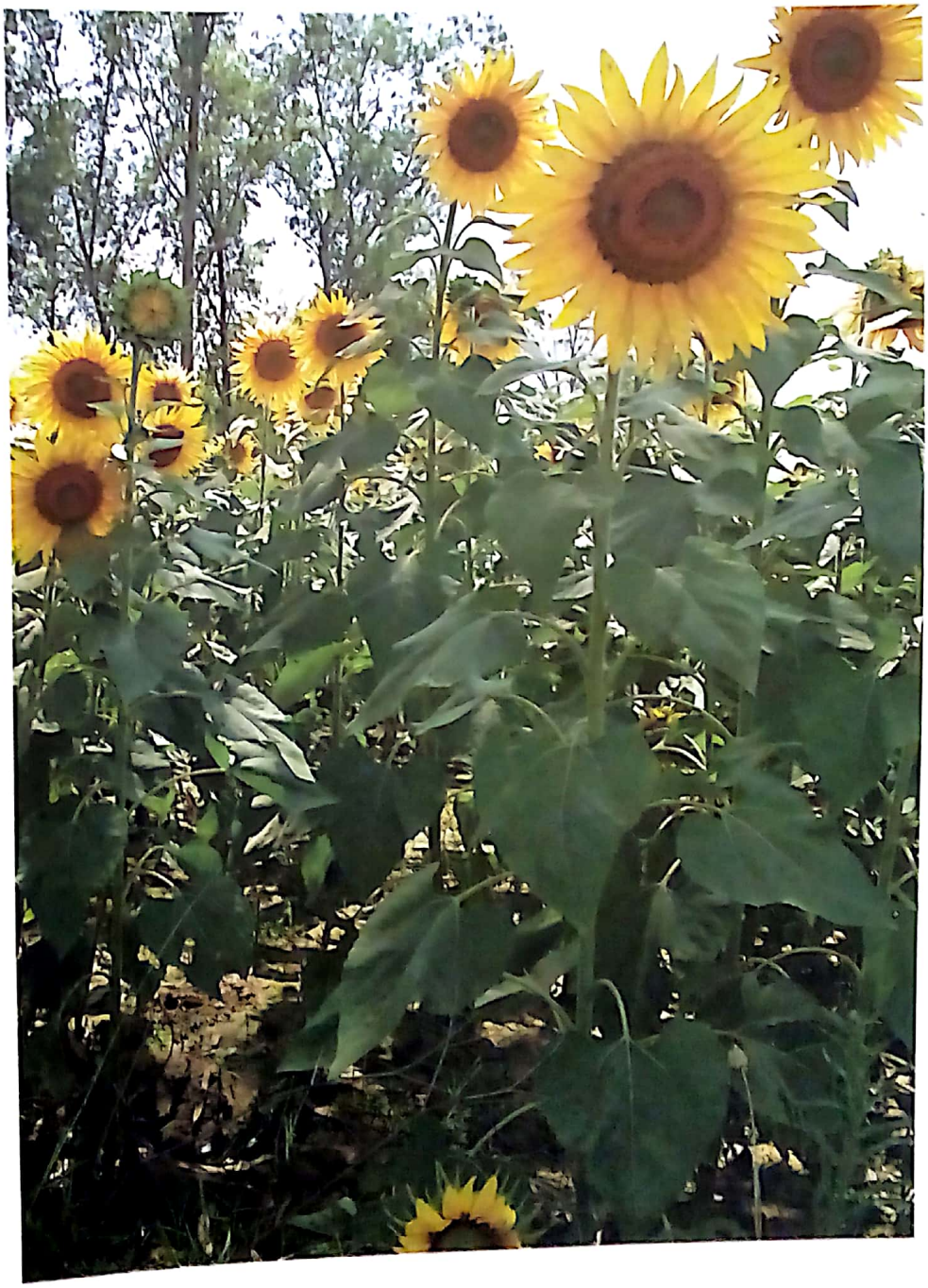

Scanned by CamScanner

है। जीर्ण श्लीपद आदि में पत्तियों को पीसकर लेप करते हैं, जिससे स्फोट निकलते हैं और फोड़ा फूटने पर पानी निकलने से सूजन कम हो जाती है।

ज्वर :

1. इसकी 10 ग्राम जड़ का क्वाथ 20 मि०ली० बनाकर सुबह–शाम पिलाने से हल्का ज्वर छूट जाता है।
2. इसकी जड़ कान में बाँधने से भूतज्वर छूट जाता है।
3. सूरजमुखी के पत्र और काली मिर्च समभाग पीसकर काली मिर्च के बराबर गोलियां बना लें। इन गोलियों में से 1–1 गोली तीन दिन तक सुबह, दोपहर तथा सायं देने से शीतज्वर छूट जाता है।
4. इसके पत्रों का क्वाथ 60 ग्राम की मात्रा में दिन में दो बार पिलाने से पैराटायफाइड या पानी झरा ज्वर छूटता है।
5. वातपित्तनुग श्वास में इसके पंचांग का चूर्ण त्रिकटु, दूध तथा घी के साथ खिलाकर उसके पश्चात् चावल तथा घी खिलाने से श्वास रोग में लाभ होता है।

कोलेस्ट्राल : सूरजमुखी के बीजों को अंकुरित कर खाया जा सकता है, इससे कोलेस्ट्राल की मात्रा नियमित रहती है।

उपदंश : इसके पत्तों को खटाई की तरह घोंटकर उनका फोक बाँधने से उपदंश मिटता है।

विष : इसके 15 ग्राम बीजों को पीसकर पिलाने से सब प्रकार के विष उतरते हैं।

विशेष : सूरजमुखी के पौधे, रोग उत्पन्न करने वाली आर्द्र तथा दुर्गन्धयुक्त वायु का शोषण करने की क्षमता रखते हैं। पृथ्वी से जो विष समान भाप उठकर संक्रामक मलेरिया ज्वर के रूप से देश भर में फैलती है, उस विष रूपी मलेरिया भाप को सोखने की क्षमता सूरजमुखी के पौधे में है। इसके पौधे रोपने से वायु शुद्ध होती है तथा मलेरिया ज्वर, संधिवात तथा आर्द्रता से उत्पन्न होने वाली व्याधियां नष्ट हो जाती है।

1. तिलपर्णी कटूष्णा स्यात्तीक्ष्णा विस्फोटकारिणी।
विदाहि कृमि शूलघ्नी स्वेदला कफवात नुत्।।
(द्रव्य गुण विज्ञान)

2. सूर्यावर्त भवं बीजं श्लक्ष्णं वसदिपेषितम्।
व्युषितोदकसम्पीतं कृच्छ्रं हन्ति सुदारूणम्।।
(भैषज्य रत्नावली)

Scanned by CamScanner

वैज्ञानिक नाम	:	*Valeriana wallichii* DC.
कुलनाम	:	Valeriaraceae
अंग्रेजी नाम	:	Indian valerian
संस्कृत	:	तगर, नत, वक्र, कुटिल, नहुष, शठ, दीपन
हिन्दी	:	तगर
गुजराती	:	तगर, गंठोडा
मराठी	:	तगर मूल
पंजाबी	:	सुगन्धबाला
अरबी	:	सारून
फारसी	:	आसारून
बंगाली	:	तगर पादुका
तैलगु	:	गन्धि तरग, कुचेट्टे

परिचय

तगर के स्वयजात क्षुप कश्मीर से भूटान तक, हिमालय क्षेत्रों में 10,000 फुट की ऊँचाई तक तथा खासिया की पहाडियों पर 4 से 6 हजार फुट की ऊँचाई तक पाये जाते है। इसके सुखाये हुए टेढे–मेढे यौगिक काड या गाठदार प्राय: टेढे–मेढे मूलस्तम्भ बाजारों में 'सुगन्ध बाला' के नाम से बिकते हैं। तगर विलायती वैलरिअन का उत्तम प्रतिनिधि है। केन्द्रीय नाडी सस्थान पर अपने अवसाद प्रभाव के कारण हिस्टीरिया एवं स्त्रियो में उदरगत वायु एवं मासिक धर्म की विकृति से होने वाले नाडी सक्षोभ की अवस्था में इसका प्रयोग बहुत उपयोगी सिद्ध होता है। बाजार मे इसका टिंचर एवं द्रव निर्यास भी बिकता है।

बाह्य–स्वरूप

तगर के बहुवर्षायु शाकीय रोम व पौधे, जिनका मूलस्तम्भ भूमि में, अनुप्रस्थ दिशा में फैला रहता है, प्राय: 6 से 18 इंच ऊंचे और गुच्छेदार होते हैं। मूलीय पत्र स्थायी, सवृत हृदयाकार, लट्वाकार, 1–3 इंच लम्बे तथा 1–1, 1/2 इंच चौडे खंडित या दतुर तीक्ष्णाग्र होते हैं। कांडीय पत्र थोडे छोटे अखंड या सपक्ष होते हैं।

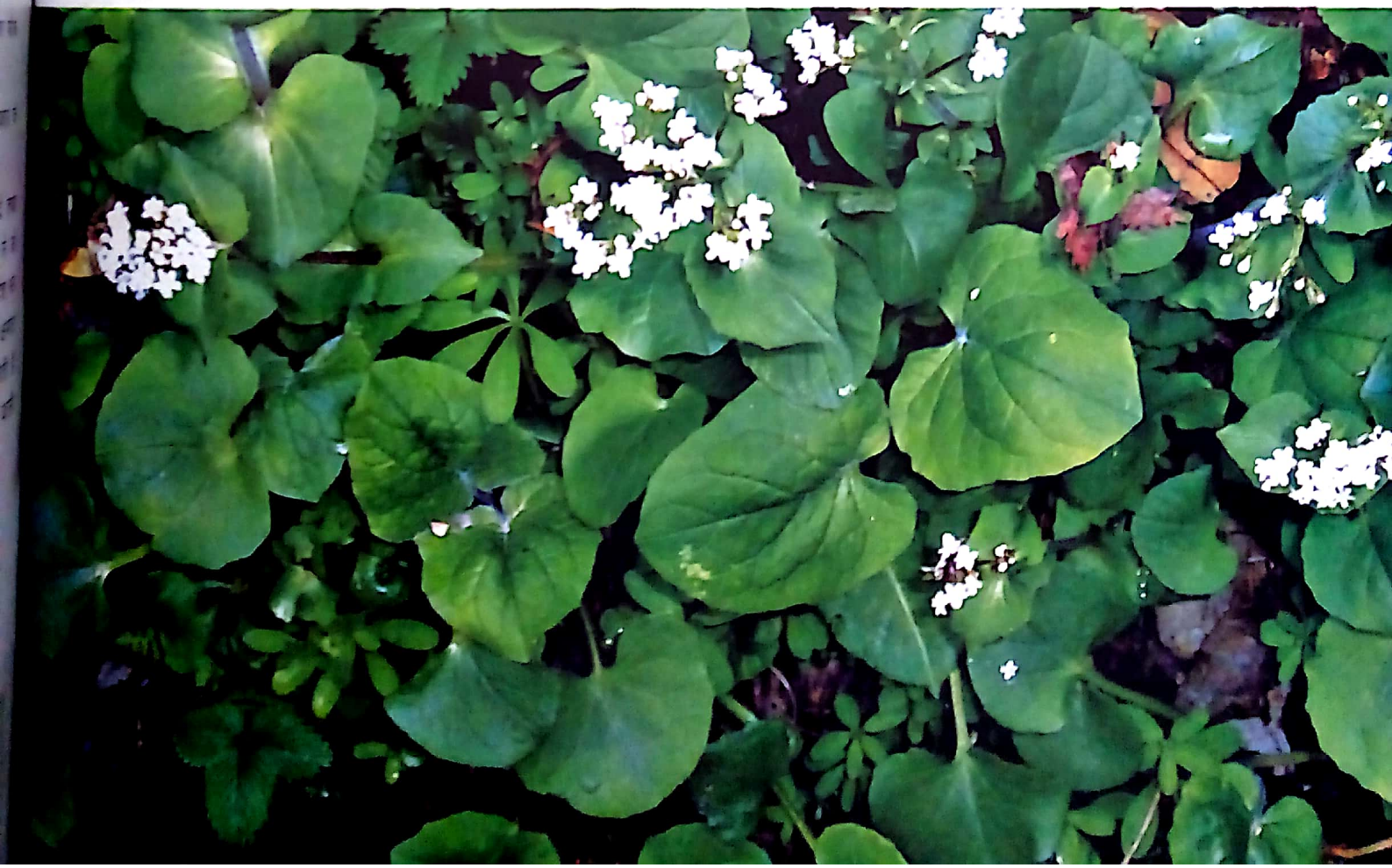

Scanned by CamScanner

पुष्प मंजरी 1–3 इंच व्यास की तथा पुष्प श्वेत कुछ–कुछ गुलाबी, एकलिंगी होते हैं। फल पर भी प्रायः रोम पाये जाते हैं।

रासायनिक संघटन

सुगन्धबाला में 0.5% से 2.12% तक एक उड़नशील तेल पाया जाता है, जो इसका मुख्य सक्रिय तत्व है, इस तेल में सेस्क्विटर्पीन, वैलेरिक एसिड तथा र्प्यीन एल्कोहल आदि तत्व पाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त एरेकिडिक एसिड तथा वसाम्ल भी पाये जाते हैं।

गुण–धर्म

त्रिदोषहर, वेदनास्थापन, आक्षेप हर, मेध्य, दीपन, शूल प्रशमन, सारक, यकृत उत्तेजक, कफघ्न, श्वास हर, हृदयोत्तेजक, मूत्रजनन, चक्षुष्य, कुष्ठघ्न आदि।

औषधीय प्रयोग

नेत्ररोग : इसके पत्तों को पीसकर आँखों के बाहरी भागों में लेप करने से आंख का दुःखना बंद हो जाता है।[2]

हृदय : थोड़ी मात्रा में देने से यह रक्ताभिसरण क्रिया को उत्तेजना देती है। इसका फांट बनाकर देने से यह हृदय की शक्ति और नाड़ी की शक्ति को बढ़ाती है। अधिक मात्रा में यह हानिकारक है।

तगर मूल

आक्षेप व मधुमेह : मस्तिष्क और मज्जा तन्तुओं की खराबी से पैदा हुये मधुमेह और बहुमूत्र में तगर को थोड़ी मात्रा में (लगभग चौथाई ग्राम से 1 ग्राम तक) ताजे फल से दिन में 2 या 3 बार देने से लाभ होता है। यह मस्तिष्कीय रोग उन्माद अपस्मार व विष विकारों में भी लाभप्रद है।[1]

मासिक धर्म : सुगन्धबाला का 1–3 ग्राम चूर्ण या 50–100 मिलीलीटर क्वाथ मासिक धर्म को नियमित करता है। यह निद्राकारक है तथा पुरातन प्रमेह में भी लाभकारी है।

स्नायु रोग व बाइटें : इसके मूल को कूटकर उसमें 4 भाग जल व बराबर मात्रा में तिल का तेल मिलाकर मंदाग्नि पर पकाकर पकने पर छानकर रखें। प्रयोग से बाइटें मिटते हैं। सभी तरह के स्नायु शूल व नसों की कमजोरी में यह लाभप्रद है।

संधिवात :

1. तगर को यशद भस्म के साथ देने से गठिया, पक्षाघात, गले के रोग, सन्धिवात इत्यादि रोग दूर होते हैं।
2. वंक्षण संधि की पीड़ा में तगर की हरी जड़ की छाल 3 ग्राम को छाछ में पीसकर पीना चाहिये।[3]

घाव : पुराने घावों और फोड़ों पर इसका लेप करना चाहिये। इससे घाव जल्दी भर जाता है व घाव दूषित नहीं होता है।

1. तगरं कटुकं तिक्तं कटुपाकरसंलघु।
स्निग्धोष्णंतुवरं भूतमदापस्मारनाशनम्।।
विषचक्षुः शिरोरोगरक्तदोषामयापहम्।। (कै०नि०)

2. तगरस्य शिफां सार्द्रां पिष्ट्वा तक्रेण सह पिबेत्।
वडक्षणानिलरोगार्त्तः स क्षणादेव मुच्यते।। (भैषज्य रत्नावली)

Scanned by CamScanner

तेजपात

118

वैज्ञानिक नाम	:	*Cinnamomum tamala* (Ham.) Nee & Eberm.
कुलनाम	:	Lauraceae
अंग्रेजी नाम	:	Indian cinnamon
संस्कृत	:	तमालपत्र
हिन्दी	:	तेजपात, तेजपत्ता
गुजराती	:	लमालपत्र
मराठी	:	तमाल पत्र
बंगाली	:	तेजपात
पंजाबी	:	तमाल पत्र
तैलगु	:	दिरसेनामु
अरबी	:	साजजे हिन्दी
फारसी	:	सादरस्

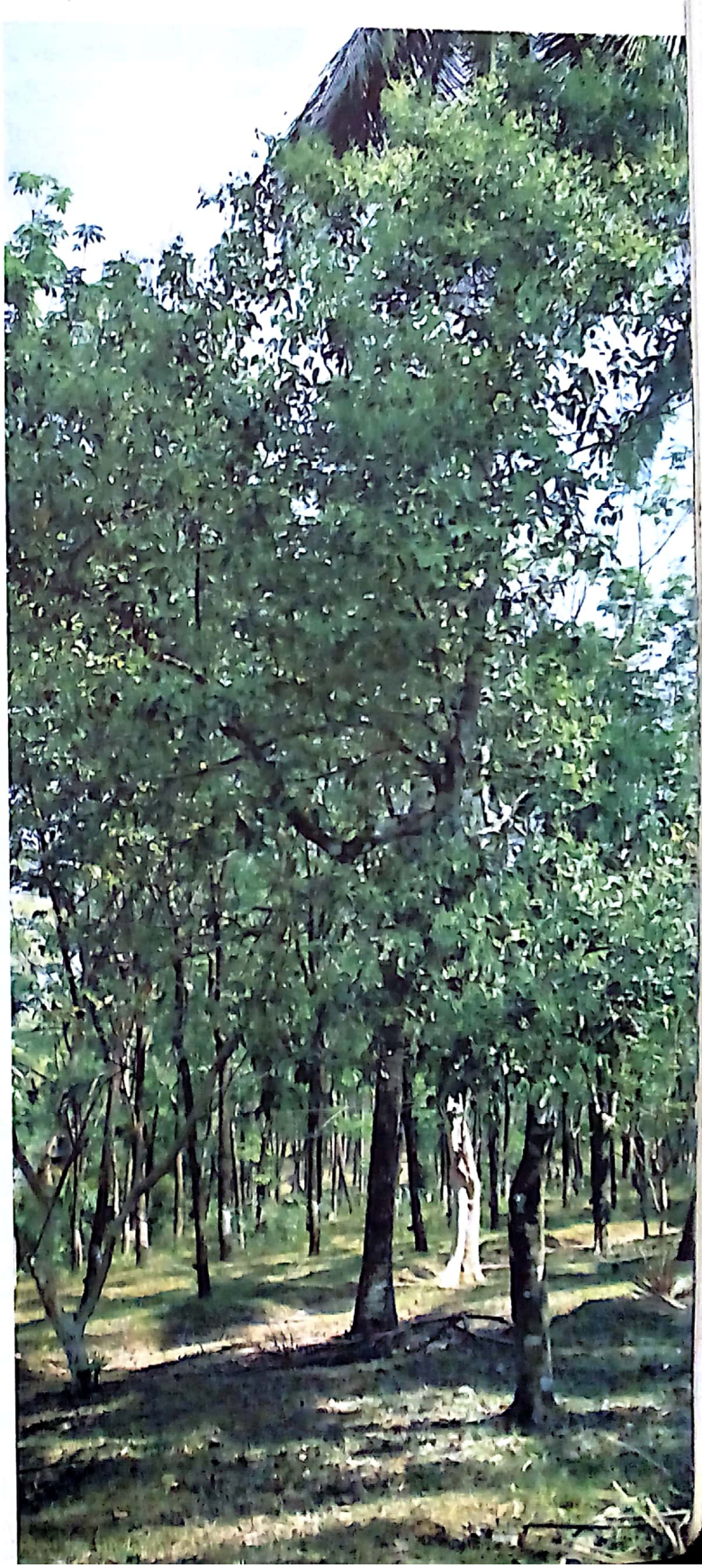

परिचय

उष्ण एवं समशीतोष्ण हिमालय प्रदेश में 3,000 से 6,000 फुट की ऊंचाई तक तमाल पत्र के जंगली वृक्ष पाये जाते हैं। इसके सुखाये हुये पत्ते बाजारों में तेजपात के नाम से बिकते हैं। पत्तियों का रंग जैतूनी हरा, तथा ऊर्ध्व पृष्ठ चिकना, 3 स्पष्ट शिराओंयुक्त तथा इसमें लौंग एवं दालचीनी की सम्मिलित मनोरम गन्ध पाई जाती है।

रासायनिक संघटन

पत्तियों में एक उड़नशील तेल पाया जाता है। जिसका मुख्य घटक युजिनोल है। इसके अतिरिक्ति तर्पीन तथा सिन्नेमिक ऐल्डिहाइड भी पाया जाता है।

गुण–धर्म

हल्का, तीक्ष्ण, कड़वा, मधुर, उष्ण, दीपन–पाचन, वातानुलोमक, मस्तिष्क को बल देने वाला, पेशाब को साफ करने वाला, आमाशय को शक्ति देने वाला, आमाशय के लिये हितकारी तथा सौमनस्यजनन है।

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

सर्दी–जुकाम :

1. चाय पत्ती की जगह तेजपात के चूर्ण की चाय पीने से छींकें आना, नाक बहना, जलन, सिर दर्द मे शीघ्र आराम मिलता है। पत्तो को सूँघना भी गुणकारी है।
2. इसकी छाल 5 ग्राम और छोटी पिप्पली 5 ग्राम को पीसकर 2 चम्मच शहद के साथ चटाने से खांसी और जुकाम मिटता है।

सिर दर्द : 10 ग्राम तेजपात के पत्तो को जल मे पीसकर, कपाल पर लेप करने से ठंड या गर्मी से उत्पन्न सिर दर्द मे आराम मिलता है। आराम होने पर लेप साफ कर लें।

सिर की जुएं : तेजपात के 5–6 पत्तों को एक गिलास पानी में इतना उबालें कि पानी आधा रह जाये। इस पानी से रोजाना सिर मे मालिश करने के बाद नहायें।

नेत्र रोग : इसको पीसकर आंख मे लगाने से आंख का जाला और धुध मिट जाती है। आंख मे होने वाला नाखूना रोग भी इसके प्रयोग से कट जाता है।

दांतों का मैल :

1. तेजपात के पत्तों का बारीक चूर्ण सुबह–शाम दांतों पर मलने से दांतों मे चमक आ जाती है।
2. तेजपात के डंठल को दांतों में चबाते रहने से दांतों से खून आने की तकलीफ में आराम होता है।

दमा और श्वास :

1. तेजपात और पीपल को 2–2 ग्राम की मात्रा में अदरक के मुरब्बे की चाशनी में बुरक कर चटाने से दमा और श्वांस नली का उपद्रव मिट जाता है।
2. सूखे तेजपात के पत्तों का चूर्ण एक चम्मच की मात्रा में एक कप गर्म दूध के साथ सुबह–शाम नियमित सेवन करने से लाभ होता है।.

खांसी : एक चम्मच तेजपात का चूर्ण शहद के साथ सेवन करने से खांसी में आराम मिलता है।

हरी तेजपात

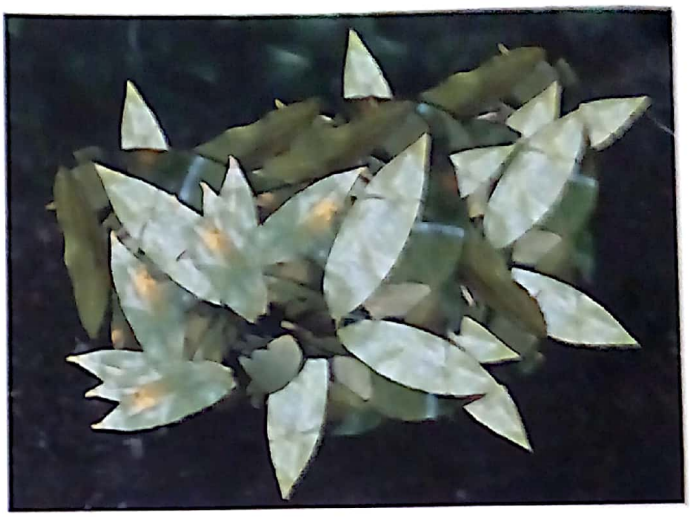

सूखी तेजपात

हकलाहट : तेजपात के पत्ते नियमित रूप से चूसते रहने से, हकलाहट में लाभ होता है।

अरूचि : तेजपात का रायता सुबह–शाम खाते रहने से अरूचि दूर होती है।

पेट फूलना : इसके पत्तों का काढा पिलाने से पसीना आता है और आतों की खराबी से पेट का फूलना, दस्त लगना आदि मे आराम हो जाता है।

उबकाई : इसके 2–4 ग्राम चूर्ण की फंकी लेने से उबकाई मिटती है।

पीलिया और पथरी : इसके नियमित रूप से 5–6 पत्ते चबाने से, रोग की तीव्रता कम होती है।

सुख प्रसव : इसके पत्तो की धूनी देने से बच्चा सुख से उत्पन्न हो जाता है।

गर्भाशय शुद्धि के लिये :

1. तेजपात के पत्तों का महीन चूर्ण 1–3 ग्राम तक तक मात्रा मे प्रातः–सायं सेवन करने से गर्भाशय शुद्ध होता है।
2. तेजपात के क्वाथ में बैठाने से गर्भाशय की पीड़ा शान्त होती है।
3. प्रसूता को इसके पत्तों का काढा 40–60 मिलीग्राम प्रातः–सायं पिलाने से दूषित रक्त तथा मल आदि निकल कर गर्भाशय शुद्ध हो जाता है।

वायुगोला : इसकी छाल का चूर्ण 2–4 ग्राम पीसकर फांकने से वायु गोला मिटता है।

संधिवात : इसके पत्तों का जोड़ों पर लेप करने से सन्धिवात मे लाभ होता है।

रक्तस्राव : शरीर के किसी भी अंग से रक्तस्राव होने पर एक चम्मच तेजपात का चूर्ण, एक कप पानी के साथ 2–3 बार सेवन करने से रोग में लाभ होता है।

निवारण : मस्तगी और बिहीका शर्बत

प्रतिनिधि द्रव्य : बालछड़

Scanned by CamScanner

तिल

वैज्ञानिक नाम	:	*Sesamum orientale* L.
कुलनाम	:	Pedaliaceae
अंग्रेजी नाम	:	Gingelly sesame
संस्कृत	:	तिल, तिल तेल
हिन्दी	:	तिल, तिल्ली का तेल
गुजराती	:	तल, मीठु तेल
मराठी	:	तिल, गोड़ा तेल
बंगाली	:	तिल
फारसी	:	कुंजद, रोगन कुंजद
अरबी	:	शीरज, सिमसिम, समसम, हल

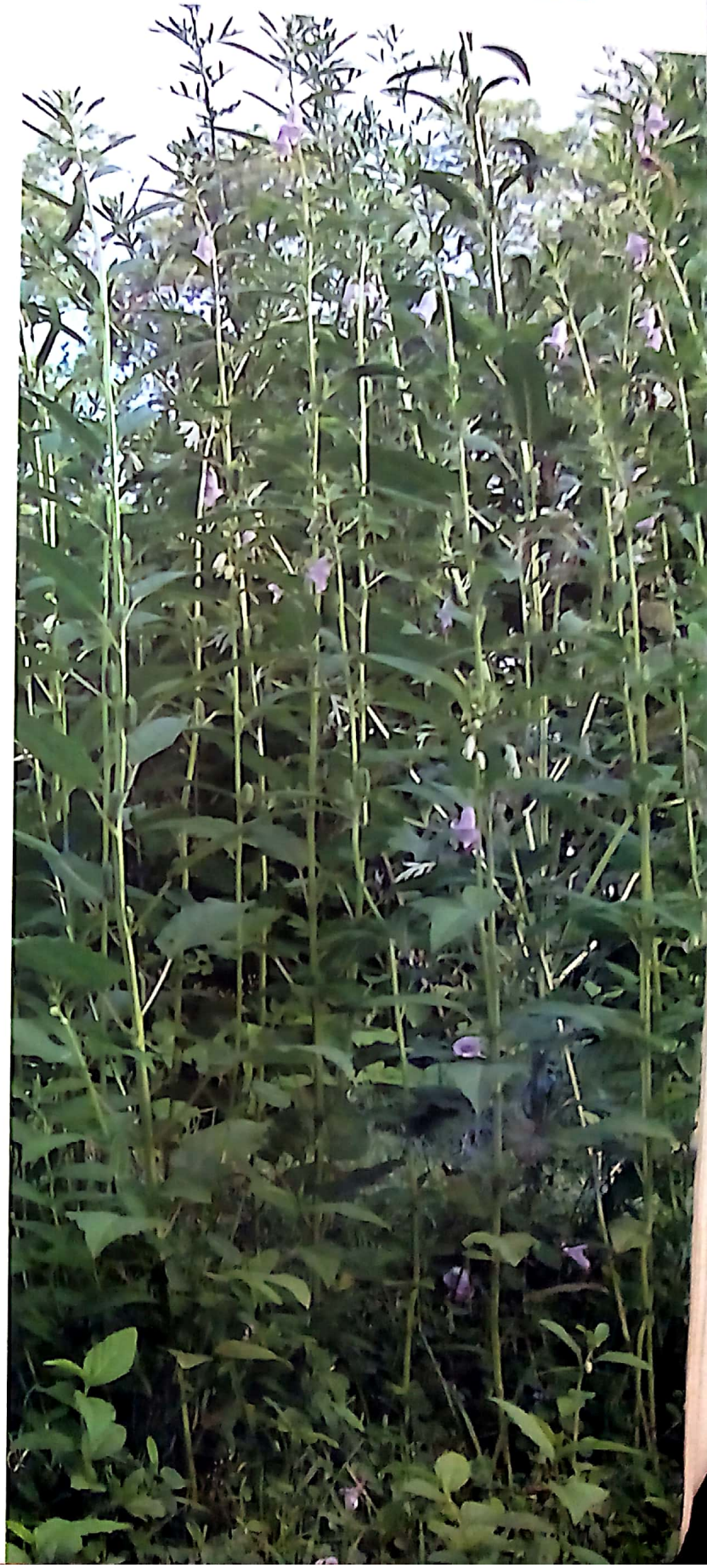

परिचय

तिल और तिलों के तेल से सब परिचित हैं। जाड़े की ऋतु में तिल के मोदक बड़े चाव से खाये जाते हैं। रंग भेद से तिल तीन प्रकार का होता है, श्वेत, लाल एवं काला। औषधि कर्म में काले तिलों से प्राप्त तेल अधिक उत्तम समझा जाता है। भारतवर्ष में तिल की प्रचुर मात्रा में खेती की जाती है। तिल (बीज) एवं तेल भारतवर्ष के प्रसिद्ध व्यावसायिक द्रव्य है।

बाह्य–स्वरूप

तिल के एक वर्षायु, कोमल, रोमावृत 1–3 फुट ऊंचे क्षुप हल्की दुर्गन्ध युक्त होते हैं। इस पौधे पर जगह–जगह स्रावी ग्रंथियां पाई जाती हैं। ऊपरी भाग की पत्तियाँ सरल, एकान्तर, मालाकार, आयताकार, पत्राग्र प्रायः रेखाकार, मध्य भाग में लटवाकार, किनारे दन्तुर तथा निचले भाग की पत्तियाँ अभिमुख तथा खंडित होती हैं। पुष्प डेढ इंच तक लम्बे, बैंगनी श्वेताभ वर्ण के रोमश एवं बैंगनी या पीले बिन्दुओं से युक्त होते हैं। फली 2 इंच लम्बी, लम्ब गोल चतुष्कोणाकार तथा अग्रपर कुंठित सी होती है। जिसमें से अलसी के समान चपटे, किन्तु उससे छोटे अनेक क्षुद्र बीज निकलते हैं।

रासायनिक संघटन

तिलों से एक धुंधले पीताभ वर्ण का द्रव प्राप्त होता है, जिसे तिल तेल अथवा आम भाषा में मीठा तेल कहते हैं। इसमें बहुत हल्की रूचिकर गंध होती है। इस तेल में प्रोटीन, अल्प मात्रा में कोलीन सेक्रोज एवं लेसिथीन आदि तत्व पाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त

Scanned by CamScanner

बीजों में सिमेमिआ, सिसेमोलिन, लाइपेज, निकोटिनिक एसिड तथा प्रधानत: ओलिक एवं लिनोलीक एसिड के तथा अल्पत: स्टियरिक, पामिटिक एवं अरेकिडिक एसिड के ग्लिसराइडस पाये जाते हैं।

गुण–धर्म

तिल रस में चरपरे–कड़वे–मधुर–कसैले–भारी, पाक में चरपरे–स्वादिष्ट, स्निग्ध–उष्ण, कफ तथा पित्त को नष्ट करने वाले, बलदायक, केशों को हितकारी, स्पर्श में शीतल, त्वचा को हितकारी, दूध को बढ़ाने वाले, व्रणरोग में लाभकारी, दांतों को उत्तम करने वाले, मूत्र का प्रवाह कम करने वाले, ग्राही, वात नाशक, दीपन और मेध्य है। कृष्ण तिल सर्वोत्तम व वीर्यवर्धक है, सफेद तिल मध्यम हैं, लाल तिल हीन गुण वाले है।

औषधीय प्रयोग

दंत रोग

1. तिल दांतों के लिए हितकर है। प्रतिदिन 25 ग्राम तिलों को चबा–चबा कर खाने से दांत मजबूत होते हैं।
2. मुंह में तिल को भरकर 5–10 मिनट रखने से पायरिया ठीक होकर दांत मजबूत हो जाते हैं।

नेत्ररोग : तिल पुष्पों पर शरद ऋतु में पड़ी ओस की बूंदों को मलमल के कपड़े या किसी और प्रकार से उठाकर शीशी में भरकर रख लें। इन ओस कणों को आंख में टपकाते रहने से नेत्रों के सब प्रकार के रोग मिटते हैं।

केश :

1. इसकी जड़ और पत्तों के क्वाथ से बाल धोने से बालों पर काला रंग पैदा हो जाता है।
2. काले तिलों के तेल को शुद्ध अवस्था में बालों में लगाने से बाल असमय सफेद नहीं होते। प्रतिदिन सिर में तेल की मालिश करने से बाल सदैव मुलायम, काले और घने रहते हैं।
3. गंजेपन में जब सिर के बालों में रूसी पड़ गई हो तब तिल के फूल तथा गोक्षुर, बराबर लेकर घी तथा मधु में पीसकर सिर पर लेप करने से गंजापन दूर होता है।

खांसी :

1. तिल के 100 मिलीग्राम काढ़े में 2 चम्मच शक्कर डालकर पीने से खांसी में लाभ होता है।
2. तिल और मिश्री को उबालकर पिलाने से सूखी खांसी मिटती है।

जठराग्नि : तिल के सेवन से जठराग्नि प्रदीप्त होकर मेधा बढ़ती है। इससे बुद्धि, स्मरण शक्ति तथा ग्रहण शक्ति बढ़ती है।

अर्श :

1. अर्श में तिल को जल के साथ पीसकर मक्खन के साथ दिन में तीन बार भोजन से 1 घण्टा पहले चाटने से लाभ होता है। रूधिर का निकलना बंद हो जाता है।
2. तिल को पीसकर गरम कर अर्श पर पुल्टिस की तरह बांधना चाहिए।

बवासीर : तिल के तेल की बस्ति (एनिमा) देने से गुदा के अंदर काफी दूर तक आँते स्निग्ध होकर मल के गुच्छे निकल जाते हैं, जिससे बवासीर में राहत महसूस होती है।

रक्तातिसार : तिलों के 5 ग्राम चूर्ण में बराबर मिश्री मिलाकर बकरी के चार गुने दूध के साथ सेवन करने से रक्तातिसार में लाभ होता है।

आमातिसार :

1. तिल के पत्रों को पानी में भिगोने से पानी में लुआब आ जाता है, यह चेप या लुआब बच्चो की विसूचिका, अतिसार, आमातिसार, प्रतिश्याय और मूत्र नली के रोगों में पिलाने से लाभ होता है।
2. आमातिसार में यदि दस्त बंद न हो तो इसके पत्तों के लुआब में थोड़ी अफीम डालकर प्रात:–साय पिलाना चाहिए।

गर्भाशय के विकार :

1. गर्भाशय में रूधिर के जमाव को बिखेरने के लिए 625–625 मि० ग्रा० तिलों का चूर्ण दिन में 3–4 बार सेवन करना चाहिए और उष्ण जल में बैठना चाहिए एवं जल कमर तक पहुंचना चाहिए।
2. मासिक धर्म यदि कष्ट से आता हो तो तिलों का 100 मिलीग्राम क्वाथ बनाकर पिलाना चाहिए।
3. तिल के 100 मिली ग्राम क्वाथ में 2 ग्राम सौंठ, 2 ग्राम काली मिर्च और 2 ग्राम पीपल का चूर्ण बुरककर कर दिन में तीन बार पिलाने से मासिक धर्म की रूकावट मिटती है।
4. रूई के फोहे को तिल के तेल में भिगोकर योनि के अग्रभाग

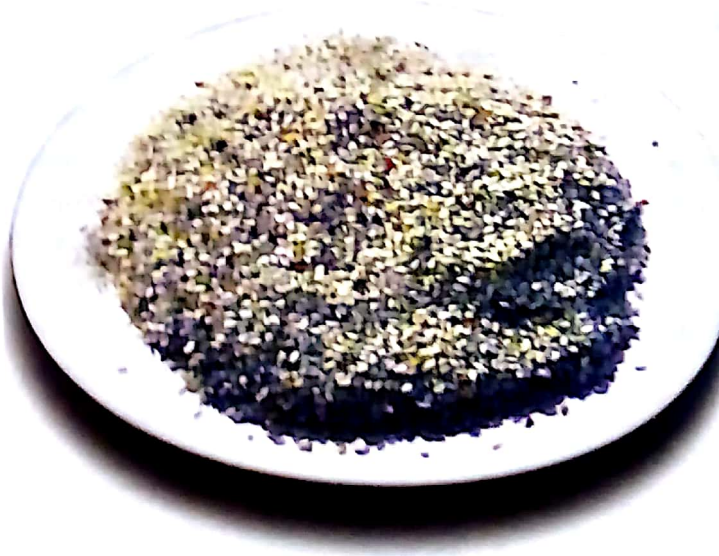

तिल–श्वेत

Scanned by CamScanner

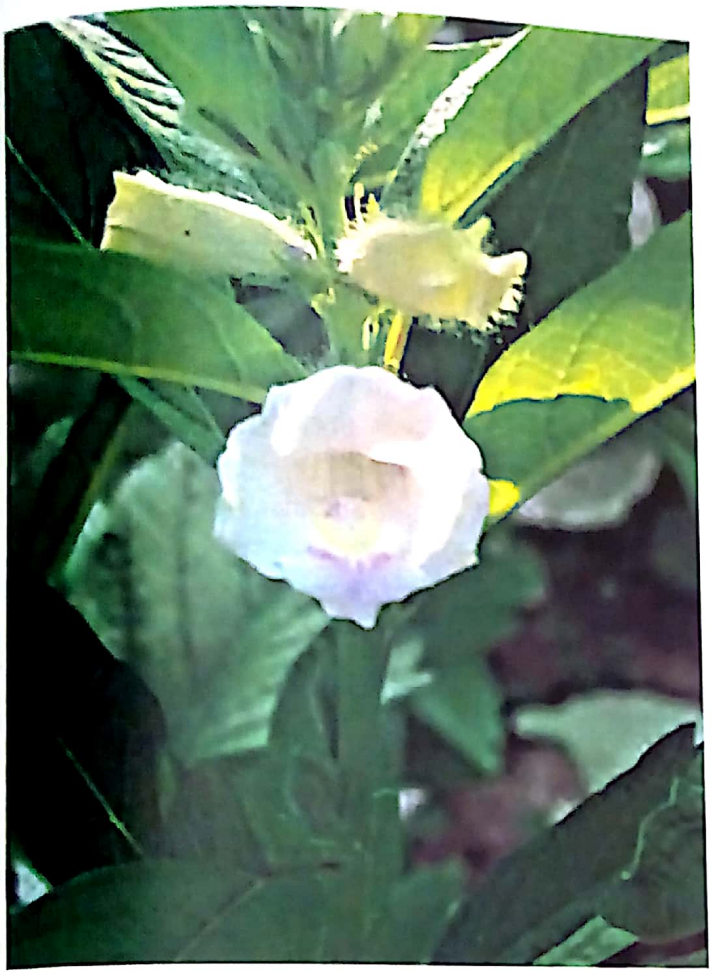

पर रखने से श्वेत प्रदर मिट जाता है।

5. 10 ग्राम तिल और 10 ग्राम गोखरू को रातभर पानी में भिगोकर प्रातःकाल उनका चेप निकालकर उसमें थोड़ा बूरा डालकर पिलाने से बंद हुआ मासिक धर्म फिर जारी हो जाता है।
6. तिलों के तेल में पीस, हल्के गरम कर नाभि के नीचे लेप करने से नसों की सर्दी की पीड़ा मिटती है।
7. मासिक धर्म को नियमित करने के लिए तिलों का चूर्ण आधा ग्राम की मात्रा में दिन में 3–4 बार जल के साथ लेने से ऋतु स्त्राव नियमित हो जाता है।
8. तिल का काढ़ा बनाकर लगभग 100 मिलीग्राम सुबह शाम पीने से मासिक–धर्म नियमित हो जाता है।

पथरी :

1. तिल की छाया शुष्क कोमल कोपलों की राख सात ग्राम से दस ग्राम तक प्रतिदिन खाने से पथरी गलकर निकल जाती है।
2. तिल पुष्पों के 4 ग्राम क्षार को 2 चम्मच मधु और 250 ग्राम दूध में मिला कर पिलाने से पथरी गल जाती है।
3. तिल के पौधे की लकड़ी की सात ग्राम से 14 ग्राम तक भस्म सिरके के साथ प्रातः–सायं भोजन से पहले खाने से पथरी गलकर निकल जाती है।

पुरुषार्थ : तिल और अलसी का 100 मिलीग्राम क्वाथ प्रातः–सायं भोजन से पहले पिलाने से पुरुषार्थ बढ़ता है।

बच्चों का मूत्र रोग : रात्रि में बच्चे बिस्तर गीला कर देते हैं, उनके लिए तिल का लम्बे समय तक सेवन बहुत लाभकारी है।

सुजाक : नवीन सुजाक में इसके ताजे पत्तों को 12 घण्टे तक पानी में भिगोकर उस पानी को पिलाने से अथवा तिल के 5 ग्राम क्षार को दूध या शहद के साथ देने से पेशाब की जलन कम होती है और पेशाब साफ आता है।

संधिवात : संधिवात में तिल तथा सौंठ समभाग लेकर प्रतिदिन 5–5 ग्राम तीन से चार बार सेवन करना चाहिए।

रसायन : काले तिल और जल भांगरे के पत्तों को लगातार एक मास तक सेवन करने से कई प्रकार के रोग मिटते हैं। यह योग रसायन का प्रभाव दर्शाता है। पथ्य सिर्फ दूध का आहार लें।

बाह्य प्रयोग :

1. तिल का तेल त्वचा के लिए लाभकारी है। प्रतिदिन तिल के तेल की मालिश करने से मनुष्य कभी भी बीमार नहीं होता। इसके तेल की मालिश से रक्त विकार, कटिशूल, अंगमर्द, वातव्याधि जैसे रोग नहीं होते।
2. तिल को पीसकर जले हुए स्थान पर लेप करने से शांति मिलती है।
3. तिल के पत्तों को सिरके या पानी में पीसकर मस्तक पर लेप करने से मस्तक पीड़ा मिट जाती है।

Scanned by CamScanner

4. तिलों की सिरस की छाल और सिरके के साथ पीसकर मुंह पर लगाने से मुहांसे ठीक हो जाते हैं।
5. चोट और मोच पर तिल की खली को पानी के साथ पीसकर गरम करके बांधने से लाभ होता है।
6. तिल और अरंडी को अलग–अलग कूटकर दोनों को तिल्ली तेल में मिलाकर लेप करने से चोट की पीड़ा मिटती है और सूखा हुआ अंग अपनी पूर्व दशा में आ जाता है।
7. तिलों को दूध में पीसकर मस्तक पर लेप करने से सूर्यावर्त्त मिटता है।
8. तिलों की पुल्टिस बनाकर घाव पर बांधने से घाव जल्दी भर जाते हैं।
9. सब प्रकार के व्रणों पर तिल्ली का तेल लगाना अच्छा होता है।

कांटा : शरीर मे किसी भी अंग मे नागफनी या थूहर का कांटा यदि घुस जाये और निकालने मे दिक्कत हो तो उस जगह तिल्ली का तेल बार–बार लगाने से कुछ समय मे वह कांटा बिन परिश्रम के निकल जाता है।

सूजन : तिल और मक्खन को पीसकर मालिश करने से मिलावें की सूजन उतर जाती है।

विष :

1. तिल की छाल और हल्दी को पानी मे पीसकर लेप करने से मकड़ी का विष उतर जाता है।
2. तिलों को पानी मे पीसकर लेप करने से बिल्ली का विष उतर जाता है।
3. तिलों को सिरके मे पीसकर मलने से भिरड़ (बर्रे) का विष उतर जाता है।

विषम ज्वर : तिलों की लुगदी को घी के साथ लेने से विषम ज्वर में लाभ होता है।

तिल–स्याह

1. तिलो रसे कटुस्तिक्तो मधुरस्तुवरो गुरुः।
विपाके चापि मधुरः स्निग्धोष्णः कफ पित्तनुत्।।
बल्यः केश्यो हिमस्पर्शस्त्वच्यः स्तन्यो व्रणे हितः।
दन्त्योऽल्पमूत्रकृद् ग्राही वातघ्नोऽग्निमतिप्रदः।।
कृष्णः श्रेष्ठतमस्तेषु शुक्लोमध्यमः सितः।'
अन्ये हीनतराः .....।। (भाव प्रकाश)
2. स्निग्धोष्णो मधुरस्तिक्तः कषायः कटुकस्तिलः।
त्वच्यः केश्यश्च बल्यश्च वातघ्नः कफपित्तकृत्।। (चरक)

Scanned by CamScanner

त्रिफला

120

परिचय

भावमिश्र हरीतकी, विभीतकी तथा धात्री फल के समभाग मिश्रण को त्रिफला कहते हैं।[1] दूसरे वैद्य दो तथा तीन भाग के मिश्रण को त्रिफला कहते हैं। कैयदेव निघंटु में त्रिफला एक हरीतकी दो विभीतक तथा चार आंवले मिलाने से बनता है।[2]

गुण–धर्म

त्रिफला कफ, पित्त, प्रमेह तथा कुष्ठ को हरने वाला, दस्तावर, नेत्रों को हितकारी, अग्नि प्रदीप्त करने वाला, रूचिवर्द्धक एवं विषम ज्वर नाशक है।[3] हरड़, बहेड़ा और आंवला क्वाथ तिक्त तथा मधुर रस युक्त है।[4]

औषधीय प्रयोग

केश : 2 से 5 ग्राम त्रिफला चूर्ण में 125 मिलीग्राम लौह भस्म मिलाकर प्रातः–सायं सेवन करने से बाल झड़ने बंद हो जाते हैं।

नेत्र : एक चम्मच त्रिफला चूर्ण को रात्रि को ठंडे पानी में भिगोकर सुबह उस जल से नेत्रों को धोने से नेत्रों के रोग मिटते हैं।

गुल्म : पित्तजनित गुल्म में द्राक्षा एवं हरड़ का 1–2 चम्मच स्वरस गुड़ मिलाकर पीना अथवा त्रिफला चूर्ण की 3–5 ग्राम मात्रा को खांड मिलाकर दिन में 3 बार खाना चाहिए।

अरूचि : त्रिफला, दाड़िम, रजादन यह सब वायुनाशक, मूत्रदोष को मिटाने वाला है। हृदय के लिये पिपासानाशक हैं एवं रुचि उत्पन्न करने वाली है।[6]

अम्लपित्त : त्रिफला चूर्ण आधा चम्मच दिन में दो तीन बार जल के साथ फांकने से एसिडिटी में लाभ होता है।

कब्ज : रात्रि में सोते समय एक चम्मच त्रिफला चूर्ण का सेवन गरम जल के साथ करने से कब्ज मिटती है।

Scanned by CamScanner

कृमि : त्रिफला, हल्दी, निम्ब यह तिक्त, मधुर रस कफपित्तज रोग को नष्ट करने वाला, कुष्ठ, कृमिनाशक एवं दूषित व्रण का शोधक है।[7]

कामला : त्रिफला, गिलोय, वासा, कुटकी, चिरायता, नीम की छाल मिश्रित कर 20 ग्राम लेकर आठ गुने जल में पकाकर चौथाई शेष रहने पर इस क्वाथ में मधु का प्रक्षेप देकर प्रातः–सायं सेवन करने से कामला तथा पाण्डु रोग नष्ट होता है।

पाण्डुरोग : त्रिफला, कुटज, पलाश यह मेदोनाशक तथा शुक्रदोष को मिटाने वाला है। प्रमेह, अर्श, पांडुरोग नाशक एवं शर्करा को दूर करने के लिये श्रेष्ठ है।[8]

बहुमूत्र :

1. त्रिफला, बांस के पत्ते, मोथा, पाठा इनके 3–4 ग्राम चूर्ण को शहद तथा घी के साथ सेवन करने से बहुमूत्र का रोग शीघ्र नष्ट हो जाता है। अगस्त्य मुनि ने जिस प्रकार समुद्र को सुखा दिया था, उसी प्रकार ये बहुमूत्र को सुखा देता है।
2. 2 चम्मच त्रिफला चूर्ण कल्क में थोड़ा सा सैंधा नमक मिलाकर प्रयोग करने से बहूमूत्र का रोग ठीक होता है।

प्रमेह : त्रिफला, दारूहल्दी, देवदारू, नागरमोथा इन सबको समान भाग में लेकर यथाविधि इनका क्वाथ करके प्रमेह रोगी इसको दिन में दो बार पियें।[10]

शोथ : गोमूत्र में त्रिफला का क्वाथ सिद्ध कर प्रातः–सायं पीने से वृषण स्थित वात श्लेष्मज शोथ नष्ट होता है।

रसायन : त्रिफला, सम्पूर्ण रोगनाशक, आयुस्थापन होता है। इसके निरन्तर प्रयोग से बुढ़ापा शीघ्र नहीं आता है।[9]

रक्तपित्त : हरड, बहेड़ा, आंवला तथा अमलतास के 20 मिलीलीटर क्वाथ में मधु और खांड का प्रक्षेप देकर पीने से रक्त पित्त, दाह तथा शूल शांत होते हैं।

ज्वर :

1. यह औषधि ज्वर विनाशक होती है। इसका क्वाथ 10–20 ग्राम की मात्रा में ज्वर आने से 1 घंटे पूर्व पिलाना चाहिए।
2. 20 मि०ली० त्रिफला का क्वाथ अथवा गिलोय का रस स्वरस पीने से विषम ज्वर में लाभ पहुंचता है। अथवा षट्पल घी का पान भी करना चाहिए।[9]

कुष्ठ : त्रिफला एवं वासा के क्वाथ का स्नान तथा पान करने से कुष्ठ रोग का नाश होता है।[11]

परमपूज्य स्वामी रामदेव जी का स्वानुभूत प्रयोग

एक चम्मच त्रिफला चूर्ण को रात्रि में 200 ग्राम पानी में भिगोकर रखें। प्रातः गर्म करें, आधा शेष रहने पर छान लें। 2 चम्मच शहद मिलाकर गर्म–गर्म सहता हुआ पीयें। कुछ ही दिनों के सेवन से कई किलो वजन कम हो जाता है।

1. पथ्याविभीत धात्रीणां फलैः स्यात्त्रिफला समैः।
   फल त्रिक च त्रिफला सा वरा च प्रकीर्तिता।। (भा०प्र०)
2. एक हरीतकी योज्या द्वौ च योज्यौ विभीतकौ।
   चत्वार्यामलकानीति त्रिफला प्रोच्यते बुधै।। (कै०नि०)
3. त्रिफला कफपित्तघ्नी मेहकुष्ठहरा सरा।
   चक्षुष्या दीपनी रुच्या विषमज्वरनाशिनी।। (भाव प्रकाश)
4. सारिवा शर्करा पाठमञ्जिजष्ठा द्राक्षा
   पीलुपरूषकाभयामलकाविभीतकानीति दशेमानीज्वरहरणी भवन्ति। (सुश्रुत)
5. मुष्कक पलाश धवचित्रकमदनवृक्षक शिंशपावज्र वृक्षास्विफला चेति.....।। (सुश्रुत)
6. लाक्षारेवत कुटजाश्वमारकट्फलहरिद्राद्वयनिम्ब सप्तच्छद।। (सुश्रुत)

Scanned by CamScanner

वैज्ञानिक नाम	:	*Ocimum sanctum* L.
कुलनाम	:	Lamiaceae
अंग्रेजी नाम	:	Holy basil
संस्कृत	:	वृन्दा, सुगन्धा, अमृता, पत्र पुष्पा
हिन्दी	:	तुलसी
गुजराती	:	तुलस
मराठी	:	तुलसा, काला तुलसी
बंगाली	:	तुलसी, कुरल
पंजाबी	:	तुलसी
तैलगु	:	वृन्दा, गगेरा, कृष्णा तुलसी

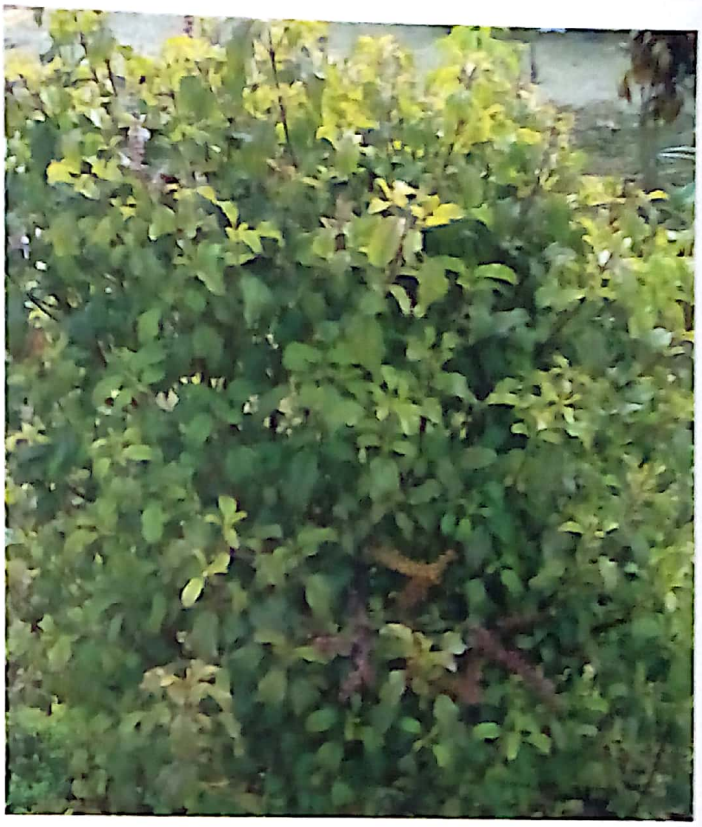

परिचय

विष्णु बल्लभा, सुखवल्लरी, श्री कृष्ण बल्लभा, वृन्दा, वैष्णवी आदि पवित्र नामों से विभूषित तुलसी के माहात्म्य का वर्णन करना ऐसा है, जैसे सूरज को दीपक दिखाना, या समुद्र किनारे बैठकर लहरों का गिनना। सर्वरोग निवारक जीवनीय शक्ति वर्धक, इस औषधि को प्रत्यक्ष देवी कहा गया है। क्योंकि सर्वत्र सुलभ, सुगन्धित, सुन्दर तथा इससे सस्ती औषधि मनुष्य जाति के लिये अन्य कोई और नहीं है। तुलसी के धार्मिक महत्व के कारण हर–घर आगंन में इसके पौधे लगाये जाते हैं। तुलसी की कई जातियां मिलती हैं। जिनमें श्वेत व कृष्ण प्रमुख हैं। कृष्ण तुलसी के पत्र तथा शाखायें कुछ बैंगनी तथा कृष्ण आभा लिये होते हैं। इसके अतिरिक्त *Ocimum basilicum*, *O. gratissimum* आदि जातियां भी काफी महत्व की है।

बाह्य–स्वरूप

इसका क्षुप 2–4 फीट ऊँचा, रोमेथ तथा सुगंधित होता है। पत्र आयताकार तथा लट्आकार होता है। 6–8 इंच लम्बी मंजरी कतिपय बैंगनी रंग की होती है। बीज गोलाकार, चिकना तथा भूरे एवं काले रंग के होते हैं। शीत ऋतु में पुष्प तथा फल आते हैं।

रासायनिक संघटन

पत्तियों में पीताभहरित वर्ण का तेल पाया जाता है, जो शुष्क होने पर क्रिस्टलीय हो जाता है। इसे तुलसी कपूर कहते हैं।

गुण–धर्म

कफवात शामक, जन्तघ्न, दुर्गन्ध नाशक, दीपन, पाचन, अनुलोमन, कृमिघ्न, कफघ्न, हृदयोत्तेजक, रक्तशोधक, स्वेदजनन, ज्वरघ्न व शोथहर है।

बीज : मूत्रल एवं बल्य है।

पत्र : प्रतिश्याय, वातश्लैष्मिक ज्वर एवं विषम ज्वर में तुलसी स्वरस अथवा क्वाथ एक उत्तम औषधि है।

औषधीय प्रयोग

कुष्ठ रोग :

1. कुष्ठ रोग में तुलसी पत्रों का 10–20 ग्राम स्वरस प्रतिदिन प्रातः काल पीने से लाभ होता है।
2. तुलसी के पत्रों को नीबूं के रस में पीसकर, दाद, वातरक्त, कुष्ठ आदि पर लेप करने से लाभ होता है।
3. तुलसी पत्र स्वरस, पत्थर चूना, गाय का घी इन सभी को एक साथ घोंटकर लगाते रहने से भी लाभ होता है।

शक्ति वृद्धि के लिये : 20 ग्राम तुलसी बीजचूर्ण में 40 ग्राम मिश्री मिलाकर महीन–महीन पीसकर 1 ग्राम की मात्रा में शीत ऋतु में कुछ दिन सेवन करने से वात कफ रोगों से बचाव होता है।

Scanned by CamScanner

दुर्बलता दूर होती है। शरीर की रोग–प्रतिरोधक क्षमता बढती है। स्नायु मंडल सशक्त होता है।

शिरोरोग :

1. तुलसी की छाया शुष्क मंजरी के चूर्ण को 1–2 ग्राम की मात्रा में मधु के साथ चाटने से लाभ होता है।
2. तुलसी के 5 पत्र प्रतिदिन पानी के साथ निगलने से बुद्धि, मेधा तथा मस्तिष्क की शक्ति बढती है।
3. तुलसी का तेल नाक में टपकाने से, पुराना सिर दर्द तथा अन्य सिर के रोग दूर होते हैं।
4. तुलसी के तेल को सिर में लगाने से जुएं एवं लीखें मर जाती हैं।
5. तेल को मुंह पर मलने से चेहरा का रंग साफ जाता है।

दंत शूल :

1. काली मिर्च और तुलसी के पत्तों की गोली बनाकर दांत के नीचे रखने से दंतशूल दूर होता है।
2. तुलसी के रस को हल्के गर्म गुनगुने पानी में मिलाकर कुल्ला करने से, कंठ के रोगों में बहुत लाभ होता है।
3. तुलसी रस युक्त जल में हल्दी और सैंधा नमक मिलाकर कुल्ले करने से भी मुख, दांत तथा गले के सब विकार दूर होते हैं।

स्तम्भन : तुलसी की जड़ का चूर्ण 2–4 ग्राम और जमीकन्द का चूर्ण मिलाकर 125–250 मिलीग्राम तक पान में रखकर खाने से स्तम्भन होता है।

रतौंधी : तुलसी के पत्तों का स्वरस 5–10 मिलीग्राम दिन में कई बार आंखों में डालने से रतौंधी नष्ट होती है।

पीनसरोग : तुलसी के पत्ते या मंजरी को सूंघने से, मस्तक के कृमिनष्ट होकर नाक से बदबू बन्द हो जाता है।

वमन : तुलसी के पत्तों का रस छोटी इलायची तथा अदरक का रस सेवन करने से वमन तथा जी मिचलाने में लाभ होता है।

तुलसी पंचांग

न्यूमोनिया : काली तुलसी के पत्तों के 5–10 ग्राम रस में, गाय का घी गुनगुना कर दुगनी मात्रा में मिलाकर चटाने से 2–3 दिन में आराम होता है।

प्रसवोत्तर शूल : पत्रस्वरस में पुराना गुड तथा खांड मिलाकर प्रसव होने के बाद तुरन्त पिलाने से प्रसव के बाद का शूल नष्ट होता है।

सर्दी खांसी प्रतिश्याय जुकाम आदि :

1. तुलसी पत्र मंजरी सहित 50 ग्राम, अदरक 25 ग्राम, कालीमिर्च 15 ग्राम, जल 500 ग्राम क्वाथ करें, चौथाई शेष रहने पर छानकर 10 ग्राम छोटी इलायची बीजों का महीन चूर्ण मिलाकर 200 ग्राम चीनी डालकर, पकायें, एक तार की चाशनी हो जाने पर छानकर रख लें।
2. इस शर्बत का आधी से डेढ चम्मच की मात्रा में बच्चों को तथा 2 से चार चम्मच तक बडों को सेवन कराने से, खांसी, श्वास, काली खांसी, कुक्कुर खांसी गले की खराश आदि में फायदा होता।
3. इस शर्बत को जुकाम तथा दमा में गर्म पानी मिलाकर लेने से बहुत लाभ होता है।
4. पुरानी खांसी तथा दमे में तुलसी दल 10, तथा वासा के पीले रंग के तीन पत्र काली मिर्च 1 तथा अदरक मटर के 4–6 दानों के बराबर गिलोयकांड का 6 इंच लम्बा, टुकडा, सब चीजों को कूटकर 1 गिलास जल में पकायें, आधा शेष रहने पर 10–15 ग्राम गुड मिलाकर 3 खुराक बना लें, चार–चार घंटे के अन्तर के सेवन से पुरानी खांसी में अच्छा लाभ होता है।
5. खांसी में तुलसी पत्र स्वरस 5–10 मि० ग्रा० में काली मिर्च का चूर्ण डालकर पीने से खांसी का वेग कम हो जाता है।
6. तुलसी की मंजरी, सौंठ, प्याज का रस और शहद मिलाकर चटाने से सूखी खांसी और बच्चे के दमे में लाभ होता है।

परमपूज्य स्वामी रामदेव जी का स्वानुभूत प्रयोग

7 पत्ते तुलसी के, 5 लौंग लेकर एक गिलास पानी में पकायें। तुलसी पत्र व लौंग को पानी में डालने से पहले टुकडे कर लें। पानी पकाकर जब आधा शेष रह जाये, तब थोड़ा सा सैंधा नमक डालकर गर्म–गर्म पी जायें। यह काढा पीकर कुछ समय के लिऐ वस्त्र ओढ़कर पसीना ले लें। इससे ज्वर तुरन्त उतर जाता है। तथा सर्दी, जुकाम व खांसी भी ठीक हो जाती है। इस काढे को दिन में दो बार दो तीन दिन तक ले सकते हैं।

छोटे बच्चों को सर्दी जुकाम होने पर तुलसी व अदरक का रस 5–7 बूंद शहद में मिलाकर चटाने से बच्चों का कफ, सर्दी, जुकाम, ठीक हो जाता है। नवजात शिशु को यह अल्प मात्रा में दें।

अतिसार एवं दस्त :

1. तुलसी दल दस, जीरा 1 ग्राम दोनों को पीसकर शहद मिलाकर चटाने से दिन में 3–4 बार में दस्तों में मरोड तथा पेचिश में लाभ होता है।
2. तुलसी की फांट 50–60 मिलीग्राम जायफल का चूर्ण मिलाकर

Scanned by CamScanner

3–4 बार पीने से अतिसार अच्छा होता है।

अग्निमांद्य : अजीर्ण अग्निमांद्य, बालकों की यकृत प्लीहा की विकृतियों में तुलसीदल के स्वरस का फांट दिन में तीन बार भोजन से पहले पिलाने से लाभ होता है।

बस्तिशोथ :

1. तुलसी के बीज और जीरे का चूर्ण 1 ग्राम लेकर उसमें 3 ग्राम मिश्री मिलाकर सुबह–शाम दूध के साथ लेने से मूत्रदाह, पूय तथा बस्ति शोथ दूर होता है।
2. तुलसी के बीज मसाने की पथरी में भी लाभदायक है।

नामर्दी :

1. तुलसी के बीज का चूर्ण अथवा मूल चूर्ण में बराबर की मात्रा में गुड मिलाकर 1–3 ग्राम की मात्रा में, गाय के दूध के साथ लगातार लेते रहने से एक माह या छः सप्ताह तक लाभ होता है।
2. धातु दुर्बलता में तुलसी के बीज 1 ग्राम या दूध के साथ सुबह–शाम सेवन करने से लाभ होता है।

स्वरभंग : स्वरभंग में तलुसी की जड़ को मुलेठी की तरह चूसते रहने से लाभ होता है।

वातव्याधि :

1. संधिशोथ एवं गठिया के दर्द में तुलसी पंचाग का चूर्ण 2–4 ग्राम, सुबह–शाम दूध के साथ सेवन करें।
2. सियाटिका में तुलसी क्वाथ का पीड़ाग्रस्त वात नाड़ी पर बफारा दें, काली तुलसी शोथ तथा वेदना युक्त विकारों में ज्यादा उपयोगी है।
3. ऊर्ध्वगत वात, अस्थिगतवात, संधिवात तथा पारद दोषजनित विकारों में इसका पंचाग का बफारा देने से लाभ होता है।

अपच : तुलसी की 2 ग्राम मंजरी को पीसकर 100 मिलीग्राम काले नमक के साथ दिन में 3 से 4 बार देने से लाभ होता है।

कर्णशूल :

1. तुलसी के पत्तों का ताजा रस गरम करके 2–2 बूंद कान में टपकाने से कर्णशूल फौरन बन्द हो जाता है।
2. तुलसी के पत्ते एरंड की कोंपले और थोड़े नमक को पीसकर उसका गुनगुना लेप करने से कान के पीछे की सूजन नष्ट होती है।

सर्पविष : सर्प विष में पत्तों का स्वरस 5–10 मिलीग्राम पिलाने से और इसकी मंजरी और जड़ों का लेप बार–बार दंशित स्थान पर करने से सर्प दंश की पीड़ा में लाभ मिलता है। अगर रोगी बेहोश हो गया हो तो इसके रस को नाक में टपकाते रहना चाहिये।

मलेरिया ज्वर :

1. तुलसी का पौधा मलेरिया प्रतिरोधी है। तुलसी के पौधे को छूकर वायु में कुछ ऐसा प्रभाव उत्पन्न हो जाता है कि मलेरिया के मच्छर वहां से भाग जाते हैं, इसके पास नहीं फटकते हैं।
2. मलेरिया में तुलसी पत्रों का क्वाथ तीन–तीन घंटे के अन्तर से सेवन करें।
3. तुलसी पत्र स्वरस 5–10 मिलीग्राम में मिर्च चूर्ण मिला दिन

Scanned by CamScanner

मे तीन बार प्रयोग करें।

4. तुलसी मूल क्वाथ आधा औंस की मात्रा में दिन मे दो बार देने से ज्वर तथा विषम ज्वर उतर जाता है।
5. तुलसी दल 20, मिर्च 10 नग दोनों का क्वाथ बनाकर सुबह, दोपहर तथा शाम देने से सब प्रकार के ज्वरों में लाभ होता है।

कफ प्रधान ज्वर :

1. तुलसी दल 21 नग, लवंग 5 नग अदरक रस आधा ग्राम को पीसछानकर गर्म करें, फिर इसमें 10 ग्राम मधु मिलाकर सेवन करें।
2. तुलसी पत्तों को पानी में पकाकर जब आधा जल शेष रह जाये छानकर, चुटकी भर सैंधा नमक मिलाकर गुनगुना पीने से फूल में लाभ होता है।

आम ज्वर :

1. तुलसी पत्र 10, तथा जावित्री ½ से 1 ग्राम तक, पीसकर शहद के साथ चटाने से लाभ होता है।
2. काली तुलसी, वन तुलसी तथा पोदीना, बराबर स्वरस लेकर 3–7 दिन तक सुबह–दोपहर–शाम पिलाने से लाभ होता है।

श्यामा तुलसी

साधारण ज्वर :

1. तुलसी पत्र, श्वेत जीरा, छोटी पीपल तथा शक्कर, चारों को कूटकर प्रातः–सायं देने से लाभ होता है।
2. तुलसी पत्र चूर्ण 1 भाग, शुंठी चूर्ण 1 भाग तथा पिसी अजवायन मिलाकर दिन में तीन बार सेवन करने से ज्वर का वेग कम होता है।

सफेद दाग झांई :

1. तुलसी पत्रस्वरस 1 भाग, नींबू का रस 1 भाग, कंसौदी पत्र स्वरस–1 भाग, तीनों को बराबर–बराबर लेकर एक तांबे के बरतन में डालकर चौबीस घंटे के लिये धूप में रख दें। गाढ़ा हो जाने पर इसके लगातार लेप करने से श्वित्र रोग, में लाभ होता है। इसको चेहरे पर लगाने से, चेहरे दाग तथा अन्य चर्म विकार साफ होकर चेहरा सुन्दर हो जाता है।
2. तुलसी की जड़ को पीसकर प्रातः सौंठ मिलाकर, जल के साथ लेने से कुष्ठ में लाभ होता है। तुलसी की जड़ को पीसकर शहद के साथ दिन में 3–4 बार चटाने से लाभ होता है।

व्रण :

1. घावों को शीघ्र भरने के लिये, तुलसी के 10–20 ग्राम पत्तों को उबालकर ठंडा करके लेप करना चाहिये।
2. तुलसी के पत्तों का रस भी घाव को भरने में बहुत उपयोगी है।

Scanned by CamScanner

वैज्ञानिक नाम	:	*Abroma augusta* (L.) L.f.
कुलनाम	:	Sterculiaceae
अंग्रेजी नाम	:	Devil's cotton
संस्कृत	:	पिशाच कार्पास, पीवरी, रितुमती, उच्चट, योनिपुष्पा
हिन्दी	:	उलटकंबल
गुजराती	:	उल्लटकंबल, ओलकतबोल
मराठी	:	उल्लटकंबल, ओलकतंबोल
बंगाली	:	ओलट कम्बल
तेलगु	:	गोगु, कोडगोगु

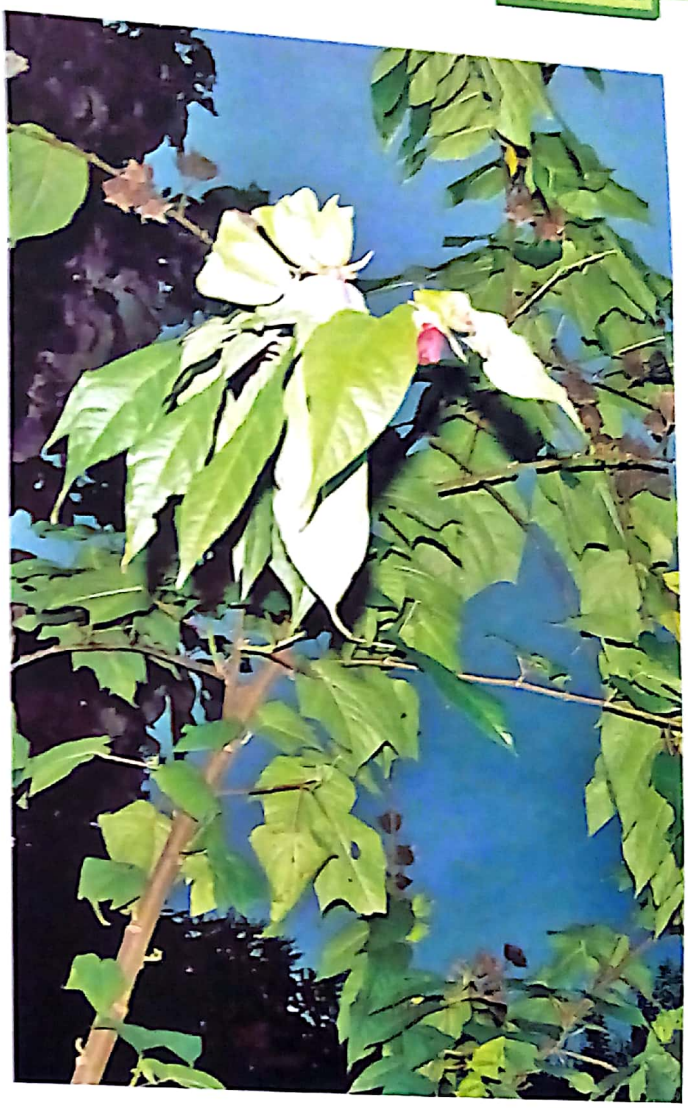

परिचय

उलटकंबल विशेषतः शीत प्रदेश की वनस्पति है, परन्तु उष्ण प्रदेशों में यह 3000 फुट से 4000 फुट की ऊंचाई तक उत्तर प्रदेश से लेकर सिक्किम तक, तथा बंगाल, आसाम, खसिया आदि में इसके जंगली व लगाये हुये पौधे मिलते हैं। इसके सुन्दर, आकर्षक रक्तवर्णीय पुष्पों के लिये इसे बाग बगीचों और घरों में भी लगाते हैं। इस पर वर्षाऋतु में पुष्प आते है, तथा शरद ऋतु में यह फलों से भर जाता है।

बाह्य–स्वरूप

उलटकंबल के छोटे कद के वृक्ष या बड़े गुल्म होते हैं। शाखायें, कोमल मुलायम मखमली तथा छाल श्वेत वर्ण एवं रेशेदार होती हैं। पत्ते–भिंडी के समान, 5–7 भागों में विभक्त त्रिकोणाकार किनारे कटे हुये, गोलाकार स्थल कमल जैसे होते हैं। पत्र में कुछ लाल रंग की सिराये होती है तथा पृष्ठ भाग रोये से व्याप्त खुरदरा होता है। ऊपर के पत्ते लट्वाकार भालाकार अथवा हृदयकार छः इंच तक लम्बे होते हैं। पुष्प भूमि की ओर नीचे लटके हुये, पोस्तदाने के फूल के आकार वाले, लाल रंग के एक इंच के घेरे में कटोरी नुमा लगते हैं। जब पुष्पदल परिपक्व हो, पुष्पकोष से पृथक हो भूमि पर गिर जाते हैं, तब पुष्पकोष उलट कर आकाश की ओर मुड़ जाता है, इसी से इसे उलट कंबल कहते हैं। फल– आधे कमरख के समान पंचकोशियों तथा पंच खंडीय होता है। कोशा की प्रत्येक धार पर जाली के भीतर महीन रोम जैसी चमकदार रूई होती है, जिससे स्पर्श करने पर त्वचा में जलन सी होती है। इस फल में रोमों के बीच दो कतारों में काले और पीतवर्ण के वन तुलसी या मूली के समान अनेक बीज भरे रहते हैं। जड़ की छाल भूरे रंग की होती है तथा अन्दर के भाग में सफेद गूदा भरा रहता है। जड़ों को काटने से एक गाढ़ा गोंद सा निलकता है।

रासायनिक संघटन

उलटकंबल की जड़ में काफी मात्रा में लुआबी तत्व, कार्बोहाइड्रेट, रेजिन तथा अल्पमात्रा में एल्केलायड होता है। इसमें काफी मात्रा में मैंगनीशियम भी होता है जो हाइड्राक्सी–एसिड के साथ संयुक्त अवस्था में होता है।

गुण–धर्म

तिक्त कषाय, योनिरोग, गर्भाशय विकार, कष्टार्तव, प्रदर, उदरशूल, अर्श, आध्मान निवारक, एवं मासिकधर्म की गड़बड़ी से उत्पन्न बांझपन को दूर करता है।

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

मासिक धर्म और गर्भाशय के विकार :

1. जड़ की छाल का सान्द्र चिकना रस, 2 ग्राम की मात्रा में कुछ समय तक नियमित देने से सब प्रकार के कष्ट से होने वाले मासिक धर्म में लाभ होता है।
2. इसकी जड़ की छाल को 6 ग्राम तक की मात्रा में 1 ग्राम काली मिर्च के साथ पीसकर मासिक धर्म से एक सप्ताह पूर्व से, और जब तक मासिक धर्म जारी रहता है तब तक पीने से रजः स्त्राव नियमित होता है, बांझपन दूर होता है और गर्भाशय को शक्ति प्राप्त होती है।
3. इसकी 1 किलो जड़ को जौ कूट कर 4 गुने जल में पकावें, 1 किलो शेष रहने पर इसमें 115 ग्राम काली मिर्च का चूर्ण और सवा किलो गुड़ मिला, चीनी मिट्टी के पात्र में बन्दकर, धान्य राशि में दबादें। फिर छानकर बोतलों में भर लें। इसको 10–25 ग्राम तक बराबर जल मिलाकर मासिक धर्म से 1 सप्ताह पूर्व से, मासिक धर्म होने तक सुबह–शाम सेवन करें।
4. अनियमित मासिक धर्म के साथ ही, गर्भाशय जांघ और कमर में विशेष पीड़ा हो तो इसकी जड़ का रस 4 ग्राम में शक्कर मिला सेवन करने से दो दिन में ही लाभ हो जाता है।
5. जड की छाल छः ग्राम और काली मिर्च 3 नग दोनों को शीतल जल में पीसकर छानकर ऋतुस्राव से 1 सप्ताह पहले सेवन करने से मासिक धर्म सम्बन्धी सभी कष्ट दूर होते हैं, ऋतुस्राव खुलकर होता है और गर्भाशय बलिष्ठ होता है।
6. इसकी 50 ग्राम सूखी छाल को जौ कूटकर 625 ग्राम पानी में काढा तैयार कर उचित मात्रा में दिन मे तीन बार देने से कुछ ही दिनों में मासिक धर्म उचित समय पर होने लग जाता है। इसको एक सप्ताह पूर्व शुरू कर ऋतुस्राव आरम्भ होने तक देना चाहिये।
7. इसकी जड़ की छाल का चूर्ण 4 ग्राम, काली मिर्च 7 नग, प्रातः–सायं जल के साथ मासिक धर्म के समय 7 दिन तक सेवन करने 2–4 मास तक यह प्रयोग करने से गर्भाशय के सब दोष मिट जाते हैं, प्रदर और बन्ध्यत्व की सर्वश्रेष्ठ औषधि है। पथ्य–भोजन में केवल दूध भात लेवे ब्रह्मचर्य से रहें।

गर्भस्थापना के लिए : इसकी जड़ की छाल डेढ ग्राम, पान के डंठल 3–4 नग और काली मिर्च 3 नग, इन्हें ताजे जल के साथ पीसकर 50 ग्राम जल मिलाकर प्रातः काल निराहार ले। ऋतु धर्म के 7 दिन पूर्व से पियें।

सुजाक : इसके ताजे पत्ते और तने की छाल समभाग लेकर शीतल जल में तैयार किया फांट सुजाक में बहुत उपयोगी है।

बहुमूत्र इक्षुमेह और मधुमेह होने पर : 10–20 ग्राम तक इसके रस का प्रातः–सायं सेवन करने से शीघ्र लाभ होता है।

Scanned by CamScanner

123 वचा

वैज्ञानिक नाम	:	*Acorus calamus* L.
कुलनाम	:	Araceae
अंग्रेजी नाम	:	Sweet flag root
संस्कृत	:	वचा, उग्रगंधा, तीक्ष्णपत्रा
हिन्दी	:	वच, घोड़ा बच
गुजराती	:	गन्धिले, वज, घोड़ा वज
मराठी	:	बेखंड
बंगाली	:	बच, बरिबोज
तेलगु	:	वस
अरबी	:	वज्ज
फारसी	:	अगरेतुर्की
तमिल	:	वसम्बु

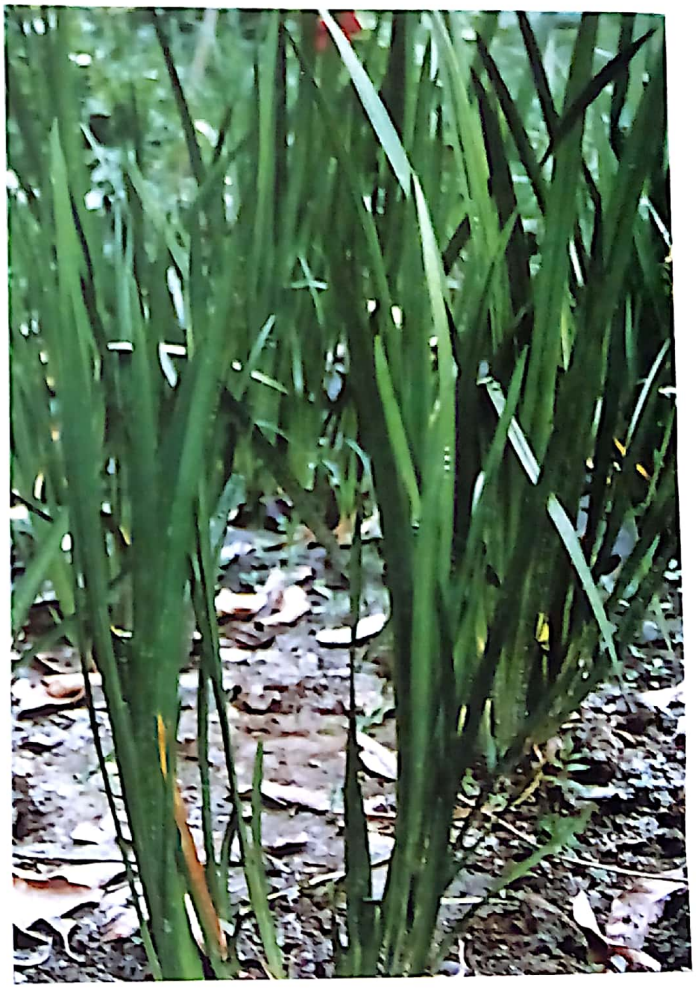

परिचय

वच भूत पूर्व यूरोप और मध्य एशिया का निवासी है। सदियों पहले इसके पूर्वजों को कब कैसे, भारत की मिट्टी भा गई और किसके बुलावे पर वे कब इस देवभूमि की पवित्र मिट्टी में रच बस गये, इसका कोई स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता। आजकल इसके हिमालय प्रदेशों में 6,000 फीट की ऊंचाई तक स्वयं जात या कृषिजन्य पौधे मिलते हैं। मारीपुर और नागा की पहाड़ियों में तथा कश्मीर में झीलों और खेतों के किनारे यह बहुलता से होता है। इसका सुखाया हुआ मूलस्तम्भ या भौमिक कांड बाजारों में घोड़ा वच के नाम से बिकता है। इसकी कई जातियां पाई जाती है। बल बच या पारसीक बचा प्रमुख है।

बाह्य–स्वरूप

घोड़ा वच के दो से पांच फीट ऊंचे कोमल क्षुप जलाशयों के आसपास तथा दलदली भूमि में उगते हैं। पत्तियां ईख की भांति अधिवत् दो फुट से चार फुट तक लम्बी आधा इंच से एक इंच तक चौड़ी हरित वर्ण तथा किनारे किंचित लहरदार होते हैं। पुष्प छोटे–छोटे श्वेत सघन स्थित होते हैं। फल अनेक बीजों छोटे–छोटे मांसल बेरी होते हैं। इसका मूलस्तंभ या भौमिक कांड अदरक की भांति भूमि में फैलता है और मध्यमा अंगुली के समान स्थूल 5–6 पर्व वाला, खुरदरा झुर्रीदार, सुगन्धित, रोमश आदि भूरे रंग का होता है। इसकी पत्तियां भी सुगंधित होती हैं। जिसमें उग्रगंध हो वही उत्तम वच है।

बाल वच :

इसका कांड एक फुट से डेढ फुट ऊंचा, प्रायः शाखा रहित होता है। पत्तियां चार से नौ की संख्या में लम्बे नुकीले अग्रों वाली, इसे छह इंच लम्बी और कांड के सिरे पर छत्रक की भांति स्थित होता है। इनके बीच से एकल पुष्प वाहक दंड निकलता है।

रासायनिक संघटन

इसमें एक उड़नशील तेल जिसमें पाईनीन एवं कैफीन आदि होते हैं। इसके अतिरिक्त कैलेमेन, कैलेमेनोल, केलामेनोन, एसेरोन तथा एकोरिन नामक एक चिपचिपा–गाढ़ा ग्लाईकोसाइड एवं टैनिनम्यूसिलेज स्टार्च तथा कैल्सियम आक्जेलेट आदि तत्व पाये जाते हैं।

गुण–धर्म

वच उग्रगंधा, चरपरी–कटु, वामक एवं अग्निवर्धक है। मलमूत्र का

Scanned by CamScanner

शोधन करने वाली और मलबंधक है। अफारा शूल, अपस्मार, कफ, उन्माद, भूत, जन्तु तथा वात को हरने वाली औषधि है।[1] यह ज्वरघ्न, हृदयोत्तेजक, कंठ्य, श्वास–कास हर है।[1]

बालवच :

इसके गुण भी वच के सदृश ही है, यह विशेषतः वातानुलोमक है।[2]

औषधीय प्रयोग

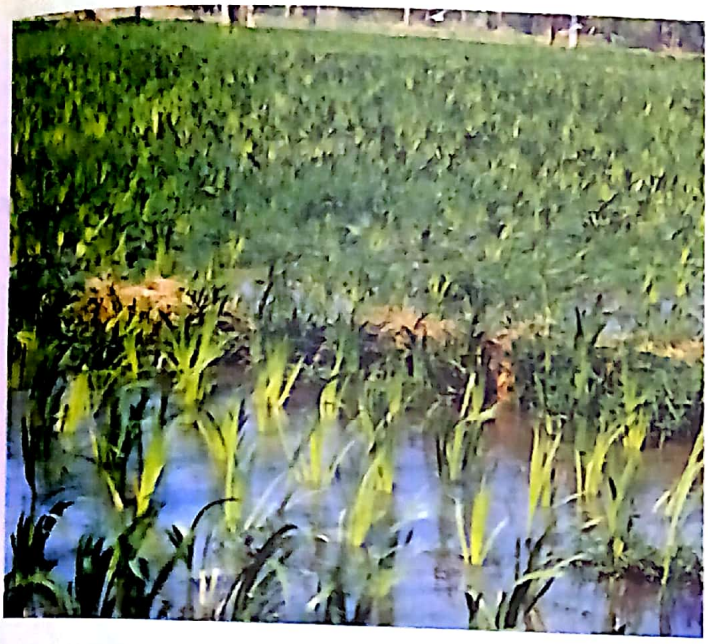

सूर्यावर्त :

1. वच और पीपल के चूर्ण को सुँघाने से सूर्यावर्त मिटता है।
2. शिरशूल में पंचांग का लेप मस्तिष्क एवं वेदना वाले स्थान पर करने से लाभ होता है।
3. वच को जल में पीसकर मस्तक पर लेप करने से मस्तक पीड़ा मिटती है।

मेधा :

1. घी या दूध या जल के साथ इसके कांड के चूर्ण का सेवन 250 मिलीग्राम की मात्रा में दिन में दो बार एक वर्ष तक या कम से कम एक मास तक करने से मनुष्य की स्मरण शक्ति में वृद्धि होती है।
2. दस ग्राम वच के चूर्ण का 250 ग्राम बूरे के साथ पाक बना कर नित्य 10 ग्राम प्रातः–सायं खाने से भूलने की बीमारी मिटती है।

गले का दर्द : इसके 500 मिलीग्राम चूर्ण को थोड़े गरम दूध में डालकर दिन में तीन बार पिलाने से जमा हुआ कफ ढीला पड़कर निकल जाता है और गले का दर्द दूर हो जाता है।

गलगंड : बच के चूर्ण को और पीपल के चूर्ण को मधु मिलाकर या नीम का तेल मिलाकर सुघांने से गलगंडादि रोग मिटते हैं।

अपस्मार : इसका कपड़छन किया हुआ चूर्ण 500 मिलीग्राम से एक ग्राम तक की मात्रा में शहद के साथ प्रातः–सायं चटाने से उन्माद और अपस्मार में बहुत लाभ होता है। पथ्य इस समय केवल दूध और चावल का ही प्रयोग करें।

दमा–खांसी :

1. बच्चों की खांसी में मां के दूध में घिसकर पिलाने से लाभ होता है।
2. 25 ग्राम वच को 400 मि० ग्रा० जल में उबालकर जब चौथाई शेष रह जाये तो तीन मात्राएं बनाकर दिन में तीन बार पिलाने से सूखी खांसी, पेट का अफारा और उदरशूल मिटता है।
3. दमे के रोगी को पहले वच की 2 ग्राम की मात्रा देनी चाहिए। उसके पश्चात हर तीसरे घण्टे बाद 625 मिलीग्राम की मात्रा देनी चाहिए।
4. बच्चों की खांसी में इसको 125 मिलीग्राम पानी में घिसकर दिन में तीन बार पिलाने से लाभ होता है।
5. इसके चूर्ण को कपड़े में रखकर सूंघने से प्रतिश्याय मिटता है।

उदर रोग :

1. आमअतिसार तथा रक्त अतिसार में वच धनियां तथा जीरे का क्वाथ पिलाना चाहिए। इसके लिए तीनों को समान मात्रा में

Scanned by CamScanner

वचा मूल

लेकर 10 ग्राम को 100 ग्राम जल में उबालें, 20 ग्राम शेष रहने पर छानकर प्रातः–सायं पीएं।

2. वच की जड़ को जौ में कूटकर क्वाथ बनाकर 25 या 35 ग्राम की मात्रा में पिलाने से आम अतिसार मिटता है।

अफारा :

1. बच्चों का शूल युक्त अफारा मिटाने के लिए, वच को जल में घिसकर पेट पर लेप करना चाहिए।
2. वच के कोयले को एरंडी के तेल या नारियल के तेल में पीसकर बच्चे के पेट पर लेप करने से भी शूलयुक्त अफारा मिटता है।

बच्चों का अतिसार : इसके कोयलों की 125 मिलीग्राम राख पानी में घोलकर पिलाने से बच्चों का अतिसार मिटता है।

कृमि : वच के 2 ग्राम चूर्ण को सेकी हुई हींग 125 मिलीग्राम के साथ खिलाने से पेट के कीड़े मर जाते हैं।

अर्श : वच, भांग और अजवायन, इन तीनों को बराबर–बराबर लेकर इनकी धूनी देने से अर्श की पीड़ा मिटती है।

सुख प्रसव :

1. वच को जल में घिसकर इसमें एरंड का तेल मिलाकर नाभि पर लेप करने से बच्चा सुख से उत्पन्न हो जाता है।
2. प्रसव के बाद की निर्बलता मिटाने के लिए इसका 20–30 ग्राम क्वाथ प्रात–सायं पिलाना चाहिए।

आनाहवात : दूध में लहसुन तथा वच मिलाकर थोड़ा गरम कर लें, तत्पश्चात उसमें काला नमक तथा हींग मिलाकर सेवन करने से गर्भवती स्त्री को सुख प्राप्त होता है।

मुंह का लकवा : वच का चूर्ण 625 मिलीग्राम, शुंठी चूर्ण 625 मिली., दोनों को शहद में मिलाकर दिन में दो तीन बार चाटने से अर्दित रोग, यानि मुंह का लकवा मिटता है। पथ्य इसके सेवन के समय पानी में शहद मिलाकर पिलाना चाहिए।

ज्वर :

1. वच को पानी में पीसकर नाक पर लेप करने से जुकाम, खांसी और उससे पैदा होने वाला तीव्र ज्वर रूक जाता है।
2. वच, हरड और घी का धुंआ देने से विषम ज्वर में लाभ होता है।
3. छोटे बच्चों के ज्वर में इसकी जड़ को पानी में घिसकर हाथ और पैरों पर लगाने से लाभ होता है।

हकलाने (रूक–रूक कर बोलने) की बीमारी : हकलाने अथवा रूक–रूक कर बोलने (वाक्दुष्टि) की बीमारी में रोगी को ताजी वच की कांड का 1 ग्राम का टुकड़ा सुबह–शाम चूसने हेतु दें, 3 महीने तक प्रयोग से हकलाने की बीमारी में आश्चर्यजनक लाभ मिलता है।

जमाल गोटे का विष : वच के कोयलों की 1 ग्राम भस्म को पानी में घोलकर पिलाने से जमाल गोटे का विष शांत हो जाता है और सब उपद्रव भी शांत हो जाते हैं।

विशेष : व्यवहार में प्रायः चिकित्सक बाह्य प्रयोगों के लिए घोड़ा वच और अभ्यान्तर सेवन के लिए बाल वच का प्रयोग करते हैं।

हानि : इसका अधिक प्रयोग हानिकारक है। यह उष्ण प्रकृति वालों के लिए हानिकारक है और उनमें सिर दर्द पैदा करती है।

1. बचोग्रगंधा कटुका तिक्तोष्णावान्तिवह्निकृत।
विबन्धाध्मान शूलघ्नी शकृन्मूत्रविशोधिनी।
अपस्मार कफोन्माद भूतजन्त्वनिलानहरेत।। (भाव प्रकाश)

2. वामनी कटुतिक्तोष्णा वातश्लेष्मरुजापहा।
कंठ्या मेध्या च कृमिहृद्विबंधाध्मानशूल नुत्।। (धन्वं०)

3. हेम वत्युदिता तद्वद्वातं हन्ति विशेषतः।। (भाव प्रकाश)

Scanned by CamScanner

वत्सनाभ

वैज्ञानिक नाम	: *Aconitum ferox* Wall. ex Ser.
कुलनाम	: Ranunculaceae
अंग्रेजी नाम	: Aconite, Monk's hood
संस्कृत	: वत्सनाभ, अमृत
हिन्दी	: बछनाग, मीठा विष, मीठा तेलिया
गुजराती	: बछनाग
मराठी	: वचनाग
बंगाली	: काठ विष, मीठा विष
तैलगु	: वसनूभि
अरबी	: विष
फारसी	: विचनाग

परिचय

भारत में हिमालय प्रदेश में सिक्किम से लेकर उत्तर पश्चिमी हिमालय तक 10,000 फुट से 15,000 हजार फुट की ऊंचाई तक इसके पौधे पाये जाते हैं। एकोनाइट की भारत में 28 प्रजातियां पाई जाती है, जो विषैली तथा विषरहित दोनों प्रकार की होती है। इसके फूल बड़े आकर्षक होते हैं, विषैले पौधे का पंचांग भी विषैला होता है, विषैले पौधे के फूलों को सूंघने से ही मनुष्य मूर्छित हो जाता है। सबसे ज्यादा विष इसकी श्रृंगाकार जड़ों में होता है, जिनका औषध्यार्थ प्रयोग किया जाता है। वर्णभेद से, बाजारों में दो प्रकार का वत्सनाभ मिलता है एक सफेद, दूसरा काला वास्तव में वत्सनाभ का प्राकृतिक रंग घूसर, पीताभ होता है। इसको सफेद बछनाग कहते हैं। इसको रंगकर काला बछनाग बना देते हैं, इससे इसमें कीड़े नही लगते हैं। इसकी विशेषता यह है कि इसकी आकृति बछड़े की नाभि के समान और इसके आस–पास अन्य वृक्ष नहीं उगते।

बाह्य–स्वरूप

क्षुप बहुवर्षीय, मूल कन्द युक्त 1–3 इंच लम्बी एक इंच तक मोटी गाजर की आकृति के समान, बाह्य रंग घूसर और अन्तः वर्ण श्वेताभ स्निग्ध तथा कुछ चमकीला, कांड–सीधा, सरल, पत्रक सिंदुवार के पत्रों के समान परस्पर अभिमुख, पुष्प रक्ताभ, श्वेत तथा पीले, फल गोल चिकने।

रासायनिक संघटन

इसमें विषाक्त तत्व एकोनाइट एवं स्युडोएकोनाइटिन पाये जाते हैं।

गुण–धर्म

विधिपूर्वक शुद्ध किया हुआ विष प्राणदायी रसायन, योगवाहि, त्रिदोष हर, बृहंण तथा वीर्यवर्धक है।'

औषधीय प्रयोग

खांसी श्वास : ताम्बूल पत्र पर 65–125 मिलीग्राम बछनाग डालकर पकाये हुए अलसी के तेल को जरा सा चुपड़ कर प्रातः–सायं खिलाने से खांसी और दमे में लाभ होता है।

टांसिल : इसको पीसकर गले पर लेप करने से टांसिल इत्यादि गले के रोगों में बहुत लाभ होता है।

ज्वर :

1. दालचीनी, गंधक, सोहागा और दूसरी चरपरी सुगंधित चीजों के साथ, इसको आधे चावल के बराबर की मात्रा में देने से

Scanned by CamScanner

बार–बार आने वाला ज्वर छूट जाता है।

2. बछनाग को बहुत थोड़ी मात्रा में देने से न्यूमोनिया में लाभ होता है।

3. शुद्ध किया बछनाग, शुद्ध हींग, शुद्ध सुहागा, नागदंती, निर्गुण्डी का रस इन सब चीजों को समान भाग लेकर पीस कर 65–65 मिलीग्राम की गोलियां बना लेनी चाहिए। इन गोलियों में से एक गोली योग्य अनुपान के साथ प्रातः–सायं देने से व्रण, शोथ, ज्वर में बहुत लाभ होता है।

4. कुनैन, कपूर और शुद्ध बछनाग को समान भाग लेकर 65 मिलीग्राम की मात्रा में प्रातः–सायं देने से अभिष्यन्द युक्त ज्वर मिटता है।

मधुमेह : 10 ग्राम शुद्ध बछनाग में 70 ग्राम अरारोट मिलाकर उसमें से 65 मिलीग्राम से 125 मिलीग्राम तक की मात्रा देने से भयातिसार, मधुमेह, पक्षाघात और कुष्ठ रोग में बहुत लाभ होता है। यह दिन में तीन बार दें।

मूत्रकृच्छ : शुद्ध बछनाग को आधे चावल भर की मात्रा में देने से मूत्रकृच्छ मिटता है।

मूत्रातिसार : जिसको मूत्र की शंका न रूकती हो उसको आधे चावल के बराबर बछनाग का सेवन करना चाहिए। गृधसी, गठिया, धनुर्वात में भी इसको अति अल्प मात्रा में देने से लाभ होता है।

सर्वांग पीड़ा :

1. इसका तेल सर्वांग की पीड़ा को मिटाता है। गठिया और छोटे जोड़ों की सूजन पर इसका लेप करते हैं।

2. जौ कूट किये हुए 25 ग्राम बछनाग को अलसी के तेल में पकाकर इस तेल की मालिश करने से सब प्रकार की गठिया और सर्वांग की पीड़ा मिटती है।

नाड़ी दौर्बल्य : नाड़ी दुर्बलता में इसका सेवन 15–16 मिलीग्राम की मात्रा में करने से नाड़ी की गति सामान्य हो जाती है तथा नाड़ी दुर्बलता के कारण उत्पन्न, बहुमूत्र, शय्यामूत्र आदि विकारों को यह दूर करता है।

रसायन :

1. बछनाग में समान भाग सुहागा मिलाकर 15–16 मिलीग्राम की मात्रा में खाने से मुनष्य दीर्घायु तेजवान, जोशीला होता है और उसकी हृदय की गति व्यवस्थित रहती है, काम शक्ति बनी रहती है। ज्ञानेन्द्रियां शक्तिशाली हो जाती हैं। बुखार मंदाग्नि, गठिया, फोड़े–फुन्सी आदि बीमारियों से बचा रहता है।

2. हरड़ काली और चित्रक 30–30 ग्राम, पीपल 15 ग्राम, बछनाग सफेद नौ ग्राम, इन सबको पीसकर गाय के घी में चिकना करके 160–180 ग्राम शहद में मिला ले, इस योग की डेढ़ ग्राम से तीन ग्राम तक की मात्रा देने से श्वेत कुष्ठ, दमा इत्यादि रोगों में लाभ होता है और मनुष्य की सर्वांगीण शक्तियां बढ़ती हैं। इसका प्रयोग करने से पहले विरेचन लेकर पेट साफ कर लेना चाहिए।

सूजन : सूजन युक्त ज्वर में अथवा कफ प्रधान नवीन ज्वर में बछनाग को अल्प मात्रा में प्रारंभ में ही दे देना चाहिए। बच्चों की सूजन में बछनाग एक प्रभावशाली औषधि है।

बिच्छु का विष : बछनाग को घिसकर दंशित स्थान पर लेप करने से और 125 मिलीग्राम की मात्रा में खिलाने से बिच्छू का विष उतर जाता है।

कुष्ठ रोग : तीन मास तक इसके नियमित सेवन से कुष्ठ रोग समूल नष्ट हो जाता है।

दोष : इसकी अधिक मात्रा लेने से मृत्यु तक हो सकती है।

निवारण : वमन के बाद गाय के घी में सुहागा मिलाकर पिलायें या अर्जुन की छाल का चूर्ण गौघृत या मधु के साथ दें। इसके अतिरिक्त कस्तूरी पानी में घिसकर चटायें।

1. तदेव युक्तियुक्तं तु प्राणदायि रसायनम्।
योगवाहि, त्रिदोषघ्नं बृहणं वीर्यवर्धनम्।। (भाव प्रकाश)

Scanned by CamScanner

विदारीकंद

वैज्ञानिक नाम	:	*Pueraria tuberosa* (Roxb. ex Willd.) DC.
कुलनाम	:	Fabaceae
अंग्रेजी नाम	:	Indian kudzu
संस्कृत	:	विदारी, स्वादुकंदा, गजवाजिप्रिया
हिन्दी	:	विदारीकंद, बिलाईकन्द, सुराल, पतालकोहड़ा
गुजराती	:	खाखर बेल, विदारी
मराठी	:	बेदंरिया, बेल, बींदरी
बंगाली	:	शीमिया
तैलगु	:	दरीगुम्मडि
मलयालम	:	गुमडिगिडा

परिचय

विदारीकंद की चक्राकार आरोहिणी लताएं विशेषकर नदी नालों के किनारे और हिमालय प्रदेश की निचली पहाडियों के भागों में 4,000 फुट की ऊंचाई तक पाई जाती हैं। इसकी मूल से जुडे हुए जमीन के नीचे कंद पाये जाते हैं। जो कई आकारों में तथा इनका स्वाद कुछ–कुछ मधुयष्टि की भांति होता है। इसलिए इसका नाम स्वादुकंद है। घोडों को प्रिय होने के कारण ये लतायें गज वाजिप्रिया कहलाती है। विदारीकंद के नवीन कंद, मंडियों में प्राय: सुराल के नाम से बिकते हैं। कन्द की त्वचा हल्के भूरे रंग की तथा अन्दर से श्वेत होते हैं।

बाह्य–स्वरूप

विदारीकंद की चक्रारोही सुविस्तृत लतायें होती हैं, जिसका कांड मोटा तथा छिद्रल होता है। पत्तियां पलाश की भांति त्रिपत्रक, पत्रक 4–6 इंच लम्बे, 3–4 इंच चौडे एवं अग्रभाग पर नुकीले होते हैं। नवम्बर–दिसम्बर में निष्पत्र बेल पर नीले या बैंगनी रंग के पुष्प आते हैं तथा कलियां 2 से 3 इंच लम्बी और रोमश होती हैं। इसमें 3–6 बीज होते हैं।

रासायनिक संघटन

इसके कन्दों में कार्बोहाड्रेट, प्रोटीन तथा रालीय तत्व पाये जाते है।

गुण–धर्म

विदारीकंद मधुर, स्निग्ध, शीतल, शुक्र–स्तन्य जनन, बृहण, मूत्रल, बल्य, वर्ण्य, वाजीकर, दाह प्रशमन एवं रसायन है।[1,2]

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

यकृत प्लीहा वृद्धि : विदारीकंद के पांच ग्राम चूर्ण की फंकी सुबह–शाम जल के साथ लेने से यकृत प्लीहा की वृद्धि रुक सकती है।

रक्तशुद्धि : विदारीकंद का शाक बनाकर खाने से रक्त शुद्ध होकर रक्त विकार दूर होते हैं।

भस्मक रोग :

1. भस्मक रोग में 250 ग्राम दूध में विदारीकंद का रस 10 ग्राम डालकर उबालकर पिलाने से भस्मक रोग मिटता है।
2. 10 ग्राम विदारीकंद के रस में 10 ग्राम भैंस का घी मिलाकर पिलाने से भी भस्मक रोग मिटता है।

बवासीर : कंद के चूर्ण को तिल के तेल में समान मात्रा में मिलाकर पीस लें। एक चम्मच चूर्ण में शहद मिलाकर दिन में तीन बार दूध के साथ सेवन करने से कुछ ही दिनों में खून आना बंद हो जाता है।

स्तन्य वृद्धि : माताओं में दूधवृद्धि हेतु विदारीकंद का चूर्ण पांच ग्राम की मात्रा में दिन में तीन बार दूध के साथ सेवन करने से स्त्रियों के दूध में वृद्धि हो जाती है।

मासिक धर्म :

1. विदारीकंद एक चम्मच चूर्ण को घी और शक्कर के साथ चटाने से मासिक धर्म में अधिक रक्त का जाना बंद हो जाता है।
2. कंद का चूर्ण एक चम्मच, मिश्री एक चम्मच, दोनों को पीसकर एक चम्मच घी के साथ सुबह–शाम सेवन करने से मासिक धर्म में अधिक रक्त जाना बंद हो जाता है।

पौष्टिक और रसायन कार्य :

1. पौष्टिक और रसायन कार्य के लिए विदारीकंद के तीन से छह ग्राम तक चूर्ण को 10 ग्राम घी में मिलाकर, निश्रण को 250 ग्राम दूध में उबाल लें तथा दूध को मिश्री में मिलाकर सेवन करने से शरीर पुष्ट होता है।
2. विदारीकंद का चूर्ण 50 ग्राम, जौं का आटा 50 ग्राम, गेहूं का आटा 50 ग्राम, तीनों को 50 ग्राम घी में भून लें, इसमें काजू, बादाम, चिरौंजी, सफेद मूसली, जायफल, लौंग, इलायची 10–10 ग्राम मिलाकर शहद के साथ लड्डू बना लें, प्रतिदिन एक–एक लड्डू सुबह–शाम दूध के साथ खाने से शारीरिक कमजोरी दूर होकर शरीर पुष्ट हो जाता है।
3. बच्चों का शरीर पुष्ट करने के लिए विदारीकंद के एक ग्राम चूर्ण को मुनक्का के साथ प्रतिदिन देने से बच्चों का शरीर पुष्ट होता है।
4. विदारीकंद के एक ग्राम चूर्ण को मधु के साथ सुबह–शाम चटाने से भी बच्चों की निर्बलता मिटती है।
5. विदारीकंद को चूर्ण करके उसको कन्द के ही रस में 21 बार भावना कर सुखा लें। इस चूर्ण में से 6 ग्राम चूर्ण प्रतिदिन गाय के दूध और मिश्री के साथ सुबह–शाम लेने से मनुष्य का बल, जीवनी शक्ति, रोग निवारक शक्ति, ओज और बल बढ़ता है।
6. विदारीकंद के चूर्ण की 3–6 ग्राम मात्रा को उष्ण दूध के साथ फंकी लेने से बुढ़ापा जल्दी नहीं आता।

पुरुषार्थ :

1. विदारीकंद के 3 ग्राम चूर्ण को कन्द के 10 ग्राम स्वरस में ही मिलाकर घी 5 ग्राम और मधु 10 ग्राम के साथ सुबह–शाम सेवन करने से पुरुषार्थ बढ़ता है।
2. विदारीकंद के दो चम्मच चूर्ण में एक चम्मच घी मिलाकर दूध के साथ नियमित कुछ काल तक सेवन करने से वीर्य पुष्ट होता है।

कामोद्दीपन :

1. कन्द चूर्ण एक चम्मच, मधु एक चम्मच, सुबह–शाम नियमित सेवन करने से काम शक्ति बढ़ती है।
2. गूलर फल चूर्ण एक भाग, कन्द चूर्ण एक भाग, मात्रा 4–6 ग्राम घी मिले हुए दूध के साथ सेवन करने से वृद्ध भी तरूण हो जाता है।

पित्तशूल : विदारीकंद के 10 ग्राम रस में शहद 2 चम्मच मिलाकर सुबह–शाम भूखे पेट पिलाने से पित्तशूल मिटती है।

विदारी कंद–सूखा (कटा हुआ)

1. बिदारी मधुरा स्निग्धा बृहंणी स्तन्यशुक्रदा।
   शीत स्वर्या मूत्रला च जीवनी बलवर्णदा।।
   गुरुः पित्तास्रपवनदाहान् हन्ति रसायनम्।। (भाव प्रकाश)
2. मधुरो बृंहणो वृष्यः शीतः स्वर्योऽतिमूत्रलः।
   विदारीकंदो बल्यस्तु वातपित्तहरश्च सः।। (सुश्रुत)

Scanned by CamScanner

ओ३म्

शारीरिक श्रम के अभाव, मानसिक तनाव, नकारात्मक चिंतन, असंतुलित जीवनशैली, विरुद्ध आहार व प्रकृति के बिगड़ते संतुलन के कारण विश्व में कैंसर, हृदयरोग, मधुमेह, अम्लपित्त व मोटापा आदि रोगों का आतंक सा मचा हुआ है। प्रकृति हमारी माँ जननी है। हमारी समस्त विकृतियों का समाधान हमारे ही आस पास की प्रकृति में विद्यमान है; परन्तु सम्यक् ज्ञान के अभाव में हम अपने आस-पास विद्यमान इन आयुर्वेद की जीवन दायिनी जड़ी बूटियों से पूरा लाभ नहीं उठा पाते। अक्षिय आचार्य श्री बालकृष्ण जी ने वर्षों तक कठोर तप, साधना व संघर्ष करके हिमालय की दुर्गम पहाड़ियों एवं जंगलों में भ्रमण करते हुए जड़ी बूटियों के दुर्लभ चित्रों का संकलन तथा उनके प्रयोगों का प्रामाणिक वर्णन किया है। शोध एवं अनुभवों पर आधारित इस पुस्तक में वर्णित जड़ी बूटियों के ज्ञान व प्रयोग से मानव मात्र लाभान्वित हो तथा करोड़ों वर्ष पुरानी आयुर्वेद की विशुद्ध परम्परा का सार्थक प्रचार प्रसार हो इन्हीं मंगल कामनाओं के साथ आयुर्वेद के महान् मनीषी आचार्य श्री बालकृष्ण जी को वैदिक परम्पराओं की प्रकाश ज्योति के लिए कोटिशः साधुवाद!

स्वामी रामदेव

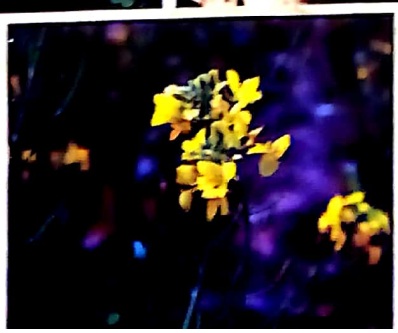

Price : Rs. 350/-
ISBN No.81-89235-44-8
8 904049 800350

Scanned by CamScanner